तुजुक-ए-जहाँगीरी

अनुवादक: डॉ० मथुरालालशर्मा

तुजुक-ए-जहाँगीरी

तुजुक-ए-जहाँगीरी

तुजुक-ए-जहाँगीरी

(स्वयं जहाँगीर की लिखी हुई आत्मकथा)

अनुवादक

डॉ॰ मथुरा लाल शर्मा

एम.ए. डी.लिट.

भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राधा पब्लिकेशन्स

नई दिल्ली 110002

ISBN 81-7487-195-0

प्रकाशक

राधा पब्लिकेशन्स

4378/4B, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली— 110 002,
दूरभाष. 3261839, 3254306

भारत में मुद्रित

श्रीमती राधारानी गर्ग द्वारा राधा पब्लिकेशन्स, 4378/4B, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली— 110002, के लिये प्रकाशित, शब्द संयोजक जितेन्द्र कुमार सिंह, दिल्ली और तरूण ऑफसेट प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

भूमिका

बादशाह जहाँगीर की कई आत्म–जीवनियाँ उपलब्ध हैं। कुछ उसके समय मे और कुछ उसके बाद लिखी गई हैं। इनमे एक आत्म–जीवनी का अग्रेजी अनुवाद मेजर डेविस प्राइस ने किया था। यह अपूर्ण है और अब सिद्ध हो गया है कि यह किसी जौहरी का लिखा हुआ वृतान्त है और अत्युक्तियों से भरा हुआ है। अत यह प्रामाणिक और विश्वसनीय नही है।

जहाँगीर ने स्वय अपने शासनकाल के सत्रहवे वर्ष तक का वृतान्त लिखा है, फिर अस्वस्थता के कारण शेष वृतान्त लिखने का कार्य उसने मुदामिद खाँ के सुपुर्द कर दिया, जिसने उन्नीसवे वर्ष तक का वृतान्त जहाँगीर के नाम से लिखा, तत्पश्चात् उसने अपने ही नाम से जहागीर के शेष जीवन का वृतान्त अपनी पुस्तक 'इकबालनामा' मे लिखा। इस प्रकार जहाँगीर की आत्म–जीवनी पूरी हुई। उसने बाईस वर्ष राज्य किया था।

जहाँगीर ने अपने राज्यकाल के प्रथम बारह वर्ष का वृतान्त लिखने के बाद उसकी कई प्रतियाँ तैयार करवाई और सर्वप्रथम एक प्रति उसने शाहजहाँ को दी। दूसरी जिल्द मे उसने अपने शासन के सत्रहवे वर्ष तक का वृतान्त लिखा और फिर शेष वृतान्त मुदामिद खाँ से लिखवाया, तत्पश्चात् मुदामिद खाँ ने अपने नाम से जहाँगीर की मृत्यु तक का वृतान्त लिखा।

इस प्रकार 'तुजुक–ए–जहाँगीरी' दो जिल्दो मे लिखी गई है। इसका अनुवाद अग्रेजी मे अलेक्जेण्डर रोजर्स ने किया था और हेनरी बेवरिज ने इसका सम्पादन किया था। ये दोनो ही विद्वान आई. ई. एस. थे।

इस आत्म–जीवनी (तुजुक–ए–जहाँगीरी) का उर्दू अनुवाद तत्कालीन टोक राज्यान्तर्गत रामपुरा के निवासी मुन्शी अहमद अली सीमाब ने किया था जो अलीगढ के नवाब मुहम्मद इब्राहीम अली खाँ ने करवाया था। यह अनुवाद मुहम्मद हादी द्वारा सम्पादित फारसी 'तुजुक–ए–जहाँगीरी' से किया गया था और सन् 1874 मे नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित हुआ था। जोधपुर निवासी मुन्शी देवीप्रसाद ने इसका हिन्दी अनुवाद किया जो 1905 में कलकत्ते मे भारत मित्र प्रेस से प्रकाशित हुआ था, यह अनुवाद अतिं संक्षिप्त है। उर्दू अनुवाद अब अत्यन्त दुर्लभ हो गया है परन्तु टोक से इसकी एक

प्रति मुझे मिली है जो मूल फारसी का अच्छा अनुवाद है। इसकी भाषा में फारसी शब्दों की बड़ी भरमार है। जहाँगीर की भाषा सुन्दर और परिमार्जित है। परन्तु उसने पशु—पक्षियों, नदी—नालों, पहाड़ियों, शिकारों, फव्वारों और पुलों आदि का वर्णन किया है तो रोचक तो परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व का नहीं है। 'अकबरनामा' के विद्वान अंग्रेजी अनुवादक एच. बेवरिज ने लिखा है कि:—

"मैं चाहूँगा कि कोई व्यक्ति इस पुस्तक 'अकबरनामा' को संक्षिप्त करे। इसमें से जन्म—पत्रिकाएँ और अकवर के वास्तविक या कल्पित पूर्वजों का वृतान्त, ज्योतिष और धूम्रकेतुओं का वर्णन तथा विषयान्तर निकाल दिये जायें और बडी—बड़ी नामावलियाँ भी छोड दी जायें तथा शब्दाडम्बर को हटाकर भाषा सरल कर दी जाये।"

इस अनुवाद में उपरोक्त सुझावों को मानकर दोनों खण्डों को संक्षेप किया गया है परन्तु महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना कोई नहीं छोड़ी गई है। जहाँगीर के समय की मुख्य घटनाये अविकल रहने दी हैं। मूल और अंग्रेजी या उर्दू अनुवाद का शब्दानुवाद नही, भावानुवाद किया गया है और भाषा को यथासंभव सरल बनाया गया है।

जहाँगीर ने कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का 'तुजुक' में वर्णन नहीं किया है। इनको अन्य पुस्तकों से मैंने अन्त में उद्धृत कर दिया है।

—डॉ. मथुरालाल शर्मा

विषय-सूची

क्रमांक पृष्ठांक

जहाँगीर की आत्म-जीवनी

(प्रथम भाग)

(द्वितीय भाग)

तुजुक–ए–जहाँगीरी

प्रथम भाग

राज्यारोहण के प्रथम वर्ष से बारहवें वर्ष तक

अर्थात्

(1605 से 1617 तक)

प्रथम वर्ष

जहाँगीर की आत्म–जीवनी

प्रकरण—1

ईश्वर (अल्लाह) के अपार अनुग्रह से बृहस्पतिवार तारीख 20 जमा दससानी 1014 हिज्री (अक्टूबर 24, 1605) की तारीख को जब एक घटा व्यतीत हो चुका था तो मै राजधानी आगरा मे शाही सिहासन पर आरूढ हुआ। उस समय मेरी आयु का 38वा वर्ष चल रहा था।

मेरे पिता की आयु 28 वर्ष[1] की हो चुकी थी तब तक उनका कोई बच्चा जीवित नही था। वे दरवेशो और फकीरो से निरन्तर प्रार्थना किया करते थे कि एक पुत्र तो जीवित रहे। उनका ख्याल था कि इन व्यक्तियो की ईश्वर के सिहासन तक पहुच होती है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती भारत के अधिकाश (मुस्लिम) सन्तो का मुखिया था। मेरे पिता ने सोचा कि अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इस चिश्ती के द्वारा यदि सर्व शक्तिमान ईश्वर उनको पुत्र प्रदान करेगा तो अत्यन्त विनीत भाव से वे पदैल चल कर आगरा से उसकी पवित्र दरगाह पर पहुचेगे जो 140 कोस की दूरी पर है। 977 हिज्री मे बुधवार 17 रवी–उल–अव्वल (31 अगस्त 1569) को जब इस दिन की सात घडी व्यतीत हो चुकी थी तब सर्व शक्तिमान ईश्वर की दया से मुझे प्रकाश और अस्तित्व प्राप्त हुआ। उस समय तुला राशि 24 अश चढ चुकी थी। जब मेरे पूज्य पिता को पुत्र प्राप्ति की बडी अभिलाषा थी तो शेख सलीम नामक एक दरवेश जो भावातिरेक की अवस्था मे पहुच जाता था और जो आयु के कई सोपान देख चुका था, आगरा के निकट सीकरी गाव की एक पहाडी पर रहा करता था और आसपास के लोगो का उसमे पूर्ण विश्वास था। मेरे पिता दरवेशो से बडी ही नम्रतापूर्वक मिला करते थे। वे इस दरवेश से भी मिले। एक दिन जब वे परेशानी की हालत मे इस दरवेश के पास बैठे हुये थे, तो उन्होने पूछा मेरे कितने पुत्र होगे तो दरवेश ने कहा "ईश्वर माँगे बिना ही देने वाला है वह आपको 3 पुत्र प्रदान करेगा।" मेरे पिता ने उत्तर दिया मैने

---

1 उस समय जहाँगीर चान्द्रवर्ष के अनुसार 37 वर्ष और 3 मास का और शौर वर्ष के अनुसार 36 वर्ष 1 मास का था।

व्रत ले लिया है कि मैं अपने पुत्र को आपकी कृपा पर छोड़ दूंगा। आपकी मैत्री और कृपा उसकी रक्षा करेगी। "शेख ने यह विचार स्वीकार करके मेरे पिता को बधाई दी और कहा कि मैं आपके पुत्र का नाम मेरे नाम पर ही रखूंगा। जब मेरी माता के प्रसव का समय समीप आया तो मेरे पिता ने उसको शेख के मकान पर भेज दिया। वे चाहते थे कि मेरा जन्म वहीं हो। मेरे जन्म के बाद मेरा नाम सुल्तान सलीम रखा गया परन्तु मेरे पिता ने मुझ को मुहम्मद सलीम या सुल्तान सलीम कहते कभी नहीं सुना। मद्यपान करते समय भी वे मुझे सदैव शेख बाबा कहकर पुकारा करते थे। मेरे पिता ने सीकरी को जहाँ मेरा जन्म हुआ था अपने लिए शुभ समझकर अपनी राजधानी बनाया। 14 या 15 वर्ष में यह पहाड़ी हृदय आकर्षित करने लगी। उस पर पहले वन के पशु विचरा करते थे। अब उस पर कई प्रकार के मार्ग, मकान, विशाल और सुन्दर भवन और सुखद स्थान बन गये। गुजरात विजय के पश्चात इस गाँव का नाम फतहपुर हो गया। जब मैं बादशाह बना तो मुझे विचार आया कि मैं अपना नाम बदल लूं क्योंकि यह नाम रूम के बादशाह के नाम से मिलता जुलता था। कहीं से मेरे हृदय मैं यह प्रेरणा उत्पन्न हुई कि बादशाहों का काम संसार का नियंत्रण करना है। इसलिए मैं अपना नाम जहाँगीर रख लूं और मेरी उपाधि नूरुद्दीन होनी चाहिये क्योंकि जब मैं शाही सिंहासन पर बैठा था तो पृथ्वी पर सूर्य का महान प्रकाश फैल रहा था। जब मैं शाहजादा था तो मैंने भारत के सन्तों से सुना था कि बादशाह जलालुद्दीन अकबर के जीवन का और शासन का अन्त होने पर एक नूरुद्दीन नामक व्यक्ति राज्य के कार्यो का प्रशासक बनेगा। इसलिए मैंने अपना नाम नूरुद्दीन जहाँगीर बादशाह रखा। यह महान घटना आगरा नगर में हुई थी इसलिए उस नगर का कुछ वर्णन करना आवश्यक है।

आगरा हिन्दुस्तान का एक बडा प्राचीन नगर है। पहले वहाँ जमुना के तट पर एक प्राचीन दुर्ग था परन्तु मेरे जन्म से पहले ही मेरे पिता ने उसको गिराकर कटे हुए लाल पत्थरों का दुर्ग वहां बनाना शुरू कर दिया। जिन लोगों ने संसार की यात्रा की है वे ऐसा दूसरा दुर्ग नहीं बतला सकते। यह 15, 16 वर्ष में तैयार हो गया था। इसके 4 दरवाजे थे जिनमें से शत्रु पर प्रहार किया जा सकता था। उसके निर्माण में 35 लाख रुपये लगे थे। नगर का आबाद भाग नदी के दोनों तटों पर है। पश्चिम के तट की ओर आबादी अधिक है और इसका घिराव 7 कोस तथा चौड़ाई 1 कोस है। दूसरी ओर की बस्ती का घिराव ढाई कोस है। इसकी लम्बाई के 1 कोस और चौड़ाई आधा कोस है। इस नगर में अनेक लोगों ने 3, या 4 खण्ड के मकान बना लिये है। बस्ती इतनी अधिक है कि गलियों और

बाजारों में चलना बड़ा कठिन है। यह दूसरे कटिबन्ध की सीमा पर स्थित है। उसके पूर्व में कन्नौज प्रान्त, पश्चिम में नागौर, उत्तर में सम्भल और दक्षिण में चन्देरी है। हिन्दुओं की पुस्तकों में यह लिखा हुआ है कि जमुना का निकास कालिन्द नाम की पहाड़ी से होता है। वहाँ अत्यन्त दारुण शीत के कारण मनुष्य पहुंच नहीं सकते। प्रत्यक्ष निकास एक पहाडी से है जो खिजराबाद के परगने के समीप स्थित है।

आगरा का जलवायु गर्म और शुष्क है। हकीमों का कहना है यहाँ सुस्ती और निर्बलता आ जाती है। और अधिकांश लोगों की प्रकृति के लिये यहाँ का जलवायु अनुकूल नहीं है परन्तु कफ और विशाद प्रकृति वालो पर इसका प्रभाव नहीं पडता इसलिये यहाँ हाथी, भैंसे और अन्य पशु आदि से रहते हैं।

लोदी अफगानों के शासन से पूर्व आगरा विशाल नगर था ओर खूब बसा हुआ था और यहां एक दुर्ग था जिसका वर्णन मसूद ने एक कसीदे में किया है जो उसने सुल्तान इब्राहीम के पुत्र महमूद की प्रशंसा में लिखा था। यह महमूद सुल्तान महमूद गजनी का वंशज था। इसको सुल्तान इब्राहीम के पुत्र इब्राहीम ने जीता था।

जब सिकन्दर लोदी ने ग्वालियर को जीत लेने की योजना बनाई तो वह दिल्ली से जो भारत के सुल्तानों की राजधानी थी आगरा आया और वहीं रहने लगा। उस तारीख से आगरा की जनसंख्या और समृद्धि बढने लगी और यह नगर दिल्ली के सुल्तानों की राजधानी बन गया। जब सर्व शक्तिमान ईश्वर ने भारत का राज्य इस यशस्वी वंश को प्रदान किया तो स्वर्गीय बादशाह बाबर ने सिकन्दर लोदी के पुत्र इब्राहीम की पराजय और वध के बाद तथा हिन्दुस्तान के प्रमुख राजा राणा सांगा पर विजय प्राप्त करने के पश्चात यमुना नदी के पूर्व तट पर आराम बाग बनवाया जिसकी समानता सुन्दरता की दृष्टि से गिनती के स्थान ही कर सकते हैं। उसने उसका नाम गुलअफशां रखा और उसमें कटे हुए लाल पत्थर की एक छोटी सी इमारत बनवाई और उसने एक मस्जिद बनवाई। उसका विचार थां कि इसके एक ओर एक विशाल भवन बनाया जाय परन्तु समय ने उसका साथा नहीं दिया और उसकी योजना कभी कार्यान्वित नहीं हुई।

इस आत्म जीवनी में साहिब किरानी का प्रयोग अमीर तीमूर गुगौन के लिए, फिरदौस मकानी बाबर के लिये, जनत–ए–आसयानी हुमायूं बादशाह के लिए और अर्स आसयानी मेरे पूज्य पिता जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी के लिए किया गया है।

आगरा में खरबूजे, आम और अन्य फल खूब पैदा होते हैं। मुझ आम बहुत अच्छा लगता है। मेरे पिता के राज्य में दूसरे देशों के फल भी यहाँ

मिलते थे। साहिबी कबशी और किशमिशी नाम के अंगूर कई कस्बों में साधारणतया मिलने लग गये थे। अँगूरों की फसल के समय लाहौर में सब प्रकार के अँगूर मिलते थे। फलों में अनानास बडा सुगन्धित होता है और यह फ्रांस के बन्दरगाहों पर बोया जाता है। अब आगरा के गुलअफसा बाग मे भी प्रति वर्ष हजारो अनानास पैदा होते हैं।

भारत वर्ष के पुष्प सारे संसार के पुष्पो से अधिक सुगन्धित होते हैं। सर्वप्रथम चम्पा उल्लेख के योग्य है जिसकी सुगन्ध बहुत ही मधुर होती है। इससे भी बढिया केवडा का पुष्प है। इसका आकार विचित्र है। इसकी सुगन्ध इतनी तेज होती है कि कस्तूरी भी इसके सामने कुछ नही। दूसरा पुष्प अराईवेल का है। इसकी सुगन्ध चमेली से मिलती जुलती है। मौलसरी का वृक्ष बडा सुन्दर और छायादार होता है। इसके पुष्प की सुगन्ध बडी आनन्ददायक होती है। इसी प्रकार केतकी का पुष्प है। ये केवडा से मिलता जुलता है। परन्तु केवडे मे कांटे होते है केतकी मे नही। इन पुष्पों से और चमेली से सुगन्धित तेल बनाये जाते है। अन्य पुष्प इतने हैं कि उनकी गणना नहीं की जा सकती। वृक्षो मे सर्व सनाबर, चनार और विदमुल्ला उल्लेखनीय है। पहले भारत मे ये वृक्ष नहीं थे परन्तु अब इनकी विपुलता है। चन्दन का वृक्ष कभी जावा सुमात्रा आदि टापुओ मे होता था। अब यहाँ के बागों मे होने लग गया है।

आगरा के निवासी कारीगरी का काम और विद्या की खोज में बडा परिश्रम करते है। प्रत्येक धर्म के और सम्प्रदाय के विभिन्न विद्वानों ने इस नगर में रहना शुरू कर दिया है।

शाही तख्त पर बैठने के बाद मैने प्रथम आदेश यह दिया कि एक न्याय श्रृखला लगाई जावे। यदि न्याय विभाग के लोग विलम्ब या मिथ्याचार करे तो उत्पीडित लोग इस जंजीर को खींचे और मेरा ध्यान आकर्षित करें। मैने उन लोगों को आदेश दिया कि वह जजीर शुद्ध सोने की और 30 गज लम्बी बनाई जाय और इसमें 60 घण्टियाँ हों इसका वजन 4 भारतीय मन होना चाहिए। इसका एक छोर आगरा के शाह बुर्ज पर लगाया जावे और दूसरा एक पत्थर के स्तम्भ से जो नदी के तट पर स्थित हो लगा दिया जावें। मैंने अपने सारे साम्राज्य में पालनार्थ दस्तूर-उल-अमल के 12 आदेश जारी किये।

1. **जकात कर का निषेध**—मैंने तमगा और मीर बहरी नामक कर लगाने का निषेध कर दिया। साथ ही उन सब करों को भी बन्द कर दिया जो प्रत्येक सूबा और सरकार के जागीरदार अपने लाभ के लिये लगाने के आदी थे।

2. आम रास्तों पर डकैती और चोरी के विषय में नियम—जिन रास्तों पर डकैतियाँ और चोरियाँ हुआ करती थीं और रास्ते बस्तियों से दूर थे, उनके विषय में आदेश हुआ कि पास के जागीरदार वहाँ सराय या मस्जिद बनायें और एक कूँआ खुदवायें जिससे खेती की उन्नति हो और लोग वहाँ बसने के लिए प्रेरित हों। अगर ऐसे स्थान खलिसा भूमि के निकट हों तो यह कार्य सरकारी अफसर करें।

3. मृतक व्यक्तियों की सम्पत्ति का बिना कर उत्तराधिकार—मार्गों पर व्यापरियों के गट्ठों को उनकी अनुमति के बिना कोई नहीं खोले।

4. साम्राज्य में जब किसी मुसलमान या काफिर की मृत्यु हो जावे तो उसकी सम्पत्ति और सामान बिना किसी हस्तक्षेप के (अधिकारी को) उत्तराधिकारी को मिले। यदि कोई उत्तराधिकारी न हो तो, उसकी सम्पत्ति को सँभालने के लिए राजकर्मचारी नियुक्त किये जायें और इस्लाम के कानून के अनुसार यह सम्पत्ति मस्जिद और सरायों के निर्माण में, टूटे हुए पुलों की मरम्मत में तथा तालाब और कूंए बनाने में खर्च की जाए।

5. समस्त मादक वस्तुओं और मद्य के विषय में—यद्यपि मुझे अठारह वर्ष की आयु से अब तक जब मैं 38 वर्ष का हो गया हूं, मद्यपान की आदत है और मैं नित्य प्रति उसका सेवन करता आया हूँ, तथापि शराब और सब प्रकार की मादक वस्तुओं का मैने निषेध कर दिया है। ये चीजें न बनाई जा सकती हैं और न बेची जा सकती हैं। आरम्भ में जब मुझे मद्यपान की लालसा हुआ करती थी तो मैं कभी दोबारा खींची हुई शराब के बीस प्याले तक पी जाया करता था। कुछ अर्से बाद इसका मुझ पर बडा असर हुआ और मैंने इसकी मात्रा घटाना शुरू कर दिया। सात वर्ष के अर्से में मैंने यह घटाकर पॉच या छः प्याले कर दी। मेरा मद्यपान का समय बदला करता था। कभी–कभी मैं जब दो–तीन घण्टे दिन रहता था तो पीना शुरू करता था और कभी–कभी रात में भी पीता था और दिन में भी कुछ पीता था। यह तीसवें वर्ष तक चलता रहा। तब मैंने निश्चय कर लिया कि मैं रात में केवल एक प्याला पिया करूँगा। इस समय मैं पाचन के लिए ही पीता हूँ।

6. मकान छीनने का और अपराधियों के नाक-कान काटने का निषेध—कोई व्यक्ति दूसरे के मकान पर अधिकार न करे।

7. मैंने आदेश दिया कि अपराधियों के नाक–कान किसी भी अपराध के लिए कोई न काटे और मैंने ईश्वर के सामने प्रण किया कि मैं किसी को इस प्रकार का दण्ड नहीं दूँगा।

8. भूमि हरण का निषेध—खालिसा के राजकर्मचारी और जागीरदार बलपूर्वक रैयत की भूमि का हरण न करें और उसमें अपने लिए खेती न करें।

9. खालिसा भूमि के और जागीरदारों के संग्राहक मेरी अनुमति के बिना अपने जिलों के लोगों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित न करें।

10. **अस्पतालों का निर्माण और रोगियों की चिकित्सा के लिए हकीमों की नियुक्ति**–बड़े–बडे नगरों में अस्पताल बनाये जायें और बीमारों को देखने के लिए हकीम नियुक्त किये जायें। इसका खर्च शाही कोष से दिया जाए।

11. **कुछ दिनों जानवरों के वध का निषेध**–अपने पिता का अनुकरण करते हुए मैंने आदेश दिया कि 18 रबी–उल–अब्बल से, जो मेरा जन्म दिन है, उतने दिन तक किसी जानवर का वध न किया जाए, जितने वर्ष की मेरी उस समय आयु हो। प्रति सप्ताह भी दो दिन वध का निषेध था–वृहस्पतिवार को, जो मेरे राज्याभिषेक का दिन था और रविवार को जो मेरे पिता का जन्म दिन था।

12. मैंने आदेश दिया कि मेरे पिता के समय के सेवकों के पद और जागीरें पूर्ववत रहनी चाहिये। फिर उनके पदों में 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक की वृद्धि की गई और निजी सेवकों का वेतन 20 प्रतिशत बढा दिया गया।[1]

शुभ घडी में मैंने आदेश दिया कि विभिन्न वजन के सिक्के सोने और चांदी के बनाये जायें। प्रत्येक मुद्रा का मैंने जुदा नाम लिखा। 100 तोले की मौहर का नाम नूरशाही, 50 तोले की मौहर का नाम नूरसुल्तानी, 20 तोले की मौहर का नाम नूरदौलत, 10 तोले की मौहर का नाम नूरकरम, 5 तोले की मौहर का नाम नूरमिहर और 1 तोले की मौहर का नाम नूरजहांनी, आधी मौहर नूरानी, पाव मौहर खाजी कहलती थी। चांदी के सिक्कों मे 100 तोले वाले सिक्के का नाम कोकब–ए–ताली, 50 तोले के सिक्के का नाम कोकब–ए–इकबाल, 20 तोले के सिक्के का नाम कोकब–ए–मुराद, 10 तोले के सिक्के का नाम कोकब–ए–बख्त, एक तोले के सिक्के का नाम जहांगीरी रखा गया। आधा जहांगीरी सुल्तानी कहलाता था और पाव जहागीरी का नाम निसारी था। दाम खैर कबूल कहा जाता था। तांबे के सिक्के भी इसके अनुपात से बनाये गये थे और प्रत्येक वर्ग के सिक्कों का विशेष नाम रखा गया था। मैंने हुक्म दिया कि 100, 50, 20, 10 तोले वाली मोहरों पर निम्नलिखित आसफ खाँ लिखित शेर (छन्द) का ठप्पा लगाया जाए।

---

1. लेखकों ने जहाँगीर का जन्म दिन 17 रबी–उल–अब्बल लिखा है। उसका जन्म 18 शहरीवर को हुआ था। (अकबर नामा भाग 2, पृष्ठ 344) जो 17 रबी–उल–अब्बल था। जहाँगीर वृहस्पतिवार का मुबारक शम्बा मानता था और बुधवार का कम शम्बा कहा करता था। इसलिये उसने अपना जन्म वृस्पतिवार तारीख 18 रबी–उल–अब्बल लिख दिया होगा।

मुद्रा पर लिख दिये भाग्य में, सोने के अक्षर गंभीर।
शासन करता है यहां पर नूरुद्दीन जहांगीर।

शेर के पंक्तियों के बीच मे कलिमा का ठप्पा लगाया गया दूसरी ओर भी एक शेर लिखा गया जिसमें उसके निर्माण का सन् दिया हुआ था और टकसाल हिजरी सन् (1014 हिजरी) और शासन वर्ष का ठप्पा था।

रवि सदृश–चमकाता जग को, यह सिक्का जहांगीरी।
आफताब–ए–ममलकत को किया गया था यह जारी।

नूरजहांनी का वजन साधारण स्वर्ण मुद्रा से 20 प्रतिशत अधिक है। उस पर अमीर–उल–उमरा की लिखी हुई निम्नलिखित शेर की पंक्तियाॅ हैं।

अकबर पुत्र जहांगीर ने यह मुद्रा जारी की थी।
स्वर्ण चमक को सूर्य चन्द्र की ज्योति से चमकाया था।

इसके अनुसार आधी शेर सिक्के के प्रतिपार्श्व पर ठोकी गई थी और टकसाल हिजरी सन् व शासन सन् भी दिया गया था। जहांगीरी सिक्कों को वजन में 20 प्रतिशत अधिक है रुपये के बराबर माना जाता था। इसका वजन भी नूरजहानी की भांति निश्चित किया गया था। यह सोने और चादी दोनों का बनता था। एक तोले का वजन ईरान और तूरान के ढाई मिस्कल के बराबर होता था।

मेरे राज्यारोहण की जो तारीख कविता मे लिखी गई थी उन सबका उल्लेख नही किया जा सकता। मैने अपने पुत्र खुसरो को एक लाख रुपये इसलिये दिये कि दुर्ग के बाहर वह पिछले खानखाना मुनीम खां के मकान को अपने लिये (उपयुक्त) बना ले। पजाब का शासन सईद खां के सुपुर्द किया गया। वह विश्वस्त सरदार था और मेरे पिता के साथ उसका वैवाहिक सम्बन्ध था। वह मुगल जाति का था और उसके पूर्वज मेरे पिता की सेवा करते थे। जब वह मुझसे विदा होने वाला था तो मैंने सुना था कि उसके नादिर निर्बल और निर्धन लोगो पर अत्याचार करते हैं और उन्हें पीडा देते हैं। तब मैंने उससे कहलाया कि मेरी न्याय भावना किसी के अत्याचार को सहन नहीं कर सकेगी। और न्याय की तुला में छोटेपन बडेपन का विचार नहीं किया जाता। इसके बाद सईद खां के लोग किसी पर कठोरता या क्रूरता करते हुए पाये जायेंगे तो उनको दण्ड मिलेगा और कोई रियायत नहीं की जायेगी।

मैंने पहले ही शेख फरीदबुखारी को एक खिलअत, एक जडाऊ तलवार, कलम दान तथा एक कलम प्रदान करके उसको उसी के स्थान पर रखा। मेरे पिता के समय में वह मीर बख्शी था। मैंने उससे कहा मैं तुमको सारी साहिबुस सेफवलकलम (तलवार और कलम) का धनी समझता

हूँ। मुकीम खां को मेरे पिता ने अपने शासन के अन्त में वजीर खां की उपाधि देकर साम्राज्य का वजीर (महामंत्री) नियुक्त कर दिया था। मैंने उसकी उपाधि पद और सेवा पूर्ववत बनाये रखी। मैंने ख्वासगी फत्तोल्ला को पूर्ववत बख्शी नियुक्त करके खिलअत प्रदान की। अब्दुर्रजाक सामूरी जब मैं शाहजादा था तो मेरी नौकरी अकारण ही छोडकर मेरे पिता के पक्ष मे चला गया था तथापि मैंने उसको पूर्ववत बख्शी के पद पर रहने दिया और खिलअत प्रदान की। अमीनुद्दौला मेरे पिता के समय में आतिस–ए–बेगी था। वह बिना छुट्टी भाग कर मेरे पूज्य पिता की सेवा में चला गया था। तथापि मैंने उसको अपने पूर्व पद पर रहने दिया। जो व्यक्ति मेरे पिता के समय में जिन पदों पर थे उनको मैने उन्हीं पदों पर रहने दिया। युवावस्था मे शरीफ खां मेरे पास रहता था। जब मैं शाहजादा था तो मैने उसको खान की उपाधि प्रदान की थी। जब मैं इलाहाबाद छोडकर अपने पिता की सेवा में उपस्थित होने के लिए चला तो मैंने उसको एक नौबत तोमानतोग (ध्वज) प्रदान किया। मैं उसको 2 हजार 500 का मनसबदार और बिहार प्रान्त का सूबादार पहले ही बना चुका था। उस प्रान्त पर उसको पूर्ण अधिकार देकर मैने रवाना कर दिया। मेरे सिहासन पर बैठने के 15 दिन पश्चात् 4 रजब को वह मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके आगमन से मुझे बडा हर्ष हुआ। उसका मेरे साथ ऐसा सम्बन्ध है कि मैं उसको पुत्र, भाई, मित्र और साथी समझता हू। उसकी मित्रता बुद्धि, विद्या, कार्य, ज्ञान पर मुझे पूरा विश्वास था मैने उसको 5 हजार जात और पाच हजार सवार का मनसबदार बना कर अमीरुल–उमरा की उपाधि दी। मेरे सेवकों में इससे ऊँचा पद किसी का नहीं है। वह इस पद से भी ऊँचे पद के योग्य था परन्तु स्वयं उसने मुझसे निवेदन किया इस पद पर अब तक मैं कोई उल्लेख के योग्य कार्य न करूँ तब तक ५ हजार के मनसब से ऊँचा पद प्राप्त नहीं करूँगा।

मेरे पिता के सेवको की स्वामिभक्ति अभी वास्तव में दृष्टिगत नही होती थी बल्कि कुछ दोष, भूलें और अनुचित इरादे जो ईश्वर को भी पसन्द नही थे, प्रकट होते थे। और यह लोग स्वयं ही लज्जित थे। यद्यपि राज सिंहासन पर बैठने के दिन मैंने सब अपराध क्षमा कर दिये थे और अपने मन में निश्चय कर लिया था कि मैं पिछले कार्यों का किसी से बदला नहीं लूंगा। फिर भी उनके विषय में मेरे मन मे शंका उत्पन्न हो चुकी थी। इसलिये मैंने अपने सरक्षक अमीरुल–उमरा से परामर्श किया। यद्यपि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने भक्तों का और विशेषकर बादशाहों का संरक्षक है। क्योंकि इन्हीं के कारण ससार मे शान्ति बनी रहती है। तो भी

मैंने परामर्श किया इसका पिता अब्दुल समद अपने समय में चित्रकला में अद्वितीय था और जनत आसयानी (हुमायूँ से उसकी शीरीं कलम) की उपाधि मिली थी ओर उसकी सभा मे इसकी बडी प्रतिष्ठा थी तथा उसके साथ उसकी घनिष्ठता थी वह सीराज का एक मुख्य पुरुष था। उसकी पिछली सेवाओं के कारण मेरा पिता उसका बडा आदर करता था। मैंने राजा मानसिंह को पूर्ववत बंगाल का शासक बनाये रखा। वह मेरे पिता के समय में बडे से बड़े और सर्वाधिक विश्वसनीय सरदारों में एक था। उसका इस कीर्तिमान कुटुम्ब से वैवाहिक सम्बन्ध था। उसकी बुआ मेरे पिता के घर में थी अर्थात उसकी पत्नी थी। मानसिंह की बहिन से मेरा विवाह हुआ था। खुसरो उसकी बहिन सुल्तानुनिसा बेगम उसी के उदर से उत्पन्न हुए थे। अपने कुछ कार्यों के कारण उसको यह आशा नहीं थी उसके प्रति ऐसी कृपा प्रकट की जावेगी। तथापि मैंने उसको यह खिलअत प्रदान की जो चारकब कहलाती थी और उसको एक जडाऊ तलवार और एक मेरा निजी घोडा देकर अपने प्रान्त से विदा किया था। वह पचास हजार सवार रख सकता था। उसका पिता राजा भगवान दास था। उसका पितामह राजा बिहारी मल था। कछावा राजपूतो में यह पहला सरदार था जिसने मेरे पिता की सेवा का सम्मान प्राप्त किया था। वह सच्चाइ और मित्रता तथा वीरता के लिए अपनी मे सबसे ऊँचा था।

राणा के विरूद्ध अभियान—तख्त पर बैठने के पश्चात् जब सरदार अपने लोगों के साथ मेरे महल पर उपस्थित हुए तो मेरे मन मे यह बात आई कि मै इन लोगों को अपने पुत्र सुल्तान परवेज के नेतृत्व में राणा के विरूद्ध जिहाद (धार्मिक) युद्ध करने के लिए रवाना करूँ। राणा के कर्म अच्छे नही थे। वह हिन्दुस्तान का एक गदा काफिर था। मेरे पिता के समय में उसके विरूद्ध निरन्तर सेनाये भेजी गई थी परन्तु वे उसको नहीं भगा सकीं। शुभ मुहूर्त में मैंने अपने पुत्र को शानदार खिलअत और जडाऊ तलवार, खंजर और मोतियों की माला जिसमे 72 हजार रूपये की लालें लगी हुई थीं दी ओर ईराकी और तुर्कमान घोडे और प्रसिद्ध हाथी देकर उसको विदा किया। उसके साथ काम करने के लिए मैने 20 हजार सवार, सरदार और मुखिया लोग भेजे इनमे सर्वोपरि आसफ खां था जो मेरे पिता का एक विश्वसनीय सेवक था और लम्बे अर्से तक बख्शी के पद पर तथा तत्पश्चात् दीवान व इस्तिकलाल (पूर्ण शक्ति सम्पन्न) के पद पर काम कर चुका था। मैंने उसको अमीर से वजीर बनाया और उसका 2 हजार 500 सवारों का मनसब बढ़ाकर 5 हजार कर दिया तथा परवेज का उसे संरक्षक बना दिया। उसको एक खिलअत जडाऊ तलवार, एक घोड़ा और हाथी

देकर सम्मानित किया। उन्हें यह भी आदेश दिया कि सारे मनसबदार चाहे वे छोटे हों या बड़े उसकी आज्ञा का पालन करें। मैंने अब्दुर्रजाक मामूरी का उसका बख्शी और आसफ खाँ के चाचा मुख्तार बेग को परवेज का दीवान बनाया। राजा बिहारी मल के पुत्र राजा जगन्नाथ को मैंने 5 हजार का मनसबदार बनाकर एक खिलअत और जडाऊ तलवार प्रदान की।

मैंने फिर राणा शंकर को जो राणा का चचेरा भाई था यह खिलअत और जड़ाऊ तलवार प्रदान करके उसके साथ भेजा मेरे पिता ने इसको राणा की उपाधि प्रदान की थी और राणा के विरूद्ध उसको खुसरो के साथ भेजना चाहता था परन्तु उसी समय उसकी (अकबर) की मृत्यु हो गई।

राजा मानसिंह के भाई के पुत्र माधोसिंह को और राइसाल दरबारी को मैंने झंडे दिये। इसलिए कि वह दरबार में हमेशा हाजिर रहते थे, और शेखावत राजपूत थे और मेरे पिता के विश्वसनीय सेवक थे। मैंने प्रत्येक को तीन–तीन हजार का मनसब दिया।

मैंने शेख रुकुनुद्दीन अफगान का मनसब 500 से 3500 कर दिया। जब मैं शाहजादा था तो मैंने इसको शेरखाँ की उपाधि दी थी। शेरखाँ अपनी जाति का बड़ा वीर मुखिया है। उजबेगों के साथ लडते हुए उसकी बाँह कट गई थी। शेख अबुलफजल के पुत्र रहमान को और राजा मानसिंह के पौत्र मानसिंह को तथा सादिकखाँ के पुत्र जाहिदखाँ को और बजीर जमील और कराखाँ तुर्कमान को दो दो हजार का मनसब दिया और इन सबको खिलअत और घोडे देकर विदा किया। मनोहर ने भी इस चढ़ाई में सम्मिलित होने की अनुमति प्राप्त करली। यह शेखावत कछावा जाति का है। उसकी युवावस्था में मेरे पिता ने उस पर कृपाएं की थीं। उसने फारसी पढ़ी थी यद्यपि उससे लेकर आदम तक उसकी जाति के किसी व्यक्ति को समझदार नही कहा जा सकता। परन्तु मनोहर बे–समझ नहीं हैं। यह फारसी में शेर बनाया करता है उसकी एक शेर निम्नलिखित है।

छाया प्रभु ने जगत में इसलिए रची उदार
मेरे प्रभु रविदेव पर, होय न चरण प्रहार।

यदि सब सेनानायकों का और अहदियों आदि का वर्णन किया जावेगा तो बडा विस्तार हो जावेगा। सारांश यह है कि सेना ईरानी बडी थी कि किसी भी शक्तिशाली शासन के विरुद्ध भेजी जा सकती थी।

जब मैं शाहजादा था तो मैंने अपनी छाप की अँगूठी अपने विश्वसनीय व्यक्ति अमीर–उल–उमरा को दे दी थी। जब वह बिहार चला गया तो

मैंने यह अंगूठी परवेज को दे दी। जब परवेज ने राणा के विरूद्ध प्रयाण किया तो पूर्व व्यवस्था के अनुसार मैंने यह अंगूठी पुनः अमीर–उल–उमरा को दे दी।

परवेज साहिब जमाल से पैदा हुआ था। जो जेनखाँ कोका की चचेरी बहिन थी और सम्बन्ध की दृष्टि से इसका पद मिर्जा अजीज कोका के समान था, जब परवेज का जन्म हुआ तो मेरे पिता का 34 वां शासन वर्ष था। यह काबुल नगर में खुसरो के जन्म के दो वर्ष और दो मास बाद उत्पन्न हुआ था। मेरे बहुत से बच्चे हुए जिनकी मृत्यु हो गई। फिर राठौड जाति की कर्मसी से एक पुत्री उत्पन्न हुई जिसका नाम बिहारबानू बेगम रक्खा गया। मोटा राजा की पुत्री जगत गुसाई (जोधाबाई) से मेरे पिता के शासन के 36 वे वर्ष में सुल्तान खुर्रम लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ। यह 999 हिज्री का वर्ष था। उसके जन्म से संसार को प्रसन्नता हुई। ज्यों ज्यों वह बडा हुआ त्यों त्यों उसके गुणों में वृद्धि होती गई। खुर्रम का मन मेरे पिता के साथ सबसे अधिक लगता था और उसकी सेवा से मेरे पिता भी अधिक प्रसन्न थे। उन्होंने मुझसे कई बार कहा था कि दूसरे बच्चों से खुर्रम की तुलना नहीं हो सकती। मेरे पिता खुर्रम को अपना ही बच्चा मानते थे।

इसके पश्चात दो बच्चे दो अवैध पत्नियो से हुएं एक का नाम मैने जहांदार और दूसरे का नाम शहरयार रक्खा।

बादशाह बनने से एक वर्ष पहले मैंने निश्चय किया था कि मैं शुक्रवार की सायं मद्य–पान नहीं करूंगा। मुझे आशा है कि ईश्वर इस व्रत के निर्वाह में मेरी आजीवन सहायता करेगा।

मैंने अपने साम्राज्य का मत्री पद दो भागों मे विभक्त कर दिया। आधा खानबेग को दिया जिसको मैने जब मै शाहजादा था तो वजीर उल–मुल्क की उपाधि दी थी। आधा पद वजीर खा को दिया।[1] शेख फरीदबुखारी का मनसब 4000 से 5000 कर दिया गया। रामदास कछावा का मनसब जिस पर मेरे पिता की कृपा थी 2000 से 3000 कर दिया। मैने कन्धार के शासक शाह इस्माइल के पौत्र को और मिर्जा सुल्तानहुसैन के पुत्र मिर्जा रुस्तम को बहरामखां के पुत्र अब्दुर्रहीम को खिलअते भेजी।

तख्त पर बैठने के एक मास बाद मैंने लालबेग का मनसब 1500 से 4000 कर दिया। मैं पहिले ही इसको बाजबहादुर की उपाधि दे चुका

---

1 इसका अभिप्राय यह था कि यह दोनो व्यक्ति मिलकर प्रधानमंत्री का कार्य करते थे देखो मआनिर–उल--उमरा तृतीय 932।

था। इसका पिता हमायूँ का पुस्तकाध्यक्ष था। मैडता के राजपूत केशवदास मारु को 1500 का मनसब दिया। मैंने उल्माओं को आदेश दिया कि ईश्वर के ऐसे नामों का संग्रह करें जो आसानी से याद रह सकते है। मैं उसका प्रतिदिन स्मरण करना चाहता था। मै शुक्रवार की रात को विद्वानों, संतों, दरवेशों और फकीरों की संगति में रहता था। किलीजखां को गुजरात सूबा का शासक बनाकर 1 लाख रुपये दिये। मीरान सदर सदर का मनसब 2000 से 4000 कर दिया। मैं उसको बचपन से जानता था। उस समय मैंने शेख अब्दुलनवी से 50 कहावतें पढी थीं। अब्दुलनवी का इतिहास अकबर नामे में दिया हुआ है।

मेरे बचपन से अब तक मीरान सदरजहाँ मेरे प्रति बडा वफादार रहा है। मैं धार्मिक मामलों में उसको खलीफा मानता हूं। जब मैं शाहजादा था मेरे पूज्य पिता बीमार थे तो साम्राज्य के मंत्रियों ओर बड़े–बड़े सरदारों में क्षोभ उत्पन्न हुआ था। वह प्रत्येक अपने लाभ का विचार करके ऐसा काम करना चाहता था, जिससे साम्राज्य का केवल विनाश ही होता। उस समय इस व्यक्ति की सेवा और स्वामिभक्ति मे कोई कमी नहीं आई। इनायत बेग मेरे पिता के राज्य में दीवान–ए–बूयूतात था और 700 का मनसबदार था मैंने उसको वजीर खॉ के स्थान पर आधा वजीर बनाकर इतिमादुद्दौला की उपाधि और 1500 की मनसबदारी प्रदान की। मैंने वजीर खां को बंगाल की दीवानी दी और वहां की भूमिकर की व्यवस्था उसके सुपुर्द की। मेरे पिता के समय मे पतरदास को रायरायान की उपाधि थी मैने उसको राजा विक्रमादित्य की उपाधि दी। राजा विक्रमादित्य भारतवर्ष का एक बडा राजा था उसके राज्यकाल में भारतवर्ष में वेधशालाएं स्थापित की गई थीं। मैंने पतरदास को मीर आतिश नियुक्त किया और हुक्म दिया कि शस्त्रागार में छोटी–छोटी 50000 तोपे और 3000 तोपों की गाड़ियॉ सदैव तैयार और अच्छी हालत में रक्खी जावें। वह खत्री जाति का था और मेरे पिता के रामय से वह हाथियों के तबेले का कारकून था। फिर वह बढकर दीवान और अमीर बन गया था। उसमें सैनिक गुणों की और प्रशासनिक चातुर्य की कमी नहीं थी। मैंने खान–ए–आजम (अजीज कोका के पुत्र खुर्रम) का मनसब 2000 से 2500 कर दिया।

मेरी इच्छा थी कि अकबरी और जहाँगीरी अधिकारियों में से अधिकांश की इच्छाएं पूर्ण की जावें। इसलिए मैंने बख्शियों को सूचना दी कि जो कोई अपने जन्म स्थान को अपनी जागीर बनाना चाहे वह इस विषय में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करे जिससे चंगेज के कानून के अनुसार वह जायदाद उसकी सम्पत्ति बना दी जावे और उसको परिवर्तन का भय नहीं रहे। हमारे पूर्वजों

की यह आदत थी कि वह प्रत्येक (अधिकारी) को जागीर दिया करते थे। उन्हे उसका स्वामित्व दे दिया करते थे। उनके फरमानो पर हल तमगा की मुहर लाल स्याही से लगाई जाती थी। मैंने आदेश दिया कि मुहर की जगह पर तिलामोश (स्वर्णपत्र) लगा कर उस पर छाप या मुहर ठोकी जावे। मै इसको अल्तून तमगा कहता था।

मैंने शाहरुख मिर्जा के अन्य पुत्रो को भी चुना। इनमे से मिर्जा सुल्तान को मैने 1000 का मनसब दिया। इसके पूर्वज बदख्शा के शासक थे। राजा मानसिह के पुत्र भावसिह का मनसब बढाकर 1500 कर दिया गया। यह मानसिह का सर्वाधिक योग्य पुत्र था। काबुल के जमानबेग को महावत खा की उपाधि देकर 1500 का मनसबदार बनाया। वह मेरे शागिर्द पेशा लोगो का बख्शी था। शुरू मे वह अहदी और फिर 500 का मनसबदार था।[1]

मैंने राजा वीरसिह देव बुदेला राजपूत को 3000 का मनसब दिया। वह मेरा कृपापात्र बन गया था और अपने बराबर वालो मे और बन्धु बाधवो मे वीरता, भलाई और सरल हृदयता मे सबसे ऊँचा था। उसकी उन्नति का और उसके प्रति कृपा का कारण था कि मेरे पिता के अन्तिम दिनो मे शेख अबुल फजल ने जो हिन्दुस्तान के शेखजादो मे बुद्धि और विद्या की दृष्टि से बडा ऊचा व्यक्ति था, और जो प्रत्यक्ष मे सच्चा जान पडता था अपनी सारी योग्यता मेरे पिता के हाथो बेच दी थी। उसको मेरे पिता ने दक्षिण से बुलाया था। उसकी भावना मेरी ओर ईमानदारी की नही थी। खुले तौर पर और व्यक्तिगत रूप से वह मेरे विरुद्ध बात किया करता था। इस समय जब उत्पाती प्रपचकारियो ने मेरे पिता की भावनाए मेरे प्रति कटु कर दी थी तो यह निश्चित जान पडता था कि यदि वह (अबुल फजल) मेरे पिता के पास पहुच जावेगा तो इससे बडी गडबड मचेगी और वह मुझे अपने पिता से नही मिलने देगा। इसलिए यह आवश्यक हो गया कि उसको दरबार मे उपस्थित होने से रोका जावे। वीरसिह देव का देश अबुल फजल के रास्ते मे पडता था और उस समय वीरसिह विद्रोही बना हुआ था। अत मैने उसके पास सदेश भेजा कि यदि वह इस द्रोहकारी को रोककर मार देगा तो उसको मुझ से सब प्रकार की कृपा प्राप्त होगी। ईश्वर के अनुग्रह से जब शेख अबुल फजल वीरसिह देव के राज्य मे होकर जा रहा था तो राजा ने उसका मार्ग रोका और हल्की सी लडाई के बाद उसके आदमियो को तितर बितर करके उसको मार डाला। उसने अबुल फजल का सिर मेरे पास इलाहाबाद भेज दिया। यद्यपि इस घटना

1 इसी ने विद्रोह करके जहाँगीर को कैद कर दिया था।

से स्वर्गीय बादशाह के मन मे क्रोध उत्पन्न हुआ तथापि अन्त मे इसी के कारण (अबुल फजल की मृत्यु) मै बिना घबराहट के मेरे पिता की सेवा मे उपस्थित हो सका और शनै शनै. बादशाह का क्रोध भी जाता रहा। मैने मीर जियाउद्दीन को 1000 का मनसब देकर तबेले का कारकून नियुक्त किया और आदेश दिया कि प्रतिदिन लोगो को बख्शीश मे देने के लिए 30 घोडे मेरे सामने प्रस्तुत किये जावे। मैने मिर्जा अली अकबर शाही को 4000 का मनसब और सरकार सभल की जागीर दी।

एक दिन अमीर–उल–उमरा (शरीफ खा) ने एक बात कही जिससे मै बडा प्रसन्न हुआ। ईमानदारी या बेईमानी नकद और माल तक ही सीमित नही है। परिचित लोगो मे ऐसे गुण बतलाना जिनका उनमे अभाव है या अपरिचित लोगो के गुणो को छिपाना भी बेईमानी है। वास्तव मे सच्ची बात तो यह है कि परिचितो और अपरिचितो से कोई भेद न मानकर वह जैसे है वैसे ही उनको बताया जावे।

जब मैने परवेज को बिदा किया तो उससे कहा "यदि स्वय राणा या उसका ज्येष्ठ पुत्र करण तुम्हारे पास आवे और सेवा करना चाहे और आज्ञा पालन का वचन दे तो उसके देश को कोई क्षति नही पहुचाई जावे।" यह बात कहने मे मेरे दो विचार थे। ट्रासआक्सियाना की विजय की इच्छा मेरे पूज्य पिता के दिमाग मे सदैव बनी रहती थी यद्यपि उन्होने बार–बार इसके लिए निश्चित किया परन्तु कोई न कोई घटना होती रही जिससे वे रुक गये। यदि यह काम बन जाता और मेरे मन मे कोई खतरा नही रहता तो मै हिन्दुस्तान मे परवेज को छोडकर अल्लाह पर भरोसा करके अपने पैतृक देश के लिए रवाना हो जाता। विशेष कर इसलिए कि इस समय उस देश मे कोई स्थायी शासक नही था। बाकीखा जो अब्दुल्ला खा और फिर उसका पुत्र अब्दुल मुमीनखा के बाद स्वतत्र शासक बन गया था अब मर गया था। अब उसका भाई वली मुहम्मद खा उस देश का शासक था परन्तु उससे अभी व्यवस्था नही जम सकी थी। दूसरी बात यह थी कि मै दक्षिण के युद्ध की समाप्ति करना चाहता था। इस देश का कुछ हिस्सा मेरे पिता ने प्राप्त कर लिया था। अब मै चाहता था कि इस पूरे देश पर अधिकार करके उसे साम्राज्य मे सम्मिलित कर लिया जावे। मुझे आशा है कि अल्लाह के अनुग्रह से यह दोनो प्रयास सफल हो जावेगे।

मिर्जा सुलेमान एक समय बदख्शा का शासक था। मैने उसके पौत्र मिर्जा शाहरुख का मनसब 5000 से बढाकर 7000 कर दिया। उसका मेरे कुटुम्ब से निकट सम्बन्ध था। यह मिर्जा स्वभाव मे सच्चा तुर्क है और सरल चित्त है। मेरे पिता उसका बडा सम्मान करते थे। जब मेरे पिता इस मिर्जा

के पुत्रों को बैठने के लिये कहते थे तो वह इसको बड़ा सम्मान समझकर बहुत संतुष्ट होता था। बदख्शां के लोगों का स्वभाव उत्पाती है परन्तु इस मिर्जा ने कभी सत्पथ का त्याग नहीं किया और न कभी ऐसा कार्य किया जो मुझ अच्छा न लगे मैंने उसको मालवा के सूबेदार के पद पर ही रहने दिया यह पद मेरे पिता ने कृपा करके उसको प्रदान किया था।

मैंने ख्वाजा अब्दुल्ला का एक हजार का मनसब बहाल रखा। यह शुरू में अहदी था फिर इसको 1000 का मनसब मिल गया था यह अकारण ही मेरे पिता की सेवा में चला गया था। जब यह मेरे पिता की सेवा में मेरी इजाजत के बिना ही चला गया तो मुझे खिन्नता हुई। परन्तु यह मर्द और जोशीला आदमी है।

अबुल नवी उजबेग को जो मवरुन्नहर का प्रसिद्ध निवासी है और अब्दुल मुनीम खां के समय में मसहद का सूबेदार था, 1500 का मनसब दिया गया।

शेख हसन शेखवहा का पुत्र है यह बचपन से अब तक मेरी सेवा कर रहा है। जब मैं शाहजादा था तो इसको मैंने मुकर्रबखां की उपाधि दी थी वह सेवा में तत्पर और सक्रिय रहता था और शिकार के समय लम्बे फासले तक मेरे साथ जाया करता था। वह तीर और बन्दूक का निशाना लगाने में चतुर था और चीरफाड का काम करने में यह अपने समय में बहुत ही कुशल था। इसके पूर्वज भी यही पेशा करते थे। तख्त पर बैठने के बाद मैंने इसको पूर्ण विश्वसनीय समझकर बुरहानपुर इसलिये भेजा कि वह मेरे भाई दानियाल के बच्चों एवं आश्रितों को मेरे पास ले आवे और खानखाना को स्पष्ट और बुलन्द शब्दों में संदेश भेजा और लाभकारी चेतावनी दी। मुकर्रबखां ने यह सेवा थोडे से समय में और भली–भांति की और खानखाना और उधर के सरदारों के मन के संदेह दूर कर दिये। मेरे भाई के पीछे जो लोग रह गये थे उनको और उनके अनुयायियों को तथा उनके माल असबाब को सुरक्षित लाहौर ले आया और सबको मेरे सामने प्रस्तुत किया।

मैंने नक़ीबखां को 1500 का मनसब दिया वह कलवीन का असली सैयद है। उसे गयासुद्दीन अली कहा जाता है मेरे पिता ने उसको नकीबखां की उपाधि दी थी। मैं उसका बड़ा लिहाज करता था मेरे पिता की इसके साथ बड़ी घनिष्ठता थी। सिंहासन पर बैठने के थोड़े दिन बाद उस अकबर ने इसके साथ अनेक विषयों पर चर्चा की थी। इस घनिष्ठता के कारण अकबर इसको अखंड कहा करता था इतिहास और जीवन चरित्र के क्षेत्र में नक़ीबखां अद्वितीय है। सारे संसार में इसके समान तिथिक्रम का ज्ञाता कोई नहीं है। सृष्टि से आदि से अब तक की सारे संसार की कहानियाँ इसको कण्ठाग्र है।

शेख सलीम के कुटुम्ब के शेख सलीम को मैंने जब मैं शहजादा था तो उसके मर्दानगी और बहादुरी के लिए शुजातअतखां की उपाधि देकर सम्मानित किया था अब मैंने उसका एक हजार का मनसब प्रदान किया।

जयपुर के कुछ कच्छावां का वध–27 शाहाबाद (28 दिसम्बर 1605) को अर्खराज के पुत्रों ने एक विचित्र कार्य किया यह राजा भगवानदास का पुत्र था जो राजा मानसिंह का चाचा था। इन दुर्भागियों के नाम अभयराम, विजयराम और श्यामराम थे और ये बडे ही शराबी थे। अभयराम ने अनुचित कार्य किये थे तो भी मैंने उसके अपराधो की ओर आँख बन्द कर ली थी। इस दिन मुझसे कहा गया कि वह बिना इजाजत अपनी स्त्रियों और बच्चों को अपने देश मे भेजकर स्वय राणा के पास भाग जाने का विचार कर रहा है। जो इस कुटुम्ब के प्रति स्वामी भक्त नहीं है। मैंने रामदास और अन्य राजपूत उमरावों से कहा कि उनमें से उसकी कोई जमानत दे दे तो मैं उसको पदवी और जागीर बहाल रहने दूगा और उनके अपराधों की ओर ध्यान न देकर उन्हे क्षमा कर दूंगा। परन्तु वे लोग अत्यन्त उत्पाती थे और उनका रुख खराब था इसलिए किसी ने जमानत नहीं दी। मैने अमीरुल–उमरा से कहा कि उन लोगों की कोई जमानत नही देता है इसलिए जमानत हो जाए तक तक के लिए उन्हे दरबार के किसी सेवक के सुपुर्द कर दिया जावे। अमीरुल–उमरा ने उनको इब्राहीमखां काकर के सुपुर्द कर दिया। इसको सिर दिलावरखा की उपाधि दी गई थी। दूसरा आदमी जिसके सुपुर्द उन्हे किया गया था मगली का द्वितीय पुत्र था और उसको शाहनवाशखां की उपाधि दी। जब इन लोगों ने उन मूर्ख कच्छाओ के शस्त्र उतारना चाहा तो उन्होने इंकार किया और शिष्टता छोडकर व अपने नौकरो सहित लडने के लिए तैयार हो गये। अमीर–उल–उमरा ने इस मामले की सूचना मुझे दी तो मैंने उनको आदेश किया कि उन्हें अपने अपराधों के अनुसार दण्ड दिया जाए। अमीर–उल–उमरा उन्हें हटाने के लिए रवाना हुआ। उसके पीछे मैंने शेख फरीद को भी भेजा। दो राजपूतों ने अमीर–उल–उलरा का सामना किया। एक के पास तलवार थी और दूसरे के पास खंजर था। अमीर–उल–उमरा के कुतुब नामक एक अनुचर ने खंजर वाले राजपूत से भिडन्त की जिसमें राजपूत के टुकडे हो गये। अमीर–उल–उमरा के एक अफगान सेवक ने तलवार वाले राजपूत पर हमला करके उसे मार डाला। फिर दिलावरखां अपना खंजर खींचकर अभयराम की ओर झपटा।

---

1 मानसिंह को भगवान्‌दास ने गोद लिया था। इस स्थल से प्रतीत होता है कि वह उसका भतीजा भी था।

अभयराम और दो अन्य राजपूत लड़ने के लिए डटे हुए थे। दिलावर ने इनमें से एक को गिरा दिया फिर वह आहत होकर गिर पड़ा। अमीर–उल–उमरा के अहदियों और कुछ लोगों ने इन राजपूतों को मार डाला। एक हब्शी दास ने उसका मुकाबला करके उसे मार डाला। यह गड़बड़ महल के चौक में हुई थी। इस दण्ड से औरों को भी चेतावनी मिली। अबुन्नवी ने कहा कि यदि ऐसा काम उजबेग के देश में किया जाता तो इन अपराधियों के सारे कुटुम्बियों को नष्ट कर दिया जाता। मैंने उत्तर दिया कि मेरे पूज्य पिता ने इनकें साथ कृपा पूर्ण बर्ताव किया था और इनको शिक्षा दिलाई थी। मैंने भी इनके साथ वैसी ही भलाई की। न्याय चाहता है कि एक व्यक्ति के अपराध के लिए अनेक लोगों को दण्ड नहीं दिया जावे।

हुसेन जामी की भविष्यवाणी—शेख हुसेन जामी ने मेरे राज्याभिषेक से छः मास पूर्व लाहौर से मुझे लिखा था कि स्वप्न में सन्तों ने उससे कहा है कि अल्लाह जहांगीर को बादशाह बना देगा। उसने लिखा कि जब ऐसा हो जाए तो ख्वाजा जकरिया का अपराध क्षमा कर दिया जाये।

मैंने राज्य के एक पुराने सेवक तासबेग फुरजी को जिसको मेरे पिता ने ताजखां की उपाधि दी थी दो हजार से तीन हजार का मनसबदार बना दिया ओर तख्त बेग काबली का मनसब दो हजार पांच सौ से तीन हजार कर किया। यह मेरे चाचा मिर्जा मुहम्मद हकीम का विश्वासपात्र सेवक था और वीर पुरुष था। मैंने अपने पिता के एक पुराने सेवक अबुल कासीम तमकीन को 1500 का मनसब दिया। इसके 30 पुत्र थे। मैंने शेख सलीम के पौत्र शेख अलाउद्दीन को इस्लाम खां की उपाधि दी और दो हजार का मनसब प्रदान किया। वह बचपन से मेरे साथ पढ़ा हुआ था और मुझसे शायद एक वर्ष छोटा होगा। वह अपने कुटुम्ब में सबसे अधिक प्रसिद्ध है और उसने कभी मद्यपान नहीं किया है। वह मेरे प्रति बड़ा सच्चा हैं मैंने उसको फरजन्द (पुत्र) की उपाधि दी है।

मैंने अली असगर बारहा को शेख खां की उपाधि दी जिससे वह अपने बराबर वालों में और रिश्तेदारों में बड़ा माना जाने लगा। इसका पिता शेख फरीद सईद महमूदखां बारहा मेरे पिता के पुराने सरदारों में था और बड़ा वीर तथा बड़ा जोशीला था। उसने अपने जीवन में कोई मादक वस्तु ग्रहण नहीं की थी। मैंने उसको 3 हजार का मनसब दिया। मैंने फरीदून का मनसब एक हजार से 2 हजार कर दिया। यह मुहम्मद कुली खां बरलास का पुत्र है यह चगताई है और इसमें मर्दानगी और साहस की कमी नहीं है। मैंने शेख सलीम के पौत्र शेख बायजीद का

मनसब 2 हजार से 3 हजार कर दिया । शेख बायजीद की माँ ने ही मुझे सर्वप्रथम एक दिन दूध पिलाया था।

पण्डितों से बातचीत

एक दिन मैंने पण्डितों से कहा आपके धर्म के सिद्धान्त अवतारवाद पर आश्रित है और 10 अवतार माने जाते हैं। परन्तु बुद्धिमान लोग इसको नही मानते। इस विचार के अनुसार ईश्वर जो कि असीम है लम्बाई चौडाई और मोटाई वाला होना चाहिए। यदि उद्देश्य यह है कि ईश्वर का प्रकाश इन अवतारों मे प्रकट होता है तो ईश्वर तो सृष्टि की सारी वस्तुओं मे विद्यमान है इन तीन अवतारों में वह सीमित कैसे हो सकता है। यदि विचार है कि किसी एक व्यक्ति में ईश्वर के गुण आ जाते हैं तो भी यह विचार ठीक नहीं हैं क्योंकि प्रत्येक धर्म के अनुसार कुछ लोग ऐसे होते है जो आश्चर्यजनक चमत्कार करते हैं जो उनके समय के बुद्धिमान लोगो की शक्ति से बाहर है। बडी बहस और विवाद के बाद उन्होंने स्वीकार कर लिया कि सब देवताओं के ऊपर एक ईश्वर है, जो निराकार है और कहा हम निराकार (जात–ए–मुज्जर्रद) की कल्पना नहीं कर सकते। मार्ग सरकार के द्वारा ही है। इसलिए हमने उसको जाने के लिए 10 अवतारों की कल्पना की है। तब मैंने कहा यह 10 अवतार ईश्वर के सामित्थय के सामने पहुँचने के साधन कैसे हो सकते है।

अकबर

मेरे पिता प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय के विद्वानों की संगति किया करते थे। विशेष कर भारतवर्ष के पंडितों का यद्यपि वे निरक्षर थे तो भी विद्वानों और बुद्धिमानों की निरंतर संगति के कारण बहुत सी बातों का उनको स्पष्ट ज्ञान हो गया था और जब वे उनसे बात करते थे तो कोई उनको निरक्षर नहीं जानता था। वह गद्य पद्य की रचना से भली भाँति परिचित थे। इस विषय में उनमें कोई कमी नहीं थी। वे ममूले के कद के थे। परन्तु कुछ लम्बे थे उनका रंग गेहूंवा था। उनकी आँखें और भवें काली थीं उनका रग गोरा नहीं काला था उनका शरीर सिंह का सा था। उनका सीना चौडा था उनके बाहु लम्बे थे उनके नाक के बायीं ओर एक मस्सा था जो देखने में अच्छा मालूम होता था इसका आकार आधे मटर के बराबर था। आकृति विज्ञान के ज्ञाता इसको समृद्धि और सौभाग्य [illegible] थे। उनकी आवाज बडी ऊँची थी उनकी बात उच्च श्रेणी की होती थी अपने गति और विधि में वे सांसारिक पुरुषों के समान नहीं थे उनमें ईश्वर का प्रकाश प्रकट होता था।

मुराद और दानियालः—मेरे जन्म के कुछ मास बाद एक अवैध पत्नी से शाहमुराद पैदा हुआ। वह फतहपुर के इलाके में पैदा हुआ था इसलिए उसको दक्षिण विजय के लिये भेजा तो बुरे लोगो की संगति के कारण यह अत्यधिक मद्यपान करने लगा। जिसके फलस्वरूप बरार प्रान्त में जालनापुर के समीप 30 वर्ष की आयु में उसका देहान्त हो गया। उसकी आकृति में ताजगी थी उसका शरीर पतला और कद लम्बा था उसकी गतिविधि में सत्ता और प्रदेश की उसके ढंग से मर्दानगी और बहादुरी प्रकट होती थी।

10 जुमादल अव्वल (सितम्बर 1572) को एक अवैध पत्नी से दूसरे पुत्र का जन्म हुआ वह अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह के शेख दानियाल नामक सेवक के मकान में पैदा हुआ था इसीलिए उसका नाम दानियाल रखा गया।

मेरे भाई मुराद की मृत्यु के बाद और अपने शासन के अन्तिम वर्षो में मेरे पिता अकबर ने दानियाल को दक्षिण विजय के लिए भेजा और उसके पीछे वह स्वयं भी रवाना हुआ। जब मेरे पूज्य पिता असीरगढ को घेरे हुए थे और घेरे में खानखाना उसके पुत्र और मिर्जा युसुफ खॉ आदि बहुत से उमराव सहयोग दे रहे थे तब दानियाल ने अहमदनगर का घेरा डाल रखा था जब असीरगढ पर विजय प्राप्त हुई उसी समय अहमदनगर भी शाही अधिकारियों का कब्जा हो गया। जब मेरे पिता अर्स आशयानी समृद्धि और विजय के साथ बुरहानपुर से राजधानी को लौटे तो उस प्रान्त को वे दानियाल के सुपुर्द कर आये। दानियाल अपने भाई मुराद की भांति अनुचित मार्ग पर चलने लगा और अत्यधिक मद्यपान के कारण 33 वर्ष की आयु मे उसकी मृत्यु हो गई। उसको बन्दूकों का बडा शौक था उसने एक बन्दूक का नाम जनाजा रख रखा था।

जब उसका मद्यपान सीमा पार कर गया तो मेरे पिता ने खानखाना के नाम फरमान भेजकर उसे फटकारा खानखाना ने उसके पास शराब पहुँचाना बन्द कर दिया तब वह रोने लगा और नौकरों से कहा जैसे भी बन पडे शराब लाओं उसने मुर्सीदकुली खाँ नामक बन्दूकची से उपरोक्त बन्दूक की नाल में रखकर शराब मँगवाई। मुर्सीदकुली शराब बन्दूक की नाल में भर कर ले गया। शराब की तेजी से जंग शराब में घुल गया जिससे पीते ही शाहजादा की मृत्यु हो गई। दानियाल की सूरत सुहावनी थी उसका शिष्टाचार मधुर था। उसको हाथियों और घोडो का शौक था जब कभी वह सुनता था कि किसी के पास अच्छे घोड़े या हाथी हैं तो उसे वह छीन लेता था वह कभी—कभी हिन्दी की कविता बनाया करता था जो अच्छी होती थी।

अकबर के सदगुणः–मेरे पूज्य पिता के सदगुणों की जितनी प्रशंसा की जावे थोडी है। उनके सद्स्वभाव के विषय में कई विषय में कई पुस्तके लिखी जावे तो अत्युक्ति नही होगी। उनका राज्य विस्तृत था। उनका कोष अगणित और कल्पनातीत था। उनके पास कितने ही लडाकू हाथी और अरबी घोडे थे परन्तु ईश्वर के सिंहासन के सामने उनका मस्तक सदैव नम्रता से झुका रहता था। वह ईश्वर को एक क्षण भी नहीं भूलते थे और अपने को एक तुच्छ प्राणी समझते थे।

उनके विस्तृत साम्राज्य में विभिन्न धर्मों के विद्वानों के लिए स्थान था। यह नीति अन्य राज्यो से भिन्न थी। ईरान में केवल शिया लोगों के लिये, तुर्की भारत और तूरान मे केवल सुन्नी लोगों के लिए ही स्थान है। ईश्वर की करुणा सब वर्गो पर और सब सम्प्रदायो के अनुयायियों के लिए है। इसी प्रकार मेरे पिता के विस्तृत राज्य में परस्पर विरोधी धर्मो के लिए स्थान था बुरे और भले विचारो को सहन किया जाता था। निन्दा का मार्ग बन्द कर दिया था। सुन्नी और शिया एक ही मस्जिद में प्रार्थना किया करते थे। इसाई और यहूदी एक ही गिरजे मे जाते थे और अपनी अपनी पूजा विधि के अनुसार किया करते थे।

मेरे पिता प्रत्येक जाति, धर्म और सम्प्रदाय के लोगो से मिलते थे और उन लोगों की स्थिति और बुद्धि के अनुसार उन पर कृपा करते थे। वह रात्रि में जगते रहते थे। दिन मे बहुत कम सोते थे। रात और दिन में वह डेढ पहर से अधिक नही सोते थे। वह रात मे जगने को घडियो के लिये कहा करते थे कि इतनी घडियाँ मेरे जीवन मे बढ गई है। उनका साहस ऐसा था कि वे क्रुद्ध और मतवाले हाथियो पर चढ जाते थे और ऐसे घातक हाथियो को वश मे कर लेते थे जो अपनी हथनियों को भी पास नही आने देते थे। कुस्वभाव वाला हाथी भी अपनी हथिनी और महावत को क्षति नहीं पहुंचाता है। मेरे पिता ऐसे हाथियों को भी वश मे कर लेते थे जो अपने महावतों को और हथिनियों को मार सकते थे और पास नहीं जाने देते थे। मेरे पिता दीवार पर या ऐसे वृक्ष पर चढ जाते थे जिसके पास होकर ऐसा हाथी जा रहा हो जिसने अपना महावत मार डाला हो और जो काबू से बाहर निकल गया हो वे ईश्वर के अनुग्रह पर विश्वास करके उस हाथी की पीठ पर चढ जाते थे और उसको वश मे कर लेते थे। ऐसा कार्य उन्होंने कई बार किया है।

अकबर और हेमू–मेरे पिता अपने चौदहवें वर्ष में राज्य सिंहासन पर बैठे थे। हेमू ने बादशाह हुमायूं की मृत्यु के बाद सेना जुटा ली थी। और इतने हाथी एकत्रित कर लिये थे जितने हिन्दुस्तान के शासक के पास नहीं

थे। फिर उसने दिल्ली की ओर प्रयाण किया। हेमू काफिर था अफगान शासक ने इसको ऊँचा पद दे दिया था हुमायू ने अकबर को यह आदेश दिया था कि वह पजाब की पहाडियो के पास से अफगानो को निकाल भगावे। परन्तु उसी समय छत से गिर पडने से हुमायू की मृत्यु हो गई जिसकी सूचना नजर जीवी ने मेरे पिता के पास पहुचाई।

बैराम खा मेरे पिता का शिक्षक था। उसने प्रान्त के उमरावो को एकत्रित किया और शुभ घडी देखकर लाहौर के निकट कालानूर परगने मे उसको राज्य सिहासन पर बिठा दिया।

जब हेमू दिल्ली के समीप पहुचा तो तारदीबेग खा ने एक बडी सेना सहित उसका सामना किया। परन्तु जोर की लडाई होने पर तारदीबेग खा हार गया। तारदी बेग खा और अन्य पराजित लोग मेरे पूज्य पिता के शिविर मे पहुचे। बेराम खॉ का तारदीबेग से द्वेष था इसलिये इस पराजय का बहाना लेकर तारदीबेग को उसने मरवा दिया।

इस विजय के अभियान के कारण हेमू सेना और हाथियो सहित दिल्ली से निकल कर आगे बढा उसको खदेड भगाने के लिय अकबर कालानूर से चला। वृस्पतिवार तारीख 2 मुहर्रम 964 हिज्री (नवम्बर 5 1556 ई) को मुस्लिम और काफिर सेना मे युद्ध हुआ। हेमू की सेना मे 34000 सवार थे। अकबर की सेना मे 4 या 5 हजार गी थे। उस दिन हेमू हवाई नामक हाथी पर सवार था अक्समात उस काफिर की आख मे एक तीर घुसा ओर उसके सिर की दूसरी ओर निकल गया। यह देख कर उसकी सेना मे भगदड मच गई। सयोगवश शाह कुली खा महरम कुछ इने गिने लोगो क साथ उस हाथी के पास पहुच गया जिस पर आहत हेमू पडा हुआ था। कुली खा महावत पर तीर चलाना चाहता था परन्तु उसने चिल्ला कर कहा मुझे मत मारो। इस हाथी पर हेमू है। तब कुछ लोग हेमू को अकबर के समक्ष उसी अवस्था मे ले गये। बैरामखा ने निवेदन किया कि यदि बादशाह अपनी तलवार से उसे काफिर पर वार करे तो उसको गाजी होने का सौभाग्य प्राप्त होगा और अपने शाही फरमानो मे वह इस उपाधि का उपयोग कर सकेगा। बादशाह ने उत्तर दिया "मै इसके पहले ही टुकडे कर चुका हूँ एक दिन मै ख्वाजा अब्दुस्समद शीरी कलम के सामने एक चित्र की नकल कर रहा था। जिसके अग एक दूसरे से पृथक पृथक थे।"

मेरे निकट खडे हुए लोगो मे से एक ने पूछा "किसका चित्र है" मेरी जबान पर यह शब्द आये कि यह हेमू का चित्र है अकबर ने हेमू के रक्त से अपने हाथ अपवित्र नही किये और एक सेवक से कहा कि उसका सिर काट

डाला जावे। इस लड़ाई में मारे जाने वालो की संख्या 5000 थी। जो लोग इधर उधर विभिन्न स्थानों पर मारे गये वे उनसे अलग थे।

अकबर के कार्य—अकबर का एक प्रसिद्ध कार्य गुजरात का अभियान था। मिर्जा इब्राहीम हुसैन, मुहम्मद हुसैन मिर्जा और शाह मिर्जा ने साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया तो अकबर शीघ्रता से प्रयाण करके गुजरात पहुंच गया। वहां के उमरावों से मिलकर शाही सेना ने अहमदाबाद के दुर्ग को घेर लिया। इस सेना में मिर्जा अजीज कोका भी था। राजधानी फतहपुर से बादशाह शाही सेना सहित गुजरात के लिए रवाना हुआ। दो मास की यात्रा 9 दिन में उसने पूरी की। कभी घोडे पर और कभी ऊट पर और कभी बैलगाडी में सफर करके वह सरनाल पहुंचा।

5 जुमादल अव्वल 980 हिज्री (15 सितम्बर 1572 ई.) को वह शत्रु की शिविर के समीप पहुंच गया, और भक्त लोगों से परामर्श किया किसी ने रात में धावा करने की सलाह दी परन्तु बादशाह ने कहा कि रात्रि मे आक्रमण करना दुर्बलता और छल का मार्ग है। उसने ढोल बजाते हुए साबरमती नदी को अपने सैनिकों सहित पार किया। अकबर की सेना के शौर्य से क्षुब्ध होकर मिर्जा स्थिति को देखने के लिए आगे आया। सुभानकुली तुर्क कुछ वीर सैनिकों के साथ नदी तट पर शत्रु की स्थिति को देखने के लिए गया। मिर्जा ने पूछा कि यह सैनिक कौन है तो सुभानकुली ने उत्तर दिया कि यह बादशाह अकबर की सेना है। मिर्जा को विश्वास नहीं हुआ क्योंकि 15 दिन पहले उसने अकबर को फतहपुर मे देखा था। तब सुभानकुली ने कहा 9 दिन पहले बादशाह ने फतहपुर से प्रयाण किया था। वह अपने साथ हाथी नही लाया उनकी अपेक्षा नवयुवक आये है। जब अकबर ने सुना कि शत्रु लडने के लिए तैयार है तो वह आगे बढा। अकबर को सलाह दी गई कि दुर्ग मे से शाही सेना आ जाये तब आक्रमण करना चाहिए। अकबर ने उत्तर दिया ऐसे मामलो मे ईश्वर पर विश्वास करता हूँ हमको कोई विलम्ब नहीं करना चाहिए। यह कहकर अकबर ने नदी मे घोडा डाल दिया। कुछ चुने हुए लोग उसके साथ थे। नदी मे थाह नही थी। परन्तु वह सुरक्षित पार हो गया। इसी गांव मे मिर्जा ने अपनी सेना जमा ली।

खानआजम को विश्वास नही था कि अकबर इतनी जल्दी आ पहुँचेगा। जब उसको प्रत्यक्ष प्रमाण मिला तो विश्वास हुआ। कुछ थोडी–सी लडाई हुई फिर बादशाह ने भगवानदास से कहा शत्रु अगणित हैं और हम थोडे से है। हमको एक दिल होकर आक्रमण करना चाहिए क्योंकि खुले पंजे की अपेक्षा घूँसा अधिक उपयोगी होता है यह कहकर अल्लाह व अकबर या मुईन का नारा लगाते हुए उसने अपने स्वामिभक्त लोगों के साथ आक्रमण

किया शाही सेना बल और वीरता पूर्वक लडी। शत्रु ने कोकबाई (बारूद के भभके) चलाये। काटेदार झाडियो मे लोग फॅस गये शत्रु का एक हाथी अपनी ही सेना मे गडबड करने लगा। शाही सेना ने आगे बढकर मुहम्मद हुसैन की सेना को तितर बितर कर दिया। बादशाह के देखते–देखते मानसिह दरबारी ने अपने शत्रु को दबा दिया। राघव दास कच्छावा लडता हुआ मारा गया। मुहम्मद वफा घायल होकर गिर पडा। ईश्वर की कृपा से और बादशाह के सौभाग्य से शत्रु हार गया। इस विजय के उपलक्ष्य मे बादशाह ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

बादशाह को सूचना मिली कि शेफखा कोकलतास मुहम्मद हुसैन मिर्जा से लडता हुआ काम आया मिर्जा स्वय आहत हो गया था। कोकलतास जैनखा कोका का बडा भाई था।

मिर्जा मुहम्मद हुसैन का घोडा काटेदार झाडियो मे फस गया मिर्जा गिर पडा। बादशाह के एक अहदी ने उसको देख लिया और उसे अपने धोडे पर बिठाकर वह बादशाह के सामने लाया। उसके हाथ पीछे बधे हुए थे जो बादशाह ने खुलवा दिये। फिर उसने पानी मागा। तो फरहतखा दास ने उसके सिर पर चोट मारी। परन्तु बादशाह को यह कार्य पसन्द नही आया और उसने अपने ही पानी मे से उसको पानी पिलाया। मिर्जा की गिरफ्तारी के बाद बादशाह ने शनै. शनै अहमदाबाद की और प्रयाण किया। मिर्जा को रायसिह राठौड के सुपुर्द कर दिया था। जो उसको हाथी पर बिठाकर अपने साथ लाया। इसी बीच इख्तियारुल मुल्क नामक एक गुजराती सेना नायक ने 5 हजार आदमियो के सहित आक्रमण किया तो शाही सेना मे गडबड मच गई तो बादशाह ने ढोल बजवाये और सुजातखा और राजा भगवान दास ने शत्रु सेना के अग्रभाग पर आक्रमण किया। इस बात का डर था कि कही मिर्जा मुहम्मद हुसैन को छुडा न लिया जावे। इसलिए राजा भगवानदास की योजना के अनुसार रायसिह ने मिर्जा का सिर कटवा दिया। मेरे पिता उसको मारना नही चाहते थे। इख्तियार–उल–मुल्क की सेना बिखर गई और वह स्वय झाडियो मे गिर पडा। पुहराबबेग, तुर्कमान बेग ने उसका सिर काटकर बादशाह के सामने प्रस्तुत किया। अब ईश्वर की कृपा से इतने थोडे से लोगो द्वारा इतनी बडी विजय प्राप्त हो गई।

बगाल प्रान्त और चित्तौड रणथम्भौर और असीरगढ दुर्ग तथा खानदेश का प्रान्त और अन्य प्रान्त शाही सेना के परिश्रम से साम्राज्य के अधीन हो गये। चित्तौड के युद्ध मे बादशाह ने अपने हाथ से दुर्गपति जीतमल (जैयमल) को मारा था बन्दूक का निशाना लगाने मे अकबर अद्वितीय था। जीतमल को सग्राम नामक बन्दूक से मारा था। इसी बन्दूक से उसने चार हजार पशु

और पक्षी मारे थे। मैं उसका सच्चा शिष्य हूँ। मैने एक दिन मे 18 हिरण मारे है।

मेरे पिता ने एक तप यह किया था कि पशु मास खाना छोड दिया था। वर्ष मे 3 मास के मास भक्षण करते थे और शेष साल भर सूफी भोजन खाते थे। उनको पशु वध पसन्द नही था। कितने ही दिनो पर और कई मास तक पशु बध का निषेध था। इसका उल्लेख अकबर नामा मे विस्तार पूर्वक किया गया है।

एक दिन मैने इतिमादूल मुल्क को दीवाना बना दिया। और उसी दिन मुहजुल–मुल्क को दीवान–ए–बुलुतात (इमारतो का दीवान) नियुक्त किया।

मेरे राज्याभिषेक के एक दिन 100 अकबरी और जहाँगीरी सेवको को ऊँचे पद और जागीरे दी गई। रमजान की ईद के आरम्भ मे जो मेरे राज्याभिषेक के बाद सर्वप्रथम आई थी मै ईदगाह आया। वहा बडी भीड थी। मैने ईश्वर को धन्यवाद दिया उसकी प्रशसा की और फिर वापिस शाही महल मे चला गया। मैने कुछ रुपये पुण्यार्थ देने का आदेश दिया जो फकीरो मे बाट दिया गया। पाँच हजार शेख मुहम्मद हुसैन जामी को दिये गये। हर पहर पचास हजार दाम फकीरो को दिये जाते थे खान–खाना को एक जडाऊ तलवार दी गई और जमालुद्दीन अजु को तीन हजार का मनसब प्रदान किया गया। मीरान सदरजहाँ को सद बनाया। मैने हाजी कोका को जो मेरी एक बुआ का पुत्र था आदेश दिया कि महल मे ऐसी स्त्रियो को बुलाया जावे जिनको भूमि और वन दिया जाना चाहिए। मैने मुहम्मद सादिक के पुत्र जाहिद खाँ का मनसब 1500 से 2 हजार कर दिया। जिनको घोडा या हाथी बख्शा जाता था उनके नकाब आदि लोग रुपया लिया करते थे जो जिलवाना कहलाता था। मैने आदेश दिया कि यह रुपया सरकार स दिया जाया करे।

मैने सल्तनत मे जकात माफ कर दी थी। इससे करोडो रुपये प्राप्त होते थे। अब मैने साहिर जिहात या राहदारी जो काबुल मे ली जाती थी बन्द कर दी। इससे 1 करोड 23 लाख दाम वसूल होते थे। काबुल और कन्धार जकात के मुख्य स्रोत थे। मैने सब कर उठा लिये।

बिहार मे आसफ खा की जागीर बाजबहादुर खा को दी गई थी। इसलिए मैने आदेश दिया कि आसफखाँ को पजाब मे जागीर दे दी जावे।

मैने सरीफ आमुली को तरक्की देकर 2 हजार 500 का मनसबदार बनाया। इसका ह्रदय शुद्ध है। वह वर्तमान विद्याये तो नहीं जानता परन्तु उसकी भाषा ऊँचे दर्जे की है और उसका ज्ञान बढा चढा है। फकीर बनकर उसने कई यात्राये की हैं। और अनेक फकीरो से उसकी मित्रता है। मेरे

पूज्य पिता के समय में वह फकीर का देश छोडकर अकीर बन गया था। उसकी भाषा बडी जोरदार है। परन्तु वह अरबी नहीं जानता।

शाहकुली खां महरम आगरे में एक बाग छोडकर मर गया था। उसका कोई वारिस नहीं था। इसलिए यह बाग मैने रुकिया सुल्तान बेगम को दे दिया। यह हिन्दाल मिर्जा की पुत्री थी। और मेरे पिता की पत्नी थी। मेरे पिता ने खुर्रम को इसके सुपुर्द कर दिया था। वह इसको माता से भी हजार गुना प्रेम करती थी।

नौ रोज की बडी दावत—मंगलवार 11 जिलकिदा 1014 हिज्री (11 या 12 मार्च सन् 1606) को प्रातःकाल सूर्य मीन राशि से निकलकर मेष राशि में पहुंचा। मेरे राज्याभिषेक के बाद यह नये वर्ष का प्रथम दिन था। मैंने महल के सारे दरवाजों को सजाने का आदेश दिया मेरे पिता के समय मे भी ये इसी प्रकार सजाये जाते थे। 9 रोज के प्रथम दिवस में मेष राशि के 19वे अश तक पहुंचने पर लोगो ने बडा आनन्द और उत्सव मनाया। सब जातियों और देशों के गाने वाले और खेल दिखाने वाले एकत्रित हुए। भारतवर्ष की मनोहर नर्तकिया आई और जलसो मे बडा आनन्द रहा। मैने आदेश दिया कि जो कोई मद्यपान करना चाहे उसको पिला दिया जावे।

मेरे पिता के समय में यह रिवाज बन गया था कि इस त्यौहार के 17, 18 दिनो मे एक अमीर प्रतिदिन बादशाह को बहुमूल्य जवाहरात, हाथी और घोडे आदि भेट करे और उसको अपने जलसे मे बुलाये। अपने सेवकों का सम्मान बढाने के लिए वह ऐसे जलसो मे जाया करता था और भेटो को देखकर उनमे से जो पसन्द आता ले लेता था। मैने इस वर्ष भेट नही ली। केवल अति समीप के सेवको से कुछ भेट ली इन दिनो मे बहुत से सेवको को उच्च पद प्राप्त हुआ। दिलावर खा अफगान को 1500 का मनसब दिया और राजा बासु का मनसब 1500 से 3500 कर दिया। यह पजाब कं पहाडी देश का जमीदार था। कन्धार के सूबादार शाहबेग खॉ का 5 हजार को मनसब मिला और रायसिह को भी यही पद प्राप्त हुआ। राणा शकर को 12 हजार रुपये दिये गये। मेरे शासन के आरम्भ मे मुजफ्फर गुजराती के पुत्र ने विद्रोह करके अहमदाबाद नगर के आसपास का इलाका लूट लिया। पिम बहादुर उजबेग और रायअली भाटी जैसे सरदार जो वहॉ प्रसिद्ध वीर पुरुषो मे थे, इस विद्रोह मे शहीद हो गये। अन्त मे राजा विक्रमाजीत और अनेक मनसबदारो को 6–7 हजार सवारो सहित गुज्रात की सेना को सहायता देने के लिये भेजा गया। यह निश्चय हो गया था कि जब उन राजविद्रोही लोगो को खदेड कर भगा द्रेने के बाद शांति स्थापित हो जावे तो राजा विक्रमाजीत को गुजरात का सूबादार

नियुक्त कर दिया जावे। किलीच खा जिसको इस पद के लिये पहले नामाकित किया जा चुका था दरबार मे आ जावे। शाही सैनिको के आगमन के पश्चात् विद्रोहियो की एकता का तार टूट गया उन्होने विभिन्न वनो मे शरण ली। और उस प्रान्त मे शाति जम गई इस विजय का समाचार मेरे राज्य मे बडे अच्छे समय पर (नये वर्ष) मे पहुचा।

राणा ने मांडल छोड़ा—इसी समय मेरे पुत्र परवेज का प्रार्थना पत्र आया कि राणा माडल का थाना छोडकर भाग गया है यह स्थान अजमेर से 30 या 40 कोस दूर है राणा का पीछा करने के लिये कुछ सेना भेज दी गई है और यह आशा की जाती है कि जहागीर के सौभाग्य से राणा का अस्तित्व नही रहेगा।

उस दिन नये वर्ष की दावत थी। राज्य के बहुत से सेवको को पद वृद्धि और अनुग्रह द्वारा सम्मानित किया गया। पिशरो खा को ईरान के शाह तहमास्प ने हुमायू के साथ भेजा था। उसका नाम मिहत्तर सआदत था। मेरे पिता के समय मे वह फर्राश खाने का दारोगा और मिहत्तर (अध्यक्ष) था। इस कार्य मे उसके समान कोई नही था। मेरे पिता ने उसको पिशरो खा (सक्रिय) की उपाधि दी थी वह साधारण सेवक था। मैने उसकी सेवा को देखकर उसे 2000 का मनसब प्रदान किया।

मेरे शासन के प्रथम वर्ष में खुसरो का पलायन

युवावस्था के कारण और निकम्मे साथियो के अनुभव और दूरदर्शिता के अभाव के कारण खुसरो के मस्तिष्क मे विशेषकर मेरे पिता की बीमारी के समय व्यर्थ के विचार घुस गये थे। इन अदूरदर्शी लोगो मे से कुछ को अपने अनेक अपराधो की क्षमा की आशा नही थी। उन्होने खुसरो को अपना हथियार बनाया और सोचा कि उसके द्वारा वे सल्तनत के कार्यो का सचालन करेगे। उन्होने इस तथ्य पर विचार नही किया कि सर्वोपरि सत्ता के कार्य और ससार का शासन दूषित बुद्धियो वाले मनुष्यो के प्रयास से नही चला सकते। न्यायशील ईश्वर ये कार्य ऐसे लोगो के सुपूर्द करता है जिनको वह उच्च कर्तव्य के लिये उपयुक्त समझता है।

राजद्रोही और अदूरदर्शी लोगो की व्यर्थ कल्पनाओ का परिणाम लज्जा और खेद के अतिरिक्त जब कुछ नही हुआ तो साम्राज्य कार्य अल्लाह के सेवक के हाथो मे निश्चित रूप से आ गया। मै देखता था कि खुसरो सदैव परेशान रहा करता था। उसके प्रति अनुग्रह और स्नेह के कारण मै उसके मस्तिष्क से भय और आतक दूर करना चाहता था परन्तु कुछ लाभ नही हुआ। अन्त मे हत्भाग्य लोगो की सलाह से रविवार जिलहिज्जा (6 अप्रैल 1605) की रात्रि मे जब दो घडी रात्रि व्यतीत हो चुकी थी तो वह बादशाह

अकबर के मजार पर जाने के बहाने से 350 सवारो सहित आगरे के दुर्ग से निकल गया। थोडी देर बाद एक चिराग वाले ने वजीर–उल–मुल्क को खुसरो के पलायन की खबर दी। वजीर उसको अमीर–उल–उमरा के पास ले गया। इस खबर को सच्ची समझ कर अमीर उल–उमरा परेशान होकर मेरे निजी निवास के द्वार पर आया और उसने एक नाजिर से कहा "मेरी प्रार्थना अन्दर ले जाओ और कहो कि मुझे आवश्यक निवेदन करना है। बादशाह बाहर आकर मुझे सम्मानित करे"। खुसरो के पलायन का ख्याल तो मेरे दिमाग मे आया ही नही था मैने सोचा कि दक्षिण या गुजरात से कोई खबर आई होगी। मैने बाहर आकर खबर सुनी और पूछा "क्या करना चाहिए। मै खुद सवार होकर जाऊँ या खुर्रम को भेजू।" अमीर–उल–उमरा ने निवेदन किया कि "यदि आदेश होगा तो वह जावेगा।" मैने कहा "यह ठीक है" फिर उसने कहा "यदि मेरी सलाह से वह वापिस नही आवे और शस्त्र उठावे तो क्या करना चाहिये।" तब मैने कहा "यदि वह सन्मार्ग पर नहीं चले तो जो कुछ भी तुम्हारे काम का परिणाम होगा उसको अपराध मत समझना। बादशाह के लिये न कोई पुत्र है न कोई दामाद।" जब मै यह कह चुका और उसको बिदा कर चुका तो मुझे विचार आया कि खुसरो उस (अमीर–उल–उमरा) से बहुत नाराज है। अमीर–उल–उमरा की प्रतिष्ठा है और वह मेरे समीप है इसलिये उसकी बराबरी वाले उससे ईर्ष्या करते है। इसलिये शायद वह दबा करके उसको मार दे। मैने मुइजुल्मुल्क को आदेश दिया कि अमीर–उल–उमरा को वापिस बुला लावे। उसके स्थान पर मैने शेख फरीद बख्शी वेगी को नियुक्त किया ओर आदेश दिया कि वह उन सब मनसबदारो और अहदियो को जो चौकसी करने के लिये नियुक्त थे साथ लेकर रवाना हो जावे। इतिनाम खा कोतवाल को गुप्त खबर का अधिकारी बनाया। जब दिन निकला तो मैने रवाना होने का निश्चय कर लिया। मुइजुल्मुल्क अमीर उल–उमरा को वापिस ले आया।

अहमद वेग खा और दोस्त मुहम्मद खा को काबुल भेजा गया था वह लगभग इस समय सिकन्दरा तक पहुचे होगे जो खुसरो के रास्ते मे पडता था। उसके पहुचने पर यह लोग अपने कुछ आदमियो के साथ बाहर आये और मेरे पास खबर लाये कि खुसरो बडी शीघ्रता से पजाब के मार्ग पर जा रहा है मुझे ख्याल आया कि शायद वह अन्यत्र जावे। उसका मामा मानसिह बगाल मे था। इसलिये यह आशका हुई कि उस दिशा मे जा सकता है। मैने सब ओर से खबर मगवा कर यह निश्चय कर लिया कि वह पजाब की ओर जा रहा है। अब प्रातकाल हो गया था। अत भगवान पर भरोसा करके पक्के इरादे के साथ मै रवाना हो गया।

जब मैं अपने पूज्य पिता के मजार पर पहुँचा जो नगर से तीन कोस दूर है तो मैंने उनकी आत्मा से साहस की भिक्षा मांगी। इसी समय मिर्जा शाहरुख खां के पुत्र मिर्जा हसन को पकड़ कर मेरे सामने लाया गया। वह खुसरो के साथ जाना चाहता था। पूछने पर वह इंकार नहीं कर सका तो मैंने आदेश दिया कि उसको हाथी पर बिठा दिया जावे। मेरे पिता के आर्शीवाद से यह सर्वप्रथम अच्छा शकुन हुआ। दोपहर को बड़ी गर्मी थी, तो एक वृक्ष की छाया में थोडा विश्राम करके मैंने खान–ए–आजम से कहा कि अब तक हमने नित्य प्रति की भांति प्रातःकाल की अफीम नहीं खाई है और न किसी ने हमको याद दिलाई।

मुझ इस बात का दुख था कि मेरा पुत्र अकारण ही विरोधी और शत्रु बन गया है यदि उसको पकड़ने का मैं प्रयास नहीं करूँगा तो विद्रोही लोग उसको अपना साधन बना लेंगे या वह उजबेगों और ईरानियों की शरण ले लेगा जिससे मेरी सरकार के प्रति ग्लानि उत्पन्न होगी। इसलिये उसको पकड़ने का निश्चय करके और थोडा विश्राम करके मैं परगना मथुरा से आगे दो तीन कोस पहुंच गया और उस परगने के एक गांव में ठहर गया जहां तालाब है।

जब खुसरो मथुरा पहुचा तो वह हुसेन बेग बदख्शी से मिला जो काबुल से मेरे पास आ रहा था इस पर मेरे पिता ने बडी कृपा की थी। परन्तु बदख्शियों के स्वभाव मे राजद्रोह और उत्पात है इसलिये वह अपने साथ के दो सौ तीन सौ बदख्शियों सहित खुसरो से मिल गया।

खुसरो के लोगों ने जो मिला उसके घोड़े और सामान लूट लिये। व्यापारियो को लूट लिया जहां भी वह पहुंचे वहां स्त्रियां और बच्चे सुरक्षित नहीं रहे। खुसरो ने अपनी आंखों से अपने पूर्वजों के राज्य में अत्याचार देखा। वह नहीं चाहता था कि ऐसा अत्याचार हो परन्तु उसे सहन करना पड़ा। यदि भाग्य उसका साथ देता तो वह पश्चाताप करके मेरे पास उपस्थित होता। ईश्वर जानता है कि मैं उसके अपराधों को पूर्णतया क्षमा करके उसके प्रति ऐसा स्नेह प्रगट करता कि उसके मन में कोई भय नहीं रहता। कारण यह था कि बादशाह अकबर के समय में ही उसके मन में राजद्रोही लोगों में सम्मिलित होने का इरादा हो गया था और वह जानता था कि मुझे इसका पता लगा गया है इसलिये उसने मेरे स्नेह पर भरोसा नहीं किया। जब मैं शाहजादा था तो उसकी मां को उसके ढंग और व्यवहार पर बड़ा दुःख हुआ है और अपने भाई माधोसिंह के दुर्व्यवहार से ही संतप्त होकर उसने अफीम खाकर आत्मघात कर लिया। मैं उसकी अच्छाई और सदगुणों के विषय में क्या लिखूं। उसमें बड़ी बुद्धिमत्ता थी और मुझसे वह इतना प्रेम करती थी

कि मेरे एक बाल के ऊपर वह हजार पुत्रो को और भाइयो को बलिदान कर सकती थी। उसने खुसरो को निरन्तर पत्र लिखकर समझाया कि वह मुझ से सच्चा प्रेम करे। जब उसने देखा कि इससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो रहा है और पता नही वह किस हद तक पहुच जावेगा तो उसमे क्रोध और स्वाभिमान जाग्रत हो गया जो राजपूतो का वशक्रमानुगत गुण है। और उसने प्राणोत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया। उसका चित्त कई बार क्षुब्ध हो जाता था तो 26 जिलहिज्जा 1013 हिज्री (6 मई 1605) को उसने उत्तेजित होकर बहुत ही अफीम खा ली और शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई।[1]

मेरा प्रथम विवाह इसी से हुआ था[2]। खुसरो के जन्म के बाद मैने उसको शाह बेगम की उपाधि दी थी। जब मेरे प्रति अपने पुत्र और भाई का दुर्व्यवहार वह सहन नही कर सकी तो उसको जीवन से घृणा हो गई और मृत्यु को बुलाकर वह इस शोक और दुख से बच गई। उसकी मृत्यु के परिणामस्वरूप और उसके प्रति प्रेम के कारण मुझे कुछ दिन तक अपने जीवन मे कोई आनन्द नही आया और मैने 32 पहले तक न कुछ खाया न पीया। जब यह खबर मेरे पूज्य पिता को सुनाई गई तो उन्होने कृपा और स्नेह से पूर्ण मुझे शोक निवारणार्थ एक पत्र लिखा। एक खिलअत भेजी और अपने सिर की एक पगडी प्रदान की जिससे मेरे दुख की ज्वाला शान्त हुई। इन परिस्थितियो का वर्णन मैने यह बतलाने के लिये किया है कि यदि अपने अनुचित बर्ताव के द्वारा कोई पुत्र अपनी माता की मृत्यु का कारण बने और अपने पिता से अकारण ही विद्रोह करे और उसके आर्शीवाद से अपने को वचित करे तो इससे बढकर और क्या पाप हो सकता है। सर्व शक्तिमान परमात्मा ऐसे कर्म के लिये उचित दड देता है। इसलिये अन्त मे यह हुआ कि वह (खुसरो) अत्यन्त बुरी परिस्थितियो मे पकडा गया। जब उस पर मेरा विश्वास नहीं रहा और सदैव के लिये उसको कारागार मे भेज दिया गया।

साराश यह है कि इस जिलहिजा मगलवार को मै होडाल पहुचा। शेख फरीद बख्शी और कुछ वीर लोगो को सेना के अग्रभाग मे रखकर खुसरो का पीछा करने के लिए रवाना किया। दोस्त मुहम्मद को आगरा दुर्ग और इतिमातुद्दौला और वजीर–उल–मुल्क को वहा के प्रबन्धक बनाया था।

---

1 खुसरो बाग इलाहाबाद मे इसकी मृत्यु की तारीख 1012 बनती है।

2 इस महिला का नाम मानबाई था यह राजा भगवानदास जयपुर की पुत्री और कुवर मानसिह की बहिन थी यह विवाह 1583 की फरवरी मे हुआ था। इसके लिए बडे ठाट का उत्सव किया गया था और हिन्दू और अनेक हिन्दू रश्मे भी की गई थी। राजा भगवानदास ने मानबाई को विपुल दहेज दिया था जिसमें 100 हाथी सम्मिलित थे (अकबर नामा जिल्द 3 पृ. 677, बदायूँनी पृ 352)।

अब मैंने दोस्त मुहम्मद से कहा "हम पंजाब जा रहे है और उस सूबा की दीवानी इत्तिमातुद्दौला के हाथ में है इसलिए उसको हमारे पास भेज देना। आगरे में मिर्जा मुहम्मद हकीम के पुत्र हैं। उनको कैद कर लेना जब अपने ही पुत्र के ऐसे कार्य है तो भतीजों से क्यां उम्मीद की जा सकती है।" दोस्त मुहम्मद की रवानगी के बाद मुइजुल–उल–मुल्क बख्शी बन गया।

बुद्धवार को पलवल वृहस्पतिवार को फरीदाबाद ठहर कर शुक्रवार 13 तारीख को मैं देहली पहुंच गया और तुरन्त ही हुमायूं की कब्र पर जाकर अपनी कार्यसिद्धि के लिये सहायता मांगी और अपने हाथों से निर्धन और फकीरों को रुपये दान दिये। इन शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर जाकर मैंने यात्रा की रस्में पूरी कीं फिर गरीबों ओर फकीरो में बांटने के लिए मैंने 2 अफसरो को रुपये दिये 14 तारीख शनिवार के दिन में सराय नरैला में ठहरा। जाते समय खुसरो इस सराय को जला गया था।

आसफखां के भाई आकामुल्ला को एक हजार का मनसब जाती और 300 सवार का पद दिया। वह इस समय मेरे साथ था। मैंने समझा शाही सेना में कुछ ऐसे ऐमाक लोग हैं जो खुसरो से मिले हुए हैं। और उनसे विद्रोह की आशंका है। मैंने उनके मुखिया लोगों में बांटने के लिए शेख फजलुल्ला और राजा धीरधर को 2000 रुपये दिये और आदेश दिया कि राणा शंकर को जो उस समय अजमेर था खर्च के लिय 3 हजार रुपये दिये जायें।

सोमवार तारीख 16 को परगना पानीपत में पहुंचा। यह मेरे पिता और पूर्वजों के लिए शुभ स्थान था यहां 2 बार बडी विजय प्राप्त हुई थी। एक बार बादशाह फिरदोस्त मकानी (बाबर) ने यहां इब्राहीम लोदी को हराया था। दूसरी बार मेरे पूज्य पिता ने हेमू पर विजय प्राप्त की थी।

जब खुसरो दिल्ली से पानीपत की ओर चला तो दिलावर खां वहां आ पहुंचा था। खुसरो के आने से पहले ही उसने अपने बच्चों को यमुना पार भेज कर निश्चय कर लिया था कि खुसरो के आने से पहले लाहौर के दुर्ग में पहुंच जाना चाहिए। लगभग इसी समय अर्ब्दुरहीम लाहौर से पानीपत आ गया। दिलावरखां ने सुझाया कि वह अपने बच्चों को नदी पार भेजकर जहांगीर की सेना के आगमन की प्रतीक्षा करें। वह सुस्त और भीरु था। इसलिए कुछ निश्चय नहीं कर सका और खुसरो आ पहुंचा। उसको मलिक अनवर और बजीर की उपाधि मिली। दिलावरखां ने वीरतापूर्वक लाहौर की ओर कूच किया और मार्ग में जो भी मिले उसको खुसरो के पलायन की खबर देता रहा। कुछ लोगों को उसने साथ भी लिया और अन्य लोगों से कहा कि वह रास्ते से दूर रहें इस प्रकार लोग अत्याचारियों द्वारा लूटे जाने से बच गये। अगर दिल्ली में सईद कमाल और पानीपत

में दिलावरखां साहस करके खुसरो का मार्ग रोकते तो उसकी सेना भाग जाती और वह पकडा जाता। तथ्य यह है कि उनमें इतनी हिम्मत नहीं थी। परन्तु फिर उन्होने अच्छा काम किया। खुसरो के आने से पहले ही दिलावरखां लाहौर के दुर्ग मे धुसा और सईद कमाल वीरता पूर्वक खुसरो से लडा।

17 जिलहिजा को शाही ध्वज करनाल में खडे किये गये। यहां मैंने ख्वाजा कलाजुबारी के पुत्र आबीदीन ख्वाजा को और अब्दुल्लाखां उजबेग के पुत्र पीरजादा को एक एक हजार का मनसब दिया। अब्दुल्ला खा उजबेग मेरे पूज्य पिता के समय मे आया था। शेख निजाम थानेश्वरी एक कुख्यात धोखेबाज आदमी था। वह खुसरो से मिला था और उसको सुखद समाचार से सतुष्ट करके कुमार्ग पर चला चुका था। इसके पश्चात वह मेरी सेवा में आया। मैंने इन मामलों का हाल सुन लिया था। इसलिए मैंने मार्ग व्यय देकर उसको मक्का की शुभ यात्रा पर रवाना कर दिया। 19 तारीख को परगना शाहबाद में मुकाम रहा। वहा पानी की बडी कमी थी परन्तु ऐसा हुआ कि भारी वर्षा हुई जिससे सबको हर्ष हुआ।

प्रधान न्यायाधीश की नियुक्ति—मैंने शेख अहमद लाहौरी को मीर–ए–अदल (प्रधान न्यायधीश) नियुक्त किया। मैं शाहजादा था तब से वह सेवा करता था और शार्गीद पेशा वालो मे शामिल था वह खानजादा था।

दीन-ए-इलाही—शार्गीद पेशा वालों को और सच्चे अनुयायियों को मेरे सामने प्रस्तुत किया गया। मैंने प्रत्येक व्यक्ति को शस्त और सबाह देना आवश्यक समझा।[1]

इस परिचय के समय शागीर्द पेशा वालों को कुछ सलाह दी गई कहा गया किसी शिष्य को साम्प्रदायिक झगडों में फॅस कर कलंक नहीं कमाना चाहिए। सब धर्मों के विषय में सार्वभूम शाति के नियम का पालन करना चाहिए। किसी शिष्य को जीवित प्राणी का अपने हाथ से वध नहीं करना चाहिए और किसी की खाल नहीं उतारनी चाहिए। परन्तु यह काम युद्ध और आखेट में किये जा सकते है।

सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों को आदर करना चाहिए ये भगवान के प्रकाश को प्रकट करते हैं। अपनी शक्ति के अनुसार ये प्रकाश देते है। सब ऋतुओं मे सर्वदा सर्व शक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व और बल को मानना चाहिए। वास्तव मे घर में या बाहर एक क्षण भर भी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए।

---

1 एक अँगूठी और अकबर का चित्र उन लोगों को दिया जाता था जो दीन ए-इलाही के अनुयायी थे। यह शस्त व सबाह कहलाता था।

"मनुष्य चाहे लंगडा हो या निम्न कोटि का हो चालाक हो या असभ्य हो उसको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए और उसकी तलाश करनी चाहिए।"

मेरे पूज्य पिता इन सिद्धान्तों में ओत प्रोत थे और ऐसे विचार उनमें सदैव ही बने रहते थे।

पदोन्नतियाँ—अलुवा का मंजिल पर पहुंचने पर मैंने अबुल नवी उजबेग को 57 मनसबदारों सहित शेख फरीद की सहायता के लिए नियुक्त किया और इस सेना को 40 हजार रुपये खर्च के लिए दिये। जमील बेग को ऐमाक (घुडसवारों) में बांटने के लिए 7 हजार रुपये दिये। मीर शरीफ आमूली को भी (जो दीन–ए–इलाही) का अनुयायी था 2 हजार रुपये दिये गये।

खुसरू के आदमियों की गिरफ्तारी—इसी मास की तारीख को मेरे आदमियों ने खुसरू के पाच आदमियो को पकड लिया। इनमे से 2 ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तो मैंने आदेश दिया कि उनको हाथियो के पैरो से कुचलवा दिया जावे। 3 आदमियो ने अपराध स्वीकार नही किया। इसलिए उनको चॉखशी मे रखवा कर हुक्म दिया गया कि इनकी बाबत जॉच की जावे। मेरे शासन के प्रथम वर्ष के फर्वरद्दीन मास की 12 तारीख को मिर्जा हुसैन और कोतवाल नूरूद्दीन कुली ने लाहौर मे प्रवेश किया और इसी मास को 24 तारीख को दिलावर खा का सन्देशवाहक वहा मेरे पास आया और खबर लाया कि खुसरू लाहौर की ओर कूच कर रहा है और हम लोगो को सचेत रहना चाहिए उसी दिन नगर के द्वारो पर कडा पहरा बैठा दिया गया। 2 दिन बाद कुछ आदमियो के साथ दिलावर खा ने दुर्ग मे प्रवेश किया और बुर्जो और प्राचीर को सुदृढ बनाने का कार्य आरम्भ किया। बुर्ज और प्राचीर जहॉ टूट जाती थी वहीं पर मरम्मत करवा देता था। दुर्ग की दिवार पर छोटी और बडी तोपें रखकर उसने युद्ध की तैयारी कर ली थी। दुर्ग मे जो स्वामी भक्त सेवक थे उन्हे एकत्रित करके विभिन्न काम सौपे गये। नगर के स्वामी भक्त नागरिकों ने भी उन लोगो की सहायता की। 2 दिन पश्चात् जब सब तैयारी हो चुकी थी तो खुसरू आया और अपने शिविर के लिए स्थान नियत करके उसने आदेश दिया कि नगर को घेर कर युद्ध की तैयारी की जावे और किसी भी ओर का एक द्वार जला कर नगर मे प्रवेश किया जावे। उसने अपने दुष्ट साथियो से कहा दुर्ग को छीन लेने के बाद में आज्ञा दूंगा कि 7 दिन तक नगर को लूटा जा सकता है और स्त्री और बच्चों को कैदी बनाया जा सकता है।" इन लोगों ने एक दरवाजे में आग लगादी। दिलावरबेगखां, दीवानहुसैनबेग और कोतवाल नूरुद्दीन कुली ने अन्दर दरवाजे के सामने दीवार खडी कर ली।

इसी बीच में सैद खां जो कश्मीर में नियुक्त किया गया था और इस समय चिनाव नदी के तट पर डेरे डाले हुए था इस खबर को सुनकर शीघ्रता से लाहौर की ओर रवाना हुआ। रावी पर पहुच कर उसने दुर्ग सेना से कहलाया कि मै स्वामिभक्ति के विचार से आया हूं आप मुझे अन्दर आ जाने दो तो दुर्ग रक्षको ने रात्रि मे कुछ आदमी भेजे जो उसको दुर्ग में ले आये। जब घेरा 9 दिन तक चल चुका तो खबर आई कि शाही सेना खुसरू और उसके साथियो के विरूद्ध प्रयाण करती हुई आ रही है। तब वे लोग असहाय हो गये और उन्होंने निश्चय किया कि विजयी सेना का सामना किया जावे।

लाहौर हिन्दुस्तान का एक सबसे बडा नगर है। इसलिए 6, 7 दिन मे वहा बहुत से लोग एकत्रित हो गये और यह प्रमाणिक खबर आई कि 10, 12 हजार सवार एकत्र होकर नगर से रवाना हो चुके है और उनका विचार शाही अग्रसेना पर रात्रि मे आक्रमण करने का है। यह खबर तारीख 16 वृहस्पतिवार की रात्रि मे सरायकाजीअली पर मुझे मिली। यद्यपि उस समय भारी वर्षा हो रही थी और रात्रि का समय था तो भी कूच के नगाडे बजवाकर मै घोडे पर सवार हो गया प्रातः काल होते मै सुल्तानपुर पहुचा और दोपहर तक वहा ठहरा। सयोग वश यहॉ पर उस समय शाही सेना की भाग्यहीन सेना की एक टुकडी से मुठभेट हो गई। मुइजुल–मुल्क मेरे लिये भुने हुये मास की तस्तरी लाया था और मै उत्सुकता से उसकी ओर मुडा ही था कि मुझे युद्ध की खबर मिली। यद्यपि मै भुना मास खाने के लिए लालायित था तथापि मै तुरन्त शुभ शकुन के निमित्त एक ग्रास खाकर सवार हो गया और आदमियो के आने की प्रतीक्षा न करके और छोटी सी सैनिक टुकडी को साथ लेकर मै शीघ्रता से चल दिया। मैने अपना चिलताह (कोट) बहुत मागा परन्तु लोग नही ला सके। मेरे पास केवल एक तलवार और एक भाला था। ईश्वर के अनुग्रह पर विश्वास करके मै बिना हिचके रवाना हो गया। शुरू मे मेरे पास 50 सवारो से अधिक नही थे। किसी को यह आशा नहीं थी कि उस दिन लडाई हो जावेगी। अन्त मे जब मै बुरे या भले 400 सवारो सहित गोविन्द–बाल के पुल पर पहुचा। जब मैने नदी पार कर ली तो विजय की सूचना मिली। इस सूचना का वाहक शमसीतौसकची (कपडे सम्भालने) वाला था इसलिए उसको खुश खबर की उपाधि दी गई। मीर जमालुद्दीन हुसैन को मैने पहले खुसरू को नेक सलाह देने के लिए भेजा था। इसी समय उसने वापिस आकर खुसरू के आदमियो की सख्या और वीरता के विषय मे ऐसी बाते कही कि सुनने वाले भयभीत हो गये।

यद्यपि विजय के समाचार निरन्तर आ रहे थे परन्तु यह सीधा साधा सईद उन पर विश्वास नहीं करता था और कहता था कि इस बात पर कैसे विश्वास किया जाए कि जो विशाल सेना मैंने अपनी आंखों से देखी है उसको शेख फरीद की छोटी सी और असज्जित सेना हरा सकती है। जब लोग खुसरू का शुखपाल और 2 नाजिरों को लेकर आये तो मीर ने माना कि विजय हो गई होगी। अपने घोड़े से उतर कर उसने अपना मस्तक मेरे पैरों में रखकर बडी ही नम्रता और अधीनता प्रकट करते हुए कहा कि इससे अधिक ऊँची और सौभाग्य की बात क्या हो सकती है।

शेख फरीद ने अपनी सेना का नेतृत्व लग्न और भक्ति के साथ किया। सेना के अग्रभाग में बारह के सैयद लोग थे। यह उस समय के बडे वीर माने जाते थे। और प्रत्येक युद्ध में लड़ चुके थे। सईद-मुहमूद खां बारह का पुत्र से शेफखा इस कौम के लोगों का मुखिया था वह बडी वीरता पूर्वक लडा था और उसके 17 घाव लगे थे। इसी मण्डली का एक भाई सईद जलाल था। जिसकी कनपटी में तीर लग जाने से उसकी मृत्यु हो गई थी। साथ ही बरहा के 50, 60 सईद 1500 बदख्शी सवारों द्वारा आहत हो चुके थे और उनके टुकडे-टुकडे कर दिये गये थे। सईद कमाल को अपने भाईयों के साथ अग्रसेना की सहायतार्थ नियुक्त किया गया था। उसने सेना की बाजी पर आकर आश्चर्यजनक वीरता और पुरुषार्थ दिखाया इसके पश्चात दायीं पार्श्व के लोगों ने बादशाह सलामत रणनाद करते हुए आक्रमण किया तो विद्रोही लोग इसको सुनकर बिखर गये और छिपने के लिए विभिन्न स्थानों में चले गये। लगभग 400 ऐनाक (घुडसवार) विजयी सेना ने कुचल डाले। खुसरू के जवाहरात और बहुमूल्य चीजों का सन्दूक मेरे लोगों के हाथ में पड़ा।

अदूरदर्शियों की सलाह—इलाहाबाद के पास अदूरदर्शी लोगों ने मुझे प्रेरित किया था कि मैं अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह करूं। उनकी बाते बिल्कुल मानने के योग्य नहीं थी मैंने उनको अच्छा नहीं समझा। मैं जानता हूं कि पिता से शत्रुता करके जो राज्य स्थापित किया जावेगा वह कितना टिकेगा इसलिए मुझ पर ऐसे निकम्मे दुष्ट लोगों का प्रभाव नहीं पडा। मैंने अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार काम किया और मैं अपने पिता की सेवा में उपस्थित हो गया मैं उनको अपना पथ प्रदर्शन किबला और दृश्यमान ईश्वर मानता था। मेरे व्यवहार का परिणाम यह हुआ कि सब कुछ ठीक हो गया।

पुनः खुसरू का पीछा—उस दिन खुसरू भागा उस दिन सांयकाल मैंने राजा बासू को जो लाहौर के पर्वतीय इलाके का विश्वसनीय

जमीदार था सीमा पर जाने की इजाजत दे दी और उसको आदेश किया जहा भी खुसरू का समाचार या चिन्ह मिले वहीं उसको पकडने का प्रयास किया जावे। मैने महावत खा और मिर्जा अली अकबर शाही को खुसरू का पीछा करने के लिए एक बडी सेना दी। मैने अपने मन मे निश्चय किया कि यदि खुसरू काबुल जाएगा तो मै उसका पीछा करूगा और उसे पकडे बिना वापिस नही लौटूगा यदि काबूल मे न ठहर कर वह बदख्शा जायेगा तो मै महावत खा को काबुल मे छोडकर वापिस भारत मे लौट जाऊगा। मेरे बदख्शा न जाने का कारण यह था कि दुष्ट खुसरू उजबेगो से मिलकर इस साम्राज्य को लज्जित करेगा।

जिस दिन शाही सेना को खुसरू का पीछा करने का आदेश दिया उस दिन महावत खा को 15 हजार रुपये, अहदियो को 20 हजार रुपये दिये गये ओर रास्ते की आवश्यकता के लिए सेना को 10 हजार रुपये दिये।

तारीख 28 की शनिवार को विजयी सेना ने जयपाल (नगर) मे शिविर लगाया जो लाहौर से 7 कोस के अन्तर पर स्थित है। उसी दिन कुछ लोगो के साथ खुसरू चिनाब नदी के तट पर आ पहुचा। सक्षिप्त वृतान्त यह है कि उसकी हार के बाद जो लोग उसके पास से भाग गये थे उनमे मतभेद हो गया। अफगान और हिन्दुस्तानी जो उसके पुराने सेवक थे लोमडियो की भाति वापिस हिन्दुस्तान से भागकर वहा विद्रोह कर विपत्ति पैदा करना चाहते थे। हुसैनबेग के लोग और कुटुम्ब तथा कोष काबुल की ओर थे इसलिए उसने काबूल जाने का सुझाव दिया। अन्त मे हुसैनबेग की इच्छानुसार कार्य किया गया। अफगानो और हिन्दुस्तानियो ने खुसरू से अलग होने का निश्चय कर लिया। जब खुसरू चिनाब नदी के तट पर पहुचा तो उसने शाहपुर के नावघाट पर नदी को पार करने का विचार किया। यह नावघाट प्रसिद्ध है। परन्तु वहा उसको नावे नही मिली। इसलिए वह सौडारा के नावघाट पर पहुचा। वहा उसके लोगो को एक नाव मिली। परन्तु नाव खेने वाला कोई नही था। एक और नाव थी परन्तु उसमे घास और लकडियाँ लदी हुई थी। नावघाट बन्द कर दिये थे।

खुसरू की पराजय के पहले तमाम जागीरदारो और मार्ग रक्षको को पजाब सूबे मे आदेश दे दिया गया था कि खुसरू उपद्रव कर रहा है इससे सबको सचेत रहना चाहिए। हुसैनबेग चाहता था कि घास और लकडी एक नाव मे से दूसरे नाव मे रख दी जावे तो खुसरू नदी पार कर सके। इसी समय सौडारा के कमाल चौधरी का दामाद किलाम आ

पहुंचा और उसने देखा कि कुछ लोग रात्रि मे ही नदी पार करने वाले है। उसने नाव चलाने वालो को पुकार कर कहा कि जहागीर बादशाह का आदेश है कि रात्रि में अज्ञात पुरुषो को नदी पार नही करने दिया जावे। इस कोलाहल के कारण पास के लोग एकत्र हो गये और कमाल के दामाद ने नाव वाले के हाथ मे से बास छीन लिया जिससे वह नाव चला रहा था। फिर नाव उसके वश मे नही रही इस बास को हिन्दुस्तानी मे बल्ली कहते है। नाव वालो को खुसरो के लोगो ने रुपये देना चाहा फिर भी एक भी बल्लीमार ने उनको पार नही उतारा। चिनाब के निकट गुजरात नगर मे अब्दुलकासिम नमकीन को खबर मिली कि आदमियो की एक मण्डली रात्रि मे नदी पार करना चाहती है तो वह अपने पुत्रो ओर कुछ सवारो सहित रात्रि मे ही नाव घाट पर आ पहुचा। मामला यहा तक बढ गया कि हुसैनबेग ने बल्लीमारो पर तीर चलाये और कमाल के दामाद ने भी नदी के तट से तीर मारे। चार कोस तक नाव यू ही नदी के नीचे की ओर चलती रही। जब रात बीत चुकी तो वह फस गई और बहुत प्रयास करने पर भी यह नही चली। तब दिन हो गया। अबुल कासिम और ख्वाजा खिज्र खा जो नदी के पश्चिम तट पर एकत्रित हो गये थे उन्होने इस तट पर दीवार बना ली और जमीदारा ने पूर्वी तट पर दीवार बना ली।

उपरोक्त मास की 24 तारीख को रविवार के प्रातःकाल लोग हाथियो पर ओर नावो पर आये और सामवार के दिन उन्होने खुसरू को पकड लिया। इस मास के अन्तिम दिन पर मिर्जा कामरान के बाग मे मुझको इसकी खबर मिली तो तुरन्त ही मैने अमीर-उल-उमरा को आदेश दिया कि गुजरात जाकर खुसरू को लावे आर मेरे सम्मुख प्रस्तुत करे।

अपने निर्णय पर चलना- मै राज्य और प्रशासन के मामलो मे प्राय अपनी ही निर्णय बुद्धि से काम लेता हू और अन्य लोगो की सलाह की अपेक्षा अपने हृदय की बात को मानता हू। पहले भी मैने निश्चय किया था कि अपने स्वामिभक्त सेवको के परामर्श के विरुद्ध मे इलाहाबाद से अपने पिता के पास जाऊँ। मैने पिता के पास उपस्थित होकर उनका आर्शीवाद प्राप्त किया जिससे मेरा सासारिक और आत्मिक हित हुआ। इसी व्यवहार के कारण मै बादशाह बना। अब दूसरा अवसर खुसरू का पीछा करने का आया। मैने प्रयाण करते समय कोई शुभ मुहूर्त नही दिखाया और परिश्रम करके मेने उसको पकड लिया। यह विचित्र बात है कि प्रयाण करने के पश्चात मेने हकीम अली से पूछा कि प्रस्थान करने का समय शुभ था या नही। हकीम अली गणित शास्त्र

का बड़ा विद्वान था उसने उत्तर दिया कि अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आपने जो समय निश्चय किया है उससे अधिक उत्तम मुहूर्त वर्षा तक भी नहीं मिल सकता था। मैंने प्रयाण के लिए बहुत ही अच्छा समय सोचा है।

खुसरू को लाया गया—वृहस्पतिवार तारीख 3 मुहर्रम 1015 हिज्री को मिर्जा कामरान के बाग में मेरे सम्मुख लाये। उसके हाथों में हथकड़ियां थीं और बायीं ओर के पैरों में बेड़ियां थीं। यह चंगेज खां का ढंग था। हुसैन बेग को खुसरू के दायीं ओर अब्दुर्रहीम को उसके बायीं ओर खड़ा किया गया था। उन दोनों के बीच में खुसरू कांपता हुआ रो रहा था। हुसैन बेग लाभ की इच्छा से प्रलाप करने लगा जब मै उसका आशय समझ गया तो मैंने उसको नही बोलने दिया। परन्तु खुसरू की बेडियॉ और हथकडियॉ नहीं हटवायी।[1] उपरोक्त दोनों दुष्टों मे से मैंने एक को बैल के चमड़े मे और दूसरे को गधे के चमडे मे सिलवा दिया और गधों पर चढवाकर उनके मुंह पूंछ की तरफ रखकर नगर मे घुमाया। बैल का चमडा गधे के चमडे की अपेक्षा जल्दी खुश्क हो जाता है अतः हुसैन बेग चार पहर तक जीवित रहा और फिर दम घुट कर मर गया। अब्दुल रहीम गधे के चमडे में था। लोगों ने उसको कुछ खाने को दिया इसलिए वह जीवित रह गया। जिलहिजा के अन्तिम दिन सोमवार से मुहर्रम की 9 तारीख तक उपरोक्त वर्ष में एक मिर्जा कामरान के बाग मे रहा क्योंकि प्रयाण करने के लिए शुभ मुहुर्त नहीं था। भय रावल जहां लड़ाई हुई थी मैने फरीद को दे दिया और उसको मुर्तजा खां की उपाधि से सम्मानित किया। अच्छे प्रशासन के लिए मैंने आदेश दिया कि बाग से नगर. तक रास्ते के दोनों ओर खम्बे खडे किए जाएं, और एझकोई तथा विद्रोह में भाग लेने वाले अन्य लोगों को उन पर टांग दिया जाए। इस प्रकार प्रत्येक विद्रोही को असाधारण दण्ड प्राप्त हुआ। मैंने उन जमीनदारों को जिन्होंने स्वामी भक्ति का काम किया था मुखिया बनाया। झेलम और चिनाव के बीच के प्रत्येक चौधरी को अपने निर्वाह के लिए जमीनें दीं।

हुसैन बेग की सम्पत्ति में से मीर मुहम्मद बाकी के घर से लगभग 7 लाख रुपये मिला इसके अतिरिक्त दूसरे स्थानों पर भी उसी सम्पत्ति थी और कुछ सम्पत्ति वह अपने साथ भी ले गया था। इसके बाद जब भी उसके

---

1. इन्तिखाब जहाँगीरी में लिखा है:–

His Majesty ordered Prince Khusru to be deprived of his sight. When the wire was put in his eyes, such pain was inflicted on him, that it is beyond all expression. The Prince, after being deprived of sight, was brought to Agra; and the paternal love again revived. The most experienced physicians wre ordered to take measures to heal the eyes of the Prince, that they might become as sound as they were before.

नाम का उल्लेख किया जायेगा तो उसके पहले गावांन व खरान का उपयोग किया जावेगा। जब मिर्जा शाहरुन के साथ वह इस दरबार में उपस्थित हुआ था तो उसके पास एक घोडा था शनैःशनैः उसकी दशा उन्नत होती गई और उसने अच्छा कोष बना लिया। इसमे से कुछ प्रकट था और कुछ गडा हुआ था इसके बाद इस प्रकार की योजनाओ ने उसके मस्तिष्क ने प्रवेश किया।

अभी खुसरू का मामला ईश्वर की इच्छा के अधीन था इस समय अफगानिस्तान और आगरा के बीच कोई सूबादार नही था। इसलिए विद्रोह और उत्पत्ति का भय था। मैं समझता था कि खुसरू का मामला लम्बा हो सकता है। इसलिए मैंने अपने पुत्र परवेज को आदेश दिया कि राणा के साथ युद्ध करने के लिए कुछ सरदारो को छोडकर वह आसफ खा के साथ आगरा आ जावे और अपने साथ ऐसे लोगो को सेवार्थ ले आवे जिनके उनका निकट सम्बन्ध है। वह उपरोक्त प्रदेश की रक्षा और व्यवस्था के विषय में अपने को उत्तरदायी समझे परन्तु अल्लाह के अनुग्रह से खुसरू का मामला परवेज के आगरा पहुचने से पहले ही निपट गया। इसलिए मैने परवेज को आदेश दिया कि वह आकर मुझसे मिले।

कन्धार का घेरा—बुद्धवार तारीख 8 मुहर्रम को मैने शुभ रीति से लाहौर के दुर्ग मे प्रवेश किया। कई वफादार राजसेवको ने मुझसे निवेदन किया कि मेरे आगरा लौट जाने से साम्राज्य का हित होगा। क्योकि उस समय गुजरात, दक्षिण और बंगाल मे गडबड चल रही थी। मैने इस सलाह का अनुमोदन नहीं किया कारण यह था कि कन्धार के फौजदार शाहबेग खा की रिपोर्ट से मालूम हुआ कि ईरान की सीमा पर स्थित कर्मचारी उस दुर्ग पर आक्रमण करने का विचार कर रहे है। कन्धार के मिर्जा लोगो की बची हुई सेना वहां प्रपच कर रही थी और सदा झगडे किया करती थी। ईरान के उच्चधिकारियो ने इन लोगों को पत्र लिखकर उकसाया था और वहा उत्पात होने की बडी सम्भावना थी। मुझे यह विचार आया कि बादशाह अकबर की मृत्यु और खुसरू के अनुचित विद्रोह के कारण उनके विचार और भी उग्र हो जायें और वे कन्धार पर आक्रमण करे। जैसा मैंने सोचा था वास्तव में वैसा

One of the physicians of Persia, Hakım Sadra by name, undertook to cure the Prince within six months. By his skill th ePrince recovered his original power of vision in one of his eyes, but the other remained a little defective in that respect, and also became smaller than its natural size. After the lapse of the assigned time, the Prince was presented to His Majesty, who showed the physician great favour, and honoured him with the title of Masihu-z-Saman.

ही हुआ। फराह के फौजदार, सीस्ता के मलिक और आस–पास के जागीरदार ने हैरात के फौजदार हुसेन खा की सहायता से कन्धार पर आक्रमण किया। शाहबेग खा ने साहस और पुरुषार्थ का प्रशसनीय कार्य किया। वह वीर की भाति अपने स्थान पर दृढ रहा। उसने दुर्ग को और भी मजबूत बनाया और उसकी तीसरी दीवार के ऊपर ऐसा जम गया कि बाहर के लोगो को उसके कार्य दिखाई देते थे। घेरे के दिनो मे उसने कमर नही कसी। नगे सिर व नगे पैर वह आनन्द गोष्ठिया किया करता था। परन्तु प्रतिदिन वह दुर्ग से शत्रु का सामना करने के लिए सेना भेजा करता था और बडे पुरुषार्थ से प्रयास किया करता था वह दुर्ग मे ठहरा तब तक ऐसा ही करता रहा। क्रिजिलबास सेना ने दुर्ग को तीन ओर से घेर लिया जब इसकी खबर लाहौर पहुची तो यह उचित समझा गया कि उसके पास ही टिके रहना चाहिए। तुरन्त ही मिर्जा गाजी के नेतृत्व मे एक बडी सेना तैयार की गई। इस मिर्जा के साथ बडे–बडे पदवाले दरबारी सेवक थे। जैसे कराबेग और तख्तबेग इन दोनो को क्रमश कराखा और सरदार खा की उपाधि दी गई थी। मैने मिर्जा गाजी को पाच हजार जात और पाच हजार सवार का मनसब दिया और नक्कारे का सम्मान प्रदान किया। मिर्जा गाजी, मिर्जा जानी नर खान का पुत्र था। मिर्जा जानी सिन्ध का सुल्तान था। अब्दुर्रहीम के प्रयास से स्वर्गीय बादशाह के समय मे इस प्रदेश को जीत लिया गया था। ठट्टा (सिन्ध का देश) उसकी जागीर मे था और वह पाच हजार जात और पाच हजार सवार का मनसबदार था। उसकी मृत्यु के बाद मिर्जा गाजी को भी वही पद और सेवा सौप दी गई। इनके पूर्वज खुरासान के शासक सुल्तान हुसेन मिर्जा बायकरा के अमीरो मे गिने जाते थे और ये शाहीबेग किरानी (तैमूर) के वशज माने जाते थे। ख्वाजा आबिल को इस सेना का बख्शी नियुक्त किया गया और मार्ग व्यय के लिए कराखा को 43 हजार रुपये और नकदीबेग तथा किलीजबेग को जो मिर्जा गाजी के साथ थे 15 हजार रुपये दिये गये। इस मामले को निपटाने के लिए और काबुल का दौरा करने के इरादे से वह लाहौर मे ही ठहरा रहा। उसी समय हकीम फतुल्ला को एक हजार जात और 300 का मनसब दिया गया। शेख हुसेन जामी को मेरे विषय मे स्वप्न आया करते थे जो सच्चे सिद्ध हुए। इसलिए मैने उनको 20 लाख दाम प्रदान किये जो 30, 40 हजार रुपये के बराबर होते थे यह राशि उसके निजि खर्च और उसके मठ तथा साथी दरवेशो के खर्च के लिए दी गई थी। 22 तारीख को मैने अब्दुल्ला खा को 2500 जात और 500 सवार का मनसब दिया और आदेश दिया कि 2 लाख रुपये कैदियो को अग्रिम दे दिये जावे जो धीरे–धीरे उनके मासिक वेतन मे से

काट लिए जावे। मैने शाहबेग खा के दामाद कासिमबेग खा को छ हजार रुपये और सैयद बहादुर खा को 3 हजार रुपये दिये।

गुरु अर्जुन की हत्या– ब्यास नदी के तट पर स्थित गोविन्दवाल मे अर्जुन नामक एक हिन्दू रहता था जो एक पवित्र सत जैसे कपडे पहना करता था। कितने ही सीधे–साधे हिन्दू और कुछ अज्ञानी और मुर्ख मुसलमान भी उसके तरीको से और व्यवहार से आकर्षित हो गये और उसकी पवित्रता के ढोल बजाने लगे, उसको गुरु मानने लगे और सब और लोगो के झुड उसकी पूजा करने के लिए और उसके प्रति विश्वास करने के लिए आने लगे। इस प्रकार की दुकान चार पुस्तो से चल रही थी। मुझे कई बार विचार आया कि इस काड को समाप्त कर दू या इस व्यक्ति को मुसलमान बनालू।[1]

जब खुसरू इस मार्ग से जा रहा था तो वह व्यक्ति उससे मिला। खुसरू उसके पास ही ठहरा। खुसरू ने बाहर निकलकर उसका अभिवादन किया। इस व्यक्ति ने खुसरू के साथ विशेष व्यवहार किया और उसके ललाट पर केसर का तिलक लगाया। जब यह बात मेरे कानो पडी और मैने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि खुसरू ने बडी मुर्खता की है तो मैने आदेश दिया कि इस व्यक्ति को मेरे सामने पुस्तुत किया जाए और उसके मकान और बाल बच्चे मुर्तजर खा के सुर्पुद कर दिये जावे तथा उसकी सम्पत्ति जब्त करके उसका वध कर दिया जावे।

राजू ओर अम्मा दो ऐसे व्यक्ति थे जो नाजीर दोलत खा के जौम पर अपनी जीविका कमाते थे और लोगो पर अत्याचार करते थे जब खुसरू लाहौर के सामने था तो उन लोगो ने लोगो को बडा सताया था। मैने राजू के लिए फासी का आदेश दिया और अम्मा पर जो बडा धनवान माना जाता था भारी जुर्माना किया। उससे 15 हजार रुपये लिये जो लोगो को खाना खिलाने मे और दान देनें मे खर्चे किये गये।

सईद सैयद खा के पुत्र सादुल्ला खा को 2 हजार जात और एक हजार सवार का मनसब दिया गया।

परवेज मेरे पास आने के लिए बडा उत्सुक था। उस समय भारी वर्षा हो रही थी तथापि उसने थोडे से समय मे लम्बी दूरी पार की और बृहस्पतिवार तारीख 29 को जब दोपहर 3 घडी दिन हो चुका था तो उसने मुझ से आर्शीवाद प्राप्त किया मैने कृपा और स्नेह के साथ उसका आलिगन किया और उसके ललाट का चुम्बन किया।

---

1 अर्जुन सिखो के छठे गुरू थे। इन्होने ग्रथ साहिब का सकलन किया था। ये गुरु हरगोबिन्द के पिता थे।

जब खुसरू का लज्जाजनक व्यवहार प्रकट हुआ तो मैंने निश्चय किया कि उसको पकड न लिया जाए तब तक मैं किसी स्थान पर विलम्ब नही करू। इस बात की सभावना थी कि वह वापिस हिन्दुस्तान की ओर मुडे इसलिए आगरा छोडते समय मैंने परवेज को लिखा था कि "तुम्हारी स्वामी–भक्त का परिणाम यह हुआ कि खुसरू भाग गया है और अब सौभाग्य ने तुम्हारी तरफ अपना रूख किया है। मैं खुसरू का पीछा करने के लिए रवाना हो गया हू और तुम समय की आवश्यकता के अनुसार राणा के मामलो को निपटाना और साम्राज्य के लिए शीघ्र ही आगरा आना।" मैने राजधानी और कोष उसके सुपुर्द कर दिये थे। ये कोषकारों के खजाने के बराबर था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि परवेज की रक्षा करे।

राणा से बातचीत– यह पत्र परवेज के पास पहुचा उससे पहले ही राणा जा चुका था और उसने आसफ खा को पत्र लिखा था कि "मै अपने कार्यों के कारण लज्जित हू। मुझे आशा है कि आप इस प्रकार बीच बचाव करोगे कि शाहजादा इतनी बात पर सन्तुष्ट हो जाए कि मै अपने पुत्र को जिसका नाम बाधा है भेज दू।" परवेज ने यह बात नहीं मानी और कहा कि या तो राणा स्वय आवे या कर्ण को भेजे। इसी बीच मे खुसरू के विद्रोह की खबर आई इसलिए आसफ खा और दूसरे माण्डलगढ के पास शाहजादे की सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने शाहजादे का आर्शीवाद प्राप्त किया।

राजा जगन्नाथ और अपनी सेना के अनेक सरदारो को वहा छोडकर परवेज आसफखा और कुछ अपने निकट के सेवको सहित आगरा के लिए रवाना हो गया और बाधा को अपने साथ दरबार मे ले आया।

जब वह आगरा के निकट पहुचा तो उसको खबर मिली कि खुसरू पर विजय प्राप्त हो चुकी है अब उसको पकड लिया गया है। दो दिन बाद उसके पास मेरा आदेश पहुचा कि सब ओर से मामले निपट चुके हैं। इसलिए वह निश्चित तिथि पर मेरे पास पहुचे और मुझसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त करे। मैंने उसको आफताबगीर[1] प्रदान किया किबा जो शाही चिन्ह है और 10 हजार का मनसबदार बनाकर अधिकारियो को आदेश दिया कि उसके लिए जागीर (तनख्वाह) मजूर करे। इसी समय ने मिर्जा अली बेग को कश्मीर भेजा और काबुल के अकिचन लोगो मे और फकीरो मे बाटने के लिए काजी इज्जतउल्ला को 10 हजार रुपये दिये। अहमत बेग खा को 2 हजार जात और 1250 सवार का मनसब दिया। इसी समय मुकर्रब खा ने बुरहानपुर से

---

1 यह एक शाही चिन्ह है जो बडा सम्मान सूचक माना जाता था।

वापिस आकर मेरे सामने उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और उधर का सब हाल सुनाया। उसको शाहजादा दानियाल के बच्चो को लाने के लिए भेजा गया था। वह छ मास और 22 दिन मे वापस आया।

सैफ खा को 2 हजार सवार का मनसब दिया गया। शेख अब्दुल वहाब बुखारा का एक सैयद था वह स्वर्गीय बादशाह के समय मे दिल्ली का फौजदार था। उसके लोगो ने कुछ निन्दनीय कार्य किये इसलिए उसको अपने पद से हटा दिया गया और निर्वाह के लिए उसे कुछ भूमि दे दी गई।

कुलक्रमानुगत निजी इलाको मे और जागीरो मे मैंने बुलगुरखाने (भोजनगृह) स्थापित किये। जहा निर्धन लोगो को खाना दिया जाता था। उद्देश्य यह था कि किसी स्थान के निवासियो को या यात्रियो को लाभ प्राप्त हो।

अम्बा खा काश्मीरी, कश्मीर के शासको का वशज था उसको एक हजार जात और 300 सवार का मनसब दिया गया सोमवार रवी–उल–आखिर तारीख 9 को मैने परवेज को एक विशेष तलवार दी और कुतुबद्दीन कोका अमीर–उल–उमरा को जडाऊ तलवारे प्रदान की गई। मै दानियाल के बच्चो से मिला जिनको मुकर्रब खा लाया था। इनमे 3 पुत्र और 4 पुत्रिया थीं। (पुत्रो के नाम, तहमुराश, बायसुधर और हुसग थे। इन बच्चो के प्रति मैने ऐसा अनुग्रह और स्नेह प्रदर्शित किया जिसकी किसी को आशा नही थी।) मैने निश्चय किया कि सबसे बडा लडका तहमुराश सदैव मेरे साथ रहे। दूसरे बच्चो को मैने अपनी बहनो के सुपुर्द कर दिया।

राजा मानसिह के लिए जो उस समय बगाल मे था एक खास खिलअत भेजी गई। मिर्जा गाजी को 30 लाख दाम इनाम के दिये गये। कुतुबद्दीन कोका के पुत्र शेख इब्राहीम को एक हजार जात और 300 सवार व मनसब किश्वर खा की उपाधि दी गई।

खुसरू का पीछा करने के लिए रवाना होते समय मैने महल और कोष अपने पुत्र खुर्रम के सुपुर्द किये थे। अब यह मामला निपट चुका था इसलिए मैने खुर्रम को आदेश दिया कि वह हजरत मरियम जमानी और अन्य महिलाओ को लेकर मेरे पास उपस्थित होवे। जब यह महिलाये शुक्रवार तारीख 12 को लाहौर के निकट पहुची तो मै नाव मे बैठकर अपनी माता से मिलने के लिए दहर नामक गाव मे पहुचा और मुझे उसका स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैने प्रणाम और दण्डवत की और कुशल समाचार पूछे जा चगेज खा की प्रथा और तीमूर के नियमो के अनुसार युवको का वृद्धो के प्रति कर्तव्य है। फिर ससार के स्वामी ईश्वर से प्रार्थना की और इस प्रकार कार्य पूरा करके मै अपनी माता से आज्ञा प्राप्त करके वापिस लाहौर के दुर्ग मे आ गया।

17 तारीख को मैंने मुइजुल–मुल्क बख्शी को राणा के विरुद्ध रवाना किया। मुझे यह खबर मिली थी कि रायसिंह और उसके पुत्र दलीप ने नागौर के पास उपद्रव कर दिया है इसलिए मैंने राजा जगन्नाथ को सरकार के अन्य सेवकों सहित और मुइजुल–मुल्क के साथ उधर की ओर आने का आदेश दिया और कहा कि इस उत्पात को शान्त करें। मैंने सरदार खां को 50 हजार रुपये दिये इसको शाहबेग खां के स्थान पर कन्धार का फौजदार नियुक्त किया गया था और 3 हजार जात और 2500 सवारों का मनसबदार बनाया गया था। खानदेश के पदच्युत शासक को 3 हजार रुपये दिये गये। हासिमखां कासिमखां, खानजादा के पुत्र हैं। वे उन्नति के योग्य हैं। मैंने उसको 2 हजार 500 जात और 1500 सवारों को मनसबदार बनाया और उसे अपना ही एक घोड़ा प्रदान किया। दक्षिण[1] की सेना में काम करने वाले 8 सरदारों को मैंने खिलअतें भेजी। निजाम शिराजी कहानी कहने वाले को 5000 रुपये बख्शे गये। 3 हजार रूपये कश्मीर में बुलगूरखाना जारी करने के लिए मिर्जा अली बेग के वकील को दिये गये। यह मिर्जा कश्मीर का फौजदार था। रुपये श्रीनगर भेज भेज दिये गये। मैंने कुतुबुद्दीन खां को 6 हजार रुपये की कीमत का एक रत्न जडित खंजर भेंट किया।

शेख इब्राहीम बाबा का दमन– मुझे खबर मिली कि शेख इब्राहीम बाबा नामक एक अफगान ने लाहौर के परगने में एक धार्मिक संस्था स्थापित कर ली है। वह शेख कहलाता है। और उसने शिष्य बना लिये है। इस अफगान के कार्यों की ख्याति अच्छी नहीं थी। कितने ही अफगान उसके पास आ गये थे। मैंने आदेश देकर उसको बुलाया और परवेज के सुपुर्द करके कहा कि उसको चुनार के दुर्ग में रखा जावें इस प्रकार इस व्यर्थ और दम्भपूर्ण उत्पात का अन्त किया गया।[2]

7 जुमादल अब्बल रवीवार को बहुत से मनसबदारों एवं अहदियों की उन्नति की गई। महावत खां को 2 हजार जात और 1300 सवार का मनसब मिला। दिलावर खां को 2 हजार जात 1400 सवार का मनसब दिया। वजीर–उल–मुल्क को 1300 जात 550 सवार का मनसब प्रदान किया गया। कय्याम खां को एक हजार जात का और एक हजार सवार तथा श्यामसिंह को 1500 जात का और 1200 सवार का मनसब

---

1. दक्षिण नहीं वास्तव में मेवाड़।
2. उस समय परवेज के सुपुर्द बिहार का प्रशासन था।

प्रदान किया गया। इस प्रकार 42 मनसबदारो की पदोन्नति की गई। अधिकाश दिनो पर ऐसा ही कार्य किया जाता था। मैने परवेज को 25 हजार रुपये के मूल्य की एक लाल भेट की।

तुलादान

बुद्धवार तारीख 9 उपरोक्त मास को अर्थात् 21 शहरीवार को 3 पहर ओर 4 घडी दिन व्यतीत होने पर मेरी तुला का उत्सव हुआ। यह तुला मेरे जीवन के 37वे वर्ष के आरम्भ को सूचित करती थी। प्रथा के अनुसार तौलने का समान और तराजू मरियम जमानी के निवास मे तैयार किया गया। नियत समय पर आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की गई और मै तराजू के पलडे मे बैठा तराजू के प्रत्येक रस्से को एक वृद्ध व्यक्ति पकडे हए प्रार्थना कर रहा था। पहली बार तोलने पर मेरा वजन 3 हिन्दुस्तानी मन और 10 सेर हुआ। तत्पश्चात मुझको कई धातुओ से सुगन्धित द्रव्यो और अर्कों से तोला गया। इस प्रकार मुझे 12 बार तोला गया इसका विस्तृत विवरण आगे चलकर दिया जावेगा। वर्ष मे 2 बार मुझे सोने और चादी से तथा अन्य धातुओ मे तोला जाता है।

कई प्रकार के रेश्मी कपडो से और विविध प्रकार के अन्नो से भी तौला जाता है। एक तुला शौर वर्ष के और दूसरी चान्द्र वर्ष के आरम्भ मे होती है। तुला का धन मैं जुदे–जुदे खजानचियो को दे देता हू। जो अकिंचित फकीरो मे बाट देते है।

कुतुबुद्दीन कोका का सम्मान—उसी दिन मैने कुतुबुद्दीन खा कोका की पदोन्नति की। वह कई वर्ष से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था। मैने उस पर अनेक कृपाये की पहले तो मैंने उसको 5 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया। एक खिलअत फाखरा (विशेष सम्मान सूचक) एक जडाऊ तलवार और एक मेरा निजी घोडा जडाऊ जीन सहित प्रदान करके उसको बगाल और उडीसा की सूबेदारी पर रवाना कर दिया। यह स्थान 50 हजार घोडो के लिए है। वह एक बडी सेना सहित रवाना हुआ और उसको 2 लाख रुपये आतिक्त व्यय के लिए दिये गये। उसकी मा से मेरा सम्बन्ध इतना गहरा है जितना मेरी स्वय की माता से नही है। कारण यह है कि बचपन मे उसी ने मेरा लालन पालन किया था। वह मेरी कडी कृपालू माता है और मैं कोका को अपने भाईयो से कम नही समझता। कुतुबुद्दीन मेरा भाई है। मैंने उसके सहायको को 3 लाख रुपये दिए। इसीदिन मैंने अपने भाई मुराद (पहाडी) की लडकी के विवाह के लिए एक लाख 30 हजार रुपये भेजे उसकी सगाई परवेज से हुई थी।

बाज बहादुर कलमाक ने बंगाल मे अनेक अपराधी कार्य किये थे। 22 तारीख को सौभाग्य से उसको मेरी चौखट चुम्बन करने का सम्मान प्राप्त हो गया। मैने उसको एक जडाऊ खजर, 8 हजार रुपये नकद और एक हजार जात तथा एक हजार सवार का मनसब दिया। परवेज को एक लाख रुपये और जवाहरात भेट की गई। केशव दास मारु को 1500 जात और सवार का मनसब दिया गया। अबुल हसन मेरे भाई दानियाल का दीवान था और उसके बच्चो की भी देखरेख करता था। उसको मेरे समक्ष उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त हुआ। मैने उसको एक हजार जात और 500 सवार का मनसब प्रदान किया। जुमादल–आखिर की एक तारीख को शेख बायजीत को मोहज्जम खा की उपाधि दी और दिल्ली नगर का प्रशासन उसके सुपुर्द किया। वह सीकरी का एक शेखजादा था और अपनी समझ बूझ की तेजी के लिए प्रसिद्ध था उसका पुरानी सेवा से सम्बन्ध था। इसी मास की 21 तारीख को मैने परवेज को एक माला भेट की जिसमे 100 मोती और 4 लाले थी। हकीम मुजफ्फर का मनसब 3 हजार जात और 1000 सवार कर दिया। मैने मझोली के राजा नाथू मल को 5 हजार रुपये दिए।[1]

मिर्जा अजीज कोका का मामला

एक विशेष घटना यह हुई कि मिर्जा अजीज कोका ने खानदेश के शासक अली खा को पत्र लिखा था जिसका पता लग गया। मेरा ऐसा ख्याल था कि खुसरू के कारण उसकी मुझसे से शत्रुता थी क्योकि खुसरो उसका दामाद था। इस पत्र का पता लग जाने से यह स्पष्ट हो गया कि उसने अपनी दगाबाजी कभी नही छोडी थी। मेरे पिता के साथ भी उसने ऐसा ही व्यवहार किया था। साराश यह है कि राजा अलीखा को लिखे हुए उसके पत्र मे आरम्भ से अन्त तक मेरे लिए गालिया भरी हुई थी और मेरा प्रत्येक कार्य उसको बुरा लगता था। उसने ऐसी बाते कही थी जो कोई शत्रु भी नहीं कह सकता था और मुझ पर ऐसे लाछन लगाये थे जो किसी पर नही लगाये जा सकते थे। उसने स्वर्गीय बादशाह को भी नही छोडा था जो सबकी कदर करने वाला था और जिसने इस व्यक्ति को बचपन से शिक्षा दी थी और पाला था। इसका कारण यह था कि इसकी मा ने स्वर्गीय बादशाह की सेवा की थी और इस पर बादशाह इतना भरोसा करता था जितना अन्य किसी पर नही। यह पत्र ख्वाजा अबुल हसन बुरहानपुरी के हाथ मे राजाअली खा की सम्पत्ति के साथ–साथ आ गया था उसने यह मेरे सामने प्रस्तुत किया। जब मैने इसको

---

1 यह नाम भी ममल मालूम होता हे।

देखा और पढा तो मेरे रोगंटे खडे हो गये। यदि मुझे यह ख्याल नहीं होता कि इस पत्र के लेखक की माता ने मेरे पिता को अपना दूध पिलाया था तो मैं उसको अपने ही हाथ से तलवार से मार डालता। मैंने उसको अपने सामने बुलाया और उसके हाथ मे यह पत्र देकर उससे कहा कि सबके सामने इसके उच्च स्वर से पढो। जब उसने पत्र देखा तो मैंने सोचा कि उसके प्राण निकल जावेंगे। परन्तु उसने और दुष्टता के साथ उस पत्र को पढ़ा मानों वह उसके हाथ का लिखा हुआ ही नहीं था और वह मेरे आदेश से पढ रहा था। जो लोग अकबर जहागीर के सर्वोच्च दरबार में उपस्थित थे उन्होंने इस पत्र को सुना और पढा और लेखक की खूब बुराई की उसको गालियां दी और शाप दिये। मैंने उससे पूछा उन दगाबाजियों को तो छोड़ दो जो तुमने आप पर भरोसा करके मेरे साथ की हैं परन्तु मेरे पिता ने तुम्हारे साथ क्या बुराई की थी। उन्होंने तुमको और तुम्हारे कुटुम्ब को रास्ते की खाक में से उठाकर इतना ऊँचा पद और धन दिया कि तुम्हारे समय के लोग तुम से ईर्षा करने लगे और फिर भी तुमने साम्राज्य के शत्रु के नाम ऐसी बातें लिखी तुम दुष्ट और राजद्रोही लोगो में क्यो सम्मिलित हो गये। वास्तव में किसी के स्वभाव और प्रवृति को कौन जान सकता है। तुम्हारा स्वभाव दगाबाजी से निर्मित हुआ है। ऐसे स्वभाव से और क्या काम हो सकता है। तुमने जो मेरे साथ किया उस पर ध्यान न देकर मैंने तुमको वहीं पद दे दिया जो अपने तुम्हारे पास था। मेरा ख्याल था कि "तुम्हारी दगाबाजी मुझ तक ही सीमित थी परन्तु ज्ञात हो गया है कि तुमने अपने हितैषी के प्रति जो सरकार ईश्वर जैसा था ऐसा ही बर्ताव किया। अब तुम अपने विचारों और कार्यों पर विचार करो जो तुमने पहले किये थे और अब कर रहे हो।" इन बातों के बाद उसके होठ बन्द हो गयें और कोई उत्तर नहीं दे सका। ऐसी लज्जाजनक स्थिति में वह क्या कह सकता था मैंने उसकी जागीर छीन लेने का आदेश दिया। यद्यपि वह दुष्ट क्षमा के योग्य नहीं था तो भी अन्त में कुछ विचार करके मैंने इस मामले को छोड़ दिया।

परवेज का विवाह–उपरोक्त मास की 26 तारीख रविवार को परवेज और शाहजादा मुराद की पुत्री के विवाह का प्रीतिभोज हुआ। यह आयोजन मरियम जमानी के निवास पर हुआ था उत्सव परवेज के निवास पर आयोजित किया गया था। उपस्थित होने वाले सब लोगों के साथ आदर किया गया। सरीफ असूली और दूसरे सरदारों को फकीरों और निर्धन लोगों में बांटने के लिए 9 हजार रुपये दिये गये।

परवेज की तुला– वुद्धवार तारीख 13 को परवेज की शौर तुला हुई उसको विविध धातुओं और अन्य वस्तुओं से बारह बार तौला गया। प्रतिवार 2 मन और

18 सेर वजन निकला। मैने सब चीजो को फकीरो मे बाट देने का आदेश दिया। इस अवसर पर सुजातखा का मनसब 150 जात और 700 सवार कर दिया।

मिर्जा गाजी और उसकी सेना के कूच के बाद ख्याल आया कि उसके पीछे एक दूसरी सेना भी भेजी जावे। बहादुरखा कुरबेगी को 1500 जात और 800 सवार का मनसब देकर मैने घुडसेना रवाना की जो लगभग 3000 थी। यह सब खान बहादुर कुरबेगी के साथ थे। शाहबेग और मुहम्मद अमीन इसका नेतृत्व कर रहा था। इस सेना के खर्च के लिए 2 लाख रुपये दिये गये और 1 हजार बन्दूकची नियुक्त किये गये।

मेने खुसरो की चौकसी और लाहौर की रक्षा के लिए आसफखा को वहा छोडा। अमीर–उल–उमरा को मेरे पास उपस्थित रहने से वचित कर दिया गया क्योकि वह सख्त बीमार था और नगर मे ही रहता था। राणा के देश से अब्दुर्रजाक मामूरी को बुलाया और उसको बख्शी नियुक्त करके आदेश दिया कि अबुल हसन के साथ–साथ वह ये सेवा स्थाई रूप से करता रहे। अपने पिता के नियम को अनुकरण करके मै मुख्य दफतरो के काम पर 2 आदमियो को नियुक्त किया करता हू। इसका यह मतलब नही है कि मेरा उन पर भरोसा नही है परनतु आखिरकार वे मनुष्य है और कोई भी मनुष्य बीमारी या दुर्घटना से मुक्त नही है। यदि एक व्यक्ति को कोई परेशानी हो जाये या उसके मार्ग मे अडचन आ जाये तो ईश्वर के सेवको के काम नष्ट न हो और दूसरा व्यक्ति उनको चलाता रहे।

रामचन्द्र को कैद किया– इस समय दशहरा था। यह हिन्दुओ का एक निश्चित त्यौहार है। अब्दुल्ला खा ने काल्पी से जो उसकी जागीर थी और बुन्देला प्रान्त मे स्थित थी बडी वीरता के साथ मधुकर के पुत्र रामचन्द्र को गिरफ्तार कर लिया ओर उसको काल्पी ले गया। रामचन्द्र बडे अर्से से उपद्रव कर रहा था और दुर्गम स्थान को उसने विद्रोह का केन्द्र बना लिया था। इस सेवा के बदले मे अब्दुल्ला खा को एक झण्डा दिया गया और उसका मनसब 3000 जात और 2 हजार सवार कर दिया गया।

संग्राम आहत हुआ– बिहार के सूबा से अर्जिया पेश हुई कि जहागीर कुली खा ने सग्राम से लडाई लडी। यह बिहार का एक मुख्य जमीनदार था इसके पास 4 हजार सवार और अगणित प्यादे थे। उसने विरोध और राजद्रोह किया था। रणभूमि मे जहागीर कुली खा ने बडी बहादुरी से लडाई लडी। अन्त मे सग्राम सिह एक बन्दूक की गोली से आहत हो गया और उसके बहुत से आदमी रणभूमि मे धराशायी हो गये और जो तलवार से बच गये वे भाग गये। यह सारा काम जहागीर कुलीखा ने किया था। इसलिए मैने उसका मनसब 4500 जात और 3500 सवार कर दिया।

शिकार– शिकार मे 3 मास और 6 दिन व्यतीत हो गये। 581 जानवर बन्दूको, चीतो, जालो और कमारगाह के द्वारा पकड लिये गये इनमे से 158 मेरी बन्दूक से मारे गये थे। कमारगाह दो बार किया गया था एक बार तो गिरझाक मे इसकी व्यवस्था हुई थी। वहा महिलाये भी उपस्थित थी। इसमे 155 जानवर मारे गये थे। दूसरा कमारगाह नन्दना मे किया गया। वहा 110 जगली पशु मारे गये। इसमे पहाडी मेढे, 180 पहाडी बकरे, 29 पहाडी गधे, 10 नीलगाये, हिरण आदि 348 थे।

दलीप का पलायन– इससे पहले मैने आदेश दिया था कि दलीप और राय रायसिह को दण्ड दिया जावे। अब खबर आई कि सादीकखा के पुत्र जाईदखा, शेख अबुलफजल के पुत्र अब्दुर्रहीम, राणा शकर और मुइजुल–मुल्क ने तथा दरबार के अन्य मनसबदारो की सेना से सुना है कि दलीप सूबा अजमेर मे नागौर के पास है। जब यह सेना आगे बढी तो वह मिल गया। वह बचकर भाग नही सका। इसलिए आवश्यकतावश वह एक स्थान पर जम गया और शाही सेना से उसकी मुठभेड हो गई। थोडी–सी लडाई के बाद वह बहुत बुरी तरह हार गया और बहुत से लोग मारे गये वह अपने सामान लेकर विनाशा की घाटी मे भाग गया।

किलीचखा यद्यपि वृद्ध हो गया था तो भी मैने उसको मनसबदार बनाये रखा क्योकि उसने मेरे पिता की सेवा की थी मैने आदश दिया कि सरकार काल्पी मे उसको जागीर दे दी जावे।

जिलकदा मास मे कुतुबुद्दीन कोका की माता की मृत्यु हो गई। उसने मुझे अपना दूध पिलाया था और वह मेरी मा की अपेक्षा मुझ पर अधिक कृपा रखती थी। मै बचपन से उसी की गोद म पला था। मैने उसके पैरो को कन्धा दिया और कुछ दूर तक उसके जनाजे को कब्र की ओर ले गया। अत्यन्त सन्ताप ओर शोक के कारण कुछ दिन तक मुझे खाने मे कोई रुचि नही रही और मैने अपने कपडे भी नही बदले।

द्वितीय नव वर्ष का उत्सव

कन्धार में शाही सेना का प्रवेश— बुद्धवार 22 जिलकदा 1015 हिज्री (10 मार्च 1607) जब साढे 3 घडी दिन व्यतीत हो चुका था तो सूर्य अपने सम्मान कक्ष मे आया। सदैव की भाति महल को अलकृत किया गया और आमोद प्रमोद की बडी तैयारी हुई। शुभ घडी मे तख्त पर बैठकर मैने सामन्तो और दरबारियो को अनुग्रह पूर्वक पदोन्नति की। इसी शुभ दिन को कन्धार से समाचार आया कि मिर्जा जानी के पुत्र मिजा गाजी के नेतृत्व मे जो सेना शाहबेग खा की सहायतार्थ भेजी गई थी तारीख 12 सव्वाल को कन्धार नगर मे घुस गई है। जब उक्त दि॰ के अन्त मे ईरानियो ने विजयी सेना के आगमन की खबर सुनी तो उन्हे आश्चर्य ओर पश्चाताप हुआ और ऐसी शीघ्रता से वे रवाना हुए कि हैलमन्द जाकर ठहरे जो 50 या 60 कोस की दूरी पर है।

फिर यह विदित हुआ कि फराह के फौजदार और आस—पास के अधिकारियो के दिमाग मे बादशाह अकबर की मृत्यु हो जाने के कारण यह बात आई कि इस गडबड मे कन्धार आसानी से उनके हाथ मे आ जावेगा। उन्होने शाह ह्व्वास के आदेश की भी प्रतीक्षा न करके एकत्र हो कर सीस्ता के सरदार को अपने पक्ष मे कर लिया। फिर हैरात के फौजदार हुसेन खा से उन्होने समर्थन के लिए कहलाया तो उसने भी सेना भेजी।

कन्धार का युद्ध

इसके पश्चात ईरानियो ने कन्धार को घेर लिया वहा के हाकिम शाहबेग खानी ने सोचा कि अगर मैं बाहर निकलकर लडूँ और मेरी पराजय हो जाये तो फिर कन्धार को सम्भालना कठिन हो जायेगा इसलिए उसने किले को दृढ किया और वह अन्दर ही बैठ गया और मेरे पास शीघ्रगामी धावन रवाना किये। सयोगवश जब मै खुसरो का पीछा करता हुआ लाहौर मे ठहरा हुआ था तो धावनो ने मुझे सूचित किया। मैने यह खबर सुनकर अविलम्ब एक बडी सेना मनसबदारो और उमरावो मिर्जा गाजी के साथ उधर रवाना कर दी। परन्तु यह सेना कन्धार नही पहुची थी कि शाह ह्व्वास ने सुना कि फराह के हाकिम ने उधर के जागीरदारो को एकत्रित करके कन्धार की ओर प्रयाण कर दिया है। इसको उसने अनुचित कार्यवाही समझकर एक प्रसिद्ध

और अपने घनिष्ठ मित्र हुसेनबेग को इसका पता लगाने के लिए रवाना किया। उसने उनके नाम एक फरमान भी भेजा कि वे कन्धार से हटकर अपने-अपने स्थानों पर चले जायें। क्योंकि बादशाह जहांगीर के परिवार के साथ मेरे पूर्वजों की पुरानो मित्रता है। हुसेनबेग और बाहशाह के आदेश पहुंचने से पहले ही ईरानी सेना शाही सेना का मुकाबला नहीं कर सकी। और उसने वापिस हट जाना ही अच्छा समझा। उपरोक्त हुसेनबेग ने उन आदमियों को बुरा भला कहा और वह मेरे पास लाहौर आकर दरबार मे उपस्थित हुआ। उसने कहा कि जिस दुर्भाग्य ग्रस्त सेना ने कन्धार पर आक्रमण किया था उसने शाह हव्वास से अनुमति प्राप्त नही की थी। ईश्वर न करे कि इसके कारण मेरे मन में कोई दुर्भावना नही रह जाये। सारांश यह है कि जब मेरी विजयी सेना कन्धार पहुंची तो दुर्ग रक्षको ने आदेशानुसार दुर्ग सरदारखा के सुपुर्द कर दिया ओर शाहबेगखां दरबार मे वापिस आ गया।

रामचन्द्र बुन्देला की कैद और मुक्ति

27 जिलकदा को अब्दुल्ला खां रामचन्द्र बुन्देला को बेडिया डालकर और बन्दी बनाकर मेरे सामने लाया। मैने आदेश दिया कि उसके पैर की बेडिया हटा दी जायें उसको एक खिलअत प्रदान करके मैंने उसे राजा बासू के सुपुर्द कर दिया और आदेश दिया कि जमानत लेकर उसको मुक्त कर दिया जावे और उसके रिश्तेदारों को छोड दिया जावे। मैंने रामचन्द्र पर जो कृपा की उसकी किसी ने कल्पना भी नही की थी और न स्वयं को इसकी आशा थी।

जिलहिजा की 2 तारीख को मैंने अपने पुत्र खुर्रम को तौमान ओर तौघ और निशान तथा नक्कारा प्रदान दिया और 8 हजार जात ओर 5 हजार सवार का मनसब दिया और आदेश दिया कि उसको एक जागीर दी जावे। उसी दिन दौलत खां लोदी के पुत्र पीरखा को जो खानदेश से शाहजादा दानियाल के कुटुम्बियों और साथियों को लेकर आया था मैंने सलाबतखां की उपाधि दी और उसे 3 हजारी जात और 1500 सवार का मनसब देकर सम्मानित किया तथा निशान और नक्कारा भी दिया। उसको फरजन्द की उपाधि देकर भी प्रतिष्ठित किया। सलाबतखां के पूर्वज लोदी जाति में बड़े प्रतिष्ठित माने जाते थे। इसलिए दौलतखां इस खानदान में पहले भी दौलतखां हुआ है वह सलाबतखां के दादा का चाचा था जब अपने पिता सिकन्दर की मृत्यु के बाद इब्राहीम ने अपने पिता के अमीरों के प्रति दुर्व्यहार करना शुरू किया और बहुतसों को नष्ट कर डाला तो उस दौलतखां ने अपने छोटे पुत्र दिलावरखां को बाबर के पास काबुल भेजा

और सुझाव दिया कि हिन्दुस्तान को जीता जावे। बाबर के मन में यह ख्याल पहले से ही था इसलिए उसने तुरन्त उस दिशा में कूच कर दिया। और पहुंचने से पहले वह कहीं नहीं ठहरा। दौलतखां को बाबर की सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उसने स्वामी भक्ति पूर्ण सेवा की। वह वृद्ध पुरुष था और बाह्य और आन्तरिक गुणों से अलंकृत था। बाबर उसको पिता कहता था। उसने पूर्ववत पंजाब का प्रशासन उसके सुपुर्द कर दिया दिलावर खां को साथ लेकर बाबर काबुल को लौट गया। जब बाबर दूसरी बार पंजाब में आया तो हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का उसका विचार था। दौलतखां उसकी सेवा में आया परन्तु लगभग उसी समय दौलतखां की मृत्यु हो गई। दिलावरखां को खानखाना की उपाधि से सम्मानित किया। जब बाबर की इब्राहीम से लडाई हुई तो वह बाबर के साथ था। इसी प्रकार वह स्वर्गीय बादशाह हुमायूं के साथ भी सदैव रहा करता था। मुगेर के थाने में वह शेरखां अफगान से वीरतापूर्वक लडा था। उस समय हुमायूं बंगाल से वापिस लौट रहा था। रणक्षेत्र में दिलावरखा को कैद कर लिया गया था। शेरखां ने चाहा था कि वह उसकी नौकरी करले परन्तु उसने उत्तर दिया कि तुम्हारे पूर्वज हमेशा मेरे सेवक थे तो मैं तुम्हारी नौकरी कैसे कर सकता हूं शेरखा को क्रोध आया और उसने आदेश दिया कि उसको दिवार के अन्दर चुन दिया जावे।

उमर खां का वृतान्त–उमरखान दिलावर खा का चचेरा भाई था और सलीम शाह के राज्यकाल में बडा सरदार था। जब शेर खा का पुत्र सलीम शाह की मृत्यु हो गई और सलीम शाह के पुत्र फिरोज खां को मुहम्मद खान ने मार डाला तो उमर खा, मुहम्मद खान से भयभीत होकर अपने भाई बेटो के साथ गुजरात की ओर चला गया और वहां उमर खां की मृत्यु हो गई। उसका पुत्र दोस्त मुहम्मद (दौलत खां) बडा सुन्दर था वह बेरम खां के पुत्र अब्दुल रहीम खा की सेवा करने लगा। अब्दुल रहीम खां मेरे पिता के समय मे खानखाना बना। इस समय वह काम कर रहा है। खानखाना उसको अपना सगा भाई मानता है बल्कि सगे भाई से भी अधिक समझता हैं। वहा जो खानखाना की विजय हुई वे दोस्त की वीरता से हुई थी। मेरे पूज्य पिता ने खानदेश और किला असीरगढ जीत लिया तो शाहजादा दनियाल को उस मुल्क और शेष नगरो पर शासक नियुक्त करके जो दक्षिण के सरदारो से छीने थे राजधानी आगरा की ओर लौट। वहां दनियाल ने दौलत खां खानखाना की सेना से पृथक करके अपने पास रख लिया और अपनी सरकार का सारा काम उसके हवाले कर दिया और. उस पर बडी कृपा प्रकट की यहा तक कि दौलत खां की उसी की सेवा करते हुए मृत्यु हुई। दौलत खां के दो पुत्र थे मुहम्मद खां और और दूसरा पीर खां.

मुहम्मद खां बड़ा भाई था वह पिता के कुछ दिन बाद ही मर गया फिर अत्याधिक मद्यपान के कारण दानियाल की भी मृत्यु हो गई। उन सब के बाद मैने इस पीर खान को बुलाया और उसकी योग्यता और उत्तम सेवा देखकर उसको उक्त पद पर नियुक्त कर दिया।

पीर खां–इस समय पीर खां से ऊँची प्रतिष्ठा वाला कोई सरदार नही है, लोगों के बडे–बड़े अपराध जो मैं किसी कि सिफारिश से क्षमा नही करता उसकी प्रार्थना पर क्षमा कर देता हूं। वह वीर योग्य और विश्वसनीय है और उसकी पदोन्नति उचित ही हुई है। उसके साथ और भी रियायतें की जावेगी।

मावरूनहर– मेरी इच्छा है कि मावरूनहर पर विजय प्राप्त की जावे वह मेरा पैतृक देश है मेरे पूर्वजों का वहां राज्य था मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की उत्पाती और शरारती लोगों का दमन करके किसी अपने पुत्र को यहां छोडकर मैं स्वयं एक बडी सेना और हाथियो के साथ तथा बडा कोष लेकर उस देश की ओर ध्यान दूं। इस ख्याल से परवेज को मैंने राणा की ओर रवाना किया और मैंने दक्षिण की ओर जाने का विचार किया इसी समय खुसरो का मामला सामने आ गया। इसलिए वह आवश्यक हो गया कि पहले उसका पीछा करूं और उसके उत्पात को दबाऊँ। इसलिए परवेज के काम में सफलता नहीं हुई और मैंने समयोचित युक्ति के अनुसार राणा को कुछ समय देकर उसके एक पुत्र को अपने पास बुला लिया। वह लाहौर मे मेरे पास आया। अब मैं खुसरो के फिसाद से मुक्त हुआ तो मेरी सेना किजलबासों पर चढाई करके कन्धार को जीत चुकी थी। मेरे दिल मे आया था कि काबुल के आस पास ही शेर और शिकार करके वापिस हिदुस्तान लौटूं। इस निश्चय के अनुसार 7 जिलहिजा को शुभ मुहूर्त पर मै लाहौर से रवाना हुआ और दिलआमिज बाग में अपने डेरे लगवाये। यह बाग रावी नदी के दूसरी ओर है, मैं वहां 4 दिन ठहरा। रविवार 19 फरवरी को जब सूर्य ऊँचे से ऊँचा था तो मैं बाग में पहुंचा और वहां आनन्द मनाया और कुछ सेवको के पद और मनसब बढाये। ईरान के शाह हब्बास के राजदूत हसन बेग को 10 हजार रुपये दिये। किलीच खा मीरान सदर जहां और मीर सरीफ आमूली को मैंने लाहौर में छोडकर उन्हे आदेश दिया कि जा कोई मामला उनके सामने प्रस्तुत हो उसकी परस्पर परामर्श करके वे तय कर दिया करें।

जब बादशाह अकबर कश्मीर गये थे तो इस नदी के तट पर एक दुर्ग बनाया गया था। आसपास के इलाके में गूजर लोग लूट मार किया करते थे। अकबर ने उनको यहां बसाया। यह गूजरों का स्थान बन गया है। अकबर ने उसको अलग परगना बना दिया था और इसका नाम तभी से

गुजरात हो गया था। गूजर लोग एक जाति है जो कुछ हाथ का काम करते है और दही दूध पर अपना निर्वाह करते हैं।

केसर की खेती– केसर की सब खेती पामपुर गांव में होती है, मुझे मालुम नहीं कि संसार के किसी अन्य स्थान में भी इतनी केसर उत्पन्न होती हो। प्रति वर्ष 500 हिन्दुस्तानी मन केसर पैदा होती है। मैं अपने पूज्य पिता के साथ इस स्थान पर उस समय आया था जब केसर के फूल आ रहे थे। संसार के अन्य स्थानों के केसर में पहले टहनियां निकलती हैं और फिर पत्तियां आती है और तत्पश्चात वह फूलती है, परन्तु यहां जब केसर की टहनी सूखी भूमि से चार अंगुल ऊपर आ जाती है तो इसमें फूल निकल आते है इनका रंग सोसनी होता है और इनमें चार पत्तियां होती है इनके बची में नांरगी रंग के चार रेशे होते हैं। जो फूल जैसे होते हैं और अंगुलियों के जोडों की सी लम्बाई होती है। इसी को केसर कहते हैं।[1] खेत को न जोता जाता है और न उसमें पानी दिया जाता है। मिट्टी के ढेरों में से पौधे निकल आते हैं। कुछ स्थानों पर केसर 1 कोस तक उगती है। अन्य स्थानों पर आधे कोस तक होती है। दूर से देखने पर यह बहुत अच्छी लगती है। केसर तोडते समय मेरे सब सेवकों के सिर में दर्द हो गया क्योंकि उसकी सुगन्ध अति तीव्र थी। यद्यपि मैं शराब पीता था। तथापि मुझे भी सिर दर्द हो गया। कश्मीर के लोग पशु तुल्य हैं उनमें से जो केसर तोड़ रहे थे उनमें मैंने पुछा कि तुमको कैसा मालुम होता है मुझे निश्चित रूप से पता लग गया कि उनको अपने जीवन में कभी सिर दर्द नहीं हुआ।

सुल्तान जैनुल-आबीदीन

यह गांव सुल्तान जैनुल आबीदीन जिसने कश्मीर पर निरंकुश रूप से 52 वर्ष शासन किया था और बसाया था। लोग कहते है कि वह बडा अच्छा बादशाह था। उसके विचित्र रिवाजों की अनेक कहानियां कही जाती है। कश्मीर में उसकी बनाई हुई इमारतों के अनेक चिन्ह अभी विद्यमान हैं। इनमें से एक बुलनूर नामक झील के मध्य में है। इस ओर इसकी लम्बाई और चौड़ाई 3,4 कोस से अधिक है इसकी जन लंका कहा जाता है। इसके निर्माण में लोगों को बड़ा परिश्रम करना पडा था। इस झील के चश्में बड़े गहरे हैं। प्रथम बार यहां बहुत सी नावों में भर कर पत्थर लाये गये और जहां अभी इमारत खडी है उस स्थान पर वे डाले गये परन्तु इसका कोई

1. अबुल फजल ने अकबर नामें में पत्तियों की ओर रेशों की संख्या अधिक सही दी है।

परिणाम नहीं हुआ फिर हजारों नावों में पत्थर भर कर लाये गये और बड़े परिश्रम के बाद 100 गज लम्बी और 100 गज चौड़ी भूमि पानी के ऊपर आई जिसका एक चबूतरा बन गया। इसके 1 ओर सुल्तान ने प्रार्थना गृह बनाया। इससे अधिक अच्छा वहां कोई स्थान नहीं है। सुल्तान नाव द्वारा इस स्थान पर आया करता था और ईश्वर की प्रार्थना किया करता था। लोग कहते है कि वह वहां 40—40 दिन तक रुका था। एक दिन उसका एक दुष्ट लड़का उसकी हत्या करने के लिए आया और जब उसने देखा कि सुलतान वहां अकेला ही है तो तलवार निकाल कर वह अन्दर घुसा। जब उसकी आंख सुल्तान पर पडी तो उसकी पूज्यनीयता और गुण महत्वता के कारण वह लडका बावला सा होकर वापिस चला गया। कुछ समय बाद सुलतान बाहर आया और उसी पुत्र के साथ नाव में बैठकर नगर की ओर रवाना हुआ। मार्ग में उसने पुत्र से कहा "मैं अपनी माला भूल आया हूं एक छोटी डोंगी में बैठकर उसको ले आओ। लड़का प्रार्थना गृह में गया तो क्या देखता है कि वहां उसका पिता बैठा हुआ है तब यह नवयुवक अत्यन्त लज्जित होकर अपने पिता के चरणो में गिर पडा और अपने अपराध के लिये क्षमा याचना की। इस प्रकार के चमत्कार के अनेक किस्से इस सुल्तान के विषय मे कहे जाते है। यह भी कहा जाता है कि उसने खला विज्ञान[1] का अभ्यास किया था जब अपने पुत्रों के तरीकों और उपायों से उस सुल्तान दे देखा कि उनको राज करने की बड़ी जल्दी है तो वह उनसे कहता था "मेरे लिये तो राज्य त्याग देना बहुत सरल है यहां तक कि जीवन का उत्सर्ग करना भी कठिन नहीं है परन्तु जब मैं नहीं रहूंगा तो तुमसे कुछ नहीं बन पड़ेगा और तुम्हारे अभ्युदय का समय" अधिक नहीं टिकेगा। थोडे समय बाद ही तुमको अपने दुष्कर्मो का फल प्राप्त हो जाएगा। यह बात करके उसने खाना पीना त्याग दिया और इस भांति 40 दिन में उसकी मृत्यु हो गई। वह सोता बिल्कुल नहीं था और धार्मिक तपस्वी लोगो की भांति सर्व शक्तिमान ईश्वर की उपासना मे लगा रहता था। 40 वें दिन उसने अपने अस्तित्व को समाप्त करके ईश्वर की दया मे प्रवेश किया वह 3 पुत्र छोड़ गया था अजमद खां, हाजी खां और बैराम खां। वे आपस में लड़े और तीनों ही नष्ट हो गये तब कश्मीर का शासक चक जाति के हाथ में आ गया। यह लोग उस देश के साधारण सैनिक थे। इस राजवंश के 3 शासकों ने बूलनूर झील में जैनुल आबीदीन के चबूतरे के तीन बाजुओं पर इमारतें खड़ी करवाई थीं। परन्तु इनमें से कोई भी उतनी दृढ़ नहीं है जितनी सुल्तान की इमारतें थीं।

---

1. खला उस विज्ञान को कहते है कि जिसके द्वारा आत्मा और शरीर को अलग अलग किया जा सकता है।

रोहतास का दुर्ग

कश्मीर का बसन्त और पतझड़ देखने के योग्य है। मैंने पतझड़ देखा था इसके विषय में पहले सुन चुका था, परन्तु देखने पर यह और अच्छा मालुम हुआ। मैंने इस प्रान्त में बसन्त ऋतु कभी नहीं देखी परन्तु मुझे आशा है कि किसी भी दिन देखूंगा। शनिवार एक मोहर्रम (18 अप्रैल 1607) को मैंने बिहात नदी का तट छोड़ा और एक दिन में रोहतास दुर्ग पहुंच गया जो शेर खां अफगान ने बनाया था। यह भूमि की एक दरार में बनाया गया है। परन्तु इतना दृढ़ है कि इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। धक्खड़ प्रदेश के समीप है। ये लोग धमण्डी और विद्रोही हैं। शेर खां समझता था कि इस दुर्ग के द्वारा उनको दण्डित और पराजित किया जा सकेगा। जब यह दुर्ग थोड़ा सा ही बना था तो शेर खां की मृत्यु हो गई और उसके पुत्र सलीम खां ने इसको पूर्ण करने का यश प्राप्त किया। इसके द्वारों के दोनों तरफ पत्थर पर दुर्ग निर्माण का व्यय खोदा गया है जो 16 करोड़ 10 लाख दाम है। यह हिन्दुस्तान के हिसाब से है। यह राशि 40 लाख 25 हजार रुपये के बराबर होती है।

वहां से कूच करके मैं हत्या नामक गांव में उतरा। इसको हत्या इसलिए कहा जाता है कि वहां एक पक्की सराय बनी हुई है और हिन्द में पुख्ता को पक्का कहते है। इस मंजिल में रेत और गड़द बहुत थी बड़ी कठिनता से इसमें गाड़ियां चलीं फिर वहां से कूच करके साढ़े चार कोस पर कार नामक गांव में मुकाम किया। धक्खड़ लोगों की भाषा में कौर पराजय को कहते है। इस मंजिल में वृक्ष बहुत कम थे तारीख 9 एक शम्बा को रावलपिण्डी में शिविर लगा। यह स्थान एक रावल नामक व्यक्ति ने बसाया था। स्थानीय भाषा में पिंडी गांव को कहते हैं। यहां से पास ही एक दर्रे में पानी जारी था और वाहं से आकर होज में गिरता था। यह स्थान बड़ा सुन्दर था। इसलिए कुछ समय तक में वहां ठहरा ओर घक्खडों से पुछवाया कि यह पानी कितना गहरा होगा। उन्होंने कहा कि हमको पता नहीं है और हमारे पूर्वज कहते है कि इसमें एक बड़ा नाका हैं। इस वास्ते कोई इसमें घुस नहीं सकता यह सुनकर मैंने उसमें एक बकरी डलवा दी। वह सारे हौज में तैर कर सुरक्षित निकल आई। फिर मैंने अपने एक फर्राश को उसमें घुसाया वह भी तैर कर सुरक्षित निकल आया। घक्खड़ों की बात झूठ निकली। इस पानी की चौड़ाई एक तीर मार के बराबर है।

फिर वहां से चलकर खरबूजा नामक गांव में मुकाम किया। वहां घक्खड़ों ने एक गुम्बद बना रखा है, और वहां होकर निकलने वालों से वे कर ग्रहण कर लेते है। उसका स्वरूप खरबूजे जैसा है इसलिए यह स्थान इस नाम से

प्रसिद्ध हो गया। 11 वी तारीख को काला पानी नामक गाव मे उतरा। इस मार्ग मे एक टीला है। जो मार्ग कला कहलाता है। यानी इस स्थान तक घक्खड लोग काफलो को लूटा मारा करते थे। यहा घक्खडो की सीमा है। घक्खड लोग पशुवत है। सदैव परस्पर लडते रहते है। मैने प्रयास किया कि लडना बन्द करदे। परन्तु कोई लाभ नही हुआ। फिर बुद्धवार बारहवी तारीख को बाबा हसन अबदाल नामक स्थान पर डेरे लगे। यहा से पूर्व की और एक जल प्रपात है। जो बहुत जोर से गिरता है। काबुल के मार्ग मे ऐसा जल प्रपात नही है परन्तु कश्मीर के मार्ग मे ऐसे प्रपात 2, 3 स्थान पर है। यह प्रपात एक हौज से निकलता है।

राजा मानसिंह का बनाया हुआ प्रपात– यह राजा मानसिह ने बनवाई थी और उसी के पास एक छोटी सी इमारत भी खडी की थी। इस हौज मे आधा गज या पाव गज की गणित मछलिया है। वहा मै 2 3 दिन तक रहा और मछलिया पकडने मे और मद्यपान करने मे लगा रहा। तभी मैने अपने हाथ से भवर जाल नही डाला। क्योकि यह कठिन कार्य था। परन्तु यहा अपने हाथ से ही डाला और 10, 12 मछलिया पकडी फिर उनकी नॉको मे मोती डालकर उस हौज मे छोड दी। पुराने लोगो से बाबा हसन के सम्बन्ध मे पूछताछ की तो किसी ने कोई विश्वसनीय बात नही कही। वहा एक नहर आती है। उसका पानी अत्यन्त निर्मल और मीठा है। हजरत अमीर खुसरू ने उसकी प्रशसा मे एक शैर भी लिखा है।

ख्वाजा शमसुद्दीन मुहम्मद ख्वाजी ने मेरे पिता की सेवा की थी। वह वजीर था वहा एक चबूतरा और पानी के अन्दर एक होज बनाया गया। इसका पानी खेतो और बागो मे काम आता है। उस दालान के किनारे एक उमदा गुम्बद इसलिए बनाया गया था कि वहा उसको दफन किया जावे परन्तु वहा दफन होना भाग्य मे नही था। हकीम अबुल फतह गिलानी और उसके भाई हकीम हमाम को जो मेरे पिता के दरबारी थे और उसके भेदो को जानने वाले थे मेरे पिता को आज्ञा से उस गुम्बद मे दफनाया गया है। फिर 15 वी तारीख को अमरोही मे मुकाम हुआ। वहा एक विस्तृत और समतल हरा भरा मैदान है। उसके बाजू मे 8 हजार घर खाटोर और दलाजाक लोगो की बस्ती के है। यह लोग उत्पाती अत्याचारी है और यात्रियो को लूट लेते है। यह मुल्क ओर अटक मैनेजीन खा के पुत्र जफर खा के सुपुर्द किया और आदेश दिया कि मेरे लौटने तक काबुल से तमाम दलाजाक को वहा से निकाल कर लाहौर की ओर रवाना करदे और उनके सरदारो को पकड कर कैद मे रखे। फिर 17 तारीख को कूच करके और एक दिन बीच मे ठहर कर किला अटक की नदी निलाब (इडस) पर मुकाम किया। इस स्थान पर

महावत खां को 2500 का मनसब दिया गया। वह दुर्ग मेरे पिता का बनवाया हुआ है। इसकी ख्वाजा शमसुद्दीन ख्वाफी ने पुरा किया था यह बड़ा दृढ़ है। इस समय नदी में बाढ आ रही थी। मैंने नावों का पुल बनवाकर सेना को आराम के साथ उतरा दिया। मैंने अमीर–उल–उमरा को अटक में ही छोड़ा क्योंकि वह बीमार और निर्बल था। बख्शियों को आदेश दिया गया कि काबुल के प्रान्त में बड़ी सेना का निर्वाह नहीं हो सकता इसलिए केवल उन्हीं लोगों को नदी पार करने दिया जावे जिनको दरबार में उपस्थित रहना हो और शाही शिविर की वापिसी तक शाही सेना अटक में ही रहे। बुद्धवार तारीख 19 को शाहजादों और कुछ निजी सेवकों के साथ मैं एक तंगड (जाला) पर बैठकर सुरक्षित नदी पार चला गया और कामा नदी के तट पर उतरा। कामा नदी जलालाबाद के आगे बहती है। जाला एक टाटी है जो बांस और घास की बनाई जाती है ओर मश्कें फूंक कर उसके नीचे बांध कर लोगों को दरिया से उतारते हैं। इस मुल्क में उसको शाल कहते हैं। यह पहाडी नदियों में नावों से भी अधिक सुरक्षित हैं।

मीरे सरीफ आमली और लाहौर के कारिन्दों को 12 हजार रुपये दिये और आदेश दिया कि वे इस राशि को फकीरों मे बांट दे। फिर अब्दुल रजाक मामूरी और बारीद को जो अहदियों का था हुकम दिया कि मेरे साथियों का प्रबन्धक जफर बख्शीखां को बनाकर उनको रवाना करे फिर एक रोज बारा के मध्य में जाकर मुकाम किया और सामने की सराय वाली नदी कामा के उस ओर एक किला है जो जीनखां कोका ने बनवाया था और जिसका नाम नौसहरा था और उसमें 50 हजार रुपये खर्च किये थे और यहां बारशाह हुमायूं ने शिकार किया था। मैं इस स्थान पर ठहरा। फिर दौलताबाद में मुकाम किया। वहां अहमदबेग जागीरदार पेशावर युसुफजायी और गोरिया खेल के साथ आकर मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। मुझे उसकी सेवा पसन्द नहीं आई। इस वास्ते इसको हटा कर वह प्रदेश शेरखां अफगान को दिया गया। फिर पेशावर के पास की बस्तियों के बीच सरदार खां के बाग में ठहरा। मै शहर गोर खत्री में धूमा। यह जोगियों का पूजा स्थान था। मुझे आशा थी कि किसी फकीर से मिलकर लाभ प्राप्त करूं। परन्तु फारस की भांति वहां ऐसा जोगी दुर्लभ था, और सब चालाक और प्रपंची थे।

फिर जमरूद नामक गांव में मुकाम किया और वहां से कूच करके दूसरे दिन अली–मस्जिद में ठहरा। वहां से चलकर गांव गरीबखाने में डेरे लगाये। वहां पर अबुल–कासिम नमकीन जागीरदार जलालाबाद एक खुबानी लाया। जो कश्मीर की खुबानियों से कम स्वादिष्ट नहीं थी। वहीं डाका में काबुल की गिलास लाई गई। जिनको मेरे पूज्य पिता शाह

आला कहा करते थे। मुझे अच्छी मालूम हुई और उनको मैने शराब के साथ खाया।

मंगलवार 2 सफर को मैने बसावल में डेरे लगाये जो नदी के तट पर बसा हुआ है। नदी के उस पार एक पर्वत है। जिस पर कोई वृक्ष या घास नहीं है। इसलिए इस पर्वत को लोग भाग्यहीन कहते है। मैंने अपने पिता से सुना था कि ऐसे पर्वतों में सोने की खानें होती है। जब मेरे पिता काबुल गये तो इस आलाबुधान क़े पर्वत पर मैंने कमरगाह (शिकार घेरा) करवाया और कई लाल हिरण मारे। मैंने सारे माली मामलों का प्रशासन अमीर–जल–उमरा के सुपुर्द कर रखा था। अब उसका रोग बहुत बढ गया था और उसकी स्मृति का यह हाल हो गया था कि एक घण्टा पहले कहीं हुई बात को वह भूल जाता था। यह विस्मृति प्रतिदिन बढती जाती थी। अतः बुद्धवार 3 सफर को मैंने आसफ खां को बजारत (मंत्री पद) प्रदान किया, उसको खिलअत और एक जडाऊ कलम भेंट की। यह विचित्र बात थी कि इसी दिन 28 वर्ष पहले इसी स्थान पर मेरे पूज्य पिता ने उसको पदोन्नत करके मीर बख्शी नियुक्त किया था। इसके भाई अब्दुल कासीम ने 40 हजार रुपये मे एक लाल खरीद कर उसके पास भेजी थी जो उसने प्रधानमत्री का पद प्राप्त होने पर मुझे भेंट करदी। उसने प्रार्थना की कि ख्वाजा अबुल हसन जो मीर बख्शी और क्रूर दोनों था उसके साथ भेज दिया जावे। जलालाबाद अबुल कासीम नकमीन से लेकर अरब खां को दिया। नदी के तल मे एक सफेद चट्टान थी मैंने हुकम् दिया कि इसको तरास कर एक हाथी का रूप दे दिया जाए़ इसे सीने पर एक पंक्ति (मिश्रा) लिख दिया जाए जिससे हिज्री सन् निकलती हो। इस पर लिखा गया था। जहांगीर बादशाह का सफेद हाथी इनके परियाय–वाची फारसी शब्दों से 10, 16 हिज्री सन् निकलता था।

उसी दिन राजा विक्रमाजीत का पुत्र कल्याण गुजरात से आया। मैने इस विद्रोही दुष्ट के विषय में अनेक बातें सुनी थीं, जिनमें एक यह थी कि उसने लाली नामक एक मुसलमान औरत अपने घर में रख रखी थी। और इस भय से कि यह मामला प्रकट हो जाएगा उस स्त्री के मा–बाप को मार कर उसने अपने ही मकान में दफन कर दिया था। मैंने आदेश दिया कि जब तक इस मामले की जांच न हो जाए तब तक उसको कैद में रखा जाय। सत्य का निश्चय हो जाने के पश्चात मैंने आदेश दिया कि कल्याण की जीभ काटकर उसको आजन्म कैद में रख दिया जावे और उसको कुत्तें और मेहतरों के साथ खाना खिलाया जावे। बुद्धवार को मैंने पुरखाब में डेरे लगाये। रविवार 14 तारीख को मैं खुर्द काबुल पहुंचा। इस स्थान पर मैंने

काबुल के प्रधान न्यायाधीश और काजी का पद मुल्ला सादिक हलवाई के पुत्र काजी आरिफ को प्रदान किया। बंगस के मुसलमानों को दण्ड देने के लिए अहमद बेगखां को नियत करके मैंने अब्दुल रजाक मामूरी को जो अटक में था आदेश दिया कि 20 लाख रुपये राजा विक्रमाजीत के पुत्र मोहनदास की हवालगी में रखकर उक्त सेना के सहायकों में बांट दे। यह भी आदेश दिया कि इस सेना के साथ 1000 बन्दूकची जावें।

शेख अबुल फजल के पुत्र शेख अब्दुल रहमान को 2 हजार जात और 1500 सवार का मनसब देकर सम्मानित किया और अफजलखां की उपाधि प्रदान की। अरब खां को 2 हजार रुपये दिये। इसके अतिरिक्त वहां की आमदनी से 20 हजार रुपये दिये गये। सरकार खानपुर दिलावरखां अफगान की जागीर में दिया। तारीख 17 बृहस्पतिवार को मस्तान पुल से शहरआरा बाग तक जो शाही शिविर का स्थान था रुपये, अठन्नियां, चवन्नियां, फकीरों और अकिंचन लोगों में मार्ग के दोनों ओर बिखेरते हुए मैंने उक्त बाग में प्रवेश किया। यह बडा हरा भरा और ताजा था आज बृहस्पतिवार था इसलिए मैंने अपने मित्रों को मद्यपान करवाया।

नाचने वालों में से मुखिया लोगों को मैंने खिलअत और एक हजार रुपये दिये और कहा कि सब में बांट लिए जावे। बारह विश्वसनीय दरबारियों को बृहस्पतिवार के दिन मैं जब तक काबुल में था तो 12 हजार रुपये गरीब लोगों में बांटने के लिए दिया करता था। मैंने यह भी आदेश दिया कि दो वृक्षों के बीच में जो बाग के मध्य में एक नहर के तट पर थे और इनमें एक का नाम मैंने फराह बख्श (आनन्ददायक) और दूसरे का नाम सायबख्श (छायाप्रद) रखा था उनके बीच में एक संगमरमर का पत्थर एक गज लम्बा और पौन गज चौड़ा खड़ा करके उस पर मुझ से तीमूर तक के नाम खोंदे जावें। इसके दूसरी ओर यह खोदा गया था कि मैंने काबुल में लगने वाले सारे कर समाप्त कर दिये हैं। मेरे उत्तराधिकारियों और वंशजों में जो कोई इसके विरुद्ध कार्य करेगा वह ईश्वर के कोप का भाजन बनेगा। मैं तख्त पर बैठा तब तक यह कर निश्चित थे और मुसलमानों से प्रति वर्ष लिये जाते थे। मेरे राज्य में यह अत्याचार बन्द कर दिया गया। काबुल की इस यात्रा में मेरी प्रजा पर और वहां के लोगों को बड़ी शान्ति और सन्तोष प्राप्त हुआ। गजनी के भले और मुख्य आदमियों को और आसपास के लोगों को खिलअतें दीं और उनके साथ कृपापूर्ण व्यवहार किया और उनकी अभिलाषायें पूरी की गई। मैंने काबुल में 18 वृहस्पतिवार के दिन प्रवेश किया था।

मैंने आदेश दिया कि यह तारीख उस पत्थर पर खोद दी जावे। काबुल नगर के दक्षिण में एक पहाड़ी की ढाल पर एक तख्त है जो तख्त

शाह कहलाता है। वहां पर लोगों ने एक पत्थर का चबूतरा बना दिया है जिस पर बैठकर फिरदौस मकानी (बाबर) मद्यपान किया करता था। इस चट्टान के एक कौने पर लोगों ने एक गोल बर्तन खोदकर बना दिया है। जिसमे 2 मन (हिन्दुस्तानी) शराब भरा जा सकता है। बाबर ने अपने शुभ नामक तिथि सहित उस चबूतरे की दीवार पर खुदवाया था जो इस पहाडी से दूसरी है। उस पर ये शब्द खुदे हुए हैं। "यह बादशाह का तख्त है जो संसार का रक्षक था। उसकी नाम जहिरुद्दीन मुहम्मद बाबर था और वह उमर शेर गुरगान का पुत्र था। ईश्वर उसके नाम को अमर रखें। 924 (हिज्री) (1508–9 ई.) को मैंने यह भी आदेश दिया कि पत्थर का ऐसा ही एक तख्त दूसरा बनवाया जाए और ठीक इसी प्रकार का उसके पास बर्तन बनाकर उस पर मेरा नाम रखा जावे। जब मैं उस तख्त पर बैठता था तो आदेश दिया करता था कि दोनों पात्रो को शराब से भर दिया जाए। और जो अनुचर वहां उपस्थित हों उनको यह शराब दे दी जायें।

काबुल के वर्णन के सम्बन्ध मे बाबर की टिप्पणियों पर मेरी दृष्टि पडी। ये उसी के हाथ की लिखी हुई थीं। केवल चार जुज मेरे हाथ के थे।[1] इन जुजों के अन्त में मैंने तुर्की अक्षरों में एक वाक्य लिख दिया था जिससे यह ज्ञात हो सके कि ये चारों जुज या सन्दर्भो मेरे ही हाथ के लिखे हुए है। यद्यपि मैं हिन्दुस्तान में बडा हुआ हूं परन्तु मैं तुर्की भाषा बोलना और लिखना जानता हूं। 25 सफर को मैंने बेगमों के साथ सफेद रंग का मैदान देखा। जो बडा सुखद और उज्जवल था। शुक्रवार तारीख 26 को मुझे फिरदौस मकानी बाबर की कब्र पर जाने का मौका मिला। मैंने स्वर्गीय आत्मा के लिए बहुत सा रुपया खाना रोटी और मिठाईयां फकीरो मे बाटने के लिए लीं। मिर्जा हिन्दाल की पुत्री रुकैया सुल्मान बेगम को अपने पिता की कब्र की यात्रा करने का मौका नही मिला था उस दिन उसको मौका मिला।

कन्धार के गवर्नर शाहबेगखां की बाबत समाचार आया कि वह अपनी जागीर शौर परगने में पहुंच गया हैं मैंने निश्चित कर लिया कि काबुल उसको देकर हिन्दुस्तान लौट जांऊ। राजा वीरीसिंह देव की अर्जी आई कि उसने अपने भतीजे को जो उत्पात कर रहा था और जिसने उसके बहुत से आदमियो को मार डाला था कैदी बना लिया गया है। मैंने आदेश दिया कि उसको ग्वालियर के दुर्ग में कैद रखा जावे। मैंने परगना गुजरात जो पंजाब सरकार में स्थित है शेरखां अफगान को बख्श दिया। किलिंच खां के पुत्र चिनकिलिच को 800 जात और 500 सवारों का मनसब प्रदान किया गया।

1. एक जुज में पृष्ठ होते हैं।

खुसरू के साथ कुछ रियायत

12 तरीख को मैंने खुसरू को बुलाकर आदेश दिया कि उसके पैरों की बेड़ियाँ उतार दी जावें और उसको शहरआरा बाग में घूमने दिया जावे। मैं पितृ प्रेम के कारण खुसरू को उस बाग में घूमने से नहीं रोक सकता था। इसी को बंगस विद्रोहियों को पीछे हटाने के लिए भी नियुक्त किया गया था। शुक्रवार तारीख 18 को चान्द्र वर्ष के अनुसार मेरी तुला की गई। अब मैं 40 वर्ष का हो चुका था। उस दिन दोपहर को मेरी तुला की गई। तुला की राशि में से 10 हजार रुपये मैंने पात्रों और गरीबों को बांटने के लिए दिये। उसी दिन 12 दिन में कन्धार के गवर्नर सरदार खां की अर्जी हजारा और गजनी के मार्ग से आई। इसका आशय यह था कि शाह अब्बास का राजदूत जो दरबार में उपस्थित होने के लिए रवाना हुआ है वह हजारा प्रदेश में आ पहुंचा है। शाह ने अपने लोगों को लिखा था कि कन्धार पर मेरे आदेश के बिना किस उत्पाती व्यक्ति ने हमला किया है। शायद वह नहीं जानता है कि सुल्तान तीमूर और विशेषकर हुमायूं और उसके यशस्वी वंशजों के साथ हमारे कैसे अच्छे सम्बन्ध है। यदि संयोग से उन लोगों ने इस इलाके को अपने अधिकार में कर लिया है तो उसको मेरे भाई जहागीर के सेवकों और मित्रों को लौटा देना चाहिए और ऐसा करके वे अपने स्थानों को वापिस चले जावें। मैंने शाहबेगखां को आदेश दिया कि गजनी का मार्ग ऐसा बना दिया जाए कि कन्धार के यात्री सुगमता से काबुल पहुंच सकें। साथ ही मैंने काजी नूरुद्दीन को मालवा और उज्जैन प्रांत का सदर नियुक्त कर दिया। मिर्जा शादमान हजारा और कराचखां का पौत्र जो हुमायूं के अमीरों में एक प्रभावशाली व्यक्ति था मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। करांचखां ने हजारा जाति की एक स्त्री से विवाह कर लिया था और यह लडका उसी स्त्री से हुआ था।

राणा के पुत्र को मनसब

शनिवार तारीख 19 को राणा उदयसिंह के पुत्र राणशंकर को 2500 जात और 1000 सवार का मनसब दिया गया। और रायमनोहर को 1000 जात और 600 सवार का मनसब प्रदान किया। रविवार तारीख 27 को मैंने सुजातखां को हवीली नामक जिला जो ग्वालियर के आसपास का है इतिहा खां को जागीर में दिया और काजी इज्जतुल्ला को उसके भाइयों के साथ बंगसों के दमन के लिए नियुक्त किया। उसी दिन आगरे से इस्लामखां की एक अर्जी मेरे पास पहुंची उसके साथ जहांगीर कुली खां का एक पत्र भी

था जो उसने बिहार से इस्लामखा को लिखा था। इसका आशय यह था कि 3 सफर (30 मई 1607) को प्रथम पहर के बाद अली कुली इस्ताजली की बर्दबान मे उसी दिन रात दो पहर के बाद उसकी मृत्यु हो गई। इसका विवरण यह है कि अली कुली खा शाह इस्माइल द्वितीय ईरान के शासक का सुकरार्ची (भोजन परोसने वाला) था। अपनी दुष्टता ओर कुस्वभाव के कारण शाह इस्माइल की मृत्यु के बाद अली कुली खा भाग कर कन्धार आ गया और मुल्तान मे खानखाना से मिला तो उसको तुलम्बा प्रान्त का हाकिम नियुक्त कर दिया गया और अपने साथ उसको वहा ले गया। खानखाना ने उसको अकबर के सेवको मे भर्ती कर दिया। उस लडाई मे उसकी सेवा देखकर उसकी पदोन्नति कर दी गई और वह दीर्घ काल तक मेरे पूज्य पिता की सेवा करता रहा। जब अकबर दक्षिण मे गया और मुझे राणा के विरुद्ध प्रयाण करने का आदेश हुआ तो वह मेरी सेवा करने लगा। मैने उसको शेर अफगान की उपाधि दी। जब वह इलाहाबाद से मेरे पूज्य पिता की सेवा मे आया तो उसने मेरे प्रति कुछ द्वेष प्रकट किया मेरे सेवक भी इधर–उधर हो गये और वह स्वय मेरी सेवा छोडकर चला गया। मेरे राज्यारोहण के पश्चात उदारता से प्रेरित होकर मैने उसके अपराधो की ओर ध्यान नही दिया और सूबा बगाल मे उसको जागीर देने का हुक्म दे दिया। वहा से खबर आई कि ऐसे उत्पाती लोगो को वहा रखना उचित नही है। इसलिए मैने कुतुबुद्दीन खा को आदेश भेजा जो उसको दरबार मे भेज दिया जाए और यदि वह कोई राजद्रोही कार्य करे तो उसको दण्ड दिया जावे। उपरोक्त खान उसके चरित्र को जानता था। वह अपने आदमियो के साथ तुरन्त ही यह आदेश लेकर और शेर अफगान की जागीर बर्दवान मे गया। जब शेर अफगान को सूचना मिली तो कुतुबुद्दीन खा आया है तो वह केवल 2 व्यक्तियो के साथ उसका स्वागत करने के लिए बाहर आया उसके आने के बाद उसकी सेना भी आ गई और खान ने उसको सब ओर से घेर लिया जब इस प्रकार कुतुबुद्दीन की कार्यवाहियो से शेर अफगान के मन मे सदेह उत्पन्न हुआ तो खान को धोखा देने के लिए उसने कहा यह आप क्या कार्यवाही कर रहे है। खान ने अपने आदमियो को पीछे रखकर और उससे अकेले मिलकर आदेश का आशय समझाया तो मौका देखकर शेर अफगान ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और खान के दो तीन घाव कर दिये, और कुतुबुद्दीन खा के तलवार के दो तीन वार किये। अम्बा खा कश्मीरी जो वहा का अमीरजादा था और कुतुबुद्दीन खा से जिसका सम्बन्ध था उसने बडे पुरुषार्थ से शेर अफगान के साथ अली कुली के सिर पर धाव कर दिया और उसने फिर अम्बा खा को भी घातक घाव पहुचाया। जब लोगो ने

कुतुबुद्दीन खां की यह दशा देखी तो उसको घेर कर टुकड़े–टुकडे कर डाले। आशा है कि वह हमेशा नर्क में निवास करेगा। अम्बा खां वहीं मारा गया और कुतुबुद्दीन खां 4 पहर के बाद मर गया। यह सुनकर मुझे अमीम दुख हुआ। कुतुबुद्दीन खां का मैं भाई बेटे के बराबर समझता था परन्तु ईश्वर के अटल विधान को समझकर मैंने सन्तोष किया फिर मेरे पिता के चल बसने के बाद मेरे ऊपर ऐसे दो दुख नहीं आये जैसे कुतुबुद्दीन खां कोका की मृत्यु का और उस (कुतुबुद्दीनखां) के शहीद हो जाने का।

खुर्रम की तुला

शुक्रवार 6 रबी उल आखिर को मैं खुर्रम के निवास पर आया जो हुरता बाग में मनाया गया था। वास्तव में यह इमारत सुखद और सानुपात थी मेरे पिता का यह नियम था कि प्रतिवर्ष उनकी दो बार तुला की जाती थी।

1. शौर वर्ष के अनुसार
2. चान्द्र वर्ष के अनुसार

शाहजादों की तुला शौर वर्ष के अनुसार भी की जाती थी। यह वर्ष मेरे पुत्र खुर्रम के सोलवें चान्द्र वर्ष का आरम्भ था। फलित और गणित ज्योतिषियों ने निवेदन किया था कि उसकी जन्म पत्रिका के अनुसार बहुत बडी घटना होगी। शाहजादे का स्वास्थ्य अच्छा नही था अतः मैंने आदेश दिया कि उसको निश्चित नियम के अनुसार सोने, चांदी और अन्य धातुओं से तौला जावे और फिर इनको फकीरों और गरीबों में बांट दिया जावे। सारा दिन आनन्द और विनोद के बाद खुर्रम के यहां व्यतीत हुआ। बहुत सी भेंट आई जिसमें से कितनी ही पसन्द की गई।

काबुल से प्रस्थान

मैंने काबुल की सुन्दरतायें देखली थीं और इसके अधिकाश फल खा लिये थे। मैं राजधानी से बहुत दूर था इसलिए रविवार चार जुमादल अव्वल को मैंने आदेश दिया कि अग्रिम शिविर को हिन्दुस्तान की दिशा में भेज दें। कुछ दिन बाद मैं नगर में रवाना हुआ और शाही झण्डे सफेद संघ के हरीत मैदान की ओर चले। यहां बन का परगना महावत खां को जागीर में दे दिया गया था। अहदियों के बख्शी अब्दुर्रहीम को 700 जात और 200 सवार का मनसब दिया गया। मुबारक खां सरवानी को हिसार सरकार का फौजदार नियुक्त किया गया। मैंने आदेश दिया कि मिर्जा फरीदून बरलास को सूबा इलाहाबाद में जागीर दी जाये। उपरोक्त मास की 14 तारीख को आसफ

खां के इरादद खा को मैने 1000 जात और 500 सवार का मनसब दिया और एक खास खिलअत ओर घोडा देकर उसको पटना और हाजीपुर का बख्शी नियुक्त किया। वह मेरा कुरबेगी था। इसलिए मैंने उसके साथ मेरे पुत्र इस्लाम खा के लिए जो उक्त परगना व सूबा का गवर्नर था एक रत्न जडित खंजर भेजा।

ख्वाजा ताबूत—काबूल मे सूना था कि महमूद गजनी के समय में ख्वाजा ताबूत नामक एक व्यक्ति जुहाक और अभियान में मर गया था और उसको एक गुफा में दफना दिया गया था उसके अंग अब तक सड कर पृथक–पृथक नही हुए है। यह बात मुझे विचित्र मालूम हुई इसलिए मैंने एक अपने निजी सेवक लेखक को और एक शल्य वेक्ता को उस गुफा मे भेजा कि स्थिति को ठीक ठीक देखकर के खास रिपोर्ट करें। उसने सूचना दी कि ख्वाजा का आधा शरीर भूमि से स्पर्श कर रहा था अलग–अलग हो गया है और ऊपर का आधा जो भूकिम को नहीं छूता है अपनी ही हालत मे है। हाथो और पैरो के नाखून और सिर के बाल नही गिरे थे परन्तु दाढी ओर मूंछ के बाल नाक के एक ओर के गिर चुके थे। इस गुफा के द्वार पर तारीख लिखी हुई थी जिससे प्रकट हुआ कि ख्वाजा की मृत्यु सुल्तान महमूद से पहले हो चुकी थी परन्तु वास्तविक स्थिति का किसी को ज्ञान नहीं हैं।

मिर्जा हुसैन—बृहस्पतिवार तारीख 15 को काहमर्द के दुर्ग का गवर्नर अरसलानवी जो तुरान के शासक बली मुहम्मद खा का एक मध्य श्रेणी का सेवक था मेरी सेवा मे आया। मैने हमेशा यह सुना था कि शाहरुख मिर्जा के पुत्र मिर्जा हुसैन को उजबेगो ने मार डाला है। इस समय एक व्यक्ति ने आकर उसके नाम की अर्जी पेश की और पियाजी रग की एक लाल जो 100 रु. की थी मुझे भेट की और निवेदन किया कि उसकी सहायता देने के लिए एक सेना दी जाए ताकि वह उजबेगो से बदख्शा छीन ले। एक जडाऊ खजर उसके लिए भेजा और आदेश दिया कि ध्वज उन प्रदेशो मे आ पहुचे हैं इसलिए यदि वह वास्तव मे मिर्जा शाहरुख का पुत्र मिर्जा हुसैन है तो वह शीघ्र मेरे समक्ष प्रस्तुत हो तो उसकी अर्जियो की ओर उसके दावो की जाच करके मै उसको बदख्शा भेजू। बगस के विद्रोहियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए महासिह ओर रामदास के साथ दो लाख रुपये भेजे।

बृहस्पतिवार तारीख 22 को बालाहिसार पहुंच कर मैने उस स्थान की इमारतो को देखा यह स्थान मेरे योग्य नहीं था। इसलिए मैने आदेश दिया कि इन इमारतों को गिराकर एक महल और एक शाही दीवाने आम का निर्माण किया जावे। 25 तारीख को मालवा से खबर आई कि मिर्जा शाहरुख

इस असार ससार से चल बसा है। वह जिस दिन से मेरे पूज्य पिता की सेवा करने लगा तब से मृत्यु तक मेरे पिता ने उसके कोई निन्दनीय काम की खबर नही सुनी। वह लग्न के साथ अपने कर्तव्य का पालन करता था। प्रत्यक्ष मे इस मिर्जा के 4 पुत्र थे। हसन और हुसैन जोडते थे। हुसैन बुरहानपुर से भाग कर समुद्र मार्ग से ईराक चला गया और वहा से बदख्शा पहुच गया। लोग कहते है कि वह इस समय वही है। ऐसी खबर उसने एक आदमी भेजकर कहलाई है। कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से नही जानता कि यह वही मिर्जा हुसैन है या नही या बदख्शा के लोगो ने इसको मिर्जा हुसैन बना दिया है। इन्होने इसी भाति पहले भी बनावटी मिर्जा बनाये है। उसी प्रकार इसका भी नाम मिर्जा हुसैन रख दिया होगा। मिर्जा शाहरुख बदख्शा से मेरे पिता की सेवा मे आया तब से 25 वर्ष व्यतीत हो चुके है। बदख्शा के लोगो को उजबेग लोगो के बडे अत्याचार सहने पडे है और उनकी बडी क्षति हुई है। इसलिए ये लोग बदख्शा के किसी भी लडके को जिसकी सरदार आकृति की सी हो मिर्जा शाहरुख का पुत्र घोषित करके उसे मिर्जा सुलेमान का वशज बतला देते हैं। इधर–उधर बिखरे हुए उईयाक लोग और पहाडी बदख्शी को घारचल कहलाते है। इस लडके के पास एकत्र हो गये और उजबेग लोगो के प्रति शत्रुता प्रकट करके उनसे बदख्शा के कुछ जिले छीन लिये है। उजबेग लोगो ने बनावटी मिर्जा पर हमला किया और उसको पकड लिया और फिर एक भाले की नोक पर उसका सिर रखकर बदख्शा के देश मे घुमाया। फिर शीघ्र ही बदख्शा के लोगो ने एक दूसरा मिर्जा खडा कर दिया। अब तक कई मिर्जा मारे गये है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जब तक बदख्शा के लोगो का चिन्ह शेष है तब तक वे ऐसे उत्पात करते रहेगे। मिर्जा का तीसरा पुत्र मिर्जा सुल्तान है जो मिर्जा के शेष पुत्रो की अपेक्षा अच्छी सूरत और स्वभाव वाला है। मैने उसके पूज्य पिता से कहकर उसको अपनी सेवा मे रख लिया और मै उसको अपना ही पुत्र मानता हू। स्वभाव और शिष्टाचार मे वह अपने भाइयो से मिलता जुलता नही है। तख्त पर बैठने के बाद मैने उसको 2 हजार जात और एक हजार सवार का मनसब देकर सूबा मालवा मे भेज दिया जो उसके पिता का स्थान था। चौथा पुत्र बदरू–उज–जमान है जिसको वे अपने ही पास रखा करता था उसको 1000 जात 500 सवारो का मनसब प्राप्त हो गया था।

कमारगाह शिकार– बृहस्पतिवार तारीख 6 को मै बाबर के तख्त के स्थान पर गया। मै अगले दिन काबुल से रवाना होने वाला था इसलिए मैने भोज दिया ओर उस स्थान पर एक मद्यगोष्ठी करने का आदेश दिया। वहा चट्टान मे काट कर बनाई हुई एक हौज को मद्य से भरवाया और जो दरबारी

और सेवक उपस्थित थे उन सबको प्याले दिये गये। इस प्रकार आमोद में कुछ दिन व्यतीत हुए। शुक्रवार तारीख 7 को जब एक पहर दिन व्यतीत हो चुका था तो शुभ मुहूर्त में आनन्दपूर्वक नगर से रवाना होकर सफेद संग के जुलगाह में मुकाम किया। शहरआरा से जुलगांह तक मैंने फकीरो और गरीब लोगों को आठ और चार आने बाटे। जिस दिन मैं काबुल से प्रस्थान करने के निमित्त अपने हाथी पर सवार हुआ तो खबर आई कि अमीरुल–उमरा और शाहबेग खां का स्वास्थ्य सुधर गया है। ये दोनों मेरे प्रधान सेवक थे। इनके अच्छे स्वास्थ्य की खबर को मैंने शुभ सकुन समझा। सफेद हाथी संग के जलगाह से प्रस्थान करके मंगल को मै 1 कोस चला और तारीख 11 को विक्राम मे मुकाम किया। काबुल की और आस–पास के इलाके की, शाहबेग के आने तक देखभाल करने के लिए ताशबेग खां को मैने काबुल मे छोडा। मगलवार तारीख 18 को बूतखाक में दुआबा के मार्ग द्वारा ढाई कोस चला और एक चश्मे के तट पर मुकाम किया।

खुसरू का षडयंत्र

यद्यपि खुसरू ने बार–बार निन्दनीय कार्य किये थे और वह हजारो प्रकार के दड का पात्र था, परन्तु मैने अपने पितृ प्रेम के कारण उसको प्राण दण्ड नहीं दिया। सरकार के कानून मे और साम्राज्य के तरीके मे इस प्रकार के कार्यो पर ध्यान देना चाहिए। परन्तु मैने उसके अपराधो की ओर दृष्टि नही डाली और उसको बडे आराम से रखा। फिर यह विदित हुआ कि वह अपने आदमियो को ऐसे बदमाशों के पास भेजा करता था जिनकों परिणामो की चिन्ता नही थी। वह ऐसे लोगों को भडका भडका कर उत्पात पैदा करना और मेरा प्राणघात करना चाहता था और उनसे कई प्रकार के वायदे करता था और आशाये दिलाता था। इन भाग्यहीन लोगो के एक अदूरदर्शी समूह ने मिलकर शिकार में जो काबुल में और उधर के इलाकों में किया गया था मुझ पर आक्रमण करने की इच्छा की। सर्व शक्तिमान ईश्वर इस उच्च राजवंश का संरक्षक है। इस पर उसका अनुग्रह है। इसलिए इन लोगों की इच्छा पूरी नहीं हुई। इस दिन सुरखाब में मेरा मुकाम था तो इन लोगों में से एक अपने प्राणों को खतरे में डालकर मेरे पुत्र खुर्रम के दीवान ख्वाजा वेसी के पास गया और प्रकट किया कि खुसरो के भडकाने से 500 के करीब आदमियों ने हकीम अबुल फतह के पुत्र फतहउल्ला, गयासुद्दीनअली, आसफखां के पुत्र नूरुद्दीन और इतमातुद्दौला (नूरजहां का पिता) के पुत्र शरीफ से मिलकर षडयंत्र किया है और वे ऐसे अवसर की तलाश में हैं, जब बादशाह का अहित चाहने वाले शत्रुओं के इरादों को पूरा किया जा सके।

ख्वाजा वेसी ने यह बात खुर्रम से कही ओर उसने परेशान होकर तत्काल मुझे सुनाई। मैंने खुर्रम को आशीर्वाद दिया और इस बात की तैयारी की कि इन सब अदूरदर्शी लोगों को पकड कर विविध प्रकार का दड दिया जाए। फिर मेरे मन मे यह बात आई कि मैं प्रयाण कर रहा था और इन लोगो को गिरफ्तारी से मेरे शिविर मे गडबड और परेशानी हो जावेगी। इसीलिये उत्पात करने वाले लोगो के नेताओ को ही गिरफ्तार किया जावे। मैंने फतह उल्ला को कुछ विश्वसनीय लोगो के सुपुर्द करके कैद मे रख दिया और अन्य दो दुष्टो को प्राणदण्ड का आदेश दिया। इन्हीं में 3, 4 काले मुख वाले लोग थे। मैने स्वर्गीय बादशाह अकबर के एक सेवक कासिम अली को तख्त पर बैठने के बाद दयानतखा की उपाधि देकर सम्मानित किया। वह फतह उल्ला पर सदा स्वामी द्रोह का लाछन लगाया करता था और उसके विषय मे अनेक बाते कहा करता था। एक दिन उसने फतह उल्ला से कहा "जब खुसरो भागा और बादशाह ने उसका पीछा किया तो तुमने मुझसे कहा था पजाब खुसरो को देकर इस लडाई को बन्द कर देना चाहिए"। फतहउल्ला ने इस बात से इन्कार किया और दोनो ने आपस मे अपनी–अपनी कसमे खाई परन्तु इस परस्पर विवाद के बाद 15 दिन भी नही निकल पाये थे कि उस मिथ्याचारी दुष्ट को गिरफ्तार कर लिया गया और इससे प्रकट हो गया कि उसकी शपथ असत्य थी।

हकीम जलालुद्दीन मुजफ्फर अरदि शतानी— 22 जुमादल अव्वल शनिवार को खबर आई कि हकीम जलालुद्दीन मुजफ्फर अरदि शतानी की मृत्यु हो गई है। उसके खानदान मे चिकित्सा की निपुणता चली आ रही थी और वह गलेन का वशज होने का दावा करता था। कुछ भी हो वह चिकित्सा करने मे अद्वितीय था जैसा उसका ज्ञान था वैसा ही उसका अनुभव था। वह बडा सुन्दर था और अपनी विवाह अवस्था मे उसकी आकृति बडी मनोहर थी वह शाह तहमास्प की सभाओ मे जाया करता था।

हकीम अली—हकीम अली उसका समकालीन था। वह निपुणता मे उससे भी बढकर था। साराश यह है कि चिकित्सा चातुर्य हाथ के यश, तथा स्वभाव मे वह उत्तम था। उस समय के दूसरे हकीमो को उससे तुलना नही हो सकती थी। चिकित्सा चातुर्य के अतिरिक्त उसमे और अनेक गुण थे। वह मेरे प्रति वफादार था। उसने लाहौर मे एक सुखद और उत्तम भवन बनवाया था और मुझे बार–बार कहता था कि मै वहा आकर उसको सम्मानित करू। मै उसको प्रसन्न रखना चाहता था इसलिए मैने वहा जाने के लिए अनुमति दे दी। साराश यह है कि उक्त हकीम का मेरे साथ सम्बन्ध था और मेरा चिकित्सक था। वह ससार के कामो की व्यवस्था करने मे बडा चतुर

था इसलिए मैंने कुछ समय के लिए इलाहाबाद में उसको मेरे लवाजमा का दीवान बना दिया था। वह बड़ा ईमानदार था। इसलिए महत्वपूर्ण कामों में बड़ा कठोर था जिससे लोग उससे परेशान रहा करते थे। लगभग 20 वर्ष तक उसके फेफड़ों में छाले थे, परन्तु अपनी बुद्धिमता से उसने अपने स्वास्थ्य की प्रायः रक्षा की।

तुला

2 जुमादल आखिर को वफा बाग में सौर तुला की सभा हुई। उसी दिन अरसालबी उजबेग मेरी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने मेरा आर्शीवाद प्राप्त किया। यह व्यक्ति अब्दुल मुनीम खां का एक सरकार था और इस समय काहमर्द नामक दुर्ग का अध्यक्ष था। वह दुर्ग से मेरे पास आया था। वह मित्रता और हार्दिकता की भावना से मेरे पास आया था इसलिए मैंने उसको खास खिलअत देकर सम्मानित किया। वह सीधा सादा उजबेग था और शिक्षा और सम्मान के योग्य था।

कमारगाह– इसी मास की 4 तारीख को आदेश किया गया कि जलालबाद का सूबेदार इज्जत खां अर्जीना मैदान में कमारगाह तैयार करे। लगभग 300 जानवर पकड़े गये इनमें 35 मेंढ़ें, 25 कुश्की, 90 भेड़ें ओर 55 तुगली तथा 95 हिरण थे। शनिवार तारीख 12 को अपुरा सराय में मुकाम किया गया। यहां पर शाहबेग खां बहुत से सैनिक अपने साथ लेकर मेरे पास उपस्थित हुआ। इसकी परवरिश मेरे पिता बादशाह अकबर ने की थी। यह बड़ा वीर और सक्रिय पुरुष है। मेरे पिता के समय में इसने अकेले कई लड़ाइयां लड़ी थीं और मेरे राज्य में ईरान के बादशाह को सेना से कन्धार दुर्ग की रक्षा की थीं। इसकी सहायता के लिए शाही सेना को पहुंचने में 1 वर्ष लगा था। तब तक यह दुर्ग की रक्षा करता रहा। वह अपने सैनिकों के साथ अमीर का सा व्यवहार करता है पर अनुशासन के अनुसार उसका बर्ताव नहीं है विशेषकर उन लोगों के साथ जिसने युद्ध के समय उसकी सहायता की है और जो लड़ाइयों में उसके साथ रहे है। वह अपने नौकरों से मजाक किया करता है। मैंने बार–बार इस विषय में चेतावनी दी है परन्तु यह उसका स्वभाव है, इसलिए उस पर प्रभाव नहीं होता।

सोमवार तारीख 14 को मैंने हाशिम खां को पदोन्नत किया। वह मेरे खानजादों में ऐसे एक है। मैंने उसको 3 जार जात और 2 हजार सवार का मनसब दिया और उसको उड़ीसा का सूबादार नियुक्त किया।

बादी-उज-जमांन– उसी दिन खबर आई कि मिर्जा शाहरुख का पुत्र वादी–उज–जमान जो मालवे में था मूर्खता और यौवन के कारण

कुछ विद्रोहियो के साथ राणा के राज्य मे चला गया और उससे मिल गया। वहा के सूबेदार अब्दुल्ला खा को इस घटना की सूचना दी तो उसने बादी–उज–जमा को मार्ग मे ही पकड लिया और उसके अनेक साथियो को मार डाला। तब एक आदेश जारी किया गया कि यह इहतीमाम खा आगरे से रवाना होकर मिर्जा को दरबार मे लावे। उक्त मास की 25 तारीख को खबर आई कि मावरून नहर के शासक वली खा के भतीजे इमामकुली खा ने मिर्जा हुसैन को मार डाला है जो मिर्जा शाहरूख का पुत्र कहलाता था। वास्तव मे मिर्जा शाहरूख के पुत्रो को मारना दैत्यो के मारने के बराबर है। लोग कहते है कि उनके रक्त की एक बूद से दैत्य पैदा होते है। धका के मुकाम पर शेर खा अफगान जिसको मै रवाना होते समय खैबर की घाटी की रक्षार्थ पेशावर मे छोड आया था मेरे पास आया। उसने मार्ग की रक्षा करने मे कोई अपराध नही किया था। जैन खा कोका के पुत्र जफर खा को दलाजाक अफगानो और खतुर कौम के लोगो पर चढाई करने के लिए नियुक्त किया क्योकि इन लोगो ने अटक के पास और व्यास के पास अनेक कुकृत्य किये थे। यह सेवा उसने भली भाति की। विद्रोहियो को जीत लिया और उनकी सख्या 1 लाख घरो की थी। उनको लाहौर की ओर भेजकर वह मेरे मुकाम पर आया इससे स्पष्ट था कि उसने अपने कर्त्तव्य को पूरा किया। मास रजब मे वह आया। यह मालूम था कि इस माह मे मेरे पिता की तुला हुआ करती थी। इसलिए मैने निश्चय किया कि सौर चान्द्र वर्षो की तुला मे जिन वस्तुओ का उपयोग किया जाता है उनका मूल्य दो बडे नगरो मे भेज दिया जाए जिससे मेरे पिता की आत्मा को शान्ति हो और गरीबो और फकीरो मे यह राशि बाट दी जाए। इस राशि का परिमाण 1 लाख रुपया था।

विश्वसनीय लोगो ने इस राशि को 12 मुख्य नगरो मे बाट दिया, जैसे आगरा दिल्ली, लाहौर, अहमदाबाद आदि। 3 रजब बृहस्पतिवार को मैंने अपने पुत्र (फरजन्द सलावत खा) को खानेजहा की उपाधि देने की कृपा की। वह मेरे और पुत्रो से कम नही है। मैने आदेश दिया कि सारे फरमानो और आदेशो मे उसको खानजहा लिखा जाए उसको एक विशेष खिलअत और जडाऊ तलवार भी दी गई। शाहबेग खा को खानदौरा की उपाधि देकर मैने उसको एक जडाऊ खजर (कमर मे बाधने का) एक मादा हाथी और खासा घोडा दिया। तीरा काबुल, बगरा ओर सवाद बाजौर का सूबा उसके सुपुर्द करके आदेश किया कि वह इन मुल्को से अफगानो को मार भगावे। उसके लिए जागीर और फौजदारी की पुष्टि

कर दी गई। वह बाबा हसन अब्दाल मेरे पास से रुखसत हुआ। मैने यह भी आदेश दिया कि इस सूबा मे रामदास कछवाहा को एक जागीर मिले और इस सूबा के नायको मे उसको भर्ती किया जावे। मोरा राजा के पुत्र किसनचन्द को मैने 1 हजार जात और 500 सवारो का मनसब दिया। गुजरात के गर्वनर मुर्तजा खा को एक फरमान लिखा गया. कि मिया बाजीहुद्दीन के पुत्र का सदव्यवहार और उत्तम गुण तथा सयमित जीवन की मुझे सूचना मिली है। इसलिए उसको मेरी ओर से धनराशि दी जावे और वह मुझे ईश्वर के कुछ ऐसे नाम लिखकर भेजे जिनकी वह परीक्षा कर चुका है। यदि ईश्वर का मुझ पर अनुग्रह होता तो मै उन नामो का निरन्तर जप करूगा। इससे पहले मैने जफर खा को आदेश दिया था कि वह बाबा हसन अब्दाल जाकर शिकार के लिए जानवर एकत्र करे।

शाखबंद–उसने एक शाखबद बनाया। 27 लाख हिरण और 68 सफेद हिरण शाखबद मे आये। मैने 29 हिरण तीर से मारे परवेज और खुर्रम ने भी कुछ अन्य हिरण मारे। इसके पश्चात दरबारियो और सेवको को आदेश दिया कि वे भी शिकार करे। खानजहा बहुत अच्छा निशान लगाता था। उसका प्रत्येक तीर हिरण के आरपार हो जाता था।

शम्स खां गक्खड़– मुझसे कहा गया था कि जलाल खा का चाचा जो पास ही रहता था और बहुत वृद्ध था शिकार का बडा शौकीन था। युवको को भी उस जैसा शौक नही होता। जब मैने सुना फकीरो दरवेशो के प्रति उसकी सदभावंना है तो मै उसके मकान पर गया उसके स्वभाव और शिष्टाचार से मुझ प्रसन्नता हुई। मैने उसको 2 हजार रुपया और उसके बीबी बच्चो को भी कुछ रुपये दिये और उनकी जीविका के लिए 5 अन्य गाव ऐसे दिये जिनकी आय अच्छी थी। मै चाहता था कि उनके दिन आराम और सतोष के साथ कटे।

अमीर-उल-उमरा– तारीख 6 शाहबान को चन्दाला के मुकाम पर अमीर–उल–उमरा मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उससे मिलकर मुझे बडा हर्ष हुआ। क्योकि सारे हिन्दू और मुसलमान हकीम निश्चित रूप से कह चुके थे कि उसकी मृत्यु नही टलेगी। सर्व शक्तिमान ईश्वर ने करुणा करके उसको स्वास्थ्य प्रदान किया जिससे ऐसे लोग जो भगवान की मर्जी का ख्याल नही करते समझा जावे कि उसकी मर्जी भी बडी चीज है जो लोग केवल बाह्य कारणो को देखकर किसी भी दशा को निराशा जनक मान लेते हैं वे समझे कि कोई एक महान शक्ति है जो अपनी करुणा और दया के द्वारा स्वास्थ्य प्रदान करती है।

राय रायसिंह

उसी दिन रायसिंह आया वह राजपूत अमीरों में सर्वाधिक माननीय था। उसने खुसरू के मामले में अपराध किया था। इसलिए वह बडा लज्जित था। वह अपने स्थान पर ही रहता था। अब वह अमीर--उल--उमरा की कृपा से मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। उसके अपराध सब क्षमा कर दिए गए। जब मैंने आगरा से खुसरू का पीछा करने के लिए प्रस्थान किया था तो मैंने पूरा भरोसा करके उसको आगरा में छोडा था। मेरी इच्छा थी कि जब शाही महिलायें बुलाई जावे तो वह उनके साथ आवे। महिलाओ को बुलाया गया तो वह उनके साथ 3 मंजिल गया और मथुरा के एक गांव तक आया वहां उसने मूर्खतापूर्ण कहानिया सुनी तो वह उनको छोडकर अपने स्थान बीकानेर को चला गया। उसने सोचा कि गडबड मच गई है इसलिए उसको अपना रास्ता देख लेना चाहिए। करुणामय ईश्वर अपने सेवको की रक्षा करता है। इसलिए थोडे समय में ही मामला व्यवस्थित हो गया और विद्रोहियों की आशाये भंग हो गई। राय रायसिंह की गर्दन पर नमकहरामी का भार बना रहा। उमीर--उल--उमरा को प्रसन्न करने के लिए मैने आदेश दिया कि जो पद उसके पास पहले से था उसकी पुष्टि कर दी जावे और उसकी जागीर भी यथापूर्व रहने दी जावे।

मेरी शहजादगी के समय में सुलेमान बेग मेरा एक सेवक था। मैंने उसको फिदाई खां की उपाधि देकर पदोन्नति किया। सोमवार तारीख 12 को रावी नदी के तट पर दिल आमेज बाग मे मुकाम किया और यहां पर मैं अपनी माता की सेवा मे उपस्थित हुआ। मिर्जा गाजी उससे मिलने आया उसने कन्धार में सेना का नेतृत्व करते हुए अच्छी सेवा की थी। मैंने उस पर बडी कृपा की।

लाहौर-मीर-खलीलुल्ला-- मंगलवार तारीख 13 को मैंने शुभ मुहूर्त मे लाहौर मे प्रवेश किया। अगले दिन गयासुद्दीन मुहम्मद मीर मिरान का पुत्र मीर खलीलुल्ला मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। यह शाह नियामत उल्ला वली का वंशज था। शाह तहमास्प के समय में सारे देश मे कोई इतना बडा प्रतिष्ठित परिवार नहीं था। क्योंकि शाह की बहिन जिसका नाम जानिश बेगम था, मीर नियामत उल्ला के घर में थी जो मीर मिरान का पिता था। इनसे जो पुत्री उत्पन्न हुई उससे शाह ने अपने पुत्र इस्माइल मिर्जा का विवाह कर दिया और फिर अपनी छोटी पुत्री मीर मिरान के ज्येष्ठ पुत्र को ब्याह दीं। इस प्रकार मीर मिरान के पुत्रों को अपने दामाद बना लिया । शाह की भतीजी इस्माइल मिर्जा की पुत्री थी वह भी मीर खलीलुल्ला को

ब्याह दी गई। शाह की मृत्यु के बाद शनै शनै ही यह कुटुम्ब क्षीण होने लगा। शाह अब्बास के समय मे सब नष्ट हो गये। उनके पास कोई सम्पत्ति नहीं रही और वे अपने स्थान पर नही टिक सके। तब मीर खलीलुल्ला मेरी सेवा मे आया। मार्ग मे उसको अनेक कष्ट सहने पडे थे। उसकी परिस्थितियो से प्रकट होता था कि वह सच्चा आदमी था। मैने कृपा करके 12000 रु उसकी नकद दिये और 1 हजार जात तथा 200 सवारो का मनसब देकर उसके लिए एक जागीर का आदेश दिया।

शहजादा खुर्रम

मैंने दीवान लोगो के विभाग को आदेश दिया कि मेरे पुत्र खुर्रम को 8 हजार जात और 5 हजार सवारो को मनसब देकर उज्जैन के पास उसकी जागीर दी जावे और हिसार फिरोजा का सरकार उसे दे दिया जावे। आसफखा के निमत्रण पर तारीख 22 वृहस्पतिवार के दिन मे अपनी बेगमो के साथ उसके मकान पर गया। और रात्रि वहीं व्यतीत की। अगले दिन उसने मुझे अपनी भेट दीं जिनका मूल्य 10 लाख रुपया था। इनमे कुछ जवाहरात, कुछ जडाऊ चीजे, पोशाके हाथी और घोडे थे। इनके अतिरिक्त लाले याकूत कुछ मोती और रेशमी कपडे तथा चीनी आदि के पात्र थे। मैने कुछ चीजे स्वीकार करली और शेष उसी को भेट कर दी। मुर्तजाखा ने बगाल गुजरात से एक अगूठी भेजी जो एक ही लाल की बनी हुई थी। उसका रग बहुत अच्छा था। पानी भी उत्तमं था। सारी अगूठी एक ही टुकडे की बनी हुई थी। तौलने पर वह डेढ टक एक शुर्ख जो एक मिसकल और 15 शूर्ख के बराबर थी। मैने इसको बहुत पसन्द किया। उस दिन तक किसी ने भी ऐसी अगूठी के विषय मे न सुना था और किसी बादशाह के हाथ नहीं आई थी। एक लाल जिसका वजन छ शुर्ख और 2 टक और 15 शुर्ख था जिसका मूल्य 750000 रु था, मुझे भेजी गई। इसका यही मूल्य आका गया।

मक्का को भेंट– उसी दिन के शरीफ का वकील मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसके साथ एक पत्र और काबा के द्वार का एक पर्दा था। उसने मेरी प्रति बडी मित्रता प्रकट की मैने उसको 5 लाख दाम प्रदान किये जो सात आठ हजार रुपयो के बराबर होते हैं और मैंने निश्चय किया कि शरीफ को 1 लाख रुपये की मूल्य की हिन्दुस्तानी बहुमूल्य वस्तुए भेजी जावेगी।

मिर्जा गाजी–इसी मास की 10 तारीख बृहस्पतिवार को सूबा मुल्तान का एक बाग मिर्जा गाजी की जागीर मे जोड दिया गया। उसको पहले ही ठट्टा का प्रान्त जागीर मे दिया हुआ था। इसके सिवाय उसको 5 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया गया। कन्धार का प्रशासन भी उसी के

सुपुर्द कर दिया गया। यह हिन्दुस्तान की सीमा है। यह प्रशासन मे बड़ा कुशल था। मैंने उसको 1 खिलअत और जडाऊ तलवार देकर विदा किया। मिर्जा गाजी मे उत्तम गुण थे, और वह कविता भी अच्छी लिखता था उसका तखल्लुस (काव्यनाम) वकारी था।

खानखाना की भेंट— 15 तारीख को खानखाना की भेंट मेरे समक्ष प्रस्तुत की गई। इनमें 40 हाथी कुछ जडाऊ और अलकृत पात्र, कुछ ईरानी पोशाके थी। इन सबका मूल्य 1 लाख 50 हजार रुपये था। मिर्जा रूस्तम और उस सूबे के पदाधिकारियो ने भी मेरे लिए अच्छी भेंटें भेजी थीं। कुछ हाथी मुझे पसन्द आये।

राय दुर्गा की मृत्यु— इसी मास की 18 तारीख को राय दुर्गा की मृत्यु की खबर आई। इसकी परवरिश मेरे पूज्य पिता ने की थी। मेरे पिता के समय मे यह 40 वर्ष तक बल्कि उससे कुछ अधिक अमीर के पद पर था। पर फिर उसको शनै शनै. 4 हजार का मनसब मिल गया। मेरे पिता की सेवा मे आने का सौभाग्य प्राप्त करने से पहले वह राणा उदयसिंह का विश्वसनीय सेवक था। 29 तारीख को उसकी मृत्यु हो गई वह अच्छा सैनिक था।

सुल्तान शाह अफगान—सुल्तान शाह अफगान की प्रकृति में उत्पात और बदमाशी थी। उसका समय खुसरो की सेधा मे व्यतीत हुआ था और दोनो मे बडी घनिष्ठता थी। यहा तक की दुर्भागी खुसरो के भाग जाने का सुल्तान शाह भी एक कारण था। खुसरो की हार और गिरफ्तारी के बाद यह अफगान खिजराबाद और उसके पास के प्रदेश की पहाडियों मे चला गया फिर वहां के करोडी मीर मुगल ने उसको कैद कर लिया। वह ऐसे पुत्र के विनाश का कारण था इसलिए मैंने आदेश दिया कि लाहौर के मैदान मे खडा करके उस पर तीर चलाये जावें। उपरोक्त करौडी को ऊँचा पद और एक खिलअत देकर सम्मानित किया। 29 तारीख को शेरखाँ। अफगान जो मेरा पुराना सेवक था मर गया यो कहना चाहिए कि उसने आत्मघात किया क्योंक वह निरन्तर मद्यपान किया करता था। यहा तक कि प्रति पहर वह जोरदार अर्ख के पूरे भरे हुए. 4 प्याले पिया करता था। उसने गतवर्ष रमजान मास मे रोजे भग कर दिये थे तो इस वर्ष उसने प्रण किया कि वह इसका प्रायश्चित करने के लिए वो मास रोजा रखेगा। इससे वह बहुत दुर्बल हो गया और जठरागनी समाप्त हो गई एव 57 वर्ष की आयु मे उसकी मृत्यु हुई। उसके बच्चो और भाईयों का उनकी परिस्थिति अनुसार पालन करने के लिए मैंने उनको उसके पद और जागीर का कुछ भाग प्रदान कर दिये।

मौलाना मुहम्मद अमीन

सव्वाल मास की 1 तारीख को मैं मौलाना मुहम्मद अमीन से भेट करने गया वह शेख महमूद कमानगर (धनुष निर्माता) का एक शिष्य था। शेख महमूद अपने समय का एक महा पुरुष था। बादशाह हुमायू उस पर पूरा भरोसा करता था। यहा तक कि वह महमूद के हाथ धुलाया करता था। उपरोक्त मौलाना का स्वभाव उत्तम है। सासारिक मामलों में व्यस्त रहने पर भी उसका ढंग फकीरों जैसा है। उसकी संगति में मुझे बडा आनन्द आया। मैंने उससे कहा कि मेरे मन मे कुछ व्यथायें घुसी हुई हैं। मैंने उसकी नेक सलाह और अनुकूल शब्द सुने जिससे मेरे हृदय को बडी सात्वना पाप्त हुई। मैंने निर्वाह के लिए उसको 1000 बीघा भूमि और 1 हजार नकद देकर उससे विदा ली।

आगरे की ओर–रविवार को जब एक पहर व्यतीत हो चुका था तो मैं लाहौर से आगरे के लिए रवाना हुआ। मैने किलिच खां को सूबादार, मीर कलामुद्दीन को दीवान, शेख युसुफ को बख्शी और जमालुद्दीन को कोतवाल नियुक्त किया और प्रत्येक को उसके पदानुकूल खिलअत दी। फिर मैं अपने इष्ट मार्ग की ओर चला। 25 तारीख को सुल्तानपुर के पास नदी पार करके मैं 2 कोस आगे जाकर नकोदर ठहरा। मेरे पूज्य पिता ने अबुलफजल को 20 हजार रुपये का सोना देकर आदेश दिया था कि इन दो परगनो के बीच एक बाध बनाकर जल प्रपात् बनाया जावे। वास्तव मे वहा ठहरने का स्थान मुझे अत्यन्त सुखद प्रतीत हुआ। मैंने नकोदर के जागीरदार मुइजुल–मुल्क को आदेश दिया कि वहा एक इमारत खडी की जाय और इस बाध के एक ओर बाग लगाया जावे। जिसे देखकर आने–जाने वाले लोग प्रसन्न हो जाए। रविवार 10 जीकदा वजीर–उल–मुल्क जो मेरे राज्याभिषेक से पहले मेरा सेवक था और मेरे लवाजमे का दीवान था अजीर्ण रोग से मर गया। उसके जीवन के अन्तिम समय मे उसके एक भाग्यहीन पुत्र हुआ। उसके जन्म के 40 दिन बाद ही उसके माता पिता की मृत्यु हो गई। और वह स्वयं भी 2, 3 वर्ष का होकर मर गया। मुझे विचार आया कि जजीर उल–मुल्क का खानदान समूल नष्ट नहीं होना चाहिए। मैंने उसके भाई मनसूर को एक पद प्रदान किया। वास्तव में उसने मेरे प्रति कोई प्रेम प्रकट नही किया।

शेर का शिकार–सोमवार तारीख 14 को मैंने मार्ग में सुना कि पानीपत ओर कर्नाल के बीच में दो ऐसे शेर हैं जो यात्रियों को बडा दुख देते हैं। मैंने हाथी रवाना किये। जब मैं उन शेरों के स्थान पर पहुंचा तो एक हथनी पर सवार हुआ, और आदेश दिया गया कि हाथियों द्वारा शेर को घेरकर कमारगाह बना दिया जावे। अल्लाह के अनुग्रह से मैंने दोनों शेरों को बन्दूक से मार

डाला और इस प्रकार दोनों शेरों को जिन्होंने अल्लाह के बन्दों का मार्ग बन्द कर रखा था समाप्त कर दिया।

दिल्ली में– बृहस्पतिवार तारीख 18 को मै दिल्ली में उस स्थान पर ठहरा जो सलीम खां अफगान ने अपने शासनकाल में बनाया था। यह जमुना नदी के बीच में बना हुआ है और सलीमगढ कहलाता है। मेरे पूज्य पिता ने यह स्थान मुतेजाखां को दे दिया था। जो पहले दिल्ली का ही निवासी था। इस खान ने नदी के तट पर एक चबूतरा बनाया था जो अत्यन्त सुखद और रमणीय प्रतीत था। इस इमारत के नीचे जल के समीप एक चबूतरा या चौखण्डी बनी हुई थी, जिसमे हुमायूं के आदेश से चमकदार और चिकने टाइल लगे हुये थे। ऐसे सुखद वायु वाले स्थान बहुत कम थे। जिन दिनों में स्वर्गीय हुमायूं दिल्ली को सुशोभित करता था तो वहां वह अपने घनिष्ठ मित्रों के साथ जाया करता था और अपने दरबारियों में बैठा करता था। मैंने यहा अपने दरबारियों और मित्रों के साथ 4 दिन व्यतीत किये और मद्य गोष्ठियां की। मोअज्जम खां ने जो दिल्ली क़ो फौजदार था भेटे प्रस्तुत की। जागीरदार और नागरिक भी भेटे लाये। मैं पालम के परगने मे कमारगाह बनवाकर शिकार करना चाहता था। पालम दिल्ली के निकट है। परन्तु मुझसे कहा गया कि आगरे में प्रवेश करने का समय सन्निकट है। और ऐसा शुभ मुहूर्त दुबारा शीघ्र आने वाला नही है इसलिए मैंने शिकार का इरादा त्याग दिया और एक नाव में बैठकर आगरे के लिए रवाना हो गया। इस मास की 20 तारीख को चार लडके तीन लडकिया जो मिर्जा शाहरुख के थे लाये गये। शाहरुख ने मेरे पिता से इन बच्चो का उल्लेख नहीं किया था। मैंने लडको को अपने विश्वसनीय सेवको के सुपुर्द कर दिया और लडकियों को अन्तपुर की दासियों के हवाले करके आदेश दिया कि उनकी भली–भांति सभाल की जावे। 21 जीकदा को राजा मानसिंह रोहतास के दुर्ग से मेरे पास आया। यह दुर्ग पटना और बिहार के प्रान्त में है। मानसिह को मैंने छ. सात बार बुलाया तब आया। मानसिह भी खान आज्जम की भांति एक मिथ्याचारी है और इस राज्य के पुराने भक्षको मे गिना जाता है। इन लोगों ने मेरे साथ क्या किया है और मैंने उनके साथ क्या किया है इसको ईश्वर ही जानता है क्योंकि वही सब भेदों का ज्ञाता है। शायद ऐसा दृष्टान्त दूसरा नहीं मिलेगा। 100 हाथी मेरे भेंट किये जिनमें एक भी ऐसा नहीं था जो शाही तबेले में रखा जा सके। इस राजा पर मेरे पिता की बड़ी कृपा थी इसलिए मैने उसके सामने उसके अपराधों का उल्लेख नहीं किया और उसकी पदोन्नति की।

राज्यारोहण के पश्चात तृतीय वर्ष का उत्सव

बृहस्पतिवार दो जिहिज्जा तदनुसार एक फर्वरदीन 1908 (19 मार्च 1608) को जब सूर्य संसार को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है। मीन राशि को छोड़कर सुखद मेष राशि में आ गया यह राशि—बड़ी आनन्ददायक है। संसार में एक नया प्रकाश फैल गया और बसंत ऋतु ने लोगों को नया विलास पहना दिया और कठोर शीत के वस्त्र उतरा दिये।

नए वर्ष का उत्सव रणकट्टा गांव में मनाया गया था जो आगरे से 5 कोस दूर है। जब सूर्य ने राशि बदली तो मैं कीर्ति और हर्ष के साथ राजसिंहासन पर बैठा। सामन्तों दरबारियों और समस्त सेवकों ने आगे आकर मुझे बधाइयां दी। इसी दरबार में मैंने खानजहां को 5 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया। मैंने ख्वाजहां को बख्शी के पद के लिए चुना। वजीर खां को बंगाल प्रान्त के वजीर पद से पृथक करके उसके स्थान पर मैंने अबुल हसन शियाबखानी को रवाना किया और नूरुद्दीन कुली को आगरा का कोतवाल बनाया। स्वर्गीय बादशाह अकबर का कीर्तिमान मजार मेरे मार्ग में पड़ता था इसलिए मेरे मन में आया कि उसके पास से होकर जाते हुए मैं उसकी यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त करूं तो जिन लोगों की दृष्टि संकुचित है वे मेरे रास्ते में ही था इसलिए मैं वहां गया हूंगा। अतः मैंने निश्चय किया कि इस समय तो मैं आगरे में प्रवेश करूं। तत्पश्चात मैं इस मजार यात्रा के लिए पैदल जाऊं जो ढाई कोस की दूरी पर है। इसी प्रकार हजरत (मेरे पिता) ने मेरे जन्म पर आगरे से अजमेर की यात्रा की थी। मेरी इच्छा है कि मैं भी वहां अपने सिर के बल जाऊं। शनिवार इसी मास की 5 तारीख को जब 2 पहर दिन व्यतीत हो चुका तो शुभ मुहुर्त में मैं आगरा वापिस आया और मार्ग में 5 हजार रुपये के छोटे—छोटे सिक्के दोनों तरफ उछालता हुआ महान राजप्रसाद में जो दुर्ग के अन्दर हैं मैंने प्रवेश किया। इसी दिन राजा देव एक सफ़ेद चीता मुझे दिखाने के लिए लाया।

पदोन्नतियाँ—इस समय भोज हाड़ा का पुत्र रत्न जी एक मुख्य राजपूत सामन्त है, डेरों में आया और मेरी सेवा में उपस्थित हुआ 3 हाथी मेरे भेंट करने के लिए लाया था जिनमें से मुझ एक बहुत पसन्द आया। उसका मूल्य दरबारियों ने 15 हजार आंका। यह हाथी मैंने अपने निजी हाथियों में प्रविष्ट कर लिया और इसका नाम रतन गज़ रखा। पहले के भारतीय राजाओं के

हाथियो का मूल्य 25 हजार रुपये से अधिक नहीं होता था। परन्तु अब यह बहुत महान हो गये है। रतन को सरबुन्द राय की उपाधि से सम्मानित किया। और मीरान सदरजहां को 5 हजार जात और 1500 सवार का तथा मौअज्जम खा को 4 हजार जात और 2 हजार सवार का मनसब दिया। अब्दुल्ला खा की पदोन्नति करके 3 हजार जात और 500 सवार का मनसब दिया। मुजफ्फर खा और मानसिह दोनो मे प्रत्येक को 2 हजार जात और 1 हजार सवार का मनसब दिया। अबुल हसन दीवान को 1 हजार जात और 500 सवार का मनसब दिया। इतिमादुद्दौला को भी एक हजार जात और सवार का मनसब दिया।

राजा सूरजसिंह और श्याम–तारीख 25 को मेरे पुत्र खुर्रम का मामा राजा सूरजसिह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ वह अपने साथ श्याम को लाया था जो उत्पत्ति उमरा का चचेरा भाई है। वास्तव मे उसमे कुछ चतुरता है और हाथी की सवारी करना खूब जानता है। राजा सूरजसिह अपने साथ एक हिन्दी कवि भी लाया था उसने मेरी प्रशसा मे एक कविता लिखकर दी। मैने उसको हाथी पुरस्कार मे दिया।

कु. राजा मानसिंह को उत्तम घोड़ा दिया– इसी मास की 15 तारीख को मैने राजा मानसिह को मेरा सर्वोत्तम घोडा भेट के साथ दिया। शाह अब्बास ने यह घोडा और कुछ अन्य घोडे उपयुक्त भेटो के साथ अपने एक विश्वसनीय दास के साथ मेरे स्वर्गीय पिता को भेट स्वरूप भेजे थे। इस घोडे की भेट से राजा मानसिह को इतना हर्ष हुआ कि यदि मै उसको एक राज्य दे देता तो भी उसको इतनी प्रसन्नता नही होती। जब यह घोडा आया था तो 3–4 वर्ष का था। यह हिन्दुस्तान मे ही बडा हुआ था। दरबार के सब सेवक चाहे मुगल हो या राजपूत कहते थे कि ऐसा घोडा ईराक से हिन्दुस्तान में कभी नहीं आया।

इस्लाम खां की मृत्यु– मगलवार तारीख 20 को सूचना आई कि सूबा बगाल का सूबदार जहागीर कुली खा जो मेरा दास था मर गया उसके स्वाभाविक सत्स्वभाव और सहज गुणो के कारण बडे अमीरो में भर्ती किया गया था। उसकी मृत्यु से मुझे बडा दुख हुआ मैने बगाल का शासन और मेरे पुत्र जहादार शाह की सरक्षता अपने फरजन्द इस्लाम खा को प्रदान कर दी और उसके स्थान पर बिहार का सूबा अफजल खा को दे दिया। जो अबुल फजल का पुत्र था। हकीम अली का पुत्र जिसको मैने किसी कार्य के लिए बुरहानपुर भेजा था मेरे पास आया और अपने साथ कर्नाटक के मदारियो को लाया जो अद्वितीय थे। उनमे से एक 10 गोलो का खेल दिखाता था। हर एक गोला नारगी के आकार का था और एक गोला छोटा था दूसरा तो

शुर्ख (चिरमू) के बराबर था। यद्यपि कुछ गोले छोटे थे और कुछ बड़े थे। फिर भी वह किसी गोले को नहीं चूसता था और ऐसी युक्तियां बललाता था कि उन्हें देखकर हैरानी होती थी।

मिर्ज़ा फरीदुन बरलास को 1500 जात और 1300 सवारों को मनसबदार बनाया। मैंने यह भी आदेश दिया कि पायन्दा का मुगल वृद्ध हो गया है और सैनिक की हैसियत से इसने अच्छा कार्य किया इसलिए इसको 2000रु. की व्यक्तिगत जागीर दी जावे। इलफ खां को 700 जात और 500 सवारों का मनसब दिया गया। इस्लाम खां जो मेरा फरजन्द था सूबा बंगाल का सूबादार बनाया गया और उसको 4 हजार जात और 3 हजार सवार का मनसब दिया। रोहताश दुर्ग का दुर्गपति कुतुबुद्दीन खां कोका के पुत्र किश्वर खां को नियुक्त किया गया। ईहतिमाम खां का मनसब एक हजार जात और 300 सवार करके उसको मीर बदर (नौसेना का अध्यक्ष) नियुक्त किया और बंगाल की नौयार (नौसेना) उसके हवाले कर दी गई। 1 सफर को खान–आजम के पुत्र शमसुद्दीन खां ने 10 हाथी मुझे भेंट किए उसको दो हजार जात और 1500 सवार का मनसब और जहांगीर कुली खां की उपाधि दी गई। जफर खां को दो हजार जात और एक हजार सवार का मनसब मिला।

जगतसिंह की पुत्री से विवाह

मैंने आदेश दिया था कि राज़ा मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह की पुत्री से मेरा विवाह किया जाए तो सोलह तारीख को अस्सी हजार रुपये साचक (विवाह भेंट) के उपर्युक्त राजा के पास भेजे गए। मुकर्रबखां ने खम्भात से एक योरोपीय पर्दा भेजा। उसी दिन मेरी बुआ नजीबुन्निसा बेगम 61 वर्ष की आयु में क्षय रोग औरं जोर के बुखार के कारण संसार से चल बसी।[1] मैंने उसके पुत्र मिर्जा वली को एक हजार जात और 200 सवार का मनसब दिया।

मवरान्नहर का राजदूत— अकम हाजी नामक मवरान्नहर का एक व्यक्ति जो बहुत अर्से टर्की में रह चुका था और जो धार्मिक ज्ञान से रहित नहीं था और युक्ति संगत बातें करना चाहता था और जो अपने को टर्की के सम्राट का राजदूत कहता था। मेरे पास आगरे में आया। उसके पास एक ऐसा पत्थर था जो पढ़ा नहीं जाता था। उसकी परिस्थिति और ढंग को देखकर दरबार के किसी भी सेवक को यह विश्वास नहीं हुआ कि वह राजदूत है। जब तिमूर ने तुर्की पर विजय पाई और वहां का शासक इलदिरीम बायजीद उसके हाथ में आ गया तो उससे एक वर्ष का भूमिकर खिराज लेकर तिमूर ने निश्चय कर

1. यह मिर्जा हकीम की बहन थी और फखरून्निसा भी कहलाती थी।

दिया कि तुर्की का समस्त देश उसको वापिस लौटा दिया जावे। ठीक उसी समय इलदिरीम बायजीद की मृत्यु हो गई। तीमूर उसका राज्य उसके पुत्र मूसा चलेबी को देकर वापिस लौटा। तब से अब तक इस प्रकार की कई कृपाए करने पर भी वहा के सम्राटो की ओर से कोई राजदूत नहीं भेजा गया है अत यह कैसे विश्वास किया जा सकता है कि यह व्यक्ति मवरान्नहर के सम्राट ने भेजा होगा। मैं इस मामले को बिल्कुल नहीं समझा सका और इस व्यक्ति का दावा सच्चा है, इसकी किसी ने दवा नहीं नहीं दी इसलिए मैने उससे कहा कि तुम जहा जाना चाहो चले जाओ। चार तारीख रबी–उल–अव्वल को जगतसिह की पुत्री ने अन्त पुर मे प्रवेश किया। विवाह की रीति मरियम जमानी के निवास पर की गई।

राणा के विरुद्ध तैयारियां

मैंने राणा पर विजय प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था इसलिए मुझे ख्याल आया कि महावत खा को भेजा जावे। उसके साथ जाने के लिए योग्य अफसरो के नेतृत्व मे मैंने बारह हजार पूर्ण रूप से सशत्र घूडसेना भेजी। इनके अतिरिक्त पाच सौ अहदी, दो हजार बन्दूकची, सत्तर अस्सी तोपे जो हाथियो और ऊँटो पर लदी हुई थी साठ हाथी इस काम के लिए भेजे सेना के साथ 20 लाख रुपये भेजने का भी मैंने आदेश दिया। उपरोक्त मास की सोलह तारीख को मीर नियामतुल्ला यजदी का पोता मीर खलीलुल्ला जिसकी सारी परिस्थिति और कुटुम्ब का इतिहास पहले लिखा जा चुका है, अजीर्ण रोग से मर गया। उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह सच्चा आदमी है और उसमे दरवेश की सी प्रवृति है। यदि वह मेरी सेवा मे दीर्घ काल तक रहता तो उच्च पद पर पहुच जाता। बुरहानपर के बख्शी ने कुछ आम भेजे जिनमे से मैंने एक को तुलवाया तो वह साढे बावन तोले का हुआ। बुधवार तारीख 18 को मेरे चालीसवे चान्द्र वर्ष की तुला की गई। मैंने आदेश दिया कि तुला का रुपया स्त्रियो और गरीब लोगो मे बाट दिया जावे। बृहस्पतिवार चौदह रबी–उल–आखिर को असदियो के बख्शी ताहिरबेग को मुखलिस खा की उपाधि दी गई और मुल्ला तकीया, मुशलरी को जो अनेक गुणो से विभूषित था और इतिहास के ज्ञान से परिचित था मुअर्रिख खा की उपाधि दी गई।

इसी मास की दस तारीख को भाई बरखुर्दार को बहाउर खा की उपाधि देकर मैंने उसको अपने साथियो मे ऊँचा बना दिया। मिहतर खा की पुत्री मुनीसखा ने सग–यसब का बना हुआ एक मर्तबान भेट किया जो मिर्जा उलूग बेग गुरबान के साथ मे तैयार किया गया था। यह बहुत कोमल और दुर्लभ था और उसका आकार बडा सुन्दर था। यह अत्यन्त श्वेत और शुद्ध पत्थर का

बना हुआ था। उसके मुह पर मिर्जा का शुभ नाम खुदा हुआ था हिजरी सन् भी रिका[1] लिपि मे खुदा हुआ था। मैंने आदेश दिया कि मेरा नाम और अकबर का शुभ नाम ही इस मर्तबान के किनारे पर खोद दिया जावे। मेहत्तर खा इस राज्य का एक पुराना दास था। उसको स्वर्गीय बादशाह हुमायू की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और मेरे पूज्य पिता के राज्यकाल मे उसको अमीर का पद प्राप्त हो गया था। अकबर उसको अपना विश्वसनीय सेवक समझता था। 16 तारीख को एक फरमान जारी किया गया कि सग्राम का प्रदेश जो मैंने अपने फर्जन्द (पुत्र) इस्लाम खा को एक वर्ष के लिए दे दिया था वह एक वर्ष के लिए बिहार के सूबेदार अफजलखा को दे दिया जाये। इसी दिन मैने महावत खा को 3 हजार जात और 2 हजार पाच सौ सवार का मनसब दिया और युसूफ खा को जो हुसेनखा टुकरिया का पुत्र था 2 हजार जात और 800 सवार का मनसब मिला।

मेवाड़ पर चढाई— 24 तारीख को मैंने महावत खा और अमीरो को तथा दूसरे लोगो को जिन्हे राणा के दमन के लिए नियुक्त किया था विदा कर दिया। उक्त खान को एक खिल्लत एक घोडा, एक खाशा हाथी और एक जडाऊ तलवार देकर सम्मानित किया। जफरखा को एक झण्डा बख्श कर सम्मान दिया और एक खिल्लत तथा जडाऊ खजर भी प्रदान दिया। पुजातखा को भी एक झण्डा, खिल्लत और एक खाशा दिया गया। राजा वीरसिह देव को एक खिल्लत और एक खाशा घोडा दिया गया और मगली खा को एक घोडा और जडाऊ खजर प्रदान किया गया। नारायणदास कछवाहा अली कुली धर्मन और हिजावर खा तहमतन को रुखसत किया गया। बहादुर खा और निजामुल-मुल्क बख्शी को जडाऊ खजर दिये गये। इसी भाति सब अमीरो ओर सैनिको को अपने अपने पद के अनुसार शाही सम्मान प्रदान किये गये।

अतालिक खानखाना का आगमन—एक पहर दिन व्यतीत होने पर खानखाना जो मेरा सरक्षक (अतालिक) बनाया गया था बुरहानपुर से मेरी सेवा मे आया। वह सुख और हर्ष के अतिरिक्त से इतना अभिभूत हो गया कि उसको यह पता नहीं था। कि वह पैरो के बल आया या सिर के बल। वह पागल सा होकर मेरे चरणो मे गिर पडा। मैंने कृपा और अनुग्रह से उसको उठाया और उसके सिर को अपने हाथ में लेकर उसका कृपापूर्वक और स्नेहपूर्वक आलिगन किया और उसके मुख का चुम्बन किया। वह मुझे भेट करने के लिए मोतियों की दो लडे और कुछ लाल और पन्ने लाया था। इन रत्नो का मूल्य 3

---

1 रिका एक प्रकार की विशेष लिपि का नाम है।

लाख रुपया था। इसके अतिरिक्त उसके मेरे सामने अनेक मूल्यवान चीजे रखी। तारीख 17 जमादल अव्वल को बंगाल का दिवान व वजीरखां मेरी सेवा में आया और उसने 60 हाथी और एक मित्र की लाल मुझे भेंट की। वह पुराना सेवक था और उसने सब प्रकार की सेवा की थी। मैंने हुक्म दिया कि वह मेरी सेवा में रहे।

कासिमखा और उसका बडा भाई इस्लामखा किसी भी भांति शांति पूर्वक साथ–साथ नहीं रह सकते थे इसलिए मैंने कासिमखां को अपने पास बुला लिया। वह कल मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। 22 तारीख को आसफखां ने एक लाल जिसका वजन 7 टाक था और जो उसका भाई अबुलकासिम खम्भात के बन्दरगाह से 75 हजार रुपये में खरीद कर लिया था मेरे भेट की। इसका रग बडा सुन्दर है और आकार भी अच्छा है परन्तु मेरे ख्याल से इसका मूल्य 60 हजार रुपये से अधिक नहीं है। रायसिह के पुत्र दिलीपराय ने अनेक अपराध किये थे परन्तु उसने मेरे फर्जन्द खाने जहा की शरण ले ली थी। इसलिए उसके अपराध क्षमा कर दिये गये और मैने जानबूझकर उसके दोषों पर ध्यान नहीं दिया। 24 तारीख को खानखाना के पुत्र जो उसके साथ गये थे मेरी सेवा मे आये और 35 हजार रुपये मेरी नजर किये। उसी दिन उपरोक्त खान ने 90 हाथी मेरी भेट किये। बृहस्पतिवार व जमादुस्सानी को मेरा सौर वार्षिक उत्सव मनाया गया। यह उत्सव मरियम जुमानी के महल मे किया गया था। मैंने कुछ रुपया स्त्रियो मे बाट दिया और फिर आदेश दिया कि शेष राशि साम्राज्य के गरीब लोगो मे बाट दी जावे। इस मास की 4 तारीख को मैने दीवान लोगो को आदेश दिया कि खाने आजम को उसके पदानुसार सात हजार की जागीर दी जावे।

राजा मानसिंह– इस मास की 11 तारीख को राजा मानसिह ने दक्षिण के लिए सेना तैयार करने के निमित्त छुटटी मागी। उसको इसी कार्य के लिये नियुक्त किया गया था। वह स्वदेश अर्थात आमेर भी जाना चाहता था मैंने उसको अपना निजी हाथी जिसका नाम होशियार मस्त था देकर छुटटी दे दी।

अकबर की मृत्यु तिथि– सोमवार तारीख 12 को स्वर्गीय बादशाह अकबर का मृत्यु दिवस था इस अवसर पर जो रुपये प्रतिवर्ष खर्च किये जाते थे उनके अतिरिक्त मैने 4 हजार रुपये फकीरो और दरवेशों में बांटने के लिए जो अकबर के मकबरे मे निवास करते थे दिये। उसी दिन मैने खान आजम के पुत्र अब्दुल्ला को सरफराज खां की उपाधि देकर और कासिमखां के पुत्र अब्दुल रहीम को तरबीयतखां की उपाधि देकर सम्मानित किया। मंगलवार तारीख 13 को मैंने खुसरो की पुत्री को बुलाकर देखा तो वह अपने पिता से बिल्कुल मिलती–जुलती थी। ज्योतिषियों ने कहा कि उसका जन्म उसके पिता के लिए अनिष्टकर है। परन्तु मेरे लिए शुभ हैं

अन्त मे यह सिद्ध हो गया कि यह भविष्यवाणी सच्ची थी मुझे सलाह दी गई थी कि इस बालिका को 3 वर्ष बाद देखू। इतनी आयु व्यतीत हो जाने पर मैंने उसको देखा।

खानखाना की प्रतिज्ञा— इस मास की 21 तारीख को खानखाना ने निश्चय किया कि निजामुल–मुल्क के प्रान्त को विद्रोहियो से मुक्त कर देना चाहिए। स्वर्गीय बादशाह अकबर की मृत्यु के पश्चात उस प्रान्त मे कुछ गडबड हो चुकी थी। खानखाना ने लिखित दिया कि यदि मैं दो वर्ष मे इस कार्य को पूरा नहीं कर दू तो मुझे अपराधी माना जाये परन्तु शर्त यह है कि उस प्रान्त के लिए जो सेना दी गई है उसमे 12 हजार की वृद्धि की जावे और 10 लाख रुपये खर्च के लिए मुझ दिये जावे। मैंने आदेश दिया कि सेना के लिए सामग्री और कोष शीघ्र तैयार किये जावे और खानखाना को रवाना किया जावे। 26 तारीख को अहदियो के बख्शी मुखलिसखा को सूबा दक्षिण का बख्शी बनाया गया और उसका स्थान इब्राहीम हुसेनखा मीर–बदर (नौकाध्यक्ष) को दिया गया। एक रजब को पिसरोखा और कमाल खा जो निरन्तर मेरी सेवा करते थे मर गये।

पिसरोखां— पिसरोखा को शाह तहमास्प ने मेरे दादा को दास के रूप मे दिया था और वह सआयत कहलाता था। स्वर्गीय बादशाह अकबर के समय मे उसको फर्राशखाने का दरोगा बनाया गया तब उसको पिसरो खा की उपाधि दी गई। वह इस को भलीभाति जानता था बल्कि यह कहा जा सकता है कि यह काम उस पर सिला हुआ था और उसकी योग्यता का एक अग था। जब वह 90 वर्ष का था तो उसमे 14 वर्ष के लडके से भी अधिक फुर्ती थी। उसको मेरे दादा, पिता और मेरी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसने जीवन के अन्तिम क्षण तक मद्यपान नहीं छोडा था। वह पन्द्रह लाख रुपये छोडकर मरा था उसके एक मूर्ख पुत्र है जिसका नाम रियाअत है। मैंने उसके पिता की सेवाओ को ध्यान मे रखकर आधे फर्राशखाने का काम उसके सुपुर्द कर दिया और शेष आधा काम तखमाक खा को दे दिया। कमालखा एक दास था जो बडी लगन से मेरी सेवा करता था। वह दिल्ली का कलाल है उसकी ईमानदारी और विश्वसनीयता देखकर मैंने उसको वकालत बेगी नियुक्त किया।

लाल कलावन्त— इसी मास को दो तारीख को कलावन्त की मृत्यु हो गई। उसने बचपन से मेरे पिता की सेवा की थी और हिन्दी भाषा का उच्चारण सिखाया था। उसकी मृत्यु 65 या 70 वर्ष की आयु मे हुई थी।

ख्वाजा सरे— हिन्दुस्तान मे विशेषकर सिलहट मे मैंने जो बंगाल के अधीन एक प्रदेश है लोगों मे यह प्रथा है कि वह अपने कुछ पुत्रो को पुरुषार्थहीन करके सूबादार को भूमि–कर के बदले मे दे देते हैं। यह प्रथा

धीरे–धीरे दूसरे सूबों में भी अपना ली गई है और प्रति वर्ष इस प्रकार बच्चे निष्पौरुष बना दिए जाते हैं। यह प्रथा आम हो गई है इस समय मैंने आदेश जारी दिया कि अब से कोई व्यक्ति इस घृणित प्रथा का अनुसरण न करे और छोटे ख्वाजेसरों का व्यापार बिल्कुल बन्द किया जावे। इस्माइल खां और सूबा बंगाल के अन्य सूबादारों को फरमान मिले कि जो कोई ऐसे कार्य करे उनको प्राण दण्ड दिया जावे और कम उम्र के ख्वाजासरों को जहां मिले वहां पकड़ लिया जावे। इस कार्य में पहले बादशाह को सफलता नहीं हुई थी यदि ईश्वर की मर्जी हुई तो थोडे से समय में यह कुत्सित प्रथा बिल्कुल बन्द हो जाएगी और ख्वाजेसरों के व्यापार निषेध होने के कारण किसी को ऐसा बुरा और निलाम कार्य करने का साहस नही होगा। मैंने खानखाना को एक घोडा दिया। यह उनमें से था जो शाहअब्बास ने मुझे भेजे थे मेरे निजी घोडों में यह सबसे उत्तम था। खानखाना को यह घोडा प्राप्त होने पर इतना हर्ष हुआ कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता था वास्तव मे इतने बडे आकार और ऐसे सौन्दर्य वाला घोडा हिन्दुस्तान मे शायद ही आया होगा। मैंने उसको एक हाथी भी दिया जिसका नाम फुतूह था अर्थात् वह लडने में अद्वितीय था। वह 20 अन्य हाथियो से लड सकता था।

किशनसिंह– किशनसिंह महावत खां के साथ था उसने प्रशंसनीय सेवा की थी। राणा के आदमियों के साथ लडते हुए उसकी टांग में घाव लग गया था परन्तु राणा के 20 सरदार मारे गये थे और उसके तीन हजार आदमी बन्दी बना लिए गए थे किशनसिह को दो हजार जात और एक हजार सवार का मनसब दिया गया।

इसी मास की चौदह तारीख को मैंने मिर्जा गाजी को आदेश दिया कि वह कन्धार चला जावे। एक विचित्र घटना यह हुई कि ज्यों ही मिर्जा बख्खर से रवाना हुआ त्योंही सरदार खां की मृत्यु की खबर आई वह कन्धार का सूबादार था। सरदार खां मेरे चाचा मुहम्मद हकीम का स्थाई और घनिष्ठ सेवक था और तुख्तवेग कलहाता था। मैंने उसका आधा पद उसके पुत्रों को दे दिया। सोमवार तारीख 17 को मैं स्वर्गीय बादशाह के मजार की यात्रा करने के लिए पैदल गया। यदि सम्भव होता तो मैं यह मार्ग सिर के बल और पलकों के बल तय करता। मेरे जन्म पर मेरे पूज्य पिता ने ख्वाजा मुईनुद्दीन सजरी चिश्ती की दरगाह की यात्रा फतेहपुर से अजमेर तक जो 120 मील फासिला है पैदल.चलकर की थी। यदि मैं इस फासिले को अपने सिर और आंखों से तय करूँ तो मैंने क्या किया। जब मुझे यह यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो मैंने इमारत को देखा जो उस कब्रस्तान में खड़ी की गई थी। यह मेरे ख्याल के अनुसार नहीं बनी थी। मैं ऐसी इमारत चाहता था जिसको

देखकर ससार के यात्री कहे कि ऐसी हमने ससार मे दूसरी इमारत नहीं देखी, ज्योही उक्त इमारत के निर्माण का समय आया त्योही भाग्यहीन खुसरो का मामला खडा हो गया और मैं लाहौर के लिए रवाना हो गया। तो स्वरूपकारो ने यह इमारत अपने ढग की बना दी और इस पर बडा खर्च हुआ। यह काम तीन चार वर्ष तक चलता रहा। मैने आदेश दिया कि अनुभवी स्वरूपकार अन्य अनुभवी लोगो की सहमति से एक निश्चित योजना बनाकर पुन इसकी नींव डाले तब शनै शनै एक विशाल भवन खडा हो गया ओर मजार के चारो ओर बडा भव्य बाग बन गया इसका दरवाजा बडा ऊँचा और विशाल बनाया गया और इस पर सफेद पत्थर की मीनारे खडे किए गए। मुझे यह बतलाया गया कि सब मिलकर इस निर्माण मे 15 लाख रुपये खर्च हुए।

रविवार तारीख 23 को मैं ऐसे दरबारियो को साथ लेकर हकीम अली के मकान के हौज देखने गया जिन्होने यह पहले नही देखी थी यह मेरे पिता के समय मे लाहौर मे बनाई गई थी यह छ गज लम्बी और छ गजी चौडी है। इस्के बाजूदार एक सुप्रकाशित कमरा बनाया गया है जिसमे प्रवेश पानी मे होकर किया जाता था परन्तु पानी इसमे नही जाता है। इसमे 10–12 आदमी थी। हकीम अली ने कुछ नकद और जवाहरात भेट किये जिसका उसने सग्रह कर रखा था। कमरे को देखने के बाद और जब वहा कई दरबारी चले गये तो मैने उसका मनसब 2 हजार कर दिया फिर मैं महल को लौट आया। रविवार 4 शाहबान को खानखाना को एक जडाऊ तलवार एक खिलअत और एक खासा हाथी देकर दक्षिण मे अपना कर्तव्य पालन करने के लिए विदा किया। राजा सूरजसिह वहा उसके साथ था उसका मनसब भी 3 हजार जात और 2 हजार सवार कर दिया गया।

गुजरात का प्रबन्ध

मुझसे निवेदन किया गया कि गुजरात मे अहमदाबाद के लोगो पर मुर्तजा खा के भाई और नौकर अत्याचार कर रहे है ओर वह अपने रिश्तेदारो को और साथियो को पूरी तरह रोकने मे असमर्थ है इसलिये मैंने यह सूबा उससे लेकर आजम खा को दे दिया और यह निश्चय हुआ कि आजम खा तो दरबार मे रहे और उसका ज्येष्ठ पुत्र जहागीर कुली खा को इस कार्य के लिए गुजरात जावे। जहागीर कुली खा को 3 हजार जात और 2500 का मनसब दिया गया। यह आदेश दिया कि मोहनदास दीवान ओर मुरादबेग हमजानी बख्शी के साथ वह इस प्रान्त का कार्य करे।

खुसरो के पुत्र जन्म—बुद्धवार तारीख 4 जिहिजा को खुसरो के खान आजम की पुत्री से पुत्र जन्म हुआ। मैंने उसका नाम बुलन्द अख्तर रखा।

चतुर्थ नव वर्ष का उत्सव

ससार को प्रकाशित करने वाला सूर्य शनिवार 14 जिहजा 1017 हिजरी (21 मार्च 1609 ई.) को मेष राशि मे आया। नये वर्ष के दिवस ने ससार मे शुभ आनन्द व्याप्त कर दिया। शुक्रवार 5 मोहर्रम 1018 हिजरी को हकीम अली का देहान्त हो गया वह अद्वितीय हकीम था। उसने अरबी विज्ञान पढकर बडा लाभ प्राप्त किया था और मेरे पूज्य पिता के समय मे उसने अवि सिन्ना के नियमो पर टीका लिखी थी। उसमे समझ की अपेक्षा परिश्रम शीलता अधिक थी और उसके स्वभाव की अपेक्षा उसकी आकृति अधिक सुन्दर थी। उसकी बुद्धि की अपेक्षा उसकी विद्या अधिक अच्छी थी। सब बातो पर विचार करके यह कहा जाता है कि इसका हृदय दुष्ट था और उसका स्वभाव कुत्सित था। 20 सफर को मैने मिर्जा बर्खुदार को खान आलम की उपाधि दी। सोमवार 19 रबीउल अव्वल को मेरी वार्षिक चन्द्र तुला की गई यह उत्सव मेरी पूज्य माता के महल मे बनाया गया। धनराशि का कुछ भाग स्त्रियो मे बाट दिया गया जो उस दिन वहा थी।

परवेज को दक्षिण भेजा

यह प्रत्यक्ष हो चुका था कि सूबा दक्षिण के मामलों को चलाने के लिए वहा किसी शहजादे को भेजना आवश्यक है। मेरे मन मे ख्याल आया कि मेरे पुत्र परवेज को वहा से भेज दिया जावे। मैने उसका सामान पहले ही रवाना करवा दिया और फिर उसके प्रस्थान की व्यवस्था की। मैने महावत खा को जिसको विद्रोही राणा के विरुद्ध सेना का नेतृत्व दिया था दरबार मे बुलाया क्योकि दरबार मे कुछ मामलो की व्यवस्था करनी थी उसके स्थान पर अब्दुल्ला खा को नियुक्त किया गया और उसको फिरोज जग की उपाधि से सम्मानित किया। उस सेना के मनसबदारो को मैंने अब्दुर्रजाक बख्शी के द्वारा आदेश भेजा कि वह उपरोक्त खान के आदेशो के अनुसार काम करे। यदि वह किसी को दोषी माने तो उस दोष को स्वीकार किया जाये। यदि वह किसी को धन्यवाद दे तो धन्यवाद स्वीकार किया जाये। इसी मास की छ तारीख को मैंने खान आजम के पुत्र खुर्रम को 2 हजार जात और 1500 सवारो को मनसब देकर सोरठ के प्रान्त में भेजा। यहा तक जिसको काठियावाड मे जूनागढ कहते है। मैने हकीम सदरा को मसी–उल–जमा की उपाधि दी

और 500 जात तथा 300 सवार का मनसब दिया। 16 तारीख को राजा मानसिह के लिए एक जडाऊ तलवार भेजी। 22 तारीख को दक्षिण की सेना के खर्च के लिए 20 लाख रुपये जिसका नेतृत्व परवेज को दिया था भेजे। परवेज के खर्च के लिए 5 लाख रुपये अलग भेजे। तारीख 25 बुधवार को उसका पुत्र जहादार जिसको कुतुबुद्दीन खा कोका के साथ बगाल के शासन के लिए नियुक्त किया गया था मेरी सेवा मे आया। वास्तव मे यह प्रकट हुआ कि वह जन्मजात मूर्ख है। मै दक्षिण की तैयारियो मे लगा हुआ था इसलिए वह जुमादल आखिर को मैने अमीर–उल–उमरा को भी उस काम के लिए नियुक्त किया और उसको एक घोडा देकर सम्मानित किया। जगन्नाथ के पुत्र करमचन्द को पदोन्नति करने के बाद 2 हजार जात और 1500 सवार का मनसब दिया और उसे परवेज के साथ भेजा।

राणा के विरुद्ध सेना

इसी मास की 4 तारीख को राणा के विरुद्ध भेजी हुई सेना की सहायतार्थ अब्दुल्ला खा ने नेतृत्व मे 370 अहदी नियुक्त किये गये। सरकारी तबेलो से 100 घोडे इस हेतु भेजे गये कि वे मनसबदारो और अहदियो मे बाट दिये जावे। 17 तारीख को मैंने 60 हजार रुपये के मूल्य की एक लाल परवेज को दी और दो मोती खुर्रम को दिये। प्रत्येक मोती का मूल्य 40 हजार रुपये था। सोमवार 28 तारीख को जगन्नाथ का मनसब 5 हजार जात और 3 हजार सवार कर दिया गया। रजब मास की 8 तारीख को जयसिह का मनसब बढाकर 4 हजार जात और 3 हजार सवार कर दिया और उसको दक्षिण मे सेवार्थ भेज दिया। बृहस्पतिवार तारीख 9 को शाहजादा शहरयार गुजरात मे मेरी सेवा मे आया। मगलवार तारीख 4 को मैने पुत्र परवेज को दक्षिण देश को विजय के लिए रवाना किया। उसको एक खिल्लत एक खाशा घोडा, एक तलवार, एक जडाऊ खजर देकर सम्मानित किया। दक्षिण में परवेज की सेवा करने के लिए मैंने 1000 अहदी नियुक्त किये उसी दिन अब्दुल्ला खा का निवेदन पत्र आया कि मैंने विद्रोही राणा को पीछा करके पर्वतीय और दुर्गम देश मे धकेल दिया है और उसके कई हाथी घोडे पकड लिये। जब रात हो गई तो वह बडी कठिनता से अपने प्राण बचाकर भाग गया। अब उसकी स्थिति कठिन हो गई है इसलिए शीघ्र ही या तो उसको पकड लिया जावेगा या मार डाला जावेगा। मैंने इस खान का मनसब बढ़ाकर 5 हजार जात कर दिया गया और मोतियो की एक लड़ जिसका मूल्य 10 हजार रुपया था परवेज को दी।

मैंने खानदेश और बरार परवेज को दे दिये थे। अब मैंने असीरगढ़ भी उसको दे दिया और 3000 घोड़े अहदियों और मनसबदारों या जिनको यह देना चाहे उनके लिए भेजे। 26 तारीख को सेफखां बारहा को 2500 जात ओर 1350 सवार का मनसब दिया और सरकार हिसार का फौजदार बनाया। 4 शाहवान को वजीरखां को एक हाथी दिया गया।

नशीली चीजें बन्द— शुक्रवार तारीख 22 को मैंने आज्ञा दी कि भंग. और बूजा हानिप्रद हैं। इसलिए उनको बाजार में नहीं बिकने दिया जावे। यह आदेश दिया कि जुआ खेलना बन्द कर दिया जाये और इस आदेश का पालन कठोरता से किया जाये। रमजान मास की 2 तारीख को इस्लाम खां और गियासखां को पदोन्नति करके 1500 जात और 800 सवारों का मनसब दिया गया। फरीदून खां बरलास को 2 हजार 500 जात और 2 हजार सवार का मनसब दिया गया। जब सूर्य वृश्चिक राशि में आया जिसको हिन्दुओं में संक्रान्ति कहा जाता है तो मैंने 1000 तोला सोना और चाँदी और 1 हजार रुपये दान किये। उसी मास की 10वीं तारीख को शाहबेग यूजी और सलामउल्ला अरब को जो दारफूल के शासक का दामाद है एक हाथी दिया गया। शाह अब्बास को उसके प्रति शंका हो गई थी इसलिए मेरी सेवा में आ गया था। मैंने उसकी परवरिश और उसको 400 जात और 200 सवारों का मनसब दिया। मैंने दक्षिण में परवेज की सहायतार्थ फिर 193 मनसबदारों और 46 अहदियों की सेना भेजी। दरबार के नौकरों के द्वारा 50 घोड़े परवेज को और भेजे।

रविवार 15 तारीख को मैंने 50 हजार रुपये साचक के रूप में मुज्जफर हुसेन मिर्जा के मकान पर उसकी लड़की के लिए भेजे। मैंने अपने पुत्र खुर्रम के लिए इस लड़की की मांग की थी। मुज्जफर हुसेन मिर्जा सुल्तान हुसेन मिर्जा का पुत्र, बदराम मिर्जा का पौत्र और शाह इस्माइल सफवी का प्रपौत्र था। इसी मास की 17 तारीख को मुबारकखां सर्वानी को एक हजार जात और तीन सौ सवार का मनसब दिया गया। उसको पांच हजार रुपये और हाजी—बी. उजबेग को चार हजार रुपये नकद भी दिये। 22 तारीख को शहरयार को एक लाल और एक मोती दिया। एक लाख रुपये उन ऐमाक (खाश रिशाला) के निर्वाह के लिए दिये गये जिनको दक्षिण में सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था। दो हजार रुपये फरुखबेग चित्रकार को दिये जो अपने समय में अद्वितीय था। बाबा हसन अब्दाल पर खर्च करने के लिए चार हजार रुपये भेजे गये। हजरत शेख सलीम की निधन तिथि पर उसके मजार पर खर्च करने के लिए मुल्लाअली अहमद मोहरकन और मुल्ला अंजबीदान शिराजी को एक हजार रुपये दिये गये। मुहम्मद हुसेन लेखक

को एक हाथी प्रदान किया गया। ख्वाजा अब्दुलहक अन्सारी को एक हजार रुपये दिये। मैंने दीवान लोगो को आदेश दिया कि मुर्तजाखा का मनसब पांच हजार जात और पांच हजार सवार करके उसको एक जागीर दी जावे। मैंने सरकार आगरा के कानूनगो बिहारीचन्द को आदेश दिया कि आगरा के जमीनदारों से एक हजार प्यादे और जरूरी सामान परवेज के पास दक्षिण में भेज दिया जावे। प्यादो का मासिक वेतन निश्चित कर दिया जावे। परवेज के खर्च के लिए मैंने पांच लाख रुपये और मजूर किये। बृहस्पतिवार चार सव्वाल को इस्लामखां का मनसब 5 हजार जात ओर 5 हजार सवार कर दिया गया। अबुलवलीबेग उजबेग को 1500 जफरखा को 2500 का मनसब दिया। मिर्जा शाहरुख के पुत्र बदी–उल–जमान को दो हजार रुपये और पठान मिस को एक हजार रुपये दिये। मैंने आदेश दिया कि इन सबका पद 3 हजार से ऊँचा कर दिया गया है इसलिए इनको नक्कारे भी दिये जावे। मेरी तुला मे से 5 हजार रुपये और बाबा हसन अब्दाल ने एक पुल बनाने के लिए और एक इमारत खडी करने के लिए हकीम अब्दुल फतह के पुत्र अबुल को सौपे गये ताकि वह परिश्रम करके पुल और इमारत को ठीक करवा दे। शनिवार तारीख 13 को जब चार घडी दिन शेष था तो चन्द्रग्रहण शुरू हो गया धीरे–धीरे सारा चन्द्रमा ढक गया और यह रात्रि की पाच घडी तक रहा। इसके अशुभ फल के निवारणार्थ मेरी स्वर्ण तुला, चांदी तुला, बीग तुला की गई और दान में सब प्रकार के पशु जैसे–हाथी, घोडे आदि दिये गये। इन सबका मूल्य मिलकर 15 हजार रुपये होता था मैने आदेश दिया कि ये सुपात्रों और निर्धनों में बांट दिये जावें। 25 तारीख को उसके पिता की प्रार्थना स्वीकार करके मैंने रामचन्द्र बुन्देला की लडकी को अपनी सेवा मे ले लिया।

खानखाना का पुत्र– मैंने सुजातखां दखनी को 2 हजार रुपये दिये। उक्त मास की 6 तारीख को परवेज के बुरहानपुर पहुचने से पहले खानखाना और अमीरों का प्रार्थना पत्र आया कि दखनी लोग एकत्रित होकर गड़बडी मचा रहे है। जब मुझे पता लगा कि यद्यपि परवेज को इस कार्य के लिए नामांकित कर दिया है और उसके साथ सेना भी रवाना कर दी है परन्तु इनको समर्थन और सहायता की आवश्यकता है। तब मुझे ख्याल आया कि स्वयं मुझे ही दखिन जाना चाहिए और अल्लाह के अनुग्रह से मुझे स्वयं इस मामले को देखकर मुझे अपना सन्तोष करना चाहिए।

जहांगीर को सलाह–इसी बीच से आसिफ खां का प्रार्थना पत्र आया कि मेरे वहां (दक्खिन) जाने से राज्य का हित होगा। बीजापुर के आदिल खा ने भी एक दरख्वास्त भेजी थी "यदि किसी एक विश्वसनीय दरबारी को

मेरे पास मिलने के लिए भेजा जाए और उससे मै अपनी इच्छाए और मागे कह सकू और वह दरबारी फिर बादशाह से निवेदन करें तो आशा है कि मुझे (सुल्तान बीजापुर) दास को लाभ होगा"। इसलिए मैने अमीरो और राजभक्त लोगो से सलाह ली और उनसे कहा कि जो भी उनके दिल मे हो वह बात निवेदन करे। मेरे पुत्र खानजहा ने निवेदन किया कि दक्खिन की विजय के लिए इतने अमीर भेजे जा चुके है कि स्वय मेरे जाने की आवश्यकता नही है। यदि "मुझे आदेश दिया जायेगा तो मैं शाहजादे की सेवा मे पहुच जाऊगा और ईश्वर ने चाहा तो मै इस कर्तव्य को पूरा करके बादशाह की सेवा करूगा"। राजभक्त लोगो ने यह बात पसन्द की। मै खा से जुदा नही होना चाहता था परन्तु मामला महत्वपूर्ण था। इसलिए आवश्यकतावश मैंने उसको अनुमति देकर आदेश दिया कि सब मामलो की व्यवस्था होते ही वह अविलम्ब लौट आवे और उस (दक्खिन) देश मे एक वर्ष से अधिक न ठहरे। मगलवार 17 जोकदा को वह रवाना हो सकता था। मैने एक सुनहरी खिलअत एक खासा जडाऊ जीन वाला घोडा, एक जडाऊ तलवार और एक खाशा हाथी उसकी भेट किया। मैने उसको एक तूमानतुग (याक की पूछ का झडा) भी दिया। मैने खानजहा के साथ जाने के लिए फिदा खा को आदेश दिया। वह मेरा स्वामी भक्त सेवक था उसको एक खिलअत ओर घोडा दिया और 1 हजार जात और 400 सवार का मनसब दिया। मै यह भी चाहता था कि यदि आदिल खा के पास उसकी प्रार्थनानुसार किसी को भेजने की आवश्यकता हो तो इस (फिदाखा) को भेजा जा सके। लकू पडित स्वर्गीय बादशाह अकबर के समय मे आदिल खा की भेट लाया था। मैने उसको भी खानजहा के साथ जाने की अनुमति दे दी और उसको विदाई मे एक घोडा, एक खिलअत और रुपये दिये। राणा के पीछे धकेलने के लिए अब्दुल्ला खा के साथ जो अमीर और सैनिक नियत किए गये थे उनमे राजा वीरसिह देव, सुजातखा, राजा विक्रमाजीत और अन्य लोग थे। इनमे प्रत्येक को पाच हजार सवार दिये और आदेश दिया कि वह खानजहा की सहायता करे। मैने मुत्तामत खा को एक घोषणा करके खानजहा के साथ उज्जैन भेजा कि उसको सजावल (प्रेरक) नियुक्त किया गया है। महले के लोगो मे से मैने उनको 7 हजार सवार दिये। इनमे सेफखा बारहा, हाजी–बी–उजबेग, सलामउल्ला, आबजोमुबारक अरब के पुत्र का भतीजा था और जूतरा तथा दारफुल जिसके अधीन न थे इन सबको और दूसरे मनसबदारो और दरबारियो को भेजा। विदा करते समय इनमे से प्रत्येक की पदोन्नति की गई और उनके खर्चे के लिए रुपये दिये गये। मुहम्मद बेग को बख्शी फोज बनाकर 10 लाख रुपये दिये। परवेज के लिए मैने एक खासा घोडा और खानखाना

और तथा दूसरे अमीरो के लिए जो उस सूबा मे नियुक्त किये गये थे खिलअत भेजी।

किसानों को क्षति से बचाना–इन सब मामलो की व्यवस्था करने के बाद मै शिकार के लिए नगर से रवाना हुआ फिर मीर अली अकबर को 1000 रुपये दिये। रबी की फसल आ चुकी थी और इस बात का भय था कि सेना की कूच से प्रजा की फसल को हानि होगी इसलिए मैंने कुछ लोगो को आदेश दिया कि प्रत्येक मजिल पर देखा जाए कि लोगो की क्या क्षति हुई है और उनका क्षतिपूर्ति की जाए। मैने इस कार्य के लिए एक कारीसाउल (क्षति देखने) वाला पहले ही नियुक्त कर दिया था फिर भी यह व्यवस्था की गई। इस अफसर के साथ खेतो की रक्षा के लिए कुछ अहदी भी थे। मैंने खानखाना की पुत्री को जो दानियाल की पत्नी थी 10 हजार रुपये दिये और 1 हजार रुपये खर्च के लिए अब्दुर्रहीम खर को दिये। मिर्जा शाहरुख के पुत्र बादी–उल–जमा को 1 हजार जात और 500 सवार का मनसब देकर खर्च के लिए 5 हजार रुपये दिये और उसको दक्खिन मे सेवार्थ खानजहा के पास भेजा।

22 तारीख को मै एक नीलगाव के गोली मारने वाला था कि अचानक कहीं एक जिलोवार (सईस) और दो कहार सामने आये और नीलगाव भाग गया। मैंने क्रोघ मे आकर आदेश दिया कि सईस को कहीं मार दिया जावे और कहारो के पैर काटकर गधो पर बिठा कर सारे शिविर मे धुमाया जावे। ताकि फिर किसी को ऐसी भूल करने का साहस न हो इसके बाद मैं घोडे पर सवार हुआ और बाजो के द्वारा शिकार जारी रखा फिर अपने मुकाम पर आ गया।

बुघवार छ हिज्जा को मुईजुलमुल्क जिसकी विद्रोही राणा के विरुद्ध बख्शी फौज बनाकर भेजा गया था दु खी और रोगी होकर मेरी सेवा मे आया। उपरोक्त मास की चौहद तारीख को अब्दुर्रहीम खर (गधा) के सब अपराध क्षमा करके उसे 100 का जात और 90 सवार को मनसब दिया और कश्मीर के बख्शी के साथ जाने का आदेश दिया। उसका हुक्म था कि किलिज खा के सैनिको की और जागीरदारो की तथा सवारो की गणना करके देखे कि वे सेवा करते हैं या नहीं और उनकी सूची भेजे। कुतुबदीन खा का पुत्र किश्वर खा रोहतास दुर्ग से आया और मुझे सलाम करने का उसने सौभाग्य प्राप्त किया।

राज्याभिषेक के बाद पांचवें वर्ष का उत्सव

रविवार चौबीस जीहिज्जा (बीस मार्च 1610) दोपहर और तीन घड़ी के पश्चात सूर्य ने मेष राशि में प्रवेश किया और इस शुभ मुहर्त में नए वर्ष के उत्सव का परगना बारी के बाकमल नामक गांव में व्यवस्था की गई और मेरे पूज्य पिता के नियमानुसार मैं तख्त पर बैठा। उस दिन प्रातः काल नए वर्ष के दिन का आरम्भ था। जिससे संसार प्रकाशित हो गया तद्नुसार मेरे राज्याभिषेक के पांचवे वर्ष के फरवरदीन मास की एक तारीख थी मैने सब लोगो को निमंत्रित किया और दरबार के सामन्तो और सेवकों ने मुझे सलाम करने का सौभाग्य प्राप्त किया। कुछ सरदारों की भेंट मेरे सामने प्रस्तुत की गई। खान–ए–आजम ने एक मोती दिया जिसका मूल्य चार हजार रुपए था। मीरान सदरजहान ने अट्ठाईस सिकरे (शनि) और अन्य भेंट दीं। महावत खा दो योरोपीय बक्स लाया। जिनकी बाजुए काच की बनी हुई थी। जिसके कारण अन्दर रखी हुई चीज बाहर से नहीं दिखाई देती थी। यह इस ढंग से बने हुए थे कि यह मालूम होता था कि उनके अन्दर कुछ नहीं है। ईश्वर खां 22 नर और मादा हाथी लाया। इसी प्रकार दरबार के प्रत्येक सेवक ने मेरे सामने भेंटें प्रस्तुत कीं। फतह–उल्ला शरबतची के पुत्र नसरुल्ला के सुपुर्द ये सब भेटे की गई। सारगदेव को दक्खिन की विजयी सेना के पास मेरे आदेश पहुचाने के लिए नियुक्त किया गया था। मैंने परवेज और प्रत्येक अफसर को तबर्रुक (यादगार) भेजे। गाजी खां बदख्शी का पुत्र हुसामुद्दीन दरवेश बनकर एकान्त मे रहने लगा था। उसको एक हजार रुपए और एक दुशाला भेजा गया। नए दिन के आरम्भ के एक दिन बाद मैं तख्त पर बैठा और फिर शेर की शिकार के लिए रवाना हो गया। दो नर और एक मादा शेरनी मारे गए। जिन अहदियो ने शेरों मे घुसकर वीरता दिखाई उनको मैंने पुरस्कृत किया और उनके मासिक वेतन में वृद्धि की।

सोमवार तारीख 3 मोहर्रम पांचवे वर्ष को मैं मन्धाधर बाग में ठहरा जो आगरे के समीप है। जिस दिन नगर मे प्रवेश करने का मुहूर्त था उस दिन सबेरे जब एक पहर और दो घडी दिन चढ चुका था तो मै राज्यसिंहासन पर बैठा और घोडे पर चढकर वहा तक गया जहा आबादी शुरू होती थी। फिर वहां से मैं हाथी पर बैठा ताकि दूर और निकट से आए हुए लोग मुझे देख सके। मैं मार्ग के दोनों ओर रुपया उछालता जाता था। ज्योतिषियों के बतलाए हुए मुहूर्त में मध्यान्ह के बाद मैंने बधाईया प्राप्त करते हुए और आनन्द लूटते

हुए शाही महल में प्रवेश किया। शुक्रवार सात तारीख को खम्बात और सूरत के बन्दरगाह से मुकर्रब खा ने आकर मेरी सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया वह अपने साथ रत्न जटित चीजें योरोप में बने हुए सोने और चांदी के पात्र अन्य सुन्दर और असाधारण भेटे, हब्शी दास–दासी लाया। मैंने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के वशज हुसैन को एक हजार रुपए दिए यह राशि प्रति छः मास में दी जाती थी। खानखाना ने उल्ला मीर अली के हाथ की लिखी हुई युसूफ ओर जुलेखा नामक सचित्र पुस्तक सुनहरी जिल्द वाली जिसका मूल्य एक हजार मौहर था मुझे भेट स्वरूप भेजी उसके वकील मासूम ने यह पुस्तक लाकर मुझे दी। आज याम्योत्तर का दिन था और नये वर्ष के उत्सव का समापन था। अब तक प्रति दिन दरबार के अमीर और सेवक मेरे सामने भेटे प्रस्तुत किया करते थे जो कोई दुर्लभ वस्तुए मुझे अच्छी लगती थी उनको मै स्वीकार करता था और शेष वापिस कर दिया करता था। वृहस्पतिवार तारीख 13 तद्नुसार 19 फर्वरद्दीन जो सूर्य का याम्योत्तर दिवस है और सुख और हर्ष का समाधान है। मैंने आदेश दिया कि विविध प्रकार के मादक पेयो द्वारा लोगो का मनोरजन किया जाए। दरबार के अमीरो ओर सेवको के लिए आदेश किया कि प्रत्येक व्यक्ति को जो पेय पसन्द हो पीये। बहुत सो ने मद्य पिया और कुछ लोगो ने मुफर्रीह (हर्षोन्मादक) का प्रयोग किया कुछ लोगो ने अफीम खाई। यह उत्सव सफलतापूर्वक हो गया जहागीर कुली खा ने गुजरात से एक चादी का राजसिहासन भेजा। इसकी आकार और शैली नई प्रकार की थी वह मुझे भेट की गई। महादसिह को एक झण्डा दिया गया। मेरे राज्यकाल के आरम्भ में मैंने बार बार आदेश दिया था कि कोई व्यक्ति ख्वाजे सरे न बनावे और न उन्हे बेचे या मोल ले। जो कोई ऐसा करेगा उसको अपराधी माना जाएगा। इस समय अफजल खां ने सूबा बिहार से कुछ ऐसे अपराधी दरबार मे भेजे जो निरन्तर इस महा अपराध में लगे हुए थे। मैंने इन विचार शून्य लोगो को आजन्म कारावास का दण्ड दिया।

कव्वालों का दृश्य–12 तारीख की रात्रि को मैने असाधारण और विचित्र घटना देखी, दिल्ली के कुछ कव्वाल मेरी विद्यमानता में गाने गा रहे थे सईद दिशा में धार्मिक नृत्य कराकर हंसा रहा था। गाने की टेक अमीर खुसरो की निम्नलिखित शेर थी–

हरकौमी रास्तराही दीनी व किब्लागाही।
मनकिब्ला रास्त करदम बरसिम्त कुज कलाही।।[1]

---

1. प्रत्येक काम का सीधा मार्ग और पूजाग्रह (किब्ला) उधर है जिधर टेढ़ी टोपी वाला है।

मैंने पूछा कि अन्तिम मिसरे का क्या अर्थ है। मुल्ला अली अहमद सम्मुख आया यह मौहर बनाने वाला था और अपने समय में अपने कार्य में बड़ा दक्ष माना जाता था। इसको खलीफा की उपाधि थी और यह पुराना सेवक था। मैं इसके पिता के पास पढा था। उस समय मैं छोटी उमर का था। उसने कहा "मैंने अपने पिता से सुना है कि एक दिन शेख निजामुद्दीन औलिया अपने सिर पर टेढी टोपी लगाकर जमुना नदी के तट पर छत पर हिन्दुओं का पूजा पाठ देख रहा था। ठीक उसी समय अमीर खुसरू आया और शेख ने उससे कहा आप समूह को देख रहे है? और फिर यह मिसरा बोला–

हरकौम रास्तराही दीनी व किब्लागाही

अमीर ने आदरपूर्वक शेख का अभिवादन किया और कहा:–

मनकिब्ला रास्त करदम बरसिम्त कुजकलाही।

जब उक्त मुल्ला ने इन शब्दों का उच्चारण किया तो वह संज्ञा शून्य होकर गिर पडा उसके गिरने से डर कर मै उसके सिर के पास गया जो लोग वहां पर उपस्थित थे उनमें से अधिकांश ने सोचा कि कहीं इसके अप्समार की अचेतना तो नहीं हो गई है। जो हकीम वहा उपस्थित थे उन्होने पूछ–ताछ की और उसकी नब्ज देखी और औषधियाँ लाए तथापि, यद्यपि उन्होने बहुत हाथ पैर पीटे और प्रयास किया परन्तु वह सचेत नहीं हुआ उसने गिरते ही अपने प्राण अपने सृष्टा के सुपुर्द कर दिए थे। मैंने उसके पुत्रो को कफन और कब्र के लिए रुपये भेजे अगले दिन प्रातःकाल उसको दिल्ली भेज दिया गया और अपने पूर्वजों के कब्रस्तान में उसे दफना दिया।

शुक्रवार तारीख 21 को किश्वरखा को जो 1500 जात का मनसबदार था 2 हजार जात और उतने ही सवारों का मनसबदार बनाया गया और मेरे निजी तबेले मे से उसे एक इराकी घोडा, एक खिलअत और एक निजी हाथी जिसका नाम तख्तजीत था बख्शे गये। उच्च देश की फौजदारी देकर उसे उधर के विद्रोहियों का दमन करने के लिए भेजा गया। बायजीद मर्मकुली को एक खिलअत और एक घोडा देकर उसके भाईयों सहित किश्वर खां के साथ रवाना किया मेरे निजी तबेले मे से एक आलम गुमान नामक हाथी राजा मानसिंह को देने के लिए हबीबुल्ला के साथ भेजा गया। केशवदास मारू के लिए एक घोड़ा बंगाल भेजा गया और अबह जलाला बाद के जागीरदार अरबखां को एक हथनी दी गई। उसी समय इफतीखार खां ने बंगाल से एक दुर्लभ हाथी भेंट स्वरूप भेजा था। मुझे वह पसन्द आया इसलिए उसको अपने निजी हाथियों में रख लिया। अहमद बेग खां को

उसकी और उसके पुत्रों की अच्छी सेवा को देखकर बंगस की सेना का नेतृत्व दिया गया था। उसका प्रारम्भिक पद दो हजार जात और 1500 सवार था। अब 500 जात की उसके मनसब में वृद्धि कर दी गई। मैंने परवेज के लिए एक सोने का तख्त भेजा जिसमें रत्न जुड़े हुए थे। एक सरपेच जिसका मूल्य 2 हजार रुपया था सर बारहखां के पुत्र हबीब के हाथ बुरहानपुर खानजहां के लिए भेजा।

सन्यासी के भक्तों को दण्ड

इस समय विदित हुआ कि कमरखां का पुत्र कोकाब एक संन्यासी से बडा हिलमिल गया और उस पर सन्यासी के ईश्वर निन्दक और अधार्मिक शब्दों का बडा प्रभाव हो गया है। कोकाब एक मूर्ख व्यक्ति है। इसने नकीब खां के पुत्र अब्दुल लतीफ और शरीफ को तथा अपने चचेरे भाईयों को इस भूल में फंसा दिया है। जब इस मामले का पता लगा और उनको कुछ धमकाया गया तो उन्हें अपने भविष्य की सारी परिस्थितियां प्रकट कर दीं। यह वर्णन बडा ही ग्लानिकारक और धृणोत्पादक था। उनका दंड देना उचित समझकर कोकाब का शरीफ को कोडे लगवाये और अब्दुल लतीफ के 100 कोडे मेरे सामने लगवाये। यह विशेष दण्ड इस उद्देश्य से दिया गया था कि दूसरे अज्ञानी लोग इस प्रकार के कर्मों को और न करें। सोमवार तारीख 24 को मोअज्जम खा को दिल्ली भेजा। उधर आस पास के लोग विद्रोह करने लग गये। सूजातखां दक्खिनी को 2 हजार रुपये दिये गये। मैंने शेख हुसैन दर्शनी को कुछ फरमान दिये थे कि उन्हें बंगाल ले जाकर उस सूबा के अमीरों को दे दे। अब मैंने आदेश देकर उसको रवाना कर दिया। एक इस्लाम खा के कामों को देखकर मैंने उसको 5 हजार जात और इतने ही सवारो का मनसब दिया और एक खाश खिलअत दी। मैंने किश्वर खां को को भी खास खिलअत दी और राजा कल्याण को एक ईराकी घोडा बख्शा। इसी प्रकार अन्य अमीरों को खिलअतें और घोडे दिये। फरीदन बल्लास 1500 जात और 1300 सवारों को मनसबदार था। मैंने अब 2 हजार जात और 1500 सवारों का मनसबदार बना दिया।

अशुभ योग— रविवार तारीख 7 को नक्षत्रों का एक अशुभ योग (किरान–ए–नहसीन) हुआ। मैंने सोना, चांदी अन्य धातुएं कई प्रकार के अन्न फकीरों और गरीबों को साम्राज्य के अधिकांश भागों में दिलाये। सोमवार की रात्रि में तारीख 8 को शेख हुसैन सर हिन्द और शेख मुस्तफा को बुलाया। यह एक प्रसिद्ध दरवेश थे और गरीबी में अपना जीवन व्यतीत करते थे। एक मण्डली का आयोजन किया गया और धीरे–धीरे यह लोग

फकीरी नृत्य करने लगे और भावातिरेक में पहुंच गये। उन्माद और प्रमोद की भी कमी नहीं थी जब यह मण्डली समाप्त हो गई तो मैंने प्रत्येक व्यक्ति को जाने की अनुमति दे दी। मिर्जा गाजी बेग तरखान ने बार-बार निवेदन किया था कि कन्धार के बन्दूकचियो के मासिक वेतन की व्यवस्था की जाए। अतः मैने आदेश दिया कि वहां लाहौर के राजकोष से 2 लाख रुपये दिये जावे।

पटना की लड़ाई

मेरे राज्यकाल के पाचवे वर्ष मे 19 उर्दीबिहिस्त तद्नुसार 4 सफर को पटना मे एक विचित्र घटना हुई। यह नगर बिहार प्रान्त की राजधानी है। इस सूबा का सूबादार अफजल खा अपनी जागीर मे चला गया जो पटना से 60 कोस दूर है और जो अभी हाल में उसे दी गई थी वह दुर्ग और नगर को शेख बनारसी और गयास जैनखानी दीवान सूबा तथा कई अन्य मनसबदारो के हवाले कर गया। उसका यह ख्याल था कि उस प्रदेश में कोई शत्रु नहीं है। इसलिए उसने इस बात की चिन्ता नही कि कि दुर्ग और नगर की रक्षा कैसे होगी। संयोगवश एक अज्ञात व्यक्ति जो उच्छ का रहने वाला था और जिसका नाम कुतुब था तथा जो राजद्रोही और बदमाश था उज्जैनियां प्रान्त मे आया जो पटना के समीप है। वह भिखारी के से कपड़े पहने हुए था और देखने मे दरवेश लगता था। वहा के लोगों से उसने जान पहचान करली। वे लोग सदैव रो राजद्रोही थे। उसने उनसे कहा कि मैं खुसरू हूं और कारागार से भाग कर आया हू। यदि तुम मेरा साथ दोगे तो मामला पूरा हो जाने पर तुमको ही मैं मत्री बनाऊगा। साराश यह है कि इन अज्ञानी लोगो को उसने अपनी ओर मिला लिया और वह माने लगे कि वह खुसरू है उन लोगों का उसने अपनी आखों के आसपास घावो के निशान बतलाये और कहा कि कारागार मे उसकी आखों पर कटोरिया चिपका दी गई थीं वे उन्हीं के निशान हैं इस प्रकार की झूठ और कपट से उसने बहुत से प्यादे और सवार इकट्ठे कर लिये उसका यह भी मालूम था कि अफजल खां पटना में नहीं है। यह मौका देखकर उसने हमला किया। रविवार के दिन जब 2, 4 धटे दिन व्यतीत हो चुका था तो नगर में आये और बे रोक टोक दुर्ग में प्रवेश किया। शेख बनारसी दुर्ग में था। इस खबर को सुनकर वह क्षुब्ध होकर वह द्वार पर आया परन्तु शत्रु ऐसी शीघ्रता से आये कि उसको द्वार बंद नहीं करने दिया। गयास के साथ वह नदी की ओर की खिडकी पर पहुंचा और एक नाव में बैठकर अफजल खां के पास गया। विद्रोही लोग

आसानी से दुर्ग मे आ गये उन्होने अफजल खा की सम्पत्ति पर और शाही कोष पर कब्जा कर लिया। कुछ बदमाश लोग जो ऐन मौके की तलाश मे रहते है और नगर मे ही और पास मे ही थे उनसे आ मिले। यह समाचार अफजल खा को गोरखपुर मे मिला। शेख बनारसी और गयास भी नदी मार्ग से उसके पास आ पहुचे। नगर मे भी पत्र आये कि एक बदमाश अपने को खुसरू कहता है वह वास्तव मे खुसरू नही है। ईश्वर की दया पर भरोसा करके अफजल खा अविलम्ब इन व्रिदोहियो के दमन के लिए रवाना हुआ। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात थी। 5 दिन मे वह पटना के समीप आ पहुचा। अफजल खा का आगमन–समाचार सुनकर विद्रोहियो ने दुर्ग एक विश्वस्त व्यक्ति के सुपुर्द किया और 4 कोस बाहर आकर उन्होने अफजल खा से मिडन्त का पुन–पुन नदी के तट पर लडाई हुई और कुछ भिडन्त के बाद विद्रोही लोग बिखर कर छिन्न–भिन्न हो गये। धबरा कर वह बदमाश कुछ लोगो के साथ फिर दुर्ग मे आया। अफजल खा उसके पीछे–पीछे था उसको दरबाजा बन्द नही करने दिया। अफजल खा के मकान मे पहुच कर उन लोगो ने उस मकान को ही किला बना लिया और 3 पहर तक लडते रहे तथा 30 आदमियो को तीरो द्वारा आहत कर दिया। जब उस (कुतुब) के साथी नर्क मे पहुच गये तो उसने असहाय होकर शरण के लिए अफजल खा से प्रार्थना की। इस मामले को समाप्त करने के लिए अफजल खा ने उसको उसी दिन मरवा डाला और उसके कुछ साथियो को कारागार मे रख दिया। यह समाचार शाही कान मे पहुचे। मैंने शेख बनारसी और गयास जनखानी के तथा दूसरे मनसबदारो को जो नगर ओर दुर्ग की रक्षा करने मे असमर्थ सिद्ध हुए उनके बाल और दाढी कटवा दी और औरतो के दुपट्टे उनके सिर पर डाल दिये तथा गधो पर बिठाकर उनको आगरा नगर के बाजारो मे घुमाया जिससे दूसरो के लिए चेतावनी हो।

सुल्तान बीजापुर के यहां राजदूत का भेजा जाना

इस समय परवेज ने और दक्खिन मे नियत किए हुए अमीरो ने तथा साम्राज्य के हितैषियों ने बार–बार प्रार्थना पत्र भेजे कि आदिल खा बीजापुरी प्रार्थना करता है कि मीर जमालुद्दीन हुसैन इजु जिसके शब्दो पर और कार्यो पर दक्खिन के सभी सुल्तानो को बडा भरोसा है उसके पास भेजा जावे तब वह उन सबसे मिलेगा और उसके मन मे भय निकल जायगा। वहा के मामलो की ऐसी व्यवस्था हो जाएगी जो आदिल खा को उचित मालूम पडेगी। अब उसमे राजभक्ति ओर सेवा का मार्ग पसन्द कर लिया है। कुछ भी हो आदिल खा को शाही कृपा की आशा दिलानी चाहिए। अब उद्देश्य की प्राप्ति के लिए

इसी मास की सोलह तारीख को मैने उपरोक्त मीर बीजापुर भेजा और उसको 10 हजार रुपए दिये।

कासिम खा का मनसब एक हजार जात व पाच सौ सवार था उसमे मैंने 500 जात और 500 सवारो की वृद्धि कर दी। मै चाहता था कि वह बगाल म अपने भाई इस्लाम खा की सहायतार्थ जावे। साथ ही बन्धु प्रदेश के जमीदार विक्रमाजीत ने आज्ञापालन ओर सेवा करना छोड दिया था अत उसको दड देने के लिए मैने राजा मानसिह के पौत्र महासिह को आदेश दिया कि वह प्रयाण करके उस प्रदेश के राजद्रोह को दमन करे और साथ ही इस राजा की जागीर का प्रबन्ध करे।

इसी मास की 20 तारीख को मैने एक हाथी, शजाअत खा दक्खिनी को दिया। जलालाबाद के सूबादार ने लिखा था कि उस स्थान के दुर्ग की दशा खराब हो गई है इसलिए मैने आदेश दिया कि उसकी मरम्मत के लिए जितने रुपये की आवश्यकता हो वह लाहौर के कोष से ले लिया जावे। बगाल मे इफ्तिखार खा ने अच्छी सेवा की थी। वहा के सूबादार के निवेदन पर मैने उसका पहिले का मनसब जो 1500 जात और 500 सवार था बढा दिया। 28 तारीख की अब्दुल्ला खा फिरोजबेग की अर्जदाश्त आई जिसमे कुछ जोशीले सेवको की सिफारिश थी। इन लोगो को विद्रोही राणा का दमन करने के लिए भेजा गया था। इस सेवा मे सबसे अधिक जोश गजनी खा जालवरी ने दिखाया था। इसलिए मैने उसके मनसब मे 500 जात और 400 सवार की वृद्धि कर दी। पहिले इसका मनसब 1500 जात और 300 सवार का था। इसी प्रकार मैने इस सब लोगो की सेवा के अनुसार पदोन्नति की।

इलाहाबाद से तख्त मंगवाया—दौलत खा को मैने इलाहाबाद भेजा था कि वहा से वह काले पत्थर का तख्त ले आये। मीहर मास की 4 तारीख को तद्नुसार 15 सितम्बर 1610 को वह वापिस आया और दरबार मे उपस्थित हुआ वह तख्त को सुरक्षित ले आया था। वास्तव मे यह आश्चर्यजनक पत्थर था यह बडा काला और चमकीला था। बहुत से लोग कहते है कि यह कसौटी का एक प्रकार था इसकी लम्बाई चार हाथ से किचित कम और चौडाई ढाई हाथ से किचित अधिक थी। इसकी मोटाई तीन तसु थी। (तसु 1/3 इच के बराबर होता है) मैने सग–तराशो को आदेश दिया कि इसके बाजुओ पर उपर्युक्त शेर खोद दी जावे। उन लोगो ने इसके इसी प्रकार के पाए भी लगा दिये। मै प्राय इसी तख्त पर बैठा करता था।

आलम खा ने जमानत दे दी इसलिए मैंने अब्दुर–सुभान खा को कारागार से निकाल दिया वह कुछ अपराधो के लिए कैद में रखा गया था। उसको

एक हजार जात और 400 सवार का मनसब देकर सूबा इलाहाबाद का फौजदार नियुक्त किया और इस्लाम खा के भाई कासिम खा की जागीर उसे दे दी। मैंने तरबीयत खा को सरकार अलवर की फौजदारी पर भेजा। इसी मास की बारह तारीख को खानजहा की अर्जी आई कि मेरे आदेशानुसार खानखाना महावत खा के साथ दरबार मे हाजिर होने के लिए रवाना हो गया है और जमालुद्दीन हुसैन जिसको दरबार से बीजापुर जाने के लिए नामाकित किया गया था, बुरहानपुर से आदिल खा के वकील के साथ बीजापुर के लिए रवाना हो गया है। इसी मास की 21 तारीख को मैंने मुर्तजा खा की पदोन्नति करके पजाब का सूबादार बनाया यह मेरे राज्य मे सबसे बडा सूबा है। मैने उसको एक खास दुशाला दिया। ताज खा को जो सूबा मुल्तान मे था काबुल का सूबादार बनाकर उसके मनसब मे पाच सौ सवार की वृद्धि की गई। पहिले उसका मनसब तीन हजार जात और 1500 सवार था। अब्दुल्ला खा फिरोजबेग की प्रार्थना पर राणा शकर के पुत्र के पद मे भी वृद्धि की गई।

खानखाना का आगमन– महावत खा को बुरहानपुर इसलिए भेजा गया था कि दक्खिन मे नियत किए हुए अमीरो की सेना की गणना करे और खानखाना को अपने साथ ले आवे। वह आगरे के समीप आ पहुचा तो उसने खानखाना को नगर से कुछ मजिल दूर छोडा और स्वय उपस्थित हुआ तो उसको सलाह करने का और दरबार की चौखट का चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कुछ दिन पश्चात अर्थात 12 आबान को खानखाना भी मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। कितने राजभक्त लोगो ने निवेदन किया था कि उनके विचारानुसार दक्खिन की स्थिति ठीक नही है। उनका कथन सच होगा फिर भी मै खानखाना से अप्रसन्न हुआ क्योकि मैंने इससे पहले उस पर बडी कृपा की थी ओर मेरे पिता की भी उस पर कृपा थी परन्तु इसका उस पर कोई प्रभाव नही हुआ इसलिए मैने इस मामले मे न्याय किया। पहले दक्खिन मे सेवा करने के लिए उसको एक आदेश दिया गया था कि वह सुल्तान दरवेश की सेवार्थ उधर कूच भी कर गया था। बुरहानपुर पहुचने के पश्चात उसने उपयुक्त समय देखने की ओर प्रयाण के लिए अनुपयुक्त समय पर चारा और दूसरी आवश्यकताओं का प्रबन्ध किए बिना ही वह सुल्तान परवेज और उसकी सेना को घाटो पर ले गया और फिर सरदारो में परस्पर मेल मे अभाव के कारण और उसकी दगाबाजी के कारण तथा परस्पर मतभेद के कारण स्थिति इतनी बिगड गई कि एक मन अन्न के लिए बहुत बडी धनराशि देनी पडती थी। सेना की स्थिति इतनी बिगड गई थी कि कोई भी काम भली भाति नहीं होता था।

घोड़े, ऊंट और अन्य चौपाये मरते जाते थे। समय की आवश्यकता को देखकर उसने शत्रु के साथ एक प्रकर की संधि करली और सुल्तान परवेज तथा सेना को वापिस बुरहानपुर ले आया। इस कार्य का परिणाम अच्छा नहीं हुआ इसलिये साम्राज्य के सारे हितचिन्तक समझ गये कि कि मतभेद और गड़बड़ के कारण यह सब कुछ हुआ है। खानखाना ने व्यवस्था नहीं की और दगाबाजी की और हित चिन्तकों ने दरबार का ध्यान आकर्षित किया यद्यपि यह सब कुछ अविश्वसनीय जान पडता था परन्तु मेरे मन पर यह प्रभाव पड़ा और खानजहां ने भी ऐसा ही लिखा कि यह विपत्ति ओर परेशानी खानखाना के कपट से उत्पन्न हुई है। या तो यह सब कार्य उसी के अधीन छोड दिया जावे या उसको दरबार में बुलाकर मैं इस व्यक्ति (खानखाना ने खान जहां) को इस काम के लिये नियुक्त कर दूं। इसकी मैंने ही परवरिश की थी। उसकी सहायतार्थ मै 30,000 सवार दूं तो 2 वर्ष में समस्त वह समस्त शाही सूबे को जो अभी शत्रु के पास है मुक्त कर देगा और वह कन्धार (दक्षिण का) आदि अन्य सीमा स्थिति दुर्गो को दरबार के सेवकों के अधीन कर लेगा और बीजापुर को भी साम्राज्य में सम्मिलित कर लेगा। यदि इस अवधि में कानपुर आना हो तो उसको दरबार में आने से रोक दिया जावे और वह दरबार के सेवकों को अपना मुख नहीं दिखावेगा। जब सरदारों और खानखाना के परस्पर सम्बन्ध इस सीमा तक बिगड गये तो मैने समझा कि अब उसको वहा रखना वांछनीय नहीं है अतः मैंने सेना का नेतृत्व खानजहां को देकर खानखाना को दरबार में बुला भेजा। अब देखूंगा कि भविष्य में क्या होता है।

मैंने सईद अली बारहा को जो एक प्रसिद्ध नवयुवक है उसके मनसब में 500 जात और 200 सवार और बढा दिये है। पहले उसका मनसब 1000 जात और 500 सवार का था। मैंने खानखाना के पुत्र दराबखाँ को 1000 जात और 500 सवारों का मनसब और गाजीपुर सरकार की जागीर दी। इससे पूर्व सुल्तान हुसेन मिर्जा सफवी कन्धार के शासक के पुत्र मिर्जा मुज्जफर हुसेन की पुत्री की सगाई मेरे पुत्र सुल्तान खुर्रम से हो चुकी थी। अब 12 आबान को विवाहोत्सव की व्यवस्था की गई तो मैं बाबा खुर्रम के निवास पर गया ओर रात भर वहीं रहा मैंने अधिकांश अमीरों को खिलअतें दी। ग्वालियर के दुर्ग में कई लोग कैद थे उनमें से कुछ को छोड दिया इसमें हाजी मिरक भी था। इस्लाम खाँ ने 100,000 रु. खालसा के परगनों से वसूल कर लिए थे वह सेना का नेता था इसलिए यह राशि मैंने उसको भेंट स्वरूप दे दी कुछ सोना, चाँदी और प्रत्येक प्रकार के कुछ जवाहरात व अन्य विश्वसनीय लोगों को सौंपकर नैंने आदेश दिया कि आगरा नगर के

गरीब लोगों को बांट दिया जावें उसी दिन खानजहाँ ने सूचना भेजी कि खानखाना के पुत्र ईरज ने शाहजादे से छुट्टी ले ली है। और आदेशानुसार उसको दरबार में भेज दिया गया है। अबुल फतह बीजापुरी के विषय में जो आदेश हुआ था उस बारे में खानजहाँ ने लिखा कि वह अनुभवी व्यक्ति है और उसको रवाना करने से दक्षिण के अन्य सरदारों को निराशा होगी इसलिए उस (अबुल फतह) को वहीं निगरानी में रख लिया गया है। एक यह आदेश दिया गया कि राय काला का पुत्र केशवदास जो परवेज की सेवा में है उसको रवाना करने में कोई अड़चन हो तो भी खानजहाँ उसको रवाना कर दे। चाहे उसकी इच्छा हो या न हो, जब परवेज को यह बात मालूम हुई तो उसने खानजहां से कहा मेरी ओर से तुम निवेदन करना कि मैं अपने पिता की सेवार्थ अपने प्राण भी दे सकता हूँ। क्योंकि वह मेरे लिए प्रत्यक्ष ईश्वर है फिर केशवदास का अस्तित्व या अनस्तित्व क्या चीज है कि मैं उसको भेजने में रोक लगाऊँ जब बाहशाह मेरे विश्वस्त सेवकों में से किसी को बुलाते हैं तो उसके मन में और अन्य लोगों के मन में निराशा और अशान्ति उत्पन्न होती है और जब इस मुल्क में यह बात फैल जाती है कि लोग समझते हैं कि बादशाह का उन पर अनुग्रह नहीं है। शेष बादशाह के अधीन है।

अहमदनगर का दुर्ग

मेरे स्वर्गीय भाई दानियाल के प्रयास से अहमदनगर का दुर्ग विजयी राज्य के कब्जे में आ गया था और अब तक इस दुर्ग को संरक्षण ख्वाजाबेग मिर्जा सफवी के हाथ में था यह शाह तैमास्प का रिश्तेदार था। जब दक्खिन के विद्रोहियों के उत्पात बहुत बढ़ गये और उन्होंने उस दुर्ग को घेर लिया तो सफवी ने दुर्ग की रक्षा में और अपने कर्तव्य का पालन करने में कोई कमी न रक्खी बुरहानपुर में खानखाना अमीर और अन्य सैनिक नेता परवेज के पास से और विद्रोहियों को खदेड़ कर भगाने में लगे थे परन्तु उनमें मतभेद और परस्पर कलह था चारे और अन्न की बड़ी कमी थी। जिन लोगों के हाथ में यह महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था वे इस सेना को दुर्गम मार्गों पर और पहाड़ियों पर तथा घाटियों में ले गये और थोड़े से समय में ही इस सेना की दुर्गति हो गई ओर यह बेकार हो गई स्थिति इतनी बिगड़ गई और अन्न कष्ट इतना बढ़ गया कि लोग एक रोटी के लिए जान देने को तैयार थे। तब विवश होकर यह सेना वापिस मुड़ गई उसका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। दुर्ग सेना तो इस सेना से सहायता की आशा कर रही थी। जब उसने यह

समाचार सुना तो उसका साहस ओर धैर्य भग हो गया और परेशान होकर उसने चाहा कि दुर्ग को तुरन्त खाली कर देना चाहिये। जब ख्वाजा बेग मिर्जा को इस स्थिति का पता चला तो उसने लोगो को शान्त और आश्वस्त करने का प्रयास किया परन्तु उसके यथाशक्ति प्रयास करने पर भी कोई अच्छा परिणाम नही निकला अन्त मे समझौता करके दुर्ग खाली कर दिया और वह बुरहानपुर की ओर चल दिया उपरोक्त दिन को वह शाहजादे की सेवा मे आया उसके आने के विषय मे मेरे पास कई अर्जियाँ आई जिनसे स्पष्ट हो गया कि उसमे वीरता और स्वामी भक्ति की कमी नही थी। मैने आदेश दिया कि 5000 जात और इतने ही सवारो का मनसब एक जागीर उसको दी जावे। 1 तारीख को दक्षिण के कुछ अमीरो की अर्जी आई कि 22 शाहबान को मीर जमालुद्दीन हुसैन बीजापुर के लिये रवाना हो गया है। उसके स्वागत के लिये आदिल खा ने अपना वकील 20 कोस दूर भेजा था और स्वय 3 कोस दूर आकर मीर को उसी मार्ग से अपने निवास मे ले गया था।

अब शिकार करने की इच्छा मुझ मे अदम्य हो गई इसलिये ज्योतिषियो से शुभ मुहूर्त पूछा 15 रमजान शुक्रवार को जब 6 घडी रात व्यतीत हो चुकी थी और तद्नुसार मेरे राज्य काल के 5वे वर्ष का 10 अजार था तो मै शिकार के लिये रवाना हुआ और पहिले दिन नगर के निकट दहराबाग मे ठहरा। इस मजिल पर मैने मीर अली अकबर को नगर मे प्रवेश करने की छुट्टी दे दी और उसको 2 हजार रुपये तथा एक खास गरम फर्गुल दिया। मै यह चाहता था कि मेरे लोग काश्त को न रूदे। इसलिये मैने आदेश दिया कि सब लोग नगर मे ही ठहरे मेरे निजी सेवक और आवश्यक लोग ही शिकार मे जावे। नगर को ख्वाजा जहा के हवाले करके मैने उसको विदा कर दिया। 14 तारीख को सैदखा के पुत्र सादुल्ला खा को एक हाथी दिया गया। 28 तारीख तद्नुसार 21 रमजान को चवालीस हाथी मेरे समक्ष प्रस्तुत किये गये। यह कासिम खा के पुत्र हाशिम खा ने मुझ भेट स्वरूप भेजे थे। इनमे से एक अच्छा पालतू था। इसको मैने निजी हस्ती शाला मे रख लिया। 28 तारीख को सूर्यग्रहण हुआ इसके अनिष्टफल के निवारणार्थ मैने अपनी सोने और चादी की तुला करवाई। इसमे 1800 तोला सोना और 4900 रुपये। यह फल फूल और कुछ पशु आगरा के और अन्य पास के असहाय गरीब लोगो मे बाटने के लिए भेज दिये। दक्खिन के दमन के लिये मैने परवेज के नेतृत्व मे और खानखाना तथा अन्य सैनिक नेताओ की कमान मे एक सेना भेजी थी। इन अमीरो मे राजा मानसिह, खानजहा, आसफखा अमीरुल अमरा और अन्य मनसबदार थे। प्रत्येक कौम और स्थिति के लोग भी इनमे थे। इस सेना का यह हाल हुआ कि वह आधे रास्ते से ही वापिस बुरहानपुर लौट आई। सब विश्वसनीय सेवको और खबर नवीसो ने दरबार मे खबर भेजी थी

कि सेना की बरबादी के अन्य कारण भी थे परन्तु मुख्य कारण यह था कि अमीरो मे मतभेद था और खानखाना दगाबाज था। यह खबर सुनकर मेरे मन मे विचार हुआ कि खानआजम के नेतृत्व मे एक दूसरी सेना भेजी जावे जो सब कमियो को पूरा कर दे। 11 तारीख को यह कार्य खानआजम के सुपुर्द किया गया। दीवान लोगो को आदेश दिया गया कि तैयारी करके उसके शीघ्र रवाना कर दे। उसके साथ जाने के लिए मैंने खानआलम, खानबरलास, हुसेनखा तुकरिया के पुत्र यूसुफखा, अलीखा नियाजी, बाजबहादुर कलमाक और अन्य मनसबदारो को भेजा। सब मिलकर 10,000 सवार थे। मैने उसके साथ तीस लाख रुपये और कई हाथी भेजे। उसको विदा करते समय मैने उसको एक शानदार खिलअत, एक जडाऊ तलवार, एक जडाऊ जीनवाला घोडा, एक निजी हाथी और खर्च के लिये 500,000 रुपये दिये। यह आदेश दिया गया कि बख्शी खाने के लोग यह राशि उसकी जागीर से वसूल करे। उसके साथ जाने वाले अमीरो को खिलअते, घोडे और भेटो द्वारा सम्मानित किया गया। महावतखा का मनसब पहिले 4000 जात और 7000 सवार का था। उसके सवारो मे 500 की वृद्धि की गई। और उसको आदेश दिया गया कि खानआजम और इस सेना को वह बुरहानपुर ले जावे और यह पता लगाकर कि सेना का विनाश किन परिस्थितियो के कारण हुआ खानआजम की नियुक्ति का आदेश उन प्रदेशो मे सुनावे और सबको एकमत करे और उससे सलाह करे। उन प्रदेशो मे देखे कि सेना की तैयारी कैसी है और जब सब मामलो की व्यवस्था हो जाये तो खानखाना को अपने साथ दरबार मे ले आवे।

रविवार को 4 शब्वार जब सायकाल होने वाला था तो मै चीतो के शिकार मे लग गया। मैंने निश्चय कर लिया था कि इस दिन और बृहस्पतिवार को कोई जानवर नहीं मारे जायेगे। और मैं मास भक्षण नही करूगा, विशेषकर रविवार को क्योकि मेरे पूज्य पिता इस दिन का बडा आदर करते थे और उस दिन मास भक्षण नही करते थे। रविवार के दिन जानवरो की शिकार का निषेध उन्होने इसलिए कर दिया था कि रविवार को वध की विपत्ति से मुक्त रहना चाहिए। बृहस्पतिवार मेरे अभिषेक का दिन है। इसलिए शिकार मे मुझे जगल के जानवरो पर गोली या तीर नही चलाना चाहिए।

अनूपराय ने मेरी सेवा की थी और मैने स्वय देखा था कि किस प्रकार उसने अपने प्राण सकट मे डाल दिये थे। जब उसके घाव भर गये और वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ तो मैने उसको अणिराय सिहदलन की उपाधि दी। हिन्दी मे अणिराय का अर्थ है सेनानायक और सिहदलन सिहघातक को कहते हैं। मैंने उसको अपनी निजी तलवार दी और उसका मनसब बढाया।

कवि का सम्मान

इससे पहिले मैंने निशापुर वाले नाजिरी को बुलाया था। यह काव्य कला मे अन्य लोगो से बढकर था और गुजरात मे व्यापार किया करता था इस समय वह मेरी सेवा में आया और उसने अनवरी की इस कसीदे का अनुकरण किया।

बाज इंचे जवानी व जमालस्त जहारा।[1]

मेरे सामने उसने कसीदा रखा जो मेरे ऊपर लिखा गया था। मैंने उसको 1 हजार रुपये ओर 1 घोडा, 1 खिलअत इस कसीदे के लिए पुरस्कार स्वरूप दिया। मैंने हकीम हमीद गुजराती को भी बुलाया । मुरदत्त खा ने उसकी बडी प्रशसा की थी। वह मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। उसकी चिकित्सा क्षमता की अपेक्षा उसके गुण और शुद्धता अधिक बढे हुए थे। वह थोडे दिन मेरी सेवा मे रहा। जब मुझे मालूम हुआ कि उसके अतिरिक्त गुजरात मे दूसरा हकीम नही है और वह स्वय जाना चाहता है तो मैंने उसको और उसके पुत्रो को 1 हजार रुपये और दुसाले दिये और उसके निर्वाह के लिए एक पूरा गाव दिया। वह प्रसन्न होकर अपने गाव चला गया हुसेनखा तुकरिया का पुत्र यूसुफ खा अपनी जागीर से मेरी सेवा मे आया।

ख्वाजा मुइनुद्दीन की करामात—इस दिन एक नीलगाव मारा गया था उसका वजन 9 मन और 35 सेर था। उसकी कहानी इसलिए लिखी जाती है कि इसमे विचित्रता है। पिछले 2 वर्ष से मै इस स्थान पर आया था और इधर उधर शिकार के लिए घूमा था। जब भी मै आया तभी मैंने इसके गोली मारी थी परन्तु गोली के घाव घातक नहीं थे इसलिए वह मरा नहीं भाग गया। इस बार मैने उस नीलगाव को फिर शिकारगाह मे देखा और चौकीदार ने पहिचान लिया कि वही नीलगाव है जो 2 वर्ष पहले आहत होकर भाग गया था। इस दिन मैने उस पर फिर 3 बार गाली चलाई परन्तु सब व्यर्थ हुई। फिर पैदल 3 कोस तक मैने उसका पीछा किया परन्तु बहुत प्रयास करने पर भी मै उसको नही मार सका। फिर मैने प्रण किया कि यदि यह नीलगाव मारा जायगा तो मै इसका मास पकवाकर ख्वाजा मुइनुद्दीन की आत्मा के सतोष के लिए गरीब लोगो को खाने के लिए दूगा। अपने पूज्य पिता के लिए 1 मोहर और एक रुपया देने का भी प्रण किया। इसके बाद तुरन्त ही नीलगाव थक गया और मै दौडकर उसके सिर के पास खडा हो गया और लोगो को आदेश दिया कि अल्लाह के नाम पर उसका कठ काट डाला। फिर डेरो मे जाकर मैने अपना प्रण पूरा किया। लोगो ने नीलगाव पकाया और एक मोहर और एक रुपया मिठाई पर खर्च किया। मैने

1. यह ससार की कैसी जवानी और सुन्दरता है।

गरीबो और भूखो को एकत्रित किया और मेरे सामने वह मास उसमे बटवा दिया। 2 3 दिन बाद मैने दूसरा नीलगाव देखा। मैने बहुत प्रयास किया और चाहा कि वह एक स्थान पर खडा हो जाए तो मै उसको बन्दूक मारूँ परन्तु मुझे मौका नही मिला। अपने कन्धे पर बन्दूक रखकर मैने सायकाल तक उसका पीछा किया फिर सूर्य अस्त हो गया और मुझे नीलगाव का मारने की कोई आशा नही रही फिर अकस्मात ही मेरी जबान से ये शब्द निकले "ख्वाजा यह नीलगाव भी आपके लिए है।" ज्यो ही मै बोला उसी क्षण वह नीलगाव बैठ गया मैने उसके गोली मारी और पहले नीलगाव की भाति उसका भी गला कटवाकर पकवाया और गरीबो को खाने के लिए दे दिया।

अब नगर मे प्रवेश करने का मुहूर्त निकट आ रहा था इसलिए मार्ग मे 2 मुकाम करके बृहस्पतिवार की रात तारीख 2 मोहर्रम सन् 1020 हिजरी (17 मार्च 1611) को मै अब्दुर्रजाक मामूरी के बाग मे ठहरा जो समीप ही है। वास्तव मे यह नगर के पास ही उस रात को दरबार के कई सेवक ख्वाजा जहान दौलतखा और कई अन्य व्यक्ति जो नगर मे ही रह गये थे मेरी सेवा मे उपस्थित हुए। इरडा भी आया मैने उसको सूबा दक्खिन से बुलाया था। उसको मेरी चौखट चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मै उस बाग मे शुक्रवार को भी ठहरा उस दिन अब्दुर्रजाक ने अपनी ओर से मुझे भेट दी। यह शिकार का अन्तिम दिन था इसलिए आदेश दिया गया कि इन दिनो मे कितने जानवर मारे गये यह गिनकर मुझे बतलाये जावे। शिकार का दिन आजर मास की 9 तारीख से इसफन्दारमुज मास की 29 तारीख तक था। इन दिनो 1414 जानवर मारे।

आगरा में स्वागत– शनिवार 29 इसफन्दारमुज तद्नुसार 4 मोहर्रम को हाथी पर चढकर मै नगर मे गया। अब्दुर्रजाक के बाग से महल तक एक कोस और 20 तनाव का अन्तर हे मैने लोगो को भीड मे 1500 रुपये फेके। निश्चित मुहुर्त मे मैंने महल से प्रवेश किया। बाजारो को 9 रोज के उत्सव की भाति कपडो से सजाया गया था। शिकार के समय मैने ख्वाजा जहा को आदेश दिया था कि महल मे एक ऐसा स्थान बनाया जाए जो मेरे बैठने के योग्य हो। इस ख्वाजा ने 3 मास मे एक विशाल इमारत पूरी कर दी, और बडी नम्रता के साथ अति उत्तम कार्य किया। मार्ग की धूल मे से निकलकर मैने इस स्वर्गोपम इमारत मे प्रवेश किया और देखा कि वह मेरी रुचि के अनुसार बनाई गई थी। ख्वाजा जहाँ का सम्मान किया गया और उसकी प्रशसा हुई उसकी भेटे इसी इमारत मे मेरे सामने रखी गई। इनमे कुछ मुझे पसन्द आई वह मैंने स्वीकार कर ली शेष उसी को दे दी गई।

मेरे शुभ राज्याभिषेक के छठे वर्ष का उत्सव

सोमवार को 2 घड़ी और 40 पल व्यतीत होने पर सूर्य ने मेष राशि में प्रवेश किया उस दिन 1 फरवरदीन तद्नुसार छः मोहर्रम (20 मार्च 1611) था। जब नये वर्ष के उत्सव की तैयारियां हो गईं तो मैं सौभाग्यशाली राज्य-सिंहासन पर बैठा। दरबार के अमीरों और सेवकों ने मरे समक्ष उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया और बधाइयां दी। मीरान सदर जहाँ, अब्दुल्ला खां, फिरोजजंग और जहाँगीर कुली खां की भेंट मेरे सामने रखी गई। बुधवार तारीख 8 मोहर्रम को राजा कल्याण की भेंट जो उसने बंगाल से भेजी थी मेरे सामने रखी गई। बृहस्पतिवार तारीख 9 मोहर्रम को सुजात खां और कुछ मनसबदार जो दक्षिण से बुलाए गये मेरी सेवा में उपस्थित हुए। मैंने रजाक विर्दी उजबेग को एक जड़ाऊ खंजर बख्शा। उसी दिन मुर्तजा खाँ की नए वर्ष की भेंट मेरे सामने रखी गई। उसने सब प्रकार की चीजें तैयार की थीं इनको देखकर जो मुझे पसन्द आई वह मैंने रख ली। इनमें बहुमूल्य रत्न, सुन्दर वस्त्र, हाथी और घोड़े थे। शेष मैंने वापिस कर दिये। मैंने अबुल फतह दक्खिनी को एक जड़ाऊ खंजर और मीर अब्दुल्ला को 30,000 रु. और मुक्तिमखाँ को एक ईराकी घोड़ा दिया। सुजात खां का मनसब पहले 1500 जात और 100 सवार था इसमें मैंने 500 जात और 500 घोड़े बढ़ा दिये। मैंने उसको दक्खिन से इसलिए बुलाया था कि उसको बंगाल में इस्लाम खॉ के पास भेज दूँ। वास्तव में चाहता था कि स्थाई रूप से वह इस्लाम खां का स्थान ले ले। ख्वाजा अबुल हसन ने दो लाल, एक शाही मोती और 10 अँगूठियॉ भेंट कीं। खानखाना के पुत्र इरज को मैंने एक जडाऊ खंजर दिया। खुर्रम का मनसब 8 हजार जात और 5 हजार सवार था। मैंने उसके निजी भत्ते में 2 हजार की वृद्धि कर दी। ख्वाजा जहाँ का मनसब 1500 जात और 1000 सवार था। इसमें मैंने 500 जात और 200 सवार बढ़ा दिये। 24 मुहर्रम तद्नुसार 18 फर्वरदीन को ईरान के शासक शाह अब्बास का राजदूत यादगार अली सुल्तान को मेरी सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त हुआ और उसने मेरे सामने शाह अब्बास की भेजी हुई भेंटें रखी। वह स्वर्गीय बादशाह की मृत्यु पर शोक प्रकट करने और मेरे अभिषेक पर बधाई देने आया था। वह भेंट करने के लिए अच्छे घोड़े और अच्छे वस्त्र लाया था। जब वह भेंटें दे चुका तो उसी दिन मैंने उसको 30

हजार रुपये दिये। उसने मुझे 1 पत्र दिया जिसमे शोक–सन्देश बधाइयॉ मिली हुई थी। शोक–सन्देश मेरे पूज्य पिता की मृत्यु पर था। बधाई पत्र मे उसने बडी मित्रता प्रकट की थी और मेरे प्रति सद्भावना और मित्रता प्रकट करने मे उसने कोई कमी नहीं रखी थी। इसलिए मै इस पत्र की प्रतिलिपि यहा देता हूँ।

शाह अब्बास का पत्र

"आश्चर्यजनक पुरुषो और आविष्कर्ताओ पर परमात्मा की अनुग्रह की वर्षा हो। बादशाह जहॉगीर राजसत्ता की क्यारी के समान है। वह वैभव का स्वरूप है उसमे सूर्य का सा प्रकाश है। सिकन्दर की सी महानता है वह सौभाग्य की वृद्धि करने वाला है। वह आकाश के भेदो को पहचानता है। उत्पत्ति के रहस्य को समझता है। ईश्वर करे उसकी पूर्णता बढती रहे। उसके उत्तम गुण और परोपकार का वर्णन नही किया जा सकता।

अति दूरी के कारण मै अपनी इच्छा पूरी नही कर सकता फिर भी वह मेरी अभिलाषा का किबला है, भगवान को धन्यवाद है कि हम दोनो एक है। दोनो बडे दूरी पर है परन्तु हमारी आत्माये पास–पास है। मै सदैव उसकी मित्रता चाहता हूँ। उसका सौन्दर्य वर्षो से छिपा हुआ था जो अब प्रकट हो गया है। ससार के निवासियो को उसके शासन से लाभ हुआ है और उसके छाया मे सब बराबर है हमारे पूर्वजो मे मित्रता थी वह पुन स्थापित की जा रही है जब उसके राज्याभिषेक की खबर यहाँ पहुँची तो उसके पास बधाई पहुँचाने के लिए एक राजदूत नियुक्त किया परन्तु हम अजरबेजान और शेरखा नामक प्रान्तो के मामलो मे व्यस्त हो गये और वापिस राजधानी मे नहीं आ सके। इसलिये यह बधाइयॉ भेजने मे विलम्ब हो गया। यो तो बाह्य शिष्टता मे कोई विशेष महत्व नहीं है परन्तु मित्रता प्रकट करना भी आवश्यक है। अब मुझे शाति है और मै सब व्यवस्था करके अपनी राजधानी मे लौट आया हूँ। इसलिए मैंने कमालुद्दीन–यादगार–अली जिसमे सज्जनता के सब गुण हैं जो विश्वसनीय है और सूफी धर्म का अनुयायी है उसको दरबार मे भेज रहा हूँ वह आपसे सलाम करेगा आपको सान्त्वना देगा और बधाई देगा। मुझे वापिसी की इजाजत दी जावे ताकि वे मुझे आपके स्वास्थ्य की सूचना दे मुझे आशा है कि अपनी परम्परागत मित्रता और धनिष्ठता बनी रहेगी। सर्व शक्तिमान ईश्वर कीर्तिमान शाही परिवार को शक्ति प्रदान करे और उसके वैभव की वृद्धि करे।

मेरे भाई सुल्तान मुराद और सुल्तान दानियाल को जो मेरे पूज्य पिता के समय मे ही मर गए थे लोग कई नामो से पुकारते थे मैने आदेश दिया

कि उनमे से एक को तो शाहजादा मगफूर (क्षमा किया हुआ) और दूसरे को शाहजादा मरहूम (मरा हुआ) कहा जावे। मैने इतिमादुद्दौला और अब्दुल रजाक मामूरी जो प्रत्येक पन्द्रह सौ के मनसबदार थे, 1800 के मनसबदार बना दिया और इस्लाम खानखाना के ज्येष्ठ पुत्र को शाहनबाज खा की उपाधि दी और सईदखा के पुत्र सादुल्ला खा को नवाजिशखा की उपाधि प्रदान की।

काबुल— शनिवार तारीख 2 सफी सन 1020 हिजरी को दुष्ट अहदाद ने सुना कि काबुल एक प्रसिद्ध सरदार को खो चुका है। खान दौरान छोटी श्रेणी का सरदार है और मुईजुलमुल्क थोडे से सेवको के साथ काबुल मे है। अहदाद ने इसको अपने लिए अच्छा अवसर समझकर बहुत से सवार और प्यादो के साथ काबुल पर अचानक हमला कर दिया। मुईजुल—मुल्क ने यथा शक्ति प्रयास किया और काबुलियो और अन्य निवासियो ने भी सडको पर रुकावटे डाल कर अपने मकानो को सुरक्षित कर लिया। अफगान लोग गलियो और बाजारो मे विविध दिशाओ से कुछ बन्दूके लेकर आ पहुचे। लोगो ने अपने मकानो की छतो से इन लोगो मे से अनेको को तीरो और बन्दूको से मार डाला। इसमे अहदाद का एक विश्वस्त सैनिक बारगी मारा गया। इस घटना के बाद वे लोग डरे कि सब ओर से लोग एकत्रित होकर रास्ते रोक देगे तो नगर के बाहर बचकर निकलना कठिन हो जाएगा इसलिए उनको साहस नही रहा और वे वापिस मुड गए। इन कुत्ते मे लगभग 800 नर्क मे पहुच गए और 209 जल्दी से अपने घोडो पर सवार होकर उस घातक स्थान से प्राण बचाकर भाग गए। बादअली मैदानी जो लहूगर मे था उसी दिन आ पहुचा और कुछ दूरी तक उसने उनका पीछा किया। परन्तु वे लोग उससे बहुत दूर पहुच गए थे और उसके पास आदमी भी बहुत थोडे थे इसलिए वह गपिस लौट आया। इसने आने मे बडा प्रयास किया था इसलिए उसको (अहदाद और मुईजुल मुल्क का) पदोन्नति किया गया। नाद अली एक हजार जात का मनसबदार था उसका मनसब 1500 कर दिया गया। मुईजुल—मुल्क का मनसब 1500 था जो 1800 कर दिया। फ़िर मुझे मालूम हुआ कि खानदौरान और काबुली लोग लापरवाही मे दिन व्यतीत करते है, अहदाद को वापिस धकेलने मे बहुत समय लग गया है तो मुझे ख्याल आया कि खानखाना के पास कोई काम नही है इसलिए उसको और उसके पुत्रो को इस काम पर लगा दू। इस विचार के बाद ही किलीज खा दरबार मे आया। उसको पजाब से बुलाने के लिए फरमान भेजा था। उसके चेहरे से प्रकट हुआ कि दुष्ट अहदाद को वापिस धकेलने के लिए खानखाना की नियुक्ति उसको अच्छी नही लगी। उसने वायदा किया कि वह इस कार्य

का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले सकता है। तब यह तय हुआ कि पजाब की सूबेदारी मुर्तिजा खा को दी जावे। खानखाना अपने घर पर रहे और किलीज खा को छ हजार जात और पाच हजार सवार का मनसब देकर काबुल से अहदाद को और दूसरे लुटेरो को मार भगाने के लिए नियुक्त किया जावे। मैने खानखाना को सूबा आगरे के कन्नौज और काल्पी परगनो मे जागीर दिये जाने का आदेश दिया। मै चाहता था कि वह उधर के प्रदेश के विद्रोहियो को कठोर दड दे और उनका उन्मूलन कर दे। जब मैने इन सरदारो को विदा किया तब प्रत्येक को खास खिलअते, घोडे, हाथी देकर सम्मानित किया और वे रवाना हो गये। इतिमादुद्दौला मेरा सच्चा मित्र था और पुराना सेवक था इसलिए उसको 2 हजार जात और 500 सवार का मनसब और 500 रुपये बख्शे। मैने महावत खा को दक्खिन की विजयी सेना के लिए आवश्यक तैयारिया करने के लिये और अमीरो को यह कहने के लिए भेजा था कि वे परस्पर एकता रखे। वह तीर मास की 12 तारीख तद्नुसार शरदी उस्सानी को आगरा राजधानी मे मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। इस्लाम खा का पत्र आया जिसमे लिखा था कि इनायत खा ने सूबा बगाल मे अच्छी सेवा की है। इसलिये मैने उसकी 2 हजार के मनसब मे 500 की वृद्धि कर दी। राजा कल्याण उस सूबा मे एक अधिकारी था उसके भी मनसब मे 500 जात और 300 सवारो की वृद्धि कर दी गई अब उसका मनसब 1500 जात और 800 सवारो का हो गया। हाशिम खा उडीसा मे था। उसको मैने कश्मीर की सरकार मे भेज दिया और ख्वाजा मोहम्मद हुसैन को उधर भेज दिया। आदेश दिया कि हाशिम खा आवे तब तक वही रहे। मेरे पूज्य पिता के समय मे उसके पिता मोहम्मद कासिम ने कश्मीर की विजय की थी, चीन किलीजा किलीज खा का ज्येष्ठ पुत्र था। वह सूबा काबुल से मेरी सेवा मे आया। स्वाभावित गुणो के अतिरिक्त वह खान जादा भी था इसलिये उसको खान की उपाधि दी और उसके पिता की प्रार्थना के अनुसार उसका मनसब 500 जात और 300 सवार कर दिया शर्त यह थी कि वह तीरा मे सेवा करेगा। 14 अमरदाद को पिछली सेवा। सच्चाई और योग्यता की दृष्टि से मैने इतमादुद्दौला को साम्राज्य का वजीर नियुक्त किया और उसी दिन ईरान के शासक के राजदूत यादगारअली को एक जडाऊ खजर बख्शा। अब्दुल्ला खॉ को मैने राजा के विरुद्ध सेना का नेतृत्व करने के लिये भेजा था। अब उसने वायदा किया कि वह गुजरात की ओर से दक्खिन मे प्रवेश करेगा। इसलिये मैने उसको उस प्रान्त का सूबादार बना दिया और उसकी प्रार्थना के अनुसार राणा के विरुद्ध लडने वाली सेना का नेतृत्व राजा बासू को देकर उसके मनसब मे 500 सवारो की वृद्धि कर दी। खान आजम को

गुजरात के बजाय सूबा मालवा दिया और सेना को सुसज्जित करने के लिये और सैनिक सामग्री खरीदने के लिये 4 लाख रुपये दिये। यह सेना नासिक के मार्ग से अब्दुल्ला के साथ गई थी नासिक दक्खिन प्रान्त के निकट है। सफदर खा अपने भाईयो के साथ सूबा बिहार से आया और उसको चौखट चुम्बन का सम्मान प्राप्त हुआ।

मिर्जा सुल्तान को दक्खिन से बुलाया गया था। तारीख 30 शहरी यार को वह आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। सफदर खा का मनसब बढा कर राणा के विरुद्ध लडने वाली सेना की सहायतार्थ भेजा गया। अब्दुल्ला खा बहादुर फिरोज जग ने वादा किया था कि वे नासिक के मार्ग से पास के सूबा दक्खिन मे प्रवेश करेगा। मुझे ख्याल आया कि रामदास कच्छवाह उसकी देख रेख करता रहे और उसको बिना सोचे समझे जल्दबाजी न करने दे। रामदास मेरे पूज्य पिता का सच्चा सेवक था। इस उद्देश्य के लिए मैने उस पर बडी कृपाये की और उसे राजा की उपाधि दी। जिसका उसको कभी ख्याल भी नही आया होगा। मैने उसको नक्कारे दिये और रणथम्भौर का दुर्ग भी उसके सुपुर्द कर दिया। ये हिन्दुस्तान का प्रसिद्ध दुर्ग है। रामदास को एक उच्च कोटि की खिलअत, एक हाथी और एक घोडा देकर विदा किया। ख्वाजा अबुल हसन को भी मैने प्रधान दीवान के स्थान से बदल कर सूबा दक्खिन का सूबादार बनाया क्योकि मेरे स्वर्गीय भाई दानियाल की उस सूबा से वह दीर्घ काल तक सेवा कर चुका था। मैने इतुमादुद्दौला के पुत्र अबुल हसन को इतिकाद खा की उपाधि देकर सम्मानित किया। मोअज्जम खा के पुत्रो को यथोचित पद प्रदान कर बगाल मे इस्लाम खा के पास भेजा। इस्लाम खा की प्रार्थना पर राजा कल्याण को उडीसा की सरकार के प्रशासन के लिए नियुक्त किया और उसके जात और सवार मनसब मे 200 की वृद्धि कर दी। सुजातखा दक्खिनी को चार हजार रुपये बख्शे गये। 7 तारीख आबान को मिर्जा शाहरूख का पुत्र बदिउज्जमा दक्खिन से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ।

मावरान्नहर के अमीरों का सत्कार

लगभग इसी समय मावरान्नहर मे गडबड हो जाने के कारण हुसैन की पहलवान बाबा नारसवी दरमन, बरमबी जैसे अमीर और अन्य लोग दरबार मे आये और मेरी सेवा मे उपस्थित हुए इन सबको खिलअते, घोडे, नकद मनसब और जागीरे दी गई।

दो आजर को बगाल से हाकिम खा ने आकर मेरी चौखट का चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। दक्खिन की विजयी सेना के खर्च के लिए

मैंने 5 लाख रुपये भेजे। इस सेना का नायक अब्दुल्लाखां था। यह रुपये गुजरात में अहमदाबार नगर के रूपख्वाश और शेख अनविया के द्वारा भेजे गये थे। 1 तारीख को सेमीनगर नामक गांव में मैं गया यह मेरा एक शिकारगाह है। 22 चितल मारे जिनमें से 16 मैंने और 6 खुर्रम ने मारे। मैं वहां 2 दिन ओर 2 रात ठहरकर रविवार की रात को स्वस्थ और सुरक्षित वापिस नगर में लौट आया।

शनिवार को तीसरे दिन खान आजम का पत्र आया कि आदिलखां बीजापुरी अपने अपने अपराधों से परेशान हो गया है और बादशाह की सेवा और हितैषिता में सबसे अधिक आगे है। चौदह तारीख तद्नुसार सव्वाल मास के अन्तिम दिन हासिम खां को कश्मीर जाने की इजाजत दी गई। ईरान के राजदूत यादगारअली को मैंने एक खास फरगल दिया। इतिआदखां को मैंने अपनी खास तलवार दी। जो सद् अन्दाज कहलाती थी। खान–ए–आजम के पुत्र शादमान को शादमान खां की उपाधि दी और उसका मनसब बढाकर 1700 जात और 500 सवार कर दिया उसको एक निशान भी प्रदान किया गया।

अब्दुल्ला खा फिरोज जंग के भाई सरदार खां को भी अरसलान–बी–उजबेग को जो सिविस्थान मे नियुक्त किये गये थे, निशान प्रदान किये। यह भी मैने आदेश दिया कि मीर–ए–आदिल और काजी जो करयत की कीली है मेरे सामने भूमि चुम्बन न करे। यह एक प्रकार का सिजदा है। वृहस्पतिवार 22 तारीख को मैं पुन. शिकार करने के लिए गया। वहां पास में ही बहुत से चितल इकट्ठे हो गये थे। इसीलिए इस मौके पर ख्वाजाजहा को कमारगाह तैयार करने के लिए और चारो ओर से चितलो को घेर कर उसमें लाने के लिये भेजा। एक बहमन तद्नुसार 17 जिकदा को मैने आदेश दिया कि मेरे साम्राज्य के अहमदाबाद, इलाहाबाद, लाहौर, दिल्ली, आगरा आदि बडे बडे नगरों मे बुलगूर–खाने ऐसे स्थान जहा पर पकाया हुआ खाना बाटा जाता है, गरीबो के लिए जारी किए जावे। ऐसी व्यवस्था 30 जिलो मे की गई। छः बुलगूर–खाने पहले ही जारी कर दिये गये थे अब 24 जिलों मे और जारी किये गए। चार बहमन को मैंने राजा वीरदेवसिह के मनसब मे एक हजार की वृद्धि की। उसका मनसब पहले 4 हजार जात 2 हजार सवार था मैंने उसको एक जडाऊ तलवार दी। एक खास तलवार जो शाहबच्चा कहलाती थी शाह नवाज खा को दी। 16 दसपन्दार मुज को मिर्जा शाहरूख के पुत्र बदी–उज–जमा को उस सेना में नियुक्त किया गया जो राणा के विरुद्ध लड रही थी उसके द्वारा राजा बसु के लिए एक तलवार भेजी गई।

अमीरों को हिदायतें—मुझे फिर मालूम हुआ कि सीमा स्थित अमीर लोग ऐसे मामलो मे हस्तक्षेप करते है जिनसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं हैं वे कानून और कायदो का पालन नहीं करते इसलिए मैने बख्शियो को आदेश दिया कि वह ऐसे परिपत्र जारी करे जिनका सीमा स्थित अमीर पालन करे। भविष्य मे अमीर लोग ऐसे मामलो मे हस्तक्षेप नही करे जो बादशाहो के निजी मामले है। पहली बात तो यह है कि वह झरोके मे न बैठे। अपने अफसरो और सहायको से पहरा न दिलावे और उनसे सलाम न करवाये। वे हाथियो की लडाई न करवाये, किसी व्यक्ति की आखे न फुडवाये, किसी के नाक या कान न कटवाये, किसी को बलपूर्वक मुसलमान न बनवाये। अपने सेवको को उपाधियाँ न दे। शाही नौकरो को यह आदेश न दे कि वे कुरनिश या तसलीम न करवाये और गायको से ऐसा काम न करवाये जो शाही दरबारो म करवाया जाता है। जब बाहर जावे तो नक्कारे न बजवाये। जब वे किसी को घोडा हाथी दे चाहे शाही नौकरो को दे या निजी नौकरो को दे तो वे अकुश लगवाकर हाथियो से सलाम न करवाये। जब जुलूस मे आवे तो शाही नौकरो को वे अपने साथ पैदल न चलावे। यदि वे शाही नौकरो को कोई आदेश दे तो उस पर अपनी मौहर न लगावे। इस समय आइन–ए–जहागीरी प्रचलित है।[1]

---

1 यह आइन 12 थे जो जहागीर ने बादशाह बनते ही जारी किये थे।

राज्याभिषेक के बाद सातवें वर्ष का उत्सव

मंगलवार एक फर्वरदीन जब मेरे राज्याभिषेक का 7वां वर्ष था तो 16 मोहर्म–उल–हराम (19 मार्च 1612 ई.) 1021 हिजी को राजधानी आगरा मे नये वर्ष का उत्सव मनाया गया जिससे संसार प्रकाशित हो जाता है। उपरोक्त मास की 3 तारीख वृहस्पतिवार को 4 घडी व्यतीत हो चुकी थी तो ज्योतिषियों के बतलाये हुए मुहुर्त में तख्त पर बैठा। मैने आदेश दिया था कि प्रथा के अनुसार बाजार सजाये जावें और रोज–ए–सरफ (समापन दिवस) तक उत्सव होता रहे। इन दिनों 'मे खुसरो बी–उजबेग जो उजबेग लोगों मे खुसरो किमची कहलाता है आया और उसको मेरी सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त हुआ। वह मावरान नगर का प्रभावशाली व्यक्ति था इसलिए मैंने उस पर इनायते कीं और उसको एक खिलअत प्रदान किया। ईरान के शाह के राजदूत यादगार अली को खर्च के लिए मैंने 15 हजार रुपये दिये उसी दिन अफजल खां ने सूबा· बिहार से मेरे लिए भेंट भेजी जो मेरे सम्मुख प्रस्तुत की गई। भेट मे 30 हाथी, 19 ऊँट, बगाल के कपडो के थान, चन्दन की लकडी और कुछ करतूरी. के नाम तथा सब प्रकार की वस्तुएं थी। खान दौरान की भैजी हुई भेट भी मेरे सामने रखी गई। उसने 45 घोडे, 2 ऊँट, चीनी के बर्तन आदि और काबुल और उसके आसपास मिलने वाली चीजे थी। महल के नौकरो ने प्रतिवर्ष के प्रथा के अनुसार दिन प्रतिदिन नौकरों की भेंटें भी मेरे सामने रखी। मैने उनको देखा तो जो पसन्द आई उनको रख ली और शेष वापिस लौटा दी।

बंगाल में विद्रोह और शान्ति

13 फर्वरदीन तद्नुसार 20 मोहर्रम को इस्लाम खां का निवेदन पत्र आया कि ईश्वर की कृपा से और शाही अनुग्रह के प्रभाव से बंगाल उस्मान अफगान के विद्रोह से मुक्त हो गया है। इस युद्ध की परिरिथतियों का वर्णन करनें से पूर्व बंगाल के विषय में कुछ विवरण दिया जावेगा। बंगाल एक लम्बा चौडा प्रदेश हैं। दूसरे अकलीम में इसकी लम्बाई चिटगांव से गढी तक 450 कोस और उत्तर की पहाडियों से सरकार मदारन की सीमा तक इसकी चौडाई 220 कोस है इसके भूमि कर से 60 करोड़ दाम की वार्षिक आय होती है। (यह 1 करोड 50 लाख रुपये के बराबर है) यहाँ पंहले के शासक 20,000

घोडे, 100,000 प्यादे, 1000 हाथी, 4 या 5 हजार जंगी जहाज रखते थे शेर खा के समय से उसके पुत्र सलीम खां के समय तक यह देश अफगानो के अधिकार मे था। जब हिन्दुस्तान की बादशाहत मेरे पूज्य पिता के हाथ मे आई और इसको सौन्दर्य और प्रताप प्राप्त हुआ तो उसने यहा अपनी विजयी सेना भेजी और दीर्घ काल तक उसका यह उद्देश्य रहा कि इस प्रान्त को जीता जावे। फिर साम्राज्य के प्रमुख लोगो के बडे प्रयास से यह प्रान्त दाउद खा करानी के हाथ से निकल गया यह इस राज्य का अन्तिम शासक था। यह भाग्यहीन व्यक्ति खानमजहा से युद्ध करता हुआ मारा गया और उसकी सेना निराशावस्था में इधर–उधर बिखर गई। तब से अब तक यह प्रान्त साम्राज्य के सेवकों के कब्जे मे है। अन्त मे कुछ अवशिष्ट अफगान इस देश के कोनो ओर किनारो पर रह गये थे और दूर–दूर के कुछ स्थान उनके अधिकार मे थे। फिर धीरे–धीरे ये लोग असहाय हो गये और जनता इनसे घृणा करने लगी और इन लोगो को साम्राज्य के सेवको ने पकड लिया। जब साम्राज्य का शासन ईश्वर के अनुग्रह से अल्लाह का तख्त इस विनीत सेवक के सुपुर्द हुआ तो अकबर के बैठने के बाद प्रथम वर्ष मे ही मैने राजा मानसिह को जो वहा का शासन सचालन करने के लिए नियुक्त किया गया था, दरबार मे बुला लिया उसके स्थान पर मैने कुतुबद्दीन खा को भेज दिया जो सब अधिकारियों मे मेरा सौतेला भाई की हैसियत से प्रसिद्ध था। प्रान्त मे प्रवेश करते ही वह शहीद हो गया। वहा नियत किये हुए दुष्ट लोगो मे से एक ने उसको मार डाला। मारने वाले ने अपने कर्मो का परिणाम नही सोचा और वह भी मारा गया। जहागीर कुली खा बिहार का जागीरदार और सूबादार था। उसके सामीप्य के कारण उसके 5000 जात और 5000 सवार का मनसब देकर मैने उसको बगाल जाने का और उस प्रान्त पर अधिकार करने का अधिकार दिया। मैने इस्लाम खा को जो उस समय राजधानी आगरा मे ही था बिहार जाने का और उस प्रान्त को अपनी जागीर मानने का आदेश दिया। जहागीर कुली खा को बगाल मे शासन चलाते थोडा ही समय बीता था कि वह बहुत बीमार हो गया। उस स्थान का जलवायु उसके अनुकूल नही था। धीरे धीरे बीमारी और निर्बलता इतनी बढ बई कि उसका अत हो गया। मै उस समय लाहौर मे था। यह समाचार सुनते ही मैने इस्लाम खा को आदेश दिया कि यथा सम्भव शीघ्र बगाल पहुचे इस महत्वपूर्ण कर्तव्य का पालन करने के लिए जब मैने उसको नियुक्त किया तो राज्य के अधिकाश सेवको ने उसकी युवावस्था और अनुभवहीनता की आलोचना की परन्तु मैने उसके स्वभाव की उत्तमता और उसकी स्वाभाविक योग्यता अपनी विवेकपूर्ण आख से देख ली थी इसलिए मैने इस कार्य के लिए पसन्द

किया। उसने इस प्रान्त के मामलो की इस भाति व्यवस्था की कि यह प्रान्त इस सामाज्य मे मिलाया गया तब से अब तक दरबार के किसी सेवक ने ऐसी नहीं की थी। उसका एक उल्लेखनीय कार्य यह था कि उसने विद्रोही उस्मान अफगान को निकाल भगाया। स्वर्गीय बादशाह के समय मे उस्मान के साथ शाही सेना की कई बार टक्कर हुई थी परन्तु निकाला नही जा सकता था। जब इस्लाम खा ने ढाका को अपना निवास स्थान बना लिया और उधर के आसपास के जमीदारो को अपने अधीन कर लिया तो उसको ख्याल आया कि विद्रोही उस्मान और उसके प्रान्त के विरुद्ध सेना भेजी जावे। यदि वह स्वामीभक्तिपूर्वक सेवा करने पर सहमत हो जावे तो ठीक है अन्यथा उसको दड देकर अन्य राजद्रोही लोगो की भाति समाप्त कर दिया जावे। उस समय सुजात खा भी इस्लाम खा से जा मिला। और इस सेवा की प्रमुखता उसको मिल गई अन्य कई सरकारी सेवको को उसके साथ जाने के लिये नियुक्त किया गया था इनमे किश्वर खा इफ्तिखार खा, सईद आदम बारह मुकर्रम खा का भतीजा शेख अच्छहे मौज्जम खा के पुत्र इहतिमाम खा और अन्य लोग थे वह अपने साथ कुछ अपने आदमियो को भी ले गया था। जब वृहस्पति जुपिटर शुभ कक्ष मे था तो उसने इस सेना को रवाना किया और मिर्जा मुराद के पुत्र मीर कासिम को इसका बख्शी और वाकियानवीस बनाया। मार्ग प्रदर्शन करने के लिए उसने कुछ जमींदार भी अपने साथ लिये जब मेरी विजयी सेना उस्मान के दुर्ग और प्रदेश के समीप पहुची तों उन्होने कुछ प्रगल्भ पुरुषो को उसे समझाने बुझाने और राजभक्ति का मार्ग दिखाकर विद्रोह के मार्ग स हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उसके दिमाग मे अभिमान ने घर कर लिया था और वह इस देश को छीन लेना चाहता था। इसके अतिरिक्त और भी कल्पनाये उसके मस्तिष्क मे भरी हुई थी इसलिए उसने इस सुझावो को नही माना और लडने के लिये तैयार हो गया। रणभूमि एक नाले के तट पर थी इस जगह पूरा दलदल था रविवार (12 मार्च 1912) तद्नुसार 9 मोहरर्म को सुजादु खा ने लडाई का उपयुक्त समय देखकर अपनी सेना जमाई और वह लडने के लिए तैयार हो गया। उस्मान ने उस दिन लडने का निश्चय नही किया था जब उसने सुना कि शाही सेना युद्ध के लिए तैयार होकर आ गई है तो कोई उपाय न देखकर वह सवार होकर नाला के तट पर आ गया और विजयी सेना के सन्मुख अपने परिवार और प्यादे जमा दिये। जब लडाई शुरू हुई तो दोनो सेनाओ मे अच्छा मुकाबला हुआ, शाही अग्रसेना के सामने सेना पर उस मूर्ख और दुराग्रही पुरुष ने पहले तो अपना क्रुद्ध हाथी चलाया बहुत लडाई के बाद अग्रसेना के सईद आदम बारह और शेख अच्छहे जैसे

लोग शहीद हो गये। इफ्तिखार खा ने जो दाये पक्ष का नेतृत्व कर रहा था अपने प्राणो का बलिदान कर दिया उसके साथी ऐसे लडे कि उनमे से प्रत्येक कटकर टुकडे--टुकडे हो गया। इसी प्रकार किश्वरमी खा और उसका बाया पक्ष वीरतापूर्वक लडा। और उन्होने अपने स्वामी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये परन्तु शत्रु के भी बहुत से सैनिक आहत हो गये या मारे गये। दुष्ट उस्मान ने सैनिको का हिसाब लगाया और मालुम किया कि अग्रसेना तथा दाये और बाये पार्श्व के लोग मारे गये। केवल मध्य सेना ही बची हुई थी। उसने अपने पक्ष के आहत और मारे हुए लोगो का हिसाब नही लगाया और उसी शक्ति के साथ शाही सेना के मध्य के मध्य भाग पर हमला किया। इधर की ओर सुजात खा के पुत्र भाई और दामाद और दूसरे अफसरो ने शत्रु को आगे बढने से रोका और शेरो और चीतो की भाति उन पर हमला किया। इनमे से कुछ ने तो शहीद होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और जो जीवित रहे उनके घातक धाव लगे। तब उस्मान ने गजपत नामक अपने क्रुद्ध और मुख्य हाथी को सुजात खा पर पेल दिया। सुजात खा ने हाथी पर अपन भाले से वार किया परन्तु क्रुद्ध हाथी पर क्या असर हो सकता है। तब उसने तलवार से दो वार दिये परन्तु इनसे भी क्या हो सकता था तब उसने खजर निकालकर दो बार किये तब भी हाथी वापिस नही मुडा और सुजात खा को अपने घोडे के साथ गिरा दिया, घोडे से अलग होते ही उसने जहागीर शाह को पुकारा और कूदकर उसके नायब ने हाथी के सामने के दोनो पैरो पर दुधारी तलवार के वार किये। हाथी अपने घुटनो पर गिर गया तो नायब ने फीलवान को हाथी से नीचे खीच लिया। सुजातखा के हाथ मे खजर था ही उसने हाथी की सुड पर और उसके मस्तक पर ऐसी चोटे मारी कि दर्द से चिघाडने लगा और वापिस मुड गया, वह बडा आहत हो चुका था इसलिए वह अपनी ही सेना मे आकर गिर गया। सुजातखा का घोडा सुरक्षित उठा खडा हुआ जब वह सवार हो रहा था शत्रुओ ने एक दूसरा हाथी उसके निशान बर्दार पर चलाया और उसके घोडे और निशान को गिरा दिया। सुजातखा मर्दानगी से चिल्लाया और निशान बर्दार को उठाकर कहा साहस रखो मै जीवित हूँ और निशान मेरे पास है। इस नाजुक समय मे सल्तनत के सभी सेवको ने जो वहाँ उपस्थित थे अपने तीर, खजर, तलवार सभाली और हाथी पर वार किये। सुजात ने स्वय आकर निशान बर्दार को उठ बैठने के लिए चिल्लाकर कहा और उसके लिए दूसरा घोडा मँगवाकर उसे बैठा दिया निशान बर्दार ने झण्डा फहराया और स्थिर रहा। उस समय बन्दूक की एक गोली विद्रोही के सिर पर लगी। गोली मारने वाले की बडी तलाश की गई परन्तु उसका पता नही चला।

गोली लगते ही वह समझ गया कि वह मरने वाला है। फिर भी दो घडी तक वह अपने घोडे को लडने के लिए प्रेरित करता रहा उसके घातक घाव लग चुका था रणभूमि मे बडा सघर्ष सहार हो रहा था फिर शत्रुओ ने अपने मुख मोड लिए और विजयी सेना ने उनका पीछा किया और प्रहार करते हुए उनको अपने डेरो तक घकेल दिया। शाही सेना ने उनके डेरो मे घुसना चाहा परन्तु अपने तीरो और गोलियो से उन्होने सामना किया और शाही सैनिको को उन्होने नही घुसने दिया। जब उस्मान के भाई वली और उसके पुत्र ममूरेज ने और अन्य रिश्तेदारो और अनुचरो ने जान लिया कि उस्मान आहत हो चुका है और वह उससे बचने वाला नही है अब वे हार कर अपने दुर्ग की ओर भागेगे तो उनको वहा जीवित नही पहुचने दिया जावेगा इसलिए उन्होने सोचा कि डेरो मे ही रात व्यतीत करना ठीक है रात्रि के अन्त मे वे अपना मौका देखकर खडे होगे। 2 घडी रात व्यतीत हुई थी कि उस्मान नर्क मे पहुच गया। तीसरी घडी मे उन्होने उसके प्राणहीन शरीर को उठाया और अपने डेरे आदि छोडकर अपने दुर्ग की ओर कूच दिया। विजयी सेना के सेवको को इसकी सूचना मिल गई तो उन्होने सुजातखा को भी सूचित कर दिया। सोमवार की प्रात काल शाही सेना के लोगो ने एकत्रित होकर निश्चय किया कि शत्रु का पीछा किया जावे और उनको सास लेने का भी अवसर नहीं दिया जावे। अन्त मे सैनिको के थक जाने से और शहीदो को दफनाने के लिए तथा आहतो के प्रति सहानुभूति करने के लिए वह परेशान होकर सोचने लगे कि कूच करे या जहा के तहा ठहरे इस अवसर पर मोअज्जम खा का पुत्र अर्ब्दुस्सलाम 300 सवार और 400 तोपचियो के साथ और कुछ सेवको के साथ आ पहुचा इन ताजा लोगो के आमगन के कारण निश्चित हुआ कि शत्रु का पीछा किया जावे और शाही सेना आगे बढी। वली ने उस्मानखा के बाद विद्रोह का नेतृत्व अपने हाथ मे ले लिया था जब उसको ज्ञात हुआ कि सुजातखा विजयी सेना के साथ और ताजा सेना लेकर आ रहा है तो उसको इसके सिवाय और कोई उपाय नही सूझा कि सुजातखा के पास जाकर स्वामी भक्ति का मार्ग ग्रहण किया जावे। अन्त मे उसने सन्देशा भेजा कि जो व्यक्ति उत्पत्ति का कारण था वह तो चल बसा है और जो रह गये है वे सेवक और मुसलमान है यदि वह (सुजात) वचन दे तो वे उसके पास आकर साम्राज्य की सेवा करेगे और अपने हाथी इसको भेट कर देगे। सुजातखा और मुताकिद खा जो लडाई के दिन आया था और जिसने अच्छी सेवा की थी तथा अन्य स्वामी भक्त लोगो ने समय की आवश्यकता और साम्राज्य का हित सोचकर उनको वचन दिया और उत्साहित किया। अगले दिन वली और उस्मान के पुत्र भाई और दामाद सुजात खा

तथा साम्राज्य के·अन्य अमीरो के पास आये और 49 हाथी समर्पण करने के लिए लाये। इस तारीख की समाप्ति पर सुजातखा कुछ स्वामी भक्त सेवको को आधार[1] और उसके पास के स्थानो पर जो शत्रु के हाथ मे थे वली और दूसरे अफगानो को अपने साथ लेकर सोमवार तारीख छ सफर को जहागीर नगर आया ओर इस्लाम खा से मिला। जब सुख समाचार आगरा इस अल्लाह के सेवक के पास पहुचा तो उसने धन्यवाद देने के लिए सिजदा किया और यह माना कि सर्व शक्तिमान ईश्वर की दया से ही इस प्रकार के शत्रु को हरा कर भगाया जा सका है। इस अच्छी सेवा के उपलक्ष्य मे मैने इस्लामखा को 6 हजार जात का मनसब दिया और सुजातखा को रुस्तम जमान की उपाधि दी तथा उसके मनसब मे 1 हजार जात और 1 हजार सवार की वृद्धि की मैने अन्य सेवको के पद भी उनकी सेवानुसार बढा दिये और उनको अन्य सम्मान भी प्रदान किये गये।

जब उस्मान के मारे जाने की सूचना प्रथम बार आई तो यह मजाक मालूम हुई। इसलिए उसकी सत्यता या असत्यता जानने के लिए मैने ख्वाज–हाफिज–सिराजी के दीवान से शकुन लिए तो निम्नलिखित गजल निकली।

दीदा दरिया कुनम व सबर बशहरा फुगनम।
अन्धरी कारे दिल खविश बन्दरिया फुगनम।
खुर्दा–अम, तरीफलक वादा बदा लावरे मस्त।
उगदा दर बन्द कमर नरगिसा जोजा फुगनम।।[2]

यह शेर अवसर के अनुकूल था इसलिये मैने इससे शकुन लिये कुछ दिन पश्चात फिर खबर आई कि उस्मान के भाग्य का तीर लग गया है। क्योकि बहुत कुछ तलाश करने पर भी यह पता नही लगा कि उसके तीर किसने मारा था। इस विचित्रता के कारण यह वृतान्त लिखा गया है।

गोवा के जानवर– 16 फर्बरदीन को मुकर्रबखा जो मेरा पुराना सेवक है और 3 हजार जात और 2 हजार सवार का मनसबदार है खम्बात के दुर्ग से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। मैने कुछ काम के लिए उसको आदेश दिया था कि गोवा जाकर सरकार के निजी उपयोग के लिए वहा मिलने वाली दुर्लभ वस्तुए खरीद कर लावे। आदेशानुसार वह गोवा गया

---

1 यह शब्द उजुआल का अपभ्रंश मालूम होता है। इन नाम के गाव इस प्रदेश मे कई थे।

2. मै अपनी आखो को दरिया बना लेता हू और धैर्य को जगल मे फेक देता हूँ, ऐसा करके मैं अपने दिल को समुद्र मे डाल देता हूँ। मै भाग्य के तीर से आहत हूँ। मुझे सराप दो जिससे मस्त होकर मे मिथुन राशि के तीर से गाठ लगा दूँ।

और वहाँ कुछ दिन ठहरा। उसने देखा कि फिरगी लोग अपनी चीजो की इस बन्दरगाह मे मनमानी कीमत मागते है। जब वह उक्त बन्दर से दरबार मे आया तो उसने मेरे सामने एक–एक करके वे सारी दुर्लभ वस्तुए प्रस्तुत की जो वह लाया था। इनमे कुछ ऐसे बडे विचित्र और आश्चर्यजनक जानवर थे जो मैने अब तक कभी नही देखे थे और कोई व्यक्ति उनका नाम भी नही जानता था। बादशाह बाबर ने अपनी आत्म जीवनी मे कई जानवर के आकार–प्रकार का वर्णन किया है परन्तु उसने किसी चित्रकार से उनके नही चित्र बनवाये। यह जानवर मुझे अति विचित्र लगे इसलिए मैंने उनका वर्णन किया है और चित्रकारो को यह भी आदेश दिया था कि वे जहागीर नामा मे उनके चित्र बना दे।

इन दिनो मैने महावतखा के मनसब मे एक हजार जात और पाच हजार सवारो की वृद्धि कर दी इस प्रकार उसका मनसब अब चार हजार जात और तीन हजार पाच सौ सवार हो गया। इतिमादुद्दौला का भी मनसब बढाकर चार हजार जात और एक हजार सवार कर दिया। महासिह के मनसब मे 500 जात और 500 सवारो की वृद्धि कर देने से अब उसका मनसब एक हजार जात और तीन सौ सवार हो गया। इन दिनो ख्वाजा अबुल हसन दक्खिन से मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। इलाहाबाद और सरकार जौनपुर के फौजदार दौलत खा ने आकर तस्लीम की और उसके मनसब मे 500 की वृद्धि की गई। पहिले उसका मनसब एक हजार का था। 19 फर्वरदीन को रोजशरफ (समापन दिवस) था उस दिन मैने सुल्तान खुर्रम का मनसब 10 हजार से 12 हजार कर दिया और इतिवार खा का मनसब 3 हजार से 4 हजार जात कर दिया। इसी प्रकार मुकर्रबखा के मनसब मे जो पहिले 2 हजार जात और 1 हजार सवार था 500 जात और 500 सवारो की वृद्धि कर दी। ख्वाजाजहा का मनसब 2 हजार जात ओर 1200 सवार था उसमे 500 की वृद्धि की गई। ये नव वर्ष के दिन थे इसलिए राज्य के अनेक सेवको के मनसब बढाए गए। उसी दिन दक्खिन से दलीप मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ उसके पिता रायसिह की मृत्यु हो चुकी थी। इसलिए मैने इसको राय की उपाधि और सम्मान सूचक खिलअत प्रदान की। रायसिह के एक दूसरा पुत्र था जिसका नाम सूरजसिह था। यद्यपि दलीपसिह उसका टीकायत पुत्र था परन्तु रायसिह चाहता था कि सूरजसिह उसका उत्तराधिकारी बने। क्योकि रायसिह सूरजसिह की माता से बडा प्रेम करता था। जब उसकी मृत्यु की परिस्थिति से मुझे सूचित किया गया तो सूरजसिह ने जिसमे बुद्धि की कमी थी और जो अभी बच्चा ही था मुझसे निवेदन किया "मेरे पिता मुझे उत्तराधिकारी बनाया है और मेरे टीका किया है" यह बात

मुझ पसन्द नही आई और मैने कहा "यदि तुम्हारे पिता ने तुम्हारे टीका किया है तो हम दलीपसिह के टीका करते है।" तब मैने अपने हाथ से टीका करके दलीपसिह को उसके पिता की जागीर और वशानुगत सम्पत्ति दे दी। इतिमादुद्दौला को मैंने एक बहुमूल्य कलमदान और जडाऊ कलम दी। लखमीचन्द का पिता कुमायू का राजा रुद्र जो कि पर्वतीय प्रदेश का एक बडा राजा है स्वर्गीय बादशाह अकबर के समय मे आया था और उसने प्रार्थना की थी कि राजा टोडरमल का पुत्र उसका हाथ पकड कर बादशाह के सम्मुख उसे उपस्थित करे इसके अनुसार राजा टोडरमल के पुत्र को रुद्र को ले आने के लिए नियत किया गया। लखमीचन्द ने इसी भाति निवेदन किया कि इतिमादुद्दौला का पुत्र उसे बादशाह की सेवा मे लावे। तब मैने शापुर को भेजा कि उसे मेरे सामने ले आवे।

पर्वतीय देश के राजाओ मे यह राजा इसलिए प्रसिद्ध है कि इसके पास सोना बडी मात्रा मे है लोग कहते है कि इसके देश मे सोने की खान है।

लाहौर मे एक महल की नीव डालने के लिए मैने ख्वाजाजहा ख्वाजा दोस्त मुहम्मद को भेजा। वह इस काम मे बडा निपुण और प्रसिद्ध है।

दक्षिण में सैनिक अव्यवस्था

सरदारो के मतभेद और खान आजम की उपेक्षा के कारण दक्षिण की परिस्थिति अच्छी मालूम नही होती थी और अब्दुल्ला खा की पराजय हो गई थी इसलिये मैने इन विवादो की वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिये ख्वाजा अबुल हसन को भेजा। खूब जाच करने के बाद यह स्पष्ट हुआ कि अब्दुल्ला खा की हार इसलिये हुई थी कि– उसमे अभिमान और तीव्र स्वभाव था और वह सलाह की उपेक्षा करता था और कुछ अमीरो मे मतभेद थे। सक्षेप मे यह पता लगा कि अब्दुल्ला खा नासिक और त्रिम्बक की दिशा से गुजरात की सेना और जिन अमीरो को जाने के लिए नियत किया गया है रवाना हो जागे। इस सेना की ठीक व्यवस्था विश्वसनीय अमीरो ने राजा रामदास खान आलम सईद खा अली बरदान बहादुर जफर खा और अन्य ने करदी थी। सेना की सख्या 10 000 से बढा कर 14000 कर दी गई थी। यह निश्चय हो गया था कि राजा मानसिह, खानजहा अमीर उल उमरा और अन्य बहुत से सेनाधिकारी बरार की ओर से कूच करे। ये दोनो सेनाए एक दूसरे के कूच से और मुकामो से अवगत रहे और एक निश्चित दिन पर ये दोनो सेनाए शत्रु को पकड ले यदि इस व्यवस्था का पालन किया जाता और उनमे एकता होती और स्वार्थ बीच मे नही आता तो यह बहुत करके

सम्भव था कि सर्व शक्तिमान ईश्वर विजय इन्ही सेनाओ को प्रदान करता। जब घाटो को पार करके अब्दुल्ला खा दूसरी ओर गया तो उसने वह शत्रु के देश मे प्रवेश किया। उसने कासिदो (धावनो) को भेजकर दूसरी सेना की गतिविधि का पता व्यवस्था के अनुसार नही लगाया और उस सेना के साथ अपनी कूच का तालमेल नही मिलाया। अन्यथा नियत दिवस पर यह दोनो सेनाए शत्रु को अपने बीच मे ले लेती। अब्दुल्ला खा अपनी ही शक्ति पर विश्वास करता रहा वह सोचता था कि यदि वह ही विजय प्राप्त करले तो और भी अच्छा हो यह विचार उसके दिमाग मे बैठ गया था। रामदास ने चाहा कि वह सोच समझ कर आगे कूच करे परन्तु इससे कुछ लाभ नही हुआ। शत्रु उसको बारीकी से देख रहा था और उसके विरुद्ध कई सैनिक नायको को और बारगीयो को भेज चुका था। जिनसे प्रतिदिन मुठभेड हो जाया करती थी। वे रात मे हुक्को और आतिशबाजी का उपयोग करते थे। अन्त मे शत्रु निकट आ गया और अब्दुल्ला खा को दूसरी सेना की कोई खबर नहीं मिली अब वह दौलतबाद के निकट पहुच गया था। जो दक्खिनियो का केन्द्र था अम्बर हब्शी ने एक बच्चे को सुल्तान बना दिया था। उसका ख्याल था कि इस बच्चे का निजामुलमुल्क के परिवार से सम्बन्ध है। वह चाहता था कि लोग इस बच्च को सुल्तान माने इसलिये वह उसका पेशवा और नेता बन गया। इस हब्शी ने बार बार अब्दुल्ला के विरुद्ध आदमी भेजे। शत्रु के लोगो की सख्या निरन्तर बढती जाती थी। अन्त मे उन्होने आक्रमण किया और हुक्के और आतिशबाजी चलाकर स्थिति बडी कठिन कर दी। अन्त मे स्वामिभक्त सेनाधिकारियो ने यह देखकर कि दूसरी सेना से कोई सहायता नही आई है और दक्खिन के सब लोग विरोधी बन गये है यह निश्चय किया कि तुरन्त पीछे हटकर कोई दूसरी योजना बनानी चाहिए। सब लोग इस बात पर सहमत हा गये और सूर्योदय से पहले ही वापिस रवाना हो गये दक्खिनियो ने अपने देश की सीमा तक उनका पीछा किया। दोनो सेनाए (अब्दुल्ला की व दक्खिनियो की) लडने से भी नही चूकी। इन दिनो कई जोशीले नवयुवक मारे गये। अली मर्दान खा बहादुर वीर पुरुष की भाति लडा और बुरी तरह आहत होकर शत्रु के हाथ मे आ गया और अपने साथियो के समक्ष नमक हलाली और आत्म बलिदान का उसने उदाहरण उपस्थित किया। जुल्फकार बेग ने भी बडी मर्दानगी का कार्य किया। उसकी टाग मे एक हुक्के की चोट लगी और दो दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। जब वे लोग (अब्दुल्ला की सेना) राजा भरजू (बगलाने का) के देश मे दाखिल हो गये तो शत्रु वापिस हट गया क्योकि राजा भरजू बादशाह का वफादार था। अब्दुल्ला खा ने गुजरात की ओर कूच किया वास्तविकता यह है कि

यदि वह जाते समय धीरे--धीरे कूच करता जिससे दूसरी सेना को उसके समीप आ जाने का मौका मिल जाता तो जैसी व्यवस्था सोची गई थी उसी के अनुसार काम बन जाता। ज्यो ही बरार की ओर से आने वाली सेना को मालूम हुआ कि अब्दुल्ला खा पीछे हटने लग गया है तो उसने देखा कि आगे बढने से कोई लाभ नही होगा इसलिये उसने भी वापिस कूच करना शुरू कर दिया और बुरहानपुर के समीप आदिलाबाद मे वह शहजादा परवेज के डेरो मे पहुच गई। जब यह खबर मुझ आगरे मे मिली तो मै बडा क्षुब्ध हुआ और मैने सोचा कि मै स्वय ही वहा जाकर उन सेवको को समूल नष्ट कर दू जो स्वामी बन गये है परन्तु और अन्य स्वामिभक्त लोग इससे सहमत नही हुए। ख्वाजा अबुल हसन ने निवेदन किया कि उस देश के मामले को जितना खाखाना समझता है उतना कोई नही समझता इसलिये मुझे चाहिए कि मै उसको भेजू और वह जाकर सब स्थिति को सम्भाले और बिगडी हुई व्यवस्था को सुधारे और समय के स्वरूप को देखकर मतभेदो को दूर करे जिससे स्थिति यथा पूर्व बन जाये। दूसरे हितैषियो से परामर्श किया तो उनकी सम्मति भी यही थी कि खानखाना को भेजा जावे और ख्वाजा अबुल हसन को उसके साथ किया जावे। इस निश्चय से सहमत होकर जो लोग खानखाना का काम करते थे इजाजत देकर रविवार 17 उर्दीबिहिश्त 7 वे वर्ष को रवाना हो गये। खाहनवाज खा ख्वाजा अबुल हसन रज्जाक विर्दी उजबेग और उसके अन्य कई साथियो ने उसी दिन सलाम करके विदा ली। खानखाना को पदोन्नति करके 6000 का जाती मनसब शहनवाज को 3 हजार जात व सवार का मनसब दरार खा को उन्नत करके 2 हजार जात व 1500 सवारो का मनसब और खानखाना के पुत्र रहमान दाद को भी मुनासिब मनसब दिया गया। मैने खानखाना को एक शानदार खिलअत एक जडाऊ खजर और तलाईर (साज) के सहित एक हाथी और एक ईरानी घोडा बख्शा इसी प्रकार उसके साथियो और पुत्रो को भी खिलअते और घोडे दिये। मुईजुलमुल्क अपने पुत्रो सहित काबुल से आया और उसने चौखट चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। श्यामसिह और रायमगत भदुरिया बगश की सेना मे थे। किलीज खा की प्रार्थनानुसार उनके भी मनसब बढाये गये। श्यामसिह का मनसब 1500 जात था इसमे 500 की वृद्धि की गई रायमगत का मनसब भी बढा दिया गया।

बडे अर्से से आसफ खा की बीमारी की खबर आ रही थी कभी उसकी बीमारी दब जाती थी और कभी उखड़ आती थी। अन्त मे 63 वर्ष की आयु मे उसकी बुरहानपुर मे मृत्यु हो गई उसकी समझ और योग्यता बहुत अच्छी थी। उसकी समझ मे बात जल्दी आ जाती थी वह कविता भी करता था

उसने खुसरो और शीरी लिखकर मुझे भेट किया था और इसका नाम उसने नूर नामा रखा था। मेरे पूज्य पिता के समय उसको अमीर बनाया गया था और वजीर का पद प्रदान किया था जब मै शाहजादा था तो उसने कई मूर्खता के काम किए थे। कितने ही लोगो को और स्वय खुसरो का ख्याल था कि तख्त पर बैठने के बाद मै उसके प्रति कोई अप्रिय काम करूगा। परन्तु उसकी और अन्य लोगो की धारणा के विपरीत मैने उस पर कृपा की और उसको 5000 जात और इतने ही सवारो का पद प्रदान किया वह कुछ समय तक पूर्ण अधिकार सम्पन्न वजीर रहा। मेरे पिता उस पर कृपा करते ही रहे। उसकी मृत्यु के पश्चात मैने उसके पुत्रो को मनसब दिया और उस पर कृपा की। अन्त मे यह स्पष्ट हो गया कि उसका स्वभाव उतना अच्छा नही था जितना होना चाहिए था और अपने स्वभाव के कारण यह मुझ पर सन्देह किया करता था। लोग कहते है कि काबुल की चढाई के समय जो षडयत्र और गडबड हुई उसका यह समर्थक था। वास्तव मे मुझे यह विश्वास नही था कि मैने उस पर कृपा की है परन्तु वह द्रोह नही करेगा।

कुछ समय पश्चात उर्दी बिहिस्त मास की 25 तारीख को मिर्जा गाजी की मृत्यु का समाचार आया। यह मिर्जा ठट्टा के राजवश का था और तरखानी कौम का था। उसका पिता मिर्जा जानी मेरे पूज्य पिता के समय मे स्वामी भक्त था और खानखाने के साथ जिसकी नियुक्ति उस प्रान्त मे हुई थी उसने लाहौर के समीप अकबर की सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया था। शाही कृपा के कारण उसको अपना ही प्रान्त मिल गया था। उसको दरबार मे रहकर ही सेवा करना पसन्द था इसलिए ठट्टा के प्रशासन के लिए उसने वहा अपने आदमी भेज दिए थे और जीवित रहा तब तक उसने बादशाह की सेवा की थी अन्त मे वह बुरहानपुर मे मर गया। उसका पुत्र गाजी खा ठट्टा मे था बादशाह अकबर के फरमान के अनुसार उसको वहा का खासन प्राप्त हो गया था। सईद खा जो भक्कर मे था आदेश हुआ था कि वह गाजी खा को सान्त्वना देकर दरबार मे ले आवे। सईद खा ने उसके पास अपने आदमी भेजे और उसको सलाह दी कि वह स्वामी भक्त बना रहे। फिर उसको आगरा ले आया और मेरे पिता के चरण चुम्बन का सम्मान उसे (गाजी खा) को प्राप्त हुआ। जब मेरे पिता की मृत्यु हुई और मैं तख्त पर बैठा तो वह आगरा मे था।

कंधार

खुसरो का पीछा करते हुए जब मै लाहौर पहुचा तो सूचना मिली तो खुरासान की सीमा के अमीरो ने एकत्र होकर कन्धार पर चढाई कर दी है और वहा के फौजदार शाहबेग को दुर्ग मे बन्द कर दिया है और वह सहायता की

प्रतीक्षा कर रहा है। आवश्यकतावश कन्धार को मुक्त करने के लिए मिर्जा गाजी और दूसरे अमीरो और सेनापतियो के नेतृत्व मे एक सेना को कूच करने का आदेश हुआ जब सेना कन्धार के समीप पहुची तो खुरासान की सेना वापिस मुड गई क्योकि उसमे इतनी शक्ति नही थी जो शाही सेना का सामना करती। मिर्जा गाजी ने कन्धार मे प्रवेश किया और दुर्ग और उधर का प्रदेश सरदार खा को सौप दिया। सरदार खा को उधर के प्रशासन के लिये नियुक्त किया गया था। शाहबेग अपनी जागीर पर चल गया। मिर्जा गाजी भक्खर के मार्ग से लाहौर रवाना हो गया। सरदार खा कन्धार थोडे ही दिन रहा था कि उसकी मृत्यु हो गई और वहा फिर एक नेता की आवश्यकता हुई अब मैने कन्धार को ठट्टा मे मिलाकर मिर्जा गाजी के सुपुर्द कर दिया तब से अपनी मृत्यु तक वह निरन्तर वहा रहा ओर उस प्रदेश के शासन और सरक्षण का कर्तव्य भली–भाति निभात रहा। वह विद्रोहियो के साथ उत्तम व्यवहार करता था। कन्धार मे मिर्जा गाजी के स्थान पर किसी को भेजने की आवश्यकता थी इसलिये मैने अबुल–बी–उजबेग को उस समय सुलतान और उसके पास के इलाके मे नियत था उस स्थान (कन्धार) पर भेजा। उसका मनसब पहले 1500 जात और 1000 सवार था जो बढाकर अब 3 हजार जात और उतने ही सवार कर दिया और उसको बहादुर खा की उपाधि आर एक निशान प्रदान किया। दिल्ली की फौजदारी और प्रशासन तथा सरक्षण मुकर्रबखा के सुपुर्द किया। मैने रूप खवास को खवासखा की उपाधि दी। एक हजार जात और 500 सवारो का मनसब दिया और उसे सरकार कन्नौज का फौजदार बनाया। वह मेरे पूज्य पिता का एक निजी सेवक था।

मैने चाहा था कि इतिमादुद्दौला का पुत्र इतिकाद खा अपनी पुत्री[1] का विवाह खुर्रम से कर दे। इस विवाहोत्सव का व्यवस्था हो गई तो वृहस्पतिवार 18 खुरदार को मै उसके मकान पर गया और एक दिन 1 रात वही ठहरा। खुर्रम ने मुझे भेट दी और बेगमो को आभूषण दिये और अपनी माताओ को (तथा उपमाताओ) को और हरम खाने की दासियो को भी आभूषण दिये और अमीरो को खिलअते दी।

ठट्टा– मैने महल के बख्शी अब्दुर्रज्जाक को ठट्टा मे व्यवस्था जमाने के लिये भेजा। इसके बाद मै एक सरदार नियुक्त करना चाहता था जो वहा के सैनिको ओर कृषको को शान्त करके उस प्रान्त की व्यवस्था ठीक कर दे।

यह मुमताज महल थी, 14 बच्चो को जन्म दिया। यह नूरजहा के भाई की पुत्री थी। इसका विवाह सगाई के 5 वर्ष बाद हुआ था। इसकी मृत्यु बुरहानपुर मे 1631 मे हुई थी। यह शाहजहा की द्वितीय पत्नी थी। इसी पर ताजमहल बना था।

मैने अब्दुर्रजाक की पदोन्नति करके उसको एक हाथी और एक दुशाला देकर विदा किया। मैने मुइजुल–मुल्क को अब्दुर्रजाक के स्थान पर नियुक्त किया। ख्वाजा जहा को इसीलिए भेजा गया था कि वह लाहौर की इमारतो को देखकर उनका प्रबन्ध जमा दे। वह इस मास के अन्त मे मेरी सेवा मे वापिस आया। मिर्जा ईसा तरखान जो मिर्जा गाजी का एक रिश्तेदार था दक्षिण की सेना मे नियुक्त किया गया था। मैने उसको ठट्टा के कार्य को जमाने के लिए बुलाया और उसी दिन वह उपस्थित हो गया वह कृपा का पात्र था इसलिए उसे 1 हजार जात और 500 सवार का मनसब दिया गया।

जहांगीर की बीमारी– मुझे खानपारा का रोग हो गया इससे मेरा स्वास्थ्य बिगड गया था। हकीमो के सलाह से मैने बुधवार के दिन इसी मास से अपने बाये बाहु मे से एक सेर रक्त निकलवाया तो मुझे बडा हल्कापन प्रतीत हुआ। मुझे ख्याल आया कि रक्त निकलने की क्रिया का नाम हल्कापन रखा जावे तो अच्छा है। आज कल इसी शब्द का प्रयोग होता है। मेरा रक्त मुकर्रब खा ने निकाला था मैने उसको एक जडाऊ खजर दिया।

शजात खां की मृत्यु–शजात खा की मृत्यु की कहानी बडी विचित्र है उसने अच्छी सेवा की थी। इस्लाम खा ने उसको सरकार उडीसा जाने के लिये छुट्टी दे दी थी। एक दिन वह एक हथनी पर चौखण्डीदार मे सोता हुआ सफर कर रहा था और उसके पीछे ख्वाजासरा बैठा हुआ था। जब उन्होने अपना मुकाम छोडा तो वहा एक हाथी बाध रखा था जिसे मस्ती आ रही थी। घोडो के सुमो के शोर से और सवारो की गति के कारण उसने अपनी जजीर तोडने का प्रयास किया। इस कारण बडा शोर मच गया और गडबड मच गई यह शोर ख्वाजासरे के कान मे पहुचा तो उसने घबरा कर शजात खा को जगाया जो शराब के नशे मे सोया हुआ था और कहा एक हाथी मस्त हो रहा है और जजीर तुडवाकर इधर आ रहा है।" यह सुनते ही इस्लाम खा परेशान हो गया और चौखण्डी के सामने से कूद पडा और एक पत्थर पर गिरने से उसके अगूठे मे घाव लग गया जिससे वह 2–3 दिन मे मर गया।

इस्लाम खा ने बगाल से 160 नर और मादे हाथी भेजे थे। वै मेरे सामने प्रस्तुत किये तो मैने उनको अपने निजी तबेले मे रख दिया। कुमावो के राजा टेकचन्द ने रुखसत मागी। मेरे पिता के समय मे इसके पिता को 100 घोडे दिये गये थे। मैने भी उसको इतने ही घोडे और एक हाथी दिया और जब वह दरबार मे था तो मैंने उसको एक खिलअत और जडाऊ खजर दिया था। उसके भाइयो को भी मैंने घोडे और खिलअत दिये। पूर्व व्यवस्था

के अनुसार मैने उसका राज्य उसी को दे दिया और वह सफल और सुखी होकर अपने स्थान पर लौट गया।

अबुल फतह दक्षिणी आदिलशाही अमीरो मे एक बडा अमीर था। दो वर्ष पूर्व उसने मेरी स्वामी भक्ति स्वीकार कर ली थी। अत. उसको शाही विजयी सेना मे भर्ती कर लिया गया। अमूर्दाद की 10 तारीख को वह मेरी सेवा मे आया और उसे एक खास तलवार और खिलअत दी गई कुछ दिन बाद मैने उसको एक खासा घोडा भी दिया। ख्वाजगी मुहम्मद हुसैन को उसके भतीजे का नायब बनाकर कश्मीर भेजा गया था। जब वह वहा की स्थिति से सन्तुष्ट हो गया तो वह मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। अब पटना मे सूबेदार के स्थान पर भेजने के लिए एक सरदार की आवश्यकता थी तो मुझे मिर्जा रुस्तम का ख्याल आया। अभी उसका मनसब 5 हजार जात और 1500 सवार का था। यह अब 5 हजार जात और 5 हजार सवार कर दिया गया। 26 जुमादसानी तदनुसार 2 शहरीवर को मैने उसको पटना की सूबादारी पर भेज दिया और विदा करते समय उसको एक खासा हाथी एक घोडा जडाऊ जीन सहित एक जडाऊ तलवार और खासा खिलअत दी उसके पुत्रो और उसके भाई मुजफर हुसैन के पुत्रो का भी मनसब बढाया और उन्हे हाथी, घोडे और खिलअते दकर उसके साथ विदा कर दिया। मिर्जा रुस्तम की सहायातर्थ मैने राय दलील को नियुक्त किया। उसका निवास इस खान के पास ही था इसलिए उसने इस सेवा के निमित्त अच्छी सख्या मे आदमी एकत्र कर लिए। मैने उसके मनसब मे 500 जात और 500 सवारो की वृद्धि की। अब उसका मनसब 2 हजार जात और एक हजार सवार का हो गया। मैने उसको 1 हाथी भी दिया। अबुल फतह दक्खिनी को सरकार नागपुर और उसके आस–पास एक जागीर मिल गई थी। उसको विदा कर दिया ताकि वह अपनी जागीर का प्रबन्ध करे और वहा की सरकार का काम सभाले। खुसरोमी उजबेग को सरकार मेवाड की फौजदारी दी गई।

जहांगीर की तुला

वृहस्पतिवार 22 शहरीवार तद्नुसार 17 रजब 1021 हिज्री को मरियम जमानी के निवास मे मेरी सौर तुला का उत्सव मनाया गया। मै इसी प्रकार अपनी तुला करवाया करता हू। स्वर्गीय बादशाह अकबर जो अनुग्रह का अवतार था इस प्रथा को अच्छी मानता था और वर्ष मे दो बार सोना, चादी और बहुत से बहुमूल्य पदार्थो की तुला करवाया करता था। एक तुला सौर और दूसरी चान्द्र होती थी और इनका मूल्य लगभग 1 लाख रुपये होता था जो

फकीरो और निर्धनो मे बाट दिया जाता था मै भी इस प्रथा को मानता हू और अपनी तुला उसी प्रकार करवाता हू, और इसका मूल्य फकीरो मे बाट देता हू।

मुताकिदखा बगाल का दीवान था। उसको उस पद से हटा दिया गया था। उसने उस्मान के पुत्रो, भाइयो ओर कुछ सेवको को मेरे सम्मुख प्रस्तुत किया। इन लोगो को इस्लाम खा ने उसके साथ दरबार मे भेजा था। प्रत्येक अफगान को एक उत्तरदायी सेवक के सुपुर्द कर दिया गया। तब मुताकिद खा ने अपनी भेट प्रस्तुत की इनमे 25 हाथी, 2 लाल, एक जडाऊ फूल कटार और विश्वसनीय ख्वाजसरे तथा बगाल के कपडे थे। सुल्तान ख्वाजा का पुत्र मीर मिरान जो दक्खिनी सेना मे था चौखट का चुम्बन करने के लिए आया और उसने एक लाल मुझे भेट की। काबुल की सीमा पर बगस की सेना का नेतृत्व किलीजखा के हाथ मे था। उस सूबा के अमीर उसके साथ थे और उसके अधीन थे। इन सबमे झगडे हुआ करते थे। खास करके झगडा खानदौरा से रहा करता था। मैने ख्वाजा जहा को भेजा कि यह जाच करे कि किस पक्ष को दोष है। मिहर मास की 11 तारीख को मुताकिद खा को नियुक्ति बख्शी पद पर की गई जो बडा पद माना जाता है उसका मनसब एक हजार जात और 300 सवार किया गया। मुकर्रबखा को मनसब दूसरी ओर बढा दो हजार पाच सौ जात और 1500 सवार कर दिए गए। खानखाना के निवेदन पर फरीदून खा बरलास का मनसब बढाकर दो हजार पाच सौ जात और दो हजार सवार कर दिया गया। राय मनोहर को एक हजार जात और आठ सौ सवार का और राजा वीरसिह देव को चार हजार जात और दो हजार दो सौ सवार का मनसब मिला। रामचन्द्र बुन्देला की मृत्यु के बाद उसके पोते भारत को राजा की उपाधि से सम्मानित किया गया। 28 आबान को जफरखा बुलाने से सूबा गुजरात से आया और मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह एक लाल और तीन मोती मुझे भेट करने के लिए लाया था। 6 आजर तद्नुसार तीन स्ब्बाल को बुरहानपुर से खबर आई कि अमीर–उल–अमरा की रविवार 27 अरबान को परगना निहालपुर मे मृत्यु हो गई। लाहौर मे वह बीमार हुआ उसके बाद से उसकी बुद्धि मे कमी आ गई थी और उसकी स्मृति भी बहुत क्षीण हो गई थी। वह बडा सच्चा व्यक्ति था। यह दु ख की बात है कि वह कोई पुत्र छोड़कर नहीं मरा जिसकी परवरिश की जाए ओर जिस पर कृपा की जाए।'चिन किलीजखा का पिता पेशावर मे था वह अपने बाप के पास से 20 आजर को आया और उसने 100 मोहरे और 100 रुपये अपने पिता की ओर से मुझे भेट किए। वह अपनी ओर से भी एक घोडा कपडे और अन्य वस्तुए मुझे भेट करने के लिए लाया था। बिहार के प्रशासन के लिए मैंने जफरखा को पदोन्नति

किया वह विश्वसनीय खानजाद और फरजन्द था। उसके मनसब मे 500 जात और 500 सवार बढा दिया तो उसको मनसब 3 हजार जात और दो हजार सवार हो गया इसके भाईयो को भी खिलअते और घोडे देकर सत्कृत किया और उन सब को उस प्रान्त मे जाने की इजाजत दे दी। उसकी सदैव यह आशा थी कि उसे कोई स्वतत्र सेवा मिल जाए। जिससे वह अपनी स्वाभाविक योग्यता प्रकट कर सके। मै भी चाहता था कि वह उन्नति करे और उसको कोई ऐसी सेवा दू जो कसौटी का काम करे। अब यह मौसम यात्रा और शिकार मे जाने का था इसलिए मगलवार दो जिकदा (25 दिसम्बर 1612) तदनुसार चौथे दिन मैने शिकार के इरादे से आगरा से रवाना होकर दहरा बाग मे अपना मुकाम किया और चार दिन तक वहा ठहरा। इसी मास की 10 तारीख को सलीमा सुल्तान बेगम की मृत्यु की खबर आई वह नगर मे बीमार थी। उसकी माता मुलरूख बेगम बादशाह बाबर की पुत्री थी और उसका पिता मिर्जा नुरूद्दीन मुहम्मद बख्श बन्दी ख्वाजाओ के बख्शे मे था। वह समस्त सदगुणो से अलकृत थी। स्त्रियो मे इतनी चतुरता और योग्यता दुर्लभ है। बादशाह हुमायू ने बैराम खा पर कृपा करके उसकी सगाई इससे कर दी थी। यह उसकी बहिन की लडकी थी। बैरामखा की मृत्यु के बाद अपने शासन के आरम्भ मे स्वर्गीय बादशाह अकबर के राज्य के आरम्भ मे यह विवाह हुआ था जब बैरामखा मारा गया तो मेरे पूज्य पिता ने स्वय उससे विवाह कर लिया। उसकी साठ वर्ष की आयु मे मृत्यु हुई[1]। उसी दिन मैने दहरा बाग से कूच किया और इतिमादुद्दौला को उसे दफनाने के लिए भेजा। मैने आदेश किया कि उसको मन्डाकार बाग की इमारत मे दफनाया जाए जो स्वय उसने ही बनवाई थी। ता 17 माहदी को मिर्जा अली बेग अकबर शाही दक्खिन की सेना मे से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। ख्वाजा जहा को मैने सूबा काबूल मे भेजा था इसी मास की 21 को वापिस आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह बारह मोहर और बारह रुपए भेट करने के लिए लाया था उसी दिन राजा रामदास भी दक्खिन की विजयी सेना मे से आया और मुझे 101 मोहर भेट की। दक्खिन के अमीरो को शाह ऋतु की खिलअते नही भेजी गई थी।

अब वे हयात खा के साथ भेजी गई। सूरत का बन्दरगाह किलीज खा को जागीर मे दिया गया था। उसने प्रार्थना की कि उसके पुत्र चिन किलीज को इस बन्दरगाह के प्रशासन ओर सरक्षण के लिए भेज दिया जावे। 27 मासदी

---

1 सलीमा बेगम मृत्यु के समय 60 वर्ष की नहीं 76 वर्ष की थी इसका जन्म 23 फरवरी 1539 मे हुआ था और मृत्यु 2 जनवरी 1613 मे हुई थी इसलिए चान्द्रवर्ष के हिसाब से वह मृत्यु के समय 73 वर्ष और सोर वर्ष के हिसाब से 75 वर्ष की थी। वह अकबर से साढे तीन वर्ष बडी थी।

को उसे खिलअत और खान की उपाधि तथा निशान देकर विदा कर दिया। काबुल के अमीरो को सलाह देने के लिए और उनमे और किलीज खा मे मतभेद मिटाने के लिए मैने राजा रामदास को भेजा और उसे एक घोडा एक खिलअत और 30 हजार रुपये खर्च के लिए दिए। छ बहमन को जब मेरा मुकाम परगना बारी मे था तो ख्वाजा मुहम्मद हुसेन की मृत्यु की खबर आई वह इस सल्तनत का एक पुराना सेवक था। उसका बडा भाई मुहम्मद कासिमखा मेरे पूज्य पिता के समय मे बडा कृपा पात्र था। ख्वाजा मुहम्मद हुसेन और उसका एक विश्वस्त नौकर अच्छी जगहो पर थे। उसके कोई पुत्र नहीं था उसके दाढी–मूछ बिलकुल नही था। बोलते समय वह चीखा करता लोग उसको ख्वाजासरा समझते थे। शाह नवाज खा जिसको बुरहानपुर से खानखाना ने कुछ निवेदन करने के लिए भेजा था। इसी मास की 15 तारीख को आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसने एक सौ मौहर और 100 रुपए मुझे भेट किये। दक्खिन की स्थिति अब्दुल्लाखा की जल्दबाजी और अमीरो की कपट लीला के कारण अच्छी नही थी इसलिए दक्खिनियो को बोलने का और अमीरो से तथा हितैषियो से शान्ति की बाते करने का उन्हे मौका मिला। आदिलखा ने वफादारी की खिलअत बदल कर प्रार्थना की कि यदि दक्षिण के मामले उसके हवाले कर दिये जाए तो वह ऐसी व्यवस्था करेगा कि जो जिले शाही अफसरो के हाथ से छीन लिए गए हैं वे वापिस आ जाएगे। समय की आवश्यकताओ को देखकर राजभक्त लोगो ने निवेदन किया तो कुछ समझौता हो गया और खानखाना ने फैसला करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। खान आजम विद्रोही राणा का दमन भी करना चाहता था और गाजी बनने का पुण्य प्राप्त करने के लिए वह सेवा करना चाहता था उसको आदेश दिया कि वह अपनी जागीर मालवा मे जाकर वहा सब व्यवस्था करने के बाद यह काम अपने हाथ मे ले। अबुल–बी–उजबेग के मनसब मे एक हजार जात और 500 सवारो की वृद्धि करके उसका मनसब 4 हजार जात और 3500 सवार कर दिया। दो मास और 20 दिन तक शिकार करता रहा। मै प्रतिदिन शिकार मे जाया करता था अब विश्व को प्रकाशित करने वाले नए वर्ष के आने मे 50–60 दिन शेष रह गए थे इसलिए मैने 24 इसफन्दियार को वापिस आकर दहरा बाग मे मुकाम किया। कुछ दरबारी और मनसबदार जो आदेशानुसार नगर मे यही रह गए थे उस दिन मेरी सेवा मे आए। मुकर्रमखा ने एक अलकृत घोडा, फ्रासीसी टोपिया आदि भेट किए। मैं तीन दिन तक इस बाग मे ठहरा और 27 इसफन्दियार को मैंने नगर मे प्रवेश किया।

राज्यारोहण के बाद आठवें वर्ष का उत्सव

मेरे राज्यारोहण के बाद 8 वा वर्ष मोहर्रम 1022 हिजरी था। बृहस्पतिवार ता 27 मोहर्रम की रात की तदनुसार मेरे राज्यारोहण के पश्चात 1 फर्वरद्दीन को जब साढे 3 घडी दिन व्यतीत हो चुका तो सूर्य मीन राशि से मेष राशि मे आया जो कि विजय और आनन्द की राशि है। नये वर्ष के बहुत सबेरे उत्साव की तैयारी की गई और प्रतिवर्ष की भाति सजावट हुई। दिन के अन्त मे मै साम्राज्य के तख्त पर बैठा तो अमीर और मत्री लोग तथा महल के दरबारी मुझे सलाम करने और बधाई देन आये। इन शुभ दिनो मे मै दिन भर दीवान–ए–आम मे बैठा करता था जिनको कुछ मागना था वे प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करते थे और महल के सेवको की भेटे मेरे सामने प्रस्तुत की जानी थी। कन्धार के फौजदार अबुल–बी ने भेट रूप मे ईराकी घोडे और शिकारी कुत्ते भेजे थे जो मेरे सामने उपस्थित किये गये। इसी मास की 9 तारीख को सूबा बिहार से अफजलखा ने आकर 100 मोहरे और 100 रुपये तथा 1 हाथी मुझे भेट किया। 12 तारीख को इतिमादुद्दौला की भेट जिनमे रत्न, वस्त्र और अन्य चीजे थी मेरे सामने रखे गये। जो चीजे मुझे अच्छी लगी वे मैने स्वीकार कर ली अफजलखा की भेटो से 10 चीजे और आज देखी गई। 13 तारीख को तरबियतखा की भेटे मेरे सामने जमाई गई। मुताकिदखा ने आगरे मे एक मकान मोल लिया और वहा कुछ दिन व्यतीत किये उस पर एक के बाद दूसरी विपत्ति आई। हमने सुना है कि अभ्युदय और दुर्भाग्य के चार कारण होते है।

1 पत्नि 2 दास 3 मकान 4 घोडा। मकान से सम्बन्धित अभ्युदय या दुर्भाग्य के विषय मे नियत है जो अटल कहा जाता है। निश्चित स्थान पर निश्चित स्थान को साफ करके उस पर फिर वही मिट्टी बिछानी चाहिए यदि वह ढँक जावे तो कहना चाहिए कि मध्यम लाभकारी है। न तो लाभ होगा न हानि होगी। यदि मिट्टी से वह भूमि पूरी न ढके तो यह दुर्भाग्य का सूचक है यदि उस भूमि को ढकने के बाद भी मिट्टी बच जावे तो यह सौभाग्य का चिन्ह है। 14 तारीख को इतिबारखा का मनसब 1000 जात और 300 सवार से बढाकर 2 हजार जात और 500 सवार कर दिया गया। मैने तरबीयत खा के मनसब मे भी 500 जात और 50 सवार की वृद्धि कर दी जिससे उसका

मनसब 2 हजार जात और 850 सवार हो गया। इस्लामखा का पुत्र हुशग जो अपने पिता के साथ बगाल मे था इस समय आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। वह अपने साथ कुछ माघ लोगो को लाया था। जिनका देश पीगू और अराकान के निकट है और वह देश अभी उन्ही के कब्जे मे है। मैने उनके रीति–रिवाज और धर्म के विषय मे कुछ बाते पूछी। सक्षेपत ये लोग मनुष्यो के रूप मे पशु है। ये लोग जल और स्थल की सब चीजे खाते है। इनके धर्म मे किसी चीज का निषेध नही है। ये किसी भी व्यक्ति के साथ खा सकते है। ये लोग दूसरी मा से पैदा हुई बहन से विवाह कर लेते है। इनके चेहरे करा कल्माको जैसे है परन्तु इनकी भाषा तिब्बत की है और तुर्की भाषा से बिल्कुल नहीं मिलती है। एक पर्वत माला है जिसका एक सिरा काशगर को और दूसरा पीगू देश को स्पर्श करता है। इन लोगो का कोई धर्म नही है न इनके ऐसे कोई रीति–रिवाज है जिनको धर्म कहा जा सके ये लोग मुस्लिम धर्म या हिन्दू धर्म के बहुत दूर है। शरफ (जब सूर्य ऊचे से ऊचा होता है) के दो या तीन दिन पूर्व मेरे पुत्र खुर्रम ने चाहा कि मै उसके निवास पर जाऊ ताकि वह नये वर्ष की भेटे वहा प्रस्तुत कर सके। मैने अनुमति दे दी और एक दिन और एक रात मै वहा ठहरा उसने अपनी भेटे प्रस्तुत की। अगले दिन मुर्तजाखा ने अपनी भेटे प्रस्तुत की। रोज–ए–शरफ (समापन दिवस) तक प्रतिदिन दो या तीन अमीरो की भेटे मेरे सामने रखी जाती थी। सोमवार 19 फरवरदीन को शरफ का जलसा हुआ। उस शुभ दिन मै साम्राज्य के सिहासन पर बैठा और आदेश दिया गया कि सब मादक पदार्थ तैयार किये जावे जैसे मद्य आदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा और रूचि के अनुसार जो चाहे ले ले। बहुत से लोगो ने शराब ली। इस दिन महावतखा की भेटे मेरे सामने लाई गई। मैने 1000 तोले की एक मोहर जो कोकब एताली कहलाती है ईराक के राजदूत यादगार अलीखा को दी। उत्सव भली–भाति मनाया गया। जलसा समाप्त हो गया तो मैने आदेश दिया कि सजावट का सामान और बैठने का सामान हटा लिया जाए। मुकर्रबखा की भेट नये वर्ष के दिन नही जमाई गई थी। अब सारी उत्तम और दुर्लभ भेटे प्रस्तुत की गई। जिनका उसने सग्रह किया था। अन्य चीजो मे 12 ईराकी और अरबी घोडे थे जो जहाज मे लाये गये थे। जडाऊ जीन के थे जिन पर फ्रासीसी काम हो रहा था। यह सब मेरे सामने प्रस्तुत किये गये। नवाजिश खा के मनसब मे 500 सवार और बढा दिये गये अब उसका मनसब 2000 जात और 2000 सवार हो गया। इस्लामखा बगाल से एक हाथी लाया था जिसका नाम बशी बदन था। वह मेरे सामने प्रस्तुत किया गया और मैने उसको अपने खास हाथियो मे भेज दिया। 3 उर्दी बिहिश्त को अब्दुल्ला खा का

भाई ख्वाजा यादगार गुजरात से मेरी सेवा मे आया और उसने 100 जहागीरी मोहरे मुझे भेट की। वह कुछ दिन मेरी सेवा मे रहा फिर उसको सरदार खा की उपाधि दी गई। बगश की सेना मे एक योग्य बख्शी भेजना था। इस काम के लिए मैने मुताकिद खा को पसन्द किया और उसके मनसब मे 300 जात और 50 सवार बढा दिये जिससे उसका मनसब 1500 जात 300 सवार का हो गया फिर उसको विदा कर दिया गया और यह निश्चय हुआ कि उसको शीघ्र जाना चाहिए। मैने मुहम्मद हुसेन चेलेबी को जो रत्न और कौतूहल कारक वस्तुए खरीदना जानता था रुपया देकर ईराक के मार्ग से कस्तुनतुनिया भेजा और उसको आदेश दिया कि वह सरकार के लिए कौतुहल वाली और दुर्लभ चीजे खरीदकर लावे। इसके लिए यह आवश्यक था कि वह ईरान के बादशाह की सेवा मे उपस्थित हो। मैन उसको एक पत्र दे दिया था जिसमे यह बतला दिया गया था। कि क्या–क्या चीजे खरीदी जावेगी। सक्षेप यह है कि मुहम्मद हुसेन मेरे शाह आवास से मसहद मे मिला और बादशाह ने उससे पूछा कि हमारे मालिक की सरकार के लिए क्या चीजे खरीदी जावे। चेलेबी शीघ्र ही काम पूरा करना चाहता था इसलिए उसने अपने साथ की सूची बतला दी।

मैने अपना एक निजी हाथी उसके साज और सामान सहित अब्दुल्ला के लिए भेजा और एक दूसरा किलीच खा को दिया। मैने आदेश दिया कि अब्दुल्ला खा के लवाजमे मे 12 हजार सवार और बढा दिये जाए और हर सवार 2 असपा और 3 असपा हो। जूनागढ मे सेवा करने के लिए मैने उसके भाई सरदार खा के मसब मे 500 जात और 500 सवार की वृद्धि की और फिर यह काम कामिल खा को सौप दिया और आदेश दिया कि वह वृद्धि उसके मसब मे स्थाई मानी जाए। सरफराज खा का मनसब 1500 जात और 500 सवार था। मैने उसके मनसब मे 200 की वृद्धि कर दी। 27 उर्दी–बिहिश्त तदनुसार 26 रबी–उल अब्बल को अर्थात वृहस्पतिवार 1022 हिजरी को मेरे शासन के आठवे वर्ष मे मेरी चान्द्र तुला मरियम जमानी के निवास मे की गई। तुला का कुछ रुपया स्त्रियो और पात्रो को दिया गया जो मेरी माता के निवास पर एकत्र हुए थे। उसी दिन मैने मुर्तजा खा के मनसब मे 1 हजार की वृद्धि करदी। अब उसका मनसब 6 हजार जात और 5 हजार सवार हो गया। मिर्जा खा दास खुसरू बेग पटना से अब्दुर्रज़ाक मामूरी के साथ आया और मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। अब्दुल्ला खा के भाई सरदार खा ने अहमदाबाद जाने की अनुमति प्राप्त की। एक अफगान कर्नाटक से दो बकरे लाया जिनमे पाजहर था। (यह एक प्रकार का पत्थर है जो विष की औषध है)। मैने सदैव यह सुना था कि जिस पशु मे पाजहर

होता है वह बहुत दुबला और दुखी होता है। यह बकरे मोटे और ताजा थे। मैने उनमे से एक को जो मादा था मारने का आदेश दिया तो उसमे 4 पाजहर पत्थर निकले। इससे बडा आश्चर्य हुआ।

उर्दी बिहिस्त के अन्त मे ख्वाजा अब्दुल्ला अजीज का भाई ख्वाजा कासिम मावरान्नहर से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। कुछ दिन बाद उसको 12 हजार रुपये बख्शे गये। ख्वाजाजहा ने नगर के निकट खरबूजे का खेत बनाया था। जब दिन के दोपहर व्यतीत हो गये तो वृहस्पतिवार 10 खुरदाद को मै नाव मे बैठकर उस खेत को देखने गया और अपने साथ महिलाओ को ले गया। हम वहा पहुचे तो 2, 3 घडी दिन शेष रह गया था। हमने खेत मे घूमकर सायकाल व्यतीत किया। तब ऐसी प्रबल आधी चली कि आश्चर्य होता था और एक बबूला उठा तो डेरे और पर्दे सब गिर गये। फिर मैने नाव मे रात काटी शुक्रवार के दिन भी मै खरबूजो के खेत मे घूमता रहा ओर फिर नगर मे लौट आया। अफजल खा दीर्घकाल से फोडे और नासूरो से पीडित था। 10 खुरदाद को उसकी मृत्यु हो गई। राजा जगमन ने दक्खिन मे अच्छी सेवा नही की इसलिए उसकी जागीर और वशानुगत भूमि महावत खा को दे दी। शेख पीर एक त्यागी पुरुष है वह मोह से मुक्त है। मेरे साथ उसका शुद्ध प्रेम है इसलिए वह मेरा साथी और सेवक है। उसका स्थान परगना मेरठ मे है। वहा उसने पहले एक मस्जिद बनवाई थी। जिस समय उसने मौका देखकर इसका मुझसे जिक्र किया। मैने देखा कि वह इस मस्जिद को पूर्ण करने पर तुला है इसलिए मैने उसको 4 हजार रुपये दिये। ताकि वह जाकर इसको मस्जिद पर खर्च कर दे। मैने उसको विदा करते समय एक दुशाला भी दिया।

दीवाने-आम

दीवाने आम मे दो महजर थे। पहिले महजर के अन्दर अमीर मनसबदार और प्रतिष्ठित लोग बैठते थे और आज्ञा के बिना इसमे कोई नही आ सकता था। दूसरे महजर के अन्दर अधिक स्थान था इसमे छोटे मनसबदार, अहदी और काम करने वाले लोगो को आने दिया जाता था इसी महजर के बाहर अमीरो के सेवक और दीवान खाने मे आने वाले सब लोग खडे रहते थे पहिले और दूसरे महजर मे कोई भेद नहीं था इसलिए मुझे ख्याल आया कि पहले महजर को चादी से अलकृत कर दिया जावे। मैने आदेश दिया कि इस महजर को और जो जीना, झरोखे मे जाता है उसको तथा झरोखे के दोनो ओर जो दो हाथी रखे हुए है ओर जो दक्ष लोगो ने लकडी के बनाए

हैं इन सब को चांदी के मढ़ दिया जावे। जब यह काम पूर्ण हो गया तो मुझे सूचना मिली कि इसमें एक सौ पच्चीस हिन्दुस्तानी मन चांदी लगी है अब इसका स्वरूप दर्शनीय हो गया।

तीर मास की 3 तारीख को मुज्जफरखां ठट्टा से आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसने बारह मोहर और एक जडाऊ ढक्कन का कोरन और दो जडाऊ पुष्प भेंट किए। इसी मास की चौदह ता. को सफदर खां सूबा बिहार से आया और उसने एक सौ एक मोहरें भेंट की। जब मुज्जफर खां कुछ दिन मेरी नौकरी में रह चुका तो मैंने उसके पहिले के मनसब में 550 जात की वृद्धि कर दी और उसको एक निजी दुशाला देकर ठट्टा के लिए विदा किया।

खानखाना ने बार–बार निवेदन किया था कि उसके पुत्र शाह नवाज खां को रुखसत दी जावे। चार अमूरदार को मैंने एक घोडा और खिलअत देकर उसको दक्खिन की ओर विदा कर दिया। मैने याकूब बदख्शी को जिसका मनसब एक सौ पचास था अब 1500 जात और एक हजार सवार का मनसब दिया। उसने बडी वीरता का काम किया था इसलिए मैंने उसको खान की उपाधि दी और एक निशान प्रदान किया।

हिन्दू वर्ण-व्यवस्था

हिन्दुओं में चार वर्ण है। इनमे से प्रत्येक वर्ण अपने नियमों के अनुसार काम करता है। प्रत्येक वर्ण के लिए वर्ष में एक विशेष दिन निश्चित है। सर्वप्रथम वर्ण ब्राह्मणों का है अर्थात् उन लोगों का जो अद्वितीय ब्रह्म को जानते है। उनके कर्तव्य 6 प्रकार के हैं– 1. धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना। 2. दूसरों को शिक्षा देना। 3. अग्नि की पूजा करना अर्थात् यज्ञ करना। 4. लोगों से अग्नि पूजा या अग्नि होत्र करवाना। 5. दान देना। 6. दान लेना इन लोगों के लिए एक दिन विशेष रूप से निश्चित है। यह सावन का अन्तिम दिन है और सावन वर्षा ऋतु का दूसरा मास है। इसको यह लोग शुभ दिन मानते हैं उस दिन नदियों या तालाबों के तट पर पूजार्थ आकर मंत्र बोलते है। और रंगे हुए धागों पर (जनेऊ) मंत्रोच्चारण करते हैं। नये वर्ष के प्रथम दिवस पर राजाओं और अपने समय के आदमियों के हाथों पर उन्हें बांधते हैं और उसको शुभ शकुन मानते है। इस धागे का नाम राखी है। जिसका अर्थ है निगाह दास्त। यह दिन तीर मास में आता है। उस दिन सूर्य कर्क रेखा पर होता है।

· दूसरा वर्ण क्षत्री का होता है। जो क्षत्री कहलाते है उनका कर्तव्य उत्पीडित लोगों की उत्पीडकों से रक्षा करना है। इस वर्ण के तीन रिवाज है:

1. उनको धार्मिक ज्ञान (वेद) का स्वय अध्ययन करना चाहिए परन्तु दूसरों से नही करवाना चाहिए। 2. वेद अग्नि पूजा (यज्ञ) करते हैं परन्तु दूसरो से नही करवाते। 3 वे दान देते है परन्तु स्वयं दान नहीं लेते है चाहे वे निर्धन हो। इस वर्ण का विशेष दिन विजय दशमी है, इस दिन को वे सेना सहित शत्रु पर चढाई करने के लिए शुभ समझते है। रामचन्द्र जिनको वे ईश्वर मानते है इस दिन अपने शत्रु पर चढाई करने गये थे और विजय प्राप्त हुई थी। इस दिन को वे महत्वपूर्ण दिन मानते है और अपने हाथी घोडो को सजाते हैं। यह दिन शहरीवार के मास मे आता है। उस समय सूर्य कन्या राशि मे होता है। उस दिन वे अपने घोडो और हाथियो की सार सम्भाल करने वालो को इनाम देते हैं। तीसरा वर्ण वैश (वैश्य) है। इनका वह रिवाज है कि यह उपरोक्त दोनो वर्णो की सेवा करते है। इनका कार्य कृषि और क्रय–विक्रय है। ये ऐसे काम मे लगे रहते है जिससे लाभ हो और ब्याज कमाते हैं इस वर्ण का विशेष दिन दीवाली है जो मेहर मास मे आता है। उस समय सूर्य तुला राशि मे होता है और चान्द्र मास का 28 वा दिन होता है। उस दिन रात्रि को ये लोग दीपक जलाते है और मित्र तथा प्रियजन एक दूसरे के घर जाते है और जुआ खेलने मे अपना समय व्यतीत करते है। इस वर्ण की दृष्टि लाभ और ब्याज पर लगी रहती है। अत ये लोग इस शुभ दिन पर पिछला हिसाब करके अगले वर्ष के लिए हिसाब शुरू करते है। चौथा वर्ण शूद्रो का है जो हिन्दुओ मे सबसे नीच जाति है। ये सबके सेवक हैं और ये कोई ऐसे काम से लाभ नही उठाते जो अन्य वर्णो के लिए निर्दिष्ट है। पूर्णिमा को होली का त्यौहार मनाया जाता है। जो इनके विचारानुसार वर्ष का अन्तिम दिन है। यह दिन इस्फन्दारमुज मास मे आता है उस समय सूर्य मीन राशि मे होता है। इस दिन को रात्रि मे वे सडको के सिरो पर और रास्तो मे आग जलाते है और जब दिन हो जाता है तो एक पहर तक वे इस राख को एक दूसरे के चेहरो और सिरो पर मलते है। फिर नहा धोकर और कपडे पहन कर बागो और मैदानो मे टहलाते है। हिन्दुओ मे मृतको को जलाने की निश्चित प्रथा है इसलिए इस रात्रि को अग्नि जलाने का अभिप्राय यह माना जाता है कि वर्ष का अन्तिम दिन जला दिया और यह मृतक लोक मे पहुच गया।

अकबर और जहांगीर द्वारा होली

मेरे पूज्य पिता के समय मे हिन्दू अमीर और उन्हे देखकर दूसरे लोग राखी को रस्म मनाते थे। ये लोग लाल और मोतियो को धागे मे पिरोकर और बहुमूल्य रत्नो के फूल बनाकर उसकी बाहो पर बाधते थे। यह प्रथा कुछ वर्ष

तक चलती रही परन्तु ये लोग इस पर बडा अपव्यय करने लगे जो मेरे पिता को पसन्द नही था। उसने यह प्रथा बन्द कर दी। ब्राह्मण लोग शकुन होने के लिए रेशम के धागे अपनी प्रथा के अनुसार बाधा करते थे। मैंने भी इस वर्ष वह प्रशसनीय धार्मिक प्रथा मनाई और मैंने आदेश दिया कि हिन्दू अमीर और जाति के मुखिया लोग मेरी कलाई पर राखी बाधे। राखी के दिन जो 9 अमूरदाद को था उन्होने वही रिवाज किया और दूसरी जातियो ने भी उनका अनुकरण किया। इस वर्ष तो मै सहमत हो गया और आदेश दिया कि ब्राह्मण लोग रुई के या रेशम के धागे प्रथानुसार बाघे। सयोगवश इसी दिन स्वर्गीय बादशाह की निधन तिथि थी। हिन्दुओ मे ऐसी तिथि मनाना प्राचीन प्रथा है। अपने पिता और प्रियजनो की मृत्यु तिथि पर वे लोग अपनी परिस्थिति और योग्यतानुसार भोजन बनाते है। सुगन्धित द्रव्य तैयार करते है। विद्वान प्रतिष्ठित तथा अन्य लोग एकत्र होते है। ये मण्डलियॉं कभी–कभी एक सप्ताह तक होती रहती है। इस दिन मैंने बाबा खुर्रम को ऐसी मण्डली करने के लिए पूज्य मजार पर भेजा और विश्वसनीय लोगो को गरीबो और फकीरो मे बाटने के लिए 10 000 रुपये दिये।

खबर नवीस– यह नियम बन गया था कि सूबो की घटनाये भेजी जाया करे इनके लिए दरबार से खबर नवीस नियुक्त किए गए थे। यह नियम मेरे पिता ने चलाया था। मै भी इसको मानता रहा। इससे बडा लाभ होता है। ससार की और उसके निवासियो की खबरे मिला करती है यदि इसके लाभो को लिखा जावे तो लम्बा वृतान्त हो जाएगा। बृहस्पतिवार ता॰ 13 अमुरदाद को नमाज गुजारने के बाद मैं एक नाव मे बैठकर समूनगर मे शिकार करने के लिए रवाना हुआ यह मेरा एक नियत शिकारगाह है। 3 शहरीवार को खान आलम इस स्थान पर आकर मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ मै उसको ईरान के राजदूत के साथ ईराक भेजना चाहता था। उसने 100 मोहरे भेट की। समूनगर महावत खा की जागीर मे है। उसने नदी के तट पर एक बडा ही सुखद स्थान मेरे ठहरने के लिए बनाया। जो मुझे बहुत पसद आया उसने मुझे एक हाथी एक पन्ने की अगूठी भेट की। हाथी को मैने निजी तबेले मे दाखिल करवा दिया। 6 शहरीवार तक मै शिकार करने मे लगा रहा। इन थोडे से दिनो मे मैने 47 नर और मादा हिरन और अन्य जानवर मारे। इसी समय दिलावर खा ने मुझे एक लाल भेजी। इस्लाम खा के वास्ते मैने एक खास तलवार भेजी। हसन अली तुर्कमान का मनसब 1000 जात और 700 सवार था। इसमे मैने 500 जात और 100 सवार की वृद्धि कर दी। बृहस्पतिवार के अन्त मे और इसी मास की 20 तारीख को मरियम जमानी के निवास पर मेरी सौर तुला हुई। प्रचलित प्रथा के अनुसार

मुझे धातुओ और अन्य पदार्थो से तोला गया। इस वर्ष मैं 44 सौर वर्ष का हो गया था। इसी दिन ईरान के राजदूत यादगारअली और खानआलम को जिसको उसके साथ जाने के लिए आदेश हुआ था विदा दी गई। यादगार अली को एक जडाऊ जीन सहित घोड़ा, एक जडाऊ तलवार, एक जरीदार कुर्ती एक जांघा[1] और 30,000 रुपए नकद एवं सब मिलाकर 40,000 रुपए दिए। खानआलम को एक जडाऊ फूल कटार दिया जिसमे मोती का लटकन था। इसी मास की 22 तारीख को मैं हाथी पर बैठकर अपने पिता की कब्र पर बिहिस्ताबाद गया। मार्ग में 5 हजार रुपए के छोटे सिक्के बिखराए और 5 हजार रुपए दरवेशों में बांटने के लिए ख्वाजाजहां को दिये। सायकाल की नमाज गुजारने के बाद मैं नाव द्वारा वापिस नगर के लिए रवाना हुआ। इतिमादुद्दौला का मकान जमुना नदी के तट पर था इसलिए मै वहा उतरा और अगले दिन के अन्त तक वहा ठहरा। फिर मैं महल की ओर रवाना हुआ। इतिकाद खा का मकान जमुना नदी के तट पर था। उसकी प्रार्थना पर मैं बेगमो सहित वहा उतरा। अभी हाल में वहा उसने कई मकान बनावाये थे जिनमे मैंने घूमकर देखा यह सुखद स्थान मुझे बडा पसन्द आया। उसने रत्न, वस्त्र और अन्य उपयुक्त पदार्थ भेंट किए। सायकाल होने वाला था कि मैने शुभ महल मे प्रवेश किया।

अजमेर को प्रस्थान

ज्योतिषियों ने अजमेर को प्रस्थान करने हेतु इसी रात मे मुहूर्त निकाला था जब सोमवार 2 साहबान तदनुसार 24 शहरीवार को रात की 7 घडी व्यतीत हो चुकी तो मै बडी प्रसन्नता के साथ राजधानी आगरा से रवाना हुआ। इस प्रस्थान के 2 उद्देश्य थे। प्रथम उद्देश्य यह था मै ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के शानदार मजार की यात्रा करना चाहता था। इसी के आर्शीवाद से इस प्रतिष्ठित कुल को अनेक लाभ पहुचे है। इसकी पूज्य कब्र पर मै तख्त पर बैठने के बाद कभी नहीं गया था। दूसरा उद्देश्य था राणा अमरसिह को हराकर पीछे हटाना।

राणा अमरसिंह और मेवाड़

राणा अमरसिह एक बहुत ही प्रतिष्ठित जमीदार और हिन्दुस्तान का राजा है इसके और इसके पूर्वजों के नेतृत्व और बड़प्पन को इस प्रान्त के सब राजा

---

1. पगडी का अलकार।

और राय मानते हैं। प्रशासन इसी कुटुम्ब के हाथ मे रहा है। इन्होने पूर्व मे दीर्धकाल तक राज्य किया है। उस समय यह बडे प्रसिद्ध राजा माने जाते थे फिर इन लोगो ने दक्षिण मे जाकर उधर के कई मुल्को को जीत लिया राजा के बजाय अब इन्होने रावल की उपाधि ले ली है। फिर यह लोग मेवात (मेवाड) देश मे आये और धीरे–धीरे चित्तौड का दुर्ग इनके हाथ मे आ गया तब से अब तक जो मेरा तख्तनशीनी के बाद आठवा वर्ष है। 1471 वर्ष व्यतीत हो चुके है।

इसी जाति के 26 अन्य राजाओ ने 1000 वर्ष तक राज्य किया है। सर्वप्रथम रावल से वर्तमान राणा अमरसिह तक 26 व्यक्तियो ने 461 वर्ष तक राज्य किया है। इस दीर्धकाल मे उन्होने हिन्दुस्तान के बादशाहो की आज्ञा नही मानी है और न उनके सामने सिर झुकाया है। ये प्राय विद्रोह और उत्पात करते रहे है। स्वर्गीय बादशाह बाबर के समय मे राणा सागा ने इस प्रान्त के सभी राजाओ, रायो और जमीनदारो को एकत्रित करके बयाना के पास युद्ध किया था। उसके साथ 1 लाख 80 हजार सवार और कई हजार प्यादे थे। सर्व शक्तिमान ईश्वर की सहायता से और सौभाग्य से इस्लाम की विजयी सेना ने काफिरो की सेना पर विजय प्राप्त की और उनकी भारी पराजय हुई। इस लडाई का विवरण बादशाह बाबर ने अपनी तुजुक (आत्म जीवनी) मे किया है। मेरे पूज्य पिता (ईश्वर उसकी प्रकाशमयी कब्र को अनन्त अनुग्रह स्थान बनावे) ने इन विद्रोहियो को दबाने के लिए बडा प्रयास किया और उनके विरूद्ध कई बार सेनाए भेजी। तख्त पर बैठने के 12 वर्ष बाद उसने चित्तैड दुर्ग को जीतने के प्रयाण किया। यह ससार मे सबसे अधिक दृढ दुर्गो मे है।। मेरा पिता राणा के राज्य का अन्त करना चाहता था। 4 मास और 10 दिन के घेरे के बाद उसने यह दुर्ग अमरसिह के पिता से बडी लडाई के बाद छीन लिया इसको नष्ट करके वह वापिस आया। बार–बार विजयी सेना ने उससे आग्रह किया कि राणा को या तो गिरफ्तार किया जावे या उसको भगा दिया जावे परन्तु ऐसा नही हो सका। अपने राज्य के अन्त मे जिस दिन वह दक्षिण की विजय के लिए रवाना हुआ तो उसने एक बडी सेना और विश्वसनीय सरदारो के साथ मुझको राणा के विरुद्ध रवाना किया। सयोग की बात थी कि यह दोनो कार्य नही हो सके। इन कारणो का उल्लेख करने से वृतान्त बहुत लम्बा हो जायेगा। फिर मै तख्त पर बैठा। अभी यह काम अधूरा था। मैने प्रथम बार अपनी सीमा पर यही सेना भेजी थी। मैने अपने पुत्र परवेज को इसका नेतृत्व दिया था। साम्राज्य के प्रमुख उमरावो को जो उस समय राजधानी मे थे इस कार्य के लिए नियुक्त किया था। परवेज के साथ मैने बहुत सी धनराशि और तोपे

भेजी थीं। प्रत्येक काम के लिए समय निश्चत है जब होना होता है तभी काम होता है। इस समय खुसरू का दुखद मामला उठ खडा हुआ और उसका पीछा करने के लिए मुझे पजाब जाना पडा। प्रान्त और आगरा की राजधानी खाली रह गयी। आवश्यकता वश मैने परवेज को लिखा कि वह कुछ अमीरो के साथ वापिस आकर आगरा और उसके समींपस्थ प्रदेशो की देखभाल करे। साराश यह है कि इस बार फिर राणा वाला मामला इतना नही बना जितना बनना चाहिए था। जब अल्लाह के अनुग्रह से खुसरो के उत्पात के विषय मे मेरा मन शान्त हो गया और आगरा पुन शाही निशानो के लिए उपयुक्त स्थान बन गया तब महावत खा, अब्दुल्ला खा और अन्य सैनिक नेताओ के नेतृत्व मे मेने एक विजयी सेना नियुक्त की। तो जिस दिन शाही निशान अजमेर के लिए रवाना हुए उसी दिन से विजयी सेना ने इस प्रदेश को खूब खूदा। फिर भी इस मामले का स्वरूप अच्छा नही बना इसलिए मुझे ख्याल आया कि आगरा मे मुझे कोई कार्य नही है और मेरे गये बिना मेवाड वाला कार्य ठीक नही होगा। इसलिए मै आगरा दुर्ग से रवाना हुआ और दहरा बाग मे मैने मुकाम किया। प्रचलित प्रथा के अनुसार हाथी और घोडे सजाये गये। खुसरो की माताओ और बहनो ने बार–बार मुझसे निवेदन किया था कि अब उसको बडा पश्चाताप है तब पैतृक भावना और प्रेम का मुझ पर प्रभाव हुआ और मैने उसको बुलाया और आदेश दिया कि वह प्रतिदिन मुझे प्रणाम करने के लिए आया करे मै उस बाग मे 8 दिन तक ठहरा। 28 तारीख को खबर आई कि राजा रामदास की जिसको बगस प्रदेश मे और काबुल के आस–पास के इलाके मे सेवा करने के लिए किलीज खा के साथ भेजा गया था मृत्यु हो गई है। मिहर मास की 1 तारीख को मै बाग से रवाना हुआ। ख्वाजा जहा को आगरे के राजकोष की और महलो की रक्षा करने के लिए विदा किया और उसे एक हाथी और एक खासा खिअलत दी। दो मिहर को खबर आई कि राजा बसु की थाना शाहबाद मे मृत्यु हो गई है। शाहबाद राणा अमर की सीमा पर स्थित है। इसी मास की 10 तारीख को मै रूपवास ठहरा जो अब अमानाबाद कहलाता है। पहले यह इलाका रूप खवास को जागीर के बतौर दिया गया था। फिर यह महावत खा के पुत्र अमानउल्ला को दे दिया गया। मैने आदेश दिया कि उसका नाम रूपखवास के नाम पर ही रखा जावे इस मुकाम पर 11 दिन व्यतीत हो गये। यह एक नियत शिकारगाह है इसलिए प्रतिदिन मै शिकार पर जाया करता था। इसी मास की 25 तारीख को मै अमानाबाद से रवाना हुआ। 31 तारीख को तदनुसार 8 रमजान को ख्वाजा अबुल हसन जिसको मैंने बुरहानपुर से बुलाया था मेरी सेवा मे आया और 50 मोहरे, 15 जडाऊ पात्र

और एक हाथी मुझे भेट किये। मैंने हाथी निजी तबेले मे भेज दिया। 2 आबान तदनुसार 10 रमजान को किलीज खा की मृत्यु की खबर आई। वह सल्तनत का एक पुराना सेवक था और 80 वर्ष की आयु मे उसको ईश्वर की दया प्राप्त हुई। उसको पेशावर मे अफगानो के दमन के लिए नियुक्त किया गया था। उसका मनसब 6 हजार जात और 5 हजार सवार था। मुर्तजा खा दखिनी पल्टाबाजी मे जो समशेर बाजी भी कहलाती है अद्वितीय था। मैने यह कला कुछ समय तक उससे सीखी थी। इस समय मैने उसको वर्जिस खा की उपाधि दी। मैने यह प्रथा जारी की थी कि सुपात्र और दरवेश लोग प्रति रात्रि को मेरे सामने प्रस्तुत किये जावे। मै चाहता था कि स्वय उनकी स्थिति का पता लगाकर उनको सोना या वस्त्र दू। इनमे से एक आदमी ने मुझसे कहा कि अबजद (अका तिथि) के अनुसार जहागीर अल्लाह अकबर के समान है।[1] इसको मैने अच्छा शकुन समझकर उसे भूमि, एक घोडा कुछ नकद और कपडे दिये सोमवार 5 सवाल तदनुसार 26 आबान को अजमेर मे प्रवेश करने का मुहूर्त था। उस दिन प्रात काल मै उधर गया। जब दुर्ग और पूज्य ख्वाजा की दरगाह दिखाई देने लगी तो मैंने शेष मार्ग जो लगभग २ कोस का होगा पैदल तय किया। मैने मार्ग के दोनो और आदमी खडे कर दिये जो फकीरो और निर्धनो को रुपये बाटते जाते थे। जब 4 घडी व्यतीत हो गई तो मैने नगर मे प्रवेश किया और 5वी घडी मे मै दरगाह मे गया। वहा जाकर मै शुभ महल मे पहुचा और अगले दिन मैने आदेश दिया कि जो इस प्रतिष्ठित विश्राम स्थल मे हाजिर है चाहे वे छोटे हो या बडे और जो इस नगर मे रहते है या यात्री है मेरे सामने उपस्थित किये जावे ताकि उनको उनकी परिस्थितियो के अनुसार भेटे देकर सुखी किया जावे।

पुष्कर में शिकार और मन्दिर का ध्वंस

विस्तार सात आजर को मै पुष्कर तालाब को देखने और वहा शिकार करने गया । यह हिन्दुओ का प्राचीन तीर्थ है इसके विषय मे उनकी पुस्तको मे ऐसे वृत्तान्त है जिन पर किसी समझदार आदमी को विश्वास नही हो सकता है। पुष्कर अजमेर से 3 कोस दूर स्थित है। मैने 2–3 दिन तक जल कुक्कुटो का शिकार किया और फिर मै अजमेर लौट आया। इस मन्दिर के आसपास मन्दिर बने हुए है जो काफिरो की भाषा मे देवरा कहलाते है।

---

1 अबजद के अनुसार जहागीर और अल्लाह अकबर से 288 की सख्या बनती है।

इनमे से एक मन्दिर विद्रोही (राणा) अमर के चाचा राणा शकर ने बनवाया था। शकर मेरे राज्य मे उच्च श्रेणी की सरदार है। यह देवरा बडा भव्य है और उसके निर्माण मे एक लाख रुपये खर्च किए गये थे. मै इस मन्दिर को देखने गया। मैने देखा कि काले पत्थर की एक प्रतिमा रखी हुई है जिसका स्वरूप गर्दन से ऊपर सुअर का सा है शेष शरीर मनुष्य का सा था। हिन्दुओ के बेकार धर्म मे कहा गया है कि एक बार किसी विशेष उद्देश्य से परमात्मा ने इस स्वरूप मे प्रकट होना आवश्यक समझा मैने उस बेहूदा प्रतिमा को तोडकर तालाब मे फेकने का आदेश दिया। इस मन्दिर को देखने के बाद फिर एक पहाड़ी पर सफेद गुम्बद दिखाई दिया वहा सब ओर से लोग आया करते थे इसके विषय मे जब मैने पूछताछ की तो लोगो ने कहा कि वहा एक जोगी रहता है। जब सीधे साधे मूर्ख लोग उसके पास आते है तो वह उनके हाथ मे एक मुट्टी आटा दे देता है। जब वे इसको अपने मुख मे डालते है तो वे उस जानवर को भाति चिल्लाने लगते है जिसको इन लोगो ने कभी चोट मारी होगी। इस प्रकार उनके पाप मिट जाते हैं। मैने आदेश दिया कि इस स्थान को ध्वस्त करके जोगी को वहा से निकाल दिया जावे और गुम्बद मे जो मूर्ति है उसको भी तोड डाला जावे। इन लोगो का दूसरा विश्वास यह है कि इस तालाब को कोई पेदा नही है। पूछताछ करने के बाद मालूम हुआ कि यह बारह हाथ से अधिक कही भी गहरा नही है मैने इसके घेरे को नपवाया तो वह डेढ कोस निकला।

इसी मास मे खबर आई थी कि गोवा के फिरगी लोगो ने सन्धि के विरुद्ध माल से लदे हुए चार जहाज लूट लिये है जो सूरत बन्दरगाह और उसके पास आया जाया करते थे वह भी सूचना मिली कि इन लोगो ने बहुत से मुसलमानो को कैद कर लिया है और जहाजो मे जो माल और पशु थे उन पर कब्जा कर लिया है। मुझे यह बहुत बुरा लगा और मैने मुकर्रब खा को जो उस बन्दरगाह का हाकिम है 18 आजर को इस मामले की क्षतिपूर्ति करवाने के लिए रवाना किया। उस समय मैंने उसको एक घोडा और एक हाथी और एक बढिया खिअलत दी। सूबा दक्खिन मे यूसुफ खा और बहादुरुलमुल्क ने अच्छी सेवा की थी इसलिये मैने उनके लिए निशान भेजे।

यह लिखा जा चुका है कि ख्वाजा की यात्रा के बाद मेरा उद्देश्य विद्रोही राणा के मामले को समाप्त करना था इस लिये मैने अजमेर मे ही ठहरने का निश्चय किया और अपना भाग्यशाली पुत्र बाबा खुर्रम को उधर को उधर भेजा बहुत अच्छा विचार था इसलिये 6 तारीख को निश्चित मुहूर्त पर मैंने उसको आनन्दपूर्वक विदा किया। मैंने उसको एक जोरदार और रत्न पुष्पो से जडित का काबा दिया। एक जरीदार पगडी दी जिसमे मोतियो

की लड़िया लगी हुई थीं। इसके अतिरिक्त एक जरीदार कमरबन्द भी दिया जिसमे मोतियो की लड़ लगी हुई थी। फतेहगज नामक एक हाथी सारे साज सहित, एक खासा घोड़ा, एक जड़ाऊ तलवार एक जड़ाऊ खपवा और फूल कटार भी दिये। इस काम के लिए खानआजम के नेतृत्व मे जो आदमी पहिले नियुक्त किये गये थे उनके अलावा 12 हजार सवार मैने अपने पुत्र के पास भेजे और उनके नायको का पदानुकूल सम्मान करने के लिए उन्हे खास घोडे, हाथी और खिलअते देकर विदा किया। इस सेना का बख्शी फिदाये खा बनाया गया। इसी समय हाशिम खा के स्थान पर कश्मीर के प्रशासन के लिए सफदर खा को भेजा गया। उसको एक घोडा और एक खिलअत मिली। बुधवार ता. 11 को ख्वाजा अबुल हसन बख्शीकुल बनाया गया ओर उसे एक खिलअत दी गई। ख्वाजा की दरगाह शरीफ के लिए आगरे मे एक बडी देग बनाने का आदेश दिया गया था जो आज यहा (अजमेर) लायी गई और मैंने आदेश दिया कि अजमेर के गरीबो को बुलाकर मेरे सामने खिलाया जावे। 5000 लोग आये और सबने खूब खाना खाया, फिर मैंने अपने ही हाथ से प्रत्येक दरवेश को रुपये दिये। इसी समय इस्लाम खा सूबेदार बगाल का मनसब बढकार 6000 जात और 6000 सवार का दिया गया। मोअज्जम खा के पुत्र मुकर्रम खा को एक निशान बख्शा गया।

तारीख 1 इस्फन्दारमुज तदनुसार 10 मोहर्रम 1023 हिजरी (20 फरवरी 1614) को मैं अजमेर से नीलगाय का शिकार करने के लिये गया। 9 तारीख को वापिस आ गया। मै हाफिज जमाल के चश्मे[1] पर ठहरा जो नगर से दो कोस दूर है और वही शुक्रवार की रात व्यतीत की। सायकाल मैने नगर मे प्रवेश किया। इस 20 दिनो मे 10 नीलगाय मारे गये थे। मेरा ध्यान ख्वाजाजहा की अच्छी सेवा और आगरा के सरक्षण और प्रशासन के लिये उसकी छोटी सी सेना की ओर आकर्षित किया गया तो मैने उसके मनसब मे 500 जात और 100 सवार की वृद्धि कर दी। उसी दिन अबुल फतह दक्खिनी अपनी जागीर से मेरी सेवा मे आया। इसी मास की 3 तारीख को इस्लाम खा की मृत्यु का समाचार आया। वह वृहस्पतिवार 5 रजब 1022 हिजरी (21 अगस्त 1613) एक दिन मे ही यह अनिवार्य घटना घट गई। पहिले से इसका कुछ पता नही लगा। वह खानजादो मे से एक था। स्वभावत ही उसका स्वभाव अच्छा था और मामलो का उसे ज्ञान था। उसने बगाल का शासन पूर्ण अधिकार के साथ किया था और जो प्रदेश पहले किसी

---

1 हाफिज जमाल ख्वाजा मुईनुद्दीन की लडकी का नाम था यह चश्मा तारागढ के पीछे है और लोग इसको नूर चश्मा कहते हैं। अब ये जीर्ण स्थिति मे है। सर टामस रो ने यह चश्मा देखा था।

जागीरदार के कब्जे में नहीं थे या राज्य के किसी सामन्त के अधिकार में नहीं थे वे उसने अपने सूबा में सम्मिलित कर लिये। यदि मृत्यु इतनी जल्दी नहीं आती तो वह और अच्छी पूर्ण सेवा करता।

खानआजम– ने स्वयं प्रार्थना की थी कि राणा के विरूद्ध उसको नियुक्त कर दिया जावे। परन्तु उसको सब भांति मेरे पुत्र ने प्रोत्साहन दिया और सन्तुष्ट किया तो भी उसने काम में कम नहीं लगाया और अपने ही बेहूदा ढंग से काम करता रहा। यह बात सुनकर मैंने अपने एक विश्वसनीय सेवक इब्राहीमहुसैन को एक स्नेहपूर्ण सन्देश के साथ भेजा कि जब वह बुरहानपुर में था तो उसने ही यह कर्तव्य उसके हाथ में दिये जाने की प्रार्थना की थी और वह इसको लोक और परलोक के सुख का साधन समझता था। जब भी दरबार हुआ तो उसने कहा था कि यदि वह भारत जायेगा तो वह शहीद बन जायेगा ओर विजयी होगा तो गाजी कहलायेगा। उसने तोपखाने से जो भी तोपें चाहीं वें मैंने दे दीं इसके पश्चात उसने लिखा कि जब तक शाही ध्वज उस प्रदेश में नहीं पहुंचेगें तब तक इस काम को पूरा करना दुश्कर है। उसी की सलाह से मैंने अजमेर आकर आस–पास के इलाके को सम्मानित किया था। अब उसने स्वय शाहजादे के विषय मे प्रार्थना की और उसकी सलाह के अनुसार सब काम कर दिया गया तो रणभूमि से उसने अपना कदम पीछे क्यों हटाया और मतभेद क्यों उत्पन्न कर दिया। मैं बाबा खुर्रम से अब तक कभी जुदा नहीं हुआ था। उसको मैंने उस (खान आजम) पर भरोसा करके भेजा था। क्योंकि खान आजम का उधर के मामलो का ज्ञान था अब उसको चाहिये कि यह स्वामिभक्ति दिखाकर सदभावना प्राप्त करे और मेरे पुत्र के प्रति अपना कर्तव्य पालन में रात दिन लगा रहे और कभी प्रमाद न करे। इसके विपरीत यदि वह अपना कदम वापिस हटायेगा तो उसको जानना चाहिये कि इसको उत्पात माना जायेगा। इब्राहीम हुसैन ने जाकर ये सब बातें विस्तार पूर्वक उसके मस्तिष्क मे जमाने का प्रयास किया परन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। वह अपने निश्चय और मूर्खता से पीछे नहीं हटा। जब बाबा खुर्रम ने देखा कि उसके (खानआजम के) वहां रहने से गड़बड़ होती है तो उसने उसकी गतिविधि को ध्यान से देखना शुरू किया और निवेदन किया कि उसका वहां रहना किसी भी भांति उपयुक्त नहीं है। वह स्थिति को बिगाड़ रहा है। इसका कारण यह है कि खुसरो के साथ उसका सम्बन्ध हैं[1] तब मैंने महावत खां को आदेश दिया कि वह जाकर उदयपुर से उसको ले आवे। मोहम्मद ताकी को मैंने आदेश

---

1 खुसरो का विवाह खान आजम की पुत्री से हुआ था।

दिया कि मन्दसौर जाकर वह उस (खान आजम) के बच्चों और आश्रितों को अजमेर ले आवे।

इसी मास को 11 तारीख को खबर आई कि रायसिह का पुत्र राजद्रोही और विद्रोही है। उसको उसके छोटे भाई राव सूरजसिह ने जिसे उसको दबाने के लिये भेजा था बुरी तरह हरा दिया है परन्तु वह सरकार हिसार मे गडबड़ कर रहा है। इसी समय फौजदार हाशिम खोस्ती ने और उधर के आसपास के जागीरदारो ने उसको पकड कर दरबार मे भेजा उसने बार बार दुर्व्यवहार किया था। इसलिये उसको भारी दड दिया गया। इससे सब विद्रोहियों को चेतावनी मिली। इस सेवा के पुरस्कार स्वरूप राव सूरजसिंह के मनसब मे 500 जात और 200 सवार की वृद्धि की गई। इसी मास की 14 तारीख को मेरे पुत्र बाबा खुर्रम का पत्र आया कि राजा का प्रिय हाथी आलम गुमान और 17 अन्य हाथी शाही सेना के जो धावनो ने पकड़ लिये है और राजा को भी जल्दी ही पकड लिया जावेगा।

मेरे राज्यारोहण के पश्चात नवें वर्ष का उत्सव

मेरे मागलिक राज्यारोहण के बाद नवा वर्ष 1023 हिजरी (1664) मे शुरू हुआ।

शुक्रवार 9 सफर (21 मार्च 1664 ई) को जब विश्व प्रकाशक सूर्य मेष राशि मे था तो फर्वरद्दीन मास की 1 तारीख थी नया वर्ष था उत्सव अजमेर के सुखद प्रदेश मे मनाया गया जब सूर्य ने इस राशि मे प्रवेश किया और शुभ मुहूर्त आया तो मै सौभाग्यशाली तख्त पर बैठा महल को दुर्लभ कपडो से रत्नो से और रत्न जटित चीजो से सजाया गया था। इस अवसर पर आलम गुमान हाथी जो मेरे तबेले मे रखने योग्य था और 17 हाथी और हथनिया जो मेरे पुत्र बाबा खुर्रम ने राजा के हाथियो मे से छीन कर भेजे थे मेरे सामने प्रस्तुत किए गए तो राजावत लोगो के हृदय प्रफुल्लित हो गये। नये वर्ष के दूसरे दिन सवारी का मुहूर्त देखकर मैने उस पर बैठकर रुपये उछाले। तीसरे दिन इतकाद खा को 3000 जात और 1000 सवार का मनसब दिया। पहिले उसका मनसब 2000 जात और 500 सवार का था। उसको आसफ खा की उपाधि भी दी गई। उसके कुटुम्ब मे 2 व्यक्तियो को यह उपाधि पहिले ही दी जा चुकी थी मैने दयानत खा के मनसब मे 500 जात और 200 सवार की वृद्धि की। उसी समय इतिमादुद्दौला का मनसब 5 हजार जात और 2 हजार सवार कर दिया गया। बाबा खुर्रम का प्रार्थना पर मैने सेफ खा बारह के मनसब मे 500 जात और 200 सवार की वृद्धि की। इतनी ही वृद्धि दिलावर खा के मनसब मे कर दी। किशनसिह के मनसब मे 500 सवार और सरफराज खा के मनसब मे 500 जात और 300 सवार बढाए गए। रविवार ता 10 को आसफ खा की भेटे मेरे सामने प्रस्तुत की गई और 14 तारीख को इतिमादुद्दौला ने स्वय ही अपनी भेटे सामने रखी। इब्राहम खा को 700 जात और 300 सवार का और मनसब देकर 1500 जात और 600 सवार का मनसबदार बना दिया गया। इसी मास की 15 तारीख को महावत खा जिसका खान आसफ और उसके पुत्र अब्दुल्ला को लिवा लाने के लिये नियुक्त किया था मेरी सेवा मे आया। 19 तारीख को दरबार लगाया गया। उस दिन महावत खा की भेटे मेरे सामने रखी गई और मैंने रूप सुन्दर नामक एक विजयी हाथी मेरे पुत्र परवेज के लिए भेजा। जब वह दिन निकल गया तो मैने आदेश दिया कि खान आजम को आसफ

खां के सुपुर्द कर दिया जावे और उसे ग्वालियर के दुर्ग में रखा जावे। उसे दुर्ग मे भेजने में मेरा उद्देश्य यह था कि खुसरो से उसको प्रेम था इसलिए यह आशंका थी कि राज्य के मामले में वह कुछ गडबड करे या मतभेद हो जाये (इसके अतिरिक्त और कोई बात नही थी) इसलिए मैंने आदेश दिया कि उसको दुर्ग में कैदी की भाति नहीं रखा जावे उसके खाने कपडे आदि के आराम ओर सूमित का प्रबन्ध कर दिया जावे। उसी दिन मैंने चीनज खां का मनसब बढाकर 2500 जात और 700 सवार कर दिया। ताज खां को भक्कड का प्रान्त सुपुर्द किया गया था। उसके मनसब मे 500 जात और इतने ही सवारो की वृद्धि की गई।

खुसरो

18 उर्दी बिहिश्त को मैंने खुसरो का मेरे पास सलाम करने आना बन्द कर दिया। इसका कारण यह था कि पितृ प्रेम से प्रेरित ओर उसकी माता और बहनो की प्रार्थनाओं से प्रभावित होकर मैंने आदेश दिया था कि प्रतिदिन कुर्निश (प्रणाम) करने आया करे। परन्तु उसके चेहरे से कोई सुख या स्पष्टता प्रकट नही होती थी। वह अपने मन में दुखी और व्यथित रहा करता था। अत मैंने आदेश दिया कि वह कुर्निश के लिये नही आया करे।

मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और रुस्तम मिर्जा– मुजफ्फर हुसेन मिर्जा और रुस्तम मिर्जा दोनों सुल्तान हुसेन मिर्जा के पुत्र थे और शाह तहमास्प सफवी के भतीजे थे। कन्धार और जमीन्दावर उनके कब्जे में था। समीपस्थ प्रदेश भी उन्हीं के अधिकार में था। उन्होंने निवेदन पत्र भेजे कि खुरासान की समीपता और उधर की ओर अब्दुल्लाखां उजबेग के आगमन के कारण वे अपने प्रदेश को छोड़कर कुर्निश के लिये आने में असमर्थ है। इसलिये यदि बादशाह अकबर महम्म के किसी एक सेवक को भेज दे तो प्रदेश उसके सुपुर्द करके वे कुर्निश के लिये आ सकते हैं। उन्होंने ऐसी प्रार्थना बार–बार की इसलिये उस (अकबर) ने जमीन्दावर की और पास के प्रदेश की फौजदारी पर भेज दिया। मिर्जाओं को कृपापूर्ण फरमान लिखकर दरबार में बुलाया गया। उनके आने के बाद प्रत्येक के प्रति उनके पदानुसार कृपा की गई और उनको इतना प्रदेश दिया गया जिसकी आय कन्धार की आय से तीन गुनी थी। अन्त मे उनसे जैसे प्रबन्ध की आशा थी पूरी नही हुई और धीरे–धीरे वह प्रदेश बिगडने लगा। मुजफ्फर हुसेन मिर्जा मेरे पूज्य पिता के समय में ही मर गया और उस (अकबर) ने मिर्जा रुस्तम को खानखाना के साथ दक्खिन के सूबा में भेज दिया जहां उसको छोटी सी जागीर दे दी। जब मैंने शाही तख्त को सम्मानित किया तो मैंने उसको दक्षिण से बुलाया। मेरा

विचार था कि उसके प्रति कृपा प्रकट करके उसको किसी एक सीमा स्थित प्रदेश मे भेजा जावे। वह आया तो लगभग उसी समय ठट्टा, कन्धार और समीपस्थ प्रदेश के सूबादार की मृत्यु हो गई तो मैंने सोचा कि मिर्जा रुस्तम को ठट्टा भेज दिया जावे और वहा वह अपनी स्वाभाविक कुशलता प्रकट करे और उस प्रदेश का प्रशासन मेरी इच्छानुसार करे। मैने उसको 5000 जात और 5000 सवार का मनसब दिया और खर्च के लिये 20,000 रुपये नकद देकर सूबा ठट्टा भेज दिया। मेरा विश्वास था कि वह सीमा पर अच्छी सेवा करेगा। परन्तु उसने अच्छी सेवा नही की और लोगो पर ऐसे अत्याचार किये कि उन्होने उसकी दुष्टता की शिकायत की। ऐसे समाचार मिलने पर उसको वापिस बुला लेना आवश्यक समझा गया और दरबार का एक सेवक उसको बुलाने के लिये भेजा गया तो 26 उर्दीबिहिश्त को वह आ गया। उसने लोगो पर बडे अत्याचार किये थे। इसलिये न्याय की दृष्टि से यह आवश्यक था कि इसकी जाच की जाये। मैने उसको अणिरायसिह दलन के सुपुर्द करके आदेश दिया कि तथ्यो का पता लगाया जावे और यदि उसका अपराध प्रकट हो तो उसे तुरन्त दड दिया जावे जिससे अन्य लोगो को चेतावनी मिले।

अहदाद अफगान की पराजय

उन दिनो अहदाद अफगान के पराजय की भी खबर आई। बात यह थी कि मुताकिद खा पूलमगुजार आया जो पेशावर के जिले मे है। उसके साथ सेना थी। खानदौरा ने दूसरी सेना के साथ अफगानिस्तान मे आकर उस (एहदाद) का मार्ग रोक दिया। इसी बीच मे पिशबुलाग से मुताकिदखा के पास पत्र आया कि एहदाद कोर्ट तिराह गया है जो जलालाबाद से 8 कोस है। उसके साथ कितने ही सवार और प्यादे है और वह कितने ही राजभक्त ओर आज्ञाकारी लोगो को मार चुका है या बन्दी बना लिया है और उन्हे तिराह भेजने वाला है। उसका विचार है कि जलालाबाद और पिशबुलाग पर धावा किया जावे। इस समाचार के मिलते ही मुर्ताकिदखा बडी शीघ्रता से अपनी सेना सहित रवाना हुआ और पिशबुलाग पहुचकर उसने प्रदेश मे गुप्तचर भेजे कि शत्रु का पता लगाया जावे। बुधवार ता 6 के प्रात काल खबर आई कि एहदाद उसी स्थान पर है। ईश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करके जो हमेशा मेरे पक्ष मे है। उसने शाही सेना को दो भागो मे विभक्त किया और शत्रु की ओर प्रयाण किया। शत्रु के साथ 4–5 000 अनुभवी सैनिक थे और वे बडे अभिमान के साथ बेपरवाह होकर बैठे हुए थे। उनको यह सन्देह नही था

कि खानदौरा के अतिरिक्त पास मे ही एक दूसरी सेना भी है जो उनका सामना कर सकती है जब उसे खबर मिली कि शाही सेनाये आ रही है तो भयभीत होकर उसने अपने लोगो को 4 दलो मे विभक्त कर दिया और एक ऊँचाई पर बैठकर जो गोली की मार से बाहर थी और जिस पर चढना दुश्कर था उसने अपने आदमियो को लडने के लिये भेजा। विजयी सेना के बन्दूकचियो ने विद्रोहियो पर गोलियो चलाई और बहुत से सैनिको को नर्क मे भेज दिया मुताकिदखा अपनी सेना के मध्य भाग को आगे ले गया और शत्रु को इससे अधिक मौका नही दिया कि वह दो, तीन बार तीर चला सके। इसलिए उनको भगा दिया और 3–4 कोस तक पीछा करके उनके लगभग 1500 सवार और प्यादे मार दिये जो बचे वह भाग गये। उनमे से अधिकाश आहत हो गये थे। वह अपने शस्त्रो को फेक गये। विजयी सेना रातभर रणभूमि पर रही और प्रात काल 600 कटे हुए सिर साथ लेकर पेशावर की ओर चली और वहा उनके मीनारे बनाये। 500 घोडे, अगणित पशु और सम्पत्ति तथा बहुत से शस्त्र इस सेना के हाथ मे आये। तिराह के बन्दी मुक्त कर दिये गये। इस पक्ष के कोई प्रसिद्ध लोग नही मारे गये।

एक खुरदाद शुक्रवार को मुझ से कहा गया कि नकीब खा की मृत्यु हो गई। यह खान एक सेफी सईद था और कजवीन से आया था। उसके पिता मीर अब्दुल लतीफ की कब्र अजमेर मे है। इसकी मृत्यु से दो माह पूर्व इसकी पत्नी मर चुकी थी पति–पत्नी मे बडा प्रेम था। बारह दिन ज्वर से पीडित रहकर वह मरी थी। मैने आदेश दिया कि नकीब खा को उसकी पत्नी के पास ही दफना दिया जावे।। इसकी पत्नी की कब्र ख्वाजा के माननीय दरगाह मे थी। मुताकिद खा ने एदाद के साथ लडाई मे अच्छी सेवा की थी इसलिए पुरस्कार स्वरूप उसको लश्कर खा उपाधि दी गई। दयानत खा को उदयपुर बाबा खुर्रम की सेवा मे कुछ आदेश लेकर भेजा गया था उसने सात खूरदाद को वापिस आकर बाबा खुर्रम के बनाए हुए नियमो का अच्छा वर्णन किया। इसी मास की 12 तारीख को फिदायत खा की मृत्यु हो गई वह मेरी शाहजादगी के समय मे मेरा सेवक था। अपने राज्याभिषेक के बाद मैने उसको इस सेना का बख्शी बना दिया था। मिर्जा रुस्तम ने अपने बुरे कामो पर पश्चाताप और खेद प्रकट किया। इसलिए उदारता से प्रेरित होकर मैने उसके अपराध क्षमा कर दिये और उसको मास के अन्त मे अपने सामने बुलाया और सन्तुष्ट किया और खिलअत देकर आदेश दिया कि वह मुझे कुरनिश करे।

मिर्जा राजा मानसिंह

5 अमरदाद (1614 के जुलाई के मध्य) में खबर आई कि राजा मानसिंह की मृत्यु हो गई।[1] उक्त राजा मेरे पूज्य पिता के समय एक उच्च राज्याधिकारी था। दक्षिण मे मैंने बहुत से सेवक भेजे थे। इस राजा को भी मैंने वहां नियुक्त कर दिया। उसकी मृत्यु के बाद मैंने वहां मिर्जा भावसिंह को भेज दिया जो उसको वैध वारिस था। मैं शाहजादा था उस समय उसने मेरी अच्छी सेवा की थी। हिन्दू प्रथा के अनुसार इनके कुटुम्ब का मुखिया महासिंह होना चाहिए था क्योंकि वह राजा मानसिंह के ज्येष्ठ पुत्र जगतसिंह का पुत्र था। जगतसिंह की महासिंह के समय में मृत्यु हो गई थी। तथापि मैंने महासिंह को राजा नहीं माना और भावसिंह को मिर्जा राजा की उपाधि देकर 4 हजार जात और 3 हजार सवार का मनसब बना दिया। मैंने उसका पैतृक स्थान आमेर उसको दे दिया। महासिह के चित्त को शान्त करने के लिए पिछले मनसब मे 500 की वृद्धि कर दी। आग गढा के प्रदेश उसको ईनाम के रूप में दे दिया। मैंने उसके लिये एक जडाऊ खजर, एक घोडा और खिलअत भी भेजी।

जहांगीर अस्त-व्यस्त– इस अमूरदाद को मेरे स्वास्थ्य मे कुछ अन्तर मालूम हुआ और फिर धीरे–धीरे ज्वर और मस्तिष्क–पीडा रहने लगी। मुझे डर था कि देश को और खुदा के बन्दों को कुछ नुकसान न पहुंचे। इसलिए मैंने अस्वस्थता को मेरे निकटवर्ती और घनिष्ठ लोगों से छिपाया। इस प्रकार कुछ दिन निकल गये। मैंने यह बात केवल नूरजहा बेगम से कही क्योकि वह मुझसे सबसे अधिक प्रेम करती थी। मैंने भारी भोजन करना छोड दिया और हल्के भोजन से सन्तुष्ट रहने लगा। मैं नियमानुसार प्रतिदिन दिवान खाने में जाता था। झरोके में बैठता था और मेरे साधारण दिनचर्या के अनुसार गुसलखाने में जाया करता था। फिर मेरी खाल पर निर्बलता के चिन्ह दिखाई देने लगे। कुछ अमीरों को इसका पता लग गया उन्होने मेरे दो विश्वसनीय हकीम मसी–उज–जम्मा और अबुलकासिम और अब्दुलशुकर को सूचित किया। ज्वर नहीं उतरा और 3 रात तक मैं अपनी आदत के अनुसार मद्यपान करता रहा इससे मेरी निर्बलता बढ गई। जब मैं अशान्त था और निर्बलता से दबा हुआ था तो मैं पूज्य ख्वाजा की दरगाह में गया और वहां स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए सर्व शक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की और पुण्यदान किया। सर्व शक्तिमान ईश्वर ने दया करके मुझे स्वास्थ्य रूपी खिलअत प्रदान किया और शनै–शनै मैं स्वस्थ हो गया। मस्तिष्क–पीड़ा

---

1 राजा मानसिंह की मृत्यु जून सन 1614 में दक्खिन में हुई थी।

बडी तीव्र थी जो हकीम अब्दुल शकूर की चिकित्सा से जाती रही और 22 दिन में मेरी हालत ठीक हो गई। मैं पूर्ववत स्वस्थ हो गया। परमात्मा की इस दया के लिए महल के सेवकों ने बल्कि सारे लोगो ने भेंट दी। मैंने किसी की भेंट स्वीकार नहीं की और आदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही मकान पर जो चाहे गरीबों को बांट दे।

10 शहरीवर को खबर आई कि ठट्टा के सूबेदार की मृत्यु हो गई वह सल्तनत का एक पुराना सेवक था।

जहांगीर के कानों में बालियां

बीमारी के समय में मुझे ख्याल आया कि मेरे मन में तो ख्वाजा मुइनुद्दीन का दासो और उसी के प्रति मेरे जीवन के लिए मैं कहानी हू। मै अपने को उसका कान छिदा हुआ दास मानता हू। अब मुझे प्रत्यक्ष मे उसका कान छिदा दास बन जाना चाहिए। अत. बृहस्पतिवार 12 शहरीवर तदनुसार रजब को मैंने कान छिदवाकर चमकीले मोतियों की बालियां डलवायीं। जब महल के सेवको ने और मेरे वफादार मित्रो ने यह देखा तो जो लोग मेरे साथ थे और जो दूर के प्रदेशों में थे उन्होने भी उत्सुकता के साथ अपने कानों मे छेद करवा दिए और अपनी हार्दिकता मोतियों और लाल के द्वारा प्रकट की। यह मोती ओर लाल उनको निजी कोष से दी गई थी। इस प्रथा का संक्रमण अहदियों और अन्य लोगों तक पहुंचाया गया। बृहस्पतिवार के सायकाल इस मास की 22 तारीख को तद्नुसार 10 शहबान को मेरी सौर तुला दिवाने खारा में हुई और प्रचलित रस्में की गई। उसी दिन मिर्जा भावसिंह सन्तुष्ट होकर अपने प्रदेश को चला गया और वादा कर गया कि वह 2,3 मास से अधिक वहां नही ठहरेगा। मिहर मास की 27 तारीख को खबर आई कि फरदून खां बरलास की उदयपुर में मृत्यु हो गई। बरलास की कौम मे इसके सिवाय कोई आदमी नहीं बचा था। इस कौम ने सल्तनत की बडी सेवायें की थी और इसके साथ इसका बडा सम्बन्ध था तथा वे कृपाओं के अधिकारी थे इसलिए मैंने उसके पुत्र मिहर को एक हजार जात और एक हजार सवार का मनसब दिया। खान द्वारा की गई सेवायें मुझे पसन्द थी इसलिए उसके मनसब में 1 हजार की वृद्धि कर दी तो उसका मनसब 6 हजार जात और 5 हजार सवार हो गया। 6 आबान को शिकारियों ने खबर दी कि 6 कोस के अन्दर 3 शेर देखे गए हैं। दोपहर को रवाना होकर मैंने बन्दूक से इन तीनों को मार डाला।

दीवाली

इसी मास की 8 तारीख को दीवाली का त्यौहार आया। मैंने महल के सेवको को आदेश दिया कि वह मेरी विद्यमानता मे 2 या 3 रात तक खेल (जुए) खेले तो खूब हार जीत हुई। इस मास की 8 तारीख को लोग सिकन्दर मुइन शिकारी के शव को लेकर आये वह मेरा एक पुराना सेवक था। जब मै शाहजादा था तो मेरी बडी सेवा की थी। यह शव उदयपुर से लाया गया था जहा मेरे पुत्र खुर्रम के मुकाम थे। मैंने शिकारियो को और उसकी जाति के लोगो को आदेश दिया कि इसको राणा शकर के तालाब के तट पर दफना दिया जाए वह मेरा अच्छा सेवक था। इस्लाम खा ने अपनी जीवित अवस्था मे कूच बिहार के जमीनदार से 2 लडकिया छीन ली थी। यह प्रदेश पूर्वी प्रान्तो की सीमा पर स्थित है। यह दोनो लडकिया और जमीनदार का पुत्र तथा 94 हाथी मेरे सामने उपस्थित किये गए। दो मास मे एक विशेष रात्रि को मुझे बादशाह अकबर दिखाई दिया और उसने मुझसे कहा बाबा मेरी खातिर अजीज कोका खान आजम के अपराध क्षमा कर दो। इस स्वप्न के बाद मैंने निश्चय कर लिया कि उसको ग्वालियर के दुर्ग से बुला लिया जावे।

अजमेर के समीप एक नाला बडा सुन्दर है इसके अन्त मे एक चश्मा है जिससे एक लम्बा चौडा तालाब बन जाता है इसका पानी अजमेर मे सर्वोत्तम है इस नाले और चश्मे को हाफिज जमाल कहते हैं। जब मै वहा पहुचा तो मैंने आदेश दिया कि वहा एक उपयुक्त इमारत बनाई जावे। एक वर्ष मे वहा ऐसा मकान बन गया कि ससार मे घूमने वालो ने शायद ही कही देखा हो। मैंने आदेश दिया कि इसका नाम मेरे नाम पर रखा जाए तो ये चश्म–ए–नूर कहलाने लगा।

इत्र जहांगीरी– मुझे जहागीरी इत्र के विषय मे खेद होता है कि मेरे पिता के नाम को ऐसी सुगन्ध नहीं मिली। इस इत्र का आविष्कार नूरजहा बेगम की माता से प्रयास से हुआ था। जब वह गुलाब जल बना रही थी तो तश्तरियो के ऊपर छादन बन जाती थी। इन तश्तरियो मे गर्म गुलाब जल डाला जाता था। वह इस छादन को थोडा–थोडा करके एकत्र कर लेती थी। जब गुलाब जल बडी मात्रा मे तैयार किया जाता था तो इस प्रकार की छादन इकट्ठी करली जाती थी। इसकी सुगन्ध इतनी जोरदार होती है कि यदि हाथी पर एक बूद मसल दी जाए तो सारी सेना मे इसकी सुगन्ध फैल जाती है और ऐसा प्रतीत होता है कि गुलाब की अनेक क्यारिया एक दम खिल गई हैं। इसके बराबर और इतनी अच्छी दूसरी कोई सुगन्ध नहीं है। इससे हृदय और आत्मा की तृप्ति हो जाती है। इस आविष्कार के उपलक्ष मे

मैंने आविष्कार करने वाली को एक मोतियों की लड़ दी। सलीमा सुल्तान बेगम वहां उपस्थित थी उसी ने इसका नाम इत्र जहांगीरी रखा था।

भारतवर्ष के जलवायु में बड़ा अन्तर प्रकट हुआ। दो मास में लाहौर में जो ईरान और हिन्दुस्तान के बीच में है शहतूत वृक्ष के ऐसे फल आए कि उनमें साधारण ऋतुओं जैसी मधुरता और सुगन्ध थी। कुछ दिन तक लोग खाकर बड़े प्रसन्न रहे। वहां के वाकिया नवीसों ने यह लिखा था। इन्हीं दिनों में मख्तार खां कलवन्त आया जिसका आदिल खां से इतना निकट सम्बन्ध था कि उस (आदिल खां) ने अपने भाई की पुत्री का उससे विवाह कर दिया था और उसको धुपद सीखने के लिए अपना शिक्षक नियत किया। आदिल खां दरवेश के वेष में कभी कभी आता था। मैंने बख्तावर खां को बुलाकर उसकी परिस्थितियों के विषय में पूछा और उसको सम्मानित करना चाहा। पहले दरबार में मैंने उसका 10 हजार रुपये और कई प्रकार के कपडों के पचास थान तथा एक मोतियों की लड दी। उसको आसिफ खां का मेहमान बनाया और उसको (आसफ खां) आदेश दिया कि उसकी परिस्थितियों के विषय में पता लगावे। यह प्रकट नही हुआ कि वह आदिल खां की अनुमति के बिना ही आया था या आदिल खां ने उसको भेजा था कि वह इस दरबार के इरादो का पता लगावे और आदिल खां को सूचित करे। इसकी आदिल खां से रिश्तेदारी थी इसलिए यह बहुत संभव है कि यह आदिल खां की जानकारी के बिना नहीं आया होगा। इस विचार की पुष्टि जमालुद्दीन हुसैन ने भी की है जो बीजापुर में हमारा राजदूत था उसने लिखा है कि आदिल खां बादशाह जहांगीर ने जो बख्तावर खां पर कृपा की है, उससे बहुत प्रसन्न हुआ है। और तब से मुझ (जमालुद्दीन) पर भी बड़ी कृपा है वह प्रतिदिन मुझ पर नई नई कृपाएं करता था। वह रात में मुझे अपने पास रखता है और धुपद सुनाता है। जो आदिल खां की बनाई हुई है। और जिनको वह नौरस कहता है। शेष बातें में तब कहूंगा जब मुझे यहां से रुखसत कर दिया जाएगा।

उदयपुर का युद्ध

बहमन मास में एक के बाद दूसरी अच्छी खबर आने लगी। पहली खबर यह थी कि राणा अमरसिंह ने दरबार की आज्ञा मानना और सेवा करना स्वीकार कर लिया है। इस मामले का विवरण इस प्रकार है:–

मेरे भाग्यवान पुत्र सुल्तान खुर्रम ने स्थान–स्थान पर और विशेषकर अत्यन्त दुर्गम स्थानों पर जहां का जलवायु बड़ा दूषित था और बीहड़ वन

थे राणा के पीछे एक के बाद दूसरी सेना भेजकर थाने स्थापित कर दिये। शाहजादे ने भारी गर्मी या भारी वर्षा की कोई परवाह नही की। उस प्रदेश के निवासियो के कुटम्बो के लोगों को बन्दी बना लिया और राजा की स्थिति ऐसी कर दी कि या तो वह देश से भाग जाए अन्यथा उसको बन्दी बना लिया जायेगा। जब कोई उपाय नही दीखा तो राणा ने आज्ञा मानना और स्वामी भक्ति करना पसन्द किया और मेरे भाग्यवान पुत्र के पास अपने मामा सुभकरण को हरिदास झाला के साथ जो उसका एक विश्वस्त पुरुष था भेजकर प्रार्थना की कि यदि शाहजादा उसके अपराधो के लिए क्षमा की मुझसे से प्रार्थना करे और मेरे पजे का फरमान जारी कर दे तो वह (राणा) शाहजादे से आकर मिलेगा और अपने पाटवी पुत्र करण को दरबार मे भेज देगा और अन्य राजाओ की भाति दरबार से सेवको मे भर्ती हो जायेगा। राणा ने यह भी प्रार्थना की कि उसको दरबार मे उपस्थित होने की माफी दी जावे। क्योकि वह वृद्ध है। इसके अनुसार मेरे पुत्र ने राणा के इन प्रतिनिधियो को अपने दीवान मुल्ला शाहरुख और सुन्दरदास के साथ इस स्थिति के विषय मे निवेदन करने के लिए मेरे पास भेजा। इस मामले के निपट जाने पर मुल्ला शाहरुख को मैंने अफजल खा की और सुन्दरदास को राय रायान की उपाधि दी। मेरे विशाल मस्तिष्क मे सदैव यह इच्छा थी कि यथा सम्भव प्राचीन परिवारो को नष्ट नहीं किया जावे। वास्तविक बात यह थी कि राणा अमरसिह और उसके पूर्वजो ने अपने पर्वतीय प्रदेश और स्थानो की दृढता के अभिमान के कारण हिन्दुस्तान के किसी बादशाह से न मुलाकात की और न उसकी आज्ञा मानी थी तो अब मेरे राज्य मे यह काम हो जाये तो बहुत अच्छा हो। मेरे पुत्र की प्रार्थना पर मैंने राणा के अपराध क्षमा कर दिये और एक ऐसा कृपापूर्ण फरमान जारी किया जिससे उसको सन्तोष हो जाए। इस फरमान पर मैने अपना पजा लगा दिया। मैने अपने पुत्र को भी फरमान लिखा। यदि वह मामले को निपटा देगा तो मुझे बडा हर्ष होगा। मेरे पुत्र ने इस फरमानो को मुल्ला शाहरुख और सुन्दरदास के साथ राणा को सान्त्वना देने के लिए भेजा और उसको आशा दिलाई की शाही कृपा उसको प्राप्त हो जाएगी। इन लोगो ने राणा को वह कृपापूर्ण फरमान दिया जिस पर शुभ हस्त का पजा था और यह निश्चय हुआ कि रविवार तारीख 26 बहमन को उसके पुत्र के पास आकर सलाम करेगे।

दूसरी अच्छी खबर यह थी कि बहादुरशाह की मृत्यु हो गई। यह गुजरात के राजवश मे था और उस प्रदेश मे गडबड और उत्पात किया करता था। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने दया करके उसको समाप्त कर दिया। वह स्वाभाविक रोग से मरा था। तीसरी अच्छी खबर यह थी कि वर्जा

(पुर्चगीज)(वायसराय) जिसनें सूरत के बन्दरगाह और दुर्ग को छीनने का पूरा प्रयास किया था हार गया। सूरत के बन्दरगाह के मार्ग में अंग्रेजों और इस वायसराय में युद्ध हुआ था। अंग्रेजी जहाज इस बन्दरगाह में आ गये थे। अंग्रेजों ने अधिकांश (पुर्चगीज) जहाज जला दिया। अब वर्जा असहाय हो गया था और युद्ध जारी नहीं रख सकता था। इसलिये वह भाग गया। उसने मुकर्रबखां के पास जो गुजरात के बन्दरगाहों का हाकिम था किसी को भेजकर शान्ति के लिए द्वार खटखटाया और कहा कि "मैं शान्ति चाहता हूं लडाई करना नहीं अग्रेजो ने लडाई सुलगाई है। एक दूसरी खबर यह थी कि कुछ राजपूतो ने अम्बर (मलिक) को आक्रमण करके मार डालने का निश्चय कर लिया था। वे लोग घात मे बैठ गये और अवसर देखकर उस पर जा झपटे और उसके एक हल्का सा घाव लग गया। अम्बर के लोग राजपूत को मार कर उसको अपने डेरो मे ले गये। यदि घाव कुछ और अधिक होता तो उसका अन्त हो जाता।

राणा का आगमन-- उस मास के अन्त मे जब मै अजमेर के पास शिकार मे व्यस्त था तो मेरे भाग्यशाली पुत्र सुल्तान खुर्रम का सेवक मुहम्मद बेग एक रिपोर्ट लेकर आया कि राणा अपने पुत्रो सहित शाहजादे को सलाम करने आ गया है पूरा हाल रिपोर्ट में लिखा हुआ है। मैंने तुरन्त ही भूमि पर सिर टिका कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। मुहम्मद बेग को एक घोडा, एक हाथी और एक जडाऊ खंजर तथा जुलफीकारखा की उपाधि दी। रिपोर्ट से प्रकट हुआ कि रविवार 26 बहमन को राणा मेरे भाग्यवान पुत्र को शिष्टता पूर्वक मिला जैसे ऐसे मौके पर सेवक लोग मिलते है और भेट के रूप मे उसने एक प्रसिद्ध लाल पेश किया। इसके अतिरिक्त कुछ अलंकृत वस्तुये, सात हाथी भी जिनमें से कुछ मेरे निजी तबेले के योग्य थे और जो हमारे साथ नही आये थे और उसी के पास रह गये थे तथा 9 घोडे भी भेट किये।

राणा की खुर्रम से मुलाकात

मेरे पुत्र ने राणा के साथ पूर्ण कृपा का व्यवहार किया। जब राणा ने उसके पैर पकड कर अपने अपराधों की क्षमा चाही थी तो खुर्रम ने उसका सिर अपने सीने पर रखकर उसको सान्त्वना दी और उसे एक खिलअत, एक जडाऊ तलवार, एक जडाऊ जीन सहित घोडा, और चांदी के साज सहित एक हाथी दिया। राणा के साथ 100 से अधिक ऐसे आदमी नही थे जिनको पूरी खिलअते दी जावे। इसलिए शाहजादे ने 100 सरोपाव, 50 घोडे और 12 जडाऊ खपवा (खजर) दिये। जमींदारों में यह प्रथा है कि पिता के साथ

बड़ा पुत्र बादशाह या शाहजादे को सलाम नहीं करता। इसलिए राणा अपने कंवर को जिसका टीका हो चुका था अपने साथ नहीं लाया। ज्योतिषियो ने भाग्यशाली शाहजादे का उस स्थान से प्रस्थान को समय उसी दिन सायकाल निश्चित कर दिया था। इसलिए उसने राणा को विदा कर दिया। कर्ण ने भी आकर सलाम किया उसको भी शाहजादे ने एक खिलअत, एक जडाऊ तलवार और खंजर, एक सुनहरी जीन वाला घोडा और एक खासा हाथी दिया और कर्ण को अपने साथ लेकर वह इस कीर्तिमान दरबार की ओर चला। भाग्यवान शाहजादे ने इस मास की 10 तारीख शनिवार को देवरानी गांव के निकट मुकाम किया जो अजमेर के समीप स्थित है। तब यह आदेश दिया कि सब अमीर जाकर उससे मिले और प्रत्येक अमीर अपने पद के अनुसार अगले दिन रविवार तारीख 11 को शाहजादा की सेवा मे उपस्थित होवें। अगले दिन शाहजादा बडे ठाट के साथ विजयी सेना सहित आम दरबार मे आया। मुझसे उसके मिलने का मुहूर्त दोपहर और दो घडी दिन व्यतीत हो जाने पर था। उस समय उसने आकर कार्निस और तसलीम की। उसने मय 1 हजार असर्फी और एक हजार रुपये भेंट किये। एक हजार मोहर तथा एक हजार रुपये खैरात के लिए दिये। मैंने उसको आगे बुलाकर आलिगन किया और उसके सिर का चुम्बन किया और उसके साथ विशेष कृपापूर्ण मुलाकात की। फिर उसने भेटे और खैरातें पेश करके निवेदन किया कि कर्ण को तसलीम करने का सौभाग्य प्रदान किया जावे। मैंने आदेश दिया कि उसको बुलाया जावे। बख्शियो ने सब रस्मे पूरी की और उसको लाये। जब तसलीम और कार्निस हो चुका तो खुर्रम की प्रार्थना पर मैंने आदेश दिया किं उस (कर्ण) को सामने दाहिने हाथ की ओर बिठाया जावे। मैंने कर्ण को बहुत बढिया खिअलत और एक जडाऊ तलवार दी। तब अमीरो और मनसबदारो ने तसलीम करके सम्मान प्राप्त किया और अपनी भेटे प्रस्तुत की। प्रत्येक अमीर को अपनी सेवा और पद के अनुसार सम्मानित किया गया। कर्ण का स्वभाव जंगली था। वह पहाडियो मे रहा था और उसने कभी दरबार नहीं देखे थे। इसलिए मैं प्रतिदिन उस पर कृपाये किया करता था। उसके आगमन के दूसरे दिन उसको एक जडाऊ खंजर और तीसरे दिन जडाऊ जीन सहित एक ईराकी घोडा दिया। जिस दिन वह जनाने दरबार में उपस्थित हुआ तो नूरजहां बेगम की ओर से उसको एक जडाऊ खजर, एक जडाऊ तलवार, एक जीन सहित घोडा और एक हाथी दिये गये। इसके पश्चात मैंने उसको एक बहुमूल्य मोतियों की माला दी। फिर अगले दिन एक खास हाथी तलाईरे (साज) सहित्त दिया। मैं उसको प्रति प्रकार की भेटें देना चाहता था। इसलिए उसको तीन बाज, एक खास

तलवार, और दो अंगूठियां दीं। एक अंगूठी में लाल और दूसरी में पन्ना जडा हुआ था। मास के अन्त में मैंनें आदेश दिया कि सब प्रकार के कपडे गलीचे, तकिए, इत्र, स्वर्ण पात्र, दो गुजराती गाडियां और कपडे 100 खूणों में रखकर उसके पास भेजने के लिए तैयार किये जावें। तब अहदी लोग उन्हें दीवान–ए–आम मे लाये और वहां वे उसको दिये गये।

दरबारी शाबित खां अनुचित बातें किया करता था और इतुमादुद्दौला तथा उसके पुत्र आसफ खां की ओर अशोभनीय संकेत किया करता था। मैंने 1,2 बार प्रकट किया कि यह बातें मुझे पसन्द नहीं हैं और उससे कहा कि ऐसा नहीं किया करे परन्तु यह उसके लिए काफी नहीं था। इतमादुद्दौला की मेरे प्रति बडी सदभावना थी और उसके कुटुम्ब के साथ मेरा निकट सम्बन्ध था इसलिए यह मामला मेरे लिए दुर्बह हो गया। एक रात्रि को अकारण ही वह इतिमादुद्दौला से अप्रिय बाते करने लगा। यहां तक कि इतिमादुद्दौला के चेहरे पर परेशानी के चिन्ह दिखाई देने लगे तब अगले दिन मैने शाबित खां को दरबार के एक सेवक के सुपुर्द करके आसफ खा के पास भेजा और कहलाया कि "पिछले सायंकाल इसने तुम्हारे पिता से अप्रिय शब्द कहे इसलिए यह तुम्हारे सुपुर्द किया जाता है। इसको तुम या तो अपने पास या ग्वालियर के दुर्ग में रख दो। जब यह तुम्हारे पिता से क्षमा चाह लेगा तो मै इसके अपराध क्षमा करूगा। इसके अनुसार आसफखां ने उसको ग्वालियर के दुर्ग में भेज दिया। मैंने यह नियम बना दिया था कि दो पहर रात व्यतीत हो जाने पर उन दरवेशों और गरीब लोगों मेरे सामने प्रस्तुत किया जावे जो इस कीर्तिमान महल मे आये हुए है। इस वर्ष पूर्व प्रथानुसार मैंने हाथ से दरवेशों को 55 हजार रुपये और 1 लाख 90 हजार बीघा भूमि तथा 14 गांव पूरे 26 हल की जमीन-और 11 हजार खरबार चावल दिये। इसके अतिरिक्त 36 हजार रुपये मूल्य के 772 मोती भी मैने उन सेवकों को दिये जिन्होने राजभक्ति से प्रेरित होकर अपने कान छिदवाये थे।

उपरोक्त मास के अन्त में खबर आई कि रविवार तारीख 11 को जब साढ़े 4 घडी रात्रि व्यतीत हो चुकी थी तो बुरहानपुर नगर में सर्व शक्तिमान ईश्वर ने सुल्तान परवेज को एक पुत्र प्रदान किया है। यह शाहजादा मुराद की पुत्री से उत्पन्न हुआ था। मैने उसका नाम सुल्तान दूरअन्देश रखा।

राज्यारोहण के पश्चात दसवें वर्ष का उत्सव

मेरे राज्य के दसवे वर्ष के फरवरदीन मास के रविवार को 55 मिनट व्यतीत हो जाने पर सूर्य मीन राशि को छोडकर मेष राशि मे प्रविष्ट हुआ। उस दिन 1024 हिजरी के सफर मास की आठ तारीख थी और मार्च 1615 था। रविवार की रात्रि को तीन घडी व्यतीत होने पर मैं सल्तनत के तख्त पर बैठा। सदा की भाति नए वर्ष का उत्सव और तत्सम्बन्धित उपचार तैयार किये गए। यशस्वी शाहजादे, बडे बडे खान, सल्तनत के मत्री ओर प्रधान अफसरो ने बधाइया दीं और तस्लीम कीं। महीने की एक तारीख को इतिमादुद्दौला के मनसब मे जो 5 हजार जात और 2 हजार सवार था एक–एक हजार की वृद्धि कर दी गई। कुवर कर्ण, जहागीर कुली खा और राजवीर सिह देव को खास घोडे दिए गए। दो तारीख को आसफ खा की भेटे मेरे सामने रखी गई। इसी दिन एक जडाऊ तलवार और कमरपेटी कर्ण को और एक हाथी जहागीर कुली खा को दिया गया। मैने दक्खिन की ओर प्रयाण करने का निश्चय कर लिया था इसलिए अब्दुल करीम मामूरी को मैने आदेश दिया कि वह माडू जाकर मेरे निवास के लिए एक नया भवन का निर्माण करे और पुराने सुल्तानो की इमारतो की मरम्मत करवाये। ता 3 को राजा वीरसिह देव की भेटे मेरे सामने रखी गई तो मैने एक लाल कुछ मोती और एक हाथी स्वीकार कर लिया। चौथे दिन मुस्तफा खा के मनसब मे 500 जात और 200 सवार वृद्धि करके उसका मनसब दो हजार जात और 250 सवार का कर दिया। आसफ खा के मनसब मे एक हजार जात और इतने सवार बढाकर उसका मनसब 4 हजार जात और दो हजार सवार कर दिया। राजा वीरसिह देव के मनसब मे भी 100 सवारो की वृद्धि की गई और उसे अपने देश मे दिया। उसे हुक्म दिया गया कि निश्चित समय के लिए वह दरबार मे उपस्थित रहा करे और उसी दिन इब्राहीम खा की भेटे मेरे सामने प्रस्तुत की गई। सब प्रकार की वस्तुओ मे कुछ ऐसी थी जो मुझे पसन्द आई। राजा नगर कोट के पुत्र किशनचन्द को राजा की उपाधि देकर सम्मानित किया गया। छठे दिन जब बृहस्पतिवार था तो चश्म–ए–नूर मेरे सामने इतिमादुद्दौला की भेटे जमाई। एक बहुत बडा दरबार किया गया और अनुग्रह के रूप मे सारी भेट देखी गई। रत्न और जडाऊ चीजो और उत्तम कपडो मे से एक लाख की मूल्य की चीजे स्वीकार की गई और शेष वापिस कर दी गई।

किशनसिंह का मनसब दो हजार जात और एक हजार पाच सौ सवार था। सातवें दिन उसमें एक हजार की वृद्धि की गई। इसी दिन चश्म–ए–नूर के पास एक शेर मारा गया। आठवें दिन मैंने कर्ण को 5 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया और एक मोतियों की और पन्ना की माला दी जिसके बीच में एक लाल था जिसको हिन्दू लोग स्मरन कहते है मैंने इब्राहीम खां के मनसब में एक हजार जात और चार सौ सवार की वृद्धि करके उसका मनसब दो हजार जात और एक हजार सवार कर दिया। हजी–बी–उजबेग के मनसब में 300 सवारों की, राजा श्यामसिंह के मनसब में 500 जात की वृद्धि करके उसको 2500 जात और एक हजार चार सौ सवार का मनसब बना दिया। रविवार को नवे दिन सूर्य ग्रहण था उस समय दिन की 12 घडी व्यतीत हो चुकी थी। यह पश्चिम की ओर से शुरू हुआ और सूर्य के 5 भाग में से 4 भाग छिप गए। आरम्भ से मोक्ष तक आठ घडी व्यतीत हो गयी। धातुएं, पशु, तरकारिया आदि पुण्यार्थ फकीरों और गरीब लोगों को दी गई। इस दिन राजा सूरज सिह की भेटे मेरे सामने रखी गई और कुछ स्वीकार की गई। उनका मूल्य 43 हजार था। कन्धार के सूबेदार बहादुर खां की भेंट भी आज ही मेरे सामने प्रस्तुत की गई। इन सब का मूल्य 14 हजार था। सोमवार ता. 29 सफर (30 मार्च 1615) को जब दो घडी रात व्यतीत हो गई और धन राशि का जब आरोहण था तो बाबा खुर्रम के आसफ खां की पुत्री से एक पुत्र उत्पन्न हुआ मैने उसका नाम दारा शिकोह रखा है, मुझे आशा है कि इसका आगमन सल्तनत के लिए शुभ होगा। इसके पिता का भाग्य जगेगा और यह सल्तनत के लिए बनी रहेगी।

कांगड़ा

इस दिन मुर्तजा खां ने कांगड़ा दुर्ग को छीन लेने के लिये अनुमति प्राप्त की। पंजाब ही नहीं सारे संसार में इसके समान दृढ दुर्ग दूसरा नहीं है। हिन्दुस्तान में इस्लाम की अजान सुनाई देने लगी तबसे इस शुभ समय तक जब शाही तख्त को अल्लाह का यह बन्दा अलकृत कर रहा है किसी शासक या बादशाह ने इस दुर्ग पर कब्जा नहीं किया था। मेरे पूज्य पिता ने एक बार पंजाब की सेना इस दुर्ग के विरुद्ध भेजी थी और इसको दीर्घ काल तक उसने घेरा था परन्तु अन्त में सेना ने देखा कि यह दुर्ग नहीं लिया जा सकता। इसलिए उस सेना को दूसरे काम पर भेज दिया गया। मुर्तजा खां को विदा करते समय मैंने एक निजी हाथी साज सहित उसको दिया। राजा वासू का पुत्र राजा सूरजमल का मुल्क इस दुर्ग के समीप था। उसको भी

इस काम के लिए नियुक्त किया गया और उसके पहिले के मनसब मे 500 जात और 500 सवार बढा दिये गये।

राजा सूरजसिह भी अपने स्थान और जागीर से मेरी सेवा मे आया उसने 100 अशर्फी मेरे भेट की। 17 तारीख को मिर्जा रुस्तम की भेट मेरे सामने प्रस्तुत की गई। इनका मूल्य 15000 रुपये था। उसी दिन इतिकाद खा की 18000 रुपये के मूल्य की भेटे मेरे सामने रखी गई। 18 तारीख को जहागीर कुली खा की भेंट देखी गई। उसके रत्नो और कपडो मे से 15000 रुपये के मूल्य की भेटे स्वीकार की गई। 8 वे दिन वृहस्पतिवार जब दोपहर बाद साढे चार घडी व्यतीत हुई तो शरफ (सूर्य के विवाह) शुरू हुआ। इस शुभ दिन को मैं सुख और समृद्धि के साथ तख्त पर बैठा। लोगो ने तस्लीम की और मुझे बधाई दी। जब एक पहर दिन रहा तो मै चश्म–ए–नूर पर गया। निश्चय के अनुसार महावत खा की भेट उस स्थान पर मेरे सामने रखी गई। इनमे एक जडाऊ खपवा था। मूल्य मे इसके बराबर दूसरा खजर मेरे निजी कोष मे नहीं था। इसका मूल्य 100000 रुपये था। सब वस्तुये 13800 रुपये की थी वास्तव मे यह शानदार भेट थी। ईरान के राजदूत मुस्तफा बेग को मैने 20,000 दरब या 10,009 रुपये दिये। 21वे दिन अब्दुल गफूर के हाथ मैंने दक्खिन के 15 अमीरो के लिए खिलत भेजे राजा विक्रमाजीत को अपनी जागीर पर जाने की इजाजत दे दी गई और उसे एक खास शाल (परम नरम) दिया गया। उसी दिन राजदूत मुस्तफा बेग को कमर मे बाधने का एक जडाऊ खजर दिया गया। 23 तारीख को इब्राहीम खा को बिहार का सूबादार बनाया गया और जफर खा को आदेश दिया गया कि वह दरबार मे उपस्थित हो। इब्राहीम खा का मनसब 2 हजार जात और 1 हजार सवार था इसमे 500 जात और 1000 सवार की वृद्धि कर दी गई। उसी दिन सेफ खा को अपनी जागीर पर जाने की इजाजत दे दी गई। बहादुर उल–मुल्क दक्खिन की सेना मे था उसके मनसब मे 2500 जात और 2100 सवार की वृद्धि की गई। मैंने महावत खा को अपने खास घोडो मे से एक काला घोडा दिया जो ईरान के शाह ने मुझे भेजा था। सायकाल वृहस्पतिवार को मैं बाबा खुर्रम के निवास पर गया और रात के एक प्रहर तक वहा ठहरा उस दिन उसकी दूसरी भेटें मेरे सामने रखी गई। प्रथम दिन उसने तस्लीम करके मेरे सामने राणा की प्रसिद्ध लाल रखी। जिस दिन राणा उससे मिल आया तब यह लाल उसने भेट की थी। जौहरियों के इसका मूल्य 60,000 बतलाया परन्तु जितनी उन्होने प्रशसा की उतनी अच्छी यह नहीं थी। इसका वजन 8 टाक था। पहिले ये मालदेव के पास थी जो हिन्दुस्तान मे राठौड कौम का मुख्य राजा था, मालदेव ने यह लाल अपने

पुत्र चन्द्रसेन को दी जिसने अपने विपत्ति के दिनों में यह राजा उदयसिंह को बेच दी। उससे यह राजा प्रताप को और फिर राजा अमरसिंह को मिली। राणा के कुटुम्ब के पास इससे अधिक मूल्यवान भेंट नहीं थी। इसलिए यह मेरे भाग्यवान पुत्र बाबा खुर्रम को उसने मुलाकात के दिन भेंट की। इसके साथ साथ राणा ने अपने सारे हाथी जो हिन्दुस्तान में ठेट कहलाते हैं भेंट किये। मैंने आदेश दिया कि इस लाल पर यह खोद दिया जावे कि महाराजा अमरसिंह ने सुल्तान खुर्रम को भेंट की थी। उसी दिन बाबा खुर्रम की भेंटों में से कुछ मंजूर की गई। इनमें फिरंगीकारीगरी की एक डिबिया थी जो बडा कला के साथ बनाई गई थी। इसके अतिरिक्त कुछ पन्ने, तीन अंगूठियां, चार ईराकी घोडे और अन्य कई वस्तुयें थी इनका मूल्य 80,000 रुपये था। जिस दिन मैं खुर्रम के मकान पर गया तो उसने भारी भेट तैयार कर रखी थी। वास्तव में 4–5 लाख रुपये की दुर्लभ चीजें मेरे सामने रखी गई इनमें से 10,00,00 रुपए की चीजें रखकर शेष चीजें वापस लौटा दी।

28 तारीख को ख्वाजाजहां का मनसब 3 हजार जात और 1800 सवार था। 500 जात और 400 सवार की वृद्धि की गई। इस मास के अन्त में मैंने इब्राहीम खा को एक घोडा, एक जडाऊ खंजर, एक खिलअत, एक निशान और नक्कारे देकर सूबा बिहार में भेज दिया और फिर अर्ज मुकर्रब का महकमा ख्वाजगी हाजी मुहम्मद के पास था। उसकी मृत्यु हो जाने पर यह महकमा मैंने अपने विश्वसनीय व्यक्ति मुखलिश खां को दे दिया। कंवर करण का विदा का समय निकट आ गया था और मैं उसको दिखाना चाहता था कि मै बन्दूक का निशाना लगाने मे बडा कुशल हू। इसी बीच में शिकारियों ने खबर दी कि एक शेरनी घूम रही है। मेरी यह आदत थी कि मैं केवल नर शेरों को ही मारा करता था मादा शेरनियों को नही परन्तु मुझे यह ख्याल आया कि कुंवर करण की रवानगी से पहले शायद कोई दूसरा शेर नहीं मिले इसलिए मैं शेरनी के शिकार पर ले गया। मैने उसे कहा कि वह चाहे जहां मैं शेरनी के गोली मार सकता हू। फिर मैं शेरनी के स्थान पर गया। सयोगवश जोर की हवा चल रही थी और जिस हथनी पर में बैठा हुआ था वह शेरनी को देखकर डर गई थी और शान्त खड़ी नहीं रह सकती थी। इन दो विघ्नों के होते हुए भी मैंने शेरनी की आखं में गोली मारी। सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने मुझे उस राजकुमार के सामने लज्जित होने से बचाया। हम यह तय कर चुके थे कि उसकी आंख में गोली लगनी चाहिए और मेरी गोली उसकी आंख में लग गई उसी दिन करण ने मुझसे एक खास बन्दूक मांगी तो मैंने उसको एक तुर्की बन्दूक दी।

8 उर्दी बिहिस्त को मेरी चांद्र तुला हुई। मुझको चांदी और अन्य चीजों से तोला गया और इन पदार्थो को गरीब और सुपात्रों में बांट दिया गया।

नवाजिश खां को अपनी जागीर पर जाने की इजाजत दी गई। इसकी जागीर मालवा में थी, उसी दिन मैंने ख्वाजा अबुल हसन को एक हाथी दिया। नवें दिन खानआजम को मेरे सामने उपस्थित किया गया वह ग्वालियर के दुर्ग से आगरा आया था क्योंकि उसको बुलाया गया था। उसने अनेक अपराध किये थे और मैंने जो कुछ किया था उचित किया था। तथापि जब उसको मेरे सामने लाया गया और मेरी दृष्टि उस पर पडी तो उसकी अपेक्षा मुझे अधिक लज्जा आई उसके सब अपराधों को क्षमा कर मैंने उसको अपना निजी दुशाला दिया। मैंने कंवर करण को 1 लाख दरब दिये। उसी दिन राजा सूरजसिंह राणा रावत नामक हाथी लाया। यह उसका प्रसिद्ध हाथी था। और उसको वह मुझे भेंट करना चाहता था वास्तव में यह ऐसा दुर्लभ हाथी था जिसको मैंने अपने तबेले में रखा था। 10 वें दिन ख्वाजा जहां की भेंटें प्रस्तुत की गई जो उसने अपने पुत्र के साथ आगरा से भेजी थी। इनमें सब प्रकार की वस्तुएं थी और इनका मूल्य 40 हजार रुपये था। 12 तारीख को खान दौरा की भेंटें प्रस्तुत की गई। इनमें 45 घोडे, 2 ऊंट, अरबी कुत्ते बाज आदि थे। उसी दिन राजा सूरजसिंह को अन्य हाथी मेरे सामने भेंट स्वरूप लाये गये। इनको निजी तबेले मे रख दिया गया। संदेशवाहक आदिलखां के पास भेजा गया। मैंने उसको समझाया कि मित्रता में क्या लाभ है और शत्रुता में क्या हानि है। मैंने तहायुर खां से कहा कि आदिल खां से बात करते समय इन शब्दो को बार–बार दोहराये। और जब वह विदा होने लगा तो मैंने उसको कुछ वस्तुएं दीं। इस थोडे से समय में मेरी दी हुई और शाहजादों को दी हुई तथा अमीरों द्वारा अपने अपने पदानुसार दी हुई भेंटे मिलाकर एक लाख रुपये की हो गई थी। 14वें दिन मेरे पुत्र खुर्रम के पद और पुरस्कार का निश्चय हुआ। उसका मनसब 12 हजार जात और 6 हजार सवार था उसके भाई परवेज का मनसब 15 हजार जात और 8 हजार सवार था। मैंने आदेश दिया कि खुर्रम का मनसब परवेज के मनसब के बराबर कर दिया जावे। अन्य पुरस्कारों के अतिरिक्त मैंने पंचीगज नाम का निजी हाथी साज सहित दिया। यह साज 12 हजार रुपये का था। 16 तारीख को महावत खां को भी एक हाथी दिया गया। 17 तारीख को राजा सूरजसिंह के मनसब में जो 4 हजार जात और 3 हजार सवार था 1000 की वृद्धि कर दी गई और उसको पंच हजारी बना दिया गया। खानआजम का पुत्र रणथम्भौर के दुर्ग में बन्दी था। उसके पिता की प्रार्थना पर उसको बुला लिया गया वह दरबार में आया तो मैंने उसके पैरों की बेड़ियां हटवाकर उसके पिता के पास भेज दिया। 24 तारीख को राजा सूरजसिंह ने एक दूसरा हाथी मुझे भेंट किया। इसका नाम फौज श्रृंगार था यह भी अच्छा

हाथी है और मेरे निजी तबेले मे रख दिया गया है। परन्तु इसकी पहले हाथी, जो उसने भेजा था और जो इस युग मे आश्चर्यजनक प्राणी है, से कोई तुलना नही हो सकती। पहले हाथी का मूल्य 20000 रुपये है। उसी दिन ख्वाजा जैनुउद्दीन जो नक्षबन्दी ख्वाजाओ में से हैं मावरुनहर से मेरी सेवा में आया और भेट स्वरूप 18 घोडे लाया। काजिलबास खां गुजरात प्रान्त के सहायको मे से था। वह सूबादार की इजाजत के बिना ही दरबार में आ गया था मैने आदेश दिया कि एक अहदी उसको कैद कर ले और फिर उसको गुजरात के सूबादार के पास भेज दे। जिससे दूसरे लोगों को ऐसा काम करने की इच्छा न हो। 29 तारीख को मैने खानआजम को 1 लाख रुपये दिये और यह आदेश दिया कि दशना और कशना[1] के परगने उसको जागीर मे दिये जाये। यह दोनो परगने 5000 जात के बराबर थे। मास के अन्त मे मैने जहागीर कुली खा उसके भाईयों और अन्य सम्बन्धियो को इलाहाबाद जाने की इजाजत दे जो उन्हे जागीर में दिया गया था। आज की मुलाकात मे कारण को 20 घोडे एक कबा जो कश्मीरी कपडे का था, 12 हिरण और 10 अरबी कुत्ते दिये। अगले दिन खुरदाद की पहली तारीख थी। इस दिन कुवर करण को 41 घोडे और उतारी का 20 घोडे इस प्रकार 3 दिन मे 101 घोडे भेंट मे दिये। फौज श्रृगार हाथी के बदले मे मेरे निजी तबेले मे से एक 10 हजार का हाथी राजा सूरजसिह को दिया गया। इस मास की 5 तारीख को 10 चिरा (पगडियां) 10 कोट (कबा) और 10 सदरिया करण को दी गई। 20 तारीख को मैंने उसे एक दूसरा हाथी दिया।

मुल्ला गदाई— इन दिनो कश्मीर के वाकिया–नवीश ने लिया था कि गदाई नाम के एक मुल्ला ने जो एक संयमी दरवेश है और जो उस नगर की दरगाह मे 40 वर्ष से रह रहा है उस दरगाह के वारिसों से मरने के 2 वर्ष पूर्व कह दिया था कि वह अपने दफन के लिए वहां एक कोना तलाश कर लेगा। तो उन लोगों ने उसको अनुमति दे दी थी। साराशं यह है कि उसने स्थान पसन्द कर लिया। जब समय आया तो उसने अपने मित्रो, सम्बन्धियों और इष्ट जनो से कहा कि अब उसके नाम प्राणोत्सर्ग का आदेश आ गया है इसलिए उसको संसार से उठकर जाना है। पास खड़े हुए लोगों को आश्चर्य हुआ कि ऐसी बातं तो पैगम्बरों ने भी नहीं की थी। फिर उसने अपने विश्वसनीय आदमी से कहा जो वहां के काजी का एक पुत्र था मैंने एक कुरान लिखी है जो 700 टंक की है। यह कीमत मेरी कब्र बनाने पर खर्च

---

1 यह दोनों परगने सरकार दिल्ली में थे।

कर देना। जब आप लोगों को जुमा की नमाज की अजान सुनाई दे तो मेरे विषय में तलाश करना। यह बातचीत वृहस्पतिवार को हुई थी। उसने अपने कमरे का सारा सामान अपने परिचितों और शिष्यों में बांट दिया और वह चला गया और दिन के अन्त मे गुसलखाने में उसने स्नान किया। उपरोक्त गाजीजादा नमाज से पहले आया और मुल्ला के स्वास्थ्य के विषय में उसने पूछताछ की। जब वह मुल्ला के कमरे के दरवाजे पर आया तो उसने देखा कि दरवाजा बन्द है और वहा एक नौकर बैठा हुआ है। पूछने पर नौकर नें कहा मुल्ला ने मुझे हिदायत दी है कि जब दरवाजा स्वतः ही खुल जावे तो अन्दर जाऊं। इन शब्दों के बाद तुरन्त ही कमरों का दरवाजा खुल गया। काजीजादे ने उस सेवक के साथ कमरे में प्रवेश किया तो देखा कि मुल्ला घुटनों के बल खडा है और उसका चेहरा किबला की ओर है। वह अपनी आत्मा ईश्वर की अर्पण कर चुका था। जो लोग संसार से इस प्रकार विदा होते हैं ओर अपने जालों का आसानी से हटा देते है वे लोग धन्य है।

करमसेन राठौर के मनसब में रजाजात और 50 सवार बढाकर उसका मनसब एक हजार जात और 300 सवार कर दिया गया। इसी मास की 11 तारीख को लश्करखां की भेंट मेरे सामने प्रस्तुत की गई इनमे तीन ईरानी ऊंट और चीन के 20 प्याले और तश्तरियां और 20 अरबी कुत्ते थे। 12 तारीख को इतिवार खां को एक जड़ाऊ खंजर और करण को दो हजार रुपये की 12 कलंगी दी गई। 14 तारीख को सरबुलन्दराय (रावरतन बूदी) को दक्खिन जाने की इजाजत दी गई।

आठ तारीख को मोरान सरद जहां अपने स्थान से आया और एक सौ मोहरें मुझे भेंट करने के लिए लाया। राय सूरजसिंह को दक्खिन में अपना कर्तव्य पालन करने के लिए भेज दिया। मैंने उसको कानों के लिए दो मोती और एक कश्मीरी दुशाला दिया। खां जहां के वास्ते भी दो मोती भेजे गए। 25 ता. को मैंने इतिबारखां के मनसब में 600 सवारों की वृद्धि कर दी तो उसका मनसब 5 हजार जात और दो हजार सवार हो गया। उसी दिन कर्ण ने अपनी जागीर पर जाने के लिए इजाजत ले ली उसको एक घोड़ा, एक खास हाथी, एक खिलअत 50 हजार रुपए की मोतियों की माला और एक जड़ाऊ खंजर दिया जो दो हजार रुपए में तैयार हुआ था। वह मेरे पास आया और विदा हुआ तब से उसको दो लाख रुपए की चीजें मिल चुकी थी। इनके अतिरिक्त 110 घोड़े और 5 हाथी थे। समय समय पर मेरे पुत्र खुर्रम ने उसको भेंट दीं वह जुदा है। मैंने मुबारिकखां शिकारी को एक घोड़ा और हाथी दिया और कर्ण के साथ भेजा। और राणा से कई मौखिक बातें कहलायी। राजा सूरजसिंह ने भी स्वदेश लौट जाने की इजाजत मांग ली। उसने वायदा किया था कि दो मास में वह वापिस आ जायेगा।

8 तारीख को मैंने हुशंग को इकराम खा की उपाधि से सम्मानित किया। रोज अफजून सूबा बिहार का एक राजकुमार था। अपने युवाकाल से वह दरबार का एक स्थाई सेवक था। उसका इस्लाम धर्म मे प्रवेश करके उसके पिता राजा सग्राम[1] के प्रदेश का राजा बना दिया। संग्राम सल्तनत के उच्चाधिकारियो का विरोध करता हुआ मारा गया था तो भी मैंने रोज अफजों को एक हाथी दिया और अपने स्थान को जाने की उसे इजाजत दी। जहांगीर कुली खां को एक हाथी दिया गया।

मेवाड़ का राजकुमार जगतसिंह

24 तारीख को कंवर करण का पुत्र जगतसिंह अपने दादा राणा अमरसिंह जो 12 वर्ष का था मेरी सेवा में आया और अपने दादा राणा अमरसिह और अपने पिता की ओर से उसने अर्जियां प्रस्तुत की उसके चेहरे पर उच्चकुल की सज्जनता के चिन्ह स्पष्ट दृष्टिगोचर होते थे। मैंने उसको एक खिलअत देकर और उसके साथ कृपापूर्ण व्यवहार करके प्रसन्न किया।

मिर्जा ईसा तरखान के मनसब में 200 जात की वृद्धि कर दी गई जिससे उसका मनसब अब 1200 जात और 300 सवार का हो गया। इस मास के अन्त मे शेख हसन सहिला को मुबारिजखा की उपाधि से सम्मानित किया गया और उसे अपनी जागीर पर भेज दिया। मिर्जा सरफूद्दीन हुसैन काश्गरी अभी चौखट चुम्बन का सम्मान प्राप्त करने के लिये आया था उसके रिश्तेदारों को 10,000 दरब (5000 रुपए) दिये गये। 5 अमरदाद को राजा नथमल के मनसब में 500 जात ओर 100 सवार बढा दिये गये पहले उसका मनसब 1500 जात और 1100 सवार था। 7 तारीख को केशवदास माल को दरबार मे बुलाया गया। सरकार ओरिसा में उसकी जागीर थी। वहां के फौजदार के विरूद्ध उसने शिकायत की थी। उसने 4 हाथी भेंट किये। मैंने अपने फरजन्द खां जहां (लोदी) को बुलाया मैं दक्खिन सम्बन्धी महत्वपूर्ण मामलो के विषय में उससे पूछताछ करना चाहता था। इसी मास की 8 तारीख को उसने आकर मुझे 1000 मोहरें, 1000 रुपए, 4 लाल, 20 मोती, 1 पन्ना ओर 1 जडाऊ फूल कटार भेंट किए इन सबका मूल्य 50,000 रुपए होता था। रविवार की रात्रि को ख्वाजा मोइनुद्दीन का वार्षिक उत्सव था मैं उसकी पवित्र दरगाह पर गया और मध्य रात्रि तक वहीं ठहरा। वहां उपस्थित लोगो को और सूफियों का हाल (अतिरेक) हुआ। मैने फकीरों को

---

1 संग्राम बिहार से खडगपुर का राजा था और जहांगीर कुली खां के साथ लडाई करता हुआ मारा गया था।

अपने हाथ से छः हजार रुपए नकद और 100 कुत्ते 70 मोतियों की मूंगा की और अम्बर की तश्विया दीं। राजा मानसिंह के पोते महानसिंह को राजा की उपाधि से और नक्कारों से सम्मानित किया गया। 16 तारीख को महावतखां को मेरे निजी तबेले से एक इराकी घोड़ा और एक दूसरा घोड़ा दिया। 19 तारीख को खान आजम को एक हाथी दिया। 20 तारीख को केशवदास मारु के मनसब में 200 सवार बढ़ाए गए। पहले इसका मनसब 2 हजार जात और 100 सवार था। उसको एक खिलअत देकर भी सम्मानित किया गया। ख्वाजा आकिल के मनसब में 200 जात और 200 घोड़े बढ़ाए गए। पहले इसका मनसब 1200 जात और छः सौ सवार था। 22 तारीख को राजा मानसिंह ने आमेर जाने की इजाजत मांगी। यह उसका पुराना स्थान है। उसको एक खास कश्मीरी पोशाक दी गई। 25 तारीख को अहमद बेगखां जो रणथम्भौर में कैद था। दरबार में उपस्थित हुआ। उसकी पिछली सेवाओं को देखकर उसके अपराध क्षमा कर दिए गए थे। 28 तारीख को मुकर्रखा सूबा गुजरात से मेरी सेवा में आया और उसके एक जड़ाऊ सरपेच और जड़ाऊ तख्त भेंट किया। सलाम—उल्ला अरब के मनसब में 500 जात और 500 सवार की वृद्धि की गई तो उसका मनसब 2 हजार जात और 1100 सवार हो गया।

16 तारीख की रात्रि को शब—ए—बरात थी। यह मेरे पूर्वजों का दिन था मैंने आदेश दिया कि आना सागर के चारों की पहाड़ियों पर और उसके किनारों पर दीपक जलाए जायें। स्वयं उनको देखने गया। दीपकों को प्रतिबिम्ब पानी में पड़ता था। जो बहुत ही अच्छा लगता था। मैंने अधिकांश रात्रि अपनी महल की महिलाओं के साथ उस तालाब के तट पर व्यतीत की।

17 तारीख को मिर्जा जमालुद्दीन हुसैन जिसको राजदूत के रूप में बीजापुर भेजा गया था। मेरी सेवा में आया। उसने 3 अंगूठियां भेंट कीं। इनमें से 1 का नगीना यमन का कोरनेलियन था। यह बड़ा सुन्दर था और इसमें पानी बड़ा साफ था। इस प्रकार का नगीना चमन में भी दुर्लभ है। पागलखाने अपनी ओर से सैयद कबीर खां नामक पुरुष को मिर्जा जमालुद्दीन हुसैन के साथ भेजा और हाथी सोने और चांदी के साज सहित, अरबी घोड़े, जड़ाऊ चीजें, उस देश के बने सभी प्रकार के कपड़े भेजे। इस मास की 24 तारीख को राजदूत मुस्तफाबेग ने विदा ली। जब वह यहां उपस्थित था उस समय उसको जो चीजें दी गई थीं इनके अतिरिक्त अब इसको 20,000 रुपए नकद और 1 खिलयत और आदिल खां के पत्र के उत्तर में पूर्ण मित्रता सूचक पत्र दिया गया। मिहर मास की 4 तारीख को मीर जमालुद्दीन हुसैन का मनसब 4 हजार जात और 2 हजार कर दिया गया। इससे पहले

यह मनसब 2 हजार जात और 500 सवारो का था। 5 तारीख को महावत खा और खानजहा को जिन्हे दक्षिण मे सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था रुखसत ली यह महावत खा के प्रस्थान का दिवस था। उसको एक खिअलत एक जडाऊ खजर, एक फूल कटार, एक खास तलवार और एक हाथी देकर सम्मानित किया गया। 8 तारीख को खानजहा ने भी इजाजत ली मैने उसको 1 खिलअत एक खास नादिरी (पोशाक) और जीन सहित घोडा, एक खास हाथी ओर एक तलवार दी उसी दिन महावत खा के नेतृत्व मे काम करने वाले 1700 सवार वाले लोगो के विषय मे आदेश हुआ कि वे 2 या 3 घोडो की तनख्वा और ले सकते है। इस समय दक्षिण मे सेवा करने के लिये नियुक्त किए हुए लोगो की सख्या इस प्रकार थी। 320 मनसबदार, 3 हजार अहदी, 700 उयमक के 700 घोडे और 3 हजार दलजाऊ अफगान सब मिलकर 3 हजार सवार और 30 लाख का कोष, एक अच्छा तोपखाना और जगी हाथी थे। यह सब अपने काम पर रवाना हो गये। सरबुलन्द राय का मनसब 500 जात और 260 सवार से बढाकर 2 हजार जात और 1500 सवार कर दिया। किलिच खा के भतीजे वंलजु का मनसब 1 हजार जात और 700 सवार कर दिया गया। मैने राजा किशनदास के मनसब मे 500 की वृद्धि कर दी। खाजहा की प्रार्थ॰ग क़र शाहवास खा लोदी का मनसब 2 हजार जात और 1000 सवार कर दिया। वह दक्षिण की सेना मे था। वजीर खा के मनसब मे 200 सवार बढा दिये गए। मिर्जा रुस्तम के पुत्र सुहराब खा का मनसब 1 हजार जात और 400 सवार कर दिया गया। इसी मास की 14 तारीख को मीर जमालुद्दीन हसन के मनसब मे 1 हजार की वृद्धि की गई। अब इसका मनसब 500 जात और 2500 सवार हो गया। 19 तारीख को राखा सूरजसिह अपने वतन से आया और मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ। उसके साथ उसका पुत्र गजसिह था। उसने 100 मोहरे और 1 हजार रुपए भेट किए। आदिल खा ने सईद कबीर को मेरे पास भेजा था। मैने उसको एक नूरजहानी मोहर दी जिसका वजन 500 तुलचा था। 23 तारीख को 90 हाथी मेरे सामने उपस्थित किए गए और खास हाथी खाने मे रखे गये। ये उन हाथियो मे से थे जो कासिम खा ने कूच बिहार से और माघ लोगो से तथा उडीसा के जमीदारो से जीते थे। 26 तारीख को इरादत खा को मीर सामानी (हैड बटलर) का पद दिया गया और मुतामद खा को अहदियो का बख्शी बनाया गया। मुहम्मद रिजा जाविरी को सूबा पजाब का बख्शी और वही का वाकियानवीस नियुक्त किया गया। सईद कबीर आदिल खा की ओर से मेरे पास आया था। उसने दक्षिण के शासको के अपराधो की क्षमा चाही थी और वायदा किया था कि अहमद नगर का तथा कुछ विद्रोहियो के

उत्पात के कारण जो शाही प्रदेश ले लिया गया है वह वापिस कर दिया जावेगा। अब उसने विदा ले ली। मैने उसको खिलअत एक हाथी और एक घोडा दिया। राजा राजसिह कछावा की दक्षिण मे मृत्यु हो गई थी। मैने उसके पुत्र रामदास को 1 हजार जात और 400 सवारो का मनसब दिया। 4 आबान को सेफखा को नक्कारे दिए और उसके मनसब मे 300 सवार बढा दिए तो उसको मनसब 3 हजार जात और 2 हजार सवार हो गया। उसी दिन मैंने राजा मान को जो ग्वालियर के दुर्ग मे कैद था छोड दिया और उसका मनसब बहाल करके उसको मुर्तजा के पास कागड दुर्ग मे काम करने के लिए भेज दिया। मुर्तजा खा ने उसकी जमानत दी थी। खानदारा की प्रार्थना पर सादिक खा के मनसब मे 300 सवारो की वृद्धि की गई तो उसका मनसब 1 हजार जात और इतने ही सवारो का हो गया। मिर्जा ईसा तरखान सभल के प्रदेश से आया। जो उसकी जागीर थी। उसने मुझको 1 हजार मोहरे भेट की। 16 तारीख को राजा सूरजसिह ने दक्षिण मे अपने काम पर जाने की इजाजत मागी। मैने उसके मनसब मे 300 सवार बढा दिये। इस प्रकार उसका मनसब 5 हजार जात और 3300 सवार हो गया। उसको 1 खिलअत और एक घोडा दिया गया और वह रवाना हो गया। 18 तारीख को मैने मिर्जा ईसा के 1500 जात और 800 सवार के मनसब की पुष्टि कर दी। उसे एक हाथी और एक खिलअत भी दी और उसने दक्षिण मे जाने की इजाजत ले ली।

उसी दिन जहागीर कुली खा का पत्र आया जिसमे चिन किलिच खा की मृत्यु की खबर थी। किलिच खा सल्तनत का एक पुराना सेवक था। उसकी मृत्यु के बाद मैने इस अशुभ व्यक्ति को अमीर बना दिया था और उस पर बडी कृपा करके जौनपुर जैसे प्रदेश मे जागीर दे दी थी। मैने उसके भाइयो और रिश्तेदारो को उसी के साथ भेज कर नायब नियुक्त कर दिया था। उसके एक भाई था जिसका नाम लाहौरी था। उसका स्वभाव बडा दुष्ट था। मुझे खबर मिली थी कि वह भले आदमियो पर बडे अत्याचार करता है। मैने उसको जौनपुर से ले आने के लिए एक अहदी भेजा। अहदी के आने पर चिन किलिच के मन मे अकारण ही शका उत्पन्न हो गई। और वह अपने भाई के साथ जिसको बुरी सलाह मिली थी भाग गया। अपना मनसब, सरकार, स्थान, जागीर, रुपये सम्पत्ति, बच्चे आदि को छोडकर तथा कुछ रुपया और रत्न लेकर थोडे लोगो के साथ भाग कर वह जमीनदारो मे चला गया। इस खबर से बडा आश्चर्य हुआ। वह जिस जमीदार के पास गया उसने उससे रुपया ले लिया तब जाने दिया। फिर खबर आई कि वह जोहाट (जोहिरहट) मे चला गया। जब जहागीर कुली खा को वह खबर

मिली तो उसने उस विचारहीन व्यक्ति को ले आने के लिए अपने कुछ आदमी भेजे। आते ही उन्होंने उसको पकड़ लिया। वे उसको जहांगीर कुली के पास ला रहे थे। परन्तु उसी समय उसकी मृत्यु हो गई। फिर उसके शव को उसके बच्चें और सेवकों के सहित इलाहाबाद लाया गया। उसका अधिकांश रुपया जमीनदारों ने ले लिया था। यह बडे खेद की बात है कि ऐसे काले मुंह वाले को भारी दण्ड नहीं मिला।

22 तारीख का खानदारा की प्रार्थना पर नाद अली–मैदानी के मनसब में 200 सवार बढ़ा दिये गये। यह बंगस प्रदेश में एक अफसर नियुक्त किया गया। अब इसका मनसब 1500 जात और 1000 सवार का हो गया। लश्कर खां के मनसब में 1 हजार सवार बढ़ा दिये तो उसका मनसब 2 हजार जात 900 सवार का हो गया। 24 तारीख को मैंने मुकर्र खां के मनसब की पुष्टि कर दी। इसको बढ़ाकर 5 हजार जात 2500 सवार का कर दिया। पहले यह मनसब 3 हजार जात और 2 हजार सवार का था। उसी दिन शाह मुहम्मद कंधारी के पुत्र कियाम को खान की उपाधि दी गई। यह एक अमीरजादा था और शिकारियों में काम किया करता था। आजर मास की 5 तारीख का दराबखां को एक जडाऊ खंजर दिया गया और राजा सारंग देव के हाथ दक्षिण के अमीरों के लिए खिलअतें भेजी गई। कश्मीर के सूबादार सफदर खां के विषय में कुछ बुराइयां सुनी गई थी इसलिए उसको अपने पद से पृथक करके अहमद बेग खां को यह पद दिया गया। उसने पहले अच्छी सेवा की थी। उसका मनसब 2500 जात और 1500 सवार का कर दिया ओर उसे एक जडाऊ खंजर और खिलअत देकर विवाद किया। इहतिमाम खां के हाथ मैंने बंगाल के सूबेदार और उस सूबे मे नियुक्त अमीरों के लिए सर्दी की खिलअतें भेजीं। इसी मास की 15 तारीख को इफतिखार खां के पुत्र मकई की भेंटें मेरे सामने रखी गई इनमें 1 हाथी गुंठ और घोडे और कपड़े के थान थे। उसको मुरबत खां की उपाधि से सम्मानित किया गया। इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर मैंने दयानत खां को जो ग्वालियर के दुर्ग में कैद था बुला लिया तो उसंने आकर मुझे तस्लीम की। उसकी सम्पत्ति जो जब्त कर ली गई थी उसको लौटा दी गई।

इसी समय दहबीद के ख्वाजा हासिम ने एक पत्र भेजा। वह इस समय ट्रान्स ओजगियाना में दरवेश है। वहां के लोगों का उस पर बडा विश्वास है। उसने यह पत्र अपने एक शिष्य के साथ भेजा था। उसमें लिखा था कि उसके पूर्वजों का इस का यशस्वी–कुल से सम्बन्ध रहा है। उसने एक कोट और एक गमान तथा एक शेर लिख कर भेजा। यह शेर बादशाह बाबर ने ख्वाजगी नाम के दरवेश के लिए लिखी थी जिसमें लिखा था कि हम ख्वाजगी

के सेवक है। मैने भी इसी प्रकार की एक शेर लिखी और कवियो से कहा कि वे भी शेर लिखे तो हकीम मसीह-उज-जमा की शेर मुझे बहुत अच्छी लगी। उसके लिए मैने उसको एक हजार मोहरे दी। दो मास की 7 तारीख का जब मैं पुष्कर से वापिस अजमेर को आ रहा था तो 42 सुवरो का शिकार किया गया।

मीर मीरान– 20 तारीख को मीर मीरान मेरी सेवा मे आया। उसकी परिस्थितियो और कुटुम्ब का वृतान्त सक्षेप मे लिखा जाता है। अपने पिता की ओर से वह मीर गयासुद्दीन मोहम्मद मीर मीरान का पोता है, जो शाह नियामुतुल्ला वली का पुत्र था। सफवी शाहो के काल मे इस कुटुम्ब को बडा आदर प्राप्त हुआ। शाह तहमास्प ने अपनी सगी बहिन जानिश खानिम का विवाह शाह नियामतुल्ला से कर दिया। नियामुतुल्ला बडा शेख था और शिक्षक था। अब वह शाहो का दामाद और रिश्तेदार बन गया। माता की और से वह शाहु इस्माइल खुनी की पुत्री का पुत्र था। शाह नियामुतुल्ला की मृत्यु के बाद उसका पुत्र गीयासुद्दीन मोहम्मद मीर मीरान का बडा लिहाज होने लगा और स्वर्गीय शाह तहमास्प ने उसके ज्येष्ठ पुत्र से शाही परिवार की एक पुत्री से विवाह कर दिया। उपरोक्त शाह इस्माइल की एक पुत्री उसने गयासुद्दीन मोहम्मद मीर मीरान के दूसरे पुत्र खलीमुल्ला को ब्याह दी। इसी से मीर मीरान का जन्म हुआ। उपरोक्त खलीलुल्ला 7–8 वर्ष पहले ईरान से आकर मेरी सेवा मे लाहौर उपस्थित हुआ था। वह उच्च और दरवेशाना कुटुम्ब का वशज था इसलिये मैने उसकी परिस्थिति पर विचार करके उसे मनसब और जागीर दी उसके बाद उसको पित्तज अपच हो गया। क्योकि उसने अत्यधिक आम खा लिये थे। 10–12 दिन मे उसकी मृत्यु हो गई जिससे मुझे दुख हुआ और मैने आदेश दिया कि नकद और आभूषण जो कुछ भी वह छोड गया है वे ईरान मे उसके बच्चो के पास भेज दिया जावे। इसी बीच मे मीर मीरान जो अब 22 वर्ष का था कलन्दर और दरवेश हो गया और मुझे वह अजमेर आकर मिला। मार्ग मे उसको किसी ने नहीं पहचाना। मैंने उसके मन की व्यथाये और आन्तरिक और बाह्य स्थिति के सन्तापो को शान्त किया और उसको 1 हजार जात और 400 सवारो का मनसब दिया। इसके अतिरिक्त 30000 दरब नकद दिये। अब वह मेरी सेवा मे रहता है।

12 तारीख को जफर खा जो सूबा बिहार से हटा दिया गया था मेरी सेवा मे आया और उसने 100 मोहरे तथा 3 हाथी भेट किये। दो मास की 15 तारीख को मैंने बगाल के सूबादार कासिम खा के मनसब मे 1 हजार जात और इतने ही सवारो की वृद्धि कर दी तो वह 4000 का प्रथम श्रेणी

वाला मनसबदार बन गया। बगाल के दीवान हुसैन बेग से बख्शी ताहिर ने अच्छी सेवा नहीं की थी इसलिये इन स्थानो पर मुखलिस खा को जो दरबार का विश्वस्त सेवक था नियुक्त किया गया और उसको 2 हजार जात और 700 सवार का मनसब दिया और एक निशान भी प्रदान किया। मैंने आदेश दिया कि दयानत खा को अर्ज मुकर्रिर (प्रार्थना पत्र सशोधक) नियत किया जावे।

खुर्रम की तुला और मद्यपान

25 शुक्रवार को मेरे पुत्र खुर्रम की तुला की गई अब वह 24 वर्ष का हो गया है और विवाहित तथा बच्चो वाला है। उसने कभी भी मद्यपान करके अपने शरीर को अपवित्र नही किया है। आप उसकी तुला का जलसा था। तो मैंने उससे कहा "बाबा तुम बच्चो के बाप बन गये हो, बादशाह और बादशाहो के पुत्र मद्यपान करते आये है। आज तुम्हारी तुला का दिन है। मै तुमको पानार्थ मद्य दूगा और तुम्हे इजाजत देता हू कि जलसो के दिनो पर, नये साल के आरम्भ पर और बडे बडे त्यौहारो पर मद्यपान किया करो, परन्तु यह रूक कर करना चाहिये। बुद्धिमान लोगो का करना है कि इतना मद्यपान नही करना चाहिये कि समझ नष्ट हो जाये। मद्यपान लाभ के लिये पीना चाहिये बू अली ने जो एक बडा ही विद्वान हकीम हुआ है लिखा है कि मद्य बडा शत्रु है ओर बडा मित्र भी है थोडा पिया जाये तो लाभ होता है और अधिक पिया जाये तो यह सर्प–विष का काम करता है। अधिक पीने से बडी हानि होती है थोडी पीने से बडा लाभ होता है। मैने उसको बडा मुश्किल से मद्य पिलाया।

जहांगीर का मद्य-व्यसन

मेने 15 वर्ष की आयु तक मद्यपान नही किया था मेरे बचपन मे मेरी माता ने दो तीन बार मुझे मद्य पिलाया था इसी प्रकार मेरी दूध पिलाने वाली धायो ने औषधि के रूप मे मुझे मद्य दिया था। उन्होने मेरे पूज्य पिता से थोडा मद्य लेकर और एक तोले गुलाब जल मिलाकर मुझे खासी के निवारण के लिए पिलाया था। वे इसको औषधि समझती थी। जब मेरे पूज्य पिता का शिविर अटक मे था जहा वे युसफ जाई अफगानो के उत्पात को शान्त करने के लिये गये थे तो मै एक दिन सवार होकर शिकार करने गया। जब मै बहुत घूमा फिरा और मुझे थकान होने लगी तो उस्ताद शाह कुली नामक बडे कुशल तुपकची (बन्दूकची) जो मेरे पूज्य चाचा मिर्जा मोहम्मद हकीम का

सेवक था मुझसे कहा कि यदि मै एक प्याला मद्य पी लू तो सारी थकान और भारीपन दूर हो जायेगा। मै उस समय युवा था और मद्य की ओर मेरा झुकाव हो गया तो मैने आबदार (पानी पिलाने वाला) महमूद को आदेश दिया कि हकीम अली के पास जाकर मेरे लिये मादक पेय ले आवे। हकीम ने मुझको ढाई प्याले पिला दिया। मद्य जिसका स्वाद मीठा था एक बोतल मे रख कर भेजा। मैने उसको पिया तो मुझे मालूम हुआ कि वे मेरे अनुकूल था। उसके पश्चात मै मद्य पीने लगा और प्रतिदिन उसकी मात्रा बढाता गया। परिणाम यह हुआ कि अगूर की शराब से मुझे नशा आना बन्द हो गया इसलिए मै अर्क पीने लगा और धीरे–धीरे 9 वर्षो मे मेरे मद्यपान की मात्रा दुबारा खिचे हुए अर्क के 20 प्याले हो गई। 14 प्याले दिन मे और शेष प्याले रात्रि मे पिया करता था। इसका वजन 6 सेर हिन्दुस्तानी होता था। उस दिनो मे एक मुर्गी, चपाती और तरकारिया खाया करता था। हाल यह था कि मुझे मना करने की किसी मे शक्ति नही थी। मामला यहा तक बढ गया कि मेरा हाथ अत्याधिक कापने लगा। मै अपने हाथ से प्याला नही थाम सकता था। दूसरे लोग मुझे शराब पिलाते थे। फिर मैने हकीम अब्दुल फतह के भाई हकीम हुमाम को बुलाया जिसकी मेरे पूज्य पिता से अत्यन्त घनिष्ठता थी। मैने उसको अपनी स्थिति बतलाई वह बडा सच्चा व्यक्ति था। उसके हृदय को वेदना हुई जो स्पष्ट जान पडती थी। उसने नि सकोच मुझसे कहा "जहापनाह जिस तरीके से आप मद्यपान करते है उससे ईश्वर न करे परन्तु 6 मास मे आपकी स्थिति ऐसी हो जायेगी कि उसका कोई इलाज न हो सकेगा।" हकीम ने यह शब्द सद्‌भावना से कहे थे और मुझे अपने मधुर जीवन से प्रेम था, इसलिए मुझ पर प्रभाव हुआ ओर उसी दिन से मैंने अर्क की मात्रा कम कर दी और फुलूनिया लेने लगा। मैने ज्यो–ज्यो अर्क कम किया त्यो–त्यो मैने फुलूनिया की मात्रा बढा दी।

मैने यह भी आदेश कि कि अर्क मे अगूर की शराब इतनी डाली जाए कि दो भाग शराब और एक अर्क हो। प्रतिदिन मै उसकी मात्रा कम करता गया। पर अगले 7 वर्ष मे घटाते–घटाते इसके छ प्याले कर दिए। एक प्याले म 18¼ भाग मिसफल मात्रा होती थी। गत 15 वर्ष से मै इतनी ही पीता हू। इससे ने अधिक और न न्यून मेरे पीने का समय रात का है परन्तु बृहस्पतिवार को जो मेरे राज्यारोहण का दिन है मैं मद्यपान नही करता। शुक्रवार की साय को भी मे नहीं पीता। इन दो दिनो पर मै मद्यपान नही करता। यह उचित नहीं है कि बृहस्पतिवार की रात्रि प्रमाद मे व्यतीत की जाए और सच्चे उपकारी ईश्वर को धन्यवाद नही दिया जाए। बृहस्पतिवार को और रविवार को मास नही खाता। बृहस्पतिवार को इसलिए नहीं खाता

कि मेरे शुभ राज्यारोहण का दिन है रविवार को इसलिए नहीं खाता कि यह दिन मेरे पूज्य पिता का जन्म दिवस है। इस दिन का वे बडा आदर करते थे। कुछ समय बाद मै फिलूनियां के बजाय अफीम खाने लगा। अब मैं 46 वर्ष और 4 मास का हो चुका हू। मैं 8 चर्मू के बराबर अफीम 5 घडी दिन चढे खाता हू और 6 चर्मू अफीम एक पहर रात्रि व्यतीत होने पर खाता हूं।

जगतसिंह– 10 तारीख को कंवर कर्ण के पुत्र जगतसिंह को जिसने अपने देश में जाने की इजाजत ले ली थी 20 हजार रुपये, एक घोडा, एक हाथी, एक खिलअत और एक खास दुशाला दिया गया। 5 हजार रुपये, एक घोडा और एक खिलअत हरिदास झाला का भी दी गई जो कि राणा का विश्वस्त सेवक और कर्ण के पुत्र का अध्यापक था। इसी के हाथ मैंने राणा के लिए एक सोने की छडी भेजी।

राजा सूरजसिंह की कांगड़ा से वापिसी– इसी मास की 20 तारीख को राजा बासू का पुत्र राजा सूरजसिंह मेरे बुलाने पर मेरी सेवा में आया। उसका निवास कागडा के निकट था। इसलिये उस दुर्ग को छीनने के लिए उसे मुर्तजा खां के साथ भेजा गया था। मुर्तजा खां को उसके विषय में कुछ सदेह हो गया था इसलिए उसको अवांछनीय साथी समझकर उसने बार–बार दरबार मे प्रार्थना पत्र भेजे और सूरजसिह के विषय मे कई बाते लिखीं, इसलिए उसको वापिस बुलाया गया था। इस वर्ष के अन्त मे मेरे राज्य के सब ओर से विजय और समृद्धि के समाचार आये।

अहदाद का दमन

अहबाद अफगान काबुल के पर्वतीय प्रदेश मे बहुत समय से विद्रोह कर रहा था। उधर के अफगान लोग उसके पास इकट्ठे हो गये थे। मेरे पिता के समय से अब तक अर्थात मेरे राज्यारोहण के 10 वें वर्ष तक उसके विरूद्ध सेनायें भेजी गई थी। धीरे–धीरे उसको हरा दिया गया। उसकी स्थिति बिगड गई। उसके साथी कुछ तो छिन्न भिन्न हो गये और कुछ मारे गए। कुछ समय तक उसने चर्ख में शरण ली। उसका इस स्थान पर बडा भरोसा था। परन्तु खान दौरान ने उसको घेर लिया और अन्दर जाने का तथा बाहर निकलने का मार्ग बन्द कर दिया। जब उसके पशुओ के लिये चारा और उसके आदमियो के लिए दुर्ग मे जीवन निर्वाह का कोई साधन नही रहा तो रात्रि में वह अपने पशुओं को पहाड़ियों पर से उतार कर नीचे लाया करता था वह चाहता था कि उसके आदमी उसका अनुसरण करें अन्त में यह खबर खानदौरा के पास पहुच गई। तब उसने चर्ख के समीप अपने अनुभवी

आदमियों को घात में बिठा दिया। ये लोग रात्रि में जाकर और घात लगाकर बैठ गये। खानदौरा भी उसी दिन उसी दिशा में सवार होकर गया। जब शत्रु अपने पशुओं को लाकर चराने लगा और अहदाद घात में बैठे हुए लोगों के पास होकर निकला तो उसके सामने धूल उडने लगी। जब पूछा तो मालूम हुआ कि खानदौरा है। व्याकुल होकर उसने वापिस लौट जाना चाहा। सूचकों ने खानदौरा से कहा कि यह अहदाद है। खान घोडा बढाकर अहदाद के निकट पहुंचा। घात में बैठे हुए लोगों ने अहदाद का मार्ग रोककर उस पर हमला किया मध्य रात्रि तक लडाई होती रही। जंगल घना था और भूमि ऊँची नीची थी। अन्त में अफगानों की हार हुई और वे पहाड़ी मे चले गये। लगभग 300 लड़ाकू आदमी नर्क में पहुंचे और 100 को बन्दी बना लिया गया। अहदाद दुर्ग को वापिस नहीं ले सका। अतः वह कन्धार की ओर मुड़ा विजयी सैनिकों ने चर्ख में प्रवेश करके शत्रु के स्थानों और मकानों को जला दिया। उनको जड से उखाड दिया।

मलिक अम्बर

दूसरी अच्छी खबर यह थी कि मलिक अम्बर को हरा दिया गया था और उसकी सेना नष्ट हो गई थी संक्षिप्त वृत्तान्त यह है कि कुछ प्रभावशाली सैनिक अधिकारी और मराठे जो वहां शाही सेना का सामना कर रहे थे अम्बर से नाराज हो गये। उन्होने वफादारी का विचार कर लिया और शाहनबाजखां से जो शाही सेना के साथ उस समय धौलपुर में था शरण मांगी. और उससे मिलना चाहा फिर आदम खां याकूत खा. अन्य सेना अधिकारी और जादूराय तथा बापूकाटिया नामक बारगी आकर उससे मिले। शाह नवाज खां ने उनमें से प्रत्येक को एक घोडा. एक हाथी नकद रुपया और खिलअत उनके पदानुकूल दी। जिससे वे स्वामिभक्ति और वफादारी के विषय में तैयार हो गये। मालापुर से उन्हें साथ लेकर उसने विद्रोही अम्बर के विरूद्ध प्रयाण किया। मार्ग में दक्खिनियों की सेना से उनकी मुठभेड़ हो गई। दक्खिनियों की सेना के नायक महलदार दानिश दिलावर बिजली फिरोज और अन्य लोग थे। शाही सेना ने दक्खिनियों की सेना को भगा दिया। शाही सेना शत्रु के शिविर तक पहुंच गई तो बड़े दम्भ में आकर उसने शाही सेना को देखा और निश्चय किया अपने साथ विद्रोहियों को और आदिल खां की सेना और कुतुबुल मुल्क की सेना को एकत्र करके तथा तोपें तैयार करके वह शाही सेना का सामना करने के लिए चला तों दोनों सेनाओं के बीच में 5–6 कोस का अन्तर रह गया। रविवार 25 बहमन

को गोरी और काली सेना आमने सामने आई और सूचक लोग दिखाई देने लगे। जब 3 पहर दिन व्यतीत हो गया तो दोनो और के सूचक दिखाई देने लगे। फिर दिन निकल गया तो तोपें और हुक्के चलने लगे। अन्त में दरब खां ने जो अग्रसेना का नायक था वीरसिंह देव रायचन्द्र अली खां का तातार जहांगीर कुली बेग तुर्कमान और अन्य वीरो के साथ शत्रु की अग्रसेना पर आक्रमण किया। पुरुषार्थ और वीरता पूर्वक लडकर उन्होंने शत्रु की सेना को बनातुननाश की भांति बखेर दिया और फिर शत्रु की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। विरोधी सेना के साथ हाथों हाथ लडाई हुई तो देखने वाले दंग रह गये। यह लडाई दो घडी तक चलती रही। मृतकों के ढेर लग गये अब अम्बर सामना करने मे असमर्थ था। इसलिए वह भागने के लिए तैयार हो गया। यदि शत्रु के दिखने पर अन्धेरा नहीं हो जाता तो उनमें से एक भी सुरक्षित नही रहता। शाही सेना के लोगों ने 2,3 कोस तक शत्रु का पीछा किया। जब घोडे और आदमी आगे नहीं बढ सके और पराजित लोग इधर–उधर भाग गये तो शाही सेना के लोग वापिस लौट आये। शत्रु की सारी तोपे, हुक्को से लदे हुए 300 ऊँट, जंगी हाथी, अरबी और ईरानी घोड़े अगणित वस्त्र और कवच साम्राज्य के सेवकों के हाथ में आये। मरे हुये लोगो की गणना नही की जा सकती थी। कितने ही सेना अधिकारी शाही सैनिको के हाथ में आ गये। अगले दिन विजयी सेना रणभूमि से प्रयाण करके खिडकी पहुची। जो इन लोगों को विश्राम स्थान था। यहां शत्रु दिखाई नहीं दिया तो डेरा लगा दिया गया। उनको खबर मिली कि रात्रि मे शत्रु कई जगह बुरी तरह हारे थे। उस दिन विजयी सेना खिडकी में ठहरी वहा शत्रु के मकानों को बिलकुल साफ कर दिया और उस स्थान को जला दिया। फिर अनेक घटनायें घटी जो विस्तार भय से नहीं लिखी जा सकती। शाही सेना वहां से वापिस आई और रोशन खण्ड घाटी से उतरी। इस सेवा के पुरस्कार स्वरूप मैंने उस लोगो के मनसबों में वृद्धि कर दी। जिन्होंने अच्छी बहादुरी के साथ सेवा की थी।

खोकरा प्रदेश की विजय

तीसरी अच्छी खबर यह थी कि खोकरा प्रदेश पर विजय प्राप्त हो गई थी। वहां की हीरों की खाने इब्राहीम खां के प्रयास से शाही सेना ने कब्जे में ले ली थी। यह प्रदेश सूबा बिहार और पटना के अधीन था। वहां एक नदी है जिसमें से हीरे निकाले जाते थे। जब उस नदी में थोडा सा पानी रह जाता है और जहां–तहा पानी के डाबरे के आस–पास लोग पत्थर इकट्ठे करते थे फिर पानी निकार कर फावडों और कुदालियो से गज या डेढ गज डाबरे को

खोदते है तो पत्थरो और रेत मे छोटे बडे हीरे पाये जाते हैं। कभी कभी वहा एक लाख मूल्य वाला हीरा भी मिल जाता है। यह प्रदेश और नदी पहले दुर्जनशाल नामक हिन्दू जमींदार के कब्जे मे थी। इस सूबा के सूबादारो ने उसके विरुद्ध बार बार सेना भेजी थी और स्वय वहा गये थे परन्तु मार्ग की दुर्गमता और वन की सघनता के कारण वे विजय प्राप्त नही कर सके। और 2–3 हीरे लेकर वापिस आ जाया करते थे। जब जफर खा को सूबेदारी से हराकर उसके स्थान पर इब्राहीम खा को नियुक्त किया गया और वह जाने लगा तो मैंने आदेश दिया था कि उस अज्ञात और तुच्छ व्यक्ति से यह प्रदेश छीन लिया जाए। सूबा मे बिहार पहुचते ही इब्राहीम खा ने सेना एकत्र करके जमीनदार पर चढाई की। पुरानी प्रथा के अनुसार उसने अपने कुछ आदमियो को भेजकर कुछ हीरे और हाथी देने का वायदा किया परन्तु खान ने नहीं माना और प्रान्त मे प्रवेश किया। जमीनदार अपने आदमियो को एकत्र भी न करने पाया कि उस पर आक्रमण हो गया। उसके घाटियो को और पहाडियो को घेर लिया गया। इब्राहीम ने जमीनदार की तलाश करने के लिए आदमी भेजे तो यह अपनी स्त्रियो और माता के साथ एक गुफा मे छिपा हुआ था। उनमे उसकी विमाताये भी थी। शाही सैनिको ने उसको और उसके भाइयो को पकड लिया और जो उनके पास हीरे थे वह भी छीन लिये तथा 23 नर और मादा हाथी इब्राहीम के हाथ आये। इस सेवा के उपलक्ष्य मे इब्राहीम खा का मनसब 4 हजार जात और 5 हजार सवार कर दिया गया ओर उसे फतहजग की उपाधि दी गई। उसके साथ के लोगो को भी जिन्होने वीरता के काम किये थे मनसब बढाये गये। अब यह सूबा शाही सेवको के हाथ मे है नदी के तल मे काम किया जाता है और जो हीरे मिलते है वह दरबार मे पेश किये जाते है। अभी हाल ही मे वहा एक 50 हजार रुपये का हीरा मिला है। यदि और परिश्रम किया जाए तो वैहा ऐसे अच्छे हीरे मिलेगे जो रत्न गृह मे रखने के योग्य हैं।

राज्यारोहण के बाद ग्यारहवें नये वर्ष का उत्सव

इस्फन्दारमुज मास के अन्तिम दिन रविवार तदनुसार रबी उस्मानी की तारीख 1 (19 मार्च 1616) को जब 15 घडी दिन निकल चुका तो सूर्य मीन राशि से मेष राशि मे आ गया इस शुभ घडी मे ईश्वर से प्रार्थना करके और अपनी सेवा करके मै दरबार–ए–आम मे साम्राज्य के तख्त पर बैठा इसके क्षेत्र मे डेरे और शामियाने लगे हुए थे और इसकी बाजुये योरोपीय और दूसरे सुनहरी किमखवाबो से और दुर्लभ वस्त्रो से सजाई गई थी। शाहजादो अमीरो प्रधान दरबारियो राज्य के मन्त्रियों और दरबार के सब सेवको ने तस्लीम करके बधाइया दी।

हाफिज नाद अली गायन्दा– हाफिज नाद अली गायन्दा एक पुराना सेवक था मैने आदेश दिया कि सोमवार को जो भी किसी की भेट आवे चाहे नकद हो या सामान हो उसको पुरस्कार रूप दे दी जावे। फरवरदीन मास की 2 तारीख को कुछ सेवको की भेट मेरे सामने प्रस्तुत की गई। 4 तारीख को ख्वाजा जहा की भेटे जो उसने आगरे से भेजी थी और जिनमे हीरे मोती जडाऊ चीजे, सब प्रकार के वस्त्र और एक हाथी था तथा जिनका मूल्य 50,000 रुपये था मेरे सम्मुख लाई गई। 5 तारीख को कुवर करण जिसको अपने देश जाने की इजाजत दे दी गई थी वापिस मेरी सेवा मे आया उसने 100 मोहरे 1000 रुपये और 1 हाथी साज सहित तथा घोडे भेट किये। 7 तारीख को आसफ अली के मनसब मे 1000 जात और 2000 सवारो की वृद्धि करके उसका मनसब अब 5 हजार जात और 4000 सवार कर दिया गया तथा उसको नक्कारे तथा निशान से सम्मानित किया। मीर जमाजुद्दीन हुसैन की भेट मेरे सामने प्रस्तुत की गई और सब स्वीकार कर ली गई। इनमे एक जडाऊ खजर था जो उसकी खुद हुनरकारी मे तैयार हुआ था उसकी मूठ पर एक याकूत–ए–जर्द (पीली लाल) लगी हुई थी। जो बडी साफ ओर चमकदार थी ओर जिसका आकर मुर्गी के अण्डे से आधा था। मैंने पहले इतनी बडी और सुन्दर पीली लाल नही देखी थी साथ ही इसके अन्य लाले भी थी जिनका रग अच्छा था। इसके अतिरिक्त पन्ने भी थे। जानकार लोगो ने इस लाल और खजर का मूल्य 50 000 रुपये

आंका था। मैने उपरोक्त मीर का मनसब बढाकर 5000 जात और 3500 सवार कर दिया। 8 तारीख को मैंने हार्दिक हाफिज और इरादत खा के भी मनसब बढा कर 1000 जात और 500 सवार कर दिये। तारीख 9 को ख्वाजा अबुल हसम की भेटो मे से 40,000 के मूल्य की चीजे स्वीकार की और शेष वापिस लौटा दी। 10 तारीख को राजा महासिह ने दक्षिण से 3 हाथी भेजे और मुर्तजा खा ने किम ख्वाब के 100 थान लाहौर से भेजे। इसी दिन दयानत खा ने 28000 रुपये के लाल और मोती और एक सोने की तश्तरी भेट की। बृहस्पतिवार तारीख 11 को मे इतिमादुद्दौला के मकान पर उसकी प्रतिष्ठा बढाने के लिये गया। उसने मुझे कुछ दुर्लभ भेटे दी। दो मोती 30,000 रुपये के थे एक कुतुबी लाल 22000 रुपये की थी तथा सब भेटे मिलाकर 110,000 रुपये की थी। भेटो को देखने के बाद मे 1 पहर रात तक वहा ठहरा और खूब आनन्द प्रमोद मनाया। मैने अमीरो और सेवको को मद्यपान करवने का आदेश दिया इस सुखद समारोह मे अन्त पुर की महिलाये भी मेरे साथ थी। समारोह के बाद मे इतिमादुद्दौला से रुखसत माग कर दीवाने आम मे गया। इसी दिन मैने आदेश दिया कि नूरमहल बेगम को नूरजहा बेगम कहा जावे। 12 तारीख को इतिवार खा की भेट देखी गई। जिनमे एक जडाऊ और मछली के आकार का पात्र बडा सुन्दर था उसमे मेरी मद्य की दैनिक मात्रा आ सकती थी। इन सबका मूल्य 56000 रुपये था जो पसन्द आई रख ली गई 13 तारीख को कन्धार के सूबादार बहादुर खा, इरादत खा ओर राजा बासू के पुत्र सूरजमल की भेटे दखी गई। अब्दुस सुभान का मनसब बढाकर 1500 जात और 700 सवार कर दिया। 15 तारीख को ठड्डा सूबा की सूबादारी शमशेर खा उजबेग से हटा कर मुजफ्फर खा को दे दी गई। 16 तारीख को इतिकादखा (इतिमादुद्दौला के पुत्र) की भेटो मे से 32000 की भेटे लेकर शेष वापिस कर दी। 18 तारीख को मै आसफ खा के निवास पर गया। वहा उसने भेटे दी। महल से उसके निवास तक लगभग 1 कोस की दूरी है। आधी दूरी तक उसने मखमल के पग पावडे बिछाये थे। कुछ मखमल सुनहरी और कुछ सुनहरी किमखाब थी और कुछ मखमल सादा थी। उस रात मध्य रात्रि तक मैं महिलाओ के साथ उसी के निवास पर ठहरा। उसने 1 लाख 11 हजार के जडाऊ आभूषण सुन्दर वस्त्र आदि तथा चार घोडे और एक ऊँट भेट किये। 19 तारीख फर्वरद्दीन को महल मे एक बडा जलसा हुआ यह रोज–ए–शरफ था। इस दिन सूर्य इस राशि मे ऊँचे से ऊँचा था। जब ढाई घडी दिन शेष रह गया और शुभ मुहूर्त आया तो मै तख्त पर बैठा मेरे पुत्र बाबा खुर्रम ने इस मुहूर्त में मुझे 80 हजार रुपये की एक लाल भेट की जिसमे बडी चमक

और शुद्ध पानी था मैंने उसका मनसब 15000 जात और 8000 सवार से बढाकर 20000 जात और 10000 सवार कर दिया उसी दिन मेरी चान्द तुला की गई। इतुमादुद्दौला का मनसब 6000 जात 3000 सवार से बढाकर 7000 जात और 5000 सवार कर दिया और उसको तुमानतुग (घोडे के पूछ का निशान) दिया गया और आदेश दिया कि उसके नक्कारे मेरे पुत्र खुर्रम के बाद बजाये जावे। तरबियत खा का मनसब बढाकर 3500 जात और 1500 सवार कर दिया, इतिकाद खां और निजामुद्दीन खा के भी मनसब बढा दिये गये। निजामुद्दीन को बिहार का सूबादार बना दिया। सलाम--उल्ला अरब को सजाअत खा की उपाधि और एक मोतियो की माला दी। 21 तारीख को सर्वशक्तिमान ईश्वर ने खुसरू को एक पुत्र दिया। यह मिहतर फाजिल रिकाबदार के पुत्र मुकीम खा की पुत्री से हुआ था। अल्लाह दाद अफगान दुष्ट अहदाद की सेना से मुक्त होकर मेरे दरबार मे आ गया था। मैंने उसको 10 हजार रुपये दिये। 25 तारीख को राय मनोहर की मृत्यु की खबर आई वह दक्षिण की सेना के साथ था। उसके पुत्र को 500 का मनसब और उसकी सम्पत्ति प्रदान की गई। 28 तारीख को कन्धार के सूबेदार बहादुर खा को खलीलुल्ला के पुत्र मीर मीरान और भक्खर के सूबेदार सईद बायजीत को एक एक हाथी दिया।

कदम अफगान का विद्रोह

इसी दिन खबर आई कि अफरीदी अफगान कदम ने आज्ञापालन करना छोड़कर राजद्रोह कर दिया है। यह पहिले राजभक्त और आज्ञाकारी था और खैबर घाटी की राहदारी वसूल करने का उसको अधिकार दिया हुआ था। उसने प्रत्येक थाने के विरूद्ध कुछ सैनिक भेजे तो थाने वालों के प्रमाद और उपेक्षा के कारण उनमे से बहुत से मारे गए और बहुत से लूट लिए गए। इस बुद्धिमान अफगान के लज्जाजनक कार्य से काबुल में एक नई गडबड़ उत्पन्न हो गई। जब यह खबर आई तो कदम का भाई हारुन और उसका पुत्र जलाल दरबार में ही थे। मैंने आदेश दिया कि उनको पकड कर आसफखां के सुपुर्द कर दिया जावे और वे उन्हें ग्वालियर के दुर्ग में भेजें। ईश्वर की दया और कृपा से इस समय एक विचित्र घटना हुई। राणा पर विजय प्राप्त करने के पश्चात मेरे पुत्र ने अजमेर में मुझे 60 हजार रुपए की अत्यन्त सुन्दर लाल भेंट की थी। मुझे यह ख्याल आया कि इस लाल को मैं अपनी कलाई पर बांघू। मैं यह भी बहुत चाहता था कि दो दुर्लभ मोती जिनमें कच्चा पानी हो ओर जिनसे इस लाल की संगति हो मिल जावे। मुकर्रबखां को 20 हजार रुपए का एक मोती मिला जो मुझे उसने भेंट

किया। मैने सोचा कि एक और मोती ऐसा ही मिल जाये तो बहुत अच्छी पोछी बन जाए। खुर्रम अपने बचपन से मेरे पूज्य पिता की सेवा मे रात दिन रहा करता था। उसने मुझसे कहा कि मैने एक पुराने सरबन्द मे इसी मोती के आकार और तोल का एक मोती लगा हुआ देखा है। तब तब मेरे सामने एक पुराना सरपेच ठीक इसी आकार प्रकार और तोल का मोती प्रस्तुत किया गया। तोल मे यह रत्ती भर अधिक या कम नही था। इन दोनो को देखकर यह कहा जाता था कि यह एक ही साचे मे ढाले गए है। इस लाल के साथ यह दोनो मोती जडकर मेरी कलाई पर बाघे गए तो मैने बडी नम्रता से ईश्वर को धन्यवाद दिया जो इस दास पर इतनी दया करता है।

अबदुश सुबहान की मृत्यु–5 उर्दीबिहिश्त को खबर आई कि अफगानो के एक समूह ने खान आलम के भाई अबदुश सुबहान के थाने को जहा वह नियुक्त था घेर लिया है। उसने और अन्य मनसबदारो ओर सेवको ने वीरता का काम किया। परन्तु अन्त मे उन कुत्तो ने इनको दबा लिया और अबदुश सुबहान और थाने के कई लोग मारे गए। उन्होने शहीद होने का सम्मान प्राप्त किया।

14 तारीख को मोअज्जम खा के पुत्र मुकर्रमखा की भेटे बगाल से आयी मैने गुजरात के कुछ जागीरदारो के मनसब मे कुछ वृद्धि की। 17 तारीख को मरव निवासी रजाक उजबेग की मृत्यु की खबर आई वह दक्षिण की सेना मे था और सैनिक कार्यो मे कुशल था वह मावरनहर का एक प्रसिद्ध अमीर था। 21 तारीख को अल्लादाद अफगान को खान की उपाधि दी गई और उसे 2 हजार जात और 1 हजार सवार का मनसब दिया गया। खानदौरा को लाहौर के कोट से 3 लाख रुपए दिलाए गए उसने अफगानो के उत्पात का दमन करने मे बडा प्रयास किया था।

कुंवर कर्ण को विदा

28 तारीख को कुवर कर्ण ने अपने विवाह के लिए स्वदेश जाने की इजाजत ली मैंने उसको एक खिअलत एक खासा ईराकी घोडा, जीन सहित एक हाथी ओर एक जडाऊ कमर का खजर दिया। इसी मास (खुरदाद की 3 तारीख को) मुर्तजाखा की मुत्यु की खबर आई वह सल्तनत का एक पुराना सेवक था। मेरे पूज्य पिता ने उसकी परवरिश करके उसे अच्छा स्थान दिया और उस पर भरोसा किया था। मेरे राज्य मे भी उसने अच्छी सेवा की। खुसरो को हराने मे उसने काम किया था। उसका मनसब बढाकर 6 हजार जात तक बढा दिया गया था और उसने कागडा विजय का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया था। कागडा जैसा दृढ दुर्ग इस प्रान्त मे बल्कि सारे

संसार में दूसरा नहीं था। उसने इस काम पर जाने के लिए अनुमति मांगी जो दे दी गई थी उसकी मृत्यु के समाचार से मुझे बड़ा दुख हुआ। वास्तव में ऐसे स्वामी भक्त की मृत्यु के समाचार से मुझे बड़ा दुख होना स्वाभाविक है। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि उस पर दया करे। 7 तारीख को सेफखां बारह की मृत्यु की खबर आई वह बड़ा वीर पुरुष था। खुसरो के साथ युद्ध में ऐसा काम किया था जो औरों के लिए आदर्श था। उसकी मृत्यु विशुचिका रोग से हुई मैंने उसके पुत्रों पर कृपा की उसके ज्येष्ठ पुत्र अली मुहम्मद को 300 जात और 400 सवार का मनसब और उसके भाई बहादुर को 400 जात और 200 सवार का मनसब दिया। उसके भतीजे का भी मनसब बढ़ा उसी दिन खूब अल्लाखां को रणबाज खां उपाधि दी गई। यह शाहबाजखां कम्बू का पुत्र था। अल्लादाद अफगान को 10 हजार रुपए दिए गए। बांधू प्रदेश के राजा विक्रमाजीत जिसके पूर्वज हिन्दुस्तान में बड़े जमीनदार थे बाबा खुर्रम की सिफारिश पर मेरी सेवा में आया और उसके अपराध क्षमा कर लिए गए।

जैसलमेर का राजा कल्याण

9 तारीख को जैसलमेर का राजा कल्याण आया। उसको बुलाने के लिए राजा किशनदास भेजा गया था। उसने 1 हजार रुपये और 100 मोहर भेंट किए। उसका बड़ा भाई रावल भीम प्रतिष्ठित पुरुष था। वह दो मास का एक बच्चा छोड़कर मरा था और वह थोड़े ही समय तक जीवित रहा। जब मैं शाहजादा था तो मैंने उसकी पुत्री से विवाह किया था और उसको मलिकाजहां की उपाधि दी थी।.इस कौम के पूर्वज स्वामिभक्त थे इसलिए यह सम्बन्ध हुआ था। कल्याण को बुलाकर मैंने उसके राजा का टीका किया और रावल की उपाधि दी।

यह खबर आई कि मुर्तजा खां की मृत्यु के बाद राजा मान ने बड़ी स्वामिभक्ति प्रकट की और सैनिकों को जो कांगड़ा दुर्ग को घेरे हुए थे, प्रोत्साहन दिया। अब यह व्यवस्था की गई कि वहां के राजा के पुत्र को जो 29 वर्ष का था, दरबार में बुलाया जावे। उसने उत्साह से सेवा की तो उसका मनसब अब 1500 जात और 1000 सवार कर दिया। ख्वाजाजहां का मनसब 4 हजार जात और 2500 सवार कर दिया। इस तारीख को एक घटना घटी। उसको मैं ही लिखना चाहता था। परन्तु मेरा हाथ नहीं चला और मेरे दिल ने नहीं माना। जब मैं कलम हाथ में लेता था तो मैं कांपने लगता था। इसलिए मैंने इतुमादुद्दौला से यह वृत्तान्त लिखवाया।

एक पुराना और सच्चा दास इतुमादुद्दौला आदेशानुसार इस शुभ पुस्तक में लिखता है कि 11 खुरदाद को परम भाग्यवान शाह खुर्रम की पुत्री में कुछ ज्वर के चिन्ह प्रकट हुए। बादशाह को इस बालिका से बडा प्रेम था क्योंकि वह शाहजादे की प्रथम पुत्री थी। 3 दिन बाद उसके शरीर पर दाने (आबिला) नजर आने लगे और इसी मास की 26 तारीख तदनुसार बुधवार तारीख 29 जमादल अव्वल (15 जून 1516) 1025 हिज्री को उसका प्राणपखेरू इस पंचभूत के पिंजरे में से उड गया और स्वर्ग के बाग में पहुंच गया। इस दिन यह आदेश हुआ कि 4 शम्बा बुधवार को भविष्य मे कमशम्बा (गुमशम्बा) कहा जाए। इस हृदयद्रावक घटना से बादशाह को जो ईश्वर की छाया है बडा दुख हुआ। इसके विषय में मैं क्या लिखूं जब बादशाह को ही इतना सन्ताप हुआ तो उसके अन्य सेवकों की क्या दशा हुई होगी जो उससे सम्बद्ध हैं। 2 दिन तक बादशाह दीवाने–आम में अपने सेवकों से नही मिला और उसने आदेश दिया कि जहां उस स्वर्गीय पक्षी का निवास था उसके सामने एक दीवार बना दी जावे जिससे वह स्थान दिखाई नहीं दे। इसके अतिरिक्त वह दीवानेआम मे भी नहीं आया। तीसरे दिन क्षुब्ध अवस्था मे वह कीर्तिमान शाहजादे के निवास पर गया तो सेवकों को उसको तसलीम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और नया जीवन मिला। रास्ते मे हजरत ने बड संयम किया तो भी उसके शुभ नेत्रो से आंसू टपकने लगे और कितने ही उर्से तक उस बालिका का नाम सुनकर ही परेशान और व्यथित हो जाया करते थे। बादशाह कई दिन तक शाहजादे के निवास पर ठहरे और ईश्वरीय मास तीर के सोमवार को वे आसफ खां के निवास पर गये और वहां से चश्मा–ए–नूर जाकर वहां 2, 3 दिन व्यस्त रहे परन्तु वह जब तक अजमेर में रहे अपने पर काबू नहीं कर सके। जब कभी मित्रता का शब्द उन्हे सुनाई देता था तब उनके आखों से बेरोक आंसू गिरने लगते थे। तब उनके सेवको के हृदय खण्ड–खण्ड हो जाया करते थे। जब सवारी दक्षिण को गई तो उनको कुछ शान्ति प्राप्त हुई।

इसी तारीख को राय मनोहर के पुत्र पृथ्वीचन्द्र को राय की उपाधि और 500 जात और 400 सवार का मनसब तथा अपने निजी प्रदेश में जागीर प्राप्त हुई। शनिवार ता. 11 को मैं चश्म–ए–नूर से अजमेर के महल में गया। रविवार के सांयकाल ता. 12 को जब 37 सैकेण्ड हो चुके थे और हिन्दू ज्योतिषियों के अनुसार धन राशि सत्ताइसवें अंश पर थी और यूनानी गणित के अनुसार मकर राशि 15 वें अंश पर थी तो आसफ खां की पुत्री (खुर्रम की पत्नी) ने एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। इस जन्मोत्सव पर आनन्द के बाजे खूब जोर से बजाए गए और लोगों के लिए आमोद–प्रमोद

का द्वार खुल गया। विचार किए बिना ही अविलम्ब मेरी जवान पर शाह सजाअत का नाम आया। मुझे आशा है कि इसका आगमन मेरे लिए और इसके पिता के लिए शुभ होगा। उसी दिन गवास खां की मृत्यु की खबर आई इसकी जागीर सरकार कन्नौज में थी। 12 तारीख को एक जडाऊ खजर और एक हाथी जैसेलमेर के राव कल्याण को दिए। मैंने गुजरात के दीवान राय कुंवर को भी एक हाथी दिया। इसी मास (तीर) की 22 तारीख को राजा महासिह के मनसब में वृद्धि करके उसको 4 हजारी मनसबदार बना दिया गया। उसके सवारों की सख्या 3 हजार थी। अली खां तातारी का मनसब जिसकी उपाधि नसरत खा थी अब दो हजार जात और 500 सवार कर दिया और उसे एक निशान भी प्रदान किया गया। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैने एक व्रत लिया कि पूज्य ख्वाजा की प्रकाशमान कब्र पर सुनहरी कटघरा और जाली का काम करवाया जावे। इसी मास की 27 तारीख को यह पूरा हो गया तो मैंने आदेश दिया कि इसको लगाया जाए। इसमे एक लाख 10 हजार रुपये खर्च हुए थे। दक्खिन की सेना का नेतृत्व संतोषप्रद नहीं था इसलिए मुझे ख्याल आया कि मेरे पुत्र सुलतान परवेज को वहां से वापिस बुलाकर बाबा खुर्रम को वहां की विजयी सेना के अग्रभाग का नेतृत्व करने के लिए भेजा जावे क्योंकि उसमें वस्तुस्थिति का ज्ञान और सत्यशीलता के चिन्ह स्पष्ट थे और उसके पीछे-पीछे मैं स्वयं जाऊँ जिससे एक ही युद्ध मे यह महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हो जाए। इस अभिप्राय से मैने एक फरमान परवेज के नाम भेजकर आदेश दिया कि वह सूबा इलाहाबाद के लिए रवाना हो जाए जो मेरे साम्राज्य के मध्य मे स्थित है। जब मैं युद्ध में व्यस्त रहूगा तो उस प्रदेश की रक्षा और प्रशासन उसके सुपुर्द किए जाएगे। इसी मास की 29 तारीख को बुरहानपुर के वाकियानवीस बिहारीदास का पत्र अया कि शाहजादा 20 तारीख को बुरहानपुर से प्रस्थान करके उपरोक्त सूबा की ओर चला गया है। एक अमुरदार को मैने एक जडाऊ पगडी राजा भावसिह को दी। कुश्तीगीर की दरगाह पर एक हाथी भेजा गया। मीरमुगल को सरकार सम्भल का फौजदार बनाया गया और वहा के फौजदार सईद अब्दुल वारिस को कन्नौज का सूबा दिया गया। पहले कन्नौज का सूबेदार गयास खा था। इस नई जगह को दृष्टि में रखकर मीरमुगल के मनसब मे 500 जात और 500 सवार की वृद्धि की गई। 21 तारीख का रावल कल्याण जैसलमेर वाले की भेट मेरे सामने रखी गई इसमे 3 हजार मोहरे, नौ घोडे 25 ऊँट और एक हाथी था। किजलबास खा का मनसब 1200 जात और एक हजार सवार किया गया। 23 तारीख को सुजात खां ने अपनी जागीर पर जाने की छुटटी ली वह अपने प्रदेश

की और सेवकों की व्यवस्था करना चाहता था। नियत समय पर उसको फिर वापिस आना था।

प्लेग

इसी वर्ष या मेरे राज्यारोहण के दसवे वर्ष हिन्दुस्तान के कुछ स्थानो पर एक बडा रोग फैला इसका आरम्भ पजाब के परगनो से हुआ था फिर यह सक्रमण लाहौर तक पहुच गया। इसमे बहुत से मुसलमानो और हिन्दुओ की मृत्यु हुई फिर यह सरहिन्द और दोआब तक फैल गया और दिल्ली आ पहुचां उसने आसपास के परगनो और गावो मे फैलकर सबकों बरबाद कर दिया। वृद्ध और पुराने इतिहासकार से मालुम हुआ कि इस देश मे यह बीमारी पहिले कभी प्रकट नही हुई थी। हकीमों ओर विद्वानो से इसका कारण पूछा तो कुछ ने तो कहा कि पिछले दो साल से वृष्टि नहीं हुई है और जहां हुई है नाममात्र की हुई है और कहा कि वर्षा न होने के कारण वायु बिगड गया है इसलिए यह रोग फैला है। कुछ लोगो ने अन्य कारण बतलाए। बुद्धि तो ईश्वर की देन है। हमको उसकी इच्छा के आगे सिर झुकाना चाहिए।

पाच शहरीवार को मीर मीरान की माता के लिए जो शाह इस्माइल द्वितीय की पुत्री थी 5 हजार रुपये ईराक प्रात को जाने वाले व्यापारियो के हाथ मे भेजे गए। 6 तारीख को आविद खा बख्शी और अहमदाबाद के वाकियानवीस का पत्र आया कि अब्दुल्ला खा बहादुर फीरोज जग मुझसे झगडा कर चुका है क्योकि मैने वर्तमान घटनाओ मे कुछ ऐसे मामलो का उल्लेख कर दिया है जो उसको पसन्द नही थे इसलिए उसने एक आदमियो का जत्था मेरे विरुद्ध भेजकर मेरा अपमान किया है ओर ये लोग मुझे उसके मकान पर ले गए है आदि आदि यह मामला मुझे बड़ा गम्भीर जान पडा। मेरी इच्छा थी कि मै उस (अब्दुल्ला खा बहादुर फीरोज जग) को अपनी कृपा से वचित करके बरबाद कर दू फिर मुझे यह विचार अया कि दयानत खा को अहमदाबाद भेजकर वहा निष्पक्ष लोगो से पूछताछ करके इस मामले की जाच करवाई जाए और वास्तव मे ऐसा हुआ तो अब्दुल्ला खा को वह अपने साथ दरबार मे लावे और अहमदाबाद की सूबेदारी अपने भाई दयानत खा की रवानगी से पहले ही फिरोज जग को यह खबर मिल गई और घबराकर उसने अपने को अपराधी मान लिया और वह पैदल दरबार मे आने के लिए चल पडा। दयानत खा उसको मार्ग मे मिला और इस विचित्र स्थिति मे देखकर उसे घोडे पर बिठाया। उसके पैरो मे पैदल चलने से घाव हो गये थे। वह मेरी सेवाओ मे आया। मुकर्रफ खा दरबार का एक पुराना

सेवक है। मैं शाहजादा था तभी से वह सूबा गुजरात की मांग कर रहा था अब मुझे ख्याल आया कि अब्दुल्ला खा ने ऐसा काम किया है तो मैं एक पुराने सेवक की इच्छा पूर्ति करने के लिए उसको उक्त खान के स्थान पर अहमदाबाद भेज दूं। एक शुभ मुहूर्त देखकर मैने उसको इस सूबा का सूबादार नियुक्त कर दिया। 10 तारीख को कन्धार के सूबादार बहादुर खा के मनसब में जो पहले 4 हजार जात और 3 हजार सवार था 500 जात की वृद्धि कर दी। मेन्डोलिन बजाने वाला शौकिन इस युग का आश्चर्यमय पुरुष है वह हिन्दी और फारसी के गाने इतनी अच्छी तरह गाता है कि हृदय का जंग दूर हो जाता है मैंने उसको आनन्द खा की उपाधि दी। हिन्दी में आनन्द का अर्थ हर्ष और सुख होता है।

मैंने जल्दी काम करने वाले शिलाविदों को आदेश दिया कि राजा और उसके पुत्र करण की पूरे आकार की प्रतिमाएं बनाई जावे और संगमरमर (सफेद पत्थर) का उपयोग किया जावे। आज वे तैयार हो गई और मेरे सामने प्रस्तुत की गई मैंने आदेश दिया कि उनको आगरा ले जाकर झरोखे के नीचे बाग में रखा जावे। 26 तारीख को प्रात.काल मेरी सौर तुला का जलसा किया गया। पहली तुला में 6514 तालचा (तोला) सोना चढा। विभिन्न पदार्थ द्वारा मेरी 12 तुलायें की गई। दूसरी तुला पारे से, तीसरी रेशम से, चौथी सुगन्धित पदार्थो से जैसे एमबरग्रिस, मुश्क, चन्दन, लोबान आदि बाहर पदार्थो के द्वारा संख्या पूरी की गई। मैं जितने वर्ष का हो चुका था उतनी भेड़े, बकरे और मुर्गियां फकीरो और दरवेशो को दी गई। यह प्रथा इस अमर राज्य में मेरे पूज्य पिता के समय से चली आ रही है। मेरी तुला के सामान का मूल्य सब मिलाकर 1 लाख रुपये था।

आज मेरे सामने महावत खां की वह लाल प्रस्तुत की गई जो उसने अब्दुल्ला खां फिरोज से 65 हजार रुपये मे खरीदी थी। इसका आकार बडा सुन्दर है। खान आजम का खास मनसब 7 हजार जात करके आदेश दिया गया कि महकमा दिवानी के बराबर उसको तनख्वाह जागीर दे। इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर दयानत खां के मनसब मे उसकी पिछली कार्यवाहियों के कारण जो कमी की गई थी पूरी कर दी गई। अजुदुद्दौला जिसको सूबा मालवा जागीर में दिया था छुट्टी लेकर जब जाने लगा तो उसको एक घोडा और एक खिलअत दिये गये। जैसलमेर का इलाका उसको तनख्वाह में दे दिया गया। उसके प्रस्थान का शुभ मुहूर्त उसी दिन था इसलिये वह आज्ञा प्राप्त करके अपने प्रान्त को चला गया उसको बडा हर्ष था क्योंकि उसको एक घोड़ा, एक हाथी, एक जडाऊ तलवार, एक जड़ाऊ खंजर, एक खिलअत दिये गये थे। 31 तारीख को मुकर्रब खां ने अहमदाबाद जाने के

लिये छुटटी ली और उसका मनसब 5 हजार जात और 5 हजार सवार करके उसे एक बढ़िया खिजअत, एक सोने का तमगा और मेरे तबेले से दो घोडे, एक खास हाथी ओर एक जडाऊ तलवार दी गई वह उक्त सूबा को बडा हर्षित होकर गया। 11 मिहर को कुंवर करण का पुत्र जगतसिंह अपने स्थान से मेरी सेवा मे आया 16 तारीख को मिर्जा अलीबेग अकबर शाही अवध से आया और मेरी सेवा में उपस्थित हुआ। अवध का सूबा उसकी जागीर थी उसने एक हजार रुपये भेंट किये और मेरे सामने एक हाथी प्रस्तुत किया जो उधर के लिये जमींदार के पास था और जिसके बाबत मैने आदेश दिया था कि उससे ले लिया जावे। 21 तारीख को सुल्तान गोलकुन्डा कुतुबुल मुल्क की भेंट मैने देखी इनमे जडाऊ आभूषण थे। सैयद कासिम बारह को मनसब बढाकर एक हजार जात और 600 सवार कर दिया गया। शुक्रवार तारीख 12 को मिर्जाअली बेग ने 75 वर्ष की अवस्था में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया उसने साम्राज्य की बडी सेवायें की थीं उसका मनसब बढते–बढते 4 हजार हो गया था। वह इस कुटुम्ब के वीरो मे प्रसिद्ध था और उसका स्वभाव बडा नेक था उसके न कोई पुत्र था न आश्रित लोग। उसको कविता करने का शौक था। जिस दिन वह ख्वाजा मुइनुद्दीन की आदरणीय दरगाह मे गया उसी दिन उसकी मृत्यु हुई थी। अत. मैंने आदेश दिया कि उसको दरगाह मे ही दफना दिया जावे।

जब मैने बीजापुर के सुल्तान आदिलखा के राजपूतो को विदा किया तो मैने प्रार्थना की थी कि यदि उस प्रदेश मे कोई पहलवान और तलवार का विशेषज्ञ हो तो आदिलखा से कहा जाये कि उसको मेरे पास भेज दे। कुछ समय के पश्चात जब राजदूत वापिस आये तो वे शेर अली नामक एक बडे अनुभवी पहलवान को अपने साथ लाये वह बीजापुर मे ही पैदा हुआ था। उनके साथ कुछ तलवार का खेल दिखाने वाले भी थे। इनका खेल तो मामूली था परन्तु जब मैने शेर अली को अपने पहलवानो से लडाया तो उनमें से कोई भी उसके मुकाबले में नहीं ठहरा उसको 1000 रुपये, 1 खिलअत और 1 हाथी दिया गया। उसका शरीर बडा गटा हुआ अच्छे आकार का और बलवान था। मैंने उसको अपनी सेवा में रख लिया उसको एक जागीर दी और मनसब दिया। दयानत खां को इसलिए भेजा था कि अब्दुल्ला खां बहादुर फिरोज जंगी को ले आवे। तारीख 24 को वह उसको ले आया और मेरी सेवा में उपस्थित होकर उसने 100 मोहरें भेंट की। उसी दिन राजा राजसिंह के पुत्र रामदास को पदोन्नति करके 1000 जात और 500 सवार का मनसब दिया गया यह दक्खिन में काम आया था। अब्दुल्ला खां ने कुछ अपराध किये थे उनका बाबा खुर्रम ने बीच बचाव करवाया।

खुर्रम को प्रसन्न करने के लिए मैने आदेश किया कि अब्दुल्ला को तस्लीम करने के लिए आने दिया जावे। वह लज्जित होकर मेरे सामने आया और उसने 100 मोहरे ओर 1000 रुपये भेट किये, आदिल खा के राजपूतो की वापिसी से पहले ही मैने निश्चय कर दिया था कि अग्रसेना के साथ बाबा खुर्रम को तो भेज ही दिया है अब मुझे भी दक्षिण जाकर इस महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करना चाहिए अब तक मै इसको कुछ कारणो से स्थागित करता रहा हू। इसलिए मैने आदेश दिया कि दक्षिण के सुल्तानो के सम्बन्ध मे मुझसे शाहजादे के सिवा और कोई बात न करे। आज शाहजादा राजपूतो को लेकर आया और उनके प्रार्थना पत्र मेरे सामने प्रस्तुत किय। मुर्तिजा खा की मृत्यु के बाद राजा मान और अनेक सहायक सरदार दरबार मे आये थे। आज इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर मैने राजा मान को कागडा पर आक्रमण करने वाली सेना का अध्यक्ष बनाया। और उसके साथ जाने वाले सब लोगो को नियुक्त किया और प्रत्येक को उसके पद और स्थिति के अनुरार घोडा, खिलअत, हाथी और रुपये दिये और उन्हे विदा किया। कुछ दिन बाद बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर मैने अब्दुल्ला खा को एक जडाऊ खजर दिया। वह मन मे बडा दुखी था और उसका ह्रदय दुखी हो गया था इसलिए मैने आदेश दिया कि उसका मनसब पूर्ववत बना रहे ओर वह मेरे पुत्र की सेवा मे रहे। तीसरी आबान को मैने बजीरखा का मनसब बढाकर दो हजार जात और एक हजार सवार कर दिया दिया वह बाबा परवेज की सेवा मे था। 4 तारीख को खुसरो को आसफखा के सुपुर्द किया गया पहले यह अजिरायसिह दलन के सुपुर्द था। मैने उसको एक खासा दुशाला दिया। सात आबार को तदनुसार के बाद उसने यह पत्र मेरे सामने प्रस्तुत किया जो वह लाया था। फिर यह निश्चय हुआ कि वे घोडे और भेटे मेरे सामने रक्खी जावे जो वह लाया है। लिखित सन्देश मे मित्रता, भ्रातृत्व और हार्दिकता थी। उसी दिन मैने राजदूत को एक जडाऊ ताज और खिलअत दी। इस पत्र मे बडी मित्रता और प्रीति प्रदर्शित को गई थी इसलिए जहागीरनामा मे इसकी ज्यो की त्यो प्रति लिखी गई है।

रविवार 18 सवाल तदनुसार को दक्षिण के प्रान्तो की विजय के लिए मेरे पुत्र बाबा खुर्रम के डेरे अजमेर से रवाना हुए। यह निश्चय हुआ था कि खुर्रम अग्रसेना के मार्ग से चले और उसके पीछे शाही निशान प्रयाण करे। सोमवार तारीख 19 तदनुसार 9 आबान को जब 3 घडी दिन व्यतीत हो चुका था तो शाही डेरा भी उसी प्रकार और उसी दिशा मे चलने लगा। तारीख 10 को राजा सूरजमल का मनसब 2000 जात और 2000 सवार कर दिया गया और शाहजादे के साथ जाने के लिए उसको नियुक्त किया

गया। 19 शाहवान की रात्रि को मैं गुसलखाने में था कुछ अमीर और सेवक और संयोगवश मुहम्मद रजाबेग भी मौजूद थे। जब छः घडी दिन व्यतीत हो चुका था तो एक उल्लू आकर शाही महल की छत्री पर बैठ गया। वह दिखाई नही देता था। इसलिए लोग नहीं बतला सके कि वह किधर है मैने बन्दूक मंगवाकर निशाना लगाया और जिधर उन्होने कहा उधर गोली चलाई भाग्य के विधान की भाति गोली उस अशुभ पक्षी के लगी और उसके टुकडे–टुकडे हो गये। उपस्थित लोगो ने मेरी बडी प्रशसा की उसी रात्रि को मैंने अपने भाई शाह अब्बास के राजदूत से बातचीत की और अन्त मे मैंने पूछा कि शाह के ज्येष्ठ पुत्र सफी मिर्जा से मैने यह प्रश्न इसलिए किया कि मैं इसका कारण जानने के लिए परेशान था। उसने निवेदन किया कि यदि वह वध नहीं किया जाता तो शाह के प्राण अवश्य ले लिये जाते। उस शाहजादे के व्यवहार से यह इरादा प्रकट हो गया था। इसलिए शाह उससे पहले ही सतर्क हो गया और उसको मार डालने का आदेश दे दिया। मैंने उसी दिन मिर्जा हसन का मनसब 100 जात और 300 सवार कर दिया। इतना ही मनसब मुतामद खा को दिया। यह बाबा खुर्रम की सेना का बख्शी था बाबा खुर्रम की विदाई का मुहूर्त शुक्रवार तारीख 20 आबान था। इस दिन के अन्त मे उसने अपने चुने हुए सशस्त्र सैनिक दीवानेआम मे बुलाकर दिखाये। इस शाहजादे को कई प्रकार से सम्मानित किया गया था जिनमे से एक शाह की उपाधि भी थी। यह उसके नाम से जोड दी गई थी। अब शाह सुल्तान खुर्रम कहलाता था। मैने उसको एक खिलअत, एक जडाऊ, चार कब और एक कालर, एक झालर मोतियो से जडे हुए दिये। इनके अतिरिक्त एक जडाऊ जीन सहित तुर्की घोडा ओर बशीबदन नामक एक खासा हाथी, एक अग्रेजी ढग की बगी उसके बैठने के लिए एक जडाऊ तलवार एक खास पडतले सहित दी। यह अहमदनगर की विजय के समय मिली थी। वह बडी उत्सुकता के साथ रवाना हुआ। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर पर भरोसा है कि इस सेवा मे उसकी शुर्क रुई (कीर्ति) होगी। प्रत्येक अमीर और मनसबदार को उसके पद के अनुसार एक घोडा और एक हाथी दिया गया। अपनी निजी तलवार खोलकर अब्दुल्ला खा फिरोज जग को दी। इससे पहले चोरो का एक गिरोह कोतवाली चबूतरे से कुछ रुपये चुरा कर ले गया था। कुछ दिन बाद इस गिरोह के 7 आदमी पकडे गये। इनके नेता का नाम नवल था इनके पास कुछ रुपए भी थे। मैने सोचा कि इन्होने बडा अपराध किया है इसलिए इनको कठोर दण्ड दिया। मैने आदेश दिया कि नवल को हाथी के सामने डाल दिया जाए। उसने प्रार्थना कि वह हाथी से लडना चाहता है मैने इसकी अनुमति दे दी तब एक बडा भयकर हाथी

लाया गया। और नवल के हाथ में एक खंजर देकर उसको हाथी के सामने खड़ा कर दिया गया। हाथी ने उसको कई बार गिराया परन्तु प्रति बार यह निर्भय व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और बडे साहस के साथ हाथी की सूंड में खंजर मारा और हाथी उस पर हमला करने से रूक गया। जब मैंने उसका यह साहस और मर्दानगी देखी तो मैंने उसका इतिहास पूछा। परन्तु उसने कुटिल और नीच स्वभाव के कारण कुछ थोडी देर बाद वह अपने स्थान और निवास की ओर भाग गया। इससे मुझे बडी चिढ लगी, और मैंने उधर के जागीरदारों को आदेश किया कि तलाश करके उसको पकडा जावे। संयोगवश उसको दूसरी बार पकड लिया गया तो मैने आदेश दिया कि इस कृतघ्न आदमी को फांसी दे दी जावे। शेख सादी ने ठीक ही कहा है कि भेडिया का बच्चा भेडिया ही होता है चाहे उसका पालन कोई आदमी ही करे।

मंगलवार एक जीकदा (10 नवम्बर 1616) तदनुसार अ:बान को जब दोपहर और घडी दिन व्यतीत हो चुका था तो मैं एक फिरंगी बग्गी मे सवार होकर जिसमें चार घोडे जुते हुए थे, अजमेर से रवाना हुआ मैंने कई अमीरों को आदेश दिया कि वह भी बग्गियों में चले। सूर्यास्त के लगभग 1 कोस की दूरी पर देवराय नामक गांव में मुकाम हुआ। भारत के लोगों में यह प्रथा है कि बादशाह या बडा आदमी पूर्व की ओर विजय हेतु प्रयाण कर तो दांत वाले हाथी पर सवार हों, यदि पश्चिम की ओर प्रयाण करे तो एक ही रग के घोडे पर सवार हो, यदि उत्तर की प्रयाण करना हो तो सिंहासन पर बैठकर चले। यदि दक्षिण दिशा में जाए तो रथ में बैठे। मैं अजमेर मे 5 दिन कम 3 वर्ष ठहरा था।[1] यहां पूज्य ख्वाजा मोइनुद्दीन की कब्र है। लोग अजमेर को दूसरे अकलीम में मानते हैं। यहां का वायु समशीतोष्ण है। राजधानी आगरा यहां से पूर्व में है उत्तर में दिल्ली नगर और दिल्ली जिला है और दक्षिण में सूबा गुजरात है। पश्चिम में मुल्तान और देउलपुर स्थित हैं। यहा जल दुर्लभ है। खेती वर्षा पर निर्भर है। यहां शीत भी कम पडता है और गर्मी का मौसम भी आगरे की अपेक्षा अच्छा रहता है। युद्ध के समय इस सूबा से 86 हजार सवार, 3 लाख 4 हजार प्यादे दिये जाते है। इस नगर में दो बड़े–बडे तालाब है एक का नाम बीसल और दूसरे का नाम आनासागर है। बीसल बरबाद हो गया है इसकी पाल टूट गई अब मैंने

---

1 जहागीर 26 आबान 1022 हिज्री में आया था और 21 आबान 1025 को वह वापिस गया था। तदनुसार वह 18 नवम्बर 1613 को आया और 10 नवम्बर 1616 को रवाना हुआ।

इसकी मरम्मत के लिए आदेश दिया है जब शाही सेना आनासागर पर थी वह जल से पूर्ण था और उसमे लहरे आया करती थी। यह ताल डेढ कोस और 5 तनाव के गिर्द मे है। जब मै अजमेर मे था तो मैने पूज्य ख्वाजा की दरगाह की नौ बार यात्रा की थी और पुष्कर झील पर 15 बार गया था। चश्म-ए-नूर पर 38 बार गया था।

3 आजर को मै इस गाव मे रवाना हुआ और बाघल नामक गाव मे मुकाम किया जो 2 कोस के अन्तर पर है। मार्ग मे 6 जलकुकुट मारे 4 तारीख को डेढ कोस पर मैने रामसर मे मुकाम किया। यह गाव नूरजहा बेगम का है यहा मैं 8 दिन तक ठहरा। 5 वे दिन मैने 7 हिरण 1 सारस और 15 मछलिया मारी। अगले दिन कवर कर्ण के पुत्र जगतसिह को एक घोडा और एक खिलअत देकर उसके देश की ओर विदा किया। उसी दिन मैंने 3 हिरण और 7 मछलिया मारी। उसी दिन राजा श्यामसिह की मृत्यु की खबर आई यह बगस की सेना मे नियुक्त था 7 वे दिन मैने शिकार किया। बृहस्पतिवार और शुक्रवार को भोज और रागरग हुआ। यह नूरजहा का स्थान है उसने जडाऊ आभूषण, सुन्दर वस्त्र सिले हुए पर्दे ओर हर प्रकार की जवाहरात प्रस्तुत की। रात को सब ओर तथा तालाब के बीच मे रोशनी हुई। उसी दिन मैने अमीरो को बुलाया और अधिकाश को शराब पिलाई। मै अपनी यात्रा मे अपने साथ कुछ नावे रखा करता था। ये गाडियो मे जाती थी इस आमोद-प्रमोद के बाद इन नावो मे बैठकर मै मछलिया पकडने गया ओर थोडे समय मे ही 208 मछलिया पकड ली। इनमे से आदीराहा जाति भी थी। रात मे मैंने इनको अपने सामने नोकरो मे बाट दिया। 13 आजर को मैने रामसर से कूच कि। मार्ग मे 4 कोस तक शिकार किया और फिर बलौदा नामक गाव मे मुकाम किया। यहा मै 2 दिन तक ठहरा 16 तारीख को चलकर सवा तीन कोस कूच किया और निहाल नामक गाव मे मुकाम हुआ। 18 तारीख को सवा दो कोस की कूच हुई। उस दिन मैंने ईरान के शाह के राजदूत मोहम्मद रिजाबेग को एक हाथी दिया फिर जोन्सा नामक गाव मे मुकाम किया। 20 तारीख को देवगाव पहुचा और मार्ग मे 3 कोस तक शिकार किया। इस स्थान पर मै दो दिन ठहरा और सायकाल शिकार के लिये निकला इस मुकाम पर एक विचित्र घटना देखी गई। यहा शाही निशान पहुचे उससे पहले ही 23 तारीख को पौने चार कोस कूच करके मै बहासु नामक गाव पर ठहरा और यहा 2 दिन का मुकाम किया। मै प्रतिदिन शिकार करता था। 26 तारीख को फिर कूच करके काकल नामक गाव के बाहर मुकाम किया। 2 कोस चलकर यह मुकाम किया गया था। 27 तारीख को मिर्जा शाहरुख के पुत्र बादी-उज-जमा का

मनसब बढाकर 1500 जात और 750 सवार कर दिया गया। 29 तारीख को पौने तीन कोस कूच करके परगना बोदा के निकट लासा नामक गांव पर मुकाम हुआ। आज (19 दिसम्बर 1616) को कुरबान का दिन था मैंने आदेश दिया कि इस दिन के नियमों का पालन किया जाए। मैं अजमेर से रवाना हुआ तब से 30 आजर तक मैंने 67 नीलगाव और हिरन और 37 जलकुक्कुट मारे थे। 2 दिन को मैंनें प्रयाण करके 3 कोस और 10 जरीन तक शिकार किया फिर कानरा नामक गांव के निकट मुकाम किया। चौथे दिन सवा तीन कोस कूच करके सौरठ नामक गांव पर पहुंचा 7 तारीख को बरोरा नामक गांव के निकट मुकाम किया गया। 7 तारीख को 50 जलकुक्कुट और बगुले मारे गए। अगले दिन भी यही मुकाम रहा। आज 27 जलकुक्कुट मारे गए। 9 तारीख को 4 कोस से थोडा अधिक कूच किया और खुशताल पर मुकाम किया। इस मुकाम पर मुतामद खां की रिपोर्ट आई कि जब शाह खुर्रम राणा राज्य मे ठहरा तो राणा उसकी सेवा मे आया और सेवा की जो रस्में उसने अब तक नहीं की थीं वे सब आज की गई। छोटी से छोटी भी नहीं छोडी। यद्यपि राजा के मिलने की कोई बात नहीं हुई थी। परन्तु शाही सेना की शान और कीर्ति ने उसके धीरज और दृढता को डिगा दिया और दूदपुर आकर शाहजादे ने उसकी ओर पूरा ध्यान दिया और उसे 1 खिलअत 1 चारकब, 1 जडाऊ तलवार, 1 जडाऊ खपवा और ईरानी तथा तुर्की घोड़े और एक हाथी देकर उसको सम्मानपूर्वक विदा किया। उसके पुत्रों तथा रिश्तेदारो को भी खिलअतें तथा भेंट दीं। राणा ने भेंट दी जिनमे 5 हाथी, 27 घोडे और एक थाल मोतियों और जडाऊ आभूषणों का था। इनमे से 3 घोडे लेकर शेष शाहजादे ने वापिस कर दिए और यह ठहरा कि उसका पुत्र कर्ण इस लडाई मे 1500 सवारों सहित शाहजादे के साथ जाएगा। 10 तारीख को राजा महासिंह के पुत्र अपनी जागीर और वतन से आकर रणथम्भौर के समीप मेरी सेवा मे उपस्थित हुए। उन्होंने 3 हाथी और दो घोड़े भेट किए। उनका अपने पदो के अनुसार मनसब बढाया गया। इस दुर्ग के पास मेरे डेरे लगे थे इसलिए वहां के कैदियों मे से कुछ छोड दिए गए मै यहां दो दिन ठहरा और शिकार करने गया तो 38 जलकूक्कूट और बगुले मारे। 12 तारीख को प्रयाण करके और 4 कोस आकर कोयला नामक गांव पर मैंने मुकाम करवाया। मार्ग में मैंने 1 जलकुक्कुट और हिरन मारा। 1 तारीख को पौने चार कोस प्रयाण करके एक तोरा नामक गांव के समीप ठहरा और मार्ग में 1 नीलगाव और 12 बगुलों का शिकार किया उसी दिन आगा फाजिल को फाजिल खां की उपाधि दी गई यह लाहौर में इतिमादुद्दौला का नायब नियुक्त किया गया था। इस मंजिल पर दौलतखाना तालाब के तट

पर खड़ा किया गया था। यह स्थान बड़ा सुन्दर तथा सुखद था। इसलिये मैं यहा 2 दिन ठहरा और प्रतिदिन सायकाल को शिकार करने गया। यहा पर महावत खा का छोटा पुत्र जिसका नाम बहरवर है रणथम्भौर के दुर्ग से मुझे तस्लीम करने आया। रणथम्भौर उसके पिता की जागीर है। मैने अमानत खा के पुत्र को सूबा गुजरात का वाकियानवीस बनाया। 17 तारीख को साढे चार कोस कूच करके मै लसाया गाव के निकट ठहरा। यहा के मुकाम पर मैंने 2 जलकुक्कुट मारे। लश्कर खा और खानदौरा मे कुछ मतभेद हो गया था। इसलिये मैने लश्कर खा को दरबार मे बुलाया इस मुकाम पर उसके स्थान पर मैने आदिल खा को बख्शी और वाकियानवीस नियुक्त किया। 19 तारीख को ढाई कोस चलकर कूराक नामक गाव के समीप मुकाम किया यह गाव चम्बल तट पर स्थित है। यहा का जलवायु बडा सुखद है। इसलिए यहा 3 दिन मुकाम रहा प्रतिदिन मै नाव मे बैठकर नदी पर घूमने और जलपक्षी मारने के लिये जाता था। 22 तारीख को प्रयाण किया और साढे चार कोस तक मार्ग मे शिकार करता चला फिर सुल्तानपुर और चिलामला नामक गाव पर मुकाम हुआ। आज मीरान सदरजहा को मैने 5 हजार रुपया देकर उसको जागीर पर जाने की अनुमति दे दी। शेखपीर को 1000 रुपये दिए। 25 को कूच करके साढे तीन कोस तक शिकार किया और फिर बासूर नामक गाव पर मुकाम हुआ। 27 को प्रयाण करके साढे चार कोस तक शिकार किया और चारदुह नामक गाव के पास मुकाम किया। यहा 2 दिन मुकाम रहा दो मास मे 416 जानवर मारे गये। 1 बहमन तदनुसार बारह मोहर्रम 1026 (20 जनवरी 1617) को महिलाओ के साथ नाव मे बैठकर मैं एक मजिल आगे गया। जब एक घडी दिन शष रहा तो मै रूपाहेडा गाव पर पहुचा जो लगभग 4 कोस की दूरी पर था और ठहरने का मुकाम था। उसी दिन मैने कैकना के हाथ दक्षिण मे काम करने वाले 21 अमीरो के लिए शरद ऋतु की पोशाके भेजी और आदेश दिया कि इन अमीरो से 10000 रुपये इनके वसूल किये जावे। इस मुकाम पर बडी हरियाली थी और यह बडा सुखद स्थान था। 3 तारीख को फिर प्रयाण शुरू हुआ। पिछले दिन की भाति मै नाव मे बैठकर चला और 2 कोस से कुछ अधिक जाकर कक्खा दास गाव पर मुकाम किया। काबुल के अमीरो के लिए मैने करा नामक सेवक के हाथ शरदकाल के कपडे भेजे। यह स्थान बडा सुखद था और यहा का वायु बडा उत्तम था इसलिए मै। यहा ठहरा। उस दिन खबर आई कि नादअली खा मैदानी की काबुल मे मृत्यु हो गई। मैने उसके पुत्रो को मनसब देकर सम्मानित किया और इब्राहीम खा फिरोज जग की प्रार्थना पर रावत शकर के मनसब मे 500 जात और 1000 सवार की वृद्धि

कर दी। 6 तारीख को प्रयाण किया कोस से कुछ अधिक चलकर अमजार नामक गाव पर मुकाम किया। जिस घाटी मे होकर प्रयाण किया था वह घाटी चन्दा कहलाती है। यह घाटी बडी हरी भरी और सुखद है इसमे सुन्दर वृक्ष उगे हुए है। यहा तक तो सूबा अजमेर की सीमा है मैं 84 कोस पार कर चुका था। यहा नूरजहा बेगम ने बन्दूक के द्वारा एक करिशा का शिकार किया। उपरोक्त गाव से सूबा मालवा शुरू होता है दूसरी अर्कलीस मे स्थित है। इस सूबा की लम्बाई गढा प्रान्त से बासवाडा प्रात तक 245 कोस है और उसकी चौडाई परगना नन्दरबार 230 कोस है। जिसके पूर्व की ओर बान्धा का प्रान्त है और उत्तर की ओर नरकर का दुर्ग है इसके दक्षिण मे बगलाना का प्रदेश है और पश्चिम मे गुजरात और अजमेर है।

मालवा

मालवा मे पानी खूब है और यहा का जलवायु सुखद है। छोटी –छोटी नदियो नहरो और चश्मो के अतिरिक्त यहा गोदावरी, भीमा, कालीसिन्द, नीरा और नर्वदा 5 नदियॉं हैं। इसका जलवायु भी समशीतोष्ण है। यहा की भूमि नीची है। परन्तु इसका कुछ भाग ऊँचा भी है। धारलिया मालवे का प्रसिद्ध स्थान है। यहा अगूर की बेलो मे एक वर्ष मे दो बार फल लगते है। पहली बार जब सूर्य मीन राशि मे होता है और दूसरी जब वह सिह राशि मे होता है। मीन राशि के अगूर अधिक मीठे होते है। यहा के किसान और कारीगर शस्त्र रखते है। इस प्रान्त की आय दो करोड 47 लाख है। जब आवश्यकता होती है तो यहा से 9300 सवार और 4 लाख 70 हजार 3 सौ प्यादे तथा 100 हाथी मिलते है। 8 तारीख को साढे तीन कोस कूच करके खेराबाद के निकट मुकाम किया गया। मार्ग मे 17 पक्षी मारे और 3 कोस कूच करके सिघारा गाव पर मुकाम किया। 11 तारीख को सायकाल मैं शिकार करने गया और नीलगाव मारा गया। 12 तारीख को सवा चार कोस पार करके कछयारी नामक गाव पर मुकाम किया उस दिन राणा अमरसिह के भेजे हुए अजीरो के टोकरे आये। वास्तव मे यह बहुत अच्छा फल है। मैंने भारतवर्ष मे कही ऐसे स्वादिष्ट अजीर नही देखे थे परन्तु यह थोडे से ही खाने चाहिए अधिक खाने से हानि होती है 14 तारीख को प्रयाण हुआ और 4 कोस से कुछ अधिक कूच करके मै बलवली नामक गाव पर ठहरा। इधर की ओर राजा जानवा प्रभावशाली जमीनदार है उसने दो हाथी भेट स्वरूप भेजे थे जो मेरे सामने खडे किये गये थे।

15 तारीख को फरीदून खा बरलास के पुत्र मीर खा की मृत्यु की खबर आई वह इस (तीमूरी) कुटुम्ब का एक विश्वसनीय अमीरजादा था। 16

तारीख को प्रयाण शुरू हुआ तो 4 कोस से कुछ अधिक पार करके गिरि नामक गांव में मुकाम किया गया। मार्ग में फरायती लोगों ने खबर दी कि इधर पास में ही सिंह है मैं शिकार करने निकला और एक गोली मे ही मैने उसको समाप्त कर दिया। 18 तारीख को पौने तीन कोस पार करके हमने अमरिया नामक गांव के पास मुकाम किया। 19 तारीख को यही ठहर कर मैंने शिकार किया। वापिस आकर मैं ख्वाजा खिज्र का त्यौहार मनाने के लिए इतमादुद्दौला के निवास पर गया। यह ख्वाजा खिजरी भी कहलाती है। मैं एक पहर रात व्यतीत हुई तब तक वहां ठहरा। फिर जब भूख मालूम होने लगी तो मै शाही डेरो मे आ गया। आज के दिन मैंने इतुमादुद्दौला का सम्मान बढाया। मैंने अन्त.पुर की महिलाओ से कहा कि उसके सामने मुख ढकने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वह मेरा घनिष्ठ मित्र है। 22 तारीख को फिर प्रयाण को आदेश दिया और 3 कोस चलकर बुलबडी मे मुकाम किया मार्ग में 2 नीलगाव मारे। किलिच खा के भतीजे बालूज का मनसब 1000 जात और 850 सवार था और उसको अवध मे जांगीर थी। अब मैंने इसका मनसब 2000 जात 1200 सवार कर दिया और इसे किलिच खा की उपाधि देकर बंगाल भेज दिया। 26 तारीख को प्रयाण हुआ तो पौने पाच कोस चलकर देहकाजियान नामक गाव के समीप मुकाम किया गया। यह गाव उज्जैन के पास है। इस स्थान पर कितने ही आम के पेडो में बौर आ रहे थे। डेरे, तालाब के तट पर लगाये गये थे जो बडा सुखद स्थान था। यहा पर गाजी खा के पुत्र पहाड को प्राणदण्ड दिया गया इसके पिता की मृत्यु के बाद मै. इस भाग्यहीन व्यक्ति को समझता था और जालौर का दुर्ग और प्रदेश जो उसके पूर्वजो का स्थान था मैने उसको दे दिया था। अभी वह कम उम्र का था उसकी माता उसे कुछ दुष्कर्मो से रोका करती थी परन्तु यह बडा दुष्ट था। एक दिन उसने अपने कुछ साथियो सहित आकर और मकान में घुसकर अपने हाथ से अपनी मां को मार डाला। जब यह खबर मुझ तक पहुंची तो मैंने आदेश दिया कि उसको बुलाया जाए। जब उसका अपराध सिद्ध हो गया तो उसको प्राणदण्ड देने का आदेश हुआ। तारीख 27 को प्रयाण किया गया और ढाई कोस चलने के बाद हिन्दुवाल नामक गांव पर मुकाम हुआ। मार्ग में एक नीलगाव मारा गया। 28 तारीख को कोस चलने पर कालियादह नामक गांव पर मुकाम किया गया कालियादह एक इमारत का नाम है जो गयासुद्दीन के पुत्र और सुल्तान महमूद खिलजी के पोते नासिरूद्दीन ने बनवाई थी। महमूद खिलजी मालवे का शासक था। अपने समय में उसने यह उज्जैन में बनवाई थी जो सूबा मालवा का एक बहुत प्रसिद्ध नगर है लोग कहते हैं कि वह गर्मी से इतना घबराता था कि

अपना समय पानी में व्यतीत किया करता था। यह इमारत नदी के बीच में बनाई गई थी इस नदी का पानी नहरो मे बांट दिया गया था और फिर इस पानी को सब ओर से लाकर और मकान के अन्दर और बाहर भी लाकर बड़े और छोटे ऐसे हौज बनाये गये थे जो उस स्थान पर उपयुक्त थे यह बड़ा सुखद स्थान है और हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध निवास है यहां पर ठहरने का निश्चय हुआ उससे पहिले मैंने आदेश दिया था कि इस स्थान को फिर साफ किया जावे। इसको सुखद जानकर मैं यहा तीन दिन ठहरा यहीं पर सुजाअतखा अपनी जागीर से मेरी सेवा में आया। उज्जैन एक प्राचीन नगर है और हिन्दुओं के सात तीर्थ में माना जाता है। राजा विक्रमादित्य इस प्रान्त और इस नगर मे रहा करता था। उसने हिन्दुस्तान में आकाश और तारो का अध्ययन शुरू किया था उस समय से अब (1026 हिजरी) (1617 ई.) तक और मेरे राज्यारोहण के 11 वें वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। भारत के ज्योतिषी उसी के अध्ययन के आधार पर फल निकालते हैं यह नगर शिप्रा नदी के तट पर स्थित है। हिन्दुओं का विश्वास है कि किसी वर्ष और किसी समय इस नदी का पानी दूध बन जाता है। मेरे पूज्य पिता के समय में जब उसने मेरे भाई शाह मुराद के काम की व्यवस्था करने के लिए अबुल फजल को भेजा तो इस शेख ने रिपोर्ट भेजी थी कि कितने ही हिन्दुओं और मुसलमानो ने कहा है कि कुछ दिन पूर्व रात्रि में इस नदी का पानी दूध हो गया था। कुछ लोग यहां से रात्रि में पानी ले गये और प्रातःकाल देखा को उनके पात्र दूध से भरे हुए थे। यह बात बहुत फैल गई है इसलिए इसको लिखा गया है। परन्तु मेरी बुद्धि मुझे सहमत नहीं होने देती है इस मामले की वास्तविकता अल्ला ही जानता है। दो इसफन्दारमुज में एक नाव मे बैठकर कालियादह से अगली मंजिल पर चला और अगली मंजिल शुरू हुई।

सन्यासी जदरूप

मै प्राय. सुना था कि एक त्यागी और गम्भीर सन्यासी जिसका नाम जदरूप है कितने ही वर्ष पहले उज्जैन को छोडकर एक वन के कोने में रहता है और सच्चे ईश्वर की पूजा में लगा हुआ है। मैं उससे परिचय करने के लिए बडा उत्सुक था। जब मैं राजधानी आगरे में था तो मैं चाहता था कि उसको बुलाकर उससे मिलूं। अन्त मे जब मैंने समझा कि इससे इस साधू को तकलीफ होगी तो मैने उसको नहीं बुलाया। जब मैं इस नगर के निकट पहुचा तो नाव मे से उतर कर दो फलांग पैदल चलकर उससे मिलने गया। उसने अपने रहने के लिए पहाडी की बगल में खोदकर अपने लिए स्थान

बना रखा था और उसमे एक दरवाजे के पास एक मेहराब जैसी खुली जगह बनी हुई है जिसकी ऊँचाई एक गज और चौडाई 10 गिरह है। इस दरवाजे से इस साधू के वास्तविक निवास तक दो गज और 3 गिरह का अन्तर है और उसकी चौडाई सवा ग्यारह गिरह है। फर्श से छत तक एक गज और 3 गिरह की दूरी है। जिस दरवाजे से इसमे जाया जाता है वह साढे पाच गिरोह ऊँचा और साढे तीन गिरह चौडा है। पतले से पतला आदमी भी सौ मुसीबतो मे इसमे प्रवेश कर सकता है इसमे न चढाई है और न कोई तिनका है इस तग और अधेरी गुफा मे वह अपना एकान्त जीवन बिताता है। शरदकाल के ठडे दिनो मे वह आग नही जलाता वह बिल्कुल नग्न रहता है। केवल एक छोटी सी लगोटी लगाता है। रूम (जलालुद्दीन) के मुल्ला ने लिखा है कि हम दरवेशो के लिए सूर्य कपडा है और रात्रि मे चन्द्रमा की किरणे हमारी रजाई और कम्बल है। यह साधू दिन मे दो बार अपने निवास के निकट ही एक पानी के गढे मे नहा लेता है और दिन मे एक बार उज्जैन नगर मे जाता है परन्तु तीन ब्राह्मण ग्रहस्थो के ही यहा पहुचता है उसका विश्वास है कि वह धार्मिक एव सन्तोषी है। उनके बनाए हुए भोजन मे केवल 5 ग्रास दान स्वरूप लेता है और इनको बिना चबाए हुए ही निगल जाता है। जिससे उसमे स्वाद और सुगन्ध की आदत नही पडे। इसमे भी यह शर्त है कि इन तीनो घरो मे कोई विपत्ति नही आई हो वहा कोई बालक का जन्म न हुआ हो और कोई स्त्री रजस्वला न हो मैने जैसा लिखा है वैसा ही उसके रहने का ढग है। उसको मनुष्यो की सगति की इच्छा नहीं है परन्तु उसकी बडी प्रसिद्धि है इसलिए लोग उससे मिलने जाया करते हैं वह ज्ञान से रहित नही है क्योकि उसने वेदान्त का खूब अध्ययन किया है। सूफियो का विज्ञान भी यही है। मैने उससे 6 घडी तक बात की वह बहुत अच्छी तरह बोला। मुझ पर उसका बडा प्रभाव हुआ। मेरी सगति भी उसके अनुकूल थी जब मेरे पूज्य पिता ने असीरगढ को जो खानदेश मे है जीता था और जब वह वापिस आगरा आ रहा था तो वह यही पर इस साधू से मिला था और इसकी उसको याद थी।

आश्रम धर्म

भारत के विद्वानो ने ब्राह्मणो के लिए 4 आश्रमो का विधान किया है। हिंदुओ मे ब्राह्मण सर्वाधिक आदरणीय है। इनका जीवन 4 भागो मे विभक्त है। प्रत्येक भाग को आश्रम कहा जाता है। ब्राह्मण के घर मे उत्पन्न बच्चे को 7 वर्ष तक ब्राह्मण नही कहा जाता। जब वह 8 वर्ष का हो जाता है तो ब्राह्मणो की एक सभा की जाती है। फिर मूज की सवा दो गज लम्बी मूजी या रस्सी

बनाई जाती है और इस पर मंत्र बोलकर इसके तीन टुकडे किये जाते है और विश्वसनीय लोगों के द्वारा इसको बच्चे की कमर में बांध दिया जाता है। इन्हीं नरम रस्सों की जुन्नार (जनेऊ) बनाकर बालक के दायें कन्धें से लटका दी जाती है। फिर आत्मरक्षा के लिए उसको 1 गज लम्बा डन्डा दे दिया जाता है और पानी पीने के लिए एक तांबे का पात्र सौंप दिया जाता है। तत्पश्चात उसको 12 वर्ष के लिए एक ब्राह्मण के सुपुर्द कर दिया जाता है जो उसको अपने घर रखकर वेदों के अध्ययन में लगा देता है। हिन्दू लोग वेदों को ईश्वरकृत मानते है। इसके बाद बालक को ब्राह्मण माना जाता है। इस 12 वर्ष के अर्से में यह आवश्यक है कि वह शारीरिक सुखों से दूर रहे। दोपहर के बाद वह अन्य ब्राह्मणों के घरों पर जाकर भिक्षा मांगता है और जो कुछ मिलता है उसको गुरु के सामने रख देता है फिर गुरु की अनुमति से यह खाता है। वह अपनी लज्जा ढकने के लिए केवल एक लगोटी लगाता है और दो तीन गज का सूती कपडा अपनी पीठ पर डाल लेता है इसके अतिरिक्त उसके पास कुछ नहीं होता। इस जीवन को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। इस समय वह वेदों के अध्ययन में व्यस्त रहता है। इस आश्रम की समाप्ति पर अपने गुरु और पिता की अनुमति से वह विवाह करता है और अपनी पंचेन्द्रिय के सब सुखों का उपयोग करने की उसको इजाजत होती है। जब उसका पुत्र 16 वर्ष का हो जाता है तब तक ही यह इजाजत है। यदि पुत्र लाभ नही होता तो वह 48 वर्ष की आयु तक गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है फिर वह अपने बन्धु बान्धवों से और मित्रों से तथा अपरिचितों से भी पृथक होकर सब सुखों के उपभोग को छोडकर एकान्तवास करता है और जगल मे रहता है। इस आश्रम को वानप्रस्थ कहते है। हिन्दुओं का यह सिद्धान्त है कि गृहस्थ का कोई कार्य पत्नी के बिना भली भांति पूरा नहीं होता ये लोग पत्नी को अर्धांगिनी कहते हैं। अभी उसको कुछ कार्य करना बाकी रहता है। इसलिये वह अपनी पत्नी को भी अपने साथ जंगल मे ले जाता है। यदि वह गर्भवती होती है तो वह जंगल में जाना स्थगित कर देता है और बच्चा 5 वर्ष का हो जाये तब तक घर पर रहता है। फिर उस बच्चे को ज्येष्ठ पुत्र अथवा दूसरे रिश्तेदार के सुपुर्द करके अपना उद्देश्य पूरा करता है। यदि उसकी पत्नी रजस्वला हो तो वह ऋतुस्नाता हो जाये तब तक वह गृहत्याग स्थगित कर देता है। इसके उपरान्त उसका पत्नी से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। यह सभोग द्वारा अपने को अपवित्र नहीं करता। रात्रि में वह अलग सोता है और जंगल के कन्द मूल और जल पर निर्वाह करता है। वह जनेऊ पहने रहता है और अग्निहोत्र करता है वह नाखून ओर बाल या अपनी दाढ़ी और मूंछ नहीं कटवाता है। इस प्रकार वह 12 वर्ष

तक वानप्रस्थ रहता है फिर अपने घर आकर पत्नी को अपने बच्चो, भाइयो या दामादों के सुपुर्द करके अपने धार्मिक निर्देशक के पास जाता है और उसके समक्ष जनेऊ अपने सिर के बाल आदि अग्नि मे डालकर कहता है। मैंने अपने सम्बन्ध त्याग दिये है यहां तक कि सन्ध्या और अग्निहोत्र भी छोड दिया है। अपनी इच्छाओ को हृदय मे उन्मूलन कर दिया है फिर वह अपनी इच्छाओं और इन्द्रियो के द्वार को बद करके ईश्वर के चिन्तन मे लगाता है। अन्य कोई काम नही करता। यदि वह ज्ञान की बाते करता है तो वेदान्त की करता है। वेदान्त का सार बाबा फिगानी ने इस प्रकार बतलाया है इस घर मे एक चिराग है। इसकी किरणो से मै जिधर देखता हू उधर ही मुझे सभा दिखाई देती है। इस स्थिति का नाम सर्वभियास है अर्थात सर्वस्व त्याग और इस अवस्था में रहने वाले को सर्वभियासी कहते है।

जदरूप से मिलने के पश्चात हाथी पर सवार होकर मै उज्जैन के नगर मे से निकला और जाते हुए मैने दाये बाये 3500 रुपये के छोटे सिक्के उछाले और पौने दो कोस जाकर दाउदखेडा मे उतरा यही पर शाही मुकाम किया गया। तीसरे दिन भी यहीं रहा और दोपहर को फिर जदरूप के पास गया और 6 घडी उसके पास व्यतीत कीं। इस दिन भी उसने अच्छे शब्द बोले। जब सायकाल हुआ तो मैंने अपने महल मे प्रवेश किया। चौथे दिन सवा तीन कोस चलकर मैं जराओ गाव के परानिया बाग मे ठहरा। यह भी ठहरने के लिए बहुत अच्छा स्थान है। इसमे वृक्ष खूब है 6 तारीख को प्रयाण किया और पौने पांच कूच करके देबालपुर भेरिया की झील के तट पर मुकाम किया।

मेरे पुत्र बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर मैने मिर्जा शाह रुख के पुत्र बादी उज्जमा का मनसब 1500 जात ओर 1000 सवार कर दिया। 11 तारीख को सवा तीन कोस कूच करके मैंने दौलताबाद मे मुकाम किया। 12 तारीख को भी मैं वही ठहरा और शिकार करने गया। इसी परगने के शेखूपुर गाव मे मैने एक बहुत बडा बट वृक्ष देखा। इसका तना साढे 18 गज था ओर जड से शिखर तक इसकी ऊँचाई सवा 128 हाथ थी।

जब मैं शाहजादा था तो मैने मीर जियाउद्दीन कजवीनी (एक सेफी सईद) से वायदा किया था कि मै उसको मालवा का परगना जो बंगाल मे है, दूगा। इस सैयद की उपाधि मुस्तफा खा थी और पर परगना सदैव के लिये उसके वशजो के हाथ मे रहना था। इस मुकाम पर उस सईद के सम्मानार्थ मैंने इस परगना का पट्टा दे दिया। 13 तारीख को प्रयाण हुआ। मै अलग ही इलाके मे मित्रों, महिलाओं और नौकरो के साथ शिकार करने चला गया और हासिलपुर पहुचा तो मुकाम तो नालचा के पास किया परन्तु

मैं सागोर नामक गांव मे ठहरा। इस गाव की सुन्दरता और मधुरता के विषय मे क्या लिखा जावे। यहां अनेक आम के वृक्ष हैं ओर इसकी भूमि बडी हरी–भरी सुखद है। इसलिए मैं यहा 3 दिन ठहरा। पहले यह गांव केशवदास मारू को दिया हुआ था। अब यह कमाल खा शिकारी के नाम पर दिया गया और मैने यह भी आदेश किया कि इस गाव का नाम अब कमालपुर होगा। इस मुकाम पर शिवरात्रि हुई। बहुत से जोगी इकट्ठे हुए। इस रात को सब रस्मे निभाई गई। मैं इन विद्वानों से मिला और बातचीत की। इन दिनों में मैने उसको कागडा के दुर्ग की विजय के लिए गई हुई सेना का अध्यक्ष नियुक्त किया था। जब वह लाहौर पहुचा तो उसने सुना कि पंजाब के पर्वतीय इलाके के एक सग्राम नामक जमीनदार ने उसके इलाके पर आक्रमण करके कब्जा कर लिया है। उसने सोचा कि इस संग्राम को सर्वप्रथम निकाल देना चाहिए। इसलिए उसने संग्राम पर चढाई की। सग्राम उसका सामना न कर सका और भागकर पहाडियो में छिप गया। वहा राजा मान ने अभिमान मे आकर उसका पीछा किया और यह नही देखा कि वह आगे कैसे बढ सकता और कैसे हट सकता है। उसके साथ थोडे से सैनिक थे। सग्राम ने देखा कि अब राजा मान नहीं भाग सकता। जब वह भागने लगा तो उसको एक गोली लगी और उसने अपने प्राण ईश्वर को सौप दिये। उसके बहुत से आदमी मारे गये। शेष हारकर और आहत होकर अधमरे वापिस लौटे। वे अपने घोडो औरे शस्त्रो को भी छोड आये।

17 तारीख को मैने सागोर से कूच की और तीन कोस चलकर पुनः हासिलपुर नामक गाव पर मुकाम किया। मार्ग में एक नीलगाव मारा। सूबा मालवा मे यह गाव एक प्रसिद्ध गाव है। यहां अगणित आम के वृक्ष हैं। सोमवार तारीख 23 को जब सूर्य के आरोहण मे एक पहर व्यतीत हो गया और शुभ घडी आई तो मैने हाथी पर सवार होकर मांडू दुर्ग मे प्रवेश किया। जब एक पहर और 3 घडी व्यतीत हो गई तो मैने उन मकानो मे प्रवेश किया जो मेरे निवास के लिए तैयार किये गये थे। मैने 1500 रुपये लुटाये। अजमेर से माडू 159 कोस है। यह फासला 4 मास और 2 दिन मे तय किया गया। 46 बार कूच हुआ और 78 मुकाम हुए। इन कूचो मे मुकाम तालाबो, नदियो या सुखद स्थानो पर जहा सघन वृक्ष और फूलदार अफीम के पौघे थे। किये गये थे। मै घोडे पर या हाथी पर सवार होकर चलता था और शिकार करता जाता था। कोई मुश्किल नहीं हुई। ऐसा कहा जाता है कि मैं एक बाग से दूसरे बाग मे पहुचता था। शिकार में आसफ खां, मिर्जा रुस्तम, मीर मीरान, अनीराय, इदायत उल्ला, राजा सारंगदेव, सैयद कामू और खवास खा मेरे साथ रहा करते थे। मैंने अपने आगमन से पहले ही अब्दुलकरीम

खां वास्तुविद (आरचीटेक्ट) को मांडू के सुल्तानों की इमारतों की मरम्मत करने के लिए भेज दिया था। जब मैं अजमेर में ठहरा हुआ था तो उने कुछ इमारतों की मरम्मत कर दी थी। और कुछ इमारतों को लगभग दुबारा बना दिया था। सारांश यह है कि उसने एक ऐसा मकान तैयार किया जैसा सौख्य और माधुर्य की दृष्टि से अन्यत्र नहीं बना है। इस काम पर 3 लाख रुपये खर्च हुए। सारे बड़े-बड़े नगरों में ऐसा विशाल इमारतें जो शाही निवास के योग्य हो बननी चाहिए। यह दुर्ग एक पहाड़ी पर स्थित है जिसका घेरा 10 कोस है। वर्षा ऋतु में यह दुर्ग बड़ा सुखद होता है और यहां का हवा बड़ी आनन्ददायक है। ऐसा स्थान अन्यत्र नहीं है। शरद ऋतु में इतनी ठंड पड़ती है कि ओढ़े बिना काम नहीं चल सकता और दिन में पखे की कोई आवश्यता नही होती। मांडू सूबा मालवे का एक प्रसिद्ध सरकार है। इसकी आय 13 लाख 90 हजार दाम है। यह दीर्घकाल तक यहा के राजाओ की राजधानी थी। पिछले समय के राजाओं की बहुत सी इमारतों के चिन्ह दिखाई देते है। अब भी यह पूर्णतया नष्ट नहीं हुआ है।

24 तारीख को मैं पुराने सुल्तानों की इमारतों को देखने के लिए निकला और जामी मस्जिद को गया, जो सुल्तान हुसैन गौरी ने बनवाई थी। यह बड़ी विशाल इमारत है और कटे हुए पत्थरों से बनवाई गई है, इसको बने हुए 180 वर्ष हो गये हैं परन्तु ऐसा प्रतीत होता है मानों अभी हाल ही बनी होगी। इसके बाद में खिलजी सुल्तानों की कब्रें देखने गया। यहा सुल्तान गयासुदीन के पुत्र नासिरुद्दीन का मुख काला हो गया है। यह प्रसिद्ध बात है कि यह दुष्ट अपने 80 वर्षीय पिता गयासुद्दीन की हत्या करके सुल्तान बना था। उसने अपने पिता को 2 बार विष दिया परन्तु गयासुदीन निकल गया। तीसरी बात नासिरुद्दीन ने शर्बत में मिलाकर अपने ही हाथ से अपने पिता को विष दिया। उसका पिता समझ गया कि वह क्या कर रहा है तो उसने जहर मोहरा खोलकर खोलकर उसके सामने फेंक दिया और नम्रतापूर्व भगवान से प्रार्थना की, "हे मालिक मैं 80 वर्ष को हो गया हूं और मेरा यह ऐसे सुख और समृद्धि में निकला है कि किसी दूसरे सुल्तान का समय ऐसे नहीं निकला। अब मेरे जीवन का अन्तिम क्षण है। मुझे आशा है कि तू मेरी हत्या के लिए नासिर को दण्ड नहीं देगा, मेरी मृत्यु तो आ ही गई है तू इसका बदला न लेना।" यह शब्द बोलने के बाद उसने विष का प्याला पीकर अपने प्राण ईश्वर के सुपुर्द कर दिये गये। इस पूर्ण कथन का अर्थ यह था कि उसने अपने राज्य को ऐसे सुख में बिताया जैसे किसी अन्य सुल्तान ने नहीं बिताया था। जब वह 48 वर्ष का तो गद्दी पर बैठा उसने अपने घनिष्ठ मित्रों से कहा, "अपने पूज्य पिता की सेवा में मैंने 30 वर्ष युद्ध करते व्यतीत किये और सैनिक

की दृष्टि से मैंने कोई अपराध नहीं किया। अब मेरी बारी राज्य करने की है। मेरा विचार नहीं है कि दूसरे देश जीते जाएं। मैं अपना शेष जीवन आराम और आनन्द में व्यतीत करना चाहता हूं।" लोग कहते है कि उसने अपने अन्तःपुर में 15 हजार स्त्रियाँ इकट्ठी कर रखी थी। इनका एक नगर बसा हुआ था। इनमें सब जाति की और सब प्रकार की स्त्रियां थी। इन्हीं में कलाविद, न्यायाधीश, काली, कोनवाल आदि थीं। नगर के प्रशासन के लिए जो भी अधिकारी चाहिए सभी स्त्रियां ही थीं। जब वह किसी सुन्दर कुमारी के विषय में सुनता तो वह उसको मंगवा ही लेता था। उसने लड़कियों को सब प्रकार की कला कौशल सिखाये थे। उसको शिकार करने का बड़ा शौक था। उसने एक हिरण बाग बनवाया था। जिससे सब प्रकार के जानवर इकटठे कर लिये थे। वह अपनी स्त्रियों के साथ उसमें शिकार करने आया करता था। सारांश यह है कि उसने अपने 32 वर्ष के राज्यकाल में किसी शत्रु पर चढ़ाई नही की और अपना समय आराम और आनन्द में बिताया। इसी प्रकार किसी ने उसके राज्य पर आक्रमण नहीं किया। ऐसा कहा जाता है कि जब शेर खां अफगान अपने शासन समय में नासिरुद्दीन की कब्र पर आया अपनी पाश्विक प्रकृति के बावजूद उसने नासिरुद्दीन के लज्जाजनक आचरण के कारण आदेश दिया कि उसकी कब्र को लकड़ियों से ठोका जाए। जब मैं उसकी कब्र पर गया तो मैंने भी उसके लकड़ियाँ मारी और अपने साथ सेवकों से भी उसके लकड़ियाँ लगवाई। इससे भी मुझे सन्तोष नहीं हुआ तो मैंने कब्र को खुदवाया और उसके अपवित्र अवशेषों को आग में डालने का आदेश दिया। फिर मुझे विचार आया कि अग्नि तो प्रकाश है। अल्लाह के प्रकाश को अपवित्र नहीं करना चाहिए। इन गन्दे अवशेषों को जलाने से अल्लाह का प्रकाश अपवित्र हो जावेगा और इस प्रकार उसको जला देने से उसकी यातनायें कम हो जावेगी। इसलिए मैंने आदेश दिया कि उसकी हड्डियों के टुकड़े करके नष्ट अंगों के साथ नर्बदा में फेंक दिया जावे। गर्मी के दिनों में वह अपने दिन पानी में काटा करता था। ऐसा बहुत प्रसिद्ध है कि मद्यपान से उन्मत्त होकर वह एक बार कालियादह में जो बहुत गहरा है, कूद पड़ा था। तब अन्तःपुर की कुछ सेविकाओं ने उसको बाल पकड़कर पानी में से खींचा। जब वह सचेत हुआ तो उसको सब हाल सुनाया गया। जब उसने सुना कि उसके सिर के बाल पकड़ कर उसको बाहर खींचा गया तो उसको बड़ा ही क्रोध आया और उसने आदेश दिया कि उन सेविकाओं के हाथ हाट दिए जाँये। दूसरी बार जब ऐसी घटना हुई तो किसी को उसे खींचने का साहस नहीं हुआ और वह डूब गया। संयोगवश उसकी मृत्यु को 110 वर्ष हो चुके हैं, अब उसके अवयव नष्ट हो गये हैं और वह पानी में मिल गया है।

28 तारीख को मांडू की इमारतें तैयार करने के उपलक्ष्य में अबुल करीम को 800 जात और 400 जात सवारों का मनसब दिया गया और मामूरी खां उपाधि से सम्मानित किया गया। उसी दिन शाही निशान मांडू में दाखिल हुए। मेरे भाग्यवान पुत्र सुल्तान खुर्रम ने अपनी विजयी सेना सहित बुरहानपुर के नगर में जो खानदेश की राजधानी है, प्रवेश किया। उसी दिन अफजल खां और रायरायान का निवेदन पत्र आया। अजमेर से प्रस्थान करते समय शाहजादे ने इन लोगों को आदिल खां के राजदूत के साथ भेजा था। अब इन्होंने सूचना दी कि जब उनके आगमन की खबर आदिल खां को मिली तो वह सात कोस की दूरी पर फरमान प्राप्त करने के लिए और शाहजादे का स्वागत करने के लिए आया और दरबार में जो तस्लीम की प्रथा प्रचलित है उसका पालन किया। इसमें उसने एक बाल भर भी कमी नहीं की। भेंट के समय उसने बड़ी ही स्वामिभक्ति दिखाई और वचन दिया कि मलिक अम्बर ने जो विजयी सल्तनत के इलाके दबा लिए हैं वे वापिस कर दिए जावेंगें ओर अपने राजदूतों के साथ यह दरबार में आदरपूर्वक उपयुक्त भेंट भेजेगा। इस बात के बाद वह राजदूतों को सम्मानपूर्वक अपने महल में ले गया जहां उनके स्वागत के लिए तैयारी की गई थी। उसी दिन उसने मलिक अम्बर को सारे मामले से अवगत करने के लिए पत्र भेजा। मुझे यह समाचार अफजल खां और राय रायान की रिपोर्ट से मिला।

मैं अजमेर में था तब से उपरोक्त मास के सोमवार तारीख 23 तक 4 मास होते है, इस समय मैंने दो शेर, सत्ताइस नीलगाव, 6 चीत्ताल, साठ हिरन, 23 खरगोश और लोमड़ियां और 1200 जल–पक्षी तथा अन्य जानवर मारे। इन दिनों मैं रात में अपने शिकार–अभियान की बात किया करता था और अपने तख्त के नीचे खड़े हुये लोगों को सुनाया करता था कि मुझे शिकार बहुत पसन्द है। मुझे यह विचार हुआ कि मैंने होश संभाला है तब से आज तक का मेरे शिकार का हिसाब बनाया जावे। मैंने शिकारियों और शिकार के कारकुनों तथा दूसरे कर्मचारियों से पूछा कि शिकार में कितने जानवर मारे गए तो बतलाया गया कि मेरे बारहवें वर्ष अर्थात 988 हिज्री (1580 ईसवी) से इस वर्ष तक जो मेरे राज्यारोहण का ग्यारहवां वर्ष है और मेरी आयु का 50 वां चान्द्रवर्ष है। 28 हजार 532 जानवर मारे गये है।

मेरे राज्यारोहण के बाद बारहवें वर्ष का उत्सव

सोमवार तारीख 30 इस्फन्दीयार मास तदनुसार 12 रबी उल अव्वल 1026 (20 मार्च 1616) को जब 1 घडी शेष रही तो सूर्य ने मीन राशि से मेष राशि मे सक्रमण किया, यह शुभ घडी थी। इसलिए मै राजसिहासन पर बैठा। मैने आदेश दे दिया था कि प्रचलित प्रथा के अनुसार दरबार आम को सुन्दर वस्त्र आदि से सजाया जावे। सल्तनत के कितने ही अमीर ओर मुखिया लोग मेरे पुत्र खुर्रम की सेवा मे थे तो भी यह जलसा पिछले वर्षो से कम नही था। मगलवार के दिन आई हुई भेटे मै आनन्द खा को दे दी। उसी दिन जो 12 वे वर्ष के फरवरदीन मास की 1 तारीख (21 या 22 मार्च 1617) थी, तो शाह खुर्रम का निवेदन–पत्र आया जिसमे लिखा था कि नये वर्ष के उत्सव की व्यवस्था पिछले वर्षो की भाति की गई थी। लेकिन यात्रा और सेवा के दिनो मे यह उत्सव किया गया था इसलिए वार्षिक भेटे नही ली गई। अपने पुत्र की यह कार्यवाही मुझे पसन्द आई। प्रार्थना के समय मैने अल्लाह के दरबार मे उसके लोक और परलोक मे हित के लिये याचना की और आदेश दिया कि इस नये वर्ष के दिन पर कोई भेट प्रस्तुत न करे।

तम्बाकू

तम्बाकू के कारण अधिकाश लोगो को कष्ट होता है। यह उनके स्वभाव और शरीर गठन के कारण हुआ करता है। मैने आदेश दिया था कि कोई तम्बाकू न पीये। मेरे भाई शाह अब्बास को भी तम्बाकू की बुराई का पता लग गया था। उसने आदेश दे दिया था कि ईरान मे कोई तम्बाकू पीने का साहस न करे। आलमखा (परशिया का राजदूत) लगातार तम्बाकू पिया करता था। उसका अपने ऊपर काबू नही था। ईरान के शाह के राजदूत अली सुल्मान ने शाह अब्बास से निवेदन किया कि खान आलम एक क्षण भी तम्बाकू के बिना नही रह सकता।

इसी मास की 3 तारीख को बगाल के दीवान हुसैन बेग ने चौखट–चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया और 12 नर और मादा हाथी भेट किये। बगाल के बख्शी ताहिर खा पर कई अपराध लगाये गये थे। उसको तस्लीम करने का मौका मिल गया और उसने 21 हाथी मुझे भेट किये। इसमे से 12 मुझे

पसंद आये और शेष उसी को लौटा दिये। इसदिन मैंने एक मद्य–गोष्ठी की और मेरे अधिकांश निजी सेवकों को मैंने शराब दी तो उन्होंने खूब पी। 8 तारीख को मीर मीरान का मनसब बढ़ाकर 1500 जात और 500 सवार कर दिया। 9 तारीख को मेरे पुत्र खुर्रम की प्रार्थना पर मैंने खानजहां का मनसब बढ़ाकर 6000 जात और इतने ही सवार का कर दिया। याकूब खां का मनसब भी 2000 जात और 1500 सवार कर दिया बहलोल खां सियाना के मनसब में वृद्धि करने से उसका मनसब 1500 जात और 1000 सवार हो गया। मिर्जा शरफुद्दीन काश्गरी और उसके पुत्र ने दक्खिन में बडी वीरता के काम किये थे, इसलिए उसका मनसब बढ़ाकर 1500 जात और 1000 सवार कर दिया। इस दिन मैंने अपने पुत्र खुर्रम को बहराम बेग के हाथ अपने निजी तबेले के दो ईराकी घोड़े और 1 खिलअत भेजी, इतिवार खां का मनसब बढ़ाकर 5 हजार जात ओर 3 सवार कर दिया। 11 तारीख को हुसैन बेग तबरीजी गोलकुंडा के सुल्तान के राजदूत के पास राजदूत के रूप में भेजा। कारण यह था कि फिरंगियों की ईरानियों से लडाई हो गई थी और हुसैन तबरीजी समुद्र–मार्ग से वापिस नहीं जा सकता था। उसने दो घोड़े और दक्खिनी और गुजराती कपड़ों के थान मुझे भेंट स्वरूप भेजे। उसी दिन मेरे निजी तबेले से 1 घोड़ा खानजहां को दिया गया। 15 तारीख को मिर्जा राजा भावसिंह के मनसब में 1000 जात की वृद्धि करके उसका मनसब 5000 जात और 3000 सवार कर दिया गया। 17 तारीख को वृद्धि करके मिर्जा रूस्तम का मनसब 5 हजार जात और 1000 सवार कर दिया था, तेगखां का मनसब 1500 जात और 700 सवार का कर दिया गया। इसी प्रकार इरादत खां का मनसब 1500 जात और 600 सवार कर दिया। अणिराय का मनसब बढ़ाकर 1500 जात और 600 सवार का कर दिया। शनिश्चर तारीख 19 की 3 घडी शेष रही तो शरफ (सूर्य का उच्चतम आरोहरण) हुआ। और उसी समय मैं राजसिंहासन पर बैठा। विद्रोही मलिक अम्बर की सेना के 32 व्यक्ति बन्दी बनाये गये थे। यह लड़ाई शाहनवाज खां ने लड़ी थी और इसमें अम्बर हार गया था। इनमें से एक को मैंने इतिकाद खां के सुपुर्द कर दिया था। पहरेदारों की असावधानता से वह भाग गया तो मुझे क्रोध आया और मैंने 3 मास तक इतिकाद खा को अपनी सेवा में नहीं आने दिया। उपरोक्त बन्दी का नाम और हुलिया अज्ञात था, इसलिये बहुत प्रयास करने पर भी वह दुबारा बन्दी नहीं किया जा सकता। जिन पहरेदारों ने असावधानता की थी उनके अफसर को मैंने प्राण–दण्ड दिया। इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर इतिकाद खां ने आज मेरी सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बंगाल में प्रशासनिक हेर फेर—बहुत दिनों से बंगाल के प्रशासन के विषय में और कासिम खां के कार्य के विषय में कोई अच्छी खबर नहीं आई थी इसलिए मेरे मन में यह आया कि वहां इब्राहीम खां फतह जंग को भेजा जावे, इसने सूबा बिहार में अच्छा काम किया था। और वहां की हीरे की खान पर सल्तनत का कब्जा करवाया था। मैंने सोचा कि इसके स्थान पर जहांगीर कुली खां को भेज दूं। इस खान की जागीर सूबा इलाहाबाद में थी। मैंने कासिम खां को दरबार में बुला लिया। इसी समय मैने आदेश दिया कि सुजावलान (भूमिकर संग्रहकर्ता) को लिखा जावे कि वे जहागीर कुली खां को बिहार में ले जाये। इब्राहीम खा फतहजंग को बंगाल पहुंचावे। मैंने सिकन्दर जौहरी का मनसब 1000 जात 300 सवार कर दिया।

ईरान के राजदूत को विदा

12 तारीख को ईरान के राजदूत मोहम्मद हिजा को 60,000 दरब जो 30,000 रुपये के बराबर होते हैं और एक खिलअत देकर विदा किया। मेरे भाई शाह अब्बास ने मुझे एक स्मारिका भेजी थी। मैंने उपरोक्त राजदूत के हाथ कुछ जडाऊ चीजें इसके बदले में भेजी जो दक्खिन के सुल्तानों ने मुझे भेजी थी। इनके अतिरिक्त कुछ दुर्लभ कपडे भी भेजे, जिनका मूल्य 1 लाख रुपये था। इसमे 1 प्याला था जो ईराक से चेलेवी ने मुझे भेजा। शाह ने यह प्याला देखा था और अपने राजदूत से कहा था कि यदि मेरा भाई जहांगीर इस प्याले से मद्यपान करके इसे मुझ दे दे तो यह बड़ा ही स्नेह–चिन्ह होगा। जब राजदूत ने यह निवेदन किया तो मैने उसके समक्ष कई बार पान करके आदेश दिया कि इसका ढक्कन व तश्तरी तैयार की जावे और इसको अन्य भेंटों के साथ भेज दिया जावे। ढक्कन मीनाकांरी का था। मैंने मुनशियों को आदेश दिया कि पारे के अक्षरो में शाह के पत्र का उत्तर दिया जावे।

25 तारीख को इतिमादुद्दौला की सैना झरोखे के नीचे मेरे सामने होकर निकली जिसमें 2000 सवार थे। 500 सवार मुगल थे। ये तीर और बन्दूकों से सज्जित थे। सब सवारो के घोड़े बहुत अच्छे थे। 14 हाथी थे। बख्शियों ने गणना करके रिपोर्ट प्रस्तुत की कि यह सेना नियमानुसार पूर्णरूप से सुसज्जित है। 26 तारीख को 1 शेरनी मारी गई। बृहस्पतिवार तारीख 1 उर्दी बिहिस्त के मुकर्रखां ने घावनों के द्वारा एक हीरा भेजा जो मेरे सामने प्रस्तुत किया गया। इसका तोल 23 सुर्ख (चरमू) था। जौहरियों ने इसका मूल्य 30 हजार रुपये बतलाया। यह बढिया पानी वाला हीरा था और बडा पसन्द आया। मैंने आदेश दिया कि इसकी एक अगूठी बनाई जावे। तीन

तारीख को बाबा खुर्रम की प्रार्थना पर युसूफ खां का मनसब 1000 जात और 1500 सवार किया गया। इसी प्रकार उसकी प्रार्थना पर कई अमीरों और मनसबदारों के मनसब बढ़ाये गये। 7 तारीख को शिकारियों ने 4 शेरों की खबर दी। जब दोपहर और 3 घड़ी दिन व्यतीत हो चुका था तो मैं महिलाओं के साथ उन शेरों के शिकार के लिए निकला। जब शेर दिखाई दिये तो नूरजहां बेगम ने निवेदन किया कि यदि मैं आदेश दूं तो वह अपनी बन्दूक से इन शेरों को मारना पसन्द करेगी। मैंने कहा ठीक है। उसने 2 शेर एक ही गोली से और शेष 2 चार गोलियों से मार डाले। एक क्षणभर में 4 शेर मारे गये। अब तक यह नहीं देखा गया था कि हाथी पर हौदे में बैठे हुए 6 गोलियों चलाई जावें और एक भी बेकार न जाए। चारो शेरो को उछलने या हिलने का मौका भी नहीं मिला। इस अच्छे निशाने के पुरस्कार स्वरूप मैंने उसको 1 लाख रुपये के मूल्य की 2 हीरे की पोंछियाँ दीं और 1000 अशरफियां उस पर न्यौछावर कीं। उसी दिन मामूर खा ने लाहौर जाकर वहां के महल की इमारतों को पूरा करने की इजाजत ली। 10 तारीख को सूबा अवध के फौजदार सईद वारिश की मृत्यु की खबर आई।12 तारीख को मीर महमूद ने फौजदारी के लिए प्रार्थना की। मैंने उसको तहाव्वूर खां की उपाधि दी, उसका मनसब बढाया ओर सूबा सुल्तान के कुछ परगनों का उसे फौजदार नियुक्त किया। 12 तारीख को बंगाल का बख्शी आया और तसलीम करके उसने मुझे भेंटें दी। उसको दरबार में आने की पहले इजाजत नहीं थी। बंगाल के सूबेदार कासिमखां ने 8 हाथी भी भेंट किये और 2 हाथी शेख माधु ने प्रस्तुत किये। 28 तारीख को खानदौरा की प्रार्थना पर आदेश किया गया कि अब्दुल अजीज खा के मनसब मे 500 की वृद्धि कर दी जाए। 5 खुरदाद को केशव को हटाकर मिर्जा हुसैन को गुजरात का दीवान नियुक्त किया गया और उसे किफायत खां की उपाधि दी गई। लश्कर खां को बंगश का बख्शी नियुक्त किया जा चुका था, 8 तारीख को उसने मेरी सेवा में आकर 100 मोहरे ओर 500 रुपये भेंट किये। यह शेहनाई बजाने में अद्वितीय था। मैंने उसके कुछ मजलिश साज सुने। उसने मेरे नाम की एक गजल बनाई थी, जो कि उसने शहनाई पर बजाई। 12 तारीख को मैंने आदेश दिया कि उसे रुपयों से तोला जावे तो 6 हजार 300 रुपये चढे। मैंने उसको हौदा सहित एक हाथी दिया और आदेश दिया कि अपने रुपये लेकर वह हाथी पर चढ़कर अपने निवास पर जाए। उसी दिन ठट्ठा से मुल्ला असद मेरी सेवा में आया। यह मिर्जा गाजी की एक कहानी सुनाने वाला था। इसकी कहानियां बड़ी मधुर होती थी। मुझे उसकी संगति पसन्द आई और उसे महजूज खां की उपाधि, 1 हजार रुपये, 1

खिलअत, 1 घोड़ा, 1 हाथी और एक पालकी प्रदान की। कुछ दिन पश्चात मैंने उसको रुपयों से तुलवाया जो 4400 का तोल हुआ। उसको छोटा–सा मनसब भी दिया। मैंने आदेश दिया कि यह समाजों में कहानी सुनाया करें। उसी दिन लश्कर खां ने दर्शन झरोखा के नीचे अपने आदमी प्रस्तुत किये! 500 सवार, 14 हाथी और 100 बन्दूकची थे। 24 तारीख को खबर आई कि राजा मानसिंह के पोता महासिंह की, जो बडे उच्च कर्मचारियों में दाखिल कर लिया गया था, अत्याधिक मद्यपान के कारण बिहार प्रान्त में मालापुर पर मृत्यु हो गई। उसके पिता की मृत्यु भी असीम मद्यपान के कारण 32 वर्ष की में हुई थी।

28 तारीख को मैंने अपने पुत्र बाबा खुर्रम के लिए 1 सुनहरी नादिरी भेजी। यह इतनी सुन्दर थी कि पहले ऐसी कभी नहीं बनी थी। इसको ले जाने वाले आदमी के द्वारा मैंने खुर्रम से कहलाया कि यह मैंने उस दिन पहनी थी जब मैं अजमेर से दक्षिण–विजय के लिए रवाना हुआ। इस विशेषता के कारण ही यह भेजी जाती है। उसी दिन मैंने अपनी पगडी जैसी की तैसी अपने सिर से उतार कर इतिमादुद्दौला के सिर पर रखकर उसको सम्मानित किया। महावत खां ने भेंट स्वरूप 3 पन्ने एक जडाऊ उर्वशी और एक लाल वाली अंगूटी भेजी थी जो मेरे सामने प्रस्तुत की गई। इन सब का मूल्य 7 हजार रुपये होता था। इस दिन अल्लाह की दया और कृपा से निरन्तर वर्षा होती रही। मांडू में पानी बहुत दुर्लभ हो गया और लोग इस विषय में घबरा रहे थे। इसलिए अधिकांश सेवकों को नर्वदा के तट पर जाने का आदेश दे दिया गया था। उस समय वर्षा की आशा नहीं थी। लोगों की घबराहट देखकर मैंने ईश्वर से प्रार्थना की तो उसने दया करके इतनी वर्षा करवाई कि एक दिन और एक रात में तालाब, तलाईयां और नदियां पानी से भर गई और लोगों की घबराहट दूर हो गई। मै इस अनुग्रह के लिए इस जबान से ईश्वर को क्या धन्यवाद दूं। तारीख 1 को वजीर खां को एक निशान बख्शा गया। राणा ने 2 घोडे, 1 गुजराती कपड़े का थान और कुछ मुरब्बा और चटनियों के घड़े भेजे जो मेरे सम्मुख प्रस्तुत किये गए। 3 तारीख को एक धावन खबर लाया कि अब्दुल लतीफ पकड लिया गया है। यह गुजरात के सुल्तानों का वंशज था और उस सूबा में गड़बड़ और उत्पात किया करता था। इसी गिरफ्तारी से लोगों को शांति हुई इसलिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। मैंने मुकर्रम खां को आदेश दिया कि इस (अब्दुल लतीफ) को एक मनसबदार के साथ दरबार में भेज दिया जावे। 8 तारीख को राजा राजसिंह अच्छावा के पुत्र रामदास को राजा बनाकर टीका किया गया। यादगार बेग जो मावन्नहर में यादगार कुर्ची कहलाता था, और वहां

के शासक से भी उसका कुछ सम्बन्ध बतलाया जाता था, मेरी सेवा मे आया। उसने भेट प्रस्तुत की जिनमे 1 चीनी का प्याला बहुत ही पसन्द आया। कन्धार के सूबेदार बहादुर खा ने भेटे भेजी। इनमे 9 घोडे, 81 कपडो के थान, लोमडी के दो चमडे और अन्य पदार्थ थे, जो मेरे सामने प्रस्तुत किये गये। इसी दिन गदेह के राजा प्रेमनारायण को मेरी सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने 7 नर और मादा हाथी मुझे भेट किए। 10 तारीख को एक घोडा और एक खिलअत यादगार कुर्ची को दिये गए। 13 तारीख को गुलाबजल का दिन था। उस दिन का रस्मे पूरी की गई। बगाल के एक अधिकारी को जिसका नाम शेख मोदूद चिश्ती था, चिश्ती खा को उपाधि दी गई और घोडा बख्शा गया। 14 तारीख को रावल उदयसिह का पुत्र अमरसिह जो बांसबाडा का जमीनदार है मेरी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने 30 हजार रुपए, 3 हाथी एक जडाऊ कमर पेटी भेट की। 15 तारीख को इब्राहीम खा फतह जग, सूबादार बिहार ने 15 हीरे वहा की खान से मुहम्मद बेग के हाथ भेजे गये। कुछ हीरे वहा की जमीदार से भी लिये गये थे। ये मेरे सामने रखे गये। इनमे से एक को तोला गया वह साढे 14 टक था और इसका मूल्य 1 लाख रुपये था। तातार खा बकावल बेगी को 2 हजार जात 300 सवार का मनसब दिया गया। उसके पुत्रो के भी मनसब बढाये गये। शाहजादा सुल्तान परवेज के कहने से वजीर खा के मनसब मे 500 की वृद्धि की गई।

29 तारीख वृहस्पतिवार को मरे भाग्यवान पुत्र खुर्रम का राजदूत सईद अब्दुल्ला बारह मेरी सेवा मे आया और उसने शाहजादे का पत्र प्रस्तुत किया। जिसमे यह खबर थी कि दक्षिण के सूबो पर विजय प्राप्त हो गई। सब सरदारो ने आज्ञा पालन शुरू कर दिया है। और नम्रतापूर्वक सेवा करना मजूर कर लिया है। सबने अपने दुर्गो की और विशेषकर अहमदनगर की चाबिया समर्पित कर दी है। ईश्वर की इस कृपा के निमित्त मैने ईश्वर को धन्यवाद दिया और हर्ष के नगाडे बजवाये। अल्लाह को धन्यवाद है कि जो प्रदेश हाथ से निकल गया था सल्तनत के सेवको के हाथ मे वापिस आ गया और विद्रोही लोग अधीन हो गये और खिराज देने लगे। यह खबर मेरे पास नूरजहा द्वारा आई थी इसलिए मैंने उसको बोदा (टोडा) का परगना दे दिया जिसकी आय 2 लाख रुपए वार्षिक थी। ईश्वर की मर्जी होगी तो जब विजयी सेनाये दक्षिण के सूबा मे और वहा के दुर्गो मे प्रवेश करेगी और इस विषय में मेरे पुत्र खुर्रम को सन्तोष हो जावेगा तो वह अपने साथ वहा के सुल्तानो के राजदूतो को लावेगा। ऐसा पहले कभी किसी बादशाह के जमाने मे नहीं हुआ था। यह आदेश दिया गया कि वे अपने साथ उन अमीरों को

लावे जिन्हें इस सूबे में जागीरें मिलनी चाहिए जिसमें उनकी मेरी सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त हो जाए। इसके पश्चात उन्हें वापिस जाने की इजाजत दी जाएगी। और कीर्तिमान शाही निशान विजय और हर्ष के साथ वापिस आगरा आ जायेगें। इस विजय का समाचार मुझे मिला। उससे कुछ दिन पहले मैंने खवाजा हाफिज के दीवान से शकुन निकाले कि इस युद्ध का अन्त क्या होगा? जब मैंने दीवान खोला तो खकुन अच्छे निकले। तब मुझे पूरी आशा हो गई इसके 25 दिन बाद विजय की खबर आ गई। मेरी अनेक अभिलाषाओं के सम्बन्ध में मैंने ख्वाजा के दीवान का सहारा लिया है और जो दीवान में मिला उसी के अनुसार परिणाम हुआ है। कभी–कभी ही इसके विपरीत बात हुई है।

उसी दिन मैंने आसफ खां को एक हजार सवार और देकर उसका मनसब 5 हजार जात और 5 हजार सवार कर दिया। सायकाल मैं महिलाओं के साथ घूमने के लिए गया। यह इमारत मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी ने स्थापित की थी। इसमें सात खंड हैं और प्रत्येक खंड में चार कमरे हैं और चार खिडकियां है। इस मीनार की ऊँचाई साढ़े 54 हाथ है और इसका घेरा 50 गज है। जमीन से सातवें खण्ड तक 171 सीढिया हैं। चढते और उतरते समय मैंने 1400 रुपये उछाले।

31 तारीख को मैंने सईद अब्दुल्ला को सेफ खां की उपाधि देकर और एक खिलअत, एक घोड़ा, एक हाथी और एक जडाऊ खंजर देकर सम्मानित किया और उसको मेरे भाग्यशाली पुत्र के साथ काम करने के लिए भेज दिया। मैने अपने पुत्र के लिए उसके साथ 30 हजार रुपये के मूल्य की एक लाल भी भेजी। मुझे इसके मूल्य का कोई विशेष विचार नहीं था लेकिन इसको लम्बे अर्से तक मैंने अपने सिर पर बाधा था इसलिए यह शाहजादे के लिए एक अभ्युदय की वस्तु समझकर भेजी गई थी। मैंने ख्वाजा अबुल हसन के दामाद सुल्तान महमूद को सूबा बिहार का बख्शी (वाकिया–नवीस) नियुक्त किया और बृहस्पतिवार के सायंकाल में महिलाओं के साथ नीलकुड देखने गया। यह मांडू दुर्ग में बड़ा रमणीय स्थान है। शाहबुदाग खा मेरे पूज्य पिता के समय में एक बडा अमीर था। जब यह प्रान्त उसकी जागीर में था तो उसने इस स्थान पर बहुत ही सुखद इमारत बनवाई थी। मै वहां रात्रि को दो–तीन घड़ी तक ठहरा और फिर अपने शुभ सदन में आ गया।

बंगाल के बख्शी और दीवान मुखलिसखान के कई विचारहीन कार्यों की रिपोर्ट मेरे कानों तक पहुंच चुकी थी इसलिए मैंने उसके मनसब में एक हजार जात और दो सौ सवार कम कर दिए। आदिल खां ने गजराज नामक एक हाथी मुझे भेंट किया था, यह मैंने राणा अमरसिंह को भेज दिया।

बृहस्पतिवार बाहर व्यतीत करके शुक्रवार की सायंकाल वापिस आ गया। उसी दिन हिदायतुल्ला को फिदाई खां की उपाधि दी। वह डेरों के लाने ले जाने का कार्य करने में बड़ा कुशल है।

कुछ खास कपड़े मैंने अपने ही लिये निश्चित करके आदेश दिया कि इनको मेरे अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं पहने सिवाय उसके जिसको ये बख्शे जावें। इनमें एक नादिरी कोट था जो कब्बा के ऊपर पहना जाता था। इसकी लम्बाई जांघों के नीचे तक होती थी। परन्तु इसमें आसतीनें नहीं बनाई जाती थी। इसके सामने बटन लगते थे। ईरान के लोग इसको कुर्दी कहते हैं। मैंने इसका नाम नादिरी रखा। दूसरी पोशाक एक पूस दुशाला है जो मेरे पूज्य पिता पहना करते थे। तीसरी पोशाक एक कोट (कबा) है जिसका गला बन्द होता है। इसकी आस्तीनों के छोरों पर कसीदा बनाया जाता है। इसको भी मेरे पिता ही पहना करते थे। एक गुजराती सैंतीन का कबा, एक चेरा, एक रेशम की गुथी हुई कमर पेटी जिसमें सोने और चांदी के तार लगते थे, मैंने अपने लिए सीमित कर ली थी।

2 अस्पा–स–अस्पा सवारों के नियमों के अनुसार महावत खां के सवारों को दक्खिन में काम करने के लिये अधिक वेतन मिलने लगा था और (उसके अनुसार) सेवा नहीं होती थी। मैंने आदेश दिया कि दीवानी के अधिकारी यह अन्तर उसकी जागीर से वसूल करें। बृहस्पतिवार ता. 26 तदनुसार 14 शबान को जो शब–ए–बरात है मैंने सायंकाल नूरजहां बेगम के महल के एक हिस्से में एक जलसा किया। यह महल एक बड़े तालाब के मध्य में स्थित है। मैंने यहां अमीरो और दरबारियों को बेगम की दावत में बुलाया और आदेश दिया कि सब लोगों को मद्य या अन्य मादक पेय उनकी इच्छानुसार पिलाये जावे। अधिकांश लोगों ने मद्यपान किया, फिर मैंने पीने वालों को अपने पद और मनसब के अनुसार बैठने का आदेश दिया। प्रत्येक के सामने भूना हुआ मांस और फल परोसे गये। जब सांयकाल शुरू हुआ तो तालाब और इमारतों के आसपास दीपक और लालटैने जलाई गई। शायद ऐसी रोशनी अन्य किसी स्थान पर नहीं हुई होगी। लालटेनों और दीपकों का प्रतिबिम्ब तालाब में पडता था तो बडा ही सुन्दर मालुम होता था। बहुत आमोद–प्रमोद हुआ और लोगों ने खूब मद्यपान किया। रात के 3 पहल व्यतीत हो जाने पर मैंने महिलाओं को बुलाया और यहां पर जब एक पहर रात शेष रही तब तक मैं आनन्द करता रहा। इस बृहस्पतिवार को कई विशेष बातें हुई। एक तो यह थी कि मेरे राज्यारोहण का दिन था। दूसरे इस दिन शब–ए–बरात थी। तीसरे राखी थी। जिसका वर्णन मैं पहिले कर चुका हूं। यह हिन्दुओं का विशेष दिन है। इन तीन शुभ दिनों के कारण मैं

इसको मुबारक शम्बा कहता हूं। जैसे शम्बा मुबारक शम्बा हुआ वैसे ही बुधवार का दिन इसके प्रतिकूल हुआ इसलिए मैंने इसका नाम कम शम्बा रखा। अगले दिन मैंने राजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह को बुलाया और उसको 1 हाथी दे दिया। मुबारक शम्बा 2 शहरीयार की 1 पहर और 3 घडी व्यतीत होने पर मैं सवार होकर नीलकुण्ड और उसके पास के स्थानों को देखने गया वहां से मैं ईदगाह पहुचा जो ऊंचाई पर स्थित है ओर बडा हरा–भरा तथा सुखद स्थान है। वहां चम्पा तथा दूसरे मधुर जंगली पौधे सारे मैदान में ऐसे फूले हुए थे कि जिधर दृष्टि पडती थी उधर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती थी। जब रात का एक पहर व्यतीत हो गया तो मैं वापिस आया।

पत्र वाहक कबूतरों के विषय मे मुझ से बातचीत में लोगों ने कहा था कि अब्बासी खलीफा के समय में कबूतरो को पत्रवाहक का कार्य सिखाया गया था। यह बगदादी कबूतर थे और नामाबर (पत्रवाहक) कहलाते थे।। जंगली कबूतरों की अपेक्षा इनका आकार ड्योढा था। मैंने कबूतरो के शौकीनो को· आदेश दिया कि इन पक्षियों को यह काम सिखाया जावे, तो उन्होंने कबूतरों को ऐसा सदाया कि हम प्रातः काल उनको मांडू से रवाना करते थे और वर्षा हो रही हो तो भी वह दिन में ढाई पहर मे और कभी डेढ पहर मे ही बुरहानपुर पहुंच जाते थे। यदि हवा साफ होती थी तो अधिकाश कबूतर एक पहर में और कुछ तो चार घडी मे पहुंच जाते थे।

3 तारीख को बाबा खुर्रम का पत्र आया जिसमे लिखा था कि अफजल खां और रायरायान आ रहे हैं और आदिल खा के राजदूतो के आने की भी उसमें सूचना थी कि ये लोग कुछ जडाऊ चीजे, हाथी, घोडे आदि भेट करने के लिए ला रहे थे। मेरे समय मे उसकी अन्य समय मे ऐसी भेटें नहीं आई थी। शाहजादे ने उक्त खान की सेवा और कर्त्तव्यपालन तथा अपने बचनो को निभाने पर कृतज्ञता प्रकट की। उसने चाहा कि उसको एक कृपापूर्ण शाही फरमान भेजा जावे, फरजन्द की उपाधि दी जावे और अन्य कृपायें की जावे। मै अपने पुत्र को सन्तुष्ट करने के लिए बडा इच्छुक था और उसकी प्रार्थना उचित थी। इसलिए मैंने सुलेखक मुंशियों को आदेश दिया आदिल खा के नाम एक ऐसा फरमान तैयार किया जावे जिसमें सब भांति स्नेह प्रकट किया गया हो। आदिल खा को फरमान में फरजन्द लिखा जावे।

चतुर्थ दिन यह प्रतिलिपि के साथ रवाना किया गया। शाह खुर्रम प्रतिलिपि को देखकर असली फरमान को आगे (आदिल खां) के पास भेज ·सकता था।

आसफ खां के मकान पर

मुबारक शम्बा तारीख 9 को मैं महिलाओं के साथ आसफ खां के मकान पर गया। उसका मकान एक घाटी में स्थित था और बड़ा सुन्दर और सुखद था। इसके आस पास कई घाटियां थीं। कहीं–कहीं जल–प्रपात बह रहे थे। आम और दूसरे वृक्ष बड़े हरे–भरे और छायादार थे। एक घाटी में 200–300 केवड़ा के फूल थे। वह दिन बड़े आनन्द में व्यतीत हुआ। एक मद्य गोष्ठी की गई और अमीरों और मित्रों को शराब पिलाई गई। आसफ खां की भेंटें मेरे सामने रखी गई। इनमें बहुत सी दुर्लभ चीजें थी। जो मुझे पसंद आई, मैंने रख ली। उसी दिन सुल्तान ख्वाजा का पुत्र ख्वाजा मीर बंगश से मेरी सेवा में आया। उसने एक लाख, 2 मोती और एक हाथी भेंट किया। गदेह प्रदेश के जमीनदार भीमनारायण का मंनसब बढ़ाकर 1000 जात और 500 सवार कर दिया।

12 तारीख को मेरे पुत्र खुर्रम का पत्र आया कि राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल ने जिसका मुल्क कांगडा के समीप है वायदा किया है कि वह एक वर्ष में उस दुर्ग को सल्तनत के सेवकों के अधीन करवा देगा मैंने आदेश दिया कि राजा सूरज मल की इच्छाओं को भली भांति समझकर और इस विषय पर स्वयं अपनी तसल्ली करके शाहजादा राजा को मेरी सेवा मे भेजे, जिससे वह अपने कार्य में लग सके। उसी दिन सोमवार 11 तदनुसार 1 रमजान (2 सितम्बर 1617) को चार घडी और 7 पल व्यतीत होने पर मेरे पुत्र के यहां एक पुत्री का उसके दूसरे बालकों की माता से जन्म हुआ यह आसफ खां की पुत्री थी। इस बालिका का नाम रोशन आरा बेगम रखा गया।

जैतपुर के जमीनदार का दमन

मांडू के इलाके में जैतपुर के जमीनदार ने अपनी दुष्टतावश मेरी चौखट का चुम्बन नहीं किया था इसलिए मैंने फिदाय खां को कुछ मनसबदारों और 4–5 सौ बन्दूकचियों सहित चढाई करके उसके मुल्क को लूटने का आदेश दिया।

16 तारीख को राजा महासिंह का पुत्र जयसिंह जिसकी आयु इस समय 12 वर्ष की थी आया तो उसका मनसब 1 हजार जात और 1 हजार सवार मंजूर हुआ। अपने पिता की मृत्यु हो जाने के बाद राजा विक्रमाजीत भदौरिया का पुत्र दक्षिण से मेरी सेवा में आया और उसने मुझे 100 मोहरें भेंट की। 17 तारीख को राजा कल्याण ने उड़ीसा से आकर मेरी चौखट का

चुम्बन करना चाहा उसके विषय में मैंने कुछ अप्रिय बातें सुनी थी। इसलिए मैंने आदेश दिया कि उसको अपने पुत्र के साथ आसफ खां के हवाले किया जावे, जो इस मामले की सच्चाई का पता लगावे। 19 तारीख को जयसिंह को एक हाथी दिया गया। 20 तारीख को केशवदास मारु का मनसब बढ़ाकर 2 हजार जात 1200 सवार कर दिया गया। राजा कल्याणसिंह की भेंट जिसमें 18 हाथी थे मेरे सामने लाई गई। 16 हाथी मेरे निजी तबेले में दाखिल कर लिए गये। शाह इस्माल सफवी की पुत्री की जो मीर मिरान की माता थी मृत्यु की खबर आई तो मैंने उसको एक खिलअत भेजकर उसका शौक निवारण किया।

जैतपुर पर चढ़ाई– 25 तारीख को फिदाई खां को खिलअत दिया गया उसने भाई रुहुल्ला और अन्य मनसबदारों के साथ जैतपुर के जमींदार को दंड देने की इजाजत मांगी। 28 तारीख को मैंने विचार किया कि नर्वदा देखने और कहीं आस–पास शिकार करने जाऊ। महिलाओं को मैं अपने साथ ले गया और नदी के नीचे की ओर दो मंजिल दूर जाकर ठहरा। वहां पर मच्छर बहुत थे इसलिए मैं एक रात से अधिक नहीं ठहर सका। शुक्रवार तारीख 31 को वापिस आ गया। तारीख 1 मिहर को ट्रान्सओगजियाना से मुहसिम ख्वाजा आया तो उसको एक खिलअत और 5 हजार रुपये दिये गये। दूसरी तारीख को राजा कल्याण के विषय में रिपोर्ट प्राप्त हुई। उसकी जांच आसफ खा के सुपुर्द की गई थी। वह निर्दोष सिद्ध हुआ तो उसने चौखट चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त किया और 100 मोहर तथा 1 हजार रुपये भेंट किये। वह 80 मोतियों की एक माला, 2 लाल एक पोंछी जिसमें एक लाल और दो मोती जड़े हुए थे और एक घोडे की जड़ाऊ प्रतिमा लाया। ये भेंट मेरे सामने रखी गई। फियाद खां की अर्जी आई कि जब शाही सेना ने जैतपुर के प्रदेश में प्रवेश किया तो जमीनदार भाग गया। वह फिदाई का सामना नहीं कर सका और उसके वंश को लूटा गया। जमींनदार ने दरबार में उपस्थित होकर सेवा और आज्ञापालन करना चाहा तो उसका पीछा करने और उसको पकडकर दरबार में लाने के लिए रूहुल्ला को भेजा गया और आदेश दिया गया कि उसके राज्य को बर्बाद करके उसकी स्त्रियों और आश्रितों को जो पास के जमीनदारों के यहां भाग गये हैं बन्दी बना लिया जावे। 5 तारीख को खबर आई कि जब रोहला गांव में होकर निकल रहा था तो उसको मालूम हुआ कि जैतपुर के जमीनदार की स्त्रियां और आश्रित लोग किसी गांव में है। रूहुल्ला ने बाहर ठहर कर अपने लोगों को गांव में भेजकर तलाश किया कि वे जो लोग वहां छिपे हुए है उनको ले आवें। जब वह तलाश कर रहा था जो जमीनदार का एक सेवक कुछ

ग्रामीण लोगों के साथ आया। रूहुल्ला के लोग इधर–उधर गये हुए थे और वह थोडे से लोगों के साथ एक कालीन पर बैठा हुआ था। जमीनदार के स्वामिभक्त सेवक ने पीछे से आकर उस पर भाले का प्रहार किया, जो घातक सिद्ध हुआ। भाले की नोंक उसके सीने के बाहर निकल आई। भाला निकालते ही रूहुल्ला की मृत्यु हो गई। पास खडे हुए लोगो ने उस सेवक को भी नर्क में पहुंचा दिया। इधर–उधर गये हुए लोगो ने गाव पर आक्रमण किया। गांव के लोगों ने विद्रोहियों का शरण दी थी इसलिए उन सब को 1 घण्टे में समाप्त कर दिया गया और उनकी स्त्रियों और पुत्रियों को बदी बनाकर ले आये। गाव को जला दिया वहां राख के ढेरों के सिवाय कुछ नहीं रहा फिर रूहल्ला खा के शव को उठाकर वे फिदाई खा के पास लाये। रूहुल्ला की वीरता के विषय मे कोई सन्देह नही था। इस विपत्ति का कारण उसकी असावधानता हो सकती है। उस प्रदेश का जमीनदार जंगलो मे जाकर छिप गया फिर उसने एक व्यक्ति फिदाई खा के पास भेजकर अपने अपराधो की क्षमा चाही तो आदेश हुआ कि उसको दरबार मे प्रस्तुत किया जावे।

मुरुव्वत खां का मनसब 2 हजार जात और 1500 सवार करके यह शर्त की गई कि वह चन्द्र कोटा के जमींनदार हरबान को नष्ट कर दे। यह यात्रियो को बहुत सताता था। 13 तारीख को राजा सूरजमल और बख्शी ताकी जो बाबा खुर्रम की सेवा से मेरे दरबार मे आया उसने अपनी आवश्यकताओ के विषय में निवेदन किया उसने जो काम करना चाहा था उसकी अनुमति दे दी गई। मेरे पुत्र की प्रार्थना पर उसको निशान और नक्कारा का सम्मान प्रदान किया गया। ताकी को एक जडाऊ खपवा दिया गया। ख्वाजा अली बेग को अहमदनगर की सुरक्षा और प्रशासन के लिए नियुक्त किया गया था। उसका मनसब 5 हजार जात और 5 हजार सवार किया गया। उसी दिन राजा सूरजमल को एक खिलअत, एक हाथी, एक जडाऊ खपवा और ताकी को एक खिलअत देकर कागड़ा पर भेजा गया।

आदिलखां के राजदूतों का आगमन

मेरे पुत्र शाह खुर्रम ने आदिलखां के राजदूत भेंटों सहित रवाना किए तो वे बुरहानपुर पहुंचे। दक्खिन के विषय मे अब मेरे पुत्र के मन को पूर्ण सन्तोष हो चुका था। उसने प्रार्थना की कि खानखाना को बरार–खानदेश और अहमदनगर का सूबेदार नियुक्त किर दिया जाए। जीते हुए इलाकों को दबाए रखने के लिए उसने खानखाना के पुत्र शाहनवाजखां को 12 हजार सवारों सहित बुलाया। दक्खिन के प्रत्येक स्थान को विश्वसनीय लोगों को

जागीर के रूप में दे दिया और प्रान्त के प्रशासन के लिए उपयुक्त व्यवस्था की। मेरा पुत्र 30 हजार सवार और सात हजार पैदल बन्दूकचियों को दक्खिन में छोड़कर शेष सेना जिसमें 25 हजार सवार और दो हजार बन्दूकची थे, लेकर मेरी सेवा में आने के के लिए रवाना हुआ। बृहस्पतिवार मुबारक शम्बा तारीख 20 मास मिहर 3 पहर और तदनुसार 11 सव्वल 1026 हिजरी (12 अक्टूबर 1617) को जब 3 पहर और एक घडी दिन व्यतीत हो चुका था तो उसनें आनन्दपूर्वक शुभ मुहूर्त में मांडू के दुर्ग मे प्रवेश किया और मेरी सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हम दोनों 11 मास और 11 दिन जुदे–जुदे रह चुके थे। जब वह तस्लीम और फर्श चुम्बन की रस्में पूरी कर चुका तो मैंने उसको झरोखे मे बुलाया उस समय मुझे इतना आनन्द आया कि मैंने उठकर उसका प्रेमालिगन किया। वह ज्यों–ज्यो विनीत भाव प्रदर्शित करता था, त्यो–त्यों उसके प्रति मेरी कृपा और अनुग्रह बढता जाता था। मैंने उसको अपने समीप बिठाया। उसने एक हजार अशर्फिया और एक हजार रुपए मेरी नजर किए और इतनी ही धनराशि पुण्यार्थ दी। उसको अपनी सारी भेंट प्रस्तुत करने का समय नहीं था। इसलिए उसने मेरे सामने आदिलखां की भेंटों में से एक मुख्य हाथी और बहुमूल्य रत्नों से भरी हुई एक तश्तरी प्रस्तुत की। इसके बाद मेरे पुत्र के साथ आए हुए अमीरो को अपने पदानुसार मेरी तस्लीम करने का आदेश दिया। सर्वप्रथम खानजहा आया उसने एक हजार मोहर और एक हजार रुपए नजर किए और रत्न जटित चीजों से भरी हुई एक तश्तरी पेश कश के रूप मे प्रस्तुत की। मैने इनमें से 45 हजार के मूल्य की चीजें स्वीकार की फिर अब्दुल्ला खां ने फर्श चुम्बन करके एक हजार मोहरें मजूर की। तदनन्तर महावतखा ने तस्लीम करके एक सौ मौहर और एक हजार रूपए दिए और बहुमूल्य रत्न और जडाऊ बर्तनों की एक गठरी भेंट की। इन सब का मूल्य एक लाख 24 हजार रुपए था। इनमें से एक लाल का तोल 11 मिस्कल था। गत वर्ष एक योरोपियन इसको अजमेर में बेचने के लिए आया था और इसके दो लाख रुपए मांगता था परन्तु जौहरियों ने 80 हजार लगाए थे। इसलिए सौदा नहीं पटा और वह इसको वापिस ले गया। जब वह बुरहानपुर आया तो महावतखां ने यह लाल एक लाख रुपए में खरीद लिया फिर राजा भावसिंह ने मेरी सेवा में आकर एक हजार रुपए नजर किए और कुछ रत्नजडित चीजें पेशकश के रूप में प्रस्तुत की। इसी प्रकार दूसरे अधिकारी और सरदार अपने पदानुसार उपस्थित हुए। तदन्तर आदिल खां के वकीलों ने भूमि–चुम्बन करके उसका पत्र पेश किया। इससे पहिले राणा (उदयपुर) पर विजय प्राप्त करने के पुरस्कार स्वरूप मैंने अपने भाग्यवान पुत्र को 10

हजार जात और दस हजार का मनसब दिया था। जब दक्खिन विजय के लिए प्रयाण करने लगा तो उसको शाह की उपाधि मिली थी और अब इस प्रसिद्ध सेवा के लिए मैंने उसको 30 हजार•जात और 20 हजार सवार का मनसब दिया और शाहजहां की उपाधि प्रदान की। मैंने यह भी आदेश दिया कि दरबार में मेरे तख्त के पास ही उसकी कुर्सी लगाई जाया करे। यह मैंने उसके प्रति विशेष कृपा की थी। पहिले ऐसा नहीं होता था। एक खास पोशाक जिसमें सुनहरी काम था और मोती बड़े हुए थे और जिसका मूल्य 50 हजार रुपए था तथा एक जड़ाऊ तलवार, एक परतला और एक जड़ाऊ खंजर भी उसको दिए गए। उसका सम्मान करने के लिए मैं झरोखे से उतरा और उसके सिर पर एक तश्तरी भर मोती और एक तश्तरी भरी मोहरें निछावर कीं। आदिलखां की भेंटों से आया हुआ हाथी जिसका नाम सरनाथ था मंगवाया, वह मुझे बहुत पसन्द आया। इतने सुन्दर हाथी शायद ही देखे जाते होंगे मैं उस पर बैठा और मैं ही उसको चलाकर अपने निजी तबेले में ले गया और उसके सिर पर मोहरें बरसायी। मैंने इस हाथी का नाम नूहबक्त रखा। शुक्रवार ता. 24 को बगलाना का जमीनदार राजा मरजीव मेरा सेवा में आया। उसका नाम प्रताप है। वहां के प्रत्येक राजा को मरजीव कहा जाता है। उसके पास 1500 सवार है। आवश्यकता होने पर वह 3000 सवार ला सकता है। बगलाना प्रदेश गुजरात, खानदेश और दक्खिन के बीच में है। इसके सालेर और मालेर नाम के दो दुर्ग हैं। मालेर दुर्ग अच्छी बस्ती वाले इलाके मे स्थित है। इसलिए मरजीव वहां रहता है। बगलाना प्रदेश में बडे सुखद जल स्त्रोत है और कई छोटी–छोटी नदियां है। इस देश के आम मीठे और बडे–बडे होते हैं और 9 मास तक चलते है। यहां अंगूर बहुत होते है परन्तु उत्तम प्रकार के नहीं। यह राजा गुजरात, दक्खिन और खानदेश के सुल्तानों के सतर्क रहता है। वह इनमें से किसी से भी मिलने नहीं गया और न इनमें से किसी को अपने राज्य पर हाथ बढ़ाने दिया। दूसरे शासकों की सहायता के कारण उसके राज्य में कभी गड़बड़ नहीं हुई। स्वर्गीय बादशाह (अकबर) ने गुजरात, दक्षिण और खानदेश पर कब्जा कर लिया तो मरजीव ने बुरहानपुर आकर उसका चरण चुम्बन किया। उसको शाही सेवकों में सम्मिलित करके 3000 का मनसबदार बना दिया गया। इस समय जब शाहजहां बुरहानपुर गया तो यह राजा 11 हाथी भेंट करने के लिए लाया। वह दरबार में आया और उसको तीन अंगूठियां बख्शी गयी। 1 याकूत, दूसरी हीरे और तीसरी लाल की बनी हुई थी।

नूरजहां बेगम द्वारा शाहजहां का सम्मान

मुबारक शम्बा (बृहस्पतिवार) तारीख 27 को नूरजहां बेगम ने मेरे पुत्र शाहजहां को उसकी विजय के उपलक्ष्य में भोज दिया और उसे बहुमूल्य खिलअतें दी। एक नादिरी दी जिसमर कशीदे के फूल बने हुए थे और दुर्लभ मोती लगे हुए थे, एक सरपेच जिस पर बहुमूल्य रत्न जडे हुए थे, एक पगडी जिस पर मोती लगे हुए थे, एक कमरपेटी जिस पर मोती जडे हुए थे और एक जडाऊ तलवार, जडाऊ परतले सहित, एक फूल कटार, दो घोड़े जिनमें से एक पर जडाऊ जीन था तथा एक हाथी और दो हथनियां दी। शाहजहा के बच्चों को और महिलाओं को सम्मानसूचक कई प्रकार के कपडे और स्वर्ण के आभूषण दिए और उसके सेवकों मे से प्रत्येक को एक घोडा, एक जडाऊ खंजर और सम्मानसूचक पोशाक दी। इस आतिथ्य और प्रमोद में 3 लाख रुपए खर्च हुए। उसी दिन अब्दुल्लाखा और सरदार खां को एक घोडा देकर उसको सरकार काल्पी जो उसको जागीर मे दिया गया था जाने की इजाजत दे दी। इसी प्रकार सुजातखां और सैयद हाजी को क्रमशः गुजरात ओर बिहार भेज दिया।

मुझसे यह प्रायः निवेदन किया जाता था कि खानदौरा बृद्ध और दुर्बल हो गया है और कर्तव्यपालन में सक्रिय रहने के योग्य नही है। काबुल और बंगस के सूबे (उत्पाती प्रदेश) में अफगानों को दबाये रखने के लिए इधर-उधर सवार होकर जाना पडता है। सावधानता की दृष्टि से मैने महावतखा को काबुल और बंगस का सूबादार नियुक्त किया और उसे खिलअत प्रदान की। खानदौरा को ठट्ठा का सूबादार बना दिया। इब्राहिम फतेह जग ने बिहार से 49 हाथी भेट-स्वरूप भेजे थे, जो प्रस्तुत किये गये।

ईरान के राजदूत की मृत्यु-इस तारीख को मैने सुना कि मेरे भाई शाह अब्बास के राजदूत मोहम्मद रिजा की अपच के कारण आगरा मे मृत्यु हो गई। व्यापारी मोहम्मद कासिभ को जो मेरे भाई के पास आया था मैंने प्रबन्धक नियुक्त किया और आदेश दिया कि मोहम्मद रिजा की वसीयत के अनुसार उसके माल असबाब को शाह के पास ले जावे जिससे वह अपने सामने मृतक के उत्तराधिकारियों को ये चीजें दे दे।

सईद कबीर और बख्तर खां को जो आदिल खां के वकील थे हाथी और खिलअतें दी गई। मुबारक शम्बा तारीख 13 आबान को जहांगीर कुली बेग तुकान दक्खिन से मेरी सेवा में आया। उसका पिता ईरान का एक अमीर था। यह ईरान से अकबर के समय में आया था। उसको मनसब देकर दक्खिन भेज दिया गया था। अभी मेरा पुत्र शाहजहां आया तो मैंने इसकी भी उसके साथ बुलाया था। इसी दिन मैंने उदाराम को 3000 जात

और 1500 सवार का मनसब दिया यह जाति से ब्राह्मण था ओर अम्बर को इस पर बड़ा भरोसा था। जब शाहनवाज खां ने अम्बर के विरुद्ध चढ़ाई की तो आदम खा हब्शी, जावो राय, बाबूराय कामथ, उदाराम और निजामुलमुल्क के कुछ और सरदार उसको छोडकर शाहनबाज खां के पास आ गये। अम्बर की पराजय के बाद आदिल खां और अम्बर के बहकाने पर इन लोगों ने फिर वफादारी और सेवा का मार्ग त्याग दिया। अम्बर ने कुरान की शपथ लेकर आदम खां से बात की और उसे धोखा देकर पकड़ लिया और दौलताबाद के दुर्ग में कैद करके अन्त में मार डाला। बाबूराम कायस्थ और उदाराम आ गये और अपने राज्य में नहीं घुसने दिया। लगभग इसी समय बाबूराम कायस्थ की अपने मित्रों की धोखेबाजी से मृत्यु हो गई और अम्बर ने उदाराम के विरुद्ध सेना भेजी, उसने अच्छी लड़ाई की और अम्बर की सेना को हरा दिया। फिर वह उस प्रदेश में नहीं रह सकता था इसलिए वह कुटुम्ब और आश्रितों के साथ शाही सीमा पर आया और मेरे पुत्र शाहजहां की सेवा करने लगा। शाहजहां ने उस पर सब प्रकार कृपा की और उसे 3 हजार जात और 1 हजार सवार का मनसब दिलाने का वचन देकर दरबार में ले आया। वह उपयोगी सेवक था इसलिए मैंने उसके सवारों में 500 की वृद्धि कर दी। मैंने शाहनबाज खां के मनसब में भी 500 सवार बढ़ा दिये और सरकार सारंगपुर का तथा मालवा के कुछ भाग का उसको फौजदार नियुक्त कर दिया। मुबारक शम्बा बृहस्पतिवार तारीख 10 को मेरा पुत्र शाहजहां अपनी भेंट लाया, जो झरोखें के चौक में रखी गई। जड़ाऊ चीजें, सुन्दर वस्त्र, दुर्लभ .पदार्थो के अतिरिक्त हाथी और घोडे थे और उन पर चांदी और सोने का साज था। शाहजहां को प्रसन्न करने के लिए मैंने झरोखे से उतरकर एक—एक को देखा, उनमें एक लाल उम्दा थी, जो मेरे पुत्र ने गोवा के बन्दरगाह में 2 लाख रुपये में खरीदी थी। इसकी तोल साढ़े 10 टंक या 17 मिसकल तौले और साढे 5 सुर्ख (चरमू) था मेरे कोष में 12 टंक से अधिक तौल की कोई लाल नहीं थी। जौहरियों ने इसका यह मूल्य उचित बतलाया। भेंटों में एक नीलम थी। यह आदिल खां की भेंटों में थी। इसका तौल 6 टंक और 7 सूर्ख था, और इसका मूल्य 1 लाख रुपए था। मैंने ऐसे आकार और रंग की नीलम पहले कभी नहीं देखी थी। आदिल खां की भेंटों में एक चमकौरा हीरा था। इसका तौल 1 टंक और 6 सुर्ख था। इसका मूल्य 40 लाख रुपए बतलाया गया था। इस हीरा का नाम चमकौरा इसलिए पड़ा था कि दक्षिण में साग—ए—चमकौरा नामक एक पौधा होता है। जब मुर्तजा निजामुलमुल्क ने बरार पर विजय प्राप्त की तो अपनी महिलाओं के साथ वह बाग में घूमने लगा तो एक स्त्री को चमकौरा पौधे में यह हीरा

मिला और वे इसको निजामुल–मुल्क के पास ले गई, तभी से ही उसका नाम चमकौरा हीरा हो गया। फिर अहमदनगर से यह इब्राहीम आदिल खां के पास पहुंचा। यह एक नई खान में से निकला है परन्तु इसका रंग और कोमलता ऐसी है कि मैंने पहले ऐसी कभी नहीं देखी थी। इनके अतिरिक्त दो मोती थे, इनमें से एक का तोल 64 सुर्ख या 2 मिसकल और 11 सुर्ख था, इसका मूल्य 25 हजार रुपये आंका गया था। दूसरे मोती का तौल 16 सुर्ख था। इसकी गोलाई बहुत ही बढ़िया थी, इसका मूल्य 12 हजार रुपये निश्चित किया गया था। कुतुबुल–मुल्क की भेंटों में एक हीरा और था इसका तौल 1 टंक था और मूल्य 30 हजार रुपये आंका गया था। 50 हाथी थे जिनमें से 3 पर सुनहरी झूले थीं। सोने की जंजीरें थीं और 9 पर चांदी का सामान था। मेरे तबेले में 20 हाथी दाखिल किए गये जिनमें 5 बहुत बड़े और प्रसिद्ध थे। इनमें एक नूरखत था जो मेरे पुत्र ने मुलाकात के प्रथम दिन मुझको भेंट किया था। इसका मूल्य 1 लाख 25 हजार था। दूसरे हाथी का नाम महिपति था यह आदिल खां की भेंटों से आया था। इसका मूल्य 1 लाख रूपया था। मैंने इसका नाम दुर्जनशाल रखा था। आदिल खां की भेंटों से ही एक बख्त बुलन्द नामक 1 लाख रुपये का हाथी था। मैंने इसका नाम गिरावार रखा। एक और हाथी कदुसखां कहलाता था। पांचवे हाथी का नाम इमामरिजा था। कुतुबुल–मुल्क की भेंटों में 100 अरबी और ईराकी घोड़े थे जिनमें अधिकांश अच्छे थे। 3 पर जड़ाऊ साज था। यदि मेरे पुत्र की और दक्षिण के सुल्तानों की भेंटों का विवरण लिखा जावे तो यह बड़ा लम्बा होगा। मैंने 20 लाख रुपए की भेंटें स्वीकार कीं। इसके अतिरिक्त शाहजहां ने अपनी माता नूरजहां बेगम को 2 लाख रुपये भेंट किये। और 60 हजार रुपये उसने अपनी दूसरी माताओं को और बेगमों को दिये। सब मिलाकर मेरे पुत्र की भेंटों का मूल्य 22 लाख 60 हजार रुपये था। इस राजवंश के समय में ऐसी भेंटें कभी नहीं आई। मेरा पुत्र स्नेह और कृपा का बड़ा पात्र है, मैं उसके काम से बड़ा सन्तुष्ट हूं। सर्वशक्तिमान ईश्वर उसको चिरायु और समृद्धि करे।

मैंने अपने जीवन में कभी हाथी की शिकार नहीं की थी और गुजरात प्रान्त को तथा समुद्र को देखने की मुझे बड़ी इच्छा थी। अतः मुझे विचार आया कि अहमदाबाद होकर मैं समुद्र देखने जाऊं और वापिसी पर हाथियों का शिकार करूं और फिर आगरा वापिस आऊं इस विचार से मैंने हजरत मरियुज्जमा (माता) और अन्य बेगमों को तथा अन्तःपुर के लोगों को सामान सहित आगरा भेज दिया और शिकार करने के लिए मैं सूबा गुजरात की ओर चला। अपने साथ मैंने केवल उतना ही सामान लिया जितना अत्यावश्यक

था। शुक्रवार की सायंकाल आबान मास में मैंने शुभ मुहूर्त में मांडू से प्रस्थान किया और नालछा तालाब के तट पर मुकाम किया। प्रातःकाल मैने एक नीलगाव मारा। शनिवार को एक खास घोडा और एक हाथी महावत खां को दिया और उसे सूबा काबुल और बंगस को जाने की इजाजत दे दी। उसकी प्रार्थना पर मैंने रशीद खां को एक खिलअत, एक घोड़ा और हाथी, एक जडाऊ खंजर देकर नायब सूबादार बनाया। मैंने इब्राहीम हुसैन को दक्षिण का बख्शी और हुसैन को वहां का वाकियानवीस नियुक्त किया। सूबा उडीसा से राजा टोडरमल का पुत्र राजा कल्याण आया था। उस पर कुछ आरोप लगाये गये थे, इसलिए कुछ समय तक उसको तसलीम तक आने की इजाजत नहीं दी गई थी। फिर वह निर्दोष सिद्ध हो गया, इसलिए उसको एक खिलअत और घोडा देकर उसकी महावत खां के साथ बगस में सेवा करने के लिए नियुक्त कर दिया। सोमवार के दिन आदिल के वकीलों को दक्षिण की प्रथा के अनुसार जडाऊ चीरोदार पगडियां दीं। एक का मूल्य 5000 और दूसरी का 4000 रुपये था। अफजल खां और राय रायान ने वकीलों की हैसियत से मेरे पुत्र शाहजहां की उचित सेवा की थी। मैने इन दोनों का मनसब बढाया और राय रायान को विक्रमाजीत की उपाधि दी जो हिन्दुस्तान मे सबसे बडी मानी जाती है। शनिवार तारीख 22 को मैने दो मादा नीलगाव मारे। सोमवार को साढे 4 कोस कूच करके मैंने केंद हसन पर मुकाम किया। मंगलवार तारीख 15 को मैंने नीलगाव मारे।

रविवार तारीख 17 को 1 जलप्रपात पर मद्यपान करके रात्रि को शिकार करके मैं वापिस आया, इसी दिन जैतपुर के जमीनदार को चौखट–चुम्बन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे पुत्र शाहजहा की प्रार्थना पर मैने उसको क्षमा कर दिया था। मेरे शिकारियो ने सूचना दी थी कि हासिलपुर जो 3 कोस दूर है, शिकार के लिए अच्छा स्थान है। इसलिए अपने बडे डेरे यहा छोडकर कुछ सेवको के साथ मैं हासिलपुर गया। और हिसामुद्दीन का मनसब बढाकर 1 हजार जात और 400 सवार कर दिया। इसी दिन काबुल से हुसैनी अगूर आये जो ताजा थे। यह 3 मास पहले तोडे गये परन्तु ताजा मालूम होते थे। ईश्वर को इसलिए धन्यवाद है। मुबारक शम्बा तारीख 24 को हासिलपुर के तालाब पर मद्य गोष्ठी की गई। मेरे पुत्र शाहजहा को और कुछ बडे अमीरों और निजी सेवकों को मनसब दिया गया और गोडवाना की फौजदारी पर भेजा गया। सूबा दक्षिण के दीवानराय बिहारीदास को चौखट–चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रविवार 26 तारीख को मैंने कमालपुर में मुकाम किया। इसी दिन रुस्तम खां मेरी सेवा में आया, यह मेरे पुत्र शाहजहां का एक सेवक था। उसने बुरहानपुर से कुछ शाही सेवकों के साथ

इसको गोंडवाना के जमीनदारों के विरुद्ध भेजा था। उनसे यह 110 हाथी, 1 लाख 20 हजार रुपये खिराज के लेकर आया। सुजात खां के पुत्र जाहिद को एक हजार जात और 400 सवार का मनसब दिया गया। सोमवार को मैंने पक्षियों का शिकार किया। बहलूल खां, हसन मियां अफगान का पुत्र है। हसन शुरू में सादिक खां का सेवक था। फिर यह शाही नौकरी करने लगा था। दक्षिण में ही इसकी मृत्यु हुई थी। इसके आठ पुत्रों को मनसब दिया गया था। इनमें 2 को तलवार चलाना बहुत अच्छा आता था। बहलोल को बढते बढ़ते एक हजार का मनसब मिल गया। बुरहानपुर मे मेरे पुत्र शाहजहां ने उसको 1500 जात और 1000 सवार के मनसब की आशा दिलाई थी। उसको मेरी सेवा में आने की बडी इच्छा थी। इसलिए उसको दरबार मे बुला लिया गया। यह बड़ा वीर और सुन्दर खान है। मेरे पुत्र शाहजहां की इच्छानुसार इसको मनसब न देकर सरबुलन्द खां की उपाधि दी गई। मुबारक शम्बा तारीख 2 को तालाब के तट पर मुकाम करके मद्य–गोष्ठी की गई। लश्कर खां को सूबा दक्षिण का दीवान बनाकर उसका मनसब 2500 जात और 1500 सवार कर दिया गया। आदिल खां के दोनों वकीलों में से प्रत्येक का 2 कोकब–ए–ताली मुहरें दी गई। एक मौहर पांच सौ साधारण मौहरों के बराबर थी। सर बुलन्दखां को 1 खिलअत और घोडा दिया। शुक्रवार तारीख 3 को साढे को चार कोस प्रयाण करके मै परगना दिखतान में ठहरा। रविवार को साढे 4 कोस चलकर धार पहुचा।

धार पुराना नगर है, यहां राजा भोज रहता था जो हिन्दुस्तान का एक बडा राजा था। उसके समय के बाद एक हजार वर्ष व्यतीत हो चुके थे। मालवा के सुल्तानों के समय में धार दीर्घकाल तक राजधानी थी। जब सुल्तान मुहम्मद तुगलक दक्खिन की विजय के लिए प्रयाण कर रहा था तो उसने पहाडी की चोटी पर कटे हुए पत्थरों का एक दुर्ग बनवाया था। बाहर से यह दुर्ग सुन्दर मालूम होता है। परन्तु दुर्ग के अन्दर इमारते नहीं हैं। मैने इसकी लम्बाई चौड़ाई नपवाई। अन्दर से दुर्ग की चौडाई 12 तनाव और 7 गज है। लम्बाई 17 तनाव और 13 गज है। इसकी प्राचीर साढे 19 गज चौड़ी है। कंगूरों तक इसकी ऊंचाई साढे सत्रह गज है। बाहर से इसका घेरा 55 तनाव है। दिलावर खां ने जो दिल्ली के सुल्तान फीरोज के पुत्र सुल्तान मुहम्मद के समय मालवा का स्वतंत्र शासक था। दुर्ग के बाहर बसे हुए भाग में जामा मस्जिद बनवाई थी और मस्जिद के दरवाजे के सामने एक चतुष्कोण लौह–स्तम्भ खड़ा किया था। जब गुजरात के सुल्तान बहादुर ने मालवा पर अपना अधिकार कर लिया तो वह इस स्तम्भ को गुजरात से ले जाना चाहता था। कारीगरों ने पूरी सावधानता नहीं की, जब उन्होंने

इसको नीचा किया तो यह गिर गया और इसके दो टुकड़े हो गए। बड़ा टुकड़ा साढे सात गज और छोटा टुकड़ा साढ़े चार गज का है इसकी गोलाई सवा गज है। मैंने आदेश दिया कि बड़े टुकड़े को आगरे ले जाकर बादशाह अकबर की कब्र के चौक में स्थापित कर दिया जाए और इसके सिरे पर रात्रि में दीपक जलाया जाए। उक्त मस्जिद के दो फाटक है। एक दरवाजे की महराब के सामने गद्य में कुछ वाक्य पत्थर पर खुदे हुए हैं उसका आशय यह है कि अमीदशाह गौरी (दिलावर खां) ने सन 870 में इस मस्जिद की नींव डलवाई थी दूसरे दरवाजे की महराब पर एक कशीदा लिखा हुआ है।

जब दिलावर खां की मृत्यु हो गई तब कोई ऐसा सुल्तान नहीं था जिसकी सत्ता सम्पूर्ण हिन्दुस्तान पर हो। यह गड़–बड़ का युग था। दिलावर खां का पुत्र हुशंग खां न्यायी और धैर्यवान सुल्तान था। अनुकूल अवसर देखकर वह मालवा का सुल्तान बन गया। उसकी मृत्यु के बाद मालवे का शासन हुशंग के वजीर खानजहां के पुत्र महमूद खिलजी के हाथ में आ गया। उसके बाद हुशंग का पुत्र गयासुद्दीन और तत्पश्चात गयासुद्दीन का पुत्र नासिरूद्दीन सुल्तान बना। नासिरुद्दीन अपने पिता को विष देकर सुल्तान बन गया। उसके पश्चात उसका पुत्र महमूद सुल्तान बना।

गुजरात के सुल्तान बहादुर ने महमूद के राज्य छीन लिया एवं महमूद के साथ मालवा के सुल्तानों के राजवंश का अन्त हो गया।

सोमवार तारीख 6 को मिर्जा सरफुद्दीन हुसैन कासगरी को एक हाथी देकर सूबा बंगस में अपने काम पर भेज दिया। उदाराम को एक जडाऊ खंजर सौ तोले की एक मोहर और 20 हजार दरब (दस हजार रुपए) नकद दिए। रविवार को साढे चार कोस चल कर शादलपुर में मैंने मुकाम किया। इस गांव में एक छोटी नदी है जिस पर नासिरूद्दीन खिलजी ने एक पुल बनवाया था और इमारतें खड़ी की थीं यह स्थान कालियादह जैसा है। दोनों ही स्थानों का निर्माण उसी ने करवाया था। यद्यपि उसकी इमारतें प्रशंसनीय नहीं हैं परन्तु यह नदी के तल में बनी हुई हैं इसलिए यह किसी कदर देखने योग्य है। रात को मैंने नहरों और नदियों पर रोशनी करवाई। मुबारक शम्बा (बृहस्पतिवार) तारीख 9 को मद्यगोष्ठी हुई, उस दिन मैंने अपने पुत्र शाहजहां को एक लाल प्रदान किया जिसका तोल नौ टंक और पांच सुर्ख था और मूल्य एक लाख पच्चीस हजार रुपए था, दो मोती भी दिए। वह वही लाल है जो मेंरे जन्म के समय बादशाह अकबर की माता हजरत मरियम मकानी ने मेरे पिता को मेरा मुंह देखते समय दी थी और कई वर्ष तक उसकी पगड़ी में इसका सरपेच लगा रहता था। उसके बाद

मैंने भी इसको अपने सरपेच में लगाया। इसके मूल्य और कोमलता की बात तो जुदी है परन्तु यह इस अमर साम्राज्य के लिए बड़ी शुभ थी। इसलिए मैंने यह अपने पुत्र को दी। मुबारिज खां को 1500 जात और इतने ही सवारों के मनसब देकर मेवात का फौजदार नियुक्त किया। उदाराम को दक्षिण सूबा में नौकरी देकर एक खिलअत, एक हाथी और ईराकी घोड़े प्रदान किए गए और उसके साथ प्रधान सेनापति खानखाना के लिए एक खास जरा निशान खंजर भेजा गया। शुक्रवार तारीख 10 को मैं वहीं ठहरा, 11 को पौने चार कोस चलकर नामक गांव में ठहरा, 12 तारीख को बदनोट के परगने में ठहरा। मेरे पिता के समय से यह परगना केशवदास मारू की जागीर में था। वास्तव में यह उसका वतन बन गया था। वहां उसने बाग लगा दिये थे और इमारतें बनवायी थी। मार्ग में एक बावड़ी थी जो बड़ी ही सुखद प्रतीत होती थी। मुझे ख्याल आया कि यदि मार्ग में कुआं बनाया जाय तो इस प्रकार की बावड़ी बनाई जावे।

मंगलवार तारीख 4 को मैं सीलगढ़ और बुधवार ता. 15 को साही नदी पार करके रामगढ़ और 16 तारीख को भी वहीं ठहरा। बुलन्द खां को एक निशान और हाथी देकर दक्खिन भेज दिया। राजा भीमनारायण को अपनी जागीर गदेह जहाने की इजाजत दे दी। राजा मरजीव का मनसब 4000 करके उसको अपनी जागीर बगलाना जाने की इजाजत दे दी और आदेश दिया कि अपने स्थान पर पहुंचकर वह अपने ज्येष्ठ पुत्र को मेरे पास भेज दे। हाजि बलूच प्रधान शिकारी को बलूच खां की उपाधि दी। शुक्रवार तारीख 17 को मैंने बावला नामक गांव में मुकाम किया। शनिवार तारीख 18 को कुरबान का त्यौहार था। इसकी रस्में पूरी करके नागौर के तालाब पर मुकाम किया। 19 तारीख को 5 कोस चलकर समरिया गांव के तालाब पर डेरे लगाये। सोमवार तारीख 20 को सवा चार कोस चलकर दौहत परगने के मुख्य स्थान पर ठहरे। यह परगना मालवा और गुजरात की सीमा पर स्थित है। बदनौर का इलाका जंगल है और पथरीला है। कम शम्बा (बुधवार) तारीख 22 को सवा पांच कोस चलकर मैं रनयाड नाम गांव पर ठहरा। वृहस्पतिवार तारीख 23 को गांव के तालाब पर मद्य गोष्ठी हुई। तारीख 24 को जालौर पहुंचा। यहां कर्नाटिक के मदारियों ने कुछ तरकीबें दिखाई, एक आदमी ने साढे पांच गज लम्बी लोहे की जंजीर जिसकी तोल 1 सेर और दो दाम था अपने गले में डालकर पानी के सहारे से निगल ली और कुछ देर अपने पेट में रखकर निकाल ली। 25 तारीख को यहीं ठहरकर 26 तो मैं नीसदा गांव में ठहरा 27 को एक तालाब पर पहुंचा 28 को एक तालाब के तट पर डेरे लगे।

यहां पर अहमदाबाद के अंजीर आये। बुरहानपुर के अंजीर मीठे होते हैं, परन्तु यह अंजीर और अधिक मीठे होते हैं। कम शम्बा तारीख 29 और मुबारक शम्बा तारीख 30 को हम यहीं ठहरे। यहां सरफराजखां अहमदाबार से मेरी सेवा में आया। उसकी भेंटों से 1 मोतियों की माला, जो 11000 रुपये की थी, 2 हाथी, 2 घोड़े, 2 बैल और 1 गाडी और कुछ गुजराती कपडे रखकर शेष उसको लौटा दिए। सरफराज खां मुसाहिब बेग का पोता है। जो हुमायूं का एक अमीर था। मेरे शासन के आरम्भ में मनसब बढाकर मैंने उसको सूबा गुजरात में नियुक्त किया था। वह सूबा गुजरात में सफल सिद्ध हुआ। इसलिए मैंने उसको सरफराजखां की उपाधि दी और 2000 जात और 1000 सवार का मनसब दिया। शुक्रवार ता. 1 दी को मैंने पुनः 4 कोस कूच करके जसोद के तालाब पर मुकाम किया। यहां पर रायमान रोहू मछली पकड कर लाया। मुझे मछली का मास बहुत पसंद है और पिछले 11 मास में मुझे ऐसी मछली नहीं मिली थी इसलिए मुझे बड़ा हर्ष हुआ। मैंने रायमाना को 1 घोडा दिया। दोहद गुजरात की सीमा के अन्दर माना जाता है। यहां से आगे सब चीजे भिन्न प्रकार की मालूम हुई। भूमि और मैदान भिन्न है भाषा भिन्न है और लोग भिन्न है। वृक्ष फलदार हैं। इनमें आम, खिरनी और इमली हैं। खेतों की रक्षा के लिए बाढ बनाई जाती है। दो खेतों के बीच में आने जाने के लए तंग रास्ता छोड दिया जाता है। यह रेतीला इलाका है। जब कोई गति होती है तो इतना गर्द उड़ता है कि लोगों के चेहरे भी कठिनता से दीखतें है। इसलिए अहमदाबाद को गर्दाबाद कहना चाहिए। शनिवार तारीख 2 को पौने चार कोस चलकर मैंने माही के तट पर मुकाम किया। रविवार तारीख 3 को फिर पौने चार कोस चलकर मैं बर्दला ठहरा। यहां के मनसबदार आये जिनको गुजरात में सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था। सोमवार को 5 कोस कूच करके चित्र सीमा पर मुकाम किया और अगले दिन फिर 5 कोस चलकर मोंडा परगने पर ठहरा। 6 तारीख को कूच करके नरयाद पहुंचा। कस्बे में होकर निकलते समय मैंने 1500 रुपए उछाले। 7 तारीख को साढ़े 6 कोस चलकर मैं परगना पितलाद में ठहरा। सूबा गुजरात में पितलाद से बडा कोई परगना नहीं है इसकी आय 7 लाख रुपए हैं। कस्बे की आबादी भी घंनी है। कस्बे में होकर निकलते समय 1000 रुपए बखेरे गए। मैं चाहता हूं कि ईश्वर के बन्धुओं को किसी न किसी रूप में लाभ हो यहां के लोग गाड़ियों में बैठकर यात्रा करते हैं। इसलिए मैं भी दो कोस तक गाड़ी में बैठकर चला परन्तु गर्द से बडी परेशानी हुई। यहां से यात्रा की समाप्ति तक मैं घोडे पर सवार होकर गया। मार्ग में मुकर्रबखां अहमदाबाद से आया और उसने 30,000 रुपए भेंट

किए। शुक्रवार तारीख 8 को साढ़े छः कोस चलने पर मैं समुद्र तट पर पहुंचा।

केम्बे (खम्भात) पुराना बन्दरगाह है। ब्राह्मणों का कहना है कि इसको बने हुए कई हजार वर्ष हो गए। आरम्भ में इसका नाम त्रिम्बावती था और राजा त्रिम्बक कुंवर यहां राज्य करता था। इसके विषय में ब्राह्मण लोग बड़ी लम्बी बात कहते है। यह पूरी लिखी जावे तो वृतान्त अति विस्तृत हो जायेगा। संक्षेप में वृतान्त यह है कि जब राजा अभय कुमार की राज्य करने की बारी आयी तो इस नगर पर बड़ी विपत्ति पड़ी। अभय कुमार राजा त्रिम्बक कुंवर का पोता था। इस नगर पर इतना गर्दा आया कि तमाम मकान ढक गए और जीवन निर्वाह के साधन नष्ट हो गये। इस विपत्ति के आने से पहले राजा ने एक मूर्ति स्वप्न में देखी उसने इस विपत्ति की सूचना दी। राजा अपने कुटुम्ब सहित जहाज में बैठकर और मूर्ति को साथ लेकर चल दिया मूर्ति एक स्तम्भ के सहारे रखी हुई थी। सयोगवश तूफान आया और जहाज टूट गया। अभी राजा का जीवन शेष था। इसलिए उस स्तम्भ पर बैठकर राजा तट पर आ पहुंचा और उसने चाहा कि नगर का पुनर्निर्माण कराया जावे। यह स्तम्भ यहां खडा किया गया और नगर का नाम खम्भावती हो गया। खम्भावती फिर खम्भायत कहलाने लगा। हिन्दुस्तान में यही एक सबसे बडा बन्दरगाह है वह 7 कोस चौड़ा और 40 कोस लम्बा है। इसमें जहाज नहीं आ सकते। उनको बोगा में लंगर डालना पड़ता है जो खम्भात के अधीन है और समुद्र के निकट स्थित है। वहां से सामान गुराबों द्वारा खम्भात लाया जाता है। इसी प्रकार जहाज में लादने के लिये सामान वहां तक गुराबों में ले आया जाता है। मेरे वहां पहुंचने से पहले योरोप के बन्दरगाहों से कुछ गुराब खम्भात आए थे उन्हें क्रय–विक्रय करना था और अब वे वापिस जाने वाले थे। 10 तारीख को उन्हें सजा कर मुझे दिखाया गया फिर रुखसत लेकर वे अपने काम पर चले गए। 11 तारीख को मैं भी गुराब में बैठकर 1 कोस तक पानी में गया। 13 तारीख को मैं तारंग सर तालाब को देखेने गया और बाजारों में होकर निकला मार्ग में 5000 रुपए की बखेर की गई। बादशाह अकबर की दीवार नगर के आसपास खड़ी की थी। विभिन्न स्थानों से व्यपारी लोग आकर यहां बस गये थे। उन्होंने अच्छे मकान बना लिये थे और वे आसानी से जीविका कमा सकते थे। यहां का बाजार छोटा हैं परन्तु साफ सुथरा है और लोगों से भरा रहता है। गुजरात के सुल्तानों के समय में इस बन्दरगाह की जकात से आय होती थी। मैंने उस समय आदेश दिया कि चालीसवां से अधिक जकात न ली जाये। दूसरे बन्दरगाह पर दसवां या आठवा जकात ली जाती है इससे अनुमान किया

जा सकता है कि पिछले सुल्तानों के समय में जकात से कितनी आय होती होगी। ईश्वर की कृपा से मैंने जकात की आय जो अगणित होती थी बन्द कर दी है। अब जकात या तमगा का नाम भी सुनाई नहीं देता है। इसी समय आदेश दिया गया कि सोने और चांदी के सिक्कों का तोल दुगना कर दिया जाये। सोने के सिक्के के एक ओर जहांगीर शाही 1027 और दूसरी और खम्भात जुलूस वर्ष बारहवां बनवाया गया। चांदी के सिक्के के एक ओर जहांगीर शाही 1027 और इसके आसपास एक शेर रखा गया जिसमें लिखा था बादशाह जहांगीर ने यह बनवाया है। दूसरी ओर था कि "खम्भात की टकसाल में यह 12वें वर्ष में बना।" इसके आसपास लिखा था। "दक्खिन की विजय के बाद वह मांडू से गुजरात आया था।" मेरे शासन के सिवाय किसी दूसरे शासन में तांबे के ही टंक बने थे। सोने ओर चांदी के टंक मैने ही बनवाये हैं। मैंने आदेश दिया कि इसको जहांगीर सिक्का कहा जाए। मुबारक शम्बा (बृहस्पतिवार) ता. 18 को खम्बात के मुत्सद्दी अमानत खां की भेंटे हरमखाने में मेरे सामने रखी गई। उसका मनसब बढाकर 15 सौ जात और 4 सौ सवार कर दिया गया। 30 द्वीव को 3 हजार जात और 600 सवार के मनसब से सम्मानित किया गया। शुक्रवार ता. 15 को मैने नूरबखत हाथी पर बैठकर एक घोडे के पीछे उसे दौडाया, वह बहुत अच्छा दौडा और जब रोका गया तो भली–भांती खडा हो गया। आज तीसरी बार मैं इस हाथी पर सवार हुआ हूं। शनिवार ता. 16 को जयसिह के पुत्र रामदास का मनसब बढाकर 1500 जात और 700 सवार कर दिया। रविवार ता. 17 के दिन दराब खां, अमानत खां और सईद वायजीत बारह को एक–एक हाथी दिया। जिन दिनों में मैं समुद्र के तट पर ठहरा हुआ था तो खम्बात के व्यापारियों, गरीब आदमियों और अन्य निवासियों को अपने सामने बुलाकर मैंने प्रत्येक को खिलअत या घोडा, यात्रा व्यय यानिवाह के लिए सहायता दी। इस दिन शाह आलम मस्जिद के सईद मोहम्मद साहब सज्जाद, शेख मोहम्मद घोष के पुत्र शेख हैदर मियां वजीरुद्दीन के पोते और अहमदाबाद में रहने वाले अन्य शेख लोग मुझे मिलने और तसलीम करने आए। मेरी इच्छा थी कि मैं समुद्र और ज्वार भाटा देखूं, इसलिए मैं वहां 10 दिन ठहरा। और मंगलवार 19 दे (30 दिसम्बर 1618) को शाही सेना ने अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। मंगलवार के दिन सवा 6 कोस चलकर मैं कोसाला गांव पर ठहरा। बुधवार ता. 20 को मैं बाबरा परगना में होकर निकला और नदी के तट पर मेरा मुकाम हुआ। ये 6 कोस की मंजिल थी। मुबारक शम्बा ता. 26 को मैंने मुकाम करके मद्य–गोष्ठी की। इस नदी में मैंने बहुत मछलियां पकड़ी। और उन सेवकों को दे दी जो उपस्थित थे। शुक्रवार ता. 22 को

चार कोस कूच करके मैंने बारीचा नामक गांव में डेरे लगाए। इस मार्ग पर ढाई से तीन गज लम्बी दीवारें भी दिखाई दी। पूछने पर प्रकट हुआ कि लोगों ने ये पुण्यार्जन के निर्मित बनाई हैं। रास्ते में चलता हुआ जब कोई भारवाहक थक जाता है तो वह अपना बोझा इस दीवार पर रखकर कुछ सांस ले लेता है और फिर आसानी से और सहायता के बिना उठाकर अपने उद्दिष्ट स्थान की ओर चल देता है। इन दीवारों के निर्माण से मुझे प्रसन्नता हुई और मैंने आदेश दिया कि सरकारी खर्च से बड़े-बडे नगरों में ऐसी दीवारें बना दी जावें। शनिवार ता 23 को पौने पांच कोस कूच करके कांकरियों तालाब पर मुकाम किया। अहमदाबाद नगर के सस्थापक सुल्तान अहमद के पोते कुतुबुद्दीन मोहम्मद ने यह तालाब के मध्य मे उसने कुछ बाग और इमारतें बनवायी थीं। तालाब के तट और इन इमारतों के बीच में एक पुल बनवाया था जो जाने और आने के लिए थी। यह बडे अतीत की बात है इसलिए अधिकांश इमारतें गिर गयी थी और इनमें बैठने के लिए और कोई स्थान नहीं था। जब मेरा लश्कर अहमदाबाद की ओर प्रयाण कर रहा था तो गुजरात के बख्शी शफी खां ने सरकारी खर्च में इनकी मरम्मत करवाकर एक बाग लगवा दिया और इसमें एक नई इमारत बनवा दी। निश्चय ही यह स्थान आनन्ददायक है। इनकी शैली भी मुझे पसन्द आई। जिधर पुल बना हुआ है अधर निजामुद्दीन अहमद ने जो मेरे पिता के समय गुजरात का बख्शी था तालाब के तट पर एक बाग लगाया था। इस समय मुझसे निवेदन किया गया कि अब्दुल्ला खां ने निजामुद्दीन अहमद के पुत्र आबिद से झगडा हो जाने के कारण इस बाग के वृक्ष काट डाले हैं। मैंने यह भी सुना कि अपनी सरकार के समय में मद्य गोष्ठी के अवसर पर उसने एक दास को संकेत करके एक व्यक्ति का जो मजाक कर रहा था सिर कटवा दिया। यह व्यक्ति शराब पीए हुए था और विनोद में उसने कुछ अनुचित शब्द बोल दिए थे। ये दोनों बातें सुनने से मेरी न्याय बुद्धि को धक्का पहुंचा और मैंने महकमहा-दीवानी को आदेश दिया कि इस बख्शी के दो अस्पा सवारों को एक अस्पा कर दिया जावे और इस प्रकार 7,00,0000 दाम उसकी जागीर में से कम कर दिए जाएं।

इस मंजिल पर शाह आलम की कब्र मार्ग के एक ओर थी इसलिए मैंने उसके पास होकर निकलते हुए फातिहा पढ़ा। इस मजार के निर्माण में एक लाख रुपये खर्च हुए थे। शाह अलाम कुतुब आलम का कपुत्र था। इसका वंश मकदूम-ए-जहानी यांन (दरवेश से चला था) इस देश के बड़े और छोटे सब लोगों का इसमें आश्चर्यजनक विश्वास है। ये लोग कहते हैं कि शाह आलम मृतकों को जीवित कर देता था। जब उसके पिता को इसका

पता लगा तो उसने कहलाया कि ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि यह ईश्वर के काम में हस्तक्षेप करना है। शाह आलम के एक दासी थी जिसके कोई बच्चा नहीं था परन्तु शाह आलम की प्रार्थना पर ईश्वर ने उसको एक पुत्र दिया। जब वह 27 वर्ष का हुआ तो उसकी मृत्यु हो गई। तब दासी रोती पीटती हुई शाह आलम के पास आई और बोली "मेरा पुत्र मर गया है, मेरे वही एकमात्र पुत्र था। आपके अनुग्रह से ईश्वर ने वह मुझे प्रदान किया था। मुझे आशा है कि आपकी प्रार्थना से वह जीवित हो जायेगा।" शाह आलम कुछ समय के लिए विचारमग्न हो गया और अपनी गुफा में चला गया। दासी शाह आलम के पुत्र के पास गई। वह उस पुत्र से बडा स्नेह करता था दासी ने कहा कि, "शाह से कहकर मेरे पुत्र का जीवित करवा दो"। शाह का पुत्र छोटी उम्र का था उसने गुफा में जाकर विनीत प्रार्थना की तो शाह आलम बोला, "यदि तुम उसके लिए अपना जीवन दे दो तो मेरी प्रार्थना स्वीकार हो सकती है।" बच्चे ने निवेदन किया "मैं आपकी इच्छा से सन्तुष्ट हूं और ईश्वर की इच्छा भी मानता हूं।" शाह आलम ने अपनी पुत्र का हाथ पकडकर उसको भूमि से उठा लिया और आकाश की ओर मुंह करके कहा, "हे ईश्वर उसके बजाय तुम इस बच्चे को ले लो।" तुरन्त ही बच्चे ने अपनी आत्मा ईश्वर के अर्पण कर दी और शाह आलम ने उसको बिस्तार में रखकर एक चादर से ढक दिया और बाहर आकर दासी ने कहा, "घर जाकर अपने पुत्र का समाचार लाओं, शायद वह अचेत अवस्था में हो और मरा न हो।" जब वह अपने घर पर पहुंची। तो देखा कि उसका पुत्र जीवित है। सारांश यह है कि गुजरात में शाह आलम के विषय में इस प्रकार की अनेक कहानियां हैं। मैंने भी सईद मोहम्मद सज्जाद से इस विषय में प्रश्न किया कि वास्तविकता क्या है? यह सज्जाद समझदार आदमी है। उसने कहा, "मैंने भी अपने पिता और दादा से यही बात सुनी है। परन्तु असली बात तो ईश्वर ही जानता है।" यद्यपि यह मामला बुद्धि से परे है। परन्तु लोगों में इसकी बड़ी प्रसिद्धि है। इसलिए इसको लिख दिया गया है। शाह आलम की मृत्यु 880 हिजी (सन 1475) में सुल्तान महमूद बेघडा के समय में हुई थी। इस मजार की इमारतें ताज खां तरियानी का स्मारक हैं। जो महमूद का पुत्र सुल्तान मुजफ्फर का एक अमीर था।

नगर में प्रवेश करने का मूहूर्त सोमवार का था। इसलिए रविवार 24 तारीख को मैं मुकाम पर ही ठहरा। यहां पर कारिज से जो खैरात के इलाके में एक कस्बा हैं कुछ खरबूजे आये। यह निश्चित है कि खुरासान में कारिज के खरबूजों से बढ़िया खरबूजे कहीं नहीं होते। यद्यपि यह स्थान 1400 कोस दूर है। और काफिले यहां 5 महीनें में आये हैं, परन्तु खरबूजें

पके और ताजा आ पहुंचे। ये इतने थे कि सब सेवकों के लिये भी पर्याप्त थे। साथ ही बंगाल से नारंगियाँ आयीं। यद्यपि बंगाल 1000 कोस की दूरी पर है परन्तु नारंगियाँ ताजा थीं। यह फल बडा स्वादिष्ट और कोमल होता है। इसलिए निजी उपयोग के लिये डाक–चौकी वाले इसको हाथों हाथ लाते है। इसके लिए मैं ईश्वर का क्या धन्यवाद दूं मेरे पास शब्द नहीं है।

आज अमानत खां ने 2 हाथीदांत भेंट किये, इनमें से एक तीन हाथ और 8 अंगुल लम्बा और 16 अंगुल गोल था। इसका तोल 3 मन और 2 सेर हुआ। सोमवार 25 को 6 घडी दिन बीतने पर मैंने शुभ मुहूर्त में नगर की ओर चलना शुरू किया। मैं अपने सूरतगज हाथी पर सवार हुआ। इसकी सूरत और स्वभाव बहुत अच्छा है। यह मस्त तो हो रहा था परन्तु मुझे भरोसा था कि मैं उस पर भली प्रकार सवारी कर सकता हूं। नर–नारियों के समूह गलियों, बाजारों, दरवाजों और दीवारो पर मुझे देखने आये हुए थे। अहमदाबाद नगर के विषय में मैंने जैसा सुना था, वैसा यह नहीं है। बाजार चौडे हैं और मुख्य मार्ग भी ठीक हैं परन्तु दुकानें इस चौडाई के अनुसार नहीं है। इसकी इमारते लकडी की बनी हुई हैं। और दुकानों के स्तम्भ कमजोर हैं। बाजार की सडकें गर्द से भरी हुई थीं और कांकरियां तालाब से किले तक गर्दा था। इस किले को यहां की भाषा में भदर कहा जाता है। मैं जाते हुए रुपये बखेरता गया। भदर का अर्थ "शुभ" है। गुजरात के सुल्तानों की इमारतें जो इस भद्र के अन्दर थीं पिछले 50,60 वर्ष में नष्ट हो गई हैं। अब उनका चिन्ह भी नहीं है। फिर भी मेरी सरकार के सेवकों ने यहां इमारतें खडी कर दी हैं जब मै मांडू से अहमदाबाद जा रहा था तो मुकर्रब खां ने पुरानी इमारतों की मरम्मत कर दी थी और आवश्यकतानुसार बैठने–उठने के लिए दूसरी इमारतें तैयार कर दी थीं। जैसे झरोखा, दीवाने–आम आदि। आज मेरे पुत्र शाहजहां की तुला का शुभ दिन था तो प्रथानुसार मैंने उसको सोने और दूसरी वस्तुओं से तुलाया उसकी आयु का 27 वर्ष बडे आनन्द के साथ शुरू हुआ। उसी दिन सूबा गुजरात मैने उसको जागीर में दे दिया। मांडू से गुजरात 124 कोस है इसको पार करने में 28 मंजिलें की गईं और 30 स्थानों पर मुकाम किये। मैं खम्भात मे 10 दिन तक ठहरा। वहां से अहमदाबाद 21 कोस है। जो 5 मंजिलों में और दो स्थानों पर मुकाम करके तय किया। मांडू से खम्भात तक और खम्भात से अहमदाबाद तक मिलाकर 145 कोस का फासला है जो दो मास और 15 दिन में पार किया गया। इसमें 33 मंजिलें और 42 मुकाम किये गये।

मंगलवार 26 तारीख का मैं जामे मस्जिद देखने गया और मैंने अपने ही हाथ से फकीरों को 500 रुपये दिये। यह मस्जिद अहमदाबाद के संस्थापक

सुल्तान अहमद का एक स्मारक है। इसके तीन द्वार हैं और प्रत्येक द्वार के सामने बाजार है। पुर्वाभिमुख द्वार के सामने इस सुल्तान अहमद का मजार है इसी में सुल्तान अहमद, उसका पुत्र मोहम्मद और उसका पोता कुतुबुद्दीन दफनाये गये है। मस्जिद के चौक की लम्बाई 103 हाथ और चौडाई 89 हाथ है। इसके फर्श में कायदे से ईटें ली है और दरवाजे के स्तम्भ लाल पत्थर के हैं। चौक के अन्दर मकसूरा बना हुआ है, जिसमें 354 स्तम्भ हैं और उनके ऊपर मंडप है। मकसूरा की लम्बाई 75 हाथ और चौड़ाई 37 हाथ है। मकसूरा की फर्श और महराब संगमरमर की बनी हुई हैं। पेशताक के दोनों तरफ चिकने किये गये और कटे पत्थर की बनी हुई मीनारें हैं जिनमें 3 मजिल हैं। इमाम के बैठने की जगह के पास ही सुल्तान के बैठने की जगह अलग बनी हुई। स्तम्भों के बीच एक पत्थर का चबूतरा बना हुआ है और इसके चारों ओर ऊपर तक पत्थर की जालियां हैं, इन जालियों के पीछे उसकी महिलायें बैठा करती थी। यह मस्जिद बहुत ही अच्छी बनी हुई है। शुक्रवार को और ईद को सुल्तान दरबारियों के साथ नमाज गुजारने आता था। इसको 'मुलूक खाना' कहते है।

बुद्धवार तारीख 27 को मैं शेख वजीहुद्दीन की दरगाह मे गया और वहां मैंने फातिहा पढा। यह दरगाह मेरे पिता के एक बडे अमीर साद्दिक खां ने बनवाई थी। यह शेख मुहम्मद घोस का उत्तराधिकारी था। परन्तु इसके विषय मे विवाद खडा हो गया था। शेख मुहम्मद घोस वाजीहुद्दीन के प्रति बड़ा वफादार था। इससे उसकी महत्ता स्पष्ट सिद्ध होती है। शेख वाजीहुद्दीन आध्यामित्मकता के लिये प्रसिद्ध था। उसकी मृत्यु 30 वर्ष इसी नगर मे हुई थी। उसकी मृत्यु के बाद शेख असदउल्ला ने उसका स्थान लिया, उसकी भी मृत्यु जल्दी हो गई। उसके पश्चात उसका भाई शेख हैदर सजाद बना। वह अभी जीवित है और पिता और दादा की कब्रों की देख–रेख करता है। इसके लिलाट से जान पड़ता है कि वह धार्मिक पुरुष है। आज शेख वाजीहुद्दीन की वार्षिक तिथि थी। इसके खर्च के लिए मैंने शेख हैदर को 1500 रुपये और इतने ही रुपये वहां उपस्थित फकीरों के लिए दिये। शेख वाजीहुद्दीन के पोते को 500 रुपये दिये। उसके प्रत्येक रिश्तेदार को भी मैंने खर्च के लिए कुछ रुपये और जमीनें दीं। मैंने शेख हैदर को आदेश दिया कि वह मेरे सामने उन दरवेशों और योग्य पात्रों को प्रस्तुत करें जिनको वह जानता है। वृहस्पतिवार तारीख 28 को मैं रूस्तम खां बाडी देखने गया और रास्तें में 1500 रुपये उछाले। हिन्दुस्तान में बाग को बाड़ी कहते हैं। यह बाग मेरे भाई शाह मुराद ने अपने पुत्र रुस्तम के नाम पर बनाया था। मैंने इसी बाग में वृहस्पतिवार को आमोद–प्रमोद किया और अपने निजी सेवकों को शराब

दी। सायंकाल मैं शेख सिकन्दर की हवेली के बाग में गया जो इस (रुस्तम खां बाड़ी) के निकट स्थित है और जिसके फलों में एक विशेष आकर्षण होता है। मैंने कभी पहले अपने हाथ से अंजीर नहीं तोडे थे। इसलिए यह अंजीर मुझे बहुत अच्छे लगे। शेख सिकन्दर (मीरद–ए–सिकन्दरी को लेखक) गुजराती है उसमें समझ की कमी नहीं है। गुजरात के सुल्तानो के विषय में उसको पूरी जानकारी है। वह पिछले 8 या 9 वर्ष से सल्तनत की सेवा कर रहा है। मेरे पुत्र शाहजहां ने अहमदाबाद की सरकार का संचालन करने के लिए रुस्तम खां को नियुक्त किया था। इसलिए मेरे पुत्र शाहजहां की प्रार्थना पर और इसकी मुराद के पुत्र रुस्तम के साथ संगति के कारण मैंने रुस्तम बाड़ी इस रुस्तम खां को दे दी। आज ईडर का जमीनदार राजा कल्याण आया और उसने एक हाथी और 9 घोडे भेंट किये। मैने हाथी वापिस कर दिया। गुजरात की सीमा पर यह एक बडी जमीनदार है। इसका राज्य राणा के पर्वतीय देश के समीप है। गुजरात के सुल्तानों ने बार–बार इस राजा के विरूद्ध सेनायें भेजी थीं। कभी–कभी यहां के राजा सुल्तानों का आदेश मान लेते थे परन्तु उनसे मिलने नहीं गये। गुजरात की विजय के पश्चात बादशाह अकबर ने राजा पर सेना भेजी। राजा समझ गया कि अधीनता स्वीकार कर लेना ही श्रेयस्कर है। इसलिए वह दरबार मे उपस्थित हुआ और तभी से वह साम्राज्य की सेवा कर रहा है। जब भी अहमदाबाद में कोई नया सूबादार नियुक्त किया जाता है तो वह उससे मिलने आता है और आवश्कतानुसार अपने आदमियों की सेवा करता है। शनिवार तारीख 1 बहमन को जब मेरे शासन का 12 वां वर्ष था तो चन्द्रसेन जो इस देश का एक मुख्य जमीनदार है मेरे पास हाजिर हुआ और उसने 9 हाथी भेंट किये। रविवार तारीख 2 को मैंने राजा कल्याण सईद मुस्तफा और फाजिल को एक हाथी दिया। सोमवार को मैं पक्षियों की शिकार में गकया और मार्ग मे लगभग 500 रुपये उछाले। इसी दिन बदंखशां से नासपातियां आई। मुबारक शम्बा तारीख 6 को शेर खेज नामक बांव के फतह लोग को मैं देखने गया और माग में 1500 रुपये बखेरे। मार्ग में शेख अहमद खटू को कब्र है इसलिए पहले वहां जाकर मैंने फातिहा पडा। खटू सरकार नागौर के एक कस्बे का नाम है। जो इस शेख का जन्म–स्थान है। यह शेख अहमदाबाद के संस्थापक सुल्तान अहमद के समय में था और सुल्तान उसका बड़ा आदर करता था। यहां के लोगों का इस शेख में विचित्र विश्वास है। प्रति शुक्रवार को छोटे और बड़े कितने ही आदमी उसकी कब्र पर जाते हैं। इस कब्र के आसपास उपरोक्त सुल्तान के पुत्र सुल्तान अहमद ने मजार, मस्जिदें और दरगाहों के रुप में कई इमारतें बनवाई और दक्षिण की ओर एक बडा

तालाब बनाकर उसकी पक्की पाल बनवाई। यह इमारत उपरोक्त मुहम्मद के पुत्र कुतुबुद्दीन के समय में पूरी हुई थी। गुजरात के कई सुल्तानों की कबरें इस शेख के कदमों की ओर पाल पर बनी हुई हैं। यही सुल्तान महमूद बगेड़ा, सुल्तान मुजफ्फर और महमूद जो गुजरात का अन्तिम सुल्तान था दफनाये गये थे ओर यही उनके मजार बने हुए है। गुजराती भाषा में बेगडा का अर्थ है "चढ़ी हुई मूंछों वाला" है। सुल्तान महमूद अपनी मूंछे चढ़ी हुई रखता था। इसलिए वह बेगढा कहलाता था। शेख खटू की कब्र के पास उसकी महिलाओं का मंडप बना हुआ है कि इसके निर्माण में 5 लाख रुपये खर्च हुए होंगे परन्तु सत्य तो ईश्वर ही जानता है। यहां से मैं फतह बाग गया। इसी स्थान पर प्रधान सेनापति अतालिक ने युद्ध करके जगू को हराया था। जिसने गुजरात के लोग इसको फतह बाडी कहते है। इसका विवरण इस प्रकार है। बादशाह अकबर के सौभाग्य से जब गुजरात पर विजय प्राप्त हो गई, नभू हाथ में आ गया तो इतिमाद खां ने निवेदन किया कि नभू एक गाड़ीवाहन का पुत्र है। सुल्तान महमूद के कोई पुत्र नहीं था और गुजरात के सुल्तानों के वंश में कोई नहीं था। जिसको गद्दी पर बिठाया जाए। इसलिए इतिमादखां ने इसी को महमूद का पुत्र मान लिया था और इसका नाम मुजफ्फर रखकर शासक घोषित कर दिया था। आवश्यकता वंश लोगों ने यह स्वीकार कर लिया। बादशाह को इतिमाद खां के शब्दों में सार मालूम हुआ तो उसने नभू की उपेक्षा की, नभू सेवकों में काम करता रहा और बादशाह ने उसकी और कोई ध्यान नहीं दिया इसके परिणामस्वरूप यह फतहपुर से भागकर गुजरात चला गया और वहां जमीनदारों के आश्रय में उसने कुछ वर्ष काटे। फिर शिहाबुद्दीन अहमद खां को गुजरात के शासन से पृथक कर दिया गया और इतिमादखां को उसके स्थान पर बिठा दिया। कुछ लोगों जो शिहाबुद्दीन खां के सेवक थे, उसमें अलग होकर अहमदाबाद में ही रह गये। उनको इमिमाद खां के यहां सेवा का मौका मिलने की आशा थी जब इतिमाद खां ने नगर में प्रवेश किया तो ये लोग उसके पास आये परन्तु उनकी इच्छा पूरी नही हुई। अब ये लोग शिहाबुद्दीन के पास किस मुंह से जाते। अहमदाबाद में उनका भविष्य कुछ नहीं था। अब उनको कोई आशा दिखाई नहीं दी तो वह नभू से जा मिले। ये लोग 600 या 700 घुडसवार थे। इनको साथ लेकर नभू ने अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया। फिर और लोग भी उससे आ मिले इनमें गुजराती और मुगल दोनों थे। इस प्रकार 1000 सवार एकत्र हो गये। जब इतिमाद खां को इसका पता चला तो अपने पुत्र शेर खां को नगर में छोडकर वह शीघ्रता से शिहाबुद्दीन खां की तलाश में निकला। इतिमाद खा उसकी सहायता से इस उपद्रव को

शान्त करना चाहता था। इस समय शिहाबुद्दीन खां दरबार की ओर जा रहा था। बहुत से लोग उसको छोड़ गये थे और जो साथ रह गये थे उनके चेहरों से भी वफादारी प्रकट नहीं होती थी। परन्तु शिहाबुद्दीन इतिमाद खां के साथ वापिस आया तो उसने देखा कि नभू अहमदाबाद में घुस गया है। तब दोनों दलों में युद्ध हुआ। शिहाबुद्दीन खां के कुछ आदमी विद्रोही से जा मिले तो शिहाबुद्दीन हार कर पाटन की ओर भागा, जहां सेवकों का अधिकार था। उसके साथियों को और उसके डेरों को पकड़ लिया और लूट लिया। अब नभू मनसब और उपाधियों से विद्रोहियों को पुरुस्कृत करके कुतुबुद्दीन खां के विरूद्ध चढ़ चला तो उस समय बड़ौदा में था। शिहाबुद्दीन खां के सेवकों की भांति कुतुबुद्दीन खां के सेवक भी स्वामी–द्रोही निकले और उसको छोड़ गये। इसका पूरा वर्णन अकबरनामा में दिया हुआ है। अन्त में कुतुबुद्दीन मुहम्मद को वचन देकर नभू ने उसको सईद कर दिया और उसकी सब सम्पत्ति लूट ली। अब नभू के पास 45000 सवार एकत्रित हो गये।

जब इस स्थिति से बादशाह अकबर को अवगत किया गया तो उसने बहराम खां के पुत्र मिर्जाखां को एक सेना के साथ नभू के विरूद्ध रवाना किया। जब मिर्जाखां नगर के निकट पहुंचा तो उसने अपनी सेना की गणना की, उसके 8–9 हजार सवार थे। नभू के पास 30 हजार सेना थी। लम्बी लड़ाई और मारकाट के बाद शाही सेना को विजय प्राप्त हुई और नभू हार कर बुरी हालत में भाग गया। इस विजय के पुरुस्कार स्वरूप मेरे पिता ने मिर्जा खान को 5 हजार का मनसब खानखाना की उपाधि और गुजरात की सूबादारी दी। इस रणभूमि पर खानखाना ने बाग लगवाया जो साबरमती नदी के तट पर स्थित है। नदी पर उसने विशाल इमारतें बनवाई और बाग के आस–पास पत्थरों की पक्की दीवार खडी की। इस बाग में 120 जरीब भूमि है और यह बडा आनन्दप्रद स्थान है। इसके निर्माण में 2 लाख रुपए लगे होंगे। मुझे यह बहुत पसन्द आया। यह कहा जा सकता है कि गुजरात में इस जैसा दूसरा बाग नहीं है। बृहस्पतिवार के भोज की व्यवस्था करके मैंने अपने निजी सेवकों को मद्यपान करवाया और मैं रातभर वहीं ठहरा। सायंकाल शुक्रवार को मैंने नगर में प्रवेश किया और मार्ग में एक हजार रुपए लुटाए। इस समय माली ने निवेदन किया कि मुकर्रबखां के नौकर ने नदी तट के कुछ चम्पा के वृक्ष काट डाले है। इससे मुझे क्रोध आया और मैं स्वयं ही पूछताछ करने के लिए गया। जब यह निश्चित पता लग गया कि उसने ही वृक्षों को काटा है तो दूसरों को सचेत करने के लिए मैंने आदेश दिया कि उसके दोनों अंगूठे काट डाले जावें। यह तो स्पष्ट ही था कि इस मामले के विषय में मुकर्रबखां कुछ नहीं जानता था अन्यथा वह उसको वहीं

दण्ड देता। मंगलवार ता. 11 को शहर कोतवाल एक चोर को पकडकर लाया, उसने कई चोरियां की थीं और प्रति बार उसका कोई न कोई अंग काट डाला गया था। एक बार उसका दाहिना हाथ, दूसरी बार उसके बायें हाथ का अगूंठा, तीसरी बार उसका दाहिना कान और फिर उसकी नाक काटी गयी थी, इस पर भी उसने अपना धन्धा नहीं छोडा और कल वह एक घासकटे के घर में चोरी करने घुसा, संयोग से मकान का मालिक सचेत था इसलिए चोर का पकड़ लिया गया। चोर ने घसकटे को चाकू से कई बार आहत करके मार डाला। इस शोर और गड़बड में उसके रिश्तेदारों ने चोर को पकड़ लिया। मैंने आदेश दिया कि चोर को मृतक के रिश्तेदारों के सुपुर्द कर दिया जाए और वे उससे बदला ले लें। बुधवार ता. 12 को अजमत खां और मुताकदखां को तीन हजार रुपए दिए और उन्हें आदेश दिया कि अगले दिन वे शेख अहमदखां की कब्र पर जाकर फकीरों और गरीबों को बांट दें। बृहस्पतिवार ता. 13 को मैं अपने पुत्र शाहजहां के निवास पर गया और मुबारक शम्बा का आमोद—प्रमोद किया और अपने निजी सेवकों को शराब दी। मैंने अपने पुत्र को "सुन्दर" नामक हाथी दिया जो गति और सुन्दरता में सबसे बढकर था वह घोडों से मुकाबिला करता था और हाथियों में उसकी प्रथम गणना थी। बादशाह अकबर को यह बहुत पसन्द था। मेरे पुत्र शाहजहां को भी यह अच्छा लगता था और वह प्रायः उसको मुझसे मांगा करता था। जब मैंने देखा कि अब कोई मार्ग नहीं है तो वह हाथी सोने की जंजीरों के साथ और एक हथिनी के साथ शाहजादे का दे दिया। आदिलखां के वकीलों को 50 हजार रुपए दिए। इसी समय मुझे सूचित किया गया के मुअज्जूखां के पुत्र मुहर्रमखां ने जो उडीसा का सूबादार था, खुरदा प्रदेश को जीत लिया है और वहां का राजा स्थान छोडकर राजमहेन्द्र में भाग गया है। मुहर्रम खां खानजादा था और समपोषण का पात्र था इसलिए मैंने आदेश दिया कि उसका मनसब बढाकर 3 हजार जात और दो हजार सवार कर दिया जाए और उसको नक्कारा और एक घोडा ओर एक खिलअत देकर सम्मनित किया जाए। उडीसा और गोलकुण्डा के बीच में जमीनदार थे एक खुर्दा का ओर दूसरा राजमहेन्द्र का। खुर्दा प्रदेश तो दरबार के सेवकों के अधिकार में आ ही गया अब राजमहेन्द्र की बारी है। मुझे आशा है कि ईश्वर की दया से मेरे कदम आगे बढ़ते जायेगे। इस समय कुतुबुलमुल्क का एक प्रार्थना पत्र मेरे पुत्र शाहजहां के पास आया कि उसके राज्य की सीमा शाही राज्य की सीमा तक आ पहुंची है इसलिए उसको दरबार की सेवा करनी चाहिए। उसे आशा है कि मुकर्रमखां को आदेश दिया जाएगा कि वह हाथ फैलाकर उस राज्य पर अधिकार न जमावे।

यह मुकर्रम की वीरता और शक्ति का प्रमाण था कि कुतुबुलमुल्क जैसा सुल्तान डरता था कि मुकर्रमखां उसके पड़ोस में जा पहुंचा है।

आज इस्लाम खां का पुत्र इकरामखां फतेहपुर का और आसपास का फौजदार नियुक्त हुआ और उसे एक खिलअत और हाथी प्राप्त हुआ। हलौज के जमीनदार चन्द्रसेन को एक खिलअत, एक घोड़ा और एक हाथी दिया गया। लाचीन काकशाल को एक हाथी मिला। मिर्जा बाकीतरखान का पुत्र मुजफ्फर चरण चुम्बन करने आया, उसकी माता कच्छ के जमीनदार बारह की पुत्री थी, जब मिर्जा बाकी की मृत्यु हो गई और ठट्टा का शासन मिर्जा जानी को मिला तो मुजफ्फर मिर्जा जानी से भयभीत होकर उक्त जमीनदार की शरण में चला गया। वह बचपन से ही इसी मुल्क में रहता था, अब शाही सेना अहमदाबाद पहुंची तो वह अधीनता प्रकट करने आया। यद्यपि जंगल के लोगों में वह बड़ा हुआ था और सभ्यता का ढंग नहीं जानता था तथापि उसके कुटुम्ब का हमारे राजवंश से तीमूर के समय से सम्बन्ध था इसीलिए मैंने समझा कि उसका समपोषण किया जाए। अभी तो मैंने खर्च के लिए उसको दो हजार रुपए और खिलअत दी फिर उसको उपयुक्त पद दिया जाएगा और वह अच्छा सैनिक सिद्ध होगा।

सोमवार ता. 1 इसफन्दार मुज को मैं अहमदाबाद से मालवे की ओर रवाना हुआ। कांकरिया तालाब को पहुंच गया अब मैं मार्ग में रुपए लुटाता गया। इस तालाब पर मैं तीन दिन ठहरा। बृहस्पतिवार ता. 4 को मुकर्रमखां की भेंटें मेरे सामने रखी गई। मैंने एक लाख के मूल्य के पात्र और वस्त्र स्वीकार किए। शुक्रबार ता. 5 को मैं 6 कोस चलकर अहमदाबाद नदी के तट पर ठहरा। मेरा पुत्र शाहजहां अपने एक मुख्य सेवक रुस्तमखां को गुजरात का शासन सुपुर्द कर रहा था।.मैंने उसकी प्रार्थना पर उसे एक निशान, एक नक्कारा, एक खिलअत और अलंकृत खंजर दिया। अब तक इस राजवंश में यह प्रथा रही है कि शाहजादों के सेवकों को निशान या नक्कारे नहीं दिए जाते। बादशाह अकबर का मुझ पर बड़ा स्नेह था उसको खुश करने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूं, वह सब गुणों से अलंकृत है और उसने अपनी युवावस्था में ऐसे काम किए हैं जिससे मुझे संतोष हुआ है। आज मुकर्रमखां ने अपने घर जाने की इजाजत ली।

शाह आलम के पिता कुतुब का मकबरा मेरे मार्ग में बताये नामक गांव में था, इसलिए मैंने वहां जाकर उसके संरक्षकों को 500 रुपए दिए। शनिवार तारीख 6 को नाव में बैठकर मैं महमूदाबाद की नदी पर मछलियां मारने गया। इसके तट पर सईद मुबारक बुखारी की कब्र है। वह गुजरात का एक

अग्रणीय कर्मचारी था। उसके पुत्र सईद मीरान ने यह मजार स्मारक के रूप मे बनवाया था।

इसका मण्डप बहुत बडा है और आसपास पत्थर की दृढ दीवारे है इसके निर्माण मे 2 लाख रुपए खर्च हुए होगे। मैने गुजरात के सुल्तानो की जो कब्रे देखी हैं उनमे से कोई भी इस मजार के दशमाश तक भी नहीं पहुचती वे तो सुल्तान थे और सईद मीरान एक सेवक मात्र था। उसकी प्रतिभा और ईश्वर की सहायता से यह निर्माण हुआ है। मैं ऐसे पुत्र को हजारो आशीर्वाद देता हू जिसने अपने पिता की ऐसी अच्छी कब्र बनवाई।

तारीख 9 मगल वार को जरसीमा गाव मे खबर आयी कि मानसिह सेवडा की मृत्यु हो गई है। इसका सक्षिप्त वृतान्त यह है– सेवडा लोग हिन्दुओ की एक जाति है जो नगे सिर और नगे पाव रहते है, इनमे कुछ लोग अपने बाल उखडवा देते है। कुछ लोग दाढी और मूछे भी निकलवा देते हैं। अन्य लोग हजामत करवाते है। ये लोग सिले हुए कपडे नहीं पहनते। इनका मुख्य सिद्धान्त यह है कि किसी प्राणी को पीडा नहीं देनी चाहिए। बनिये लोग इनको अपने पीर या गुरु मानकर पूजते हैं। सेवडो के दो सम्प्रदाय हैं पटा या टपा और दूसरा कन्थल। मानसिह कन्थल सम्प्रदाय का मुखिया के पास आया करते थे जब अकबर की मृत्यु हो गई और खूसरो भागा और मैंने उसका पीछा किया तो बीकानेर के जमीनदार रायसिह गुरतियो ने जिसको अकबर ने कृपा करके अमीर बना दिया था मानसिह से पूछा कि मैं कितने समय तक राज्य करूगा और मेरी सफलता का क्या मौका है? यह पुरुष काली जीभ वाला था। और फलित ज्योतिष के ज्ञान का दम भरता था। उसने उत्तर दिया कि अधिक से अधिक मै दस वर्ष राज्य करूगा। रायसिह वृद्ध और मूर्ख था उसने मानसिह की बात का विश्वास किया और रुखसत लिये बिना ही वह अपने घर चला गया। फिर ईश्वर ने मुझ पर दया की और मैं विजयी होकर राजधानी मे लौट आया। अन्त मे क्या हुआ उसका यथास्थान उल्लेख किया जा चुका है। अन्त मे 3–4 मास मे मानसिह को कुष्ठ रोग हो गया और उसके अग खडकर गिरने लगे और उसकी ऐसी बुरी दशा हो गई कि जीवन से मृत्यु कही अच्छी थी। वह बीकानेर मे रहता था अब मुझे उसका स्मरण आया तो मैने उसको बुलाया। मार्ग मे ही भयभीत होकर उसने विष खाकर मृत्यु बुला ली। जब तक इस दास पर ईश्वर की कृपा है और वह न्याय करता है तब मेरे विरूद्ध जो भी दुष्ट भावना रखेगे उनको अपने कर्मानुसार फल मिलेगा। सेवडा सम्प्रदाय हिन्दुस्तान के अधिकाश नगरों मे है, परन्तु यह विशेषकर गुजरात मे हैं। वहा बनिये मुख्य व्यापारी हैं, इसलिए सेवडे भी बहुत हैं। मन्दिरो के अतिरिक्त बनिये इनके लिये निवास

भी बनाते है ओर इनकी पूजा करते है। वास्तव मे इनके मकान राजद्रोह के अडडे हैं। बनिये लोग सेवडो के पास अपनी स्त्रियो और पुत्रियो को भेजते हैं। सेवडो मे कोई लज्जा या सकोच नही है। ये लोग सब प्रकार के झगडे–बखेडे किया करते है। इसलिए मैने आदेश दिया कि सेवडो को निकाल दिया जावे। मैंने फरमान भेजे कि मेरे साम्राज्य मे जहा भी सेवडे मिले उन्हे बाहर निकला दिया जावे।

बृहस्पतिवार तारीख 11 को मैने तालाब के किनारे एक मद्यगोष्ठी की ओर जिन सेवको को गुजरात मे नियुक्त किया था उन पर बहुत कृपाये की। सुजाअत खा अरब को 2500 जात और 2000 सवार का मनसब एक नक्कारा एक घोडा और एक खिलअत दी। हिम्मत खा को 1500 जात और 800 सवार का मनसब एक खिलअत और एक हाथी दिया। किफायती खा को जो इस प्रान्त का दीवान नियुक्त किया गया था। उसको 1200 जात और 300 सवार का मनसब दिया गया। ख्वाजा आकिल खा को 1500 जात और 650 सवार का मनसब देकर आकिल खा की उपाधि दी गई और अहदियो का बख्शी बनाया गया। कुतुबुलमुल्क का वकील खिराज लेकर आया उसको 30 हजार दरब (15 हजार रुपये) दिये गये।

मैने अहमदाबाद शाही निशानो से अलकृत किया तब से मै रात–दिन गरीबो से मिलने मे ओर उनको द्रव्य और भूमि देने मे लगा रहता था। मैंने शेख अहमद सदर और दूसरे चतुर सेवको से कहा कि वे गरीबो और दरवेशो को मेरे सामने प्रस्तुत करे। मैने ऐसा ही आदेश शेख बजीहुद्दीन के पोते शेख घोस को दिया। मैंने हरमखाने की कुछ स्त्रियो को भी यही आदेश दिया। मैंने एक मात्र प्रयास इस बात का किया कि मै बादशाह हू ओर इस मुल्क मे कितने ही वर्षो बाद आया हू इसलिए कोई व्यक्ति मेरी कृपा से वचित न रहे। ईश्वर इस बात का साक्षी है कि मैने इस काम मे कोई कमी नहीं रखी। अहमदाबाद आने मे मै प्रसन्न नही हुआ परन्तु इस बात का मुझे सन्तोष हुआ कि मेरे आगमन से बहुत से गरीब लोगो को लाभ पहुचा।

मगलवार तारीख 16 को कमरखा के पुत्र कोकब को पकड लिया गया वह बुरहानपुर मे फकीर का वेष पहनकर जगलो मे चला गया था उसका सक्षिप्त वृतात यह है.–

वह मीर अब्दुल लतीफ का पोता था जो एक सैफी सईद था और इस दरबार से सम्बन्धित था। कोकब को दक्षिण की सेना मे नियुक्त किया गया था और उसने कुछ दिन निर्धनता औद दुर्दशा मे व्यतीत किये थे। उसकी लम्बे अर्से तक कोई पदोन्नति नही हुई। इसलिए उसको सन्देह हुआ कि

मेरी उस पर कृपा नही है। वह मूर्खतावश फकीर का वेष धारण करके जगल मे चला गया। छ मास मे उसने दौलताबाद, वीदर बीजापुर करनाट और गोलकुण्डा आदि दक्षिण के सारे स्थान देख लिये और फिर वह दाबूल बन्दरगाह मे आया। वहा से जहाज द्वारा वह गोगाबन्दर आया और फिर सूरत, भडौच आदि होता हुआ अहमदाबाद पहुचा। वहा शाहजहा के सेवक जाहिद ने पकड कर उसको दरबार मे पेश किया। मैने आदेश दिया उसको खूब बेडिया और हथकडिया डालकर मेरे सामने लाया जावे। उसको देखा तो मैने, कहा "तुम्हारे पिता और बाबा की सेवाओ को न देखकर और तुम खानजादा हो इस बात को न सोचकर तुमने ऐसा अशुभ व्यवहार क्यो किया।" उसने उत्तर दिया कि "वह अपने किबला और वास्तविक गुरु के समक्ष झूठ नही बोल सकता। सत्य यह है कि उसको कृपाओ की आशा थी जो पूरी नहीं हुई इसलिए उसने वाह्य बन्धन छोडकर जगल की राह ली।" उसके शब्दो से सत्य प्रकट हो रहा था, मै प्रभावित हुआ, मैने कठोरता छोडकर उससे पूछा कि विपत्ति के दिनो मे क्या वह आदिल खा व कुतुबुलमुल्क का अम्बर के पास कभी गया था। उसने उत्तर दिया कि यद्यपि इस दरबार मे उसको सफलता नही हुई तो भी उसने किसी अन्य दरबार मे जाकर कोई प्रार्थना नहीं की। यदि उसने किसी दूसरे दरबार मे सिर झुकाया हो तो उसका सिर काट दिया जावे। यह देश छोडकर गया तब से उसने एक–एक दिन का विवरण लिखा है। इसके अवलोकन से प्रकट होगा कि उसने क्या किया। इन शब्दो को सुन्नकर मुझे उस पर दया आई और उसके कागजो को मगवाकर पढा। उनके अवलोकन से विदित हुआ कि उसने अनेक विपत्तियो का सामना किया है। पैदल चला है और भूखा रहा हैं। इसलिए मुझे इस पर बडी दया आई अगले दिन मैने उसको बुलाया और उसकी बेडिया और हथकडिया कटवाकर एक खिलअत, एक घोडा और एक हजार रुपए खर्च के लिए दिए, मैने उसके साथ ऐसी कृपा की जैसी उसको कल्पना भी नही थी।

बुधवार ता 17 को छ कोस चलकर मे बारसीतोल नामक ग्राम मे ठहरा हुआ था तो वाकियानवीस की रिपोर्ट आई कि कश्मीर मे प्लेग फैल गया है और बहुत से लोग मर गए है। इस रोग के लक्षण यह है कि पहिले दिन मस्तक पीडा और ज्वर होता है और नाक से रक्त बहुत बहता है। दूसरे दिन रोगी मर जाता है। जिस घर मे एक व्यक्ति की मृत्यु होती है वहा सब घर वाले मर जाते है। यही हाल रोगी या मृतक के पास जाने वाले को होता है। एक शव घास पर पडा हुआ था। उस घास को खानेवाली गाय मर गई और मृतक का मास खाने वाले सब कुत्ते मर गए, अत मृत्यु भय से

पिता बच्चों के पास और बच्चे पिताओ के पास नहीं जाते हैं। इस रोग से ग्रस्त एक मुहल्ले मे आग लग जाने से तीन हजार मकान जल गए, जब प्लेग का सर्वाधिक जोर था तो एक दिन प्रातःकाल उठकर लोगो ने देखा कि प्रत्येक मकान के दरवाजों पर तीन वृत्त बने हुए हैं। बडे वृत्त के अन्दर छोटा वृत्त और उसके अन्दर एक और छोआ वृत्त था। ये वृत्त मस्जिदो के दरवाजों पर भी बने हुए थे। उसी दिन से प्लेग कम हो गया। मेरा तर्क और बुद्धि इसको स्वीकार नहीं करती। सच्चाई तो ईश्वर ही जानता है। यह विचित्र बात है इसलिए मैंने लिख दी है। मुझे विश्वास है कि ईश्वर अपने दासो पर दया करेगा।

बृहस्पतिवार ता. 18 को मै माही नदी के तट पर ठहरा हुआ था तो जाम जमीनदार ने हाजिर होकर 50 घोडे, 100 मोहरे और 100 रुपए मेरी भेट किए। इसका नाम जस्सा है और जाम इसकी परम्परागत उपाधि है। यह गुजरात का ही नहीं हिन्दुस्तान का प्रसिद्ध राजा है। इसका देश समुद्र के समीप है। यह 5–6 हजार घोडे रखता है और युद्ध के समय 10–12 हजार घोडे ला सकता है। मैंने इसे एक खिलअत दी। कच्छ मे घोडे बहुत है। यहां के घोडे का मूल्य 2 हजार रुपए तक होता है।

उसी दिन कूच बिहार के राजा लक्ष्मीनारायण ने 500 मोहरे भेंट की तो उसे एक खिलअत और एक जडाऊ खंजर दिया गया। उस दिन शुक्रवार ता 19 को मै वही ठहरा और शनिवार ता. 20 को मैं झनूद के तालाब पर ठहरा और शनिवार बदरवाला तालाब पर ठहरा। इस दिन खबर आई कि अजमतखा गुजराती की मृत्यु हो गई। वह बीमारी के कारण अहमदाबाद रह गया था। वह अच्छा काम करने वाला सेवक था। उसको गुजरात और दक्षिण का अच्छा ज्ञान था अतः उसकी मृत्यु से मुझे दुख हुआ।

मगलवार 23 तारीख को मै बायब नदी के तट पर और बुधवार को हमदा तालाब के किनारे पर ठहरा। बृहस्पतिवार को ठहर कर मैने अपने विशिष्ट सेवको को शराब दी। नवाजिशखा को तीन हजार जात और दो हजार का मनसब, एक खिलअत और एक हाथी देकर अपनी जागीर पर जाने की आज्ञा दे दी। मोहम्मद हुसैन सबजक, जिसको घोडे खरीदने के लिए बलख भेजा गया था, आज दरबार में हाजिर हुआ उसके खरीदे हुए घोडो मे एक का आकार और रग बहुत बढिया था। इसलिए मैंने उसको तिजारती खा की उपाधि दी।

शुक्रवार ता. 26 को जब मै जालौद गावं में ठहरा था तो कूच के राजा का चाचा लक्ष्मीनारायण आया जिसको मैंने कूच का आदेश देकर यह घोडा दिया। रविवार को मैं दोहद पहुंच गया।

तुजुक-ए-जहाँगीरी

द्वितीय भाग

राज्यारोहण के तेरहवें वर्ष से अन्त तक

अर्थात्

(1618 से अन्त तक)

तेरहवें नये साल का उत्सव

बुधवार तारीख 23 रवि उल अव्वल 1027 (10 मार्च 1618) को साढ़े 14 घड़ी व्यतीत होने पर सूर्य ने जो विश्व का उपकारक है मेष राशि में प्रवेश किया। मुझे शाही तख्त पर बैठे हुए 12 साल हो चुके थे। अब नया वर्ष आनन्द पूर्वक और ईश्वर को धन्यवाद देते हुए शुरू हुआ। बृहस्पतिवार 2 फर्वरदीन मेरी चान्द्र तुला हुई। मेरी आयु का 51 वां वर्ष हर्ष के साथ शुरू हुआ। मुझे विश्वास है कि मेरा जीवन ईश्वर की आज्ञा पालन करते हुए व्यतीत होगा और उसका स्मरण किए बिना मैं एक सांस भी नहीं लूंगा। जब तुला हो चुकी तो पुनः आनन्दोत्सव मनाया गया और मेरे गुरु सेवकों ने खूब प्याले भर भर कर यह दिन मनाया।

इस दिन आसफ खां (नूरजहां का भाई) को 4000 सवार 2 अस्पा–से–अस्पा दिये गये। यह पंज हजारी मनसबदार था। साबितखां को अर्ज मुकर्रिर के पद पर नियुक्त किया गया। मैंने तोपखाना के अफसर का पद मुतामिद खां को दिया। दिलावर खां का पुत्र एक अच्छी घोडा लाया। मैं गुजरात में आया उससे पहिले ऐसा अच्छा घोड़ा मेरे तबेले में नहीं आया था। मोहम्मद रुस्तम को यह बहुत पसन्द आया इसलिए यह मैंने उसको दे दिया। जाम को 4 अंगूठियां दी गई, एक हीरे की, दूसरी लाल की, तीसरी पन्ने की, चौथी नीलम की। मैंने राजा लक्ष्मीनारायण कूच बिहार को भी 4 अंगूठियां दीं एक लाल की, एक पन्ने की और एक नीलम की तथा एक अन्य। मुरुवत खां ने बंगाल से 3 हाथी भेजे थे। इनमें से 2 मेरे निजी तबेले में रख लिये गये। शुक्रवार को मैंने तालाब के आसपास रोशनी करवाई जो बहुत अच्छी मालूम हुई। रविवार को हाजि रफीक ने ईराक से आकर चौखट–चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया और मेरे भाई शाह अब्बास का पत्र मेरे सम्मुख प्रस्तुत किया। यह व्यक्ति मीर मोहम्मद जमीन खां का दास था। हाजि रफीक तिपचाक (लम्बी गर्दनं वाले) घोड़े और उम्दा कपड़े लाया। यह बड़ा चतुर और कृपापात्र दास है। सोमवार को राजा लक्ष्मीनारायण को एक खास तलवार, एक जड़ाऊ भाला और कानों की बालियों के 4 मोती दिये। मुबारक शम्बा (बृहस्पतिवार) को मिर्जा रुस्तम के मनसब में 500 सवार बढ़ाये गये। इतिकाद खां का मनसब बढ़ाकर 4000 जात और 1000 सवार कर दिया। सरफराज खां का मनसब 2500 जात और 1400 सवार

कर दिया। मुतामिद खा को 1000 जात और 350 सवार का मनसबदार बना दिया। अणिरायसिह दलन और फिदाय खा को एक–एक सौ मोहर के घोडे बख्शे गये। इतिमादुद्दौला पजाब का सूबेदार था। उसकी प्रार्थना पर कैदियो के बख्शी मीर कासिम को उसी के सूबे मे भेज दिया गया और 1000 जात और 400 सवार का मनसब दिया तथा कासिम खा की उपाधि दी। इससे पहले राजा लक्ष्मीनारायण को मैंने एक ईराकी घोड़ा दिया था। उसको मैंने एक हाथी, एक तुर्की घोडा और एक खिलअत देकर अपने देश को विदा किया। आसफ खा के भाई के पुत्र सालीह को 1000 जात और 300 सवारो का मनसबदार बनाकर बगाल भेज दिया। इसी तारीख को ईरान से मीर जुमला आया। यह इस्फाहान का एक प्रतिष्ठित सईद है अब इसके भाई का पुत्र मीर रिजा मेरे भाई शाह अब्बास की सेवा करता है और शाह ने इसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया है। यह सदर के पद पर है। 14 वर्ष पूर्व ईरान को छोडकर मीर जुमला गोलकुण्डा मे मोहम्मद कुली कुतुबुलमुल्क के पास चला गया था। इसका नाम मोहम्मद अमीन है। कुतुबुलमुल्क ने इसको मीर जुमला की उपाधि दी थी। 10 वर्ष तक यह कुतुबुलमुल्क का मुदार अलेही तथा साहिब सामान था। कुतुबुलमुल्क की मृत्यु के बाद उसके भाई का पुत्र सुल्तान बना उसने मीर का साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया इसलिए यह इजाजत मागकर इस देश मे आ गया। शाह का मीर रिजा से सम्बन्ध था। वह गुणवान पुरुषो का आदर करता था। इसलिए उसने बडा अनुग्रह किया। मीर ने भी शाह को उपयुक्त भेटे दी। और 3–4 वर्ष ईरान मे व्यतीत किये और सम्पत्ति बना ली। उसने बार बार निवेदन किया कि वह इस दरबार मे आना चाहता है तो मैने फरमान भेजकर उसको बुला लिया। फरमान पहुचते ही वह वहा का सम्बन्ध छोडकर दरबार मे आ गया और आज फर्श–चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त करके उसने 12 घोडे रेशमी कपडे और दो अगूठियाँ भेट कीं। वह सच्चाई और वफादारी के विचार से आया था। इसलिए मैने उसको खर्च के लिए 10,000 रुपए दिये और खिलअत दी। इसी दिन इनायत खा को अहदियो का बख्शी बनाया ओर इसी दिन ख्वाजा आकिल को सम्मानित किया। दिलावर खा ने दक्खिन से आकर 100 मोहरे और 1000 रूपये भेट किये। शनिवार तारीख 11 को दोहद से हाथियो का शिकार करने के विचार से मैने रवाना होकर घरबारा मे मुकाम किया। रविवार तारीख 12 को सजारा मे मुकाम हुआ। सोमवार तारीख 13 को मैं हाथियों का शिकार करने गया। मार्ग बडा दुर्गम था। मै कमरगाह बनावाना चाहता था। लोगो ने उसी ढग से जगल को घेर कर मेरे लिए एक लकडी का चबूतरा बना दिया था। इसके सब ओर अमीरों के लिए

वृक्षो पर मचान बनाये गये थे। 200 नर हाथियो को बडे दृढ फन्दो के साथ और अनेक हथनियो को तैयार कर लिया था। प्रत्येक हाथी पर जरगा जाति के दो महावत बिठा दिये थे, इनका काम हाथियो का शिकार करवाना ही था। व्यवस्था यह की गई थी कि वह जगल से जगली हाथियो को मेरे सामने लावे और मै शिकार देखू। सब ओर से आदमियो ने घने जगल मे प्रवेश किया। भूमि बडी ऊची और नीची थी इसलिए पक्ति भग हो गई और कमारगाह टिक नही सका। जगली हाथी सब दिशाओ मे भाग गये, परन्तु 12 हाथी और हथनियो मेरी ओर आये। उनके भाग जाने का डर था इसलिए पालतू हाथियो को लाया गया और जगली हाथियो को बाध दिया गया। 2 अच्छे सुन्दर हाथी पकडे गये। पास ही एक पहाड है जिसको लोग राक्शस पहाड कहते है। इसलिए मैने इन दोनो हाथियो के नाम रावनसर और पीवनसर रख दिये। 14 तारीख को भी मै वही ठहरा।

बृहस्पतिवार तारीख 16 को चलकर मै करबारा ठहरा। हाकिम बेग को पजाब के एक जमीदार सग्राम को 3 हजार रुपये दिये। गर्मी के कारण दिन मे प्रयाण नही किया और रात्रि मे किया। शनिवार 18 तारीख को दोहद परगने मे मुकाम हुआ। रविवार 19 तारीख को सूर्य मीन राशि के उच्चतम बिन्दु पर पहुच गया। इस दिन बडे आमोद–प्रमोद के साथ मै तख्त पर बेठा। शाहनवाज खा 5 हजार का मनसबदार था, उसके 2 हजार सवार बढा दिये गये। ख्वाजा अबुल हसन बख्शी खास का मनसब बढाकर 4 हजार जात और 2 हजार सवार कर दिया । काबुल के अहमद बेग खा को कश्मीर का सूबेदारी इस शर्त पर दी गई थी कि दो वर्ष मे वह तिब्बत और किश्तवार को जीत लेगा। दो वर्ष निकल गये और उससे कुछ बना नही इसलिए मैने उसको हटाकर दिलावर खा काका को कश्मीर की सूबेदारी दे दी ओर 12 खिलअत और हाथी देकर उसे रवाना किया उसने लिखित वादा किया कि दो वर्ष मे वह तिब्बत और किश्तवार जीत लेगा। शाहरुख का पुत्र वादिउज्जमा अपनी सुल्तानपुर की जागीर से आया। इसी समय मैने कासिम खा को जडाऊ खजर और एक हाथी देकर पजाब की सूबेदारी मे भेज दिया।

मगलवार तारीख 21 की रात्रि को मैने अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। गर्मी बहुत थी और वायु खराब थी इसलिए मुझे बडा कष्ट हुआ और आगरा पहुचने के लिए लम्बी यात्रा करनी पडी इसलिए मुझे ख्याल आया कि गर्मी मे राजधानी नही जाऊँ। मैने गुजरात की वर्षा ऋतु की तारीफ सुनी थी इसलिए मैने निश्चय कर लिया कि अहमदाबाद मे रहू। मुझ दास की ईश्वर हमेशा और सर्वत्र रक्षा करता है। इसी समय खबर आई कि

आगरे मे पुन प्लेग के चिन्ह प्रकट होने लगे है और लोग मर रहे है तब मैने देखा कि मै आगरा नही गया तो अच्छा किया।

इससे पहले सिक्को पर एक तरफ मेरा नाम और दूसरी ओर टकसाल का नाम और शासन का सवत और मास होता था। अब मुझे यह विचार हुआ कि मास के स्थान पर राशि होनी चाहिए। जिस मास मे सिक्का बने तो एक और राशि इस प्रकार दिखाई जाए मानो सूर्य उसमे से निकल रहा है। यह प्रथा मैने ही चलाई थी पहिले कभी नही थी।

इस दिन इतिकाद खा को और मुरब्बत खा को एक–एक निशान दिया गया। सोमवार तारीख 27 की रात्रि को बदखाला गाव मे मुकाम किया। यहा मैने कोयल की बोली सुनी। यह कव्वा जाति का एक पक्षी है, परन्तु उससे छोटा होता है। कव्वे की आखे काली और कोयल की लाल होती है। मादा कोयल के सफेद धब्बे होते हैं, परन्तु नर पूरा काला होता है। नर की बोली बडी सुहावनी होती है। ऐसी मादा को नही होती। यह हिन्दुस्तान की बुलबुल है। बुलबुल बसन्त ऋतु मे उत्तेजित होकर खूब शोर करती है। इसी प्रकार वर्षा के आगमन पर कोयल बोलती है। इसकी बोली बडी चुभने वाली होती है। जब आम पकते है तो यह मस्त हो जाती है। यह प्राय आम के वृक्ष पर बैठती है। आम का रग और सुगन्ध इसको अच्छा लगता है। इसके विषय मे एक विचित्र बात यह है कि यह अपने अडो को नही पालती। जब अडे देने का समय आता है तो यह कव्वे को घोसला तलाश करती है और उसके अडो को अपनी चोच से फोंडकर फेक देती है और वहा अपने अण्डे रखकर चली जाती है। मैने स्वय यह विचित्र दृष्य इलाहाबाद मे देखा है।

कम शम्बा तारीख 29 को माही नदी के तट पर मुकाम हुआ और मुबारक शम्बा का आनन्द मनाया गया। माही नदी के तट पर दो चश्मे देखे इनका पानी इतना निर्मल था कि उसमे यदि अफीम का दाना डाल दिया जाए तो वह पूरा दीखता था। मैने सारा दिन महिलाओ मे व्यतीत किया। यहा आस–पास घूमना अच्छा लगता था। मैने प्रत्येक चश्मे के आसपास बैठने की जगह बनवाई। शुक्रवार को मैने माही नदी मे मछलिया पकडी। शनिवार तारीख 1 उर्दी विहश्त को मैंने गुर्जबरदारो को आदेश दिया कि मार्ग के गरीबो और विधवाओ को एकत्र करके मेरे सामने लाए ताकि मै अपने हाथ से उनको दान दू। इससे मेरा मन भी लग जाएगा और असहाय लोगो को सहायता मिल जाएगी। सोमवार तारीख 3 को शजाअत खां अरब और हिम्मत खा जो दक्खिन और गुजरात मे सेवा करते थे, आए। अहमदाबाद के फकीर और दरवेश भी मेरे पास आए। मगलवार तारीख 4 को मैने महमूदाबाद की नदी पर मुकाम किया। मेरे पुत्र शाहजहा ने रुस्तम खा को

गुजरात का सूबादार बनाया था, वह मुझे मिलने आया। बृहरपतिवार तारीख 6 को आमोद–प्रमोद तालाब पर हुआ। नाहिरखा दक्खिन से आया। कुतुबुलमुल्क की भेंटो मे एक हीरे की अगूठी थी जो मैने अपने पुत्र शाहजहा को दे दी। इसका मूल्य 1000 मोहर था और इस पर 3 अक्षर एक ही आकार के और बडे सुन्दर लिखे हुए थे। इनमे लिल्लाही शब्द बनता था। ये हीरा ससार मे एक आश्चर्य माना जाता था। बहुमूल्य पत्थरो मे रेशे और खरोच दोष माने जाते है। परन्तु ऐसा ख्याल था कि इस हीरे पर ये बनावटी है। ये हीरा किसी प्रसिद्ध खान का नही था। मेरे पुत्र शाहजहा की इच्छा थी कि दक्षिण विजय के स्मारक रूप मे यह मेरे भाई शाह अब्बास को भेजा जावे। इसलिए दूसरी भेटो के साथ–साथ यह भी शाह को भेज दिया गया। इस दिन मैने बृखराय फरुश प्रशसक कवि को 1000 रुपये दिये। यह गुजराती है ओर उस देश के इतिहास और परिस्थिति का अच्छा ज्ञाता है। इसका नाम पहिले बूटा था मैने समझा कि वृद्ध आदमी को बूटा कहना असगत है। विशेषकर इस समय वह मेरी कृपा के कारण हरा–भरा और फलदार हो गया है। इसलिये मैने आदेश दिया कि इस समय उसको बृखराय (प्रशसक कवि) कहा जाये। शुक्रवार तारीख 7 उपरोक्त मास तदनुसार तारीख 1 जुमाउल अव्वल को शुभ मुहूर्त मे मैने आनन्दपूर्वक अहमदाबाद नगर मे प्रवेश किया। मेरे सवार होते समय मेरा भाग्यवान पुत्र शाहजहा 5000 रुपये लाया था। मैने महल पर जाते समय इनको बखेरा। जब मै महल पर पहुचा तो मेरा पुत्र एक जडाऊ तुर्रा लाया जिसका मूल्य 25000 रुपये था। अन्य अधिकारियो ने भी मुझे भेट दी जो सब मिलकर 40,000 रुपये की थी। मुझे खबर मिली कि ख्वाजा बेग मिर्जा सफवी का अहमद नगर मे देहान्त हो गया है। इसलिए मैने उसके दत्तक और परम प्रिय पुत्र खजर खा का मनसब 2000 जात और 2000 सवार कर दिया और उसको अहमदनगर का दुर्ग–रक्षक बना दिया।

इन दिनो प्रचड गर्मी और दूषित वायु के कारण लागो मे रोग उत्पन्न हो गया था। नगर के और लश्कर के लोगो मे शायद ही कोई होगा जो 2–3 दिन बीमार नही रहा हो। इस रोग मे ज्वर, सूजन और अगो मे दर्द होता था और दो–तीन दिन मे बीमारी बहुत बढ जाती थी। नीरोग होने पर भी निर्बलता और सुस्ती रहती थी। अधिकाश लोग नीरोग हो गये। कुछ ही लोगो का जीवन खतरे मे था। इस देश के वृद्ध लोगो मे मेने सुना कि 30 वर्ष पहले भी इसी प्रकार का ज्वर फैला था, परन्तु वह शान्ति से निकल गया। गुजरात के जलवायु मे हीनता देखकर मुझे यहा आने पर खेद हुआ। मुझे विश्वास है कि ईश्वर लोगो पर दया करेगा जिससे मेरी चिन्ता दूर

होगी। मुबारक शम्बा तारीख 13 को मिर्जा शाहरुख के पुत्र बादी उज्जमा को 1500 का मनसब और एक निशान देकर सरकार पाटन का फौजदार नियुक्त किया गया। सरकार लखनऊ के फौजदार सईद निजाम का मनसब 1000 जात और 700 सवार किया गया। अली कुली दरमान जो कन्धार के सूबेदार के पास काम करता था 1000 जात और 700 सवार का मनसबदार बनाया गया। सैयद हिजबर खा बारह और जबरदस्त खा का भी मनसब बढाया गया। मावन्नहर से कासिम ख्वाजा ने 5 बाज भेजे थे। जिनमे से 1 मार्ग मे ही मर गया ओर 4 उज्जैन पहुचे। लाने वाले लोगो को 1000 रुपये पुरस्कार दिया और आदेश दिया कि वे ख्वाजा के लिए 5000 रुपये के मूल्य की जो चीजे ले जाना चाहे ले जावे। इस समय खान आलम ने जिसको सियाल का राजदूत बनाकर भेजा गया था बाज भेजा। देखने मे तो यह साधारण था, परन्तु उडने पर मालूम हुआ कि यह और बाजो से जुदा था। बृहस्पतिवार 20 को मृतक मिर्जा युसूफ खा की रिश्तेदार मीर अबुस्सालीह ने आज्ञानुसार दक्खिन से आकर फर्श–चुम्बन किया उसने 100 मोहरे और 1 जडाऊ कलगी भेट की। मिर्जा युसुफ खा मसहद एक रिजवी सैयद था। उसके कुटुम्ब की खुरासान मे अच्छी प्रतिष्ठा थी और अभी हाल मेरे भाई शाह अब्बास ने अपनी पुत्री का विवाह उपरोक्त अबुह सालीह के छोटे भाई से कर दिया था। मिर्जा युसूफ खा पर बादशाह अकबर की कृपा थी इसलिये उसको अमीर बनाकर 5000 का मनसब दिया गया था। उसके बहुत से रिश्तेदार उसके पास आ गये थे। उसकी मृत्यु दक्खिन मे हुई थी। यद्यपि उसके अनेक पुत्र थे परन्तु विशेष ध्यान उराके ज्येष्ठ पुत्र पर दिया गया था। थोडे समय मे मैने उसको अमीर बना दिया था। परन्तु उरामे और उसके पिता मे वास्तव मे बडा अन्तर था।

मद्यपान में कमी

मुबारक शम्बा तारीख 27 को मैने हकीम मसीहहुज्जमा को 20000 दाब और हकीम रूहुल्ला को 100 मोहरे और 1000 रुपये दिये। उसने मेरी शारीरिक दशा को भली भाति समझ कर देख लिया था कि गुजरात का जलवायु मेरे लिये हानिप्रद है। उसने कहा, "ज्यो ही आप मद्यपान और अफीम का सेवन कम कर देगे आपके सारे कष्ट दूर हो जायेगे।" वास्तव मे जब मैंने मद्य और अफीम कम की तो प्रथम दिन ही मुझे बडा लाभ हुआ।

मुबारक शम्बा 3 खुरदाद को किजल बाज खा का मनसब 1500 जात और 1200 सवार कर दिया गया। हाथी खाने के दरोगा और मीर शिकार

बलूच खा की रिपोर्ट आई कि अब तक 69 हाथी पकडे जा चुके है। मैने आदेश दिया कि वृद्ध और छोटे हाथियो को नही पकडा जाये। सोमवार तारीख 14 को शाह आलम की वार्षिक तिथि पर उसके प्रतिनिधि सईद मोहम्मद को 2000 रुपये दिये गये। राजा वीरसिह देव को कच्छी घोडा जो जाम ने मुझे भेट किया था, दिया। हाथी पकडने वाले बलूच खा को 1000 रुपये दिये। मगलवार तारीख 15 को मेरे बडा सिर दर्द हुआ और फिर ज्वर आ गया। रात्रि मे मैने उतने प्याले नही पिये जितने मै पिया करता था। मध्य रात्रि के बाद मेरा ज्वर बढ गया और प्रात काल तक मै पलग पर इधर–उधर करवटे लेता रहा। बुधवार तारीख 17 को सायकाल ज्वर कम हो गया और अपने हकीमो की सलाह के अनुसार तीसरी रात्रि को मैने उतने ही प्याले पिये जितने मै पिया करता था। मुझसे कहा गया कि मुझे दाल और चावल का शोरबा खाना चाहिए। परन्तु मै नही खा सका। मै समझदार हुआ तब से मैने कभी जाडा शोरबा नही खाया। मुझे आशा है कि भविष्य मे भी मुझे ऐसा शोरबा खाने की आवश्यकता नही होगी। आज जब तक मेरे वास्ते खाना आया तो मुझे उसके लिये कोई रुचि नही हुई। तीन दिन और दो रात मै उपवास करता रहा। मुझे केवल एक दिन और एक रात ही ज्वर हुआ था परन्तु मेरी निर्बलता इतनी बढ गई थी, मानो मे लम्बे अर्से तक बीमार रहा हू। मुझे भूख नही लगती थी, भोजन के लिए रुचि नही होती थी।

मुझे आश्चर्य है कि इस नगर के सस्थापक ने इस स्थान मे क्या अच्छाई और शुभ देखा यह तो ईश्वर की कृपा से वचित है, तो भी उसने यहा एक नगर बसाया। उसके बाद दूसरे लोगो ने भी इस घूल मे अपना जीवन व्यतीत किया। यहा की जलवायु मे विष है। यहा की भूमि मे बहुत कम पानी है। यहा रेत और धूल है। यहा का पानी खराब और अपेय है। नगर के पास की नदी वर्षा ऋतु के अतिरिक्त सदैव सूखी रहती है। यहा के कुओ का पानी खारा और कडवा है नगर के पास के तालाबो मे धोबी कपडे धोते है। इसलिए उनका पानी छाछ जैसा हो गया है। उच्च श्रेणी के लोगो ने जिनके पास कुछ सम्पत्ति है अपने अपने घरो मे झाबे बना लिये है, जो वर्षा ऋतु मे पानी से भर जाते है। इस पानी को ये अगले वर्ष तक पीते रहते है। यहा के पानी का दोष बिल्कुल प्रत्यक्ष है। नगर के बाहर हरी घास और फूल है ओर खुला हुआ मैदान है परन्तु इसमे काटे बहुत है। मै इस नगर को समूमिस्तान कहू, या इसे जकूम जात (कटक की क्यारी) कहू, या इसे जहन्नुमाबाद का नाम दू, या ये कहे कि इसमे सारे गुण है। यदि वर्षा मुझे नही रोकती, तो मै इस दुखद स्थल पर एक दिन भी अधिक नही

रहता। सुलेमान की भाति मै हवा के तख्त पर बैठकर बाहर निकल जाता। और खुदा के बन्दो को इस तकलीफ से मुक्त कर देता। इस नगर के लोग साहसहीन है और दुर्बल है। मैने हुकम दिया कि लश्कर का कोई आदमी इनके घरो मे घुसकर इन्हे तग न करे और गरीब लोगो के काम मे बाधा न डाले। मुझे ख्याल था कि यहा का काजी और अहल मेरे लश्कर के लोगो के भय से लोगो को अत्याचार से नही बचा सकेगा। इसलिए दो पहर की नमाज के बाद मे जाकर झरोखे मे बैठ गया। यह नदी की ओर था। मै वहा दो–तीन घटो तक बैठा और लोगो के दुख–दर्द सुने और सताने वालो को अपराधो के अनुसार दड दिया। अपनी निर्बल अवस्था मे भी मै नित्य प्रति झरोखे मे जाता था। मैने सोचा कि शरीर की चिन्ता करना हराम है। मुझे लोगो की इतनी चिन्ता थी कि मै रात मे सोता नही था। मै सोता कम था इससे दो लाभ थे साम्राज्य का ज्ञान और ईश्वर की प्रार्थना। ईश्वर न करे कि यह कुछ दिन का जीवन प्रमाद और उपेक्षा मे व्यतीत हो जाए। जिस दिन मुझे ज्वर हुआ, उसी दिन मेरे प्रिय पुत्र शाहजहा को ज्वर आ गया और यह लम्बे अर्से तक रहा। वह दस दिन तक मुझसे मिलने न आ सका। फिर बृहस्पतिवार ता 24 को वह मेरी सेवा मे आया तो बडा निर्बल और असक्त प्रतीत होता था। यदि कोई ठीक स्थिति से मुझे अवगत नही करता तो ऐसा जान पडता था कि वह एक माह या इससे भी अधिक बीमार रहा होगा। बृहस्पतिवार ता 21 को मीर जमुला जो ईरान से आया था। 15 हजार जात और 200 सवारो के मनसब से सम्मानित किया। इस दिन मेरी निर्बलता हट जाने के उपलक्ष्य मे मैने सत्पात्रो को एक हाथी एक घोडा कई प्रकार के पशु सोना चादी व अन्य मूल्यवान पदार्थ दिए। मेरे अधिकाश सेवक अपने अपने साधनो के अनुसार पुण्यार्थ देने के लिए धन या चीजे लाए। मैने कहा कि यदि वे अपनी स्वामिभक्ति का प्रदर्शन करना चाहते है तो यह तरीका मुझको पसन्द नही है। यदि वास्तव मे पुण्य करना चाहता है तो रुपया–पैसा मेरे सामने नही लाना चाहिए। वे निर्धन लोगो को गुप्त रूप से या स्वय अपने हाथ से दान कर दे। मुबारक शम्बा ता 7 ईश्वरीय मास तीर को सादिक खा बख्शी का मनसब बढाकर दो हजार कर दिया। इरादत खा पीर सामान का मनसब दो हजार जात ओर एक हजार सवार[1] किया। मीर–अबू–सालेह रिजगी का मनसब दो हजार जात और एक हजार सवार किया गया और उसको एक निशान और एक हाथी से सम्मानित करके दक्खिन रवाना कर दिया।

इस समय मुझसे निवेदन किया गया कि प्रधान सेनापति अतालिक खानखाना ने एक कसीदा लिखा है और उसके पुत्र मिर्जा रुस्तम सफवी

और मिर्जा मुराद ने भी इस दिशा मे प्रयत्न किया है। आमोद–प्रमोद मे सम्मिलित प्रत्येक व्यक्ति ने, जिनका काव्य की ओर झुकाव था कसीदे लिखे। मैने सारा कसीदा देखा इसमे एक पक्ति अर्ब्दुरहमान जानी की थी जो सारे ससार मे कहावत बन गई है। शेष कसीदा सादा और सरल था। इसी दिन कश्मीर के सूबेदार अहमद बेग खा की मृत्यु का समाचार मिला। उसके पुत्र खानजादे मे गिने जाते थे और उनके लिलाट पर बुद्धि के चिन्ह प्रत्यक्ष थे। उनको उपयुक्त मनसब देकर सूबा बगस और काबुल मे काम करने के लिए भेज दिया। अहमद बेग खा का मनसब दो हजार 500 था उसके पुत्र को तीन हजार का मनसब और शेष 3 पुत्र ो को 900 का मनसब दिया गया। ख्वाजा खा को 14 तारीख के दिन 15 हजार जात और एक हजार का मनसब दिया गया। वह वीर और उदार पुरुष था और बिहार प्रदेश के एक थाना का अध्यक्ष था। गुजरात के दीवान राय कहनूर को मालवा का दीवान नियुक्त किया गया।

मैने सारसो का मैथुन कमी नही देखा था, जो मेरे एक ख्वाजे–सरा सेवक ने दिखलाया। शनिवार ता 16 को रावत शकर की मृत्यु का समाचार आया। वह बिहार मे काम करता था। .उसके ज्येष्ठ पुत्र मानसिह का मनसब बढाकर दो हजार जात और 600 सवार कर दिया। उसके दूसरे पुत्रो और रिश्तेदारो का भी मनसब बढाकर आदेश दिया गया कि वे मानसिह की आज्ञा का पालन करे। बृहस्पतिवार तारीख 21 को मेरे पकडे हुए हाथियो मे सर्वोत्तम हाथी "बावन" जिसको मै पालतू बनाने के लिए दोहद छोड आया था, दरबार मे लाया गया। मैने उसको नदी की तरफ झरोखे के नीचे रखवाया। वहा मेरी आखे उसको सदैव देख सकती थी। अकबर के तबेले मे सबसे बड़ा हाथी दुर्जनशाल था। इसकी ऊँचाई 4 गज थी इस समय मेरे हाथी खाने मे सबसे बडा हाथी आलम गजराज है इसको बादशाह अकबर ने स्वय पकडा था। इसकी ऊँचाई मामूली गज के हिसाब से 7 गज और 7 अगुल है (उस समय इलाही गज 40 अगुल का होता था)।

आज मुज्जफर खा जिसको ठट्ठा सूबादार किया था अया और उसने एक–सौ मौहर और एक सौ रुपये तथा एक लाख के रत्न तथा रत्नजडित आभूषण भेट पुत्र प्रदान किया है इसका जन्म शाह मुराद की पुत्री से हुआ था। यह आशा की जाती है कि उसका जन्म इस साम्राज्य के लिए शुभ शकुन सिद्ध होगा।

रविवार ता 24 को राय बिहारी, जो गुजरात का सबसे बडा जमीनदार है आया उसका देश समुद्र के समीप है। बिहारी और जाम एक ही वश के है। 10 पुश्त पहिले ये एक ही थी। देश और सेना की दृष्टि से बिहारी जाम

से ऊँचा है। ऐसा कहा जाता है कि वह गुजरात के किसी सुल्तान से कभी मिलने नही आया। महमूद ने उसके विरूद्ध सेना भेजी थी, परन्तु महमूद हार गया। जब खान–आजम सूरत के प्रदेश मे जूनागढ दुर्ग को जीतने के लिए गया तो नन्नू ने जो सुल्तान मुज्जफर कहलाता था यह प्रकट किया कि वही सल्तनत का उत्तराधिकारी है। वह इस समय जमीनदारो के सरक्षण मे अपने दिन बिता रहा है। इसके बाद जाम शाही सेना से हार गया और नन्नू ने राय बिहारी की शरण ली, खान आजम ने राय बिहारी से कहा कि नन्नू को सौप दो। राय बिहारी शाही सेना का सामना नही कर सका था। इसलिए उसने नन्नू को सौप दिया और शाही सेना के प्रहारो से वह बच गया। जब थोडे दिन मै अहमदाबाद ठहरा हुआ था तो वह मेरी सेवा मे नही आया उसका देश बहुत दूर था और उसके विरुद्ध सेना भेजने के लिए समय नही था। जब मै अहमदाबाद दुबारा गया तो मेरे पुत्र शाहजहा ने इस काम के लिए राजा विक्रमाजीत को सेना देकर नियुक्त किया और अपनी सुरक्षा की दृष्टि से रखकर राय बिहारी मेरी चौखट का चुम्बन करने के लिए दौडा आया और दो–सौ मोहरे और दो हजार रुपए तथा एक–सौ घोडे मेरे भेट किए। मुझे एक भी घोडा पसन्द नही आया, राय बिहारी 80 वर्ष का जान पडता था। उसने कहा कि "मेरी आयु 90 वर्ष की है।" उसके शरीर या बुद्धि मे ह्रास के कोई चिन्ह नही दिखाई देते थे। उसके लोगो मे एक वृद्ध पुरुष था जिसकी दाढी, मूछ और भौहे सफेद हो गए थे। उसने कहा राय बिहारी मुझे बचपन से जानता है और बचपन से ही मै उसकी सेवा कर रहा हू।

आज अबुल हसन चित्रकार ने जिसको नादिर–रुज–जमान की उपाधि हैं, जहागीरनामा के मुखपृष्ठ के लिए मेरे राज्यारोहण का चित्र बना कर प्रस्तुत किया। यह सब भाति प्रशसनीय था। वह चित्र इस युग की उत्तम कृति है। यह चित्रकार अद्वितीय है। यदि इस समय अब्दुल और बीयजाद जीवित होते तो वे उसका यथोचित आदर करते। अबुल हसन का पिता आकारिजाई हैराती था। जब मैं शाहजादा था तो उसने मेरी सेवा करना शुरू किया था। अबुल हसन मेरे दरबार का खानजादा था। परन्तु इसकी कृति की तुलना इसके पिता की कृतियो से नही की जा सकती। इनको एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इसके बचपन से अब तक मैंने इसकी देख रेख की है। अब इसकी कला इस कोटी पर पहुच गई है। यह वास्तव मे इस युग का एक आश्चर्य है। उस्ताद मसूर भी चित्रकारी मे इतना निपुण हो गया है कि उसकी नादिरुल–असर की उपाधि दी गई है। अपने समय मे वह चित्रकला मे अद्वितीय है। मेरे पिता के और मेरे राज्य मे ये दो ही बडे

चित्रकार हैं। इनके पास ही समझा जाने वाला कोई तीसरा नहीं है। मुझे चित्रकला बहुत पसन्द है। और इसको परखने का मुझे बड़ा अभ्यास है। जब कोई चित्र वर्तमान चित्रकार या पिछले चित्रकर का बनाया हुआ मेरे सामने प्रस्तुत किया जाता है तो मुझे चित्रकार का नाम न बतलाया जावे तो भी मैं तुरन्त कह देता हूं कि वह अमुक चित्रकार की कृति है। यदि एक चित्र में कई चित्रर हों और प्रत्येक चित्र के चेहरे को अलग–अलग चित्रकार ने बनाया हो तो मैं बतला सकता हूं कि कौन–सा चेहरा किसने बनाया है। यदि एक चित्रकार ने चेहरे की आंख और दूसरे ने भौंहे बनाई हों तो मैं कह सकता हूं कि चेहरा किसने, भौंहे किसने और आंखें किसने बनाई हैं।

रविवार तारीख 31 मास तीर को भारी वर्षा हुई और मंगलवार तारीख (अमूरदाद तक होती रही) 16 दिन तक आकाश मेघाच्छन्न था और वर्षा हो रही थी। यह रेतीला देश है। यहां की इमारतें कमजोर हैं। इसलिए बहुत से मकान गिर गए और बहुत लोगों की मृत्यु हो गई। मैंने नगर के निवासियों से सुना कि इस वर्ष की सी वर्षा की उनकी स्मृति में नहीं है। साबरमति नदी जलपूर्ण प्रतीत होती है, परन्तु ये अधिकांश स्थानों पर बिना नाव के पास की जा सकती है और हाथी इसको सदैव पार कर सकते हैं। यदि एक दिन वर्षा न हो तो आदमी और घोड़े इसे चल कर पार जा सकते हैं। इस नदी का निकास राणा के पर्वतीय देश में से हैं। यह कोकरा के उणे से निकलती है और डेढ कोस चलकर मीरपुर के नीचे पहुंचती है। जहां ये वाकल कहलाती हैं। मीरपूर के तीन मील आगे से यह साबरमति कहलाती है।

बृहस्पतिवार तारीख 10 को राय बिहारी को 1 हाथी और 1 हथनी, एक जड़ाऊ खंजर और 14 जड़ाऊ अंगूठियां जो लाल और पीली याकूत की नीलम की और पन्ने की थी देकर सम्मानित किया गया। बराकर की हीरे की खान खानदेश के जमीनदार बन्धु के कब्जे में थी। अतालिक जानसिमार खानखाना (अब्दुर्रहीम) ने अपने पुत्र अमरुल्ला के नेतृत्व में इस खान पर कब्जा करने के लिए सेना भेजी। आज उसकी रिपोर्ट आई कि जमीनदार ने यह जानकर कि शाही सेना का सामना करना उसकी शक्ति से बाहर है, खान को समर्पित करना मंजूर कर लिया है और उसका प्रबन्ध करने के लिए एक शाही अफसर नियुक्त कर दिया गया है। इस स्थान के हीरे दूसरे हीरों से सुन्दरता में बढ़कर हैं और जौहरी लोग इनको बहुत बढ़िया समझते हैं। इनका आकार अच्छा है ओर ये दूसरे हीरों से बड़े हैं। दूसरे खर्ज की खान पोखरा की है जो बिहार की सीमा पर स्थित है, परन्तु यहां के हीरे खान में से नहीं नदी में से निकाले जाते हैं। जिसमें वर्षा ऋतु में बाढ़ आ

जाती है। इसका पानी पहाड़ियों पर से आता है। बाढ से पहले इसका बन्धा बना दिया जाता है। जब इस पर होकर पानी निकल जाता है और थोड़ा पानी रह जाता है तो इस काम में चतुर आदमी नदी के तले में घुसकर हीरे निकालते हैं। इस प्रदेश को साम्राज्य में आये हुए 3 वर्ष हो चुके हैं। यहां का जमीनदार कैद में है। यहां का जलवायु विषाक्त है। बाहर के लोग वहां नही रह सकते। तीसरी खान कुतुबुलमुल्क की सीमा के समीप कर्नाटक में है। वहां 50 कोस के अन्दर 4 खानें हैं। इनमें बहुत से अच्छे हीरे निकले हैं।

बृहस्पतिवार तारीख 10 को नाहिरखां को 1500 जात और 1000 सवार का मनसब और 1 हाथी दिया गया। पुस्तकाध्यक्ष मक्तेबखां को भी 1500 जात का मनसब दिया गया। मैंने आदेश दिया था कि शब–ए–बरात को कांकरिया तालाब के चारों ओर रोशनी की जाये, फिर मैं सायंकाल सोमवार तारीख 14 शबान को रोशनी देखने गया। यद्यपि इस ऋतु मे लगातार वर्षा हो रही थी और बादल का चिन्ह भी शेष नहीं था अतः मेरी इच्छानुसार रोशनी हो गई। मेरे निजी सेवकों को मद्यपान करवाया गया। मैंने आदेश दिया कि शुक्रवार की शाम को भी इसी प्रकार रोशनी की जाये विचित्र बात यह हुई कि बृहस्पतिवार तारीख 17 को निरन्तर वर्षा हुई परन्तु रोशनी के समय यह बन्द हो गई और खूब रौनक हुई। इस दिन इतिमादुद्दौला ने एक नीलम और एक चांदी के हौदे वाला ओर बिना दांत का हाथी भेंट किया जो बडा सुन्दर और अच्छे आकार वाला था।

एक सन्यासी से भेंट– कांकरिया तालाब के तट पर एक सन्यासी ने दरवेश ढंग की कुटिया बना रखी थी। सन्यासी हिन्दुओं के एक सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। यह साधु की भांति यहां रहता था, मैं साधुओं से मिलना पसन्द करता था, इसलिए मैं अनौपचारिक रीति से उससे मिलने गया और उसकी संगति का मैंने आनन्द लिया वह बडा जानकार और बुद्धिमान पुरुष था और अपने धर्म के अनुसार 16 सूफी मत के सिद्धान्तों को भी समझता था। वह धार्मिक निर्धनता के मार्ग पर चलता था। तप करता था और उसने सब इच्छाएं और महत्वाकांक्षाएं त्याग दी थी। ऐसा कहा जा सकता है कि उससे अच्छा सन्यासी कभी नहीं देख गया था।

गजपत खां और बलूच खां को हाथी पकडने के लिए नियुक्त किया गया था। शाहजहां के शिकारी भी उनके साथ थे। आज वे आये 185 हाथी और हथनियां पकड़े गये थे।

बृहस्पतिवार तारीख 24 को मैं बाग–ए–फतह देखने गया। और वहां 2 दिन आमोद–प्रमोद करके रविवार के सायंकाल महल में वापिस आया। आसफ खां ने निवेदन किया कि उसकी हवेली का बाग बड़ा सुखद और

हरा भरा है और सब प्रकार के पुष्प और सुगन्धित पौधों की बहार है। उसकी प्रार्थना पर मुबारक शम्बा तारीख 21 को मैं वहां गया। उसने भेंट दी। जिसमें से 35000 के मूल्य की चीजें मैंने लीं। मुजफ्फर खां को 1 खिलअत और 1 हाथी देकर पूर्ववत ठट्ठा का सूबादार बना दिया। मेरे भाई शाह अब्बास ने अब्दुल करीम ग्लानि के हाथ जो ईरान से तिजारती माल लेकर आया था कुछ तुच्छ सी भेंटें भेजी थी। आज मैंने उसको 1 खिलअत और 1 हाथी दिया और वापिस जाने की इजाजत दी तथा शाह के पत्र का उत्तर दिया। खान आलम को भी एक खिलअत और फरमान दिया गया।

बृहस्पतिवार तारीख 7 को मेरा लश्कर आगरे की ओर चला। ज्योतिषियों ने प्रस्थान का मुहूर्त पहले ही निश्चित कर दिया था। भारी वर्षा के कारण लश्कर का प्रधान भाग महमूदाबाद की नदी और माही को इस घडी में पार नहीं कर सका। आवश्यकतावश लश्कर के अगले भाग ने प्रस्थान किया। प्रधान भाग के लिए 21 शहरीवर निश्चित हुई।

मेरे पुत्र शाहजहां ने कांगडा दुर्ग की विजय का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। इसको किसी भी बडे सुल्तान ने अब तक नहीं जीता था। राजा बासू के पुत्र राजा सूरजमल और ताकी को इससे पहिले वहां भेजा गया था। यह स्पष्ट हो चुका था कि पिछली सेनाएं इसको नहीं जीत सकती। अब इस काम के लिए राजा विक्रमादित्य को 2000 सवारों सहित भेजा गया। शाहबाज खां लोदी, हिरदे नारायण हाड़ा, राय पृथ्वीचन्द्र, रामचन्द, रामचन्द के पुत्र 200 बन्दूकचियों सहित तथा 500 पैदल तोपचियों सहित अब इस काम के लिए रवाना किए गए। यह दिन प्रस्थान का था, इसलिए राजा विक्रमजीत ने 10,000 रुपये मूल्य की एक पन्ने की माला भेंट की। उसको एक खिलअत और एक तलवार देकर विदा किया। इस सूबे में विक्रमाजीत के पास कोई जागीर नहीं थी, इसलिए मेरे पुत्र शाहजहां ने निवेदन किया कि परगना बुरहान में उसको 22 लाख दाम की जागीर दे दी जावे। ख्वाजा ताकी को दक्खिन का दीवान बनाया गया था। उसको मुताकिद खां की उपाधि, खिलअत और एक हाथी दिया। हिम्मत खां को सरकार भंडौच का फौजदार नियुक्त किया और एक घोडा और एक परम नरम (दुशाला) देकर उसको रवाना किया। परगना भड़ौच उसको जागीर में भी दे दिया। राय पृथ्वीचन्द्र, जिसको कांगडा भेजा गया था 709 जात 450 सवार का मनसबदार बनाया गया। शेख मुहम्मद घोस की वार्षिक तिथि आ गई थी, इसलिए उसके पुत्रों को खर्चे के लिये 500 रुपए दिया। बहादुरुल–मुल्क के पुत्र मुजफ्फर को जो दक्षिण में नियुक्त था 1000 जात और 500 सवार का मनसब दिया गया ।

जहागीरनामें में 12 वर्ष की घटनाएं लिखी जा चुकी हैं, इसलिए मैंने अपने निजी पुस्तकालय के लेखकों को आदेश दिया कि इसकी एक जिल्द बनाई जावे और उसकी बहुत सी प्रतियां तैयार की जावें ताकि मै उन्हें अपने विशिष्ट सेवकों को दूं और विभिन्न नगरों में भेजू और कर्मचारी लोग उसे अपनी आचार–संहिता समझे। शुक्रवार तारीख 8 को एक वाकिया नवीस ने एक जिल्द तैयार करके मेरे सामने प्रस्तुत की। यह मैंने अपने पुत्र शाहजहां को दी और उसके पीछे अपने हाथ से मैंने देने का दिन और स्थान लिख दिया।

मंगलवार ता. 12 को शुभान कुली शिकारी को दण्ड दिया गया। यह हाजी जमाल बलूच का पुत्र है जो मेरे पिता का सर्वोत्तम शिकारी था। मेरे पिता की मृत्यु के बाद यह इस्लामखां की सेवा करने लगा और उसके साथ बंगाल चला गया। इस्लाम खां जानता था कि सुभानअली का इस दरबार से सम्बन्ध है। इसलिए उसको विश्वसनीय समझ कर शिकार और यात्रा मे अपने पास रक्खा। उस्मान अफगान बंगाल में आज्ञा भंग करके बहुत दिनो तक उत्पात करता रहा। इस्लाम खा ने उसको बहुत तंग किया तो उस्मान खां ने किसी व्यक्ति को सुभान कुली के पास भेजकर इस्लाम की हत्या के लिए प्रस्ताव किया। सुभान कुली ने यह कार्य करना स्वीकार करके दो तीन आदमियों को अपना साथी बनाया। परन्तु इन साथियों से एक ने इस्लाम खां को इस बात की सूचना दे दी। इस्लाम खां ने तुरन्त ही सुभान कुली की पकड कर कैद कर दिया। जब इस्लाम खां की मृत्यु हो गई तो सुभान कुली दरबार में आया। उसके भाई और रिश्तेदार शिकारियों में थे, इसलिए उसको भी शिकारियों में रख लिया। तब इस्लाम खां के पुत्र के पुत्र ने निवेदन किया कि सुभान कुली सेवा के योग्य नहीं है। फिर पता लगा कि अभियोग क्या है। तथापि उसके भाईयों के यह निवेदन करने पर कि केवल शका है और बलूच खां ने उसकी जमानत दे दी, इसलिए मैंने उसको मृत्यु दण्ड नहीं दिया और आदेश दिया कि यह बलूच खां के साथ काम करे। फिर भी सुभान कुली भागकर आगरे की ओर चला गया। तब बलूच खां को आदेश दिया गया कि उसको पेश करें तो बलूच खां के भाई को वह एक गाव में मिल गया, परन्तु वह दरबार में हाजिर होने के लिये राजी नहीं हुआ और गांव वालो ने उसकी सहायतार्थ उपद्रव किया।

तब बलूच खां के भाई ने आगरा जाकर ख्वाजा जहां को सब बात सुनाई तो पकड़ने के लिए सेना भेजी। गांव वालों ने उसको सुपुर्द कर दिया। आज उसको जंजीरों में कसकर दरबार में पेश किया गया तो मैंने उसके वध का आदेश दे दिया। जल्लाद शीघ्रतापूर्वक उसको वध स्थान पर

ले गये। फिर एक दरबारी के कहने पर मैंने आदेश दिया कि उसका वध नही किया जावे। परन्तु दोनो पैर काट दिये जावे। परन्तु इस आदेश के पहुचने के पहले ही उसका वध हो चुका था। मुझे इस पर खेद हुआ और मैने आदेश किया कि अब किसी का वध का हुक्म दिया जावे तो सायकाल तक उसका वध न किया जाए। दूसरा आदेश न पहुचे तो वध कर दिया जावे।

शुक्रवार ता 15 को अमीरी नामक मुल्ला मावन्नहर से आया। उसने निवेदन किया मै अब्दुला खा उजबेग का एक पुराना सेवक हू। मेरी परवरिश उसने बचपन से युवावस्था तक की थी, मैं उसके पुराने और विश्वसनीय नौकरो मे से गिना जाता था। मै अपने देश से मक्का गया और अब आपकी सेवा मे आया हू। उसने कुछ दिन मेरी सेवा मे रहना चाहा मैने उसको एक खिलअत और 1000 रुपये दिये। यह वृद्ध सुन्दर और खूब बाते करने वाला है मेरे पुत्र शाहजहा ने भी 500 रुपये और एक खिलअत दी।

मगलवार तारीख 19 को सायकाल महल मे एक बाजार लगाया गया। अब तक तो बाजार के लोग कारीगर तथा कलाकार अपनी दुकाने आदेशानुसार महल के चौक मे लगाते थे और उनम विक्रमा की जडाऊ चीजे, नाना प्रकार के कपडे और बाजार मे बिकने वाली चीजे रखते थे। मुझ ख्याल आया कि यदि ये बाजार रात मे लगाए जाए और दूकानो के सामने दीपक रख दिए जावे तो अच्छा लगेगा। मै सब दूकानो पर गया ओर रतन जडित चीजे जो मुझे पसन्द आई खरीद ली गई। प्रत्येक दूकान के कुछ चीज लेकर मैने मुल्ला अमीरी को दी तो उसे इतनी चीजे मिल गई कि वह उन्हे थाम भी नही सकता। मुबारक शम्बा तारीख 21 मास शहरीवर जो मेरे राज्यारोहण का तेरहवा वर्ष था और तदनुसार 22 रमजान 227 हिजरी (2 सितम्बर 1618) था और जब दिन के ढाई पहर निकल चुके थे, तो मेरे लश्कर ने राजधानी आगरे की ओर प्रयाण किय। महल से काकरिया तालाब तक मै रुपए उछालता गया। उसी दिन मेरी सौर तुला हुई। सौर–गणना के अनुसार यह मेरी आयु का पचासवा वर्ष था। मेरे नियम के अनुसार मुझे सोने और अन्य मूल्यवान पदार्थो से तोला गया। मैने मोती और सुनहरी गुलाब के फूल बिखेरे और रोशनी देखते हुए मैने हरमखाने मे आमोद–प्रमोद किया। शुक्रवार तारीख्र 22 को मैने आदेश दिया कि सारे शेखो और धार्मिक पुरुषो को जो नगर मे रहते हो बुलाया जाए ताकि वह मेरे सामने रोजा गुजारे। बहुत से फकीर अभी मुझे नही मिले थे, उन्होने निर्वाह के लिए प्रार्थना की। मैने उनकी योग्यतानुसार सबको रुपया देकर सन्तुष्ट किया।

आज हकीम रुहल्ला को एक हजार रुपए दिए गए। 26 मगलवार को

काकरिया तालाब से चलकर मै कजु नामक गाव मे ठहरा। बुधवार 27 को मैने महमूदाबाद के पास नदी पर मुकाम किया। अहमदाबाद का पानी खराब था इसलिये हकीमो की सलाह से महमूद बेगडा ने उक्त नदी के तट पर नगर बसाया था और वहा रहने लगा था फिर चम्पानेर को जीत कर वह वहा रहने लगा और शहीद महमूद के समय तक गुजरात के सुल्तान वही रखे। महमूद गुजरात का अन्तिम सुलतान था और महमूदाबाद मे रहा करता था। महमूदाबाद के जलवायु की अहमदाबाद के जलवायु से कोई तुलना नही की जा सकती।

बृहस्पतिवार तारीख 28 को रुस्तम खा जिसे मेरे पुत्र शाहजहा ने गुजरात मे नियुक्त किया था, एक हाथी एक घोडा और एक खास दुशाला देकर विदा किया गया। उस सूबा से सम्बन्धित जहागीरी अफसरा का उनके पदानुसार घोडे और खिलअते दी गई। शुक्रवार तारीख 29 शहरीवार तदनुसार 1 शव्वाल को राय बिहारी एक खिलअत एक जडाऊ तलवार ओर एक खासा घोडा देकर राम्मानित किया गया ओर अपने निवास स्थान को विदा किया। उसके पुत्रो को भी खिलअते और घोडे देकर सम्मानित किया गया। रविवार को मैने शाहआलम के पोते सईद मुहम्मद को आदेश दिया कि वह जो कुछ चाहे खुले तौर पर मागे। मैने कुरान की शपथ ले ली थी कि जो कुछ वह मागेगा दे दिया जायेगा। उसने कहा कि मैने कुरान की शपथ ली हे इसलिए उसे कुरान ही दे दी जावे। वह उसको पढेगा उसका फल बादशाह को मिलेगा, इसलिये मैने उस मीर को याकूती अक्षरो मे एक प्रति दी। यह छोटी किन्तु सुन्दर और अपने समय मे आश्चर्य की वस्तु थी। इसके पीछे मैने अपने हाथ से लिखा कि सैयद मुहम्मद को यह प्रति मेने अमुक दिन और अमुक स्थान दी है। उसका वास्तविक कारण यह हे कि इस मीर का स्वभाव बहुत ही अच्छा है। इसमे सज्जनता के सब गुण है बडी शिष्टता है और सर्वसम्मत मधुर शिष्टाचार है। मैने इस देश मे इतने अच्छे स्वभाव वाला व्यक्ति दूसरा कोई नही देखा। मैने उससे कहा कि इस कुरान का अनुवाद सरल भाषा मे करे। भाष्य न करे। भाषा को अलकृत न बनावे। फारसी मे शब्दानुवाद करदे। इसमे अभिप्राय ज्यो का त्यो रहे। एक शब्द भी अपनी ओर से न जोडा जावे। पूर्ण होने पर इस अनुवाद को वह अपने पुत्र जुलालुद्दीन राईद के हाथ इस दरबार मे प्रस्तुत करे। मीर का यह पुत्र भी बुद्धिमान व्यक्ति है। इसके मस्तक पर धार्मिकता के चिन्ह स्पष्ट दृष्टिगोचर होते है। मीर को अपने पुत्र पर अभिमान है और यह नवयुवक बहुत अच्छा है तथा इस योग्य है। मैने गुजरात के दरवेशो के प्रति बार बार कृपा प्रगट की थी। मैने पुन प्रत्येक दरवेश को नकद और रत्न देकर उन्हे अपने–अपने घरो को विदा कर दिया।

इस देश का जलवायु मेरे अनुकूल नहीं था इसलिए हकीमों ने सोचा कि मैं अपने दैनिक मद्य की मात्रा कुछ कम कर दूं। मैंने मद्य के प्यालों की संख्या कम करना शुरू कर दिया और एक सप्ताह में एक प्याला कम कर दिया पहले तो प्रति सांय काल में 6 प्याले पीता था। प्रत्येक प्याले मे साढ़े 6 तोला ओर इस प्रकार सब मिलाकर 35 तोला शराब होती थी। शराब में प्रायः पानी मिला दिया जाता था। अब मै 6 प्याले पीता था और प्रत्येक प्याले में 6 तोला ओर 3 माशा शराब होती थी एवं सब मिलाकर साढे 37 तोला होती थी।

16–17 वर्ष पूर्व मैने ईश्वर के नाम पर इलाहाबाद में व्रत लिया था कि जब मैं 50 वर्ष का हो जाऊगा तो बन्दूक की गोली से शिकार करना छोड दूंगा और अपने हाथ से मै किसी प्राणी की क्षति नहीं करूंगा। मुकर्रब खां जो मेरा एक विश्वस्त सेवक था मेरे निश्चय को जानता था। आज मेरा 50 वां वर्ष शुरू होता था, तो मुझे अत्यधिक ज्वर हो गया मुझे जल्दी--जल्दी सांस आने लगी। इस दशा में मुझे अपने व्रत का स्मरण आया और मुझे ईश्वरीय प्ररेणा हुई। मैं 50 वर्ष पूरे कर चुका था मैंने सोचा मैं इस दिन अपने पिता के मजार पर जाऊ और उसके पवित्र तत्वों से अपने व्रत की पुष्टि करवाऊं। जब मुझे यह विचार आया तो मेरी बीमारी समाप्त हो गई और मै ईश्वर को धन्यवाद देने लगा।

बृहस्पतिवार तारीख 4 शहरीवर को सईद कबीर बख्तखां को जो आदिल खां के वकील थे और इरा दरबार मे भेटे लेकर आये थे विदा दी गई। सईद कबीर को एक खिलअत, एक घोडा और जडाऊ खंजर, और बख्तर खां को एक घोडा, एक खिलअत और एक जडाऊ उर्वशी जो उस देश में गर्दन मे पहनी जाती है तथा 6000 दरब खर्च के लिए प्रत्येक को दिये।

आदिल खां मेरे पुत्र शाहजहा के द्वारा निरन्तर मेरे चित्र के लिये प्रार्थना किया करता था मैने उसको एक चित्र एक मूल्यवान लाल और एक खासा हाथी भेजा। और फरमान लिखा कि निजामुल मुल्क का जो भी प्रदेश वह चाहे अपने अधिकार में कर ले। इसके लिए यदि उसको सहायता की आवश्यकता हो तो शाह नवाज खां सेना तैयार करके उसकी सहायता करेगा। पिछले समय में निजामुल मुल्क या कुतुबुल मुल्क दक्षिण का सबसे बडा सुल्तान था। दूसरे सुल्तान उसको अपना बडा भाई मानते थे। अब आदिल खां ने अच्छी सेवा की थी और उसको फरजद की उपाधि से राम्मानित किया जा चुका था इसलिए उसको मैंने दक्षिण का अध्यक्ष नियुक्त किया और चित्र पर अपने हाथ से लिखा, "मेरी कृपादृष्टि तुम पर हमेशा रहेगी। तुम शान्ति से रहो। मै अपना चित्र भेज रहा हू।"

मेरे पुत्र शाहजहां ने हकीम हुमाम के पुत्र हकीम खुशहाल को जो इस दरबार का खानखाना था ओर जो शुरू से मेरे पुत्र की सेवा करता था आदिलखां के वकीलों के साथ भेजा कि वह आदिलखां को जहांगीर अनुग्रह का समाचार दे। उसी दिन मीर जुमला को अर्ज मुकर्रिर का काम सौंपा गया। गुजरात के दीवान किफायतखां पहले बंगाल का दीवान था। वहां कुछ दुर्घटनाओं के फलस्वरूप उसका सामान जाता रहा था। इसलिए उसको 15000 रुपए दिए गए। इस समय जहांगीरनामा की दो प्रतियां तैयार करके मेरे सामने रक्खी गई। इनमें से एक में मदार-उल-मुल्क इतिमादुद्दौला को कुछ दिन पूर्व ही दे चुका था, दूसरी प्रति मैंने आज अपने फरजंद दत्तक पुत्र आसफखां को दी। शुक्रवार ता. 5 बहराम को जहांगीर कुलीखां का पुत्र बिहार से आया। उसने कोकरा की खान के कुछ हीरे मेरे सामने प्रस्तुत किये। वहां जहांगीर कुलीखां ने कोई अच्छी सेवा नहीं की थी और यह भी बार बार खबर आती थी कि उसके भाई और दामाद मुल्क पर अत्याचार करते हैं और उनमें से प्रत्येक अपने आपको सूबादार समझता है और जहांगीर कुली की सत्ता को नहीं मानता इसलिए मैंने अपने हाथ से फरमान लिखकर मुकर्रबखां को दिया जो मेरा एक विश्वस्त और पुराना सेवक है और लिखा कि उसकी बिहार का सूबादार नियुक्त किया गया है। इस फरमान के मिलते ही वह वहां चला जावे। इब्राहीम फतह जंग ने दरबार में कुछ हीरे भेजे थे। इस समय बहराम आगरा आया। वह दरबार में (गुजरात) जा रहा था। आगरा के सूबादार ख्वाजा ने उसके साथ कुछ हीरे भेजे थे इनमें से एक का रंग गुलेबनपफ्शा का सा था। उसमें और नीलम में प्रत्यक्ष में कोई भेद बतलाया नहीं जा सकता। अब तक मैंने इस रंग का हीरा कोई नहीं देखा था इसका तोल कई सुर्ख था। जौहरियों ने इसका मूल्य 3000 रुपये आंका था। उनका कहना था कि यदि यह सफेद होता तो इसका मूल्य 20000 रुपए होता।

दशहरा

शनिवार तारीख 6 को दशहरा का त्यौहार आया, पहले तो मेरे घोड़ों को सजाकर मेरे सामने लाया गया इसके पश्चात् उसी भाति हाथियों को अलंकृत करके मेरे समक्ष उपस्थित किया गया।

अब तक माही नदी में थाह नहीं हुई थी। इसलिये शाही लश्कर उसको पार नहीं कर सकता था। महमूदाबाद का जलवायु भी अन्य स्थानों से

---

1 मुसलमानों के विश्वास के अनुसार प्राकृतिक जीवन 120 वर्ष का होता है।

अच्छा था। इसलिए इस दिन तक मैंने यहां मुकाम किया। सोमवार ता. 8 को मैंने प्रयाण करके मूदा में डेरे लगवाये। मैंने ख्वाजा अबुल बख्शी को कुछ सेवकों के साथ आगे भेज दिया था। इनमें नाव चलाने वाले थे। उनको आदेश दिया था कि माही नदी पर पुल बनावे और थाह बनने की प्रतीक्षा न करे। जिससे शाही लश्कर आसानी से पार उतर आवे। मंगलवार तारीख 9 को मैं ठहरा और 10 तारीख को अपना नामक गांव में मुकाम किया।

जहांगीर कुली खां ने बिहार से 20 और मुरब्बत खां ने बंगाल से 8 हाथी भेजे थे। जहांगीर कुली खां का एक और मुरब्बत खां का एक हाथी मेरे निजी तबेले में रख लिए गए और शेष मैंने अपने सेवकों को दे दिये। मिर्जा अबुल कासिम नयकीन के पुत्र पीर खां को जो इस दरबार का एक खानजादा था 800 जात और 600 सवार का मनसब दिया गया। कासिम खां को मुख्य शिकारी नियत करके 600 जात और 150 सवार का मनसब दिया गया। एक बारहा सैयद अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध था। वह बंगस सूबे में काम करता था। वहां के सूबेदार महावत खां की प्रार्थना पर उसको 1500 और 800 सवार का मनसब दिया गया। शुक्रवार 19 को मैंने एक नीलगाय मारा। खानखाना की प्रार्थना पर दक्षिण के बख्शी इब्राहीम खां का मनसब बढ़ा कर 1000 जात और 200 सवार कर दिया गया। सोमवार तारीख 22 और मंगलवार तारीख 23 को प्रयाण किया। शिकारियों ने खबर दी कि पास में ही एक शेरनी और तीन बच्चे हैं। मैंने चारों को मार दिया ओर मैं दूसरी मंजिल पर पहुंचा। माही नदी का पुल द्वारा पार किया। इस नदी पर नावें नहीं थी। जिनसे पुल बनाया जावे पानी भी बहुत गहरा और उसका प्रवाह तेज था तो भी बख्शी खास ख्वाजा अबुल हसन ने बड़े परिश्रम से दो दिन पहले एक मजबूत पुल बना दी थी। जिसकी लम्बवाई 140 गज और चौड़ाई 4 गज थी। उसकी जांच के लिये मैंने उस पर सुन्दर हाथी और तीन हथनियां चलवाई। इन पर्वताकार हाथियों से भी वह पुल बिल्कुल नहीं हिली।

मैंने अपने पिता से सुना था कि, "अपनी युवावस्था में दो–तीन प्याले शराब पीकर मैं एक मस्त हाथी पर सवार हुआ। मुझे पूरा होश था और हाथी भी सदाया हुआ तथा मेरे वश में था, तो भी मैंने बहाना किया कि मुझे होश नहीं है और हाथी मस्त है वश में नहीं रहना चाहता, फिर मैंने एक दूसरा हाथी मंगवाया और दोनों को लड़वाया। ये दोनों लड़ते–लड़ते जमना नदी की पुल के सिरे तक पहुंच गए, तो दूसरा हाथी भागा। भागने का कोई दूसरा मार्ग नहीं था, इसीलिए वह पुल की ओर भागा, तब मेरे हाथी ने

उसका पीछा किया। वह मेरे काबू में था और जहां मैं चाहता वहां तुरन्त ठहर सकता था, परन्तु मैंने सोचा कि यदि मैं उसको पुल से पीछे हटाऊगां तो लोग समझेंगे कि मेरा मद्यपान झूठा है और न तो मैं बेकाबू हूं और न हाथी मस्त है इसलिए मैंने हाथी को नहीं रोका, हाथी पुल पर चले गए, पुल नावों की बनी हुई थी। जब कोई हाथी नाव के किनारे पर पैर रखता था तो वह आधी डूब जाती थी और आधी ऊंची आ जाती थी। प्रत्येक कदम पर आशंका होती थी कि रस्से टूट जाएंगे। इस दृश्य को देखकर लोग हैरान और अचंभित हो गए। ईश्वर की कृपा से दोनों हाथियों ने सुरक्षित रूप से पुल पार कर लिए।

बृहस्पतिवार तारीख 25 को माही नदी पर मद्यगोष्ठी हुई तो मेरे मित्रों ने और घनिष्ठ सेवकों ने खूब छलकते हुए प्यालों का आनन्द लूटा। मैं यहां चार दिन ठहरा। इसके दो कारण थे, पहले तो यह स्थान बड़ा सुन्दर था, दूसरे मैं चाहता था कि नदी पार करने में लोग परेशान न हो जाएं"।

मंगलवार तारीख 30 को शादी लश्कर मानव नदी के तअ पर ठहरा, तारीख 2 आबान बृहस्पतिवार को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया। महावत खां के पुत्र अमानउल्ला को एक हजार जात और तीन सौ सवारों का मनसब और राय साल के पुत्र गिरधर को एक हजार जात और आठ सौ सवार का मनसब दिया। खाम आजम के पुत्र अब्दुल्ला को एक हजार जात और तीन सौ सवार का मनसब प्राप्त हुआ। मैंने दिलेर खां को जो गुजरात का एक जागीरदार था, एक घोड़ा एक हाथी दिया। शाहबाज खा कम्बू का पुत्र रणबाजखां आदेशानुसार दक्षिण से आया तो उसकी बंगस की सेना का बख्शी और वाकियानवीस नियत किया गया और उसका मनसब 800 जात, 400 सवार निश्चित हुआ। मैंने शुक्रवार तारीख 3 को प्रयाण किया इस मंजिल में मेरे पुत्र शाहजहां के पुत्र शाहजादा शुजा जिसका पालन पोषण नूरजहां बेगम की गोद में हो रहा था और जो मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय है पेट फूल जाने की बीमारी से ग्रस्त हो गया अनुभवी लोगों ने अनेक उपाय किये परन्तु सब निष्फल हुए उसकी बेहोशी से मुझे होश नहीं रहा। जब दृश्यमान चिकित्साएं विफल हो गई तो मैंने ईश्वर के दरबार में बच्चे की स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए दण्डवत की। ऐसी स्थिति में मुझे ख्याल आया कि मैंने ईश्वर के नाम पर व्रत लिया था कि मेरी आयु 50 वर्ष व्यतीत हो जाने पर मैं बंदूक से शिकार करना बन्द कर दूंगा और अपने हाथ से किसी प्राणी को क्षति नहीं पहुंचाऊगा अब मैंने सोचा कि यदि बच्चे के स्वास्थ्य के लिए मैं इस तारीख से गोली मारना छोड़ दूँ तो सम्भव है उसके प्राण अनेक पशुओं के प्राणों की रक्षा के साधन बन जावें अन्त में सच्चे अभिप्राय और

विश्वास के साथ मैंने ईश्वर के प्रति व्रत लिया कि आज से मैं अपने हाथ से किसी प्राणी की हिंसा नहीं करूंगा। ईश्वर के अनुग्रह से उसकी बीमारी कम हो गई। जब मैं अपनी माता के गर्भ में था तो अन्य बच्चों की भांति मैंने कोई हरकत नहीं की। दासियों को अचम्भा हुआ और उन्होने मेरे पिता अकबर से निवेदन किया। उस समय वे चीतों द्वारा शिकार करने में लगे हुए थे। उस दिन शुक्रवार था मेरी रक्षा के निमित्त उन्होंने व्रत लिया कि अपने जीवन में शुक्रवार के दिन वह चीतो द्वारा शिकार नही करेगें। अपने जीवन के अन्त तक वे इस निश्चय पर दृढ रहे और उनकी आज्ञानुसार मैंने भी अब तक शुक्रवार के दिन चीतों द्वारा शिकार नहीं किया है अन्त मैं शाह शुजा की निर्बलता के कारण मै इस मंजिल पर तीन दिन तक ठहरा और प्रार्थना की कि उसको प्राकृतिक जीवन[1] प्रदान किया जावे।

बुधवार तारीख 8 को मैने प्रयाण करके 9 तारीख को मुकाम किया और 1 बडे तालाब के निकट डेरे लगवाये। शाहजहां ने 1 कश्मीर शैली की नाव बनाकर मुझे भेट की जिनमे बैठक चांदी की बनी हुई थी। सायंकाल इस नाव में बैठकर मै तालाब में घुसा। आज बगला का बख्शी आबिद खां आया और उसको दीवान–ए–बूयुतात का पद देकर सम्मानित किया गया। सरफराज खा को जो गुजरात में सेवा करता था एक निशान, एक घोडा और एक हाथी देकर जाने की इजाजत दे दी, इजाजत खा को जो बगश की सेना में था निशान देकर सम्मानित किया गया। शुक्रवार तारीख 10 को प्रयाण का आदेश दिया गया और मीर मीरान का मनसब बढाकर 2000 जात और 600 सवार कर दिया गया शनिवार तारीख 11 को डेरे दोहद पहुचे।

औरंगजेब का जन्म

रविवार तारीख 12 आबान के सायंकाल जब मेरे राज्यारोहण का 13 वा वर्ष था और तदनुसार 15 जील्कदा 1027 हिजरी था और तुलाराशि 19 वें अंश मे था तो ईश्वर की कृपा से मेरे पुत्र शाहजहा को आसफ की पुत्री से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। मुझे आशा है कि उसका आगमन इस अमर साम्राज्य के लिये शुभ होगा। इस स्थान पर 3 दिन ठहर कर बुघवार तारीख 15 आबान का समरना नामक गांव पर मुकाम किया। यह आवश्यक था कि यथा सम्भव मुबारक शम्बा के दिन का स्वागत समारोह किसी नदी के तट पर स्वच्छ स्थान पर किया जावे और पास ही ऐसा कोई स्थान नही था। इसलिए बृहस्पतिवार की रात को 16 तारीख को जब सूर्य उदय होने वाला था तो

बाकूर के तालाब के तट पर मुकाम किया गया। सायंकाल मद्यगोष्ठी हुई और मैंने अपने कुछ निजी सेवकों को शराब दी। शुक्रवार तारीख 17 को प्रयाण का आदेश दिया गया। पास ही केशवदास मारू एक जागीरदार है। आदेशानुसार वह दक्खिन से आया और दरबार में हाजिर हुआ।

शनिवार तारीख 18 आबान को लश्कर रामगढ में था। आज से कुछ दिन पहले सूर्योदय से तीन घडी पूर्व आकाश में रोशनी का एक स्तम्भ सा दिखाई दिया और फिर प्रतिरात्रि को यह 1 घड़ी पहले प्रकट होने लगा। जब इसका आकार पूरा हो गया तो यह भाला जैसा दिखाई देता था इसकी दोनों नोंकें पतली थी अगर मध्य भाग मोटा था यह दराती की भांति मुड़ा था। इसकी पीठ दक्षिण की ओर चेहरा उत्तर की ओर था। अब यह सूर्योदय से 1 पहर पूर्व दिखाई दिया। ज्योतिषियों ने बैध यन्त्र द्वारा इसके आकार को देखा। यह 24 अंश तक पहुंचता था। यह ऊँचे आकाश में घूम रहा था परन्तु इसकी गति अपनी ही थी। यह पहले वृश्चिक राशि में और फिर तुला राशि में था। यह दक्षिण की ओर झुका हुआ था। ज्योतिषि लोग इसको भाला कहते हैं। इनका कहना है कि इसका प्रकट होना यह बतलाया है कि अरब के शासको को बीमारी होगी और शत्रु उनको दबा लेंगे सत्य तो ईश्वर ही जानता है। इसके 16 दिन बाद उस कक्ष में 1 तारा दिखाई दिया। इसका सिर चमकदार था इसकी पूँछ दो तीन गज लम्बी थी। परन्तु चमकदार नहीं थी। अब इसको प्रकट होते हुए 8 रातें हो चुकी है। जब ये लुप्त हो जायेगा तो इसके परिणाम को देखा जायेगा।

रविवार तारीख 19 को यहीं ठहर कर सोमवार को मै शीतल खेडा नामक गांव पर ठहरा और मंगल तारीख 21 को भी यहीं मुकाम रहा मैने रणबाज खां के हाथ रशीद खां अफगान के लिये 1 खिलत और 1 हाथी भेजा। बुधवार तारीख 22 को लश्कर ने परगना मदनपुर में विश्राम किया बृहस्पतिवार तारीख 23 को मैंने यही ठहर कर मद्य गोष्ठी की और दराब खां को एक नादिरी पोशाक दी। शुक्रवार को यहीं ठहर कर शनिवार को नवारी परगने में लश्कर में मुकाम किया। रविवार तारीख 26 को चम्बल नदी पर डेरे लगे और सोमवार का कहनर नदी पर मुकाम किया। मगलवार तारीख 28 को उज्जैन नगर के निकट शाही निशान पहुंच गये। अहमदाबाद से उज्जैन तक 98 कोस की दूरी है। इसको 28 मंजिलों और 41 मुकाम करके पार किया गया था। इस प्रकार 2 मास और 9 दिन लगे।

जदरुप से भेंट

मैं जदरुप से मिला। यह हिन्दू धर्म में बड़ा तपस्वी है। मैंने इसकी परिस्थिति का विवरण पहले ही पूर्व पृष्ठों में दे दिया है। मैं उसके साथ कालियादह देखने गया। वास्तव में इसकी संगति बड़ी लाभकारी है।

मेरे पुत्र शाहजहां ने अपने पुत्र औरंगजेब का जन्म दिन नहीं मनाया था। उसने उज्जैन के मुकाम पर निवेदन किया कि--शुक्रवार तारीख 30 का समारोह उसके निवास पर किया जाये। मैंने उसकी इच्छा मान ली और उसी के स्थान पर यह दिन आनन्द के साथ व्यतीत किया मेरे सेवकों को जिनका इस प्रकार के समारोहों में प्रवेश हो सकता है लबालब भरे हुए प्यालों से बडे प्रसन्न हुए। मेरा पुत्र शाहजहा बच्चे को मेरे सामने लाया । तश्तरी भरे मोती, जडाऊ आभूषण, 50 हाथी 30 दास--दासियां उसने मुझे भेंट किये और कहा कि बच्चे का नाम क्या होना चाहिए। ईश्वर की कृपा से नामकरण अनुकूल घडी में किया जायेगा। सब भेंटों का मूल्य 200,000 रुपये होगा।

इस दिन अजुजुद्दौला ने अपनी जागीर से आकर चौखट का चुम्बन किया और 81 मोहरें और 1 हाथी भेंट किया। कासिम खां ने जिसको बंगाल की सूबादारी से अलग कर दिया गया था। 1000 मोहरें भेंट की। जब मेरा लश्कर जा रहा था तो मैंने एक ज्वार का खेत देखा। ज्वार के पेड पर गया एक भुट्टी होती है। परन्तु यहां हरेक पेड़ पर 12 भुट्टियां थी।

शनिवार को दूसरी बार मुझे जदरूप से मिलने की इच्छा हुई। दोपहर की नामाज के बाद मै नाव में बैठकर उसने मिलने गया। सायंकाल को मैं दौड़कर उसकी गुफा में गया और उसकी संगति का आनन्द लिया। धार्मिक कर्तव्यों के विषय में और बह्मज्ञान के विषय में मैंने उसके उच्च विचार सुने। यह सूफी मत के सिद्धान्तों की स्पष्ट व्याख्या करता है, और उसकी संगति में बड़ा आनन्द आता है। यह बात बढा--चढाकर नही की गई है। उसकी आयु इस समय साठ वर्ष की है। उसने 22 वर्ष की आयु मे सब प्रकार के मोह का त्याग कर दिया था और दृढता के साथ सन्यास मार्ग पर पदार्पण किया था। उसने अडतीस वर्ष दिगम्बर वेश मे व्यतीत किये है। जब मैंने उससे विदा मांगी तो उसने कहा मै किन शब्दों में ईश्वर को धन्यवाद दूं कि मै ऐसे न्यायप्रिय बादशाह के राज्य मे मैं रहता हूं जो मुझे सर्वथा सन्तोष के साथ अपने ईश्वर की भक्ति करने देता है, और मेरे प्रयोजन की प्राप्ति मे कोई बाधा नही होती और मेरी शान्ति भंग नहीं की जाती।

सोमवार 4 तारीख, मंगलवार ता. 5 और बुद्धवार ता. 6 को मैं प्रयाण करता रहा। बृहस्पतिवार ता. 7 को मैंने तालाब के तट पर उत्सव मनाया।

नूरजहां कुछ उर्से से बीमार थी हिन्दू और मुसलमान चिकित्सकों ने औषधियों का प्रयोग किया परन्तु वे सफल नहीं हुए फिर हकीम रुइल्ला चिकित्सा करने लगा। ईश्वर की सहायता से थोड़े समय में ही उसको स्वास्थ्य लाभ हुआ। इस उत्तम सेवा के पुरस्कार स्वरूप मैंने उसका मनसब बढाया तीन गांव उसको जागीर के दिये और उसको चांदी से तुलवा कर चांदी उसी को दे दी। शुक्रवार ता. 8 से रविवार तक मैं प्रयाण करता रहा बहुत से तीतर पकड़े गये। पिछले रविवार को राणा अमरसिंह के पुत्र कुंवर करण ने आकर मुझे दक्षिण विजय पर बधाई दी। एक सौ मौहरें और एक हजार रुपये नजर किये। इक्कीस हजार रुपये के मूल्य के जडाऊ बर्तन भेंट किये। कुछ घोडे और हाथी पेशकश में दिये। घोडे और हाथी तो मैंने लौटा दिये और शेष ले लिये। दूसरे दिन मैंने उसको खिलअत दी अगले दिन कुतुबुल मुल्क के वकील मीर शरीक को एक हाथी दिया। शहीद हिजबर खां को मेवात की फौजदारी देकर इसका मनसब एक हजार जात ओर पांच सौ सवार कर दिया। सईद मुबारक को रोहताश का दुर्ग का किलेदार बनाया। बृहस्पतिवार ता. 14 को सन्धार गांव में मुकाम करके गोष्ठी की गई और कुछ चुने हुए सेवकों को शराब पिलाकर जश्न किया गया। मैंने आगरे से शिकारी पक्षी मंगवाये।

राजा सूरजमल का विद्रोह

आज राजा सूरजमल (राजा बासू के पुत्र) के विद्रोह की खबर आई। बासू के कई पुत्र थे। उपरोक्त पुत्र सबसे बडा था, परन्तु उसके दुष्ट विचार और बुरी आदतों के कारण उसका पिता उसे कैद में रखता था बासू की मृत्यु के बाद मैंने उसकी सेवाओ का विचार करके सूरजमल कों राजा की उपाधि दी। दो हजार का मनसब दिया और इसके पिता को जागीर दी। उसके पिता की सम्पत्ति भी उसको वापिस दे दी। जब मुर्तजा खां को कांगडा विजय के लिये भेजा गया तो राजा सूरजमल को उसका सहायक बनाया गया था। सूरजमल को उसका सहायक बनाया गया क्योंकि वह उस प्रदेश का मुख्य जमींदार था और प्रत्यक्ष में वह स्वामी भक्त था तथा सेवा करने का उसमें बड़ा उत्साह था। जब वह स्थान पर पहुंचा तो मुर्तजाखां ने दुर्ग का घेरा और तंग किया। स्थिति को देखकर इस दुष्ट राजा बासू ने समझा कि मुर्तजाखां को विजय प्राप्त हो जावेगी। इसलिए वह अडचनें डालने लगा। झगड़े करने लगा और मुर्तजाखां ने स्पष्ट लिखकर भेजा कि उसके व्यवहार से यह स्पष्ट है कि उसमें विद्रोह की भावना और स्वामी भक्ति का

अभाव है वहा मुर्तजाखां जैसे योग्य अफसर के होते हुए इस दुष्ट को उत्पात की तैयारी करने का अवसर नहीं मिला। उसने मेरे पुत्र शाहजहां को लिखा कि "मुर्तजाखां मेरा विरोधी है और मुझ पर विद्रोह का आरोप लगाता है मुझे आशा है कि मुझको दरबार मे बुला लिया जावेगा। जिससे मेरे प्राण बच जावेगें।" यद्यपि मुझे मुर्तजाखां पर पूरा विश्वास था परन्तु सूरजमल ने दरबार में बुला लिए जाने की प्रार्थना की तो मेरे मन में संदेह हुआ कि सम्भवतः राजद्रोही लोगों के कहने से मुर्तजाखां ने राजा वासू पर बिना विचारे आरोप लगाया हो। अतः मेरे पुत्र शाहजहां की प्रार्थना पर मैंने राजा बासू के अपराध पर ध्यान नहीं दिया और उसको दरबार मे बुला लिया। ठीक इसी समय मुर्तजाखां की मृत्यु हो गई और कांगडा दुर्ग की विजय में विलम्ब हो गया। फिर दूसरा सेना नायक भेजा तब विजय प्राप्त हुई। जब यह राजद्रोही व्यक्ति दरबार में आया तो परिस्थितिवश मैंने उसको दक्षिण की विजय के लिए अपने पुत्र शाहजहां के साथ भेज दिया। फिर जब दक्षिण इस अमर साम्राज्य के सेवकों के कब्जे में आ गया तो राजा बासू को कांगडा दुर्ग के घेरे पर निगरानी रखने के लिए भेजा गया। उस पर्वतीय देश में इस जैसे कृतघ्न और झूठे आदमी को वापिस भेजना सावधानी का कार्य नहीं था परन्तु सारा उत्तरदायित्व मेरे पुत्र ने अपने ऊपर ले लिया था इसलिए मुझे उसी पर सब काम छोडना पडा। मेरे पुत्र ने अपने एक निजी सेवक ताकी के साथ और मनसबदारो महादियों और शाही बन्दूकचियों की सेना के साथ इसको नियुक्त कर दिया। इसका उल्लेख किया जा चुका है स्थान पर पहुचने के बाद राजा बासू ताकी के प्रति शत्रुता और चालाकी करने और उसके विषय में बुरी रिपोर्ट भेजने लगा और फिर यह भी लिखा कि ताकी से काम नहीं चलेगा यदि दूसरा सेनापति नियुक्त कर दिया जावेगा तो दुर्ग पर जल्दी विजय प्राप्त हो जावेगी। तब शाहजहा ने ताकी को दरबार मे बुला लिया और अपने एक मुख्य सेवक राजा विक्रमाजीत को ताजा सैनिक देकर यह सेवा करने के लिए भेज दिया। जब वासू ने देखा कि उसकी युक्तियों और धोका नही चल सकता तो विक्रमाजीत के आगमन से पहले ही उसने दरबार के कितने ही सेवको की छुट्टी दे दी। बहाना यह किया कि ये लोग उचित व्यवस्था के बिना ही लम्बे अरसे से सेवा कर रहे हैं। इसलिए राजा विक्रमाजीत के आने से पहले अपनी जागीरो मे जाकर अब ये सुसज्जित होकर आवेगे। इससे स्वामिभक्त सैनिक बिखर गए ओर केवल थोडे से

---

1 यह मालवे का मांडू नहीं है। यह वास्तव मे हिन्डौन है।

अनुभवी लोग वहां रह गये। फिर अवसर देखकर वह राजद्रोह प्रगट करने लगा। सईद सफी बारहा ने साहस करके अपेन भाई–बन्धुओं के साथ उसका सामना किया तो वह (सईद) शहीद हो गया और आहत लोगों को बंदी बनाकर राजा बासू ले गया। कुछ लोग प्राण प्रेम के कारण सुरक्षित स्थान मे भाग गए। इस बदमाश ने पर्वतीय देश से लगे हुए परगनों को अपने कब्जे में कर लिया। यह अधिकांश इतिमादुद्दौला की जागीर में थे परन्तु वह इन पर हमला करने से और इन्हें लूटने से किंचित भी नहीं हिचका। मुझे आशा है कि जितनी शीघ्रता से इसने इनको दबा लिया है उतनी ही शीघ्रता से उसको अपने कर्मों का फल मिल जावेगा।

रविवार ता. 17 को घाटी चादां पार की। सोमवार ता. 18 को आनसिपार अतालीख खानखाना प्रधान सेनापति ने चौखट चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। वह बहुत दिन से मेरे पास उपस्थित नहीं हुआ था। अब मेरा लश्कर खानदेश और बुरहानपुर की सरकारों के पास होकर जा रहा था। उसने मेरी सेवा में आना चाहा। मैंने आदेश दिया कि यदि उसका चित्त सब भांति शान्त हो तो वह बिना किसी को साथ लेकर आ जावे और शीघ्र ही वापिस लौट जावे अतः वह आज शीघ्र आया तो उसको सब प्रकार की कृपायें और लाभ प्राप्त हुए। उसने 1000 मौहरें और 1000 रूपए भेंट किये।

लश्कर को घाटी पार करने में बडा कष्ट हुआ था। इसलिए मैने आदेश दिया कि मंगलवार तारीख 9 को सब विश्राम करें। बुधवार तारीख 20 और 2 को प्रयाण करके मैंने फिर प्रयाण किया और सिन्ध नदी के तट पर मद्य गोष्ठी की। मैंने सुमेर नामक एक खासा घोड़ा खानखाना को दिया। शुक्रवार तारीख 22 को शनिवार तारीख 23 को 2 बार कूच किया और आज एक आश्चर्यजनक जल प्रपात देखा। इसका जल अत्यन्त स्वच्छ है और बहुत ऊँचे स्थान से उबलता सा और शोर मचाता हुआ गिरता है। इसके सब ओर विश्राम स्थान बने हुए हैं जहां रहकर ईश्वर का भजन किया जा सकता है। वास्तव में मैंने ऐसा सुन्दर जल प्रपात अभी हाल में कोई नहीं देखा है। मैं कुछ समय के लिए इसे देखकर मुग्ध हो गया। रविवार तारीख 24 को मैं यहीं ठहरा और नाव में बैठकर तालाब में गया जो दौलतखाने के पास ही था और युगांबी मारे। सोमवार तारीख 25 और मंगलवार तारीख 26 तथा बुधवार तारीख 27 को मैं प्रयाण करता रहा और मैंने अपने ही पहनने का भेड के चमड़े का कोट जो मेरे शरीर पर ही था खानखाना को

---

1 यह बरमद माता का स्थान था जो बयाने के डेढ़ कोस और भरतपुर जिले में है जहांगीर की माता ने यह बावडी और बाग बनाया था बाग तो समाप्त हो गया किन्तु बावडी और उस पर की इमारत अभी है उस पर एक शिलालेख भी है।

दे दिया। और अपने तबेले के 7 घोडे जिनकी मै सवारी किया करता था उसे दिए।

रणथम्भौर

रविवार तारीख 2 इलाही मास दे को शाही निशान रणथम्भौर दुर्ग पर फहराये यह हिन्दुस्तानियो का बडा दुर्ग है। सुल्तान अल्लाउद्दीन खिलजी के समय मे यह राव पिताम्बर देव के अधीन था। सुल्तान इसको लम्बे अर्से तक घेरे रहा और बडे प्रयास के बाद इस पर विजय प्राप्त की। बादशाह अकबर के शासन के आरम्भ मे इस दुर्ग पर सुरजनसिह हाडा का अधिकार था। उसके पास 6–7 हजार सवार सदा तैयार रहते थे। पूज्य अकबर ने ईश्वर की सहायता से 1 मास और 12 दिन के घेर के बाद इस पर विजय प्राप्त की। राय सुरजन ने सौभाग्य से प्रेरित होकर अधीनता स्वीकार की और वफादार सेवको मे सम्मिलित हो गया। फिर वह आदरणीय और विश्वसनीय अमीरो मे गिना जाने लगा। इसके पश्चात उसका पुत्र राय मौज भी बडे अमीरो मे था। अब राव सुरजन का पोता सर बुलन्द राय मुख्य उच्चधिकारियो मे है। सोमवार तारीख 3 को मै दुर्ग को देखने के लिए गया। दो पहाडियॉ पास–पास स्थित है। एक का नाम रण और दूसरी का नाम थम्मौर है। दुर्ग थम्भौर पहाडी पर बना हैं। दोनो पहाडियो का नाम मिलाकर इसको रणथम्भौर कहा जाता है। यद्यपि यह दुर्ग बडा ही दृढ है इसमे जल की विपुलता है। परन्तु रण की पहाडी स्वय एक दृढ दुर्ग है और इस पहाडी पर कब्जा हो जाने पर ही इस दुर्ग पर कब्जा हो सकता है। इसलिए मेरे पूज्य पिता ने इस पहाडी के शिखर पर, तोप चढाने का और दुर्ग के अन्दर की इमारतो को उसका निशाना बनाने का आदेश दिया था। पहला ही गोला राय सुरजन के महल की चौखडी पर गिरा इससे उसका धैर्य हिल गया और उसने समझा कि दुर्ग को समर्पित करके ही वह सुरक्षित रह सकता है। इसलिए उसने शाहजहा की गद्दी के आगे विनीत होकर सर झुकाया बादशाह ने उसके अपराध क्षमा करके उसके सब बहाने मान लिये।

मेरा विचार था कि रात्रि दुर्ग मे ही व्यतीत की जाये। और अगले दिन लश्कर मे वापिस आऊँ परन्तु दुर्ग की इमारते हिन्दू ढग की बनी हुई थी। कमरे छोटे थे और हवादार नही थे इसलिए वे मुझे पसन्द नही आये अत मैं वहा नही ठहरा दुर्ग की दीवार के पास दस्तम खा ने एक स्नानागार बना रखा था। जो मैने देखा। एक छोटा सा बाग और नशामन (निवास) बना

---

1 यह झील एक नदी का बाघ बनाकर बनाई गई थी।

हुआ है जहां से खुला मैदान दिखाई देता है। सो दुर्ग में इससे बढ़कर कोई स्थान नहीं है। दस्तम खां स्वर्गीय बादशाह का एक अमीर था और उसकी की सेवा में बड़ा हुआ था। उसको विश्वसनीय समझकर यह दुर्ग अकबर ने उसके सुपुर्द किया था।

दुर्ग और मकानों को देखने के बाद मैंने आदेश किया कि मेरे सामने वे अपराधी लाये जावे जो दुर्ग में कैद हैं। जिसमें से प्रत्येक के मामलों को देखकर न्यायानुसार आदेश दूं। मैंने उन लोगों के सिवाय जिन्होंने हत्या की थी या जिनकी मुक्ति से उत्पात या विपत्ति की शंका थी सबको छोड़ दिया और प्रत्येक बन्दी को उसकी परिस्थिति के अनुसार खर्च और खिलअतें दी। मंगलवार तारीख 4 के सायंकाल में शाही निवास पर आया उस समय 1 पहर और 3 घड़ी व्यतीत हो चुकी थी। 5 तारीख को लगभग 5 कोस चलकर बृहस्पतिवार तारीख 6 को मैंने मुकाम किया इस दिन खानखाना ने रत्न जड़ाऊ बर्तन कपड़े और एक हाथी भेंट किया पसन्द की चीजें रखकर शेष मैंने वापिस कर दी जो चीजें रखीं उनका मूल्य 150,000 रुपये था। शुक्रवार तारीख 7 को मैंने 5 कोस प्रयाण किया। मेरे पुत्र शाहजहां को जुरना (एक प्रकार की सारस) के शिकार का शौक था। इस काम के लिए वह बाजों का प्रयोग करता था उसके कहने पर मैं भी प्रातःकाल सवार होकर निकला। मुझे इस शिकार में बड़ा आनन्द आया। इतने बडे पक्षी का बाज पीछा करता था। उसमें बड़ा साहस होता है कि वह अपने पंजों से उसको पकड लेता है। शनिवार तारीख 8 को साढे 4 कोस चलकर रविवार तारीख 9 को मैंने मुकाम किया। मैंने खानखाना को 1 खिलत, 1 जडाऊ तलवार और 1 निजी हाथी झूल सहित देकर सम्मानित किया। और दक्खिन में खानदेश को उसे विदा कर दिया वह सल्तनत का स्तम्भ (सितून–ए–दलित) है। मैंने उसको 7000 जात और 7000 का मनसब दिया। उसकी लश्कर खां से नहीं बनती थी इसलिए मैने आबिद ख़ा को दीवान–ए–बूयूतात के पद पर नियुक्त किया और उसे 1000 जात और 400 सवारों का मनसब दिया और 1 घोड़ा, 1 हाथी और 1 खिलअत देकर उस सूबे में भेज दिया। इसी दिन काबुल से खान दौरा ने आकर 1000 मोहरें, 1000 रुपये, 1 मोतियों की माला, 50 घोड़े, 10 रानी ऊँट, कुछ बाज और चीनी के बर्तन आदि भेंट किए। सोमवार तारीख 10 को मैंने सवा 3 कोस और मंगलवार तारीख 11 को पौने 6 कोस प्रयाण किया और उस दिन खान दौरा ने अपने सेना की सलामी दिलाई जिसमें 1000 मुगल सवार थे। अधिकांश के पास तुर्की और कुछ ईराकी और कुछ मजन्नस घोड़े थे। उसके सवारों में से

1. इलाहीगज 40 उंगुल का होता है। अकबर नामा में इस तालाब का नाम अनूप तालाब है।

अधिकाशं हटा दिये गये थे कुछ महावत खां के पास और शेष उसी सूबे मे और कुछ लाहौर से उसे छोड़कर सल्तनत के विभिन्न भागों में पहुंच गये थे। फिर भी उसके पास अच्छी घुड़सेना थी। वास्तव में खानदौरा इस युग़ में वीरता और सेनापतित्व की दृष्टि से अद्वितीय है। परन्तु अब वह क्षीण हो चुका है और उसकी दृष्टि निर्बल हो गई है। उसके दो होशियार लड़के हैं। वह बुद्धिमान और समझदार है परन्तु उनके लिए अपने पिता की बराबरी करना कठिन है। आज मैंने उसको और उसके पुत्रों को खिलतें और तलवारें दीं। रविवार तारीख 12 को साढ़े 3 कोस चलकर मैं मांडू[1] के तालाब पर ठहरा। तालाब के बीच में एक पत्थरों की इमारत है। जिसके 1 स्तम्भ पर 1 सुन्दर शेर लिखा हुआ है। मुझे यह पसन्द आया। मैंने एक इतना ही अच्छा दूसरा शेर सुना।

बृहस्पतिवार तारीख 13 को मैंने यही मुकाम किया। अब्दुल अजीज खां बंगस से यहां आया। फतहपुर का फौजदार इकराम खां भी आया। दक्खिन के बख्शी ख्वाजा इब्राहीम खां का अकीदत खा की उपाधि दी गई। मीर हाजी जो इस सूबे में नियुक्त है बडा वीर युवक सैनिक है। उसको शरजा खां की उपाधि और निशान दिया गया। शुक्रवार तारीख 14 को मैंने सवा 5 कोस प्रयाण किया शनिवार तारीख 15 को मैं 3 कोस कूच करके बयाने के पास ठहरा। वहां महिलाओं के साथ दुर्ग के ऊँचे स्थान पर दृश्य देखने गया। हुमायूं के बख्शी मोहम्मद ने जो यहां का किलेदार था यहां ऊँचा हवादार मकान बनाया था जहां से मैदान दिखाई देता है। पास ही शेख बहलूल की कब्र है जो अच्छी है। यह शेख मोहम्मद घोष का बडा भाई था और ईश्वर के नाम पर मन्त्र तन्त्र करने मे निपुण था। हुमायूं का इससे बडा प्रेम था। जब बंगाल पर विजय की गई तो यह शेख वहां कुछ दिन ठहरा था। मिर्जा हिन्दाल हुमायूं के आदेशानुसार आगरा में था। कुछ लोभी सेवक जो राजद्रोही थे बंगाल से मिर्जा हिन्दाल के पास आये और इससे द्रोह करवा दिया। विचारहीन मिर्जा ने अपने नाम का खुतना पढ़ाकर खुले तौर पर विद्रोह कर उत्पात कर दिया। तब बादशाह ने शेख बहलूल को बुरा भला कहने के लिये मिर्जा के पास भेजा और उससे कहलाया कि व्यर्थ बातों को छोडकर वह सच्चाई के मार्ग पर आ जाये। मिर्जा को इन मूर्खो की बातें अच्छी लगती थी इसलिए उसने स्वामिभक्ति ग्रहण नही की और इन लोगों को बातों में आकर उसने शेख बहलूल को चार बाग में शहीद कर दिया। यह बाग बाबर ने जमना के तट पर बनाया था। मोहम्मद बख्शी शेख का शिष्य था। यह बयाना दुर्ग में उसके शव को ले गया और उसे दफना दिया गया।

रविवार तारीख 16 को साढ़े 4 कोस प्रयाण करके मैं बराह की मंजिल पर पहुंचा यहां मरियम जमानी के आदेश से परगना दूसत में एक बाग और बावड़ी बनाये गये थे यह मार्ग में ही थे और बड़े सुन्दर थे। मैंने उन्हें जाकर देखा और कर्मचारियों से मालूम हुआ कि इनके निर्माण से 20000 रुपये खर्च हुए थे।[1] मंगलवार तारीख 18 को साढ़े 3 कोस प्रयाण करके मैं दयामऊ नामक गांव में ठहरा। बुधवार तारीख 19 को ढाई कोस चलकर मैंने फतहपुर की झील पर मुकाम किया। जब दक्षिण की विजय का विचार हुआ तो रणथम्भौर से उज्जैन तक के फासलों का हिसाब लगाया गया था। उनका उल्लेख अनावश्यक है। राणा पर विजय प्राप्त करने के लिए और दक्षिण को साम्राज्य में मिलाने के लिए मैं रवाना हुआ तब से और आज तक 5 वर्ष और 1 मास हो गये हैं। आगरे में प्रवेश करने का मुहूर्त ज्योतिषियो ने मुबारक शम्बा तारीख 28 मास दाह मेरे 13 वर्ष में तदनुसार मुहर्रम अन्तिम दिन हिजरी 1028 (7 जनवरी 1619) निश्चित किया था।

आगरा में प्लेग

इस समय फिर समाचार मिले कि आगरे में प्लेग रोग फैला हुआ है जिससे लगभग 100 व्यक्ति प्रतिदिन मर रहे हैं। कांख में या जाख में या गले के नीचे गांठ बन जाती है और लोग मर जाते हैं। तीन वर्ष से शरद ऋतु मे यह रोग फैल रहा है ग्रीष्म के आरम्भ होने पर यह मिट जाता है। यह विचित्र बात है कि इन तीन वर्षो में यह रोग आगरे के पास के कस्बों और गांवों मे फैल गया है परन्तु फतहपुर में इसका चिन्ह भी नहीं है। यह अमानाबाद तक जो फतहपुर से साढे 2 कोस दूर है जो पहुंचा है। वहां के लोग घर बार छोड़कर अन्य ग्रामों में चले गये हैं। जब कोई विकल्प नहीं था। सावधानता आवश्यक समझकर यह निश्चय किया गया कि शुभ मुहूर्त में विजयी लश्कर फतहपुर के आबाद हिस्से में प्रसन्नता पूर्वक प्रवेश करे और जब बीमारी और अभाव शान्त हो जाये और दूसरा शुभ मुहूर्त निकले तब सर्व शक्तिमान ईश्वर की कृपा होने पर राजधानी में प्रवेश करे।

बृहस्पतिवार को फतहपुर की झील तट पर स्वागत समारोह हुआ। फतहपुर में प्रवेश करने का दिन 28 तारीख को था। इसलिए मैंने इस स्थान पर 8 दिन मुकाम किया। मैंने आदेश किया कि झील के वृत्त को नापा जावे तो यह सात कोस निकला[1] इस मंजिल पर पूज्य मरियम जमानी के अतिरिक्त सब बेगमें और अन्तःपुर के निवासी और महल के सेवक मेरा स्वागत करने आये। मरियम जमानी अत्यन्त निर्बल हो गई थी। स्वर्गीय

आसफ खां की लडकी ने जो खान–ए–आजम के पुत्र अब्दुल्ला खां के घर मे है एक विचित्र और आश्चर्यजनक कहानी सुनाई और आग्रह किया कि इसको सच माना जावे। विचित्रता के कारण मै इसको लिख रहा हूं। उसने कहा एक दिन मकान के आंगन मे मैने एक चूहा उछलता और गिरता बडी परेशानी की हालत मे देखा वह शराबी की भाति सब और दौड रहा था और उसको जाने के लिए कोई रास्ता नहीं मिल रहा था मैंने अपनी एक दासी से कहा इसको पूछ पकडकर बिल्ली के सामने डाल दो। बिल्ली प्रसन्न हो गई। उसने कूद कर चूहे को अपने मूंह में दबा लिया परन्तु तत्काल ही उसने ग्लानि करके उसको डाल दिया। फिर शनैः शनैः बिल्ली के चेहरे पर दर्द और दुख दिखाई देने लगे। दूसरे दिन वह अघमरी हो गई तो मैंने उसको कुछ अफीम देना चाहा जब उसका मुंह खुल गया तो उसका तालू और जीभ काले दिखाई दिये तीन दिन तक उसकी हालत बुरी रही चौथे दिल वह ठीक हुई इसके बाद प्लेग के गांठ के दाने उस लडकी के निकल आये और जोर की बुखार और दर्द से वह बैचेन हो गई उसका रग काला पड गया और ज्वर बहुत बढ गया अगले दिन उसने वमन किया उसको कई दस्त हुए और मर गई। उस घर मे इसी प्रकार सात आठ व्यक्ति मर गये और बहुत से बीमार हो गये। तो मै उस बात को देखने या जो बीमार थे वह भी मर गये। परन्तु इस स्थान पर बीमारों के गांठे नही हुई। आठ नौ दिन मे सत्रह व्यक्ति मृत्यु के मार्ग के यात्री बन गये। उसने यह भी कहा कि जिस घर मे लोगो को ऐसी गांठे हुई और उन्होंने किसी को पानी पीने या हाथ पैर धोने बुलाया तो आने वाले लोगो की भी रोग लग या। अन्त मे ऐसे रोगियो के पास कोई नहीं जाता था।

शनिवार तारीख 22 को ख्वाजा जहां ने जो आगरे की देखभाल करता था आकर 500 मोहरे नजर की और 400 रुपये देने के लिए लाया। सोमवार तारीख 24 को उसे एक खास खिलअत दिया गया। मुबारक शम्बा तारीख 28 को जब 4 घडी व्यतीत हो चुकी थी तो शाही निशान शुभ मुहूर्त मे आजाद फतहपूर मे पहुचे। इसी मुहूर्त मे मेरे पुत्र शाहजहा की तुला का उत्सव किया गया। मैने आदेश दिया कि उसको सोने और अन्य वस्तुओ को तोला जावे। उसका 28 वा वर्ष शुभ घडी मे आरम्भ हुआ। ऐसी आशा है कि वह पूर्ण आयु प्राप्त करेगा। उसी दिन पूज्य मरियम जमानी (जहागीर की माता) आगरे से आई और मुझे उसकी सेवा मे उपस्थित होने का अमर सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे आशा है कि उसके पालन पोषण और स्नेह की छाया मुझ पर सर्दव बनी रहेगी। इस्लाम खां के पुत्र इकराम खां ने इस पडौस के फौजदार का कर्तव्य भली–भांति निभाया है इसलिये मैंने उसको

1500 जात और 1000 का मनसब दिया। मिर्जा रुस्तम सफवी के पुत्र सोहराब खां का मनसब 1000 जात और 300 सवार कर दिया गया। इस दिन मैं स्वर्गीय बादशाह अकबर की इमारतों को देखने गया और उन्हें शाहजहां को दिखाया। इनके बीच में एक बड़ा और स्वच्छ हौज काटे हुए पत्थरों का बनाया गया है जो कपूर तालाब कहलाता है। यह 16 गज का सम चतुष्कोण है और इसकी गहराई साढ़े 4 गज[1] है। स्वर्गीय पूज्य बादशाह के आदेश से इस तालाब को ताबें के पैसों और चांदी के रुपयों के भर दिया गया था। हिन्दुस्तानी हिसाब से 16,79000 रुपये डाले गये थे। बहुत लम्बे अर्से तक इससे लोगों का संतोष होता रहा।

रविवार 1 बहमान को हाफिज नाद अली को कुरान का पाठ करने के लिये 500 रुपये दिये गये। पिछले लम्बे अर्से तक बुदाग खां चिकनी के पुत्र मुहिब अली और अबुल कासिम गिलानी इस सल्तनत की शरण में सुख से रहे थे। इनको अन्धा करके ईरान के शासक ने रेतीले मैदान में भेज दिया था। इस साम्राज्य में इनको अपनी परिस्थिति के अनुसार निर्वाह के लिये वजीफा दिया गया। आज यह आगरे से दरबार में आये तो प्रत्येक को 1000 रुपये दिये गये। महल में मुबारक शम्बा मनाया गया और निजी सेवकों को मद्यपान करवाया। नसरुदुल्ला जिसकों मेरे पुत्र परवेज ने कूह दमन हाथी के साथ दरबान में भेजा था। आज विदा होकर वापिस चला गया। उसके हाथ जहांगीर नामा की एक जिल्द और एक तिपचाक घोड़ा भेजा गया। रविवार तारीख 8 को राजा अमरसिंह के पुत्र कंवर करण को 1 घोडा, 1 हाथी, 1 जड़ाऊ खपवा और 1 फूल कटार दिया गया और उसको वापिस अपनी जागीर पर जाने की इजाजत दी गई। तथा उसके साथ राजा के लिये 1 घोडा भेजा गया उसी दिन मैं अमानादाब शिकार करने गया और बृहस्पति तारीख 12 को महल में वापिस आ गया और रिवाज के अनुसार मद्य गोष्ठी क़ी ग़ई।

शुक्रवार तारीख 13 बहमन को मैं क्षमा सागर शेख सलीम चिश्ती के मजार पर गया और वहां फतवा पढा इस चिश्ती के उत्तम गुणों के विषय में पहिले ही लिखा जा चुका है। यद्यपि ईश्वर के भक्त करामात और आश्चर्य का प्रदर्शन नहीं करते तो भी कभी–कभी न चाहते हुए भी प्रदर्शन हो जाता है। इससे किसी को शिक्षा मिलती है। करामातों में एक करमात यहः हुई थी। मेरे जन्म से पहले इस शेख ने मेरे और मेरे दो भाईयों के जन्म का शुभ समाचार मेरे पिता को सुनाया था। फिर एक दिन मेरे पिता ने ऐसे ही उससे पूछा कि आपकी आयु इस समय कितनी है और आप दूसरे लोक में कब जायेगें। उसने उत्तर दिया गुप्त बातों का पता कीर्तिमान ईश्वर को ही है

बहुत आग्रह करने पर उसने मेरी ओर सकेत करके कहा जब किसी अध्यापक के पढाने से या दूसरे तरीके से यह शाहजादा कोई छन्द कठाग्र करके बोलेगा तो प्रकट होगा कि मैं ईश्वर मे कब मिल जाऊँगा यह सुनकर बादशाह ने उन लोगो को जो मेरी सेवा किया करते थे आदेश दिया कि मुझे गद्य या पद्य मे कोई बात नही बतलाई जावे। जब 2 वर्ष और 5 मास व्यतीत हो गये तो ऐसा हुआ कि एक स्त्री जिसको महल मे मेरे पास रहने का अधिकार था और जो मुझे नजर लगने से बचाने के लिये राई जलाया करती थी और खैरात लिया करती थी मुझे अकेला देखकर एक शेर सिखा गई। मैं शेख के पास गया और मैंने उसको यह शेर सुनाया। उसने तुरन्त ही बादशाह की सेवा मे जाकर सब हाल सुनाया उसी दिन ज्वर के चिन्ह प्रकट हुए। दूसरे दिन शेख ने बादशाह से निवेदन करवाया कि तानसेन कलावन्त को बुला दिया जावे। तानसेन शेख के पास जाकर गाने लगा फिर उसने बादशाह को बुलाया। जब बादशाह आया तो वह बोला "ईश्वर मे मिल जाने का समय आ गया है और मुझे आपसे अब रुखसत लेनी चाहिए" शेख ने अपनी पगडी उतार कर मेरे सिर पर रख दी और कहा "हमने सुल्तान सलीम को अपना उत्तराधिकारी बनाकर उसे ईश्वर के सुपुर्द कर दिया है। जो सब का रक्षक है। फिर धीरे–धीरे शेख की निर्बलता बढने लगी और उसकी मृत्यु के चिन्ह प्रकट होने लगे फिर वह अपनी प्रेमिका से जा मिला।

मेरे पिता के शासन काल का सबसे बडा कार्य यह रोजा है। यह विशाल और दृढ इमारत है। इस जैसी मस्जिद अन्य किसी देश मे नहीं है। यह सारी सुन्दर पत्थर की बनी हुई है। इसके निर्माण मे राजकोष से 5000,000 रुपये खर्च किये गये थे। कुतुबुद्दीन खा कोकलताश ने इस कब्र के चारो ओर महजर बनवाया था और गुबद और पोल का फर्श तैयार करवाया था। यह 5000,000 रुपये मे सम्मिलित नही है। इस मस्जिद के 2 दरवाजे है। 1 दक्षिण की ओर है जो बडा विशाल और सुन्दर है। इसकी महराब 12 गज चौडी 16 गज लम्बी और 52 गज ऊँची है। इसके सिरे पर पहुचने के लिए 32 सीढिया चढनी पडती है। दूसरा दरवाजा छोटा है और पूर्व की ओर है। मस्जिद की लम्बाई पूर्व से पश्चिम तक दीवारो की मोटाई भी सम्मिलित करने पर 212 गज है। इसमे से मक्सूरा साढे 25 गज, मध्य भाग 15 गज, सम चतुष्कोण और पिश्ताक या पोल 7 गज चौडी, 14 गज लम्बी और 25 गज ऊँची है। बडे गुबद के दोनो ओर हर एक 10 गज 10 गज है। फिर बरामदा है जिसमे स्तम्भ है। मस्जिद की चौडाई उत्तर दक्षिण तक 172 गज है। चारो और 90 बरामदे है और 84 कमरे है। प्रत्येक कमरा 5 गज लम्बा और 4 गज चौडा है। बरामदे साढे 7 गज चौडे है। मस्जिद

का सहन 143 गज लम्बा है। इसमें मक्सूरा बरामदे और दरवाजे सम्मिलित नहीं है। बरामदों, दरवाजों और मस्जिद के ऊपर छोटे–छोटे गुंबद बनाये गये हैं इनमें त्यौहारों पर और वार्षिक उत्सवों पर दीपक जलाये जाते हैं और कपडा से इन्हें ढका जाता है। सहन के नीचे 1 कुआ बनाया गया है जो वर्षा के पानी से भर जाता है। फतहपुर में पानी की कमी है और जो कुछ है वह खराब है। इस कुएं से शेख सलीम चिश्ती के कुटुम्बियों की दरवेशों को और मस्जिद के मुजाबिरों का वर्ष भर पानी मिल जाता है। बडे दरवाजे के सामने उत्तर पूर्व की ओर शेख की कब्र है। बीच का गुंबद 7 गज का है। इसके चारों ओर संगमरमर का पिश्ताक बना हुआ है। अब सामने संगमरमर की जाती है जो बड़ी सुन्दर है। इस कब्र से पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर एक दूसरा गुंबद है जिसमें शेख के पुत्रों और दामादों का तथा अन्य लोगों को जिनका इस कुटुम्ब से सम्बन्ध था और जो अमीर हो गये थे और बड़े पदों पर पहुंच गये थे दफनाया गया है। इनका उल्लेख इनके स्थानों पर किया गया है। इस समय इस्लाम खां का पुत्र जिसको इकराम खां की उपाधि है यहां का मुखिया है। उसमें शुभ चिन्ह दिखाई देते है और मुझे यह अच्छा लगता है।

बृहस्पतिवार ता. 19 को अब्दुल अजीजखां का मनसब बढ़ाकर दो हजार जात और एक हजार सवार कर दिया गया ओर उसका कांगडा दुर्ग विजय के काम पर और कृतघ्न सूरजमल को उखाड़ फेंकने के काम पर भेजा गया। उसकी एक हाथी और एक घोड़ा और खिलअत दी। इसी काम पर तुरसून बहादूर को रवाना किया मया। उसका मनसब 1200 जात और 450 सवार कर दिया उसको एक घोडा देकर विदा किया। इतिमादुद्दौला का मकान तालाब के तट पर स्थित था और लोग इसकी प्रशंसा करते और कहते थे कि यह बड़ा मनोहर स्थान है उसकी प्रार्थना पर बृहस्पतिवार ता. 26 को उसके मकान पर स्वागत हुआ उसने भेंटें की और बड़ा जलसा किया रात को खाने के बाद मैं महल में आ गया बृहस्पतिवार ता.3 इलाही मास इसफन्द अरमूज का सईद अब्दुल बहाव बारह का मनसब एक हजार जात और 500 सवार किया इसने गुजरात में अच्छी सेवा की थी। शनिवार ता. 12 को मैं शिकार के लिए अमानाबाद गया और रविवार तक महिलाओं के साथ शिकार में लगा रहा बृहस्पतिवार ता. 27 को मैं महल में वापिस आया।

मंगल को शिकार के समय नूरजहां बेगम के गले से एक मोतियों और लालों की माला गिर पड़ी इसमें एक लाल दस हजार रुपए की और एक मोती एक हजार रुपए का था। शिकारियों ने बुधवार को बहुत ढूंढ़ा परन्तु

कुछ नहीं मिला। मैंने समझा कि इस दिन का नाम कम शम्बा है। इसलिए आज कुछ नहीं मिलेगा मुबारक शम्बा (बृहस्पतिवार) मेरे लिए शुभ दिन है। उस दिन शिकारियों को थोडा सा परिश्रम करने पर ही दोनों रत्न मिल गए जो उन्होंने लाकर मुझे दे दिए उसी दिन मेरी चान्द्र तुला होनी थी और बसन्तबाडी का त्यौहार था साथ ही मऊ दुर्ग की विजय और सूरजमल की पराजय की खबर भी आई।

इसका विवरण यह है राजा विक्रमाजीत शाही सेना सहित जब उस प्रदेश में पहुंचा तो भाग्यहीन सूरजमल ने उसको युक्तियों द्वारा और बातें बनाकर रोकना चाहा परन्तु विक्रमाजीत मामले की वास्तविकता का जानता था इसलिए उसने सूरजमल की बातों पर ध्यान न देकर अपना कदम आगे बढाया थोडे से संघर्ष के बाद जब सूरजमल के बहुत से आदमी मारे गए तो वह भाग गया। मऊ और महरीये दुर्ग जिन पर सूरजमल को बड़ा भरोसा था आसानी से ले लिए गये। परम्परागत अधिकार के अनुसार उसके पिता के समय से आया हुआ उसका देश विजयी सेना ने छीन लिया और वह इधर–उधर भटकने लगा। वह पहाडियो की घाटियों में भाग गया। राजा विक्रमाजीत ने शाही सेना सहित उसका पीछा किया। जब इस स्थिति की खबर मुझे मिली तो मैंने फरमान जारी किया कि सूरजमल के पिता और उस खुद के बनाए हुए दुर्ग और इमारतों को भूमिसात कर दिया जावे। सूरजमल के एक जगतसिंह नामक भाई था। जब मैंने सूरजमल को राजा की उपाधि देकर अमीर बना दिया और उसको राज्य दे दिया तथा उसका कोई हिस्सेदार नहीं रक्खा तो मैंने जगतसिंह को सन्तुष्ट करने के लिए छोटा सा मनसब दे दिया और उसको बंगाल भेज दिया। दुःखी जगतसिंह अपने दिन बुरी दशा में काट रहा था और किसी अवसर की ताक में था। जब यह घटना हुई और मैंने जगतसिंह का बुलाकर राजा की उपाधि 1000 जात और 500 सवार का मनसब और खर्च के लिए 20000 रुपए दरब दिये एक जडाऊ खपवा एक खिलअत एक घोड़ा और एक हाथी देकर उसको राजा विक्रमाजीत के पास भेज दिया और फरमान जारी किया कि यदि यह अच्छी सेवा करे और स्वामीभक्ति दिखावे तो वह प्रदेश उसी के हाथ में सौंप दिया जावे।

मैंने नूर मंजिल के बाग ओर वहां हाल ही में बनायी गई इमारतों की प्रशंसा लगातार सुनी थी। इसलिए मैं सोमवार को बुस्तान सराय पहुंचा और मंगलवार वहां गुलाब के मनोहर बाग में आराम के साथ व्यतीत किया। बुधवार की सांयकाल नूर मंजिल को मैंने अलंकृत किया। इस बाग में 230 बीधा जमीन है और इसके सब ओर ईटों की और चूने की ऊंची और चौड़ी तथा उत्यन्त दृढ़ दीवार बनी हुई है। इसमें एक विशाल निवास स्थान है जो

बड़ा अलंकृत है। इसमें मनोहर हौजें हैं और बाहर एक बड़ा कुआं है जिसमें से 32 जोड़ी बैल निरन्तर पानी खींचा करते हैं। नहर बाग में होकर हौजों में गिरती हैं इसके अतिरिक्त और भी कूंओं से हौजों में और बाग की क्यारियों में पानी दिया जाता है। बाग की मनोहरता फब्वारों से खूब है। बाग के ठीक बीच में एक तालाब है जो वर्षा के पानी से भरता है। जब इसका पानी सूख जाता है तो कुओं से पानी देकर इसको परिपूर्ण कर दिया जाता है। इस बाग पर 1 लाख 50 हजार रुपए खर्च हो चुके हैं अभी पौधे लगाने में और बनाने में और खर्च होगा। सब मिलकर 2 लाख रुपए हो. जावेंगें।

बृहस्पतिवार ता. 24 को ख्वाजा जहां ने रत्न जडाऊ पात्र कपडे, एक हाथी एक घोड़ा सब मिलाकर 1 लाख 50 हजार रुपए की भेंटें प्रस्तुत की। पसन्द आई जो चीजें रखकर शेष मैंने वापिस कर दी शनिवार तक इस बाग में आनन्द पूर्वक में अपना समय व्यतीत करता रहा। रविवार ता. 27 के सायंकाल मैंने वापिस फतहपुर जाने का विचार किया और बड़े–बडे अमीरों को आदेश दिया कि वार्षिक प्रथा के अनुसार महल को सजाया जावे। सोमवार ता. 28 को मैं क्या देखता हूं कि मेरी आंख में कोई गडबड हो गई है इसका कारण रक्त बाहुल्य था। इसलिए मैंने अली अकबर जर्राह को आदेश दिया कि पस्त खोल दें। दूसरे दिन इससे स्पष्ट लाभ हो गया तो मैंने एक हजार रुपए प्रदान किए। मंगलवार ता. 29 को मुकर्रबखां ने आकर चौखट चुम्बन किया।

शासन के चौदहवें नये वर्ष का उत्सव

शुक्रवार तारीख 4 रबिउल आखिर हिजरी 1028 (10 मार्च 1619) को सूर्य ने मीन राशि मे प्रवेश किया और मेरे 14वें वर्ष का सुख और समृद्धि के साथ आरम्भ हुआ। नये वर्ष के प्रथम बृहस्पतिवार को मेरे पुत्र शाहजहां ने एक बडा उत्सव तैयार किया और मुझे बहुमूल्य दुर्लभ और कौतूहलपूर्ण वस्तुएं भेट की। इनमें से एक लाल है जिसका तोल 22 सुर्ख और रग पानी तथा आकार अच्छा है। जौहरियों ने इसका मूल्य 40,000 रुपये आंका है। दूसरी लाल कुतबी है जिसका तोल 3 टांक है और यह बडी कोमल है। इसका मूल्य 40,000 रुपये है। इनके अतिरिक्त 6 मोती है जिनमें से 1 का तोल 1 टांक और 8 सूर्ख है। मेरे पुत्र के वकीलों ने इसको 25,000 रुपये में और अन्य 5 को 33000 रुपये में खरीदा था। 1 हीरा भी है जिसका मूल्य 18000 रुपये है। 1 जडाऊ पर्दा, 1 तलवार की मूठ है जो उसी के सुनार की दुकान मे बनाई गई है। अधिकांश रत्न उसी ने काटकर जडे हैं। इसके स्वरूप में उसने बडी दक्षता प्रकट की है। इसका मूल्य 50,000 रुपये है। यह बडी कारीगरी का काम है। 2 ढोल सोने के बने हुए हैं। इनसे सारे वाद्य समुदाय के साथ मुसैल बजाया जाता था। वाद्य समुदाय मे कूवर्क नक्कारा कनी पुनी आदि थे। नक्कार खाने के लिए जो भी वाद्य आवश्यक था चादी का बनाया जाता था जिस घडी मैं तख्त पर बैठता उस समय सारे वाद्य बजाये जाते थे। सबका मूल्य 65000 रुपये था। 1 सोने का हौदा था जिसका मूल्य 30,000 रुपये था। इनके अतिरिक्त 2 बडे हाथी और 5 हौदे थे जो गोलकुन्डा से सुल्तान कुतुबुलमुल्क ने भेंट किये थे। पहले हाथी का नाम दाद–ए–इलाही था। इसने निजी हाथीखाने में नये साल के दिन प्रवेश किया था। इसलिए मैंने इसका नाम नूर–ए–नौरोज रखा। यह हाथी आकार और सुन्दरता से भरपूर है। मैं इस पर चढकर महल के चौक में गया इसका मूल्य 80,000 रुपये और शेष 7 हाथियो में से प्रत्येक का मूल्य 20,000 रुपये था। जो हौदा और सामान नूर–ए–नौरोज के लिए बनाया गया था उसका मूल्य 30,000 रुपये था। दूसरे हाथी का हौदा चांदी का था। सारी भेंटों का मूल्य 4,50,000 रुपये था।

शुक्रवार तारीख 2 को सुजात खां अरब नूरुद्दीन कुली कोतवाल ने अपनी भेंटें मेरे सामने रखी। शनिवार तारीख 3 को खानखाना के पुत्र दाराब खां ने और रविवार तारीख 4 को खानजहा ने मुझे दावत देने की

इजाजत चाही। खां जहां की भेंटों में से मैंने 20,000 मूल्य का 1 मोती पसन्द किया शेष भेंटें वापस कर दीं।

सोमवार मंगल और बुध को अन्य अफसरों ने भेंटें दी। बृहस्पतिवार तारीख 8 को मदार उल मुल्क इतिमादुद्दौला ने मेरा स्वागत किया। उसने झील के चारों ओर रोशनी करवाई थी और रास्तों को सब प्रकार के दीपों से सजाया था। उसकी भेंटों में एक सोने और चांदी का राजसिंहासन था जो शेरों के ऊपर रखा हुआ था। यह 3 वर्ष में तैयार किया था जो सोने और जवाहरात के काम में बड़ा चतुर था। मेरी भेंटों के अतिरिक्त 1,00,000 रुपये की चीजें बेगमों और दूसरी महिलाओं को भेंट की गई। मेरे राज्य के आरम्भ से अब तक अर्थात 14वें वर्ष तक किसी बड़े अमीर ने ऐसी भेंटें नहीं दी थी। परन्तु इतिमादुद्दौला की दूसरों से क्या तुलना हो सकती है।

इसी दिन इस्लाम खां के पुत्र इकराम खां को 2000 जात और 1000 सवार का, अणिराय सिंह दलन को 2000 जात और 1000 सवार का मनसब दिया गया। खानदौरा को शुक्रवार तारीख 9 को 1 घोड़ा हाथी देकर पटना जाने की इजाजत दी गई। उसका मनसब 7000 जात और 5000 सवार कर दिया गया। शनिवार तारीख 10, रविवार ता. सोमवार ता. 12 मंगलवार ता. 13 और बुधवार ता. 14 को फाजिल खां मीर मीरान इतिकाद खां, तातार खां और अणिरायसिंह दलन और मिर्जा राजाभावसिंह ने भेंटे प्रस्तुत कीं। मैंने कुछ रखकर शेष वापिस कर दीं। बृहस्पतिवार तारीख 15 को आसिफ खां ने अपने निवास पर बडा जलसा किया और स्वागत किया। मैं महिलाओं सहित उसके यहां गया। उसने बहुमूल्य रत्न, कोमल कीमख्वाब, और अनेक प्रकार की भेंटे प्रस्तुत कीं। इन भेंटों में 1 लाल का तोल साढे 12 टाक था। इसको 1,25,000 रुपये में खरीदा गया था। इसी दिन ख्वाजा जहां का मनसब 5000 जात और 2500 सवार कर दिया गया।

आदेशानुसार लश्कर खां दक्खिन से आकर हाजिर हुआ मैंने वर्षा ऋतु के अन्त में और अच्छे मौसम के आरम्भ में कश्मीर का निश्चय कर लिया था जहां निरन्तर बसन्त ऋतु बनी रहती है। मैंने यह उचित समझा कि आगरा दुर्ग और नगर की संरक्षता और प्रशासन और इस जिले की फौजदारी जो पहिले खां जहां के सुपुर्द था अब लश्कर खां के सुपुर्द कर दिया जावे। अमानत खां को घोड़ों के दाम लगाने का और सवारों को देखने का काम सौंपा गया। शुक्रवार 16 शनिवार 17, रविवार और सोमवार 19 को कर्मचारियों ने भेंटे प्रस्तुत कीं। इन नये वर्ष की सारी भेंटों का मूल्य 20,0,000 रुपये था। जिस दिन सूर्य उच्चतम अंश पर था मैंने अपने पुत्र परवेज का मनसब 20,000 जात और 10,000 सवार कर दिया। इतिमादुद्दौला

को भी 7 हजार जात और 7 हजार सवार का मनसब दे दिया। शाह के अध्यापक पद पर मैंने अजुदुदद्दौला को नियुक्त किया। कासिम खा का 1500 जात और 500 सवार का और बाकिर खा को 1000 जात और 400 सवार का मनसब दिया। महावत खा ने और सेना के लिए प्रार्थना की इसलिए मैंने 500 अहदी सवार बगश भेज दिये। अब्दुल सत्तार ने स्वर्गीय बादशाह हुमायू का 1 ग्रन्थ भेट किया जिसमे कुछ प्रार्थनाये थीं। गणित, ज्योषित की भूमिका थी और अन्य कई विषय थे। यह ग्रन्थ हुमायू बादशाह के हाथ का लिखा हुआ था इसे देखकर मुझे अपूर्व हर्ष हुआ। इससे किसी चीज की तुलना नही हो सकती थी मैने अब्दुल सत्तार का मनसब इतना बडा दिया जिसकी उसको आशा नही थी और उसे 1000 रुपये नकद दिये। जिस योरोपियन ने सोने चादी का राजसिहासन बनाया था ओर जिसको मैंने हुनरमद की उपाधि दी थी उसको 3000 दरब, 1 घोडा, 1 हाथी बख्शा गया। मैने ख्वाजा खावद महमूद को जो आध्यामित्क और त्याग भावना से रहित नही है 1000 रुपये दिये। लश्कर खा का मनसब बढाकर •3000 जात 2000 सवार कर दिया इसी सारग देव, अजुदुदद्दौला के पुत्र मीर खलीतुल्ला, ख्वाजा सरा, फिरोज खा खिद्‌मत खा, महरम खा, इज्जत खा, राय निवालीदास, राय मणिदास, किशनसिह के पुत्र नाथमल और जगमल सबको मनसब दिये या बढाये। इनके मनसब 1000 से कम थे। 500 से कम वाले मनसबदारो की सूची बडी लम्बी है। खानदेश के राजवश के खिजर खा को 2000 का मनसब दिया गया।

बुधवार तारीख 21 को मै शिकार के लिए अमानाबाद गया। वहा ख्वाजा जहा ओर कियाग खा ने इस बडे मैदान मे कमरगाह बना रखा था। और आसपारा के मैदानो के हिरण इसमे चला दिये थे। मैने व्रत ले लिया था कि मै किसी प्राणी को अपने हाथ से नही मारूगा इसलिए मैने उनको फतहपुर के चौगान मे रखवा दिया। इस प्रकार सब मिलाकर उसमे 1500 हिरन चला दिये। बुधवार तारीख 28 की रात को अमानाबाद से चलकर मै बुस्तान सराय ठहरा और बृहस्पतिवार तारीख 29 की रात को नूर मजिल मे मुकाम हुआ।

शुक्रवार तारीख 30 को शाहजहा की माता ने ईश्वर की शरण ली। अगले दिन मै अपने प्रिय पुत्र के निवास पर गया और सब भाति शोक प्रकट किया और अपने साथ उसको महल मे ले गया। रविवार तारीख 1 उर्दी बिहिश्त ज्योतिषियो ने शुभ मुहूर्त निकाला था इसलिए दिलेर नामक हाथी पर सवार होकर मैंने आनन्द पूर्वक नगर मे प्रवेश किया। बाजारो मे नर—नारियो के समूह थे दरवाजो पर और दीवारो पर बडी भीड थी। रुपये लुटाता हुआ

मैं महल में गया। मैं 5 वर्ष 7 मास और 9 दिन में वापिस आगरे आया था। मैंने अपने पुत्र सुल्तान परवेज को आदेश दिया कि यदि वह मुझसे मिलना चाहे तो दरबार में आ जावे। फरमान प्राप्त होने पर वह दरबार मे आया। मैंने फकीरों और दान के पात्रों को 44786 बीघा भूमि, 2 पूरे गांव, 320 गधों पर लदा हुआ अन्न और 7 हल की जमीन काबुल में दान दी।

इस समय की एक घटना यह हुई कि जलाल अफगान के पुत्र अल्लाहदाद ने विद्रोह कर दिया। जब महावत खां ने अफगानों को उखाड फेंकने और बंगश पर कब्जा कर लेने की इजाजत चाही तो अल्लाहदाद ने उसके साथ जाने के लिए प्रार्थना की। ऐसे कृतघ्न लोगों का स्वभाव है कि वे शत्रुता और दुष्टता किया करते है इसलिए यह निश्चय किया गया कि वह अपने भाई और पुत्र को जमानत के रूप में दरबार मे छोड जाये मैने इन दोनो पर बडी कृपा की परन्तु काले कम्बल को चाहे जैसे सफेद पानी से धोया जाये वह कभी सफेद नहीं होता वह बंगश देश मे पहुचकर गडबड करने लगा तो महावत खां ने कुछ समय तक तो सहन किया परन्तु फिर अफगानो के विरूद्ध अपने पुत्र के नेतृत्व मे एक सेना भेजी और इसी के साथ अल्लाहदाद को भेजा जब यह सब निर्दिष्ट स्थान पर पहुचे तो अल्लाहबाद की शत्रु भावना के कारण सफलता नही हुई ओर अपना उद्देश्य पूरा किये बिना ही सब वापस आ गये। अल्लाहदाद ने समझा कि महावत खा उसको उसके अपराधों का दण्ड देगा। इसलिए उसने खुले तौर पर नमक हरामी की। यह मुझे महावत खा के पत्र से.वास्तविक स्थिति का पता लगा तो मैंने आदेश दिया कि अल्लाहदाद के पुत्र और भाई को ग्वालियर के किले मे कैद कर दिया जाये। अल्लाहदाद का पिता जलालतारीकि भी स्वर्गीय पिता की सेवा छोडकर भाग गया था। फिर उसको पकडकर दण्ड दिया गया आशा है कि इस बदमाश को भी अपने कर्मो का फल शीघ्र मिल जायेगा।

बृहस्पतिवार तारीख 5 को रावत शकर के पुत्र मानसिह को जो बिहार में एक सैनिक अधिकारी था 1000 जात और 600 सवार का मनसब दिया गया। मैंने आकिल खा को बगश मेंकाम करने वाले मनसबदारो के सवारो की गणना करने के लिए 1 हाथी देकर भेजा। सोमवार को आई हुई भेटे मैने महमूद आबदार को दे दी। यह मेरे बचपन से मेरी सेवा कर रहा है। इसी दिन तरबीयत खा की मृत्यु हो गई उसके अच्छे स्वभाव के कारण उसको अमीर बना दिया गया था। यह अय्याश तबीयत का आदमी था। अपना समय आराम से काटता था वह हिन्दू सगीत का शौकीन था। उसमे कोई बुराई नही थी। राजा सूरतसिह को 2000 जात और सवारो का मनसब दिया गया। सईद बायजीद

मक्करी को मक्खर दुर्ग का दुर्गपति बनाया गया और उस प्रदेश की फौजदारी भी उसे दे दी गई।

इस दिन प्रधान सेनापति खानखाना के पुत्र शाहनवाज खां की मृत्यु की खबर आई इससे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। जब खानखाना मुझसे विदा ले रहा था तो मैंने उसे ज़ोर देकर कहा था कि शाह नवाज खां अत्याधिक मद्यपान करता है जो बुरी बात है। इससे वह नष्ट हो जायेगा। उस पर निगरानी रखनी चाहिए। यदि वह नहीं माने तो मुझे लिखा जावे फिर मैं उसको अपने सामने बुलाकर उचित आदेश दूंगा। जब खानखाना बुरहानपुर पहुंचा तो उसने देखा कि शाहनवाज खां बहुत दुर्बल हो गया है। कुछ दिन वह बिस्तर में लेटा रहा और फिर अशक्त हो गया। हकीमों ने सब कुछ किया परन्तु लाभ नहीं हुआ और 33 वर्ष की आयु में उसका देहान्त हो गया। यह खबर सुनकर मुझे बड़ा दुख हुआ क्योंकि वह बुद्धिमान खानजादा था जीवित रहता तो वह अच्छी सेवा करता। मृत्यु के मार्ग पर तो सबको चलना ही पडता है। परन्तु इस प्रकार वियोग होना दु:ख की बात है। मैंने अपने निकट के सेवक राजा सारंगदेव को खानखाना के पास भेजा और उसको सांत्वना दी। शाहनवाज खां 5 हजार का मनसबदार था। उसके भाई दराब को मैंने 5 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दे दिया और उसको एक खिलअत, एक हाथी, एक घोड़ा, एक जड़ाऊ तलवार देकर आदेश दिया कि वह अपने पिता के पास जावे और बरार और अहमदनगर की सूबेदारी करे जो पहले शाहनवाज के हाथ में थी। शाहनवाज के दूसरे भाई को 2 हजार जात और 800 सवार का मनसब दिया। शाहनवाज के पुत्र मनुचहर को 2 हजार जात और 1 हजार सवार का मनसबदार बनाया। शाहनवाज खां के पुत्र तगजल को 1 हजार जात और 500 सवार का मनसबदार बनाया। बृहस्पतिवार तारीख 12 को कई लोगों को 500, 2000 और 600 का मनसब दिया।

अहमदाबाद में मेरे पास 2 मारखुर बकरे थे। मैंने अरब से बकरियां मँगवाई इनमें जो बच्चे हुए थे वे बहुत अच्छे हैं। शायद इनका मांस स्वादिष्ट होगा।

इससे पहले यह आदेश दिया जा चुका था कि मुकर्रब खां शीघ्र बिहार पहुंचे उसकी नियुक्ति वहीं के लिए की गई थी उसको एक हाथी दो घोडे एक जडाऊ खपवा और 50 हजार रुपए अग्रिम वेतन देकर रवाना किया। उसी दिन सरदार खां को खिलअत एक हाथी और घोड़ा देकर मुघेर का फौजदार बनाया। कुतुबुल मुल्क को वकील मीर शरीफ को वापिस लौटने की इजाजत दे दी गई। मेरे पुत्र शाहजहां ने उसके साथ अपने दीवान

अफजल खां को भेजा। कुतुब–उल–मुल्क ने बार–बार निवेदन करवाया कि मैं उसको अपना एक चित्र भेंट करूं। मैंने उसको अपना चित्र, एक जड़ाऊ खपवा और एक फूल कटार भेजा। उपरोक्त मीर शरीफ को भी मैंने 24 हजार दरब, जड़ाऊ खंजर, एक घोडा और एक खिलअत दी। मीर इमारत फाजिल खां का मनसब बढ़ाकर 1 हजार जात और 500 सवार कर दिया। उस समय ही स्वर्गीय बादशाह अकबर की वार्षिक तिथि थी इसलिए 5 हजार रुपये गरीबों को बांटने के लिए दिये गये। सरकार मुघेर के जागीरदार हसनअली खां को 2500 जात और सवारों का मनसब देकर बंगाल का सूबेदार इब्राहीम खां फतह जंग की सहायतार्थ भेजा। मिर्जा शरफुद्दीन हुसैन काशगरी की बंगस देश में सेवा करते हुए मृत्यु हो गई थी इसलिए मैंने उसके पुत्र इब्राहीम हुसैन को 1000 जात और 500 सवार का मनसब दिया। इस समय इब्राहीम खां ने 2 किश्तियां भेजी। एक सोने की और दूसरी चांदी की बनी हुई थी। इनमें से एक मैंने शाहजहां को दे दी शुक्रवार तारीख 9 को शहादत्त खां को एक जड़ाऊ खपवा और एक फूल कटार दिया गया। मेरे पुत्र सुल्तान परवेज ने निवेदन करवाया कि वह दरबार मैं आना चाहता था इसलिए उसको एक खास नादिरी, एक चीरा और एक फेंटा भेजा गया। बृहस्पतिवार तारीख 23 को मेरी चाची का पुत्र मिर्जा गली आदेशानुसार दक्खिन से आया। उसका पिता ख्वाजाहसन खालदार एक नक्शबन्दी ख्वाजा था। मेरे चाचा मिऑ मुहम्मद हकीम ने अपनी बहन का विवाह इस ख्वाजा से कर दिया था। बहुत लम्बे अर्से तक मेरे चाचा मिर्जा मोहम्मद हकीम का कारबारं इसी ख्वाजा के हाथ मे था। ख्वाजा की मृत्यु मेरे चाचा से पहले ही हो गई थी ख्वाजा के दो पुत्र थे। मिर्जा बादीउज्जमा और मिर्जा बाली। बादी उज्जमा मेरे चाचा की मृत्यु के बाद भाग कर मावरन्नहर चला गया और वहीं उसका अन्त हो गया तब बेगम और मिर्जा बाली इस दरबार में आ गए और बादशाह अकबर ने बेगम के साथ कृपा पूर्ण व्यवहार किया। मिर्जा बाली समझदार और गम्भीर पुरुष है। वह संगीत विद्या में निपुण है। इस समय मुझे ख्याल आया कि स्वर्गीय शाहजादा दानियाल की पुत्री का विवाह इस मिर्जा से कर दिया जाए। इसीलिए मैंने मिर्जा बाली को इस दरबार में बुलाया था। यह लडकी (बुलाकी बेगम) किलीज मोहम्मदखां की पुत्री से उत्पन्न हुई है। यह आशा है कि मिर्जा परिश्रम पूर्वक सेवा करेगा जिससे उसका भाग्य उदय होगा।

आज सरबुलन्दराय का मनसब जिसको दक्खिन में सेवार्थ भेजा गया था। 2500 जात और 1500 सवार कर दिया गया।

शेख अहमद–इस समय यह खबर आई कि शेख अहमद नामक बकवासी ने मिथ्याचार और कपट खेल रखा था। उसमें कोई धार्मिकता नहीं थी तो

भी सरहिंद के जिले में उसने बहुत से व्यक्तियों को जो ईश्वर के भक्त मालूम होते थे अपने जाल में फंसा रखा था। उसने प्रत्येक नगर में और इलाके में अपने शिष्य भेज रखे थे। ये लोग लोगों को धोखा देते थे और धर्म पुस्तकें बेचते थे। इस बकवासी ने अपने शिष्यों को कई कहानियां लिखकर भेजी थी। जो असंगत बातों से भरी हुई थी और जिनमें कोई धर्म की बात नहीं थी। मैंने आदेश दिया कि उसको दरबार में बुलाया जावे। जब वह आया और मैंने उससे कुछ प्रश्न पूछे तो वह कोई उचित उत्तर नहीं दे सका मुझे वह बडा अभिमानी प्रतीत हुआ। वह अपने अज्ञान से सन्तुष्ट था। मैने सोचा कि कारागार में रखने से उसके मस्तिष्क की उलझन और गर्मी निकल जायेगी। मैंने उसको अणिरायसिंह दलन के सुपुर्द करके आदेश दिया कि उसको ग्वालियर के दुर्ग में कैद कर दिया जावे।

शनिवार तारीख 25 खूरदाद को मेरा पुत्र सुल्तान परवेज इलाहाबाद से आया और मेरे सामने दण्डवत करके उसने अपना मस्तक प्रकाशित किया उसने 2000 मोहरें और 2000 रुपए नजर किए और एक हीरा भी भेंट किया। वह रतनपुर के राजा कल्याण को लेकर मेरे पास आया था। इस राजा के विरूद्ध मेरे आदेश से परवेज सेना लेकर गया था। इस राजा से 80 हाथी और 100,000 रुपए उसने लिये थे। मेरे पुत्र के दीवान बजीरखां ने 28 हाथी भेट किए जिनमें से मैंने 9 रखे।

मैंने सुना कि इफ्तिखारखां का पुत्र मुरव्वतखां बंगाल की सीमा पर माघों की एक मण्डली से लड़ता हुआ मारा गया। मैंने उसके भाई अल्लायार को 1000 जात और 500 सवार का मनसब दिया। उसके छोटे भाई को भी छोटा सा मनसब दिया।

बृहस्पतिवार तारीख 13 को मेरे भाई शाह अब्बास ईरान का राजदूत सईद हसन आया और उसने 1 पत्र और 1 मणि का मद्य प्याला पेश किया जिसके ढक्कन पर 1 लाल थी। इससे हमारी मित्रता और दृढ हो गयी। इस दिन फिदाईखा, नसरुल्ला खां, अमानउल्ला के मनसब बढाये गए और वजीरखां को बगाल का दीवान नियुक्त किया। इसी दिन मेरे भाई शाह अब्बास का पत्र लेकर आलमखा दरबार में आया। खान आलम की जो साम्राज्य का स्तम्भ है रिपोर्ट आई। उसको शाह अब्बास ने 1 खंजर दिया था। जिसकी मूठ मछली के दांत की बनी हुई थी। मैंने यह मूठ बहुत पसन्द की।

शुक्रवार तारीख 27 को मिर्जा बली का मसब बढाकर 2000 जात और 1000 सवार किया गया। तारीख 24 को मैंने सईद हसन को 1000 दरब दिए। बृहस्पतिवार तारीख 2 अमूरदाद को इतिवार खां को घोड़ा और आकिल खां को 1000 जात और 800 सवार का मनसब दिया गया।

शनिवार तारीख 4 अमूरदाद 15 शबान को शब–ए–बारात का त्यौहार था। नदी पर नावों की रोशनी और आतिशबाजी की गई जिसे देखकर मुझे बड़ा आनन्द आया। बृहस्पतिवार तारीख 9 को मैं सामूनगर गांव में शिकार करने गया और वहाँ सोमवार तक आनन्द पूर्वक ठहर कर मंगलवार को वापिस आया। बृहस्पतिवार तारीख 16 को शेख अबुल फजल के पोते बीसूतन को 700 जात और 350 सवार का मनसब दिया। इस दिन मैं गुल अफशा बाग को देखने गया जो जमुना के तट पर स्थित है। नदी के किनारे पर कई इमारतें बनी हुई हैं सुन्दर हैं। ये बाग ख्वाजा जहां के सुपुर्द है। उसने मुझे कुछ कीमखाब के थान भेंट किये जो उसके लिए अभी हाल में ईराक से लाये गये थे। मैंने उसका मनसब 5000 जात और 3000 सवार कर दिया।

शाह अब्बास ने खान आलम के हाथ मेरे लिए एक मछली के दांत की मूठ का जड़ाऊ खंजर भेजा था। इससे मुझे बडी ही प्रसन्नता हुई थी। मैंने कई चतुर आदमियों को ईरान और तुरान इसलिए भेजा कि तलाश करके कहीं से कुछ भी मूल्य देकर ऐसे दांत लाए जाएं। मेरे बहुत सेवक और अमीर इस काम में लग गए। फिर ऐसा हुआ कि एक मूर्ख विदेशी ने बाजार में एक बहुत सुन्दर रंगदार दांत नाम मात्र का मूल्य देकर खरीदा उसका विश्वास था कि दांत कभी आग में गिर गया होगा। और इसी से इसके ऊपर काला निशान बन गया है। कुछ समय बाद उसने शाहजहा के एक बढई को यह दात बतलाया और चाहा कि इसके एक टुकडे की एक अगूठी बनाई जाए और चाहा कि इस पर से काला निशान मिटा दिया जाए वह यह नहीं जानता था कि काले निशान के कारण ही इस दात की कीमत बढ गई है। बढई ने अपने कारखाने के अध्यक्ष को सूचना दी कि जिस दुर्लभ वस्तु की तलाश में लोग दूर दूर के देशों में गये हुए है वह एक अनजान आदमी के हाथ में आ गई है जो इसके मूल्य को नहीं जानता। यह उससे आसानी से और सस्ती मिल सकती है। कारखाने का दरोगे ने वह चीज मेरे पुत्र के सामने प्रस्तुत की और उसने यह बडी ही प्रसन्नता के साथ मुझे दी। मैंने शाहजहां को बहुत–बहुत आशीर्वाद दिया।

इस दिन आदिलखां का एक मुख्य सेवक बेलीन खा मेरी सेवा में आया। वह सच्चाई से मेरी सेवा करने लगा था इसलिए मैंने उसको एक खिलअत, एक तलवार 10 हजार दरब और 1 हजार जात और 500 सवार का मनसब दिया। इसी समय खानदौरा का निम्नलिखित प्रार्थना पत्र आया बादशाह ने पूर्ण कृपा करके और मेरी योग्यता देखकर मुझे ठट्ठा का सूबेदार नियुक्त किया और मेरी आयु और निर्बल दृष्टि का ख्याल नही किया। अब मैं निर्बल और वृद्ध हो गया हूं और झुक गया हूं अब मुझमें परिश्रम करने

और घुड़सवारी करने की क्षमता नहीं है इसलिए मेरी प्रार्थना है कि मुझे सैनिक सेवा से मुक्त किया जाय और मुझे प्रार्थना करने वालों में भर्ती कर लिया जाए। उसकी प्रार्थना पर मैंने खास दीवान लोगों को आदेश दिया कि खुशाब के परगने में 30 लाख दाम की जागीर दी जावे। जिससे उसका खर्च चल सके और सुख से वह अपने दिन व्यतीत करे उसके ज्येष्ठ पुत्र शाह मुहम्मद का मनसब बढ़ाकर 1 हजार जात और 600 सवार कर दिया और उसके दूसरे पुत्र याकूब बेग को भी 700 जात और 350 सवार का मनसब दिया। तीसरे पुत्र असद बेग का 300 जात 50 सवार का मनसब दिया गया। शनिवार तारीख 1 इलाही मास शहरीवार को मैंने प्रधान सेनापति खानखाना जान सीपार और दूसरे अमीरों के लिए जो दक्षिण में भेजे थे यजदान के हाथ वर्षा ऋतु के लिए खिलअतें भेजी।

अब मैंने कश्मीर जाने का निश्चय कर लिया था इसलिए नूरुद्दीन कुली को आगे भेजा कि वह यथा सम्भव मार्ग की ऊँचाई निचाई ठीक कर दे ताकि लद्दू जानवरों का पहाड़ियों पर आना जाना आसान हो जाए और लोगों को बहुत परिश्रम न करना पड़े। उसके साथ पत्थर काटने वाले बढ़ई, फावडे वाले आदि कारीगर भेजे गए और उसको एक हाथी दिया गया। बृहस्पतिवार 23 तारीख को 21 मंजिल के बाग में जाकर वहां सुखद गुलाबों में मैंने शनिवार तारीख 16 तक समय व्यतीत किया। मांडूपूर दुर्ग में राजा विक्रमाजीत बाघेला आया और उसने एक हाथी और एक जड़ाऊ कलंगी भेंट की शुक्रवार तारीख 20 को मेरे पुत्र परवेज ने दो हाथी भेंट किए। 24 तारीख उपरोक्त मास को मरियम मुज्जमानी के महल में मेरी तुला की गई और मेरी आयु का 51वां वर्ष हर्षपूर्वक शुरू हुआ। मुझे आशा है कि मेरा जीवन ईश्वर की आशा का पालन करते हुए व्यतीत हो। मैंने शाह आलम बुखारी के पोते सईद जलाल को वापिस लौटने की इजाजत दे दी। इसने मेरी गुजरात की पढ़ाई का वर्णन लिखा है। इसको चढ़ने के लिए एक हाथी और खर्च के लिए रुपए दिए गए। रविवार तारीख 30 तदनुसार 14 सब्दाल की रात को जब चन्द्रमा पूर्ण हो चुका था तो जमना नदी के तट पर एक बाग में बडा सुखद उत्सव बनाया गया। तारीख 1 को जौहरदार दांत जो मेरे पुत्र शाहजहां ने मेरे भेंट दिया था दो खंजरों की मूठों के लिए काटा गया तो यह बड़ा ही सुन्दर निकला मैंने आदेश दिया कि पुरण और कल्याण जो खोदने के काम में अद्वितीय हैं खंजरों की मूठ बनावें ये मूठें फिर जहांगीर मूठों के नाम से प्रसिद्ध हो गई। एक मूठ को रंग तो ऐसा निकला कि आश्चर्य उत्पन्न हो गया इसमें सात रंग थे और ऐसा जान पड़ता था कि क़िसी चित्रकार ने कुछ फूल बनाए है। वह इतनी कोमल और सुन्दर थी कि

मैं एक क्षण भी इसको अलग नहीं रखता था राजकोष के सारे रत्नों से मैं इसकी सर्वाधिक मूल्यवान मानता हूं। बृहस्पतिवार को मैंने इसको अपनी कमर में बांध और कारीगरों को जिन्होंने परिश्रम करके इस बनाया था पुरस्कार किया। उस्ताद पूरब को एक हाथी एक खिलअत और एक पौंची दी। कल्याण को अजायबदस्त की उपाधि दी और एक खिलअत और जडाऊ पोंच दी।

मुझसे निवेदन किया गया कि महावत खां के पुत्र अमानुल्ला ने एदाद विद्रोही हो हरा दिया है और अनेक अफगानों को बन्दी बना लिया है। मैंने उसके लिए एक खास तलवार भेजी।

रविवार तारीख 5 को राजा सूरजसिंह की स्वाभाविक मृत्यु की खबर आई। उसकी मृत्यु दक्खिन में हुई थी वह मालदेव का वंशज था जो हिन्दुस्तान का एक मुख्य जमींदार था इसकी जमीनदारी राणा के बराबर थी। एक बार इसने राणा को हराया भी था। अकबर नामा में मालदेव का पूरा हाल दिया हुआ है। अकबर की सेवा करने के कारण मालदेव को ऊंचा पद प्राप्त हो गया था। उसका राज्य अपने पिता और दादा के राज्य से बडा था इसके पुत्र का नाम गजसिंह था। अपना सारा प्रशासनिक कार्य मालदेव ने इसी के सुपुर्द कर दिया था मैंने गजसिंह को 3 हजार जात और 2 हजार सवार का मनसब एक निशान व राजा की उपाधि दी और उसके छोटे भाई को मामूली मनसब और जागीर दी।

बृहस्पतिवार तारीख 10 मिहर को आसफ खा की प्रार्थना पर मैं उसके मकान पर गया जो जमुना नदी के तट पर बना हुआ है उसने एक ही सुन्दर स्नानागार (हम्माम) बनाया है मैं इसको देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ स्नान के बाद मद्य के प्याले चले और मेरे निजी सेवक इनसे प्रसन्न हो गए। मैंने आसफ खां की भेंटों में से 30 हजार की भेंटे स्वीकार की।

इससे पहले आदेशानुसार आगरे से अटक तक मार्ग के दोनो ओर वृक्ष लगाए जा चुके थे इसी प्रकार आगरे से बंगाल तक मार्ग बनाया गया था। अब मैंने आदेश दिया कि आगरा से लाहौर तक प्रति कोस पर एक मील या स्तम्भ खड़ा किया जाए और प्रति तीसरे मील पर एक कुआ तैयार किया जाए ताकि यात्री लोग सुख और सन्तोष के साथ यात्रा कर सके। और गर्मी और प्यास से उन्हें कष्ट नहीं सहना पड़े।

शुक्रवार ता. 24 मिहिर को दशहरा का त्यौहार मनाया गया। हिन्दुस्तान की प्रथा के अनुसार घोडों को सजाकर मेरे सामने लाया गया इसके बाद हाथियों को सजाकर लाया गया। मुतामिद खां ने नये वर्ष के दिन पर कोई भेंट नहीं दी थी इसलिए वह इस त्यौहार पर एक सोने का तख्त, एक लाल

की अंगूठी और दूसरी चीजें भेंट करने के लिए लाया। तख्त बहुत ही सुन्दर बना हुआ था सारी भेंटों का मूल्य 16 हजार रुपया था। इसीं दिन जबरदस्त खां को एक हजार जात और 400 सवारों का मनसब दिया गया मेरा प्रस्थान के दिन दशहरा का त्यौहार आया था इसलिए अच्छा शकुन समझकर मैं नाव द्वारा रवाना हुआ और अपने उद्दिष्ट स्थान पर गया। मैं पहली मंजिल पर 8 दिन ठहरा जिससे लोग आराम से सब तैयारियां करके आ जावे। महावत खां ने बंगस से डाक चौकी द्वारा सेव भेजे थे। वे ताजा आ पहुंचे और बड़े सुगंधित थे। उनकी काबुल से तुलना नहीं की जा सकती और न समरकन्द के सेब उनका मुकाबल कर सकते हैं मैंने अब तक न ऐसे स्वादिष्ट सेब देखे थे और न खाए थे। लोग कहते हैं कि बंगस के उत्तर की और लश्करदरा के पास शिवराम नामक गांव है जिसमें ऐसे सेबों के तीन वृक्ष हैं। लोगों ने ऐसे वृक्ष और भी लगाने का प्रयत्न किया परन्तु नहीं लगा सके। मैंने अपने भाई शाह अब्बास के राजदूत सईद हसन को तश्तरी भरकर ये सेब दिए। जिससे वह कह सके कि इराक में इनसे बढिया सेब होते है या नहीं उसने उत्तर दिया कि सारे ईरान में इस्फानी सेब अच्छे माने जाते हैं और इसी जाती के है।

बृहस्पतिवार तारीख 1 इलाही मास आबान को मैंने स्वर्गीय बादशाह अकबर की कब्र की यात्रा की और चौखट पै मैंने अपना सिर रगड़ा तथा 100 मोहरें नजर की। तमाम बेगमों और दूसरी महिलाओं ने भी कब्र की परिक्रमा करके आशीर्वाद मांगा। शुक्रवार की रात को मशाइख (साधु) अरबाब–ए–अमाइम (मस्जिदों से सम्बन्धित लोग) और इफ्फाज (कुरान का पाठ करने वाले) तथा गायकों की एक सभा हुई वहां लोगों को हाल (मस्ती) आई और उन्होंने धार्मिक नृत्य किया। मैंने प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार एक फर्जी और एक दुशाला दिया। इस कब्र की इमारतें बड़ी विशाल बना दी गई हैं। इस अवसर पर मैंने पहले की अपेक्षा अधिक रुपया खर्च किया इससे मुझ को सन्तोष हुआ।

जब 3 तारीख को 4 घड़ी दिन व्यतीत हो चुका तो मैंने उस मुकाम से साढे 5 कोस नदी में सफर करके 4 घड़ी दिन चढ़े दूसरा मुकाम किया। दोपहर के बाद में नाव में से उतरा और 6 तीतर पकड़े। दिन के अन्त में मैंने ईरान के राजदूत सईद हसन को सुनहरी कीनख्वाब के खिलत, 1 जड़ाऊँ जिधा (पगड़ी का आभूषण) और 1 हाकी देकर वापिस लौट आने की इजाजत दी। और मेरे भाई के लिए उसके हाथ 1 जड़ाऊँ पात्र भेजा जिसका आकार मुर्ग का सा था। इसमें उतना शराब का सकता था जितना मैं पिया करता हूं मुझे आशा है कि यह सुरक्षित उसके पास पहुंच जायेगा। लश्कर

खां को आगरा का प्रशासन और संरक्षण करने के लिये नियुक्त किया गया था। उसको 1 खिलअत, 1 घोडा, 1 हाथी नक्कारे और जडाऊ खंजर देकर रवाना किया। इकराम खां का मनसब 2000 जात और 1500 सवार करके मेवात सरकार का फौजदार बनाया गया। यह शेख सलीम के पोते इस्लाम खां का पुत्र है। शेख सलीम के स्वभाव और उत्तम व्यक्तित्व के विषय में तथा इस कीर्तिमान वंश से उसके सम्बन्ध के बारे में पहले ही सच्चाई के साथ लिखा जा चुका है।

इस समय मैंने एक व्यक्ति से जिसके शब्दों में सत्य का प्रकाश है सुना कि जब मैं अजमेर में निर्बल और बीमार था तो यह खबर बंगाल पहुंची उससे पहले ही इस्लाम खां अकेला बैठा हुआ अचानक अचेत हो गया। जब उसको होश आया तो उसने एक विश्वसनीय सेवक भीखम से कहा कि बादशाह बीमार हो गया है और इसकी चिकित्सा के लिए कोई प्रिय और बहुमूल्य चीज का बलिदान करना चाहिए। पहले तो उसने सोचा कि वह अपने पुत्र हुशंग का बलिदान कर दे परन्तु वह अभी बालक था और उसको जीवन का कोई लाभ नहीं मिला था। इसलिए उस पर दया आई और इस्लाम खां ने अपने को ही बलिदान करने की बात सोची उसकी आशा थी कि वह इच्छा उसके हृदय तल से उत्पन्न हुई थी। इसलिए ईश्वर उसको स्वीकार कर लेगा। वास्तव में उसकी बीमारी बढ़ती गई और वह ईश्वर के करुणामय चरणों में पहुंच गया फिर महान चिकित्सक ईश्वर ने इस दास को स्वास्थ्य प्रदान किया। स्वर्गीय बादशाह भी शेख उल इस्लाम के बेटों पोतों पर बड़ी कृपा रखता था और योग्यतानुसार उन्हें रुपये दिया करता था। परन्तु अब यह दास बादशाह बना तो उसने सलीम चिश्ती के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए उसके वंशजों पर अधिक कृपा की और उनमें से कई को बड़े बड़े पद दिये। इस गांव में ख्वाजा सरा हिलाल खां ने जब मैं शहजादा था तब से मेरा सेवक था एक सराय और बाग बनाया था। उसने मुझे भेंट दी तो मैंने कुछ नाम मात्र की भेंट स्वीकार कर ली। यहा से चार मंजिल चल कर मेरे लश्कर ने मथुरा से बाहर मुकाम किया। बृहस्पतिवार तारीख 8 को मैं वृन्दावन और वहां के मंदिरों को देखने के लिए गया। यद्यपि स्वर्गीय बादशाह अकबर के समय में राजपूत अमीरों ने यहां अपनी शैली के मंदिरों का निर्माण किया था और उनके बाह्य भाग को खूब अलंकृत किया था परन्तु अन्दर उल्लू और चिमगादड़ों ने अपने घोंसले बना रखे थे। जिनसे बड़ी दुर्गन्ध आती थी और सांस लेना कठिन हो जाता था। आज मुखिलिस खां आदेशानुसार बंगाल से आया उसने 1000 मोहरें और 100 रुपये नजर किये और 1 लाल और 1 जड़ाऊ तुर्रा भेंट किया शुक्रवार

तारीख 9 को असीरगढ़ के लिए वहां के दुर्गाध्यक्ष खानखाना को 7 लाख रुपये भेजे गये।

जदरूप

पिछले पृष्ठों में उज्जैन निवासी साधू जदरूप के विषय में लिखा जा चुका है। इस समय वह मथुरा में रहता था जो हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान है। वह जमुना नदी के तट पर ईश्वर की भक्ति किया करता था मुझे उसकी संगति अच्छी लगती थी इसलिए मैं शीघ्र ही उसकी सेवा में गया और बहुत समय तक उसके पास रहा मेरे पास और कोई नहीं था। वास्तव में उसके जीवन से मुझे बड़ा लाभ है। उसकी संगति में बड़ा आनन्द आता है।[1]

रविवार तारीख 13 को शिकारियों ने निवेदन किया कि पास ही एक शेर लोगों को को बहुत क्षति पहुंचाता है इसलिए मैंने तुरन्त ही आदेश दिया कि हाथियों से जंगल को घेर लिया जाए। सायंकाल मैं अपनी महिलाओं के साथ बाहर गया मैंने वृत धारण कर लिया था कि मैं अपने हाथ से किसी प्राणी की हिंसा नहीं करूंगा अतः मैंने नूरजहां से कहा कि वह गोली चलावे। शेर की गन्ध आने पर हाथी बेचैन हो जाता है। और निरन्तर इधर उधर हिलता है इसलिए अम्बारी पर बैठे हुए गोली चलाना बड़ा कठिन है यही कारण था कि मिर्जा रुस्तम जो निशाना लगाने में अद्वितीय हैं कई बार निशाना चूक चुका है तथापि नूरजहां बेगम ने पहली ही गोली में शेर को तुरन्त मार डाला।

सोमवार तारीख 13 को गुसाईं जयरुप से मिलने की मुझे फिर इच्छा हुई। मैं तुरन्त उसकी कुटिया में गया और उसकी संगति का लाभ उठाया। हम दोनों ने उच्च विषयों पर वार्ता की। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसको असाधारण सौम्य उच्च बुद्धि और स्वभाव और तीव्र बौद्धिक शक्ति दी है यह सांसारिक बन्धनों से मुक्त है। संसार को एक ओर छोड़ कर वह एकान्त में सन्तुष्ट रहता है। उसकी कोई आवश्यकताएं नहीं है। यह केवल एक गज पुराना सूती कपड़ा रखता है। और पानी पाने के लिए उसके पास एक मिट्टी का पात्र है। शरद् और ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु में वह नंगा रहता है। उसकी गुफा इतनी तंग है कि कठिनता से इधर उधर मुड़ सकता है इसका दरवाजा इतना छोटा है कि दूध पीता बच्चा भी इसमें मुश्किल से दाखिल किया जा सकता है।

---

1. इकबाल नामा में लिखा है कि खान आजम ने इस साधू से निवेदन किया था खुसरो को मुक्त कर दे जहांगीर ने खुसरा को छोड़ दिया।

बुधवार तारीख 14 को मैं फिर गुसाईं से मिलने और सलाम करने गया। वास्तव में उससे विदा होते हुए मेरे मन में दुःख होता था। बृहस्पतिवार तारीख 15 को मैं प्रयाण करके वृन्दावन पहुंचा। यहां से मेरा पुत्र परवेज विदा होकर अपनी जागीर इलाहाबाद गया। मैं चाहता था कि वह प्रयाण में मेरे साथ रहे। परन्तु वह कुछ शोकाकुल था। इसलिए मैंने उसको जाने दिया जाते समय उसको एक तिपचाक घोड़ा, एक कमर का खंजर और एक मछली के दांत की मूठ वाली तलवार तथा एक खास ढाल दी। मुझे आशा है कि वह फिर आकर मुझ से मिलने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। खुसरो दीर्घकाल से कारागार में था अतः मैंने सोचा कि उसको मिलने से वंचित रखना कठोरता होगी इसलिए मैंने उसको बुलाया और सलाम करने का आदेश दिया। उसने अपने अपराधों की क्षमा मांगी तो उसकी लज्जा घुल गई मुझे आशा है कि उसको मेरा आशीर्वाद प्राप्त होगा और वह सेवा करेगा।

शुक्रवार तारीख 16 को मैंने मुखलिस खां को जाने की इजाजत दे दी। मैंने उसको शाह परवेज के दीवान का काम दिया था और दो हजार जात और सात सौ सवार प्रदान किया था। शनिवार को मीर मीरान सदरजहां का पुत्र सैयद निजाम जो कन्नौज का फौजदार था मेरी सेवा में आया उसने एक हाथी और कुछ बाज मेरे भेट किए। रविबार तो. 18 को हमने प्रयाण किया। ईरान के शाह ने मुझे दो बाज भेजे थे जिसमें एक का रंग बहुत बढ़िया था परन्तु दोनों ही मर गए। मैंने इन्हें लाने वाले को दो हजार रुपए देकर विदा किया और उस सुन्दर बाज का चित्र नादिरुल उसर से बनवाया।

सेरबाट—मेरे पिता के राज्य में एक सेर तीस दाम का होता था।[1] अब मुझे ख्याल आया कि मैं अपने पिता के नियमों के विरूद्ध क्यों काम करूं। एकसेर का तीस दाम का ही रहने दूं। एक दिन गुसाई जदरूप ने कहा कि बद में सेर का तौल 36 दाम है इसलिए इसको 36 दाम का मानना ठीक होगा। मैंने आदेश दिया कि सारे साम्राज्य में एक सेर 36 दाम के बराबर माना जाए। बृहस्पतिवार तारीख 29 को मेरी सेना वहां पहुंचने से दिल्ली के महल प्रकाशमान हो गए। पहले तो मैं अपनी बेगमों और बच्चों के साथ हुमायूं के मकबरे को देखने गया और वहां भेंटें देकर शाह निज़ामुद्दीन चिश्ती के मकबरे की परिक्रमा करने के लिए चला जिससे मुझमें बड़ा साहस आया

1 एक दाम एक तोला आठ माशा और सात सुर्ख के बराबर होता था। यह दो रुपए के बराबर था जहांगीर का अभिप्राय एक पैसे से मालूम होता है।

सायंकाल सलीमगढ़ के महल में पहुंचा और शुक्रवार तारीख 30 को वहीं ठहरा।

इस दिन यह खबर आई कि आगरे में शाह परवेज के ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो गई। यह बालक लगभग 5 वर्ष का हो गया था और अपने पिता से बहुत प्रेम करता था इसलिए पिता को अपार दुख हुआ और वह विह्ल तथा निर्बल हो गया। उसको सांत्वना देने के लिए मैंने स्नेहपूर्ण पत्र लिखे उसके ह्रदय के घावों को स्नेह के लेप से ठीक किया मुझे आशा है कि ईश्वर उसको शान्ति व धैर्य देगा इस प्रकार की विपत्तियों मे ईश्वर पर भरोसा रखने से ही दुख दूर होता है।

शुक्रवार तारीख 14 को आका अकायान की प्रार्थना पर मैं उसके घर गया। यह पहले से इस यशस्वी वंश की सेवा करती आई है। जब स्वर्गीय बादशाह ने मेरा विवाह कर दिया तो उसने मेरी बहन शाहजादा खानम के पास से उसकी बुलाकर मेरा जनाना उसके सुपुर्द कर दिया था। गत 33 वर्ष से यह मेरी सेवा कर रही है मैं इसका बडा आदर करता हूं। किसी भी यात्रा और चढाई में यह अपने मन से अनुपस्थिति नहीं रही है। जब इसकी आयु बढ गई तब उसने दिल्ली में रहने की मुझसे इजाजत मांगी। यह अपना शेष जीवन मेरे लिए प्रार्थना करने में व्यतीत करना चाहती थी अब उसमे इधर उधर चलने की शक्ति नहीं रही थी। इसकी आयु अकबर के बराबर ही थी उसको आराम देने के लिए आदेश दिया कि वह दिल्ली में ही ठहरे। उसने वहां एक बाग सराय और कब्र बनाई है मैं उसके घर गया और शहर के फौजदार से कहा कि इसकी इस प्रकार सेवा करे कि इसके चेहरे पर कभी परेशानी की छाया न पडे।

आज राजा किशनदास का मनसब दो हजार जात व तीन सौ सवार कर दिया गया। सईद बहवा ने दिल्ली की फौजदारी का काम सन्तोषप्रद किया था और लोग उसके उत्तम व्यवहार से प्रसन्न थे दिल्ली की रक्षा और प्रशासन उसने अच्छा निभाया था अब मैंने उसको एकहजार जात और 600 सवार का मनसब दिया और एक हाथी देकर विदा किया। शनिवार तारीख 15 को मैंने मिर्जा बाली को दो हजार जात और एक हजार सवार का मनसब दिया और एक निशान और एक हाथी उसे भेंट स्वरूप देकर दक्षिण में भेज दिया। शेख अब्दुल हक देहलवी ने हिन्दुस्तान के शेखो के जीवन चरित्र लिखे हैं जो उसने मुझे भेंट किए। इस पर कुछ विपदाएं आई थी वह दिल्ली में एकांत वास किया करता था और ईश्वर पर भरोसा करता था। वह बडा योग्य पुरूष है। मैंने उसको अनेक कृपायें करके विदा किया।

रविवार तारीख 16 को मैंने दिल्ली से प्रयाण किया और शुक्रवार तारीख 21 को मैं परगना केराना (सरकार सहारनपुर) में ठहरा। यह परगना

मुकर्रब खां का पुराना स्थान है। यहां की आबो हवा न ठण्डी है और न गरम है। यहां की भूमि अच्छी है। मुकर्रब खां ने यहां बाग और इमारतें बनाई थी। शनिवार तारीख 22 को मैं और महिलायें इसमें घूमी यह वास्तव में आनन्ददायक बाग है। एक सौ चालीस बीधा फूलों की क्यारियां हैं। बाग के बीचों बीच एक तालाब है वह 220 गज लम्बा और 200 गज चौड़ा है। तालाब के बीच में चांदनी के समय बैठने के लिए एक समचतुष्कोण महताब बना हुआ है इसकी एक भुजा 22 गज है। यहां सब प्रकार के वृक्ष हैं ईरान में पैदा होने वाले वृक्षों में मैंने यहां पिस्ता का वृक्ष देखा और एक बहुत ही मनोहर साइप्रस का वृक्ष देखा इस बाग में साइप्रस के 300 वृक्ष थे। तालाब के चारों ओर उपयुक्त इमारतें बन रही हैं। सोमवार तारीख 24 को अहमदनगर दुर्ग के दुर्गाध्यक्ष खजर खां का मनसब बढाकर दो हजार 500 जात और 1600 सवार कर दिया गया। बुधवार तारीख 26 को मेरे पुत्र शाहजहां के आसफ खां की पुत्री से एक पुत्र हुआ उसने मुझे एक हजार मोहरें भेंट करके निवेदन किया कि इस बच्चे का क्या नाम रखा जावे। मैंने उसका नाम उम्मेद बख्श रखा। बृहस्पतिवार तारीख 27 को मैं यहीं ठहरा। बृहस्पतिवार तारीख 5 इलाही मास को नाव अकबरपुर में छोड़ी और फिर मेरे लश्कर ने स्थल मार्ग से आगरा से मुकाम की जगह तक जो परगना बुरिया के अन्दर 2 कोस पर स्थित है नदी के द्वारा 123 कोस और मार्ग द्वारा 91 कोस की दूरी है। मैंने इसको 34 मंजिलों में और 17 मुकाम करके पार किया। इसके अतिरिक्त नगर से प्रस्थान करने में मुझे सप्ताह लगा गया और 13 दिन पालम में शिकार करता रहा। इस प्रकार मुझे 70 दिन लगे। इस दिन जहांगीर कुली खां बिहार से आया और उसने 100 मोहरे और 100 रुपये नजर किये। बृहस्पतिवार तारीख 12 को मैं सरहिन्द के बाग को देखने गया। इसमें पहले की सी ताजगी नहीं है। इस बाग को ठीक बनाये रखने के लिए ख्वाजा बहिसी को सरहिन्द का करोडी नियुक्त किया गया। वह कृषि कार्य और निर्माण कार्य से अच्छा अभिज्ञ है। मैं राजधानी से रवाना हुआ उससे पहले ही उसको इधर भेज दिया गया था और मैंने उसे आदेश दिया था कि पुराने वृक्षों को काटकर नये पौधे लगाये जावें। बाग में रास्ते बनाये जायें और पुरानी इमारतों की मरम्मत करके गुसलखाने आदि उपयुक्त स्थानों पर नये बना दिये जायें। इसी दिन दस्तबेग और मुजफ्फर हुसैन को मनसब दिये गये। शेख कासिम को दक्खिन में भेजा गया। बृहस्पतिवार तारीख 19 को मैं शाहजहां के निवास पर गया। ईश्वर ने उसको पुत्र प्रदान किया था इसलिए बड़ा आमोद-प्रमोद किया गया और भेंटे दी गई। इसमें 1 शमसीर-ए-नीमचा की थी और योरोप में तराशी गई थी। 1 हाथी था जो

बगलाना के राजा ने बुरहानपुर मे मेरे पुत्र को दिया था। स्वीकार की हुई भेंटों का मूल्य 1,30,000 रुपये था। उसने 4000 रुपये अपनी माताओं को दिये। इसी दिन सईद बायजीद पुखारी फौजदार भक्खर ने एक रंग भेंट स्वरूप भेजा इसको पहाड़ियों से मकान में लाया गया था उस समय वह छोटा सा था। मुझे यह बहुत पसन्द आया मैने पालतू रग कभी नहीं देखा था। सईद बायजीत को 1000 जात और 700 सवार का मनसब दिया गया। सोमवार तारीख 23 को मुकीन खां बिहार का सूबेदार नियुक्त किया गया और उसे उपयुक्त भेंटें दी। रविवार तारीख 29 को ब्यास नदी के तट पर शाहजादा शाहजहा को दावत दी गई। उसी दिन कांगडा से विक्रमाजीत ने आकर कुछ आवश्यकतायें बतलाई सोमवार 30 सोमवार को शाहजहां ने 10 दिन की छुटटी ली और लाहौर के महलों को देखने चला गया जो अभी हाल ही बनाये गये थे। राजा विक्रमाजीत को उपयुक्त भेंटे देकर वापस कांगडा भेज गया। बुधवार तारीख 2 जुलाई मास बहमन को मै कालानूर बाग मे पहुचा। इसी स्थान पर मेरे पिता राजसिंहासन पर बैठे थे।

जब मुझे खबर मिली थी कि खान आलम शीघ्र ही दरबार में आने वाला है तो मैने प्रतिदिन उसे मिलने के लिए अपना 1 सेवक भेजा और उसको सब प्रकार की कृपाओ से लाद दिया पद और प्रतिष्ठा भी बढाई गई और 1 बार मैने उसको जहांगीरी इत्र भेजा।

बृहस्पतिवार तारीख 3 को खान आलम कालानूर बाग मे आया उसने 100 मोहरे और 1000 रुपए नजर किये। मेरे भाई शाह अब्बास का राजदूत जम्बीलबेग 1 शाहीपत्र और ईरान की दुर्लभ चीजें जो मेरे लिए भेंट स्वरूप भेजी गई थी, लिए हुए खान आलम के पीछे आ रहा था। मेरे भाई (शाह अब्बास) ने खानआलम पर जो कृपायें की उनका वर्णन अत्युक्ति माना जायेगा। उसने इसको खान आलम उपाधि दी वह इसे हमेशा साथ रखता था। शाह अब्बास इसके मकान पर भी अनौपचारिक रूपेण चला जाता था। 1 दिन फरुखाबाद मे कमरगाह किया गया और खान आलम को आदेश दिया कि वह तीर से शिकार करे शिष्टतावश वह एक कमान और दो ही तीर लाया। शाह ने अपने ही तरकश मे से उसको 50 तीर दे दिये। इनमे से 50 तीर निशाने पर लगे और दो चूके फिर उसने सेवको से तीर चलाने के लिए कहा तो मोहम्मद यूसुफ ने तीर चलाया जो दो सुअरों को पार कर गया। उसकी बडी प्रशसा हुई। जब खान आलम ने रुखसत ली तो शाह अब्बास ने आदरार्थ उसका आलिगन किया। खान आलम अनेक सुन्दर और दुर्लभ वस्तुयें लाया था उनमें एक चित्र था जिसमें सहिब किरान (तीमूर) की कुतुब तमिशखां के साथ लडाई बतलाई गई थी। इसमें तीमूर और उसके

बच्चों के और बडे–बडे अमीरों के भी चित्र थे। ये लोग लडाई में शामिल थे प्रत्येक चित्र के निकट नाम लिखा हुआ था कि किसका चित्र है। एक ही चित्र में 240 सूरतें बतलाई गई थी। चित्रकार ने अपना नाम खलील मिर्जा शाहरुखी लिखा था। यह चित्र पूर्ण और सुन्दर था और उस्ताद बीहजाद की कलम से बहुत मिलता जूलता था। यदि चित्रकार का नाम लिखा हुआ नहीं होता तो इसको बीहजाद का बनाया हुआ चित्र माना। यह बीहजाद से पहले का चित्र था। इसलिए बहुत सम्भव है कि बीहजाद खलील मिर्जा का शिष्य है। यह बहुमूल्य चित्र शाह इस्माइल प्रथम के प्रसिद्ध पुस्तकालय से मिला था। या मेरे भाई शाह अब्बास को शाह तहमास्प से मिला होगा। सादिकी नामक उसके एक पुस्तकाध्यक्ष ने इसको चुराकर किसी को बेच दिया था। संयोगवश यह चित्र इस्फाहन में बखान आलम के हाथ आ गया शाह ने सुना कि ऐसा दुर्लभ चित्र मिला है तो देखने के बहाने से शाह ने इसे मंगवाया। खान आलम ने युक्तियों से टालटूल की परन्तु शाह अब्बास ने बहुत आग्रह किया तो खान आलम ने चित्र बेच दिया और यह जानकर कि मुझे चित्र बहुत पसन्द है उसने चित्र वापस दे दिया और इसके चुराये जाने की सारी कहानी आलम को सुना दी।

जब मैंने खान आलम को ईरान भेजा तो उसके साथ बिशनदास नामक एक चित्रकार को भी भेजा था जो अपने समय में तस्वीरें उतारने में अद्वितीय था। मैंने उसको आदेश दिया था शाह और उसके राज्य के मुख्य सरदारो के चित्र बनाकर अपने साथ लावे वह कितने ही लोगों के चित्र बनाकर लाया था और विशेषकर मेरे भाई शाह का चित्र बहुत ही सुन्दर था। जब मैं इसको शाह अब्बास के किसी सेवक को बतलाता था तो वह कहता था कि चित्र बहुत ही अच्छा बनाया गया है।

उसी दिन कासिमखा लाहौर के बख्शी और दीवान के साथ आया बिशनदास को 1 हाथी प्रदान किया गया। बाबा ख्वाजा को जो कन्धार मे 1 सहायक था 1000 जात और 550 सवार का मनसब दिया गया। मगलवार तारीख 3 को मदारुल महाम्मी इतिमादुद्दौला ने अपनी सेना तैयार की। पंजाब उसके नायबों से सुपुर्द है और हिन्दुस्तान में उसकी कई जागीरें हैं। इसलिए उसने 5000 सवार दिखाए। कश्मीर की भूमि ऐसी नहीं है कि वहां की उपज शाही सेना के लोगो के खर्च के लिए पर्याप्त हो। इस समय शाही सेना के आगमन के कारण अन्न और तरकारियों का मूल्य बहुत बढ गया था। इसलिए मैंने आदेश दिया कि जो बडे–बड़े सेवक साथ चल रहे हैं वे अपने उन्हीं लोगों को ले चले जो अनिवार्य समझे जावें। इसी प्रकार जानवरों की संख्या भी कम की जावे। बृहस्पतिवार तारीख 10 को मेरा पुत्र शाहजहां

लाहौर से लौट आया। जहांगीर कुली खां को 1 खिलअत थोड़ा और हाथी देकर भाइयों और पुत्रों के साथ दक्खिन भेज दिया। इसी दिन तालिब आमूली को मलिकुश शुबरा (कविराज) की उपाधि दी और यह खिलअत प्रदान किया गया। यह कुछ समय तक इतिमादुद्दौला के पास था। इसकी शैली अपने समकालीन लोगों से बहुत बढी चढ़ी थी। इसलिए इसको कविराज बनाया गया था।

तालिक (बाबा तालिब) एक इस्फानी वंश का है, यह युवावस्था के आरम्भ में कश्मीर चला गया था और सन्यासी के से कपडे पहनता था उसको कश्मीर की सुन्दरता और जलवायु पसन्द आये और वहीं रहने लग गया था। जब कश्मीर पर अकबर की विजय हो गई तो तालिब बादशाह की सेवा करने लगा। अब उसकी आयु 100 वर्ष की है। उसके पुत्र और आश्रित लोग कश्मीर में ही रहते हैं और इस अमर साम्राज्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया करते हैं।

मैंने सुना कि लाहौर में मियां शेख मोहम्मद मीर नामक एक सिन्धी दरवेश है जो बडा नेक और गम्भीर है। उसका स्वभाव उत्तम है। वह आत्म विस्मृत हो जाया करता है और एकान्त मे ईश्वर के भरोसे रहता है। वह संसार से स्वतंत्र है। और सत्य की खोज मे लगा रहता है। मै उससे मिलने के लिए अधीर हो गया और मेरा लाहौर जाना असम्भव था इसलिए मैंने उसको लिखा कि मुझे उससे मिलने की अभिलाषा है। इतना वृद्ध और निर्बल होते हुए भी उसने आने का कष्ट किया। मैं बडे समय तक उसके पास बैठा रहा। उससे मिलकर मुझे बडा आनन्द आया। वह वास्तव में बडा नेक व्यक्ति है। इस समय संसार को उससे आनन्द और लाभ है। उसकी संगति से मैं कहां से कहा चला गया और उससे सत्य और धर्म ऊंचे उपदेश सुने। मैं उसको कुछ बख्शीश देना चाहता था परन्तु मैंने देखा कि उसकी आत्मा ऐसी बातों से बहुत परे है। मैंने उसको बैठने के लिए एक और सफेद हिरण का चमड़ा दे दिया। वह तुरन्त ही विदा लेकर लौट गया।

बुधवार तारीख 24 को दौलताबाद ठहरा वहा एक माली की लड़की मैंने देखी जिसकी आकृति पुरुष की सी थी परन्तु वह लडकी थी।

बृहस्पतिवार तारीख 24 को बाकिरखां मुल्तान से आया पहले लिखा जा चुका है कि जलाला तारीकी का पुत्र अल्लाहदाद शाही सेना में से भागकर विनाश मार्ग पर लग गया था। अब उसने पश्चाताप करके बाकिरखां के द्वारा इतिमादुद्दौला से क्षमायाचना की इतिमादुद्दौला ने मुझसे प्रार्थना की तो मैंने आदेश दिया कि यदि वह अपने किए पर पश्चाताप करता है और इस दरबार से अनुग्रह की आशा करता है तो उसके अपराध क्षमा कर दिए

जायेंगें। आज आकिरखां अल्लाहदाद को दरबार में लाया और इतिमादुद्दौला के बीच बचाव से उसको क्षमा कर दिया गया और उसके सिर से शोक धुल गया। जम्मू के जमींदार संग्राम को राजा की उपाधि से और 1000 जात तथा 500 सवारों के मनसब से सम्मानित किया गया और उसको 1 खिलअत और हाथी प्रदान किए गए। दोआब के फौजदार गैरतखां, ख्वाजा कासिमखां को, कासिमखां के पुत्र तहमतन बेग को 1000 से कम के मनसब दिए गए। खान आलम को 1 हाथी झूल सहित प्रदान किया गया। बाकीरखा को इस मंजिल पर 1500 जात और 500 सवार का मनसब देकर पुनः सूबादारी पर विदा किया गया।

सोमवार तारीख 28 को परगना करोही मे मुकाम किया जो बिहात (झेलम) नदी के तट पर है। यहां शिकारियों ने पहले ही आकर जरगाह तैयार कर लिया था। तारीख 1 इस्फन्दारमुज इलाही मास बुधवार को 6 कोस से वे इसमें जानवरों को घेर लाये। बृहस्पतिवार तारीख 2 को 101 जंगली भेंड़े और हिरन पकडे गये। महावतखां बडे अर्से से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सका था। अतः उसकी प्रार्थना पर मैने आदेश दिया कि यदि कोई रुकावट न हो तो वे अपने सैनिकों की थानो मे छोडकर दरबार मे आ जाये। आज उसने आकर 100 मौहर नजर की। खान आलम को 5000 जात और 300 सवार का मऩसब दिया गया। लगभग इसी समय नूरद्दीन कुली की रिपोर्ट आई कि पंच सडक की मरम्मत कर दी गई है और यथासम्भव घाटियों को भरकर बराबर कर दिया गया है परन्तु कुछ दिन से बर्फ पड रहा है मार्ग में तीन हाथ गहरा है और अभी भी पड रहा है। इसलिए यदि मैं 1 मास पहाडियो के बाहर ठहरा तो उस मार्ग को पार कर सकता हूं अन्यथा यह दुश्कर होगा। मेरा विचार यह यात्रा करने में यह था कि मैं बसन्त के फूलो और पौधों को देखू परन्तु इस विलम्ब यह यह मौका जाता रहा इसलिये मैंने पकली और दन्तूर के मार्ग से जाने का निश्चय किया। झेलम नदी में पानी सीने के बराबर था। फिर भी मैने उसको पार किया। उसकी धार बहुत तेज चल रही थी। पार करने में लोगों को बड़ा कष्ट हुआ। मैंने थाह पर 200 हाथी भेजकर माल उतारा और वृद्ध और निर्बलों को पार किया इससे प्राणों की या सम्पत्ति की कोई हानि नहीं हुई।

आज ख्वाजा जहां की खबर आई वह मेरा 1 पुराना सेवक था। मैं शाहजादा था तबसे वह मेरी सेवा कर रहा था फिर वह मेरे पिता की सेवा करने लगा था। परन्तु इससे मेरे मन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ मेरे राज्यारोहण के बाद मैंने उस पर ऐसी कृपा की जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता

था। मैने उसको 5000 जात और 3000 सवार का मनसब दिया। उसमे 1 विचित्र बात थी उसमे कार्य करने की आश्चर्यजनक निपुणता थी यह उसको परिश्रम से प्राप्त हुई थी। प्रकृति से नही। इस यात्रा मे उसको दिल की बीमारी हो गई। फिर भी वह प्रयाण करता रहा। अब उस की निर्बलता बढ गई तो उसको कालानूर जाने की इजाजत दे दी गई। और वह लाहौर चला गया और वहा उसकी स्वाभाविक मृत्यु हो गई।

रविवार तारीख 5 को मिर्जा रुस्तम के पुत्र हसन का मनसब 1000 जात और 400 सवार करके दक्खिन भेज दिया। ख्वाजा अब्दुल लतीफ को बाजदारो मे मुख्यत 1000 जात और 400 सवार का मनसबदार बनाया गया।

बृहस्पतिवार तारीख 9 को कश्मीर के सूबेदार दिलावर खा ने खबर भेजी कि किश्तवार पर विजय प्राप्त हो गई। इसका विवरण बाद मे आवेगा मैने उसको 1 खिलअत और जडाऊ खजर के साथ फरमान भेजा और विजित प्रदेश के 1 वर्ष की आय उसको पुरस्कार के रूप मे दी। मगलवार तारीख 14 को मै हसन अव्दाल पहुचा यहा से कश्मीर तक प्रत्येक मजिल का वृतान्त लिखा जाएगा। मै जिस दिन नाव मे से उतरा वहा से हसन अब्दाल 178 कोस है। मैने यह दूरी 69 दिन मे 21 जगह मुकाम करके 48 मजिलो मे पार की। यहा एक सुन्दर झरना और जलाशय देखा और मै दो दिन ठहरा। बृहस्पतिवार तारीख 16 इसफन्दारमुज को मेरी चान्द्र तुला हुई। मेरा 53 वा वर्ष आरम्भ हुआ। यहा से आगे के मार्ग मे पहाडियो, घाटियो और अनेक ऊँचे नीचे स्थान थे और मार्ग दुर्गम था इसलिये निश्चय किया गया कि मरियमुज्जमानी और अन्य बेगमे कुछ दिन ठहर कर फिर आराम मे आवे। उनकी यात्रा की व्यवस्था करने के लिये मदारुलमुल्क इतिमादुद्दौला अल्खाकानी, सादिकखा बख्शी और इरादत खा मीर सामान को यही छोडा। इसी समय रुस्तम मिर्जा सफवी खान आजम और कई अन्य सेवको ने पच सडक द्वारा यात्रा करने की इजाजत ली। शाही लवाजमा कुछ खास दरबारियो के साथ रवाना हुआ। शुक्रवार ता 17 को हमने साढे 3 कोस प्रयाण किया और सुल्तानपुर गाव मे मुकाम किया। इस दिन राणा अमर सिह की मृत्यु का समाचार आया। उसकी मृत्यु उदयपुर मे स्वाभाविक रीति से हुई थी। उसका पुत्र भीम और पोता जगतसिह मेरे साथ थे। इनको खिलअते दी ओर राजा किशनदास को आदेश दिया गया कि वह उदयपुर आये। उसके साथ फरमान खिलअत, 1 घोडा और 1 हाथी कुवर करण के लिये भेजा गया। कुवर को राणा की उपाधि दी गई। उसकी मातम पुरसी की गई। तथा उसे बधाई दी गई। मैने यहा के लोगो से सुना कि जब वर्षा

नहीं हो रही हो और मेघ या बिजली का चिन्ह भी नहीं हो तब इस पहाडी से मेघ गर्जन सुनाई देता है। यह शोर प्रति वर्ष या दो वर्ष में एक बार सुना जाता है। जब मैं स्वर्गीय बादशाह के साथ था तब भी मैंने यह बात बारबार सुनी थी। यह विचित्र बात है इसलिए मैंने इसका उल्लेख किया है। सत्य का पता ईश्वर को है। शनिवार तारीख 18 को साढे 4 कोस चलकर मैंने सजी नामक गांव पर मुकाम किया और यहां से हजारा कारलूग के परगने में प्रवेश किया। रविवार तारीख 19 को पौने 4 कोस प्रयाण करके मैं नौशेरा गांव पर ठहरा और यहां से हमने धकतूर में प्रवेश किया जहां तक आंख पहुंचती थी वहां तक हरे भरे खेत थे। बीच बीच में धल कवल और अन्य फूल खिल रहे थे जो बडा ही सुन्दर दृश्य था। सोमवार तारीख 20 को साढे 3 कोस चलकर हमने सलहर नामक गांव पर मुकाम किया। महावत खां ने रत्न और पात्र भेट किए। जिनका मूल्य 50 हजार रु. था। यहां पर मैंने देखा अनेक पुष्प एक पुष्प मालुम पडते थे। मंगलवार तारीख 21 को 3 कोस प्रयाण करके मैं भल गल्ली ठहरा। एक दिन मैने महावत खा को बंगश भेजा ओर जाते समय उसको एक खासा हाथी, खिलअत और पुस्तीन (भेड के चमडे का कोट) दिया आज यहां पर हल्की सी वर्षा होने लगी जो प्रयाण के अन्त तक चलती रही। बुधवार तारीख 22 के सायंकाल भी वर्षा हुई। प्रातः काल हिमपात हुआ अनेक मार्गों पर कीचड़ हो जाने से फिसलन हो गई। निर्बल पशु जगह जगह गिर जाते थे और उठ न सकते थे। उनकी सहायता के लिए मैंने 25 हाथी भेजे। बृहस्पतिवार तारीख 23 को पकली का जमीनदार सुल्तान हुसैन आया। यहीं से पकली में प्रवेश किया जाता है। यह विचित्र बात है कि जब बादशाह अकबर यहां था तब हिमपात हुआ। कई वर्षो से न हिमपात हुआ और न पानी वर्षा हुआ है। शुक्रवार तारीख 24 को 4 कोस चलकर मैने सवादनगर में मुकाम किया। इस मार्ग में भी बडी कीचड़ थी। खुबानी और आंडू के वृक्ष चारों ओर फूल रहे थे। सरू वृक्षों को देखकर आनन्द आता था। शनिवार तारीख 25 को साढे तीन कोस चलकर लश्कर पकली ठहरा। सोमवार तारीख 26 को मैंने तीतरों का शिकार किया और सुल्तान हुसैन की प्रार्थना पर उसके मकान पर जाकर मैंने उसकी प्रतिष्ठा बढाई। अकबर भी उसके मकान पर गया था। उसने कई प्रकार के घोड़े खंजर और शकरे और बाज भेट किये। मैंने उसको घोडे और खंजर दिये। सरकार पकली 35 कोस लम्बा 25 कोस चौडा है। पूर्व की ओर दो बाजुओं पर कश्मीर का पर्वतीय प्रदेश है। पश्चिम में अटक बनारस है। उत्तर में कंठोर और दक्षिण में घक्खड़ देश है। ऐसा कहा जाता है कि जब हिन्दुस्तान को जीतकर तिमूर तुरान की राजधानी की ओर जाने लगा तो

इन प्रदेशों में अपने आदमी रख गया था वह लोग अपने को कारलूग बतलाते हैं। परन्तु इनको पता नहीं है कि इनका नेता कौन था। वास्तव में ये लोग लाहौरी हैं, और वही भाषा बोलते हैं। धनतूर के लोगों का भी यही ख्याल है। मेरे पिता के समय में धनतूर का जमींदार शाहरूख था। अब उसका पुत्र बहादुर है। ये सब लोग परस्पर में रिश्तेदार हैं परन्तु सदैव झगड़े रहते हैं। जमींदारों में सीमा के विषय में झगडे चला करते हैं। यह लोग हमेशा से राजभक्त हैं। जब मैं शाहजादा था तो सुल्तान हुसैन का पिता महमूद और शाहरुख दोनों मेरी सेवा में आये थे। सुल्तान हुसैन 70 वर्ष का है। परन्तु प्रत्यक्ष में उसकी शक्ति कम नहीं हुई है। वह अब खूब सक्रिय है और घुडसवारी कर सकता है। इस देश में लोग रोटी और चावल से शराब बनाते हैं। जिसको सर कहते हैं। यह बूजा से तेज होता है। और जितना पुराना हो उतना अच्छा माना जाता है। यहां लोग मुख्यतः इसे ही पीते है। सर को घड़े में रखकर बन्द कर दिया जाता है। इस प्रकार 2–3 वर्ष रखा जाता है। फिर इसके ऊपर की फफूद (छादन) उतार लेते हैं। इसको आची कहते हैं। आची 10 वर्ष तक रह जाती है। कम से कम 1 वर्ष तो रखा ही जाता है। सुल्तान महमूद सर का एक प्याला रोज पीता था। और कभी कभी तो यह घडा भर पी जाता था। सुल्तान हुसैन को भी इसका व्यसन थोड़ा सा था। यह उत्तेजक है और इसका स्वाद तेज है ऐसा मालूम होता है कि इसमें भंग मिला दी जाती हैं। जिससे अधिक मादकता और बढ जाती है। यदि शराब न मिले तो इससे काम चल सकता है। यहां के फल खूबानी, आंडू और नासपाती हैं। इनको पैदा नहीं किया जाता। यह आप से आप ही उगते हैं। इनकी गन्ध तेज और अप्रिय होती है। परन्तु इनके पुष्प बडे आनन्ददायक है मकान लकडी के बने हुए हैं और कश्मीरी ढंग के हैं। लोग सकरे, घोड़े, ऊट, भेंस, बकरे और मुर्गे और मुर्गी रखते हैं इनके खच्चर छोटे–छोटे होते हैं और लादने के काम के नहीं हैं। मुझसे निवेदन किया गया कि यहां से आगे खेती बहुत कम होती है। शाही लश्कर के लिए पर्याप्त अन्न नहीं मिलेगा। मैंने आदेश दिया कि आगे लश्कर कम कर दिया जाए। हाथियों की संख्या कम करके साथ 3–4 दिन का सामान ले जाया जाए और साथ अति आवश्यक सेवक ही चलें। शेष लोग ख्वाजा अबुल हसन बख्शी के नेतृत्व मे पीछे पीछे आवें। इतनी सावधानी करने पर भी अग्र. शिविर के साथ 700 हाथी थे।

मैंने सुल्तान हुसैन का मनसब बढाकर 600 जात और 350 सवार कर दिया और उसको एक जडाऊ खंजर, हाथी और एक खिलअत दी। बहादुर धनतूरी बंगस की सेना में सहायक था उसको भी 200 का मनसब दिया।

बुधवार 27 को साढे 5 कोस चलकर नेनसुख नदी पर मुकाम किया यह निकल कर दारद की पहाडियों के नीचे आती है और बदख्शां और तिब्बत के बीच चलती है। यहां इसकी दो शाखायें हो जाती है। शाही सेना के उतरने के लिए यहां पुलें बनाई गई थीं। एक पुल 18 हाथ और दूसरी 14 हाथ थीं। दोनों पांच पांच हाथ चौड़ी थी। इस देश में पुलें बनाने का तरीका यह है कि चीड के वृक्षों को काटकर पानी पर डाल दिया जाता है और इनके दोनो सिरों को चट्टानों से कसकर बांध देते हैं। फिर इन पर तख्ते रखकर रस्सों और खूंटियो से कस दिया जाता है। हाथियों को तो थाह में चलाकर उतारा गया और सवार और प्यादे पुल पर चलकर निकले सूल्तान महमूद इस नदी को नैनसुख कहता था। बृहस्पतिवार ता. 30 को सवा तीन कोस चलकर किशन गंगा के तट पर मुकाम किया गया। इस मार्ग पर एक बहुत ऊँचा कोतल है इसकी चढाई एक कोस और उतराई सवा कोस है इसको पान दरंगा कहा जाता है। यह नाम इस प्रकार बना है कि कश्मीर की भाषा में रुई को पिम (पिम्ब) कहते हैं। कश्मीर के शासकों ने यहां एक अधिकारी नियुकत कर दिया था जो रुई की गांठों पर कर वसूल करता था और इस संग्रह के कारण लोगों को देर लग जाती थी इसलिए इसका नाम पिम दरंग हो गया दरंग का अर्थ देरी है। इस घाटी को पार करने के बाद एक सुन्दर और शुद्ध जल प्रपात है। जल के तट पर वृक्षों की छाया मे मद्यपान करके सायकाल में अपनी ठहरने की जगह पहुचा। इस नदी पर 54 गज लम्बी डेढ गज चौडी एक पुल है जिस पर होकर प्यादों ने नदी पार की मैंने आदेश देकर इसी के समानान्तर एक 53 गज लम्बी और 3 गज चौडी बनवाई। पानी गहरा और बहाव तेज था इसलिए हाथियों को बिना लदे हुए पार करवाया और प्यादो और घुडसवारो ने पुल द्वारा नदी पार की। मेरे पिता के आदेश से नदी के ऊपर एक पहाड की चोटी पर पक्की सराय बनाई गई थी। नए वर्ष के दिन से एक दिन पहले ही उपयुक्त स्थान दूढकर वहा तख्त रखने के लिए और नए वर्ष के उत्सव की तैयारी करने से लिए मुतमिद खा को भेज दिया था। पुल पार करके देखा गया कि एक हरी भरी सुखद पहाडी थी जहा से नदी का पानी दिखाई देता था। इसकी चोटी पर 50 हाथ की एक चपटी भूमि थी जो मानो इस उत्सव के लिए ही बनाई गई हो। इस पर उक्त अधिकारी ने सब प्रकार की तैयारी कर दी थी। इसके लिए उसकी बडी तारीफ हुई। किशन गंगा दक्षिण से चलकर उत्तर की ओर जाती है।[1]

---

1 यह मूल है झेलम नदी पूर्व से आती है और किशन गंगा से मिलकर उत्तर की ओर चलती है।

राज्यारोहण के बाद पन्द्रहवें नए वर्ष का उत्सव

शुक्रवार तारीख 15 रवि उस्मानी 239 हिजरी (10 मार्च 1620) को साढ़े बारह घड़ी व्यतीत होने पर मुझे ईश्वर के पास के शासन का पन्द्रहवां वर्ष आनन्द पूर्वक और शुभ मुहूर्त से शुरू हुआ। शनिवार तारीख 2 फरवरदीन को साढ़े चार कोस प्रयाण करके मैं बक्सर गांव में ठहरा। इस मार्ग में कोई पहाड़ी नहीं है परन्तु यह कुछ पथरीला है। मैंने यहां गर्म सीर देश (अफगानिस्तान) जैसे मोर काले तीतर और लंगूर देखे इससे यह प्रत्यक्ष है कि यह प्राणी ठन्डे मुल्कों में भी होते हैं। यहां से कश्मीर का मार्ग विहात नदी के सहारे सहारे चलता है दोनों ओर पहाड़ियां हैं और घाटी के तल में पानी का प्रवाह बड़े जोर का है यह उबलता हुआमानों क्रोघ के साथ चलता है। हाथी चाहे जितना बडा हो वह इसमें अपने पैर नहीं थाम सकता और तुरन्त लुढ़क कर बह जाता है। इस नदी में पानी के कुत्ते भी है। रविवार तारीख 3 को साढे चार कोस चलकर मैं मुसारान ठहरा। शुक्रवार के सायंकाल मूल परगने के व्यापरियों ने आकर सलाम किया। मैंने उनसे पूछा कि बारह मूला नाम कैसे चला तो उन्होंने कहा कि हिन्दी में बराह सूअर का नाम है और मूल स्थान को कहते हैं यह सुअर का स्थान है। हिन्दू धर्म के अवतारों में एक बराह अवतार भी है। बोलते–बोलते बराह मूल बारा मूला बन गया। सोमवार तारीख 4 को ढाई कोस प्रयाण करके मैंने मुलवास में डेरे लगाए लोगों ने कहा कि ये पहाड़ियॉ तंग हैं और उनको पार करना कठिन है। यदि मनुष्यों का झुण्ड इनको पार करना चाहे तो उसको बडी मुश्किल होती है इसलिए मैंने मुतामिद खां को आदेश दिया कि आसफ खां और कुछ आवश्यक सेवकों के अतिरिक्त किसी को मेरे साथ जाने की इजाजत नहीं दी जाए और लश्कर को एक मजिल पीछे रखा जाए। संयोगवश यह आदेश दिया उसने पहले ही वह अपना डेरा भेज चुका था फिर उसने अपने आदमियों को लिखा कि वह जहां पहुंचे गए हैं वही ठहर जाए उसके भाइयों ने यह आदेश मूलबास के कोत़ाल के नीचे सुना और वहीं उन्होंने अपना डेरा लगा दिया जब मैं इस स्थान पर पहुंचा तो बर्फ पडने लगी ओर पानी बरसने लगा फिर उसका डेरा दिखाई दिया और मैं और महिलाएं 63 और बर्फ से

तथा पानी से बच गए उसके भाइयों ने उसको बुलाने के लिए आदमी भी दौड़ाए जब उसको खबर मिली कि हाथी और अग्रिम लश्कर कोताल की चोटी पर पहुंच गया है और रास्ता रूक गया है और घोडे पर चढकर के चलना असम्भव है तो व्याकुल होकर उसने दो धण्टे में ढाई कोस पैदल सफर की और वह मेरी सेवा में आ पहुंचा।

उसने रुपया सामान पशु मेरे भेंट किए। जो मैंने लौटा दिए और कहा संसार की वस्तुएं क्या चीज है हम तो स्वामिभक्ति को बहुत बडी धनराशि देकर खरीदते हैं। मैं और बेगमें आराम के साथ उसके डेरे में रात भर रहे यह उसके लिए बड़े सम्मान की बात थी। मंगलवार तारीख 5 को दो कोस चलकर मैंने कहाई नामक गांव में मुकाम किया ओर जो कपड़े मैं पहने हुए था वे मुतामिद खां को दिए और उसे 1500 जात और 1500 सवार का मनसब प्रदान किया। इस मंजिल से हमने कश्मीर में प्रवेश किया। भालबास के इसी कोतल में युसुफ खां कश्मीरी का पुत्र याकूब मेरे पिता की सेना से लड़ा था। शाही सेना का नेतृत्व राजा मानसिंह के पिता राजा भगवान दास ने किया था।

इसी दिन खबर आई कि रुस्तम मिर्जा का पुत्र सोहराब खां झेलम नदी में डूबकर मर गया। इसका विवरण यह है। आदेशानुसार वह एक मंजिल पीछे आ रहा था। मार्ग में उसके मन में यह बात आई कि नदी मे स्नान किया जाए। गर्म पानी मौजूद था लोगों ने कहा कि नदी में न नहावे जब इतनी ठंड थी तो ऐसी क्षुब्ध नदी में नहाना आवश्यक नही है यह तो जंगी हाथी को भी लोट–पोट कर सकती है। इसमे नहाना सावधानता नहीं है। परन्तु वह नहीं रुका उसका समय आ गया था और नदी में घुस गया और एक खिदमतगार के साथ जो तैरना जानता था नदी के तट की पहाडी पर चढ़ गया और वहा से नदी में कूद पडा। नदी का कटाव बडा जोर का था वह अपने को नहीं संभाल सका और न तैर सका। इस प्रकार सोहराब खां और उसका सेवक दोनों ही अपने प्राण दे बैठे। मिर्जा रुस्तम अपने पुत्र से बड़ा प्रेम करता था यह खबर सुनकर वह बड़ा क्षुब्ध हुआ परन्तु उसने धैर्य धारण किया। अपने आश्रितों के साथ शोकवेश धारण किए हुये नंगे सिर और नंगे सिर पैर वह मेरी सेवा में आया। भक्त के शोक का मैं क्या वर्णन कर सकता हूं। मिर्जा के और भी पुत्र हैं परन्तु इससे तो वह हृदय से ही प्रेम करता है उसकी आयु 26 वर्ष की थी। बन्दूक चलाने में वह अपने पिता के समान था उसको हाथी और बग्गी चलाना आता था। वह सक्रिय सैनिक था गुजरात के युद्ध में वह भी हाथी के आगे के हिस्से पर बैठता था।

बुधवार तारीख 236 को तीन कोस प्रयाण करके मैंने खिन्द गांव में डेरे लगाए। बृहस्पतिवार तारीख 7 के कुमारमत कोतल को पार करके जो इस मार्ग पर अति दुर्गम है मैंने वचहा गांव में मुकाम किया इस मंजिल की दूरी साढे चार कोस है। कुमारमत कोतल दुर्गम हैं और इस मार्ग पर यह अन्तिम कोतल है। शुक्रवार तारीख 8 को चार कोस प्रयाण करके मैं बलतार गांव में ठहरा। इस मार्ग पर कोतल नहीं था यह चौड़ा मार्ग था और मैदान के बाद मैदान तथा हरे और फूलदार बगीचे के बाद दूसरा बगीचा आता था। इस देश के विचित्र मधुर और सुगन्धित पुष्प दिखाई देने लगे। इनमें एक असाधारण था इसको बुलानिक फूल कहते है। एक दूसरा फूल भी बडा विचित्र था इसको लदरपुश कहते हैं। कश्मीर के फूल अगणित हैं इनका कोई हिसाब नहीं है। मैंने परम विचित्र फूलों का ही उल्लेख किया है मार्ग पर बहुत ऊचा और सुन्दर जल प्रपात है मैंने मार्ग में ऐसा दूसरा नहीं देखा। मैं थोड़ी देर ठहर कर अपनी आंखों को और हृदय को सुख देता रहा। शनिवार तारीख 9 को पौने पांच कोस चलकर मैं बारा मूला पहुंचा यह कश्मीर का प्रसिद्ध कस्बा है। बिहात नदी के तट पर स्थित है और नगर से 14 कोस दूर है। कश्मीर के कितने ही व्यापारी उसमें रहते है। नदी के तट पर उन्होंने मकान और मस्जिदें बना ली है यहां ये लोग सन्तोषमय सरल जीवन व्यतीत करते हैं। आदेशानुसार मेरे आगमन से पहले ही उन्होंने यहां की नावों का सजा लिया था। श्रीनगर में प्रवेश करने का समय सोमवार दो पहर निकलने के बाद निश्चय हुआ था इसलिए रविवार को ठीक समय मैंने शिहाबुद्दीनपुर मे प्रवेश किया इस दिन कश्मीर का सूबादार दिलावार खां काकर किश्तवार से आया अनेक शाही कृपाओं से उसका सिर ऊंचा हुआ उसने यहां बहुत अच्छा काम किया था।

किश्तवार कश्मीर के दक्षिण में है। कश्मीर के श्रीनगर से अलका मंजिल तक जो किश्तवार की राजधानी है 60 कोस की दूरी है। इलाही मास शहरीवर की तारीख 10 को जो मेरे शासन का 14वां वर्ष है दिलावर खां ने 10,000 सवार और प्यादों सहित किश्तवार की विजय का निश्चय किया। उसने अपने पुत्र हसन को गिर्द अली मीर बहर के साथ नगर की देखरेख और प्रदेश का प्रशासन करने के लिये नियुक्त किया। गोहर चक और एबाचक कश्मीर के वारिस होने का दावा करते थे और दिलावर खां ने अपने एक भाई हैबास को सेना देकर देसू में छोडा जो पीर पंजाल के कोतल के समीप है और फिर अपनी सेना के 2 भाग करके वह संगीतपुर के मार्ग से कूच करने लगा। अपने पुत्र जलाल को नसरुल्ला अलब और मलिक क़श्मीरी तथा कुछ जहांगीरी सेवकों के साथ दूसरे मार्ग में भेजा। अपने

ज्येष्ठ पुत्र जमाल को कुछ जोशीले युवकों के साथ अपनी सेना के आगे चलाया। साथ ही अपनी दायीं तथा बायीं ओर उसने दो सेनायें रखी। मार्ग पर कोई घोड़ा नहीं चल सकता था। इसलिए अपने सिपाहियों के सब घोड़ों को वह पीछे ही छोड़ गया और उन्हें कश्मीर भेज दिया। नवयुवक पैदल पहाड़ियों पर चले। इस्लाम की सेना के गाजी लोग भाग्यहीन काफिरों से नगर कोट तक लड़े। यह शत्रु का 1 गढ़ था। यहां पर जलाल और जमाल की सेनाएं आ मिलीं। शत्रु उनका सामना नहीं कर सका और भाग गया। वीर लोगों ने ऊंचे और नीचे मार्ग को धैर्य और निश्चय के साथ पार किया और वे मन नदी की ओर शीघ्रता से कूंच करने लगे। नदी के तट पर शत्रु के बहुत से आदमी मारे गये और इस्लामी सेना के गाजियों ने बड़ा काम किया। अहबक चक कितने ही आदमियों के साथ मारा गया। उसकी मृत्यु से राजा शक्तिहीन और हतोत्साह होकर भाग गया और पुल पार करके मण्डार कोट ठहरा जो नदी के दूसरे तट पर है। बहादुर लोगों का एक दल पुल को पार करने के लिए आगे बढ़ा। पुल के सिरे पर भारी लडाई हुई और कुछ नवयुवक शहीद हो गये। इस प्रकार 20 दिन तक दरबार के सेवक नदी को पार करने का प्रयास करते रहे और काफिर लोग उनको पीछे धकेलते रहे। फिर दिलावर खां थाने जमाकर और रसद की व्यवस्था करके सेना के साथ आ पहुंचा। राजा ने युक्ति करने के लिए दिलावर खां के पास अपने वकील भेजे और प्रार्थना की कि वह अपने भाई को भेंटें लेकर दरबार में भेजना चाहता है जिससे उसके अपराधों की क्षमा मिल जाने पर वह स्वयं दरबार में आकर चौखट का चुम्बन कर सके। दिलावर खां ने इन शब्दों को कपट पूर्ण समझकर कोई कोई काम नहीं दिया। और नदी को पार करने का पूरा प्रयास किया। उसका ज्येष्ठ पुत्र जमाल अपने वीर और बलवान दल के साथ नदी के ऊपर पहुंचा। नदी में बाढ़ आ रही थी तो भी तैर कर उसको पार कर लिया और शत्रु की स्थिति कठिन बना दी। जब शत्रु ने देखा कि उसमें सामना करने की शक्ति नहीं है तो पुल के तख्तों को तोड़कर वह भाग गया। विजयी सेवकों ने फिर पुल बनाकर शेष सेना पार उतार ली दिलावर खां ने भंडार कोट पर अपनी सेना जमायी। उपरोक्त मरु नदी से चिनाब तक 2 तीर की मार का फासला है। और चिनाब के तट पर एक ऊंची पहाड़ी है। चिनाब नदी से काफिरों की रक्षा होती है। इसको पार करना दुशकर है। लोगों के आने जाने के लिये वह मजबूत रस्से बांध देते हैं और उन पर हाथ चौड़े तख्ते रख देते हैं। इस प्रकार ही एक पुल बना लेते हैं जो अधिक चौड़ी होती हैं इस प्रकार की पुल को जम्पा कहते हैं। जहां इनको ऐसी पुल बनाई जाने का भय था वहीं इन्होंने बन्दूकची और

तीरन्दाज नियुक्त कर दिये थे। दिलावर खा ने झाल बनाकर उन पर अपने 80 वीर नवयुवक चढा दिये और रात मे ही उन्हे नदी के पार पहुचाना चाहा। पानी का प्रवाह बडा प्रबल था। इससे झाल बह गये और 80 नवयुवक डूबकर मर गये। 10 नवयुवक तैर कर निकल गये और 2 काफिरो के हाथ मे पडकर बन्दी बन गये। साराश यह है कि दिलावर खा ने भण्डार कोट पर नदी को पार करने का बडे साहस के साथ प्रयत्न किया परन्तु उसकी युक्ति सफल नही हुई। फिर एक जमीदार ने आकर एक ऐसा स्थान बतलाया जिसका शत्रु को कुछ ख्याल भी नही था। वहा मध्य रात्रि मे जम्पा बनाकर जलाल दरबार को कुछ सेवको के साथ और अफगानो के साथ जो सब मिलकर 200 थे सुरक्षित पार उतार गया और प्रात काल अचानक ही उसने राजा पर आक्रमण करके विजय की बिगुले बजा दी। लोग जो आसपास थे या राजा के पास थे पागल से होकर ऊघते हुए बाहर दौडे और उनमे से अधिकाश तलवार की भेट हो गये। शेष लोग उस विपत्ति मे से भाग निकले। इस मुठभेड मे सैनिक राजा के पास जा पहुचा वह उसको तलवार से समाप्त करना चाहता था परन्तु उसने चिल्लाकर कहा "मै राजा हू मुझे दिलावर खा के पास जीवित ले चलो।" जब लोगो ने झपट कर उसको बन्दी बना लिया और उसके आदमी भागे गये। जब दिलावर खा ने विजय की शुभ समाचार सुना तो उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और विजयी सेना के साथ उस प्रदेश की राजधानी भडबदर पहुचा जो नदी से 3 कोस की दूरी पर है। जम्मू के राजा सग्राम की पुत्री और राजा बसु के पुत्र सूरजमल की पुत्री इस राजा के घर मे थी। सग्राम की लडकी से इसके बच्चे थे। विजय से पूर्व सावधानी के विचार से उसने अपने परिवार को जवाल के राजा और अन्य जमीदारो की शरण मे भेज दिया था। जब मेरे विजयी लोग दिलावर खा के पास पहुचे तो आदेशानुसार दिलावर खा राजा को चौखट का चुम्बन करवाने के लिए ले गया और इलाके की रक्षा करने के लिए कुछ सवार और प्यादे नसरुल्ला के नेतृत्व मे छोड गया।

किश्तवार मे गेहू जौ मोठ और दाले पैदा होती है यहा चावल नाम मात्र का होता है। यहा की केशर कश्मीर से भी अच्छी है। यहा प्रति वर्ष 100 शकरे पकड जाते है यहा नारंगिया नीबू और खरबूजे उत्तम प्रकार के होते है। यहा अगूर खुबानी आडू ओर खट्टी नाशपातिया उगायी जाती है। कश्मीर के प्राचीन शासको का सिक्का सनहसी कहलाता है। डेढ सनहसी 1 रुपये के बराबर होता है। अपने व्यापार के काम मे ये लोग 15 सनहसी को एक बादशाही मोहर के बराबर मानते है ये लोग हिन्दुस्तान के 2 सेर से 6 सनहसी प्रतिवर्ष लेता है। सारी केसर वेतन के रूप मे राजपूतो और 700

तुपचियों को दे दी जाती है। जब केसर बेची जाती है तो खरीददार से 4 रुपये 2 सेर के लिए जाते हैं। राजा की आय जुर्माने से होती है। वह छोटे छोटे अपराधों के लिए भी भारी जुर्माना करता है जो सम्पन्न है उनका किसी न किसी बहाने से राजा सब कुछ छीन लेता है। सब स्रोतों से राजा की आय 1 लाख रुपये वार्षिक है। युद्ध के समय 6 या सात हजार प्यादे एकत्र हो जाते हैं। इनमें सवार इने गिने ही हैं राजा और उसके सरदारों के पास सब मिलाकर 50 सवार के लगभग हों। मैंने दिलावर खां को एक वर्ष की आय दे दी। अनुमान से उसकी, जागीर एक हजार सवार की आय के बराबर होगी। जब मुख्य दीवान लोग जागीरदारों के वेतन का हिसाब लगावेंगें तो इसकी ठीक राशि का पता लगेगा।

सोमवार तारीख 11 को जब दो पहर और 4 षडी व्यतीत हो चुकी तो शाही सवारी झील (दाल झील) पर उतरी। यहां अभी हाल ही इमारतें बनाई गई थीं। मेरे पिता के आदेश से पत्थर और चूने का एक दृढ दुर्ग बनाया गया था। अभी यह पूरा नहीं हुआ है। हसन अब्दाल से कश्मीर 75 कोस है। यह 19 मंजिलों में और 25 दिन में पार किया गया। आगरा से कश्मीर 376 कोस है। जिसको 168 दिन में 102 मंजिलों मे पार किया गया था। स्थल मार्ग 304 कोस है।

मंगलवार तारीख 12 को दिलावर खां आदेशानुसार किश्तवार के राजा को बेडियां डालकर मेरे सामने लाया। दिलावर खां ने तसलीम की। राजा देखने में प्रतिष्ठित है उसका वेष हिन्दुस्तानी है। वह हिन्दी और कश्मीरी दोनों भाषायें जानता है। वह एक कस्बे का निवासी मालूम होता है। और मैंने उससे कहा कि उसने अपराध किये हैं तो भी यदि वह अपने पुत्रों को दरबार में ले आवे तो उसको मुक्त कर दिया जावेगा और वह साम्राज्य की छाया में आराम से रहेगा अन्यथा उसको हिन्दुस्तान के किसी दुर्ग में कैद रखा जाएगा। उसने कहा कि वह अपने पुत्रों और परिवार को मेरी सेवा में लाएगा। उसको मेरी दया की आशा थी।

अब मैं कश्मीर का संक्षिप्त वृतान्त लिखूगा। कश्मीर चौथी अकलीम में है। अक्षान्तर 35 डिग्री उत्तर में है और इसका देशान्तर श्वेत द्वीपों से; 105^0 डिग्री है। यहां पहले राजाओ का राज्य था जो 4 हजार वर्ष तक चला। इनका वृतान्त राजतरग मे दिगे हुआ है। मेरे पिता के आदेश से इसका अनुवाद संस्कृत से फारसी मे किया गया था। सन् 712 हिज्री तक 32 मुसलमान राजाओ ने 282 वर्ष तक राज्य किया। फिर 994 हिजरी (1568 ई.) में मेरे पिता ने इसको जीत लिया। उस तारीख से अब तक 35 वर्ष हुए है। और यह देश बादशाह के कब्जे में है। कश्मीर बुलियासा घाटी से कम

बरबर तक 56 जहांगीरी कोस लम्बा और 27 कोस चौडा है इसकी चौडाई कही भी 10 कोस से कम नहीं है। शेख अबुल फजल ने अनुमान से ही अकबरनामा में कश्मीर की लम्बाई किशन गंगा से कम बरबर तक 120 कोस और चौडाई 10 से 25 कोस लिखी है। मैंने दूर्दर्शिता और सावधानी करके कई विश्वसनीय और बुद्धिमान लोगों को तनाव द्वारा लम्बाई चौड़ाई नापने के लिए नियुक्त किया परिणाम यह हुआ कि शेख ने जो 120 कोस लिखा वह 67 कोस निकला। प्रायः इस पर लोग सहमत है कि देश की सीमा उस स्थान तक मानी जानी चाहिए जहां तक उसकी भाषा बोली जाती अत कश्मीर की सीमा बुलियास माननी चाहिए जो किशनगगा से 11 कोस पूर्व मे है। अतः कश्मीर की लम्बाई 56 कोस है। चौडाई मे 2 कोस से अधिक का अन्तर प्रकट नहीं हुआ। मेरे समय मे वही कोस माना जाता है जो मेरे पिता ने निश्चय किया। 1 कोस 500 गज का होता है और गज 2 शरी गज का माना जाता 1 शरी गज 24 अगुल का होता है। जहां गज या कोस का उल्लेख है वहां उपरोक्त गज या कोस समझना चाहिए। नगर का नाम श्रीनगर है। बिहात नदी इसके बीच मे होकर निकलती है। यह वीर नाग से निकलती है। यह 14 कोस दक्षिण में है। मेरे आदेशानुसार इस निकास पर एक इमारत और एक बाग निर्माण किया गया है। नदी मे पत्थर और लकडी की 4 पुले बनी हुई है जिन पर लोग आते जाते है। यहां की भाषा मे पुल को कबूल कहते हैं। नगर में एक विशाल मस्जिद है। इसको सुल्तान सिकन्दर ने 795 हिज्री (1393 ई.) में बनवाया था।[1] फिर यह पुल जल गई थी और सुल्तान हुसैन ने इसको दुबारा बनवाया था। परन्तु यह पूरी हुई उससे पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। 909 हिज्री (1503 ई.) में सुल्तान हुसैन के वजीर इब्राहीम मकरी ने इसको बडी सुन्दरता से पूर्ण किया। तब से अब तक 120 वर्ष हो गये है और यह विद्यमान है। महराब से पूर्व की दीवार तक यह 145 गज और इसकी चौडाई 144 गज है। इसमें 4 ताके है। इसके प्रधान हाल की बाजुओं पर सुन्दर बरामदे और स्तम्भ हैं। कश्मीर के शासको का इससे बढकर कोई स्मारक नहीं है। इस नगर में सईद अली हमदानी का एक खानकाही है। नगर के पास दो झीलें हैं। जो सदैव पानी से भरी रहती है। इन झीलो पर होकर अन्न और लकड़ियां लाई जाती है। कश्मीर में 5700 नावें और 7400 नाविक तथा 38 परगने हैं। ये

---

1 इण्डिन गजेटियर मे लिखा है कि इसका निर्माण जैनुलआबीदीन ने करवाया था इस विषय में एक शिलालेख भी है।

दो भागों में विभक्त हैं। नदी के ऊपर का बाग रमराज और नीचे का भाग कामराज कहलाता है। भूमिकर या व्यापार कर सोने या चांदी के खरवार से आंका जाता है। एक खरवार 3 मन और 8 सेर का एक तर्क मानते है। कश्मीर की आय 30 लाख 63 हजार 50 खरबार और 11 तर्क है। नकद के रूप में यह 7 करोड 46 लाख 70 हजार दाम के बराबर है। कश्मीर मे 8500 घोडे रखे जाते है। कश्मीर में घूमना बड़ा दुश्कर है। भीमभर और पकली के मार्ग सर्वोत्तम हैं। भीमभर पाला मार्ग छोटा है परन्तु यदि कश्मीर का बसन्त ऋतु देखना हो तो पकली के मार्ग से जाना चाहिए। इस ऋतु में दूसरे मार्ग बर्फ में रूके रहते हैं।

कश्मीर सतत् बसन्त का बाग है। यह सुखद पुष्पों की क्यारी है। इसके मैदानों का वर्णन नहीं किया जा सकता यहा अगणित छोटी–छोटी नदियां और फवारे हैं जिधर देखो उधर हरियाली और पानी दिखाई देता है। यहां लाल गुलाब वायलेट अैर नर्सीस आप ही उगते है। खेतों में सब प्रकार के पुष्प और सुगन्धित पौघे हैं जिनको गिना नहीं जा सकता। बसन्त ऋतु में पानी और मैदान फूलों से ढक जाते हैं।

बादाम और आडू की सुगन्ध खूब आती है, जब मैं अपने पिता के साथ था तो मैंने केसर के खेत देखे थे। परन्तु उस समय पतझड था जिस समय मैंने बसन्त के शोभा देखी। कश्मीर के मकान लकडी के हैं और 3, 4 खण्ड के बनंते हैं। छत पर मिट्टी डालकर ट्यूलिप के पौघे उगा दिये जाते है। यहां सुगन्धित चमेली सफेद रंग की ओर नीले रग की भी है। यहां चन्दन के रंग की चमेली भी है। गुलाब कई रंग के है। जाफरी फूल बडा सुगन्धदार होता है। इसका तना मनुष्य के बराबर लम्बा होता है। कश्मीर के 100 फूलों के चित्र नादिरुल असरी उस्दाज मंसूर ने बनवाये परन्तु यहां के पुष्प अगणित हैं पहले यहां शहालू और खबानी नहीं होती थी। अब ये लगा दी गई हैं। यहां की नासपाती सर्वोत्तम है। कश्मीर के सेब प्रसिद्ध हैं। यहां के अमरूद मध्य श्रेणी के हैं, अंगूर की विपुलता हैं परन्तु नीचे दर्जे के हैं। यहां के शहतूत खाने के लायक नहीं होते है। कश्मीर का लहसन बहुत अच्छा है इसकी चटनी बनाई जाती है। यहां मटर के सिवाय सब फसल होती हैं। यहां प्रायः गर्म खाना नहीं खाया जाता। चावल हिन्दुस्तान से आता है। ये लोग भात को तरकारी से खाते है। उसमें कभी तेल व कभी गाय का घी डालते हैं कश्मीर में भैसें नहीं है। यहां रोटी खाने का रिवाज नहीं है। यहां बेदुम की भेंड़ें होती हैं। मुर्गी भी खूब हैं। सब प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं। यहां के ऊनी कपड़े प्रसिद्ध हैं। स्त्रियां पुरुष ऊनी कुर्ता पहनते है कश्मीर के दुशाले जिनको मेरे पिता परम नरम कहते हैं बड़े प्रसिद्ध है।

इससे मिलता जुलता दरमा होता है। दुशालो की ऊन तिब्बत से लाई जाती है। स्त्रियो के कपडे साफ नही होते है। ये लोग पटू को तीन चार साल पहनते है। इनका कुर्ता सिर से पैरो तक होता है। अधिकाश लोग नदी के तट पर रहते है। परन्तु पानी से हाथ भी नही लगाते। मिर्जा हैदर के समय मे यहा कई प्रकार के वाद्यो को बजाने वाले उस्ताद थे यहा कई लोग मिलकर ही गाना गाते है। यहा के लोग मेरे पिता के शासन से पहले छोटे छोटे घोडो पर चढते थे। बडे घोडे नही थे। ईराकी व तुर्की घोडे शासको के लिए मगवाए जाते थे फिर कश्मीरी घोडो की नश्ल सुधर गई थी।

यहा के व्यापारी और कारीगर सुन्नी है। और सैनिक इमामिया शिया है। यहा फकीर भी है जो ऋषि कहलाते है। इनको कोई धार्मिक ज्ञान नही है परन्तु इनका जीवन सरल है। ये किसी को ग़ाली नही देते है 38 धाओ का दमन करते, मास नही खाते है। इनकी पत्निया नही है। ये पेड उगाया करते है। इनकी सख्या दो हजार के लगभग है। कश्मीरी ब्राह्मण अपनी ही भाषा बोलते है देखते मे इनमे और मुसलमानो मे कोई अन्तर नही है। परन्तु ये सस्कृत पढते है। इस्लाम के आगमन से पहिले यहा विशाल मदिर बनाए गए थे जो अभी विद्यमान है। ये सब बडे-बडे पत्थरो के बने है। नगर के निकट हरी पर्वत है। जिसके पूर्व की ओर डाल झील है इसका घेरा साढे 7 कोस है। महल से पानी दिखाई देता है। यहा का बाग बिगड चुका था और मकान भी गिरने लग गए थे। मैने इनकी मरम्मत के लिए मुतामिद खा को आदेश दिया। तो इनमे नई सुन्दरता आ गई। मै इस बाग को नूर अफजा कहता था। यहा लोग मेरे लिए कस्तूरी मृग लाये। मैने इसको पकवा करके खाया इसमे कोई स्वाद नही था। नर कस्तूरी मृग मे कस्तूरी का थेला होता है जो सूखने पर अच्छी सुगन्ध देता है मादा के कोई थैला नही होता है।

रविवार तारीख 17 को एक विचित्र घटना हुई। शाह शुजा महल मे खेल रहा था वहा एक खिडकी थी जिसमे परदा लगा हुआ था इसमे से नदी दीखती थी खिडकी बन्द नही थी बच्चा खेलता-खेलता खिडकी के पास पहुचा गया और घडाम से नीचे गिर गया सयोगवश नीचे एक कालीन था और फर्राश पास ही बैठा हुआ था। बच्चे का सिर कालीन पर और उसके पैर और पीठ फर्राश पर गिरे और इस प्रकार वह जमीन पर पहुचा ऊचाई सात गज की थी। परन्तु कालीन, फर्राश, और ईश्वर की दया से उसके प्राण बच गए यदि ऐसा न होता तो गजब हो जाता इस समय खिदमतिया लोगो का मुखिया राय मान झरोखे के नीचे बैठा हुआ था उसने दौडकर बच्चे को उठा लिया और ऊपर लाने लगा तो बच्चे ने पूछा "मुझे कहा ले जा रहे हो।" रायमान ने उत्तर दिया बादशाह के पास लिए जा रहा

हूं। फिर उसकी निर्बलता बढ़ गई और वह नहीं बोल सका। मैं लेटा हुआ था तो मुझे इस घटना की खबर मिली तो मैं घबरा कर बाहर दौड़ा। उसे देखकर मुझको होश नहीं रहा। मैंने बच्चे को स्नेहपूर्वक सीने से चिपका लिया। फिर मैंने ईश्वर का दण्डवत करके गरीब लोगों को बुलाया और उनको दान दिया। विचित्र बात यह थी कि तीन चार मास पूर्व ज्योतिषी ज्योतिषरायन ने जो ज्योतिष का बडा विद्वान है मुझसे निवेदन किया था कि शाहजादे की जन्मपत्री से यह विदित होता है कि उसके लिए तीन चार मास अशुभ है और यह सम्भव है कि कहीं ऊँचे से गिर पडे परन्तु उसकी प्रान हानि नहीं होगी इस ज्योतिषी की बात प्रायः सच्ची होती थी इसलिए मेरे मन में चिन्ता बनी हुई थी और मैं इस बच्चे को कभी नहीं भूलता था। मैं उसको निरन्तर देखता रहा और मैंने बडी सावधानता की। उसकी घाएं बडी लापरवाह रही होगी।

ऐशाबाद में मैंने एक वृक्ष देखा जो पुष्प से लदा हुआ था परन्तु इसके सेव कडवे थे। दिलावर खां की उत्तम सेवाओं के लिये उसको 4000 जात और 3000 सवार का मनसब दिया। कुतुबुद्दीन खा के पुत्र शेख फरीद को 1000 जात और 400 सवार का मनसब दिया। बृहस्पतिवार तारीख 21 को आई हुई भेंटें पुरस्कारस्वरूप प्रधान शिकारी कियांग खां को दी गई। तारीकी का पुत्र अल्लाहदाद अफगान ने दरबार में आकर अपने कुकर्मो पर पश्चाताप किया तो इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर उसके अपराध क्षमा कर दिये और पिछले व्यवस्थानुसार उसे 2500 जात और 500 सवार का मनसब दिया गया। बगाल से सहायक सैनिक अधिकारी मिराक जलाई का मनसब बढाकर 1000 जात और 400 सवार कर दिया गया। रविवार तारीख 23 को मैं जामी मस्जिद की छत पर खिले हुए टूलिप देखने गया। इस बाग की 1 बाजी बडी सुन्दर थी। मेहटी के परगने पहले राजा बासु को दिये गये थे। फिर ये उसके विद्रोही पुत्र सूरजभान के पास रहे। अब ये उसके भाई जगतसिंह को प्रदान किये गये और जम्मू का परगना राजा संग्राम को दे दिया। सोमवार तारीख 1 उर्दी बिहिश्त को मैं खुर्रम के निवास पर गया तो उसने भेंटें दी जिनमें से उसको पसन्द करने के लिए एक तुच्छ सी चीजें मैंने ले ली बृहस्पतिवार को मीर जुमला का मनसब बढाकर 2000 जात और 300 सवार कर दिया गया। रविवार तारीख 7 को मैं दावदरा गांव गया यह हैदर मलिक का देश है। वहां मैं तीतर मारने गया था। यह बड़ा सुखद स्थान है इसमें ऊचें ऊचें वृक्ष हैं और नदियां बहती हैं। उसकी प्रार्थना पर मैंने इसका नाम नूरपुर रखा। मार्ग में हलचल नामक एक वृक्ष था इसकी एक शाखा को पकड़ने पर सारे वृक्ष में गति हो जाती है। लोगों का कहना

है कि यह इसकी विशेषता है। परन्तु उपरोक्त गांव में मैंने इसी जाति का एक दूसरा वृक्ष देखा उसमे भी ऐसी ही गति होती थी फिर पता लगा कि इस प्रकार के सभी वृक्षों में ऐसी गति होती है। रावलपुर के गांव में जो नगर से हिन्दुस्तान की ओर ढाई कोस की दूरी पर है एक प्लेन वृक्ष है जो अन्दर से जला हुआ है। इससे 25 वर्ष बाद जब मैं दूसरे जीनदार घोडों के और दो ख्वाजा सरों के साथ जा रहा था तो हम इसके अन्दर घुसे थे। जब भी मैंने इसका उल्लेख किया तो लोगों को आश्चर्य होता था। अब की बार मैंने फिर कुछ लोगों से इसके अन्दर जाने को कहा तो फिर वैसा ही हुआ जैसा पहले हुआ था। मेरे पिता ने इसमें 34 आदमी खडे किये थे यह अकबर नामा मे लिखा है।

इसी दिन खबर आई कि राय मनोहर के पुत्र पृथ्वीचन्द्र की कांगडा मे लडते हुए मृत्यु हो गई वह एक सहायक सैनिक अधिकारी था। बृहस्पतिवार तारीख 11 को तातार खां अब्दुल मिर्जा मोहम्मद, लुत्फुल्ला, नसरुल्ला अरब, तहानुरखां के मनसब बढाये गये। बृहस्पतिवार तारीख 25 को सईद बायजीद बुखारी को जो भक्कर का फौजदार था सिन्ध का सूबादार बनाया गया और उसका मनसब 2000 जात और 1500 सवार कर दिया। सुजातखां अरब का मनसब बढाकर 2500 जात और 2000 सवार कर दिया गया। महावतखा की प्रार्थना पर अणिरायसिह दलन को बंगश में नियुक्त किया गया। जानसियारखां का मनसब 2000 जात 1500 सवार कर दिया।

मलिक अम्बर का विद्रोह

प्रधान सेनापति खानखाना और स्वामिभक्त लोगों के निवेदन से मालूम हुआ कि काले मूंह वाले अम्बर ने यह देखकर कि शाही सेना दूर चली गई है। अपना वचन भंग करके शाही इलाकों को दबाना चाहा है। यह आशा है कि वह शीघ्र ही अपने कार्यो के कारण फंस जायेगा। प्रधान सेनापति ने कोष मांगा है इसलिए आदेश दिया गया कि आगर के दीवान उसको 20,00,000 रुपए भेज दे। इसके बाद ही दूसरी खबर आई कि अमीर लोग अपने थाने छोड कर दराब खा के पास आ गए हैं और इसके शिविर को बागी लोगों ने घेर लिया है और खंजरखां ने अहमदनगर में शरण ली। विद्रोहियों और दरबार के सेवकों में 2, 3 लडाईयां हो चुकी थीं और सब में शत्रु हार गया था और उसके कितने ही लोग मारे गये थे। दराब खां और शत्रु मे भयकर युद्ध हुआ तो शत्रु भाग गया। उसका शिविर लूट लिया गया। शाही सेना पर विपत्ति आ गई थी। इसलिए स्वामिभक्त लोगों ने सोचा कि रोहनगढ की

घाटी में पहुंच कर घाट के नीचे ठहरा जावे क्योंकि वहां चारा और अन्न आसानी से मिल सकता था। इसलिए सेना बालापुर पहुंच गई। शत्रु भी बालापुर के पास आ गया। राजा वीरदेवसिंह ने साहस करके बहुत से शत्रुओं को मार डाला मंसूर नाम का हब्शी शाही लोगों के हाथ में आ गया। वे उसकी हाथी पर बैठाना चाहते थे परन्तु वह नहीं बैठा तो राजा वीरदेवसिंह के आदेश से उसका सिर धड से अलग कर दिया ऐसी आशा है कि सब शत्रुओं से बदला लिया जा सकेगा।

तारीख 3 उर्दी बिहिस्त को मैं शुखनाग देखने गया। यह ग्रीष्म ऋतु के लिए सुन्दर निवास है। यह जल प्रपात एक घाटी के बीच मे है और बहुत ऊँचे स्थान से गिरता है। बृहस्पतिवार का समारोह यही आयोजित किया गया था। पानी के तट पर मद्यपान करने से मुझे बडा आनन्द आया। यहा मैंने साज जैसा एक पक्षी देखा। साज काले रंग का होता हैं और इस पर सफेद धब्बे थे। ये पानी में डूबकी लगाकर अर्से तक अन्दर रहता है और फिर दूसरी जगह निकलता है। मैंने इस प्रकार के 2, 3 पक्षी पकडवाये मैं देखना चाहता था कि इनके पैरो में जाली रहती है या नही पकड लाये तो एक पक्षी तुरन्त ही मर गया दूसरा एक दिन जीवित रहा। इसके पैरों में जाली नही थीं। मैने नादिरुल अर्स उस्ताद मंसूर से इसका चित्र बनवाया। इस दिन काजी प्रधान न्यायाधीश ने मुझे से निवेदन किया कि हकीम अली का पुत्र अब्दुल बहाव लाहौर के सैयदों से 80 हजार रुपए मांगता है और उसने काजी नुरुउल्ला की छाप वाली एक दस्तावेज पेश की है। उसका कहना है कि उसके पिता ने इस सैयदों के बाप सईद वली के पास यह राशि धरोहर के रूप में रखी। अब ये लोग इन्कार करते है। यदि आदेश हो तो हकीम का पुत्र कुरान की शपथ लेकर जो भी इन-लोगों पर उचित रूप से निकलता हो ले ले। मैंने कहा कि सरियत के अनुसार जो भी उचित हो किया जावे। अगले दिन मुतावित खां ने निवेदन किया कि सैयद बड़ी अधीनता प्रकट कर रहे हैं। मामला पेचदार था। इस पर जितना भी विचार किया जाए उतना भी थोडा है। इसलिए मैंने आदेश दिया कि इस लडाई के तथ्य का आसफ खां प्रयास और विचार करके पता लगावे और ऐसी छानबीन करे कि कोई सन्देह न रहे। फिर भी यदि ठीक पता नही लगेगा तो मैं अपने समक्ष पता लगवाऊंगा। यह बात सुनते ही हकीम का पुत्र घबरा गया और उसने अपने कई मित्रों से बीच बचाव करवाया और उसने मुकदमा वापिस लेना चाहा। जब आसफ खां ने उसको बुलाया तो वह नहीं आया और बहाने किये और दस्तावेज अपने एक मित्र को सौंप दिये। तब आसफ खां को स्थिति का पता लगा। हकीम के पुत्र को बलपूर्वक लाया गया तो उसने मान

लिया कि दस्तावेज उसके सेवक ने बनाई है। यह बात उसने लिख कर भेजी। जब आसफ खा ने इस बात की सूचना दी तो मैंने उस (अब्दुल बहाव) का मनसब और जागीर छीन ली और उसको निकाल दिया। सैयदो को वापिस आदर पूर्वक लौटा दिया। मुबारक शम्बा तारीख 8 खुरदाद को इतिआद खा का मनसब बढाकर 4000 जात और 1500 सवार सादिक खां का मनसब बढाकर 2500 जात और 1400 सवार कर दिया। आसफ खां के पुत्र जैनुल आबीद्दीन को अहदियो का बख्शी नियुक्त किया गया। राजा वीरसिंह देव बुन्देला का मनसब 5000 जात और 5000 सवार कर दिया।

मंगलवार तारीख 21 को बादशाह बानू बेगम की मृत्यु हो गई। यह कासिम खां की पुत्री सालिहा बानू थी। जिससे मुझको हार्दिक दुख हुआ। यह विचित्र बात है कि ज्योतिषी ने 2 मास पूर्व मेरे कुछ सेवकों को सूचित किया था कि हरमखाने की कोई मुख्य बेगम परलोक पहुंच गई। यह बात उसने मेरी जन्म पत्री के आधार पर कही थी।

यह घटना यह हुई कि जलाल खा घक्खड और इजाजत खां की जो बंगस की सेना में थे मृत्यु हो गई। इसका विवरण इस प्रकार है कि जब कर सग्रह का समय आया तो महावत खां ने पर्वतीय देश में एक सेना भेजकर आदेश दिया कि अफगानो की फसल समांप्त कर दी जावे और लूट मार करने से कुछ न बच पाये। तथा लोगों को मार दी जावे और बांधकर लाया जावे। जब दरबार के सेवक घाटी पर पहुंचे तो अफगानों ने उन पर सब ओर से आक्रमण किया और घाटी के सिरे पर एक दुर्ग बना लिया। जलाल खां अनुभवी और वृद्ध पुरुष था। उसने 2 दिन रुकना ठीक समझा। यह चाहता था कि अफगान लोग अपनी पीठों पर लादकर दो दिन की खाद्य सामग्री लायें हैं। इसके समाप्त हो जाने पर वह स्वतः ही चले जावेगें और फिर शाही सेना घाटी को पार कर लेगी। फिर कोई कठिनाई नहीं होगी और अफगानों को दण्ड दिया जा सकेगा। इज्जत खां बड़ा तेज और जल्दबाज पुरुष था। उसने जलाल खां की बात नहीं मानी और बारह के सैयदों को उत्तेजित किया। अफगानों ने चीटियों और टिड्डियों की भांति सब ओर से उसको घेर लिया। रणभूमि घुडसवारों के लिए उपयुक्त नहीं था फिर भी उसने बहुत से शत्रुओ को तलवार के घाट उतार दिया। उसका घोडा मारा गया तो वह पैदल ही सांस रही तब तक लडता रहा और वीरतापूर्वक लडता हुआ धराशायी हुआ। जब इज्जत खां ने आक्रमण किया तो कई घक्खड़ सरदार रोके नहीं रुके और उन्होंने सब ओर से हमला किया। अफगान पहाडियों के सिरों पर चढ गये और वहां से पत्थर और तीर बरसाने लगे।

स्वामी भक्त युवक सैनिको ने बहुत से अफगानों को मार गिराया। इस युद्ध में जलाल खां मसद अन्य कई वीर लोगों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। शाही सेना पर यह विपत्ति इज्जत खां की जल्दबाजी से आई।

जब महावत खां ने यह भयंकर खबर सुनी तो उसने सहायतार्थ ताजा आदमी भेजकर थानों को दृढ़ किया। जहां भी अफगान मिले या तो मार दिये गये या बांध दिये गये। जब मुझे यह खबर मिली तो मैंने जलाल खां के पुत्र अकबर कुली को बुलाया। यह कांगडा दुर्ग की विजय के लिये नियुक्त किया गया था। मैंने उसको एक हजार का कपूरा मनसब देकर उसकी वंशानुगत जागीर दे दी और खिलअत घोड़ा देकर बंगश की सेना की सहायतार्थ रवाना किया। इज्जत खां के एक बालक पुत्र था। मैंने उसका आत्म बलिदान दृष्टि में रखकर इस बच्चे को मनसब और जागीर दी।

इस दिन शाह अहमद सरहिन्दी को मैंने बुलाया। यह झूठे दावे करता था और असंयत भाषा बोलता था इसलिए यह इसको कारागार में रख दिया गया था। अब उसे मुक्त करके सिरोपाव दिया और एक हजार खर्च के बख्शें। उसने निवेदन किया कि कारावास से उसको पाठ मिला।

27 खुर्दाद को बाग को चित्रशाला की मरम्मत का आदेश दिया। अब उसमें बडे–बड़े उस्तादों के चित्र रखे गये। प्रतिष्ठित स्थानों पर हुमायू, मेरे पिता और मेरे भाई शाह अब्बास के चित्र रखे गये। इनके बाद मिर्जा कामरान, मिर्जा मुहम्मद हकीम, शाह मुराद और शाह दानियाल के चित्र रखे। दूसरी पंक्ति में अमीरों और विशिष्ट सेवकों के चित्र लगावे। हाल की बाहर की दीवारों पर मैंने कश्मीर यात्रा की मंजिलें लिखवाई। बृहस्पतिवार तारीख 4 इलाही मास तीर को राणा अमरसिंह के पुत्र भीम को राजा की उपाधि दी गई और वीर इज्जत खां के भाई दलेल खां का मनसब बढा कर एक हजार जात और 800 सवार कर दिया गया। अहमद बेग खां के पुत्र मुहम्मद सईद का मुखलिस उल्ला का और उसके भाई का भी मनसब बढाया गया। सईद अहमद सईद और मिर्जा हुर्सन के मनसब में भी वृद्धि की गई। तारीख 14 रविवार इलाही मास तीर को हसन अली तुर्कमान उडीसा का सूबादार नियुक्त किया गया और उसका मनसब 3000 कर दिया गया।

सोमवार ता. 15 को मैं तुसी मार्ग नामक ग्रीष्म निवास को देखने गया दो मंजिल चढ़कर बुधवार ता. 17 को मैं कोतल के नीचे पहुंचा और घाटी के शिखर पर पहुंच गया। दो कोस तक बड़ी उंचाई थी जिस पर बड़ी कठिनता से चढ़ा गया फिर कोताल से तुसी मार्ग तक एक और कोस भर की ऊंचाई और निचाई थी यहां फूल कम थे यहां पास ही एक सुन्दर घाटी

थी जिसकी मैने 18 ता को जाकर देखा। इसकी जो भी प्रशसा की जाए उचित है। मेरे ही सामने 50 प्रकार के फूल तोडे गये। इनके अतिरिक्त और भी फूल होगे। सायकाल मै वापिस लौटा उस रात्रि को अहमदनगर के घेरे का वृतान्त सुना। खाजहा लोदी ने एक विचित्र किस्सा सुनाया यह मैंने पहले भी सुन रखा था। जब मेरा भाई दानियाल अहमदनगर को घेरे हुए था तो एक दिन दुर्ग रक्षको ने एक तोप मलिक मैदान नामक उसके शिविर के सामने लगाकर चलाई। गोला शाहजादे के डेरे के निकट पहुच गया और वहा से उछल कर काजी बायजीत के निवास पर पहुचा। यह शाहजादे का एक साथी था। काजी का घोडा तीन या चार गज की दूरी पर बाध हुआ था। जब गोला भूमि पर गिरा तो घोडे की जबान जड से कटकर भूमि पर आ गई। यह गोला दस हिन्दुस्तानी मन का था। तोप इतनी बडी है कि इसके अन्दर आदमी बैठ सकता है। इस दिन मैने अबुल हसन प्रधान बख्शी का मनसब 5000 जात और 2000 सवार कर दिया। मुबारिज खा का मनसब 2000 जात और 1700 सवार बीजन (नाद अली के पुत्र) का मनसब 1000 जात और 500 सवार और अमानत खा का मनसब दो हजार जात और 400 सवार कर दिया। बृहस्पतिवार ता 25 को मैने सईद खा के पुत्र नवालिश खा का मनसब बढाकर 3000 जात और 2000 सवार कर दिया और हिम्मत खा का मनसब 2000 जात और 1500 सवार का कर दिया। मैने कुरी मार्ग की बडी प्रशसा सुनी थी इसलिए अब इसको मुझे देखने की इच्छा हुई और मगलवार ता 7 अमुरदार को मै उस दिशा मे गया। इस स्थान की सुन्दरता का वर्णन कैसे किया जावे। जहा तक फूल हरियाली, सुन्दर नदिया दिखाई देती थी। वास्तव मे इसकी दूसरे स्थानो से तुलना नही की जा सकती।

हिन्दुस्तान मे पपीहा बहुत मीठी आवाज बोलता है। कोयल अपने अण्डे कौए के घोसले मे रख आती है और कौआ बच्चो का पालन करता है। मैने कश्मीर मे देखा कि पपीहा भी अपने अण्डे धोधाई के धोसले मे रख आता है और धोधाई बच्चो का पालन करती है।

इन दिनो मे मेरे फरजन्द खा जहा लोदी पर भगवान की विचित्र कृपा हुई वह मद्यपान के कारण बीमार हो गया था। और उसकी जिन्दगी के लिये खतरा पैदा हो गया था। फिर अचानक ही उसने व्रत धारण किया कि वह शराब से अपने होठ भी नही लगायेगा मैने उसको समझाया कि एक दम मद्य त्याग करना ठीक नही है। परन्तु उसने तो साहस करके छोड ही दिया।

तारीख 25 अमूरदाद को कन्धार के सूबादार बहादुर खा का मनसब बढाकर 5000 जात और 4000 सवार कर दिया और इलाही मास शहरीवर

को 2 तारीख को रावत शकर के पुत्र मानसिंह का मनसब 1500 जात और 800 सवार तथा मीर हुसादुद्दीन का मनसब 1500 जात और 500 सवार कर दिया। अली मर्दान खां[1] के पुत्र करम उतला को 600 जात और 300 सवार का मनसब दिया।

इन दिनों मुझे अबलक और जौहरदार दांतों के लिए इच्छा हुई बडे–बड़े अमीरों ने इनको तलाश किया। संयोगवश ख्वाजा हसन के पास अच्छा और कोमल दांत था उसने यह दरबार में भेज दिया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। और मैंने ख्वाजा के लिए 30,000 की चीजें भेजी। बृहस्पतिवार तारीख 12 शकीरवर को मीर मीरान ने मेवात की फौजदारी पर जाने के लिए विदा ली उसका मनसब 2000 जात और 1500 सवार करके उसे 1 खास घोडा खिलअत और तलवार दी गई।

इस समय सुन्दर का पत्र आया कि विद्रोही जौहरमल की मृत्यु हो गई है[2]। यह भी खबर आई कि सेना की 1 टुकडी किसी जमींदार के विरूद्ध गई थी। उसने अपने आने जाने का मार्ग सुरक्षित नहीं रखा और पहाडियो में प्रवेश कर गया। सायंकाल बिना कुछ किये जब वह वापस आ रहे थे तो उनमें से बहुत से मारे गये। उनमें लोदी अफगान जाति का शाहवाज खा दलूमानी था। वह अच्छा बुद्धिमान और संकोच शील सेवक था। जमाल खां अफगान उसका भाई रुस्तम सईद नसीब बारहा और अन्य लोग आहत होकर आये यह भी खबर आई कि कांगडा का घेरा कम होता जाता है। घिरे हुए लोग घबरा रहे है। और बीच बचाव करके अपने प्राणों की रक्षा करना चाहते हैं।

बुधवार तारीख 18 शहरीवर को दिलावर खां काकर की स्वाभाविक मृत्यु हो गई। उसमें अन्य बडे अमीर से अधिक शक्ति और नेतृत्व क्षमता थी। उसको स्थिति का अच्छा ज्ञान था। जब मैं शाहजादा था तो उसने अच्छे काम किये थे वह पूरी सच्चाई के साथ काम करता था। इसलिए उसने अमीर पद प्राप्त किया था। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उसने किश्तिवार पर विजय प्राप्त की। उसके पुत्रों को और अन्य आश्रितों को मैंने संरक्षण दिया और जो सेवा करने के योग्य थे उन्हें मनसब प्रदान किये।

---

1 यह प्रसिद्ध अली मर्दान नहीं है। वह अली मर्दान दक्षिण में मारा गया था।

2. सुन्दर राजा विक्रमादित्य का नाम था जौहर राजा बासु का पुत्र था यही सूरजमल होगा।

इसी दिन कूरयसातुल बंगाल की खान का 1 हीरा लेकर आया यह इब्राहीम खां फतह जंग को मिला था। बंगाल के दीवान वजीर खां की जो दरबार का पुराना वजीर था स्वाभाविक मृत्यु को गई।

बृहस्पतिवार तारीख 19 की रात को कश्मीरियों ने बिहात नदी के दोनों ओर दीपकों की पक्तियां जलाईं। यह यहां की प्राचीन प्रथा है। मैंने ब्राह्मणों से पूछा तो उन्होंने कहा कि इसी दिन झेलम के निकास का पता लगा था। इस दिन बेठतरव का त्यौहार मनाया जाता है। बेठ का अर्थ है झेलम और तरवा 13 को कहते हैं। आज खब्बाल मास का 13 वां दिन है। इस प्रकार इस त्यौहार का नाम बेठ तरवाही है मैं नाव में बैठकर रोशनी देखने गया आज मेरी सौर तुला हुई। प्रथा के अनुसार मुझे सोने और अन्य पदार्थो से तोला गया ये चीजें गरीबों को बांट दी गईं। मेरी आयु का 51वां वर्ष समाप्त हो गया और 52 वा शुरू हो गया। मुझे आशा है कि मेरा जीवन ईश्वर को प्रसन्न रखने मे व्यतीत होगा। बृहस्पतिवार तारीख 26 का जलसा आसफ खां (नूरजहां के भाई) के निवास पर मनाया गया। इस साम्राज्य स्तम्भ ने स्वामिभक्ति प्रकट की और भेंट दी।

शुक्रवार तारीख 27 को मैं वीर नाग देखने के लिए गया। यह विहात का निकास है। 5 कोस नदी के ऊपर की ओर नाथद्वारा जाकर मैं पामपुर नामक गांव पर उतरा।

इस दिन किश्तवार से अप्रिय खबर आई जब दिलावर खां ने इस प्रदेश को जीता और फिर वह दरबार में आया तो कुछ मनसबदारों के साथ नसरूल्ला अरब को वह उस देश की रक्षा के लिए छोड आया। नसरुल्ला ने 2 भूलें कीं। एक तो यह कि उसने जमींदारों और अन्य लोगों के साथ कठोर बर्ताव किया और उनसे हेलमेल नहीं किया। दूसरी भूल यह हुई कि उसको सहायता देने के लिए जो सैनिक अधिकारी भेजे गये थे वे मनसब की आशा से उससे छुट्टी मांग कर अपना काम करने के लिए दरबार में आना चाहते थे। उसने एक के बाद दूसरे की छुट्टी दे दी। जब उसके पास थोडी सी सेना रह गई तो जमींदारों को उत्पात करने का अवसर मिल गया और उन्होने सब ओर से आक्रमण किया। उन्होंने उस पुल को जला दिया जिस पर होकर सेना उतरी थी और जिसके द्वारा सहायता भेजी जा सकती थी। नसरुल्ला एक दुर्ग में घुस गया और दो तीन दिन तक बड़ी कठिनता से उसने अपने को बनाया। फिर अन्न के अभाव के कारण वह वीरता पूर्वक लडता हुआ कुछ अन्य लोगों सहित शहीद हो गया। कुछ लोग बन्दी भी बन गये। जब यह खबर मेरे कानों तक पहुंची तो मैंने दिलावर खां के पुत्र जलाल खां को 1000 जात और 600 सवार का मनसब देकर नियुक्त

किया। ये वीर और महत्त्वकांक्षी मालूम होता था। किश्तवार की विजय मे इसने अच्छा काम किया था। मैने इसके साथ इसके पिता के आदमी भेज दिये और कश्मीर के सैनिक बहुत से जमीदार, प्यादे और बन्दूकची उसके सहायतार्थ और उत्पात का दमन करने के लिए कर दिये। यह भी आदेश दिया कि जम्मू का जमीदार राजा सग्राम जम्मू से आवे ऐसी आशा की जाती है कि विद्रोहियो को शीघ्र ही अपने कर्मों का फल मिलेगा।

शनिवार तारीख 28 को साढे 4 कोस प्रयाण किया। काकापुर से 1 कोस परली ओर मे नदी के तट पर पहुचा। काकापुर की भग प्रसिद्ध है यह नदी के तट पर स्वतः ही उगती है। रविवार तारीख 29 मे पजबेडा नामक गाव यह गाव मेरे पुत्र शाह परवेज को दिया जा चुका था। उसके वकीलो ने नदी पर देखती हुई एक इमारत और बगीची बनाई हे। पजवेडा के पास 1 सतफूली का खेत है जो बडा सुखद और स्वच्छ है। इसमे बडे- बडे प्लेन वृक्ष हैं और बीच मे 1 नदी बहती है।

इस दिन खानदौरा की लाहौर मे स्वाभाविक मृत्यु हो जाने की खबर आई। वह लगभग नब्बे वर्ष का था और अपने समय मे वह बडा वीर योद्धा माना जाता था। उसमे वीरता और नेतृत्व दोनो गुण थे। उसने शाही वश की बडी सेवाये की थी। वह चार पुत्र छोड गया है परन्तु इनमे से कोई भी योग्य नहीं था। वह 4 लाख रुपये छोडकर मरा है जो उसके पुत्रो को दे दिये गये हैं।

सोमवार तारीख 30 को मै इच चश्मे को देखने गया। यह गाव मेरे पिता ने रामदास कछावा को दिया था जहा इसने चश्मे के पास इमारते बनवा दी थी। मैने यह गाव मेरे फरजन्द खाजहा को दे दिया। उसने वहा एक आयोजन किया और मुझे भेटे दी जिसमे से कुछ उसे प्रसन्न रखने के लिए मैने रख ली। यहा से आधा कोस की दूरी पर मछी भवन है। जहा राय बिहारी चन्द ने जो मेरे पिता का एक सेवक था मदिर बनवाया था। इस चश्मे की सुन्दरता का वर्णन नही किया जा सकता। मैने यहा एक रात्रि व्यतीत की और मगलवार तारीख 31 को चश्मे पर मुकाम किया। यह स्थान स्वर्ग के समान कहा जा सकता है। बुधवार तारीख 1 मिहीर को कच्छवल से रवाना होकर मैने वीरनाग के निकट डेरे लगवाये। बृहस्पतिवार तारीख 2 को इस चश्मे पर मद्य गोष्ठी की गई। मैने अपने सवको को बैठकर मद्यपान करने की इजाजत दी और काबुल के आडू खाने को दी। इस चश्मे मे बिहात नदी निकलती है। जब मैं शाहजादा था तब मैने यहा कुछ इमारते बनाने का आदेश दिया था जो अब पूरी हो गई है। यहा एक अठहौज था और 8 गज चौडी और 180 गज लम्बी तथा 2 गज गहरी एक नहर थी।

यहा एक बूरा मौर में पंख जैसा मालूम होता था। कश्मीर के ऊपर का भाग नीचे के भाग से अधिक सुन्दर है। जब बर्फ पडने वाला था और वापिस जाने का समय आ गया था। शनिश्चर तारीख 8 को मैने लोक भवन के चश्मे पर मुकाम किया और आदेश दिया कि इस स्थान के अनुरूप एक इमारत बनवाई जाए। रास्ते मे मैं अन्ध नाग के पास होकर निकला इस चश्मे की मछलियां प्रायः अन्धी थीं।

बुधवार तारीख 8 को मीरजुमला को 2 हजार जात व 5 सौ सवार का मनसब दिया गया। शनिवार तारीख 11 को मैंने नगर में प्रवेश किया। आसफखां को गुजरात का दीवान बनाया गया और कश्मीर के राजा सग्राम को 1500 जात व 1000 सवार का मनसब दिया।

इस दिन मैने एक विचित्र प्रकार के ढग से लोगो को मछलिया पकडते देखा। लोग दो नावें ले जाते थे और दोनों के सिर जुडे रहते थे। पीछे दोनों मे अन्तर था पीने सीने तक गहरा था। दोनों नावों के बीच में दो आदमी उतर कर मछलिया पकड रहे थे।

सोमवार तारीख 13 को दशहरे की दावत हुयी। वार्षिक प्रथा के अनुसार घोडो को सजाया गया। इनमें सरकारी घोडो के सिवाय अमीरो के भी घोडे थे। उस समय मुझे सास लेने मे कठिनाई हुई। मै आशा करता हू कि ईश्वर इसको ठीक कर देगा। इन दिनों मैं बतखे पकडा करता था।

शुक्रवार को खानखाना के पुत्र मिर्जा रहमानदाद की मृत्यु की खबर आयी जो बालापुर मे स्वाभाविक रूप से हुयी थी। उसको कुछ दिनो से ज्वर था। जब वह स्वास्थ्य प्राप्त कर रहा था तो एक दिन दखनियों की सेना आ गयी। उसका बडा भाई दराबखां लडने के लिए सवार हुआ। जब रहमान दाद ने यह खबर सुनी तो वह भी लड़ने को तैयार हो गया। शत्रु को मारकर भगा दिया। परन्तु वापिस आकर उसने अपना जब्बा उतार दिया जिससे उसको हवा लग गई। और उसका बोलना बन्द हो गया। दो तीन दिन बाद मृत्यु हो गई। यह बड़ा नेक और वीर युवक था। तलवार के खेलों का उसको शौक था। मुझे उसकी मृत्यु से दुख हुआ। उसके पिता की कैसी दशा होगी। मुझे विश्वास है कि ईश्वर उसको धैर्य देगा।

बृहस्पतिवार तारीख 16 को खंजर खां का मनसब बढाकर 3 हजार जात और सवार कासिम खां का मनसब 2 हजार जात और 1 हजार सवार और ख्वाजाजहां के भाई मुहम्मद हुसेन का मनसब 800 जात और सवार कर दिया। मुहम्मद हुसेन कांगडा की सेना में काम करता था।

राजधानी को वापिसी

मगलवार तारीख 27 मास मिहर की रात को एक पहर और 7 घडी व्यतीत होने पर शाही लश्कर ने हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। जिस समय केसर फूल रही थी इसलिए नगर के पास से पामपुर नामक गाव को कूच की गई। सारे कश्मीर देश में इसी स्थान पर केसर होती है। बृहस्पतिवार तारीख 30 को केसर के खेत मे मद्यगोष्ठी की गई। चारों ओर बागो और खेतों में केसर फूल रही थी। इसकी हवा से दिमाग तर हो जाता था। केसर का फूल चम्पा के फूल के आकार का होता है। आधी केसर सरकार को दी जाती है और आधी कृषक रख लेते हैं। 1 सेर केसर 10 रूपए मे बेची जाती है। नमक लकर भी केसर दी जाती है। कश्मीर मे नमक नही होता वहा नमक हिन्दुस्तान से जाता है। पम्पपुर से चलकर खानपुर मुकाम किया गया। मुझे खबर मिली कि मेरे भाई शाह अब्बास का राजदूत जमबील बेग लाहौर के पास आ पहुचा है। इसलिए उसको 1 खिलअत और 30 हजार रूपए खर्च के लिए भेजे गये। शनिवार तारीख 2 को मै कालपुर पहुचा। मुझसे बारबार कहा गया था हीरापुर के पास एक ऊचा और आश्चर्यजनक जल प्रपात है। यह स्थान मार्ग से 3, 4 कोस जामी ओर था तो मै शीघ्र ही उसे देखने गया। इसके विषय में क्या कहा जा सकता है। पानी 3, 4 जगह रूकता हुआ गिरता है। मैंने ऐसा जल प्रपात कभी नही देखा था। मै दिन के तीसरे पहर तक उसको प्रसन्नतापूर्वक देखता रहा और फिर हीरापुर आकर रात व्यतीत की सोमवार को मैं पीर पजाल में ठहरा। यह घाटी बडी दुर्गम हैं यहा बर्फ-का सामना करना पडा। 5 तारीख को पोशाना मे मुकाम किया। बुधवार तारीख छः को हम बहराम पहुंचे। यह भी बहुत अच्छा स्मरणीय स्थान है। मैने यहां शिलालेख में लिखवाया कि आज शाही लश्कर ने यह जगह पार की है। यहां दो जमीदार है। जिनके सुपुर्द यहा का आवागमन है। हीरापुर से बहरामगला तक ये लोग आने जाने वालों की व्यवस्था करते हैं। इन दोनो में परस्पर बडी शत्रुता हैं परन्तु प्रत्यक्ष में इनका अच्छा सम्बन्ध है। इस दिन शेख इब्न यमीन की मृत्यु हो गई। वह मेरा विश्वास पात्र था। मेरी अफीम और पीने का पानी उसके पास रहता था। जब हम पीर पंजाल मे थे तो हमारे डेरे और सामान वहां नहीं आया था। यह शेख वृद्ध ओर निर्बल था। इसलिए इसको ठड लग गई और वह ऐसा सिकुडा कि वह बोल भी नहीं सका। 2, 3 दिन ऐसी स्थिति मे रहकर वह मर गया। उसका काम मैंने ख्वाजखां और मुसाबीखा के सुपुर्द कर दिया। बृहस्पतिवार तारीख 7 को हम थाना गांव में पहुंचे। यहां से गर्म देश प्रारम्भ होता है। यहां के लोग

पस्तो और हिन्दी दोनो बोलते है। हिन्दी इनकी वास्तविक भाषा है। कश्मीरी इन्होने सानिध्य के कारण सीख ली है। यहा से हिन्दुस्तानी मे प्रवेश होता है। स्त्रिया ऊनी कपडे नही पहनती और हिन्दुस्तानी स्त्रियो की भाति नथ पहनती है।

शुक्रवार तारीख 8 को राजौर मे मुकाम हुआ। पहले के समय मे यहा के लोग हिन्दू थे। यहा के जमीदार राजा कहलाते थे। सुल्तान फिरोज ने इनको मुसलमान बना लिया था परन्तु यह अब भी राजा ही कहलाते है। जब यहा कोई राजा मरता है तो उसकी स्त्री को उसी के साथ दफना दिया जाता है। मैने सुना कि अभी हाल एक 10, 12 वर्ष की लडकी को उसी के उम्र के मृतक पति के साथ दफना दिया गया। जब किसी गरीब के यहा लडकी उत्पन्न होती है। तो उसको गला घोट कर मार दिया जाता है। इन लोगो का हिन्दुओ से लडकी देने और लेने का सम्बन्ध है। लडकी लेना तो ठीक है। परन्तु देने से तो भगवान बचावे। मैने आदेश दिया कि भविष्य मे वे ऐसा न करे और जो करे उनको प्राण दण्ड दिया जावे। राजौर मे एक नदी है। वर्षा ऋतु मे इसका जल विषैला हो जाता है और पीने से गले मे सूजन आ जाती है। लोगो का रग पीला पड जाता है और वह निर्बल हो जाते है। राजौर का चावल कश्मीरी चावल से अधिक अच्छा है।

रविवार तारीख 10 को मै नोशेरा ठहरा। यहा मेरे पिता का बनाया हुआ दुर्ग है और थाना है। मगलवार तारीख 12 को भीमवर मे ठहरकर मैने हिन्दुस्तान के मैदानो मे प्रवेश किया। शिकारियो को आगे ही भीमबर गिरझाक और मखियाल मे कमूरगाह तैयार करने के लिए भेज दिया था। सोमवार और मगल को वे शिकार जानवरो को घेर कर इसमे लाये। शुक्रवार को मैने शिकार का आनन्द लूटा। अगले शुक्रवार तक मै मार्ग मे शिकार करता हुआ और फिर राबी नदी के तट पर लाहौर के पास पहुच गया। सोमवार तारीख 9 इलाही मास आपार तदनुसार 5 मोहर्रम 1020 हिजरी (20 नवम्बर 1620) को इन्द्र नामक हाथी पर सवार होकर सिक्के लुटाता हुआ मै नगर की ओर चला जब 3 पहर और 2 घडी दिन व्यतीत हो गया तो मैने शाही महल मे प्रवेश किया जो अब बनकर पूर्ण हो गया था। इसमे सुन्दर निवास थे जो चित्रों द्वारा अच्छे चित्रकारो ने अलकृत किये थे। सुखद बाग भी लगाये गये थे। इन इमारतो और बागो पर 7 लाख रूपये खर्च हुए थे।

कांगड़ा विजय—इस दिन कागडा विजय का हर्षोन्मादक समाचार आया। मैने ईश्वर को धन्यवाद दिया और आनन्द के बाजे बजवाये। कागडा का दुर्ग लाहौर के उत्तर में पर्वतीय देश मे स्थित है। यह दृढता और अजेयता

के लिए प्रसिद्ध है। यह किसने बनाया था, भगवान ही जाने। जमींदारों का विश्वास है कि इस युग में यह किसी दूसरी जाति के हाथ में नहीं गया। परन्तु यह निश्चय है कि हिन्दुस्तान में इस्लाम का प्रवेश हुआ तब से बडे से बड़े सुल्तान को इस पर विजय प्राप्त नहीं हुई। सुल्तान फिरोज शाह स्वयं इसको लम्बे अर्से तक घेरे रहा। फिर राजा उससे मिला और कुछ भेट दी इसी से सन्तुष्ट होकर फिरोज वापिस आ गया। कहते हैं कि राजा सुल्तान को दुर्ग में ले गया था। सुल्तान ने राजा से कहा कि इस प्रकार बादशाह को दुर्ग में लाना सावधानता नहीं है। यदि उसके साथ के लोग दुर्ग पर कब्जा कर लें तो राजा क्या कर सकता है। तब राजा ने संकेत दिया तो एक सशस्त्र सेना जो छिपी हुई थी आ गई। सुल्तान ने राजा की प्रशंसा की और उससे विदा लेकर चला गया। फिर दिल्ली के प्रत्येक सुल्तान ने कागडा पर सेना चढाई परन्तु वह आगे नहीं बढ सकी। मरे पिता ने भी हुसैन कुली खा के नेतृत्व में यहां सेना भेजी थी परन्तु उसी समय इब्राहीम हुसैन मिजा ने विद्रोह कर दिया। इसलिये खा जहां को कांगडा से इस मिर्जा को दबाने के लिए भेजना पडा। परन्तु कांगडा विजय का विचार मेरे पिता के खून मे हमेशा बना रहा। जब मेरे हाथ में राज आया तो इस जिहाद का उत्तरदायित्व मैंने अपने ऊपर लिया। पहले तो मैंने पजाब को सूबादार मुर्तजा खा को इसके विजय के लिये सेना सहित भेजा। कार्य पूरा नहीं हुआ और मुर्तजा खां को मृत्यु हो गई। फिर राजा बासू के पुत्र जौहरमल ने यह काम अपने हाथ मे लिया परन्तु इसने विद्रोह कर दिया और सेना तितर बितर हो गई। जिससे दुर्ग की विजय में विलम्ब हो गया। जौहरमल के अन्त का वृतान्त पहले लिखा जा चुका है। अन्त मे खुर्रम ने यह काम अपने हाथ मे लिया और अपने सेवक सुन्दर (राजा विक्रमाजीत) को अनेक शाही सेवको के साथ उसने दुर्ग विजय के लिए भेजा। 16 शब्वाल 1029 हिजरी (5 सितम्बर 1620) को दुर्ग को घेर कर मोप मंच खडे किये गये। बाहर से खाद्य सामग्री और युद्ध सामग्री दुर्ग के अन्दर पहुंचना बन्द कर दिया गया। तब घिरे हुये लोगों की दशा बिगड गई। 4 मास तक उन्होंने उबला हुआ घास खाया। जब बचने की कोई सूरत नहीं रही तो उन्होंने दुर्ग समर्पित कर दिया। बृहस्पतिवार 1 मोहर्रम 1030 हिजरी (6 नवम्बर 1620) को यह विजय जो पहले किसी को नहीं मिली थी। ईश्वर के अनुग्रह से मुझे प्राप्त हुई सब सैनिको को यथा योग्य तरक्कियां दी गई और कई के मनसब बढाये गये।

बृहस्पतिवार तारीख 11 को मैं खुर्रम के नये निवास पर गया। उसकी भेंटों में से जो पसन्द की चीजें थी मैंने ले लीं। 3 हाथी निजी तबेले में भेज

दिये। उसी दिन अब्दुल अजीज खां नक्सबन्दी को कांगडा जिले का फौजदार नियुक्त किया और उसको 2000 जात और 1500 सवार का मनसब दिया। अल्फ खां कियाम खानी खां को कागडा का दुर्गपति बनाया और उसका मनसब 1500 जात और 1000 सवार कर दिया गया। मुर्तजा खा के दामाद शेख फौज उल्ला को उराके साथ ही जाने के लिये नियुक्त कर दिया और वह किले के शिखर पर रहने लगा।

शनिवार तारीख 13 की रात्रि को चन्द्र ग्रहण हुआ। ईश्वर की प्रार्थना करके फकीरों और गरीबों को खैरात बांटी गई। इसी दिन ईरान के शाह का राजदूत जमीलबेग आया। तस्लीम करने के बाद उसने मेरे भाई का कृपा पूर्ण पत्र मेरे सामने प्रस्तुत किया और 12 अब्बासी मुझे नजर किए तथा जीन सहित 4 घोडे, सफेद सिकरे, 5 खच्चर, 5 ऊट मुझे भेंट किये। मेने उसको बढिया खिलत, किलंगी, एक जडाऊ तुर्रा, एक जड़ाऊ खंजर दिया। महावत खां के पुत्र अमानुल्ला का मनसब बढाकर 2000 जात और 1500 सवार कर दिया गया। मुबारिज खां अफगान का भी मनसब बढाया। फिर मै कासिम खां के बाग में गया और मार्ग में 10,000 चवन्नियां लुटाई। कासिम खां की भेंटों में से 1 लाल और 1 हीरा, मैंने स्वीकार किया।

रविवार तारीख 21 की रात को अग्रिम लश्कर शुभ मुहूर्त में आगरा की ओर रवाना हुआ। दक्षिण की सेवा में बरकन्दाज खां को दरोगा आतिश नियुक्त किया। शेख इसाक को कांगडे में नियुक्त किया। अल्लाह दाद अफगान के भाई को कारावास से मुक्त करके 10,000 रुपये दिए। ग्वालियर के राजा रूपचन्द ने कांगडा में अच्छी सेवा की थी इसलिए उसका आधा राज्य उसको लौटा दिया गया और शेष आधा उसको जागीर में दे दिया।

तारीख 3 को मैंने मादारुलमुल्क, इतिमादुद्दौला को आदेश दिया कि वह अपनी धेवती[1] का विवाह मेरे पुत्र शहरयार से कर दे। मैंने 100000 रुपया साचक के रूप मे भेजा। अधिकांश अमीर और बडे बडे सेवक भेंट लेकर उसके मकान पर गये। उसने बडा समारोह किया और मुझे भी बुलाया। मैं महिलाओं के साथ उसके यहां गया। उसने बडी दावत की और मुझे उपयुक्त भेंटे दीं। इसी दिन जम्बील बेग राजदूत को 50,000 रुपये दिये गये। इसी दिन जबरदस्त खां, कासिम खां के पुत्र मकसूद और मिर्जा रुस्तम के पुत्र मिर्जा दक्खिनी को मंसब दिये गये।

---

1 यह नूरजहां की पुत्री थी जो शेर अफगान से हुई थी।

इसी समय खबर आई कि जब मै कश्मीर में था तो दक्षिण के सुल्तानों ने अपना वचन भंग करके विद्रोह, राजद्रोह कर दिया है और अहमदाबाद तथा बरार के कई जिलों पर कब्जा कर लिया है। प्रथम बार जब शाही सेना दक्षिण में पहुंची तो खुर्रम को मध्यस्थ बना कर इन्होंने शाही इलाके खाली कर दिये और बडी भेटें भेज कर वचन दिया था कि वे सेवा नहीं छोडेंगे। खुर्रम की प्रार्थना पर मै मांडू के दुर्ग में ठहरा और उसके कहने से इन लोगों को क्षमा कर दिया।

अब मैंने खुर्रम के नेतृत्व में फिर सेना भेजी परन्तु उसके सुपुर्द कांगड़ा विजय का कार्य था इसलिए उसने अपने अनुभवी लोग इधर भेज दिये और वह दक्षिण की व्यवस्था नहीं कर सका। फिर खबरें आने लगीं कि शत्रु ने 60 हजार घुडसेना एकत्र करके शाही प्रदेश पर कब्जा कर लिया है और शाही थाने हटा दिये है, और महकर के कस्बे में शत्रु सेना एकत्र हो गई। शाही सेना की शत्रु से 3 बार लड़ाई हुई। परन्तु अन्न और दूसरा सामान शाही सेना में नहीं पहुंच सका वे चारों ओर से मार्ग रोककर लूटमार करते थे इससे अन्न का अभाव हो गया और जानवरों की बड़ी दुर्दशा हुई। अतः शाही सेना बालाघाट से हटकर बालापुर आ गई तब शत्रु बालापुर के आस–पास भी लूट मार करने लगे। शाही सेना के लगभग 7 हजार चुने हुए सवारों ने शत्रु के शिविर पर आक्रमण किया। शत्रु की सेना में 60 हजार सवार थे। बड़ी लडाई हुई और शत्रु का शिविर लूट लिया गया। शाही सेना लूटमार करके सुरक्षित वापिस आ गई। परन्तु जब वह वापस आने लगी तो शत्रु ने चारो ओर से फिर आक्रमण किया और वह शाही शिविर तक आ पहुंचे। दोनों ओर से लगभग एक हजार आदमी मारे गये। इस लडाई के बाद शाही सेना बालापुर में 4 मास तक ठहरी। अन्न अभाव के कारण बहुत से शाही सेवक भाग कर शत्रु के पास चले गये इसलिए शाही सेना बुरहानपुर आ गई। यहां भी शत्रु ने उसको घेर लिया और 6 मास तक वह बन्द रही। बरार और खानदेश के बहुत से परगने शत्रु के हाथ में चले गये। इससे शत्रु का अभिमान और बढ़ गया। इसी समय शाही लश्कर राजधानी आगरा में वापिस लौटा और कांगड़ा पर विजय प्राप्त हो गई।

दक्षिण की ओर शाही सेना की कूच

अतः शुक्रवार तारीख 4 मास दे को मैंने खुर्रम को उस ओर रवाना किया। जाते समय मैंने उसे खिलअत और एक तलवार और एक हाथी दिया। नूरजहां बेगम ने भी उसे एक हाथी दिया। मैंने उससे कहा कि विजित देश से वह 2 करोड़ रुपए पुरस्कार स्वरूप ले सकता है। खुर्रम के साथ मैंने

650 मनसबदार, 1 हजार अहदी, 1 हजार तुर्की, तुपची और बन्दूकची भेजे। 31 हजार सवार और आतिस बहुत से घोड़े पहले ही दक्षिण में थे। सेना के खर्च के लिए मैंने उसको एक करोड रुपये दिये। उसके साथ जाने वाले सब लोगों को घोडे हाथी आदि पुरस्कार के रूप में दिये।

इसी शुभ समय में मेरा लश्कर आगरा की ओर चला और नौशहर मुकाम किया। मुहम्मद रिजा जाबीरी को बंगाल का दीवान और ख्वाजा मुल्की को बख्शी नियुक्त किया। राणा कर्ण का पुत्र जगतसिंह दरबार में आया। इसी मास की 6 तारीख को मैंने राजा टोडरमल के तालाब पर मुकाम किया। वहां मै 4 दिन ठहरा। वहा दक्षिण को जाने वाले मनसबदारो को पदोन्नत किया गया। इनमें जाईद खां हृदयनारायण दाडा, खानदौरा का पुत्र याकूब आदि थे। हुमायूं के राजा लक्ष्मीचन्द ने सिकरे और शिकारी जानवर भेजें। राणा कारण के पुत्र जगतसिह ने दक्षिण की सेना के साथ जाने की इजाजत ली। राजा रूपचन्द अपनी जागीर पर गया। तारीख 12 को मैंने अपने पुत्र खानजहां को मुल्तान का सूबेदार बनाकर विदा दी। खानजहां के साथ ही सईद हिजबरखा को मनसब बढाकर रवाना किया। मुहम्मद सफवी को सूबा मुल्तान का बख्शी और वाकियानविश नियुक्त किया।

भवाल को आतिस का अधिकारी (अशरफ–ए–तोपखाना) नियुक्त किया और राय की उपाधि दी। तेरह तारीख को गोविन्दवाल नदी पर मुकाम हुआ और 4 दिन रहा। महावत खां को एक हाथी दिया जो एक सेवक के हाथ भेजा।

ता. 17 को मेरी चन्द्र तुला हुई। मुतामिदखां को दक्खिन की सेना का बख्शी बनाकर विदा किया। अर्ज मुकर्रिर का पद ख्वाजा कासिम को दिया गया। मीर शरफ को अहदियों का बख्शी और फाजिल बेग को पंजाब का बख्शी नियुक्त किया। कन्धार के सूबेदार बहादुर खां ने अपने नेत्र रोग के कारण प्रार्थना की उसे दरबार में आने की इजाजत दी जावे। इसलिए इस दिन कन्धार की सूबादारी अब्दुल अजीजखा को देकर बहादुर खा के नाम आदेश जारी किया कि जब अब्दुल अजीजखां वहां पहुंचे तो सूबे का चार्ज उसको देकर बहादुरखां दरबार में आ जावे। 21 ता. को मैं नूरसराय मे ठहरा। यहां नूरजहां बेगम के वकीलों ने एक विशाल भवन और शाही बाग बनवाया था इसलिए बेगम ने यहां बहुत बडी दावत दी और सब प्रकार की कोमल और दुर्लभ वस्तुएं भेंट की। मैं यहा दो दिन ठहरा। यह निश्चय किया गया कि पंजाब के अधिकारी दो लाख रुपए कन्धार दुर्ग के सामान के लिए भेजें। साठ हजार रुपए के लिए इस निमित्त पहले ही आदेश दिया जा

चुका था। पंजाब के दीवान मीर किमाउद्दीन ने लाहौर जाने की इजाजत ले ली। कांगड़ा के पास राजद्रोह हो रहा था इसलिए कासिमखां को भेटे देकर उधर भेजा गया और उसका मनसब बढ़ाकर हो हजार जात और 500 सवार कर दिया गया। उसकी प्रार्थना पर जम्बू के राजा संग्राम को भी उधर भेजा गया।

बृहस्पतिवार को सरहिन्द के कस्बे में बाहर मुकाम हुआ। मैंने वहां का बाग देखा। रविवार ता. 4 को अबुल हसन को दक्षिण विजय पर गई हुई सेना के साथ सेवा करने के लिए भेजा गया। उसको अच्छी भेटे दी गई। ता. 7 को सरस्वती नदी के तट पर डेरा लगा और अगले दिन अकबरपुर पहुचा।

यहां से पांच मंजिल चल कर मैं मुकर्रबखां के परगने में गया उसके वकीलों ने मुझे 91 लाल, चार हीरे, एक हजार गज मखमल और एक पाअन्दाज भेंट किया। एक सौ ऊंट खैरात के लिए दिए जिनको मैंने दान पात्रों में बांट दिया। यहां से पांच मंजिल चलकर दिल्ली में मुकाम किया गया मैंने इतिमादुद्दौला को अपने पुत्र शाहनवाज के पास एक खास फर्जी (पोशाक) लेकर भेजा और यह निश्चय हुआ कि वह एक मास में मेरे पास आवे। सलीमगढ़ दो दिन ठहरकर बृहस्पतिवार ता. 23 को मैं दिल्ली के जिले में होकर निकला। मेरा विचार पालम परगने में शिकार करने का था। मैं शमसी तालाब के किनारे पर ठहरा था। मार्ग मे मैने एक हजार रुपए की चवन्नियां अपने हाथ से लुटाई। बंगाल से 22 हाथी मेरी भेट आए।

जुलकरनाइन ने साभर की फौजदारी पर जाने की छुटटी ली यह अरमेनियन इसकन्दर का पुत्र है। इसका पिता बादशाह अकबर की सेवा मे था उसने अब्दुल दे अरमेनियन की पुत्री इसी को ब्याह दी थी। अब्दुल हे शाही जनाने की सेवा में था। इस लडकी से उसके दो पुत्र हुए। एक का नाम जुलकरनाइन था। सांभर के नमक का काम इसके सुपुर्द था जो इसने अच्छा किया था। अब यह वहां का फौजदार बनाया गया था। यह हिन्दी गानों की अच्छी रचना करता है। इसके गाने मेरे सामने प्रस्तुत किए गए थे और मुझे पसन्द आए थे। चार दिन पालम में सुखपूर्वक शिकार करके मैं सलीमगढ़ लौटा। ता. 29 का इब्राहीमखां फतेहजग की भेंटे मेरे सामने प्रस्तुत की गई। जिनमें 19 हाथी दो ख्वाजे सरे, एक दास आदि थे। बृहस्पतिवार ता. 30 को मेरी चांद्र तुला हुई। मीर मारान मेवात का फौजदार था। वह आया तो उसको दिल्ली फौजदार नियुक्त किया गया। इस दिन ईरान के शाह के राजदूत आकाबेग और मुहिब्ब अली उस नेक भाई का पत्र लेकर

आए। इनके साथ एक सफेद और काली कलगी थी। जौहरियो ने इसका मूल्य 50 हजार रुपए बतलाया था। मेरे भाई ने एक लाल भेजी थी जिसका तोल 12 टांक था। यह पहिले मिर्जा शाह रुख के उत्तराधिकारी मिर्जा उलूग के पास थी। घूमते घूमते यह सफवी परिवार के हाथों में आ गई। इस पर ये शब्द खुदे हुए थे, " उलूग बेग बिन मिर्जा शाहरुख बहादुर बिन मीर तीमूर कुरगान।" इस लाल को एक सरपेंच मे लगाकर मुझे भेंट किया गया था। इस लाल पर मेरे पूर्वजो के नाम थे। मैंने सुनारों के महकमें के अफसर को बुलाकर आदेश दिया कि इस लाल के दूसरे कोने में ये शब्द खुदवा दिए जाये "जहांगीर शाह बिन अकबर शाह" और इस समय की तारीख। कुछ दिन बाद दक्खिन विजय की खबर आई तो मैंने यह लाल खुर्रम के पास भेज दी।

शानिवार ता. 1 इसफन्दारमुज को सलीमगढ से चलकर मैं पहले हुमायूं के मकबरे पर गया और वहां विनय प्रकट करके दो हजार चवन्नियां वहां बैठे हुए गरीबों को दीं। मैंने नगर के पास जमना के तट पर दो बार मुकाम किए। सैयद हिजबर खां को भेंटें देकर खांजहां के पास भेजा। मीर बरका बुखारी को ट्रान्सऔक्सियाना जाने की इजाजत दे दी। मैंने उसके साथ दस हजार रुपए भेजे। पांच हजार ख्वाजा शालीह दीह बीजी के लिए जो मेरे पिता के समय से इस राज्य का हितचिन्तक था और 5 हजार रुपए तीमूर की कब्र के मुजाविरों में बांटने के लिए दिए। मैंने मीर बरका को आदेश दिया कि मेरे लिए चिन्हित मछली के दांत कहीं से लावे चाहे कुछ ही कीमत देनी पडे।

दिल्ली से नाव द्वारा रवाना होकर मैं छः मंजिल में वृन्दावन के मैदान में पहुंच गया। दूसरे दिन गोकुल मे मुकाम किया। यहां आगरे के प्रधान लोग मेरी सेवा में आए। 11 तारीख को मैं नूरअशरफ बाग में ठहरा जो जमना नदी के दूसरी ओर है। 14 तारीख को शुभ मुहूर्त में मैंने नगर में प्रवेश किया। लाहौर से आगरा आने में दो मास और दो दिन लगे। 49 मंजिलें की गई और 21 मुकाम हुए। कोई भी दिन शिकार किए बिना नहीं निकला। 111 हिरन, 51 बतखें, 4 बगुले, 10 काले तीतर और दो सौ बूदना नामक पक्षी मारे गए।

लश्कर खां ने आगरे में अच्छा काम किया था इसलिए उसका मनसब बढ़ाकर 4 हजार जात और दो हजार पांच सौ सवार करके दक्खिन की सेना में भेज दिया गया। बृहस्पतिवार ता. 20 को नूरमंजिल बाग में समारोह हुआ मैंने अपने पुत्र शहरयार को एक लाख रुपए दिये। लश्कर खां ने मुझें

एक लाल भेट की। इसका मूल्य 4 हजार रुपए था। बृहस्पतिवार ता. 27 को नूरअफसां बाग मे जलसा हुआ।

शुक्रवार ता. 28 को मै समू नगर मे शिकार करने गया रात्रि को वापिस आ गया। मैने (ईरान के) राजदूत जम्बिल बेग को नूरजहानी मोहर दी। इसका तोल 100 तोले था। इस दिन 85 हजार बीधा भूमि, तीन हजार तीन सौ पच्चीस बीघे चावल, चार गाव, 6 हजार दो सौ दरब, सात हजार आठ सौ चवन्निया पन्द्रह सौ बारह तोला सोना और चादी और दस हजार दाम मेरे सामने फकीरो और निर्धन लोगो मे दिए। मुझे दो लाख 41 हजार के मूल्य के 38 हाथी भेट किए गए। 51 हाथी मैने अमीरो और दरबार के सेवको को दिए।

राज्यारोहण के बाद सोलहवें नये वर्ष का उत्सव

सोमवार 28 रबीउल आखिर 1030 हिजरी (10 मार्च 1621) को सूर्य ने मीन राशि मे प्रवेश किया और मेरे राज्य का 16 वा वर्ष हर्ष और विजय के साथ आरम्भ हुआ और शुभ समय मे आगरे मै राज सिहासन पर बैठा। इस दिन मेरे पुत्र शहरीयार का मनसब 8000 जात और 4000 सवार किया गया। मेरे पूज्य पिता ने प्रथम बार ऐसा मनसब मेरे भाइयो को दिया था। मुझे आशा है कि मेरी शिक्षा और आज्ञा का पालन करने से वह पूर्ण आयु प्राप्त करेगा। इस दिन बाकिर खा ने अपने सैनिक मेरे सामने होकर निकाले। इनमे 1000 सवार और 2000 प्यादे थे। मैने उसको 2 हजार जात और 1 हजार सवार का मनसब देकर आगरे का फौजदार बनाया।

बुधवार को मै महिलाओं सहित नाव मे बैठकर ने नूर अफशा बाग मे गया और मैने वही रात्रि मे विश्राम किया। यह बाग नूरजहा बेगम का है। उसने बृहस्पतिवार तारीख 4 को आमोद–प्रमोद की व्यवस्था करके बडी भेटे दी। जिनमे से मैने 100,000 रुपये की भेटे स्वीकार कीं। इन दिनो मैं प्रतिदिन दोपहर को नाव द्वारा सामू नगर मे जो नगर से 4 कोस है शिकार के लिये जाता था और सायकाल वापस महल मे आ जाता था। मैने शाह परवेज के लिये राजा सारग देव के हाथ 1 खिलअत, 1 जडाऊ पेटी जिसमे नीलम और कई लाले लगी हुई थी, भेजी। मैने इस पुत्र को मुकर्रब खा से लेकर बिहार सुपुर्द कर दिया और उसको इलाहाबाद से बिहार पहुचाया। मीर अज्युद्दौला वृद्ध और निर्बल हो जाने से लश्कर का कार्य नहीं कर सकता था और अपनी जागीर की देखरेख भी उससे नही होती थी। मैने उसको सेवा से मुक्त कर दिया और उसके खर्च के लिए 4000 रुपये मासिक दिये।

9 फरवरदीन को इतिबार खा की भेटे मेरे सामने रखी गई। जिनमे से मैंने 70,000 की भेटे रखीं। ईरान के शासक के राजदूत मुहिब्बअली और आकाबेग 24 घोडे 2 खच्चर, 3 ऊट 7 ताजी कुत्ते, कीनख्वाब के 27 थान आदि भेटे लाये।

शुक्रवार के दिन आसफ खा की प्रार्थना पर मैं महिलाओ के साथ उसके मकान पर गया। उसने दावत की बडी तैयारी की थी और सुन्दर भेटे पेश की थी। जिनमे से मैने 130,000 मूल्य की भेट रखी। ओडीसा के सूबादार मुकर्रम

खां ने 32 हाथी भेंट किए। जो मैंने रख लिये। इस समय मैंने एक जंगली गधा देखा जो सिंह से मिलता जुलता था। इसके शरीर पर काले चिन्ह थे आंखों के आसपास काली पंक्तियाँ थी मानों किसी चित्रकार ने बनाई हों।[1] मैंने जांच करवाई कि इसको कही रंग तो नहीं दिया है तो विदित हुआ कि इसको ईश्वर ने ऐसा ही बनाया है। मैंने इसको रख लिया। बहादुर खां उजबेग ने इराक से घोडे और कपड़े भेंट के लिए भेजे। सादिक खां ने भेंटे भेजी जिनमें से मैंने 15000 रुपये की चीजें रखीं। फाजिल खां भी भेंटें लाया जिनमें से कुछ रख ली गई। बृहस्पतिवार को सूर्य का उच्चतम आरोहण था। दो पहर और 1 घड़ी दिन चढने पर मैं तख्त पर बैठा। मरारुलमुल्क इतिमादुद्दौला की प्रार्थना पर उसी के निवास पर उत्सव मनाया गया। उसने दुर्लभ चीजें भेंट की जिनमें से 138000 की चीजें रख लीं। इस दिन मैंने राजदूत जम्बील बेग को 200 तोले की एक मोहर दी। शेर कासम खां को इलाहाबाद का सूबेदार बनाकर मोहत्तशिम खां की उपाधि दी और 5000 का मनसब दिया और गैर अमली जायदादों में से उसको कुछ जायदादें देकर उसकी जागीर बढ़ा दी। राजा श्यामसिंह को एक घोडा और हाथी प्रदान किया। यह गढवाल के श्रीनगर का जमींदार है।

युसुफ खां की मृत्यु

इस समय यह खबर आई कि हुसैन के पुत्र युसुफ खां की दक्खिन की सेना में अचानक मृत्यु हो गई है वह अपनी जागीर में रहता था और इतना मोटा हो गया था कि थोडा सा परिश्रम करने पर हांफने लगता था। एक दिन वह खुर्रम की सेवा में उपस्थित होने के लिये आया। आने जाने में उसका सास फूल गया। जब उसको खिलअत दी गई तो उसको पहनकर सलाम करना उसके लिए कठिन हो गया। उसका सारा शरीर कांपने लगा। कठिनता से सलाम करके वह बाहर गया तो अचेत हो गया। उसको पालकी में रखकर घर ले जाया गया तो उसकी मृत्यु हो गई। इसी मास की 4 तारीख को मेरे पुत्र शहरीयार का तार–ए–खेर हुआ। जिससे मेरे हृदय को बडा हर्ष हुआ। हीना बन्दी का जलसा मरियम उज जमानी के महल मे हुआ। निकाह की रश्म इतिमादुद्दौला के निवास पर हुई। मैं और महिलायें उस हर्षोत्सव को अलंकृत करने के लिए गये। जब 7 घडी रात चली गई तो शुक्रवार को विवाह हुआ। मंगल तारीख 19 को नूर अफशां बाग में मेरे पुत्र शहरीयार को एक जड़ाऊ चारकब (कोट) एक पगडी और कमरबन्द तथा 2 घोडे सुनहरी जीन सहित दिये।

---

1 यह जैबरा होगा।

इन दिनो शाह शुजा के ऐसी चेचक निकली कि उसके गले मे पानी नहीं उतरता था और उसके जीवन की आशा नही रही थीं उसके पिता की जन्म पत्री मे लिखा हुआ हैं इस वर्ष उस (शाह शुजा की) मृत्यु होगी। इस विषय मे सारे ज्योतिषी एकमत थे। परन्तु जोतिगराय ने कहा कि कोई विपत्ति नहीं आयेगी मैंने पूछा कि इसका क्या प्रमाण है। उसने उत्तर दिया कि मेरी (जहागीर) की जन्म पत्री मे ऐसा लिखा हुआ है। कि इस वर्ष शाही मन को कोई खेद नहीं होगा। मेरा इस बच्चे से बडा प्रेम है। अत इस बच्चे पर कोई विपत्ति नहीं आएगी। किसी दूसरे बच्चे की मृत्यु होगी जोतिगराय ने कहा वही हुआ और शाहशुजा उस विपत्ति से बच गया ओर बुरहानपुर मे शाहजहा के एक दूसरे पुत्र की मृत्यु हो गई। इसके अतिरिक्त जोतिगराय के बहुत से निर्णय ठीक सिद्ध हुये। मैने जोतिगराय की तुला करवाई तो 6500 रु की हुई यह रुपया मैंने उसी को दे दिया।

मुहम्मद हुसैन जाविरी को सूबा उडीसा का बख्शी ओर वाकियानवीस नियुक्त किया गया। महावत खा की प्रार्थना पर लाचिन मुनहज्जिम काकशाल (ज्योतिषी) का मनसब बढाकर 1 हजार जात और 500 सवार कर दिया गया। ख्वाजा जहा का भाई मुहम्मद हुसैन कागडा से मेरी सेवा मे आया। बहादुर खा उजबेग के लिए उसके वकील के साथ मैने एक हाथी भेजा। मिर्जा मुहम्मद हकीम के 2 पोते हुरमुज और हुसग ग्वालियर के दुर्ग मे कैद थे। अब मै उनको बुलाकर आगरा मे रखा और उनके खर्च के लिए पर्याप्त राशि मजूर कर दी। इस समय एक विद्वान ब्राह्मण रुद्र भट्टाचार्य जो बनारस मे अध्यापन कार्य करता था मेरी सेवा मे आया वास्तव मे उसने परम्परागत और तर्क विद्या अच्छी प्राप्त की थी और अपने ढग मे वह पूर्ण था।

इस समय (लगभग 10 अप्रैल 1621) को जलन्धर के परगने मे एक गाव मे प्रात काल पूर्व की ओर से ऐसा भयकर शोर सुनाई दिया कि वहा के निवासी इस आवाज का सुनकर मरे जैसे हो गये। जब यह शोर हुआ तो भूमि पर बिजली गिरी फिर शोर बन्द हो गया तो लोगो ने आमिल मुहम्मद सईद के पास एक आदमी भेजकर इसकी सूचना दी। वह उस स्थान पर गया और देखा कि 10–12 गज लम्बी और इतनी चौडी भूमि ऐसी जल गई थी कि घास का चिन्ह भी शेष नही था और जलने के चिन्ह अब तक थे। उसने भूमि खुदवाई तो ज्यो–ज्यो खोदते थे त्यो–त्यो गर्मी मालूम होती थी फिर एक तपा हुआ लोहा मालूम हुआ यह ऐसा तपा हुआ था कि मानो अभी भट्टी मे से निकाला हो। जब वह ठण्डा हो गया तो उसको खरीते मे रखकर उसने दरबार मे भेजा। मैंने आदेश दिया कि उसको मेरे समक्ष तुलवाया जावे तो वह 160 तोले का निकला। मैंने आदेश दिया कि उससे एक तलवार और खजर और चाकू बनाये जावे।

वह लोहा हथौडी की चोट नहीं सह सकता था इसलिए उसमें एक चौथाई दूसरा लोहा मिलाकर ये चीजें बनाकर मेरे सामने लाई गई। यह तलवार मोड़ी जा सकती थी और फिर वैसी की वैसी ही हो जाती थी। यह काटती भी अच्छा थी।

इस समय राजा देव सारंग आया। यह मेरे पुत्र शाहपरवेज के पास गया था। परवेज ने निवेदन करवाया कि यह इलाहाबाद से बिहार जा पहुंचा है। कासिम खां को नक्कारे देकर सम्मानित किया गया। इसी दिन खुर्रम का सेवक अलीमुही विजय का हर्ष समाचार लेकर आया। खुर्रम ने मेरे लिए एक जड़ाऊ अंगूठी भेजी थी। मैंने अपने पुत्र शहरीयार के लिए फाजिल बेग खां के भाई अमीर बेग को दीवान और ख्वाजा जहां के भाई मुहम्मद हुसैन को बख्शी नियुक्त किया। मुज्जफर खां को भी बख्शी बनाया गया।

इसी समय तूरान के शासक इमामकुली खां की माता ने नूरजहां बेगम को एक शुभकामना का पत्र भेजा जिससे परिचय बढे। उसने अपने देश की कुछ दुर्लभ चीजें भी भेजी। नूरजहां बेगम ने एक पत्र और और देश की दुर्लभ चीजें राजदूत ख्वाजा नासिर के हाथ भेजी। जब महिलायें व नूरजहां बेगम नूर अफशां बाग में ठहरी हुई थी हिरण का 8 दिन का बच्चा महल की 8 गज ऊंची छत से कूद पड़ा और इधर उधर उछलने लगा। उसके कोई चोट नही आई थी।

तारीख 4 इलाही मास खुरदाद को खुर्रम का दीवान अफजल खां पत्र लेकर आया जिसमें उसकी विजय का समाचार था। विवरण इस प्रकार है.–

जब शाही सेना उज्जैन पहुंची तो मांडू से शाही सेवकों ने खबर भेजी कि विद्रोहियों .की एक सेना नर्वदा पार करके दुर्ग के नीचे के कई गांवो को जलाकर लूटमार कर रही है। तब मदारुल महाम ख्वाजा अबुल हसन को 5 हजार सवार देकर विद्रोहियों की दण्ड देने के लिए भेजा। ख्वाजा दूसरे दिन प्रातःकाल नर्वदा के तट पर पहुंच गया। इसका पता लगने पर शत्रु नदी में कूद कर दूसरे तट पर चले गये। सवारों ने 4 कोस तक पीछा किया। और उनमें से बहुत–सों को मार डाला। विद्रोही बिना पीछे मुड़े बुरहानपुर पहुंच गये। खुर्रम ने अबुल हसन को लिखा कि वह नदी के दक्षिणी तट पर ही ठहरे। फिर खुर्रम भी बुरहानपुर पहुंच गया। विद्रोही लोग नगर के आसपास पड़े हुए थे। शाही सेवकों को विद्रोहियों से लडते हुए दो वर्ष हो गये थे। उनको अनेक कष्ट सहने पड़े थे। उनके पास जागीरें नहीं थीं, अन्न की कमी थी, निरन्तर उपयोग के कारण उनके घोड़े थक गये थे इसलिए उनको तैयारी करने में नौ दिन लग गये। इस अर्से में उन लोगों को 30 लाख और रुपये बांटे गये। सजावलों को भेजकर बुरहानपुर से बहुत से आदमियों को निकाला गया। अपने वीर सैनिकों ने काम से हाथ नहीं लगाया था। जब विद्रोहियों ने देखा कि वे सामना नहीं कर सकते

तो वे छिन्न–भिन्न हो गये। वीर सवारों ने उनका पीछा किया और बहुत–सों को तलवार के घाट उतार दिया। उनको बिल्कुल विश्राम नहीं लेने दिया और पीछा करते–करते उनको खिडकी तक पहुंचा दिया। यहां निजामुल–मुल्क और अन्य विद्रोहियो का नियास था। इसके एक दिन पूर्व मलिक जामुल मुल्क और उसके परिवार को सामान सहित दौलताबाद के दुर्ग में पहुचा दिया। दुर्ग की दीवार उसकी पीठ पर थी और सामने दलदल था उसके अधिकांश लोग विभिन्न दिशाओं में भाग गए थे। शाही सेना ने खिडकी तीन दिन ठहर कर शहर को ऐसा नष्ट कर दिया कि अब बीस वर्ष मे भी इसका वैभव नहीं लौट सकता। अन्त मे मकानों को गिराने के बाद सबने मिलकर यह निश्चय किया कि अमहद नगर विद्रोही लोग अब भी घेरे हुए हैं। इसलिए तुरन्त ही वहां जाकर उनको दण्ड दिया जावे, वहा सामान और पहुचवाया जावे और वहां सहायतार्थ सेना छोडकर वापिस लौट जावे। इस विचार से शाही सेना पाटन तक पहुंच गई। चतुर मलिक अम्बर ने अपने प्रतिनिधि लोग भेजकर कहलाया कि "अब मैं सेवा और स्वामी भक्ति नही छोडूगा, आदेश उल्लघन नही करूंगा और मुझ पर जो अर्थ दण्ड दिया जायेगा और खराज लिया जायेगा उसको सरकार में जमा करा दूगा, उसी समय लश्कर में सामान की महंगाई के कारण चीजों का अभाव हो गया और यह भी खबर आई कि जो विद्रोही अहमद नगर को घेरे हुए थे शाही सेना के आगमन की खबर सुनकर पीछे हट गये। तब अहमदनगर के दुर्गपति खंजर खा की सहायतार्थ एक सेना और धनराशि भेजी गई तब शाही सेना को कोई चिन्ता नही रही। अम्बर ने बहुत विनय की और वह रोया–धोया तब यह ठहरा कि शाही भूमि के अतिरिक्त वह उससे सटी हुई चौदह कोस भूमि और समर्पित कर दे और खराज के रूप मे पचास लाख रुपए दे।

मैने अफजलखा (शाहजहा के दीवान) को वापिस जाने की इजाजत दे दी और उसी के हाथ खुर्रम के लिए एक लाल की कलंगी भेजी जो ईरान के शाह ने मेरे लिए भेजी थी और जिसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। मैंने एक खिलअत, हाथी, दावात और जडाऊ कलम दी। खंजरखां अहमद नगर के दुर्ग मे घिर गया था, उसने अच्छी सेवा की इसलिए उसका मनसब चार हजार जात और एक हजार सवार कर दिया गया। मोहर्रमखां आदेशानुसार अपने भाईयों के साथ उडीसा में आया। उदाराम दक्खिनी को निशान बख्शा गया। इस समय ईरान से आए हुए राजदूत अकाअली, मुहीब अली बेग, हाजी बेग और फाजिल बेग को वापिस जाने की इजाजत दी गई। आकाखां को एक खिलअत और तीस हजार रुपए दिए। अन्य लोगों को भी यथायोग्य भेंटे दीं और मेरे भाई के लिए एक उपयुक्त स्मारक भेजा गया। इसी दिन मुकर्रमखां को दिल्ली का

सूबेदार और मेवाड़ का फौजदार नियुक्त किया गया। सहजात खां अरब को तीन हजार जात और दो हजार पांच सौ का मनसब दिया। षडजाखां को दो हजार जात और एक हजार सवार का और रायसाल कच्छावा के पुत्र गिरधर को बारह सौ जात और नौ सौ सवार का मनसब दिया गया।

29 तारीख को ईरान का राजदूत कासिमबेग मेरे भाई शाह (ईरान) का पत्र लेकर मेरी सेवा में आया। उसमें सच्चाई और मित्रता प्रकट की गई थी। खुर्रम का सेवक नजरबेग एक पत्र लेकर आया। खुर्रम घोड़े चाहता था मैंने राजा किशनदास मुसरिफ को आदेश दिया कि पन्द्रह दिन में शाही तबेलों से एक हजार घोडे भेजे जाने के लिए तैयार किए जाये। मैंने खुर्रम के लिए एक सुन्दर घोडा भेजा जो शाह ईरान ने मेरे लिए भेजा था।

इस दिन गयासुद्दीन ने जो इरादत खा का सेवक था मेरे सामने एक रिपोर्ट पेश की जिसमें उसकी विजय का हर्ष समाचार था। पिछले पृष्ठों में किस्तवार के जमींदारों के विद्रोह का वृत्तान्त लिखा जा चुका है। वहां दिलावार खां का पुत्र जलाल भेजा गया है। जलाल स्थिति को नहीं संभाल सका। इसलिए इरादत खां को आदेश दिया गया कि वह जाकर कार्य अपने हाथ में ले और विद्रोहियों को कठोर दण्ड दे तथा ऐसी व्यवस्था करे कि भविष्य में कोई उत्पात न हो। उसने जाकर सब उचित व्यवस्था कर दी और विपत्ति की जड़ उखाड फेंकी। इसके लिए मैंने उसके मनसब में पांच सौ सवारों की वृद्धि कर दी।

तारीख 1 अमुरदाद इलाही मास को बाकिर खां का मनसब बढाकर दो हजार जात और बारह सौ सवार कर दिया। दक्खिन में वीरता का काम करने वाले लोगों में से 32 पुरुषों का मनसब बढा दिया। मेरे पुत्र सरजंद शाहजहां की प्रार्थना पर अब्दुल अजीज खां नकसबन्द का मनसब बढ़ाकर तीन हजार जात दो हजार सवार कर दिया। ताल शहरीवार को मैंने राजदूत जवीर बेग को एक जडाऊँ तलवार दी। और एक सोलह हजार वार्षिक की आमदनी का एक गांव दिया।

इस समय मुझे मालूम हुआ कि हमीम रूकना अपने स्वभाव और अज्ञान के कारण कर्तव्य पालन के योग्य नहीं है। इसलिए मैंने उसको पदच्युत करके कहा कि वह चाहे जहां जा सकता है। मुझे यह सूचना मिली कि खान आलम के भाई के पुत्र हुशंग ने एक अनुचित हत्या की है तो मैंने उसको बुलाकर इसकी जांच की और उसका अपराध सिद्ध होने पर उसको प्राण दंड दिया। ईश्वर न करे कि मैं ऐसे मामलों में शाहजादों या अमीरों का कोई विचार करूं। तारीख 9 शहरीवार को मैं आसफ खां के मकान पर गया उसने हाल ही एक स्नानागार बनाया था। मैं उसमें नहाया फिर उसमें मेरी नजर की तो जो चीजें मुझे पसंद आईं मैंने ले ली। खानदेश के भूतपूर्व शासक खिजर खां की पेन्शन 30000 कर

दी गई। इस समय कल्याण नामक लोहार छत से कूद कर मर गया। कारण यह था कि उसी की जाति की एक विधवा ने उससे विवाह नहीं किया।

जहांगीर की बीमारी

मैं लिख चुका हूं कि कश्मीर में दशहरे के दिन मुझे सांस लेने में कष्ट हुआ था। अत्याधिक वर्षा और नमी के कारण सांस लेते समय ह्रदय में बायीं ओर मुझे दर्द मालूम हुआ जो बढकर तीव्र हो गया। हकीम रोहल्ला ने औषधि दी तो कुछ आराम हुआ। जब मैं पहाडों से नीचे आया तो पीडा बहुत बढ गई। मैंने कुछ दिन बकरी और ऊटनी का दूध पिया परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ बल्कि मैं बडा निर्बल हो गया और रोग बढ गया। हकीम मिर्जा मोहम्मद के पुत्र सदरा ने जो ईरान का एक मुख्य हकीम था मेरी चिकित्सा की। वे मेरे पूज्य पिता के समय मे ईरान से आया था। जब मैं तख्त पर बैठा तो मैंने उसका आदर किया और उसे मसीहुज्जमा की उपाधि दी। मुझे आशा थी कि वह नाजुक घडी मे काम आयेगा। परन्तु इस कृतघ्न पुरुष ने मुझे औषधि नही दी। मैंने उसको बहुत समझाया परन्तु उसने हठ नहीं छोडा। हकीम अबुल कासिम खानजादा था परन्तु उसने भी चिकित्सा नहीं की। वह घबरा गया था तो चिकित्सा कैसे करता। तब मैंने चिकित्सा का विचार छोडकर ईश्वर पर भरोसा किया। मद्यपान से मुझे आराम मिलता था। इसलिए मैं दिन मे पीने लग गया और धीरे धीरे बहुत बढा दिया। जब गर्मी आई तो इसका दुष्परिणाम बढा। नूरजहा बेगम ने प्रेम और सहानुभूति के द्वारा प्याले कम करने का प्रयत्न किया। मैंने उसकी कृपा का ही सहारा लिया। उसने धीरे धीरे मेरा मद्यपान कम कर दिया और खाने की जो चीजे मेरे प्रतिकूल थीं बंद कर दीं।

सोमवार इसी मास की 22 तारीख (2 सितम्बर 1629) को मेरी सौर तुला हुई। मुझे पिछले वर्ष बडी बीमारी थी परन्तु जब स्वास्थ्य लाभ के चिन्ह प्रकट होने लगे थे। अत. नूरजहां बेगम ने निवेदन किया कि उसके वकीलो को सौर तुला का उत्सव करने की इजाजत दी जावे। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कि देखने वालो को अचम्भा हुआ। नूरजहां बेगम का मुझसे विवाह हुआ तभी से वह इन मौकों पर उपयुक्त व्यवस्था किया करती थी। परन्तु इन मौके पर उसने और अधिक ध्यान दिया। मेरे सब सेवकों पर उसने कृपा प्रकट की और उन्हें सिरोपा, जडाऊँ पडतले, घोडे, खंजर हाथी और रुपयों से भरी हुई तश्तरियां पदानुसार सेवको को दी। हकीमों ने कोई अच्छी सेवा नहीं की थी तथापि उन्हें नकद और जवाहिरात बख्शी गई।

तुला के बाद सोना और चांदी निसार करके उत्सव करने वालों को और गरीबों को दिया गया। जोतिगराय ज्योतिषी ने मेरे स्वास्थ्य लाभ का शुभ समाचार सुनाया था इसलिए उसको मोहरों और रुपयों से तोला गया। इस प्रकार उसको 500 मोहरें और 7000 रुपये मिले। फिर नूरजहां ने मुझे भेंट दी जो दो लाख की थी। पिछले वर्षो में जब मैं स्वस्थ था तो मेरा तौल 3 मन या 3 मन से एक या दो सेर कम होता था। परन्तु इस वर्ष मेरा तौल 2 मन 27 सेर ही हुआ।

इलाही मास मिहिर की तारीख 1 बृहस्पतिवार को कश्मीर के सूबेदार को 400 जात और 2500 सवार का और राजा गजसिंह को 4000 जात और 300 सवार का मनसब दिया गया मेरी बीमारी की खबर मिलते ही शाह परवेज रह नहीं सका और मुझसे मिलने आया। वह इसी मास की 14 तारीख (25 सितम्बर 1621) को आया और मेरे तख्त की उसने तीन परिक्रमा कीं। मैंने मना किया परन्तु उसने नहीं माना। फिर मैंने उसको हाथ पकड कर स्नेहपूर्वक सीने से लगाया।

इस समय मैंने बीस लाख रुपए खुर्रम को अल्लाहदाद खां के साथ दक्खिन की सेना के खर्च के लिए भेजे। 28 तारीख को प्रधान शिकारी कयाम खां की स्वाभाविक मृत्यु हो गई।

तारीख 29 को नूरजहां बेगम की माता की मृत्यु हो गई। इसके सतीत्व और मधुर गुणों के विषय में मैं क्या लिखूं। वह इस युग की माताओ का अलंकार थी। मैं उसका अपनी माता के समान सम्मान करता था। इतिमादुद्दौला का उससे इतना प्रेम था कि कोई पति उसकी समानता नहीं कर सकता था। उस वृद्ध पुरुष के सन्तप्त ह्रदय की कल्पना ही की जा सकती है। अपनी माता के प्रति नूरजहां बेगम के स्नेह के बारे में मैं क्या लिखूं। आसफ खा जैसे बुद्धिमान और चतुर पुत्र ने अपना धैर्य नहीं रखा और उपयुक्त कपडे पहनना छोड़ दिया। उसकी दशा देखकर पिता का दुख ओर भी बढ गया। हमारे समझाने का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। मैं शोक निवारण के लिए गया। तो मैंने स्नेहपूर्ण कुछ बातें कहीं उस दिन बाद फिर उसके दुख को शान्त करके मैंने उससे काम करने के लिए कहा। उसने बाहर से तो शान्ति दिखाई परन्तु उसके अन्दर महान शोक था।

तारीख 1 इलाही मास अबान को सर बुलन्द खां, जानसिर खां और बाकिरखां को नक्कारे देकर सम्मानित किया। अब्दुल्लाखां दक्खिन के सूबेदार से इजाजत लिए बिना ही अपनी जागीर पर चला गया था। इसलिए दीवान लोगों को आदेश दिया गया कि उसको जागीर से वंचित कर दिया जावे। इतिमादराय को आदेश दिया गया कि वह उसको वापिस दक्खिन भेजे।

मसीहुज्जमा हकीम के विषय में लिखा गया है मैंने उस पर कृपा की थी ओर उसका भरण पोषण किया था। तो भी उसने मेरी ऐसी बीमारी में चिकित्सा करने की शिष्टता नहीं की। इससे भी अधिक विचित्र बात यह हुई कि उसने अचानक ही सकोच का पर्दा फेंक कर हज की यात्रा करने की इजाजत मांगी। मैंने उसको इजाजत दे दी। उसके पास यात्रा के लिए सब साधन थे तथापि मैंने उसको खर्च के लिए 20,0000 रुपए दिए। मुझे आशा है कि हकीमों की सहायता के बिना ही ईश्वर जो महावैद्य है मुझे स्वास्थ्य प्रदान करेगा।

गर्मी बढ जाने से आगरे की हवा मेरे अनुकूल नहीं थी। इससे सोमवार तारीख 13 इलालीमास को मेरे शासन के 16वें वर्ष में मैंने उत्तर के पर्वतीय देश की ओर प्रयाण किया जहा वायु सम शीतोष्ण है। मैं गंगा के तट पर कोई स्थान तलाश करके अपने लिए गरम ऋतु का निवास बनाना चाहता था या कश्मीर की ओर जाना चाहता था मैंने आगरे का प्रबन्ध मुजफ्फरखा के सुपुर्द किया। उसके भतीजे मीर मोहम्मद को नगर का फौजदार बनाया और उसका मनसब बढाया। बाकीरखां को अवध का सूबादार बना कर रवाना किया। इस मास की 26 तारीख को शाह परवेज ने मथुरा से अपनी जागीर पर बिहार जाने की इजाजत मांगी मैंने उसको भेंट देकर रवाना कर दिया। 7 तारीख को मैं दिल्ली में उतरा और सलीमगढ में 2 दिन ठहर कर मैंने शिकार किया। इस समय मुझे खबर मिली कि दक्खिन के एक अग्रणी सरदार जादूराय कायथ ने स्वाभिभक्ति करना पसन्द करके शाही सेवा शुरू कर दी है। मैंने नारायणदास राठौर के हाथ उसको खिलअत, जडाऊ खंजर ओर 1 फरमान भेजा।

इसी मास की 7 तारीख को हरद्वार में गंगा के तट पर डेरा लगाया गया। यह हिन्दुओं का एक परम प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। बहुत से ब्राह्मण और सन्यासी सरार में विरक्त होकर अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की उपासना करते हैं। मैंने उन सबको आवश्यतानुसार नकद और सामान का दान किया मुझे यहां का जलवायु पसन्द नहीं आया। इसलिए मैंने जम्मू और कांगड़ा की ओर प्रयाण किया।

इस समय मुझे खबर मिली कि राजा भावसिंह का दक्खिन में देहान्त हो गया है। अत्यधिक मद्यपान से वह बहुत निर्बल हो गया था फिर अचानक हीं वह अचेत हो गया हकीमों ने औषधोपचार किया परन्तु उसको चेत नहीं आया। एक दिन और एक रात इस दशा में रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी दो रानियां और 8 खवासें उस पर सती हो गईं। उसके बड़े भाई जगतसिंह और उसके भतीजे महासिंह की मृत्यु भी मद्यपान से ही हुई थी। उसने उनकी मृत्यु से कुछ नहीं सीखा और अपना मधुर जीवन मद्य के अर्पण कर दिया। उसका

स्वभाव बहुत अच्छा था और वह गम्भीर प्रकृति वाला पुरुष था। मैं शाहजादा था तबसे वह मेरे साथ रहता था और 5000 मनसबदार बन गया था। उसके कोई पुत्र नहीं था। और उसके बड़े भाई का पोता कम उम्र का था। तथापि मैंने उसको 2000 जात और 1000 सवारों का मनसब दिया और उसका वतन परगना आमेर जागीर में दिया। इसी मास की 20 तारीख मैं अल्बातू की सराय में ठहरा। मुझे अपने हाथ से मारे हुए जानवरों का मांस पसन्द है। इसलिए मैं उनके पेट को देखता हूं कि उन्होंने क्या खाया था। पहले मैं सोना पक्षी के सिवाया किसी जल पक्षी को नहीं खाता था। अजमेर में मैंने इस पक्षी के पेट मे भयंकर कीड़े देखे तो मैंने यह पक्षी खाना छोड दिया। 1 दिन मैंने सोना बतख का पेट साफ करवाया तो एक मछली निकली फिर एक कीड़ा निकला तब इसको भी खाना छोड दिया। इसी प्रकार 1 बगुले को साफ करवाया तो उसमें भी 10 कीड़े निकले। 21 तारीख को मैं सरहिन्द ठहरा और वहां बाग देखा। इस समय ख्वाजा अबुल हसन दक्खिन से आया। तारीख 1 इलाहीमास बहमन को मैं नूर सराय में ठहरा। खान आलम को इलाहाबाद का सूबेदार बनाया। मुकर्रमखां को 5000 का मनसब दिया। बृहस्पतिवार को जब मैं व्यास नदी के तट पर ठहरा हुआ था तो कासिम खां लाहौर से आया। हाशिम खां उसका भाई और पहाड़ियों के नीचे के इलाके के जमींदार भी आये। तलवारा का जमींदार एक चिड़िया लाया जिसको जान बहन कहा जाता है। जिसका मांस बडा मुलायम होता है। यहां मैंने एक पक्षी देखा जिसका तोल 152 तोला था। साफ करने पर यह 139 तोला रहा।

मेरे भाई शाह अब्बास ने सुनहरी पक्षी मंगवाये थे जो मैंने उसके राजदूत के हाथ भेज दिये। मेरी चान्द्र तुला हुई। इस उत्सव के दिन नूरजहां बेगम ने 45 अमीरों और निजी सेवकों को खिलअतें दीं। इसी मास की 14 तारीख को मैंने बहलवन गांव में मुकाम किया। यह सीबा जिले में है। मैं कांगडा की हवा के लिए बड़ा उत्सुक था इसलिए लश्कर को वहां छोडकर विशिष्ट सेवकों और अनुचरों के साथ में इस'दुर्ग को देखने गया। इतिमादुद्दौला बीमार था इसलिये उसको लश्कर में ही छोड़ा। दूसरे दिन खबर मिली कि उसकी दशा बिगड़ गई और अब स्थिति काबू में नहीं है। नूरजहां बेगम इस क्षोभ को सहन नहीं कर सकी। मैं भी लश्कर छोड़कर वापस आ गया और सायंकाल उससे मिलने गया। उस समय उसको मृत्यु कष्ट हो रहा था। वह कभी सचेत होता था और कभी अचेत। मैं 2 धंटे तक उसके सिरहाने बैठा रहा। जब वह सचेत होता था तो समझ की बात करता था। अन्त में इसी मास की 17 तारीख (जनवरी 22) को 3 घड़ी व्यतीत होने पर उसकी मृत्यु हो गई। वह बुद्धिमान वजीर था और

बड़ा विद्वान तथा स्नेही प्रकृति का था। यद्यपि उस पर इतने बडे राज्य का भार था और यह सम्भव नहीं था कि वह प्रत्येक व्यक्ति को सन्तुष्ट कर सकता, तो भी जो भी व्यक्ति उसके पास गया वह दु:खी होकर वापिस नहीं आया। वह स्वामिभक्त था उसकी पत्नी की मृत्यु हुई तब से वह दिन दिन घुलता जाता था। प्रत्यक्ष में वह साम्राज्य का काम करता था और उसने काम से कभी हाथ नहीं हटाया था परन्तु ह्रदय वियोग से पीडित था। अतः 3 मास और 20 दिन बाद जीवन समाप्त हो गया। मैं उसके पुत्रो और दामादों के पास सहानुभूति प्रकट करने गया। उसके 41 बच्चों और 12 आश्रितों को सम्मानसूचक पोशाकें दी और उनका शोक निवारण किया। अगले दिन मैं कांगडा दुर्ग देखने गया। चार मजिल पार करके लश्कर का मुकाम बाग गगा पर हुआ। अली खा ओर शेख फजुल्ला जो दुर्ग रक्षक थे तसलीम करने आये। इस मजिल पर चम्बा के राजा की भेंटें मेरे सामने रखी गई। उसका देश कागडा से 25 कोस परे है। इस पहाडियों में उससे बडा कोई राजा नहीं है। यहां दुर्गम घाटियां है। अब तक इस राजा ने न किसी की आज्ञा मानी थी और न किसी को भेंटें भेजी थी। उसका भाई भी दरबार मे आया था। यह राजा मुझे बुद्धिमान और शिष्ट प्रतीत हुआ। मैंने उस पर सब प्रकार की कृपा की।

इसी मास की 24 तारीख को मैं कांगडा दुर्ग देखने गया और काजी मीर अदल और इस्लाम के अन्य विद्वानो को अपने साथ ले गया कि मुहम्मद के धर्म के अनुसार वहा कृत्य किया जाए। मै 1 कोस तक चला। दुर्ग के शिखर पर पहुचा वहां अजान दी गई। खुतबा पढा गया और एक बैल मारा गया। इस दुर्ग के निर्माण से अब तक यह नही किया गया था। अब मेरी विद्यमानता मे किया गया। मैंने वहा एक मस्जिद के निर्माण का आदेश दिया। कागडा दुर्ग एक ऊँची पहाडी पर स्थित और इतना दृढ है कि यदि इसमे खाद्य सामग्री और दूसरी आवश्यताये भरपूर हो तो इस तक सेनाये नही पहुच सकतीं। यहां और दूसरे स्थान भी हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान में जाया जा सकता है। इस दुर्ग में 23 बुर्ज हैं, 7 द्वार हैं। इसकी लम्बाई चौथाई कोस से कुछ अधिक और चौड़ाई 22 रस्से है। इसका वृत्त 1 कोस और 15 रस्से लम्बा है। इसकी ऊँचाई 144 हाथ है। इसके अन्दर 2 हौज बनाये हुए है। दोनों 2 रस्से लम्बे और डेढ रस्से चौडे हैं। दुर्ग देखने के बाद मै दुर्गा का मंदिर देखने गया। काफिर लोग तो मूर्तिपूजक है ही लेकिन मुसलमानों के झुंड भी दूर दूर से भेंटे लाते हैं। और काले पत्थर को पूजते हैं। मंदिर के पास एक गन्धक की खान है जिसकी गर्मी से ज्वालायें निरन्तर निकला करती है। इसको ज्वालामुखी कहते हैं और मूर्ति का चमत्कार मानते हैं। वास्तव में हिन्दू लोगों को सत्य का ज्ञान है। तथापि

लोगो को धोखा देते हैं। हिन्दू लोग कहते हैं कि जब महादेव की पत्नी की मृत्यु हो गई तो वह स्नेहवश उसके शव को अपनी पीठ पर लादकर ससार मे इधर उधर घूमता फिरा। कुछ वर्ष बाद उसका शरीर टूट–टूटकर गिर गया। यहां भी उसके स्तन टूट कर गिर गये। इसलिए इस स्थान को और स्थानों से अधिक महत्व का माना जाता है। कुछ लोग कहते है कि यह पत्थर वह नहीं है जो शुरू मे यहा था। मुसलमान आकर असली पत्थर को ले गये और एक नदी मे फेक दिया। तब बडा शोर मचा। फिर एक झूंठा ब्राह्मण अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए एक पत्थर लाया और उसने राजा से कहा कि "दुर्गा ने मुझे स्वप्न में दर्शन दिये हैं और कहा है।" राजा का हृदय सरल था परन्तु उसको यह भी लोभ था कि भेट का सोना उसको मिलेगा। अत. उसने ब्राह्मण की बात मान ली और उसके साथ कई आदमी भेजे जो आदरपूर्वक उस पत्थर को ले आये और फिर उन्होने अपनी दुकान शुरू कर दी। परन्तु असली बात तो ईश्वर ही जाने। मदिर से मैं कोहे मदार नामक घाटी देखने गया। यह सुखद स्थान है और जलवायु और हरियाली की दृष्टि से देखने योग्य है यहा एक जल प्रपात है। मैने आदेश दिया कि यहां एक इमारत बनाई जावे। 25 तारीख को लश्कर की वापिसी के लिए आदेश हुआ। अल्ला खा और शेख और फेजुल्ला को दुर्ग रक्षा के लिए वहीं छोडा गया। अगले दिन नूरपुर के दुर्ग पर मुकाम हुआ। राजा बासू ने यह दुर्ग, मकान और बाग बनवाये थे और मेरे नाम पर इसका नाम नूरपुर रखा था। इमारते बनाने मे 30 हजार रुपये खर्च हुए थे। अब मैने यहा इमारते बनाने के लिए 1 लाख रुपये मजूर किये।

यहां मुझे खबर मिली कि पास ही एक सन्यासी मोती रहता है। मैंने आदेश दिया कि उसकी मेरे पास लाया जावे। सन्यासियो के कई भेद हैं। इनमे से एक मौन रखते हैं। 10 दिन तक तो वह एक ही स्थान पर खडे रहते है और इधर उधर नही हिलते है। जब वह मेरे पास आया तो मैंने देखा आश्चर्यजनक धैर्य है। मैंने उसको बडा तेज शराब पिलाया। परन्तु उसकी स्थिति मे कुछ भी अन्तर नहीं आया फिर वह अचेत हो गया और लोग उसे मुर्दे की भाति उठाकर ले गये परन्तु सर्व शक्तिमान ईश्वर ने उसके प्राणो की रक्षा की वास्तब मे उसमें बडा धैर्य था।

बी–बदल खां ने कांगडा विजय और मस्जिद निर्माण की तारीख लिखी। जिससे विजय का सम्वत् 1029 और मस्जिद के निर्माण का वर्ष 1031 निकलता है।

तारीख 1 इसफन्दारमुज को मैंने इतिमादुद्दौला की सारी सम्पत्ति नूरजहां बेगम को दे दी और आदेश दिया कि बादशाह के नक्कारो और वाद्य सगम के

बाद उसके नक्कारे बजाये जाये। इसी मास की 1 तारीख को मैंने कशौना परगना के पास डेरे लगवाये ओर ख्वाजा अबुल हसनको दीवान नियुक्त किया। इतिमादुद्दौला के पोते को एक हजार जात और 500 का मसब दिया। इसी समय खुर्रम का पत्र मिला कि इसी मास की 8 तारीख को खुसरो की पेट के दर्द से मृत्यु हो गई।

इसी मास की 19 तारीख को झेलम नदी के तट पर मुकाम हुआ। कासिम खां का मनसब 3 हजार जात और 2000 सवार किया गया। राजा किशनदास को दिल्ली का फौजदार बनाकर उसका मनसब 2 हजार जात और 500 सवार किया गया। इसी मास की 24 तारीख को मैंने 124 हिरण और जगली मेढे मारे।

राज्यारोहण के बाद सत्रहवें नये वर्ष का उत्सव

मगलवार की सायकाल जुमादल अव्वल 1030 हिजरी (मार्च 10 ई 1622) को एक पहर और पाच घडी व्यतीत होने पर सूर्य ने मीन राशि मे प्रवेश किया और मेरे शासन का सत्रहवा वर्ष सुखपूर्वक शुरू हुआ। इस हर्ष दिवस पर आसफ खा को 6 हजार का मनसबदार बनाया गया। कासिम खा को पजाब की सूबेदारी पर बख्शीशे देकर रवाना किया। ईरान के राजदूत जमील बेग को 80 हजार दरब खर्च के लिए दिए गए। इसी मास (फरवरदीन) की 7 तारीख को शाही लश्कर रावलपिडी मे था। फाजिल खा को बख्शी बनाया गया। जम्बील बेग को लाहौर ही ठहरने के लिए कहा अकबर कुली गक्खर को एक हाथी दिया गया।

शाह ईरान का कन्धार पर आक्रमण

इस समय मैने बार–बार सुना कि शाह ईरान खुरासान से कन्धार की विजय के लिए रवाना हो चुका है। हमारे पिछले और वर्तमान सम्बन्धो के कारण यह बात सम्भव नही जान पकडती थी कि ऐसा बडा बादशाह ऐसी बात सोचेगा और मेरे एक ऐसे सेवक पर जो कन्धार मे है और जिसके पास केवल तीन सौ चार सौ आदमी है आक्रमण करेगा फिर भी शासक का कर्त्तव्य है कि सावधान रहे। इसलिए मैने अहदियो के बख्शी जेतुल आबिदीन के हाथ खुर्रम को फरमान भेजा कि वह विजयी सेना के साथ और हाथी और तोपखाना लेकर शीघ्रतिशीघ्र मेरी सेवा मे आवे। यदि जो सुना है वह सत्य है तो उसको असख्य सेना और अगणित कोष देकर भेजा जावे जिससे शाह ईरान को पता लग जाए कि वचन भग करने का और गलत कार्य करने का क्या परिणाम होता है।

तारीख 8 को मैं हसन अब्दाल के फव्वारे पर ठहरा। फिदाई खां का मनसब वढाकर 2000 जात और 1000 सवार कर दिया। बादी उज्जमा को अहदियो को बख्शी नियुक्त किया। शुक्रवार तारीख 12 को महावत खा ने काबुल से आकर 1000 मोहरे मेरी नजर की और 10,000 रुपये पुण्य करने के लिये दिय। ख्वाजा अबुल हसन ने अपने 2500 बहुत अच्छे घुडसवार मेरे सामने होकर निकाले जिनमें 400 बन्दूकची थे। इस मजिल पर एक कमारगाह की

व्यवस्था की गई ओर मैंने 33 पहाडी भेडों आदि का शिकार किया। इस समय राज्य स्तम्भ महावत खां की सिफारिश पर हकीम मूमीना मेरी सेवा में आया। उसने साहस के साथ मेरी चिकित्सा शुरू की। महावत खां के पुत्र अमानुल्ला का मनसब 2000 जात और 1800 सवार कर दिया गया। वह वृद्ध सेवक था और बहुत निर्बल हो गया था इसलिए उसको सूबा आगरा का सूबादार बनाकर दुर्ग और कोष की रक्षा उसको सौपी गई और 1 हाथी घोडा और खिलत देकर उसको विदा किया गया। कुंवर मस्त की घाटी पर इरादत खां कश्मीर से आया। तारीख 2 इलाही मास उर्दी बिहिश्त को मैने मनोहर कश्मीर देश में प्रवेश किया। मीर मीरान का मनसब बढाकर 2500 जात और 1400 सवार कर दिया गया। सैनिको और प्रजा की दशा सुधारने के लिए मैंने फौजदारी कर बन्द कर दिया और आदेश दिया कि मेरे साम्राज्य मे यह कर कहीं नहीं लगाया जावे। मरी तुज्जुक जबरदस्त खा को मनसब बढाकर 2000 जात और 700 सवार कर दिया। तारीख 13 को हकीमो की और विशेष कर हकीम मूमीना की सलाह से मेरी बायी टांग से रक्त निकाल कर मुझको हल्का किया गया। हकीम मूमीना को 1000 दरब दिये गये। खुर्रम की प्रार्थना पर अब्दुल्ला खां का मनसब 6000 निश्चित किया गया। बहादुर खां उजबेग कन्धार से आया उसने 100 मोहरें नजर की और 4000 रुपये पुण्य करने के लिये दिये। ठट्टा के सूबादार मुस्तफा खां ने बडे उस्तादो द्वारा चित्रित किया हुआ शाहनामा और शेख निजामी का खंसा अन्य भेटों के साथ भेजा। तारीख 1 खुर्दाद मास को लश्कर खां का मनसब 4000 जात और 3000 सवार तथा मीर जुमला का मनसब 2500 जात और 1000 सवार किया गया। निम्नलिखत पदोन्नतियों की गई। सरदार खां को 3000 जात 2500 सवार का मनसब सर बुलन्द खां को 2500 जात 2200 सवार का मनसब, बाकि खां को 2500 जात और 2000 सवार का मनसब. शरजाखां को 2500 जात और 1200 सवार का मनसब जानसिपार खां को 2000 जात और 2000 सवार का मनसब, मिर्जावली को 2500 जात और 1000 सवार, मिर्जा शहरुख के पुत्र बदी उज्जमा को 1500 जात और 1500 सवार, जाहिदखां को 1500 जात 700 सवार, अकीदतखां को 1200 जात, 300 सवार इब्राहीम काश्गरी को 1200 जात 600 सवार और जुल्फीकार खां को 1000 जात और 500 का मनसब दिया गया। राजा गजसिंह और हिम्मत खां को नक्कारे का सम्मान दिया। इस समय 1 निजी सेवक तहब्बुराखां को मेरे पुत्र शाहनवाज को बुलाने के लिये भेजा।

कुछ दिन पहले कन्धार के अधिकारियों ने सूचना दी थी कि शाह ईरान का इरादा कन्धार जीत लेने का है। परन्तु हमारे परस्पर सम्बन्ध के कारण मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। परन्तु फिर मेरे पुत्र (फरजंद) खानजहां ने सूचना

भेजी कि शाह अब्बास ने ईराक और खुरासान की सेनाओ द्वारा कन्धार को घेर लिया है। मैंने आदेश दिया कि कश्मीर से प्रस्थान करने का समय निश्चित किया जावे। दीवान ख्वाजा अबुल हसन और बख्शी सादिक खा शीघ्रता से सेना के आगे लाहौर गये और उन्होने दक्खिन गुजरात बगाल और बिहार से शाहजादो को बुलाया और दूसरे जिलो से भी सेना बुलाई यह आदेश दिया कि सब मेरे (फरजन्द) खानजहा के पास मुल्तान मे एकत्र हो जाये। साथ ही तोपखाना और लडाकू हाथी और शस्त्र तथा कोष तैयार करके रवाना किये जावे मुल्तान और कन्धार के बीच मे बहुत कम खेती होती थी। इसलिए खाद्य सामग्री के बिना बडी सेना का प्रस्थान नही हो सकता था। इसलिए बन्जारो को उत्साह दिलाया गया और उन्हे रुपये दिए गए कि वे सेना के साथ–साथ चले जिससे अन्न की कमी न आये। बन्जारे एक जाति है। उनमे से किसी के पास 1000 तक बैल होते है। ये लोग इलाको से अन्न लाकर शहरो मे बेचते हैं। यह लोग सेना के साथ प्रयाण करते है तब इनके पास 1 लाख या इससे भी अधिक बैल होते हैं। ये आशा की जाती है कि यह सेना शीघ्र ही शाह की राजधानी इस्फाहान पहुच जायेगी। खा जहा के पास फरमान भेजा गया कि मुल्तान से वह शाही सेना के आगमन से पहले कन्धार की ओर रवाना न हो। बहादुर खा उजबेग को सहायक सैनिक अफसर बनाकर कन्धार की सेना के साथ भेजा गया। फाजिल खा को 2000 जात तथा 750 सवार का मनसब दिया गया।

कश्मीर के गरीब लोग शीतकाल मे बडा दुख पाते है इसलिए 4000 रुपये वार्षिक की आय का एक गाब मुल्ला तालिब इस्फाहानी के सुपुर्द किया गया कि वह इस राशि को गरीबो के लिए कपडो पर और गरम पानी पर खर्च करे।

यह खबर आई कि किश्तवारो के जमींदारो ने फिर विद्रोह कर दिया है। तब इरादत खा को आदेश दिया गया कि वह शीघ्र ही जाकर उन्हे भारी दण्ड दे और उनके राजद्रोह को समाप्त कर दे। इस दिन जैनूल आबीदीन मेरी सेवा मे आया। उसे खुर्रम को बुलाने के लिए भेजा गया था। खुर्रम ने निवेदन करवाया कि वर्षा ऋतु माडू मे व्यतीत करके वह दरबार मे आवेगा। खुर्रम का पत्र पढा गया तो मुझे उसकी शैली और प्रार्थना पसन्द नहीं आई। उसमे राजद्रोह के चिन्ह थे। परन्तु कोई चारा न देखकर मैने आदेश दिया कि यह स्वय वर्ष के बाद आ जावे परन्तु उसके साथ काम करने वाले बडे–बडे अमीरों और दरबार के सेवको विशेषकर बारह और बुखारा के सैयदो शेख, जादो अफगानों और राजपूतों को पहले भेज दे। मिर्जा रुस्तम और इतिकाद खा को आगे लाहौर भेजा गया कि वे कन्धार की सेना की सहायता करे इन लोगो को 1 लाख रुपया अग्रिम वेतन के रूप मे दिया गया। इनायत खा, इतिमाद खा और इरादत खा को किश्तवार के विद्रोहियो के दमन के लिए भेजा गया था। इन्होने उनमे

से बहुत सो को मार डाला और शेष का दमन कर दिया और वापिस आ गए। एक विचित्र बात यह हुई कि 14–15000 का एक मोती हरमखाने मे खो गया। ज्योतिषी ज्योतिकराय ने कहा कि यह 2–3 दिन मे मिल जायेगा। सादकि खा ररमाल ने निवेदन किया कि यह किसी पवित्र स्थान से मिलेगा। एक स्त्री ने भी कहा कि एक गोरी स्त्री इसको लाकर बादशाह को सौंपेगी, तीसरे दिन एक तुर्की लडकी हसती हुई इसको ले आई। तीनो की बात सच निकली इसलिए मैंने इसका उल्लेख किया है।

इस समय मैंने कोकब और खिदमतगारखा को तथा अन्य 10–12 सेवको को सजाबुल बनाकर दक्खिन मे भेजा कि वे वहा के अमीरो को यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र दरबार मे भेजे ताकि उनको शाही सेना के साथ कन्धार की ओर रवाना किया जावे।

खुर्रम का विद्रोह

इस समय बारबार सूचना आयी कि खुर्रम ने नूरजहा और शहरयार की जागी की कुछ जायदादो पर कब्जा कर लिया है। और वहा अपने एक सेवक दरियाखा अफगान को कुछ आदमियो के साथ भेज दिया है। दरियाखा ने शहरयार के एक सेवक शरीफुल मुल्क से जो वहा का फौजदार था लडाई लडी जिसमे दोनो और के बहुत से लोग मारे गये। खुर्रम माण्डू दुर्ग मे ठहर गया था और उसने अनुचित प्रार्थना की थी। अब तो स्पष्ट हो गया कि मैने उस पर जो कृपाये की उनके याग्य वह नही था और उसके दिमाग मे फितूर आ गया था। अत मैंने अपने विश्वस्त सेवक राजा रूजअफजू को उसके पास भेजकर उसके दुस्साहस का कारण पूछा नम्रता और शिष्टता के मार्ग का उल्लघन न करे। जो जागीर उसको मिली है उसी पर सतोष करे। वह मेरे पास आने का विचार न करे परन्तु साम्राज्य के जिन सेवको को कन्धार की गडबड के कारण बुलाया गया है उन्हे दरबार मे भेज दे। यदि इसके विरूद्ध कार्य किया जायेगा तो उसको पश्चाताप करना पडेगा।

इसी समय ईरान के प्रसिद्ध शाह नियातउल्ला के पुत्र पीर मिरान का पोता मीर जहीरुद्दीन मेरी सेवा मे आया तो मैने उसको एक खिलअत ओर 8 हजार दरब दिए। उजाला दक्खिनी ने राजा वीरसिह देव के पास जाने की इजाजत ली वह एक फरमान भी ले गया। सजाउल के रूप मे उसने लोगो को सग्रह करने का काम अपने हाथ मे लिया। मै खुर्रम और उसके पुत्रो से बडा स्नेह करता था। जब उसका पुत्र शुजा बहुत बीमार हुआ तो मैने प्रण किया था कि यदि सर्व शक्तिमान ईश्वर उसको जीवन दान देगा तो मै बन्दूक से अब

शिकार नहीं करूंगा और अपने हाथ से किसी प्राणी को नहीं सताऊंगा। मुझे शिकार का बडा शौक था। तो भी मैंने पाच वर्ष तक शिकार नहीं किया। अब मुझे उस (खुर्रम) के व्यवहार से बडा दुख हुआ। इसलिए मैं पुन. बन्दूक से शिकार करने लग गया और मैंने आदेश दिया कि महल मे रहने वाले सब बन्दूक रखें। थोडे दिन मे अधिकांश सेवक बन्दूक से शिकार करने लगे और तीरन्दाज घुडसवार बन गए।

इस मास की 25 तारीख को तदनुसार 7 शब्वाल को निश्चित किए हुए समय पर मैं कश्मीर से लाहौर की ओर चला। मैंने बिहारीदास ब्राह्मण को एक फरमान के साथ राणा करण के पास भेजा कि वह अपने पुत्र और सैनिको को लेकर मेरे पास आवे। मीर जहीरुद्दीन का मनसब बढाकर 1 हजार जात और 400 सवार कर दिया। उसने कहा कि वह बडा कर्जदार है। इसलिए मैंने उसको 10 हजार रुपए दिए। तारीख 1 शहरीवर को मैने अचबल मे मुकाम किया और बृहस्पतिवार को फवारे के पास मद्य गोष्ठी की। इस दिन मेरे पुत्र शहरयार को कन्धार पर चढाई करने वाली सेना का नेतृत्व देकर उसको 12 हजार जात और 8 हजार सवार का मनसबदार बनाया गया। उसको एक खासा खिलअत और मोतियों के बजट बाली नादिरी दी गई। इस समय टर्की से एक सौदागर दो बडे बडे मोती लाया। एक तो तोल सवा तमिसकाल और दूसरे का तोल 1 चरम् कम था। दोनों मोतियो को नूरजहां बेगम ने 60 हजार रुपए मे खरीदकर उसी दिन मेरे भेंट कर दिया। शुक्रवार तारीख 10 को हकीम मुमीना की सलाह से मेरी बाह्य टाग मे से रक्त निकाला गया। मुकर्रबखा इस काम मे बडा चतुर था और मेरा खून निकाला करता था। आज वह दो बार असफल हुआ फिर उसके भतीजे कासिम ने खून निकाला तो मैने उसको 2 हजार रुपए नकद और एक खिलअत दी, और एक हजार रुपए हकीम मूमीना को दिए। खानजहा की प्रार्थना पर मीरखा का मनसब 15 सौ जात और 900 सवार कर दिया।

इस मास की 21 तारीख को मेरी सौर तुला हुई और मेरी आयु का 54 वा वर्ष आनन्दपूर्वक शुरू हुआ। मुझे आशा है कि मेरा जीवन ईश्वर की इच्छा पूर्ण करने मे व्यतीत होगा। 28 तारीख को मैं असहर का जल प्रपात देखने गया यह अपनी मधुरता और अच्छी सुगन्ध के लिए प्रसिद्ध है मैंने इसके गंगा के और लारघाटी के पानी की तुलना करवाई। असहर का पानी गगा जल से 3 मासा अधिक भारी और गगा का पानी लार घाटी के पानी से आधा मासा कम भारी निकला। तारीख 30 को हीरापुर में मुकाम किया गया। ईरादतखां ने किश्तवार में अपने कर्तव्य का पालन किया था परन्तु कश्मीर के निवासी उसके व्यवहार की शिकायतें करते थे इसलिए मैंने इतिकाद खा को कश्मीर का सूबादार

नियुक्त किया । इरादतखां को कन्धार की सेना में भेज दिया। किश्तवार का राजा कंवरसिंह ग्वालियर के दुर्ग में कैद था। मैंने किश्तवार का उसको प्रधान किया और एक घोड़ा और एक खिलअत तथा राजा की उपाधि दी। मैने हैदर मलिक को कश्मीर इसलिए भेजा कि वह लार की घाटी से नूरहफजा बाग तक एक नहर बनावे इसके लिए उसको 30 हजार रुपए दिए। इस मास की 12 तारीख को मैं जम्मू के पर्वतीय देश से नीचे उतरा और भीमसर में मैंने मुकाम किया। अगले दिन कमुरघा द्वारा शिकार किया। खुसरों के पुत्र दावर बख्श को 5 हजार जात और 2 हजार सवार का मनसब दिया। 24 तारीख को मैंने चिनाव को पार किया। मिर्जा रुस्तम लाहौर से आया उसने विद्रोह कार्यो पर क्षमा का पर्दा डाला था और इसको इसलिए भेजा था कि चाटुता और मधुरता के द्वारा में शाहजादे के अनुचित कार्यों को उचित मानूं। मैंने कोई ध्यान नहीं दिया और अफजलखां की बात नहीं सुनी। दीवान ख्वाजा अब्दुल हसन और सादिकखां बख्शी कन्धार की सेना के लिए सामान तैयार करने हुतु आए हुए थे, वे मेरी सेवा में आए। आबान मास की 1 तारीख को महावतखां के पुत्र अमान उल्ला को 3 हजार जात और 17 सवारों का मनसबदार बनाया। महावतखां को बुलाने के लिए एक कृपा पूर्ण फरमान भेजा गया। अब्दुल्लाखां जिसको कंधार में सेवा के लिए बुलाया गया था अपनी जागीर से आया। इसी मास की 4 तारीख को मैंने लाहौर नगर में प्रवेश किया। इसी दिन मैंने दीवान लोगों को आदेश दिया कि जिन लोगों को कंधार में सेवा करने का आदेश दिया गया है उनका वेतन सरकार हिसार में स्थित खुर्रम की जागीरों से तथा दोआब की जागीरों से दिया जावे। इनके बजाय यह सूबा मालवा और दक्षिण, गुजरात या खानदेश जहां चाहे वहां के इलाकों पर कब्जा करले। मैंने अफजलखां को खिलअत देकर रुख्स्त कर दिया। उसको आदेश दिया गया कि गुजरात मालवा और खानदेश के सूबे खुर्रम के सुपुर्द कर दिए जावे और वह जहां चाहे वहां अपना स्थाई निवास बनाकर इन सूबों के प्रशासन में लग जाए। कंधार गडबड़ के कारण साम्राज्य के जिन सेवकों को सजा उतावलों द्वारा बुलाया गया है उनको वापिस भेज दे और फिर वह अपने सूबों का काम देखे और आदेश का पालन करे, अन्यथा उसको पश्चाताप करना पड़ेगा। तारीख 26 को इरान के शाह के राजदूत हैदर बेग ओर बली बेग मेरी सेवा में आये और उन्होने शाह का एक पत्र प्रस्तुत किया। मेरा (फरजन्द) खानजहां मुल्तान से मेरी सेवा में आया और उसने 1 हजार मोहरें, 1 हजार रुपए और 18 घोड़े नजर किये। महावत खां का मनसब बढ़ाकर 6 हजार जात और 5 हजार सवार किया गया। राजा सांरगदेव को राजा वीरसिंह देव को यथासम्भव शीघ्र ही बुलाने के लिए भेजा गया। आजार मास की 7 तारीख को शाह अब्बास के राजदूतों को समय समय

पर आये थे खिलअते और खर्चा देकर विदा किया। शाह ने हैदर बेग के साथ पत्र भेजकर कंधार के विषय में कुछ बहाने बनाये थे। उस पत्र को और उसके उत्तर को यहां दिया जाता है।

ईरान के शाह का पत्र

आपको विदित होगा कि नवाब शाह जन्नत मकान (शाह तैमास्प की) मृत्यु के पश्चात ईरान पर बडी विपत्तियो आई। बहुत से प्रदेश जो हमारे परिवार के हाथ मे थे दूसरो के कब्जे में चले गए परन्तु जब मैं शाह बना तो ईश्वर और मित्रों की सहायता से मैंने शत्रुओं के कब्जे से अपने परम्परागत प्रदेश वापिस ले लिए। कधार आपके उच्चकुलं प्रतिनिधियों के हाथ मे था और मुझमे और आप मे कोई भेद नही था इसलिए मैंने इस पर कोई आपत्ति नहीं की। एकता और भातृत्व की भावना से मैंने सोचा कि आप अपने स्वर्गीय पूर्वजो की भाति स्वत ही इस विषय पर विचार करेगें। जब आपने इसकी उपेक्षा की जो मैने लिखित और मौखिक रूप से बार–बार इस प्रश्न के हल के लिए प्रार्थना की मेरा विचार था कि कधार जैसा तुच्छ प्रदेश आपके ध्यान के योग्य नही है। आपने अनेक बार कहा कि यह प्रदेश मेरे कुटुम्ब को लौटा दने से शत्रुओ और निन्दको के विचार समाप्त हो जाएगे। बकवास करने वाले द्वेष करने वो और दूषण देखने वाले चुप हो जाएगे एक वर्ग ने इस मामलें का निर्णय करने मे विलम्ब किया। मित्रो और शत्रुओ को इस विषय का सत्यता को ज्ञान और अपने स्पष्ट हा या ना का उत्तर नहीं दिया था, इसलिए मुझे यह विचार आया कि मे स्वय कधार को देखने और शिकार करने जाऊ और इस प्रकार मेरे प्रसिद्ध भाई के प्रतिनिधि हमारे पारस्परिक मैत्री सबध के अनुसार मेरा स्वागत करेगे और मेरी सेवा मे आवेगे। इस प्रकार मेल मिलाप का सम्बन्ध पुनर्जीवित हो जाएगा और ससार को भी इसका पता लग जायेगा और द्वेष्टा तथा निंदक लोगो की जबाने बन्द हो जाएगी। इस दृष्टि से मैने प्रस्थान किया और दुर्ग विजय के कोई साधन साथ नहीं लिए। फराह पहुंच कर मैंने कन्धार के दुर्गपति को लिखा कि मेरा विचार उस स्थान को देखने का और वहां शिकार करने का है। मैंने यह पत्र इसलिए लिखा था कि मुझको वह मेहमान समझेगा। मैंने आदरणीय ख्वाजा बाकी कुर्कराक को बुलाया और दुर्गपति तथा अन्य अधिकारियो से कहलाया कि आप मे और मुझे में कोई अन्तर नहीं है। हम एकं दूसरे के प्रदेशो से परिचित हैं और मैं उधर के इलाके को देखने के लिए आ रहा हूं। इसलिए यह ऐसा काम न करे जिससे किसी को परेशानी हो उन्होंने इस आदेश और संदेश का उचित रूप से स्वागत नहीं किया और दुराग्रह तथा विद्रोह की भावना प्रकट

की। जब मै दुर्ग पर पहुचा तो मैंने उक्त आदरणीय ख्वाजा बाकी को पुन बुलाया और उसको वह सन्देश देकर भेजा कि मैंने अपनी सेना को आदेश दिया कि 10 दिन तक दुर्ग को नही घेरा जावे। उन लोगो ने यह सच्ची सलाह नहीं मानी और विरोध पर उठे रहे। अब और कुछ करने को शेष नही था इसलिए ईरानी सेना दुर्ग को जीत लेने का विचार करने लगी यद्यपि उसके पास दुर्ग विजय के साधन नही थे तथा इसने दीवारे और बुर्ज गिराकर भूमि साफ कर दी। तब दुर्ग सेना की स्थिति कठिन हो गई और उसने प्राणो की भिक्षा मागी। हमने भी दोनो वशो की मित्रता बनाए रखी और आपमे और मुझमे जो भातृ प्रेम है। उसका ख्याल रखा और मैने कृपा करके उन लोगो की भूले और अपराध क्षमा कर दिए और उनको सुरक्षित मेरे कुटुम्ब के सच्चे सूफी हैदर बेग कूरबाजी के साथ आपके दरबार मे भेज दिया। वास्तव मे अपने परम्परागत और निजोपार्जित मेल और स्नेह की नीव हिली नहीं है। यह इतनी दृढ है कि भाग्यवश जो कुछ हो गया है उसके कारण इसमे कोई अन्तर नही आएगा। मुझे आशा है कि आपका स्नेह मुझ पर बना रहेगा और यदि मित्रता के विषय मे आपको कभी कोई सन्देह हो जाए तो आप अपनी स्वाभाविक सज्जनता के कारण हृदय से हटा देगे। ईश्वर करे कि इस एकता और हार्दिकता का पुष्प हमेशा खिला रहे। मेल का दृढ करने के लिए और एकता के स्रोतो को स्वच्छ रखने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। आप मेरे राज्य को अपना राज्य समझे और यह घोषणा कर दे कि कन्धार मुझको बिना आपत्ति के दिया गया है। यहा के अधिकारियो ने अपने कर्तव्य का और स्वामिभक्ति का पालन किया है परन्तु आप उन पर कृपा करेगे और उन्हे किसी प्रकार लज्जित नही करेगे। मै और क्या लिखू।

शाह अब्बास के पत्र का उत्तर

ईश्वर को हार्दिक धन्यवाद है कि वह बडे–बडे शासको की सधियो को बनाए रखता है। जिससे सृष्टि मे व्यवस्था बनी हुई है। इसका एक प्रमाण हम दोनो मे एकता है और हमारे कुलो मे एकता है इससे समसामयिक शाह लोग ईर्ष्या करते थे। कीर्तिमान शाह ने अकारण ही हमारे स्नेह और मित्रता के उद्यान मे गडबड कर दी है। बहुत लम्बे अर्से से कोई परेशानी का कारण ही नहीं था। नरेशो की एकता का साधन यही है कि वे एक दूसरे के प्रति मित्रता की शपथ ले और उनमे पूर्ण समझौता बना रहे। दोनो के परस्पर मिलने की आवश्यकता नहीं है और एक दूसरे के देश मे जाने की या सैर और शिकार करने की आवश्यकता नही है।

आपने अपने पत्र में कन्धार के इलाके में सैर और शिकार के लिए क्षमा चाही है। इस पत्र को लेकर आदरणीय हैदर बेग और अली बेग आये थे। मुझे आपके शारीरिक स्वास्थ्य की खबर मिली तो मुझे बडा आनन्द हुआ आप जैसे उच्च और समृद्ध भाई से यह छिपा हुआ नही है कि इस पत्र के और जम्बील बेग के आने से पहले आपने पत्र द्वारा कन्धार के विषय में कोई इच्छा प्रकट नहीं की थी। जब मै कश्मीर के सुखद प्रदेश में था तो दक्खिन के सरदारों ने अदूरदर्शिता से आज्ञापालन की सीमा का उल्लंघन करके विद्रोह कर दिया। उन्हें दण्ड देना आवश्यक समझकर मैंने अपने लश्कर की कूच लाहौर की और अपने योग्य पुत्र शाहजहा को आदेश दिया कि वे सेना सहित इन लोगो के विरुद्ध प्रयाण करे। मैं आगरा जा रहा था तो जमील बेग ने आकर आपका पत्र दिया इसको शुभ शकुन समझ कर मैं विद्रोहियों का दमन करने के लिये आगरा गया। आपके इस सुन्दर पत्र में कन्धार का कोई उल्लेख नहीं था। जमील बेग ने मौखिक रूप से इसका जिक्र किया था। मैने उत्तर दिया कि मेरे भाई की इच्छा में मैंने कोई बाधा नहीं की है। ईश्वर ने चाहा तो दक्खिन का मामला ठीक हो जाने पर मैं उसे (जम्बील बेग) को अपनी बादशाहत के अनुरूप विधि से वापिस भेज दूगा। मैने यह भी कहा कि उसने लम्बी मंजिले पार की है। इसलिये वे कुछ दिन लाहौर मे विश्राम करे। फिर मैं उसको बुला लूगा। आगरा पहुच कर मैंने उसको बुलाया और चले जाने की इजाजत दे दी। मुझ पर ईश्वर की कृपा हुई इसलिए मैंने विजय से हाथ हटाकर पंजाब की ओर प्रयाण किया मेरा विचार उसको वापिस भेज देने का था परन्तु कुछ आवश्यक कार्य करने के पश्चात् में गरम मौसम के कारण कश्मीर चला गया और वहां पहुच कर मैने जम्बील बेग को जाने की इजाजत दे दी। मै यह भी चाहता था कि उस सुखद पदेश को देखे। इसी बीच खबर आई कि आप कन्धार लेने के लिए आ गये हैं। यह विचार मेरे मन मे कभी नहीं आया था। इसलिए मैं अच्चभित हो गया। ऐसे तुच्छ गांव में क्या रखा है कि आप इसको लेने के लिए प्रयाण करते और बडी और भातृ भाव की और आंखें मूंद लेते। जब मुझे इस बात का निश्चय हो गया तो मैंने अब्दुल अजीज खां को आदेश दिया कि किसी भी भांति आप जैसे समृद्ध भाई की मर्जी पर अतिक्रमण नहीं किया जावे। अब तक तो भ्रातृ सम्बन्ध दृढ बना हुआ है। मै इसका तुलना में संसार का भी कोई मूल्य नहीं समझता परन्तु यह अधिक उचित और भाई जैसा व्यवहार होता कि आप राजदूत के आगमन की प्रतीक्षा करते। शायद वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाता जब आपने राजदूत के आने से पहले ही ऐसा कदम उठा लिया तो वायदों को निभाने और मनुष्यता और उदारता की रक्षा के लिए संसार किसका मुंह तकेगा। ईश्वर आपकी सदैव रक्षा करें।

राजदूतों को विदा कर देने के बाद मैंने अपनी सारी शक्ति कन्धार पर सेना भेजने में लगाई और मेरे (फरजन्द) खां जहां को 1 हाथी, घोडा, जड़ाऊ तलवार खंजर और खिलत दी। मैं उसको आगे भेजा और आदेश दिया कि शाही सेना के साथ शाहजादा शहरयार पहुंचे तब तक वह मुल्तान में ठहरे। मुल्तान के फौजदार बाकीर खां को दरबार में बुलाया और खानजहां की सहायतार्थ अली कुली बेग दरमन को 1500 का मंसब देकर नियुक्त किया। इसी प्रकार रुस्तम को 5000 को मंसब देकर खांजहां को कन्धार सेना में सहायता करने के लिए नियुक्त किया। लश्कर खां दक्खिन से आया तो उसको भी इसी सेना में लगा दिया। अल्लाहदाद खा अफगान आदि दक्खिन से आये हुए अमीरों को घोडे और खिलअतें देकर खानजहां के साथ भेज दिया। अमदेतुल सुल्ताना आसफ खां को आगरा भेजा और आदेश दिया कि मेरे पिता के समय से जो मोहरो और रुपयों का कोश आगरे में है उसे दरबार में ले आवे। खां जहां के पुत्र असालत खां को 2000 जात और 1000 सवारों का मनसब दिया गया। मुल्तान के बख्शी मोहम्मद सफिया को खान की उपाधि दी गई। शाह परवेज के वकील शरीफ को इसलिए रवाना किया कि वह बिहार की सेना के साथ परवेज को मेरे साथ लावे। मैंने इस शाहजादे को अपने हाथ से लिखा हुआ फरमान भेजा और लिखा कि वह तुरन्त आवे।

इस दिन अचानक ही शाह निमतुल्ला के पोते मीर मीरान की मृत्यु हो गई। मुझे आशा है कि ईश्वर उस पर दया करेगा।

2 वर्ष पूर्व मुझ में निर्बलता आ गई थी जो अभी चल रही है मेरे हृदय और मस्तिष्क में सहयोग नहीं है घटनाओं के नोट नही लिख सकता अब दक्खिन से मुतामिद खां आ गया है। वह मेरे स्वभाव को जानता है और मेरे शब्दों को समझता है। उसको पहले भी यह काम सौपा गया था मैंने आदेश दिया कि मैंने यहां तक लिखा है उससे आगे वह अपने हाथ से लिखकर मेरी तुज्जक में लगा दे। अब जो भी घटनाएं हों उनको रोज नामचे के रूप मे लिखकर मेरे सामने पेश और फिर पुस्तक मे उनकी नकल करे।

यहां से आगे मुतामिद खां के लिखे हुए नोट हैं

मेरा सारा ध्यान कन्धार की सेना की तैयारी मे लगा हुआ था। इसलिए जब मुझे खबर मिली कि खुर्रम के मन में परिवर्तन हो गया है और उसमें जब क्षमता नहीं है तो इससे मुझे बड़ी घृणा हुई मैंने अपने एक सेवक मूसमी खां को जो मेरा स्वभाव जानता है उस भाग्यहीन के पास भेजा कि वह उसके सामने धमकी का सन्देश रखे। मेरी इच्छाएं प्रकट करे और उसको लताड़े जिससे बुद्धि तेज हो

जाये तो सौभाग्य से वह अपने प्रमाद और अभिमान स्वप्न को छोड़े। फिर मुसावी उसके व्यर्थ विचारों और उद्देश्यों को जानकर मेरे पास आवें। इलाही मास बहमन की 1 तारीख को मेरी चान्द्र तुला हुई। इस दिन महावत खां काबुल से आया और उस पर कृपाएं की गई। मैंने याकूब खां बदख्शी को काबुल में नियुक्त कर दिया। इसी समय आगरे से इतिवार खां को रिपोर्ट आई कि खुर्रम सेना सहित मांडू से उस दिशा में चल दिया है। यह प्रत्यक्ष है कि उसको यह खबर मिल गई थी कि कोष मंगवाया गया है। इससे उसके दिमाग में गर्मी आ गई थी और आत्म संयम छोड़कर वह कोष को छीन लेने के विचार से चल दिया था। इसलिए मैंने दौरे पर जाना और सुल्तानपुर की नदी (व्यास) के तट पर शिकार करना सबसे अच्छा काम समझा। यदि वह (खुर्रम) भूलवश धृष्टता करे तो मैं आगे बढ़कर उसको दण्ड दूं। यदि कोई दूसरी सूरत हो तो उसके अनुसार काम करूं, इस उद्देश्य से इसी मास की 17 तारीख को शुभ घड़ी में मैंने प्रयाण किया। महावत खां को खिलअत दी। मिर्जा रुस्तम को 1 लाख और अब्दुल्ला खां को 2 लाख रुपये अग्रिम वेतन के रूप में दिये। मैंने जैन खां के पुत्र मिर्जा खान को फरमान के साथ मेरे पुत्र शाह परवेज के पास भेजा और उसके आने की आवश्यकता पर जोर दिया। राजा सांरग देव को राजा वीरसिंह देव को बुला लाने के लिए भेजा था तो सारंगदेव ने आकर खबर दी कि वीरसिंह समुचित और सुसज्जित सेना के साथ मुझ से थानेश्वर आकर मिलेगा। इस समय इतिवार खां और सल्तनत के अन्य सेवकों को आगरे से निरन्तर रिपोर्ट आ रही थी कि खुर्रम ने कर्तव्य मार्ग त्याग कर अज्ञान और भूल तथा विनाश का मार्ग ग्रहण कर लिया है इसलिए यह वांछनीय नहीं है कि (कोष दरबार में) ले जाया जावे। ये लोग दरवाजों और मीनारों को दृढ करने में और दुर्ग को रक्षार्थ तैयार करने में लग गये। इसी प्रकार आसफ खां ने लिखा कि खुर्रम ने आदर मार्ग को त्याग करके विनाश की ओर चलना शुरू कर दिया है। राजकोष लाना ठीक न समझ कर उसने ईश्वर के हवाले कर दिया है और वह मेरी सेवा में आ रहा है। अतः मैंने सुल्तानपुर की नदी को पार किया और कूच दर कूच खुर्रम को दण्ड देने के लिए मैं चला। मैंने यह भी आदेश दिया कि अब खुर्रम को भी दौलत कहा जावे। मैंने उस पर इतनी कृपायें की थीं कि अब तक किसी बादशाह ने अपने पुत्र पर नहीं की होगी। मैंने उसके सेवकों को उपाधियाँ निशान और नक्कारे दिये। पाठक देखेंगें कि मैं उससे कितना स्नेह करता हूं। मेरे कष्टों के विषय में मैं क्या कहूं इस गर्मी में जो मेरे स्वास्थ्य के लिये प्रतिकूल है। मुझे सवार होकर चलना पड़ता है। और ऐस कर्तव्य विमुख पुत्र के विरुद्ध प्रयाण करना पड़ता है। जिन सेवकों को ईरानियों और उजबेगों के दमन में लगाना चाहिए था उनको किसी दुष्टता के दमन में लगाना पड़ रहा है।

परन्तु ईश्वर ने मुझे इस भार को सहने की शक्ति दी है परन्तु मेरे हृदय पर सबसे बडा आघात इससे हुआ कि इस समय मेरे पुत्रों ओर सेवकों को कन्धार और खुरासान के विरूद्ध तल्लीन होकर काम करना चाहिये था परन्तु इस अशुभ व्यक्ति ने अपने राज्य के पैर कुल्हाड़ी मारी है। अब कन्धार के विषय को छोड देना चाहिये परन्तु मुझे भरोसा है कि सर्व शक्तिमान ईश्वर मेरे हृदय के इन दुखों को दूर करेगा।

इस समय मुझे खबर मिली कि मुहतरिम खां ख्वाजा सरा, खलील बेग, जुलकेदर और फिदाई खां बीदौलत से मिल गए और उसके साथ पत्र व्यवहार करने लग गए हैं अब नरमी का और मामलों की उपेक्षा करने का समय नहीं था इसलिए मैने तीनों को कैद में रख दिया और छान बीन करने पर कोई सन्देह नहीं रहा कि उन्होंने नमक हरामी बेईमानी और द्वेष किया है अतः इन लोगों को प्राण दण्ड देने के सिवाय कोई चारा नहीं रहा तो भी फिदाई खां को मैंने कारागार से मुक्त कर दिया। मैंने राजा रोज अफजू को डाक चौकी द्वारा मेरे पुत्र शाह परवेज के पास उसे शीघ्र मेरी सेवा में लिख लाने के लिए भेजा जिससें बी दौलत को अपने अनुचित व्यवहार का दण्ड दिया जा सके। जवाहर खां ख्वाजे सरे को इहतिमाम–ए–दरबार–रू–महम (जनाने का प्रबन्धक) नियुक्त किया गया।

तारीख 1 इसफन्दारमुज को शाही सेना नूरसराय पहुंची। इस दिन इतिवार खां की रिपोर्ट आई कि बी दौलत आगरे के पास आ पहुंचा है उसे यह आशा है कि दुर्ग के दृढ होने से पहले ही युद्ध का दरवाजा खुल जाएगा और उसका उद्देश्य पूरा हो जाएगा। जब वह फतेहपुर पहुंचा तो उसको दरवाजे बन्द मिले और उसे वहीं ठहराना पड़ा। खानखाना और उसका पुत्र बहुत से शाही अमीर जो दक्खिन और गुजरात मे थे, मुसाबी खां उनसे फतेहपुर मे मिला और यह निश्चय किया कि वह काजी अब्दुल अजीज को उसके साथ दरबार मे भेजा दे। बी दौलत ने अपने सेवक सुन्दर को आगरे के शाही सेवको को धन लूटने के लिए भेजा उसने और लोगों के साथ साथ लश्कर खां के घर को लूटा और 9 लाख रुपए छीन लिए। अब खानखाना जैसे 80 वर्ष के अमीर ही विद्रोह कर रहे थे तो औरो के लिए क्या कहा जावे। इसके पिता बैराम खां ने भी मेरे पूज्य पिता के विरूद्ध विद्रोह किया था।

उस दिन बी दौलत के राजदूत अब्दुल अजीज के साथ मुसाबी खां आया मैने उसकी बात नहीं सुनी और उसे महावत खां के सुपुर्द कर दिया। इस मास की पाच तारीख को मैंने सतलज नदी के तट पर मुकाम किया और खान आलम को सात हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया। बृहस्पतिवार तारीख 12 को थानेश्वर परगने में राजा वीरसिंह देव आया उसकी सेना

देखकर मै प्रसन्न हुआ। करनाल में आसफ खां आगरे से आया। नवालिश खां गुजरात से आया। बाकी खां जूनागढ़ से आया। जब मैं सरहिन्द से इधर की ओर पहुंचा तो सब ओर से अमीर लोग आ गए। देहली पहुंचने पर देखा सारा मैदान सैनिकों से भरा हुआ है।

यहां सुना कि बी दौलत फतेहपुर से दिल्ली की ओर कूच कर रहा है। मैंने सेना तैयार करवाई और सारा प्रबन्ध महावत खां के सुपुर्द किया। अग्रसेना का नेतृत्व अब्दुल्ला खां को दिया मुझे यह पता नहीं था कि वह बी दौलत से मिला हुआ है और मेरी सेना की खबर उसको दिया करता है। बल्कि वह मुझे सच्ची झूठी खबरे मेरी सेना के विषय में दिया करता था यदि मै इनको सच्ची मानता तो मैं अपने बहुत से सेवको को नष्ट कर डालता। परन्तु मैने भूल नहीं की बल्कि उस पर और कृपा की मैं चाहता था कि वह मेरे प्रति सच्चा व्यवहार करने लग जाए। जब मै दिल्ली के निकट पहुंचा तो सईद बुखारी, सदर खा, राजा किशनदास दिल्ली से, अबध का फौजदार बाकिर खां अबध से आया। राय साल दरबारी का पुत्र गिरधर दक्खिन से आया।

राज्यारोहण के बाद अठारहवें नए वर्ष का उत्सव

मंगलवार ता. 7 जुमादल अब्बल 1032 हिजरी (10 मार्च 1623) को सूर्य मीन राशि मे पहुंचा तो मेरे राज्य का अठारहवां वर्ष शुरू हुआ। इस दिन मैंने सुना कि बीदौलत मथुरा के पास पहुच गया है और शाहपुर के परगने मे उसने सेना के डेरे लगाए हैं और उसके साथ 27 हजार सवार है। राजा मानसिंह का पोता अपने देश से आया मैंने राजा वीरसिंहदेव को महाराजा की उपाधि दी ओर उसके पुत्र जोगराज को दो हजार जात ओर एक हजार सवार का मनसब दिया बीदौलत जमुना के किनारे–किनारे आ रहा था, इसलिए निश्चय किया गया कि शाही सेना भी उसी मार्ग से कूच करे। शाही सेना के तीन भाग किए गए अग्रभाग, दायां भाग और बांया भाग इसके बाद ही खबर आई कि बीदौलत खानखाना के साथ परगना को टीला की ओर कूच कर गया है जो बीस कोस बायी ओर है और उसके साथ ब्राह्मण सुन्दर है। इसके अतिरिक्त खानखाना का पुत्र और बहुत से अमीर भी उसके साथ हैं इनमें ऐसे मनसबदार थे जो दक्खिन, गुजरात और मालवा में नियुक्त किए गए थे। राणा का पुत्र राजा भीम भी उसके साथ था। इसकी सेना का नेतृत्व वास्तव में सुन्दर के हाथ मे था। इन्होने बलूचपुर मे अपने डेरे लगाए बाकिर खां सेना के पृष्ठ भाग मे था। विद्रोहियों ने उस पर आक्रमण किया परन्तु बाकिर ने उनको मार भगाया। बुधवार ता. 9 को मैने आसफ खा ने नेतृत्व में 25 हजार सवार विद्रोहियों पर आक्रमण करने के लिए भेजे। 8 हजार सवार आसफ खां की सेना की ओर इतने ही सवार अबुल हसन की सेना की सहायता करने के लिए दिए गए। अब्दुल्ला के साथ तीन बडे अमीर भेजे इस सेना में 10 हजार सवार थे। अब्दुल्ला खां का उत्साह बढ़ाने के लिए मैंने अपना तरकश उसके लिए भेजा। जब दोनों सेनाओ में मुठभेढ हुई तो अब्दुल्ला खा विद्रोहियों से जा मिला। खानदौरा का पुत्र अजीज खां भी उसके साथ हो लिया। नवालिश खां आदि ने पक्ष नहीं छोडा अब्दुल्ला खां ने 10 हजार सवार शत्रु की सहायतार्थ झोंक दिये परन्तु सुन्दर के गोली लगी जिससे विद्रोहियों का उत्साह हिल गया और शत्रु हार

गया। फिर आसफ खां और बाकिर खां ने पूर्ण विजय प्राप्त करली। इस लड़ाई में जबरदस्त खां आदि कई वीर शहीद हो गए। यदि अब्दुल्ला खां बेईमानी नहीं करता तो कितने ही विद्रोही नेता मारे जाते या पकड़ लिए जाते। अब मैं अब्दुल्ला खां को लान्तुल्ला कहने लगा। लानतुल्ला भाग कर 20 कोस दूर बीदौलत के पास चला गया।

जब मैंने इस विजय की खबर सुनी तो ईश्वर को धन्यवाद दिया। दूसरे दिन सुन्दर का सिर मेरे सामने लाया गया। इसके मारे जाने पर बीदौलत ने फिर अपनी कमर नहीं कसी जिन लोगों ने इस विद्रोह में अच्छी सेवा की थी उनको तरक्कियां दी गईं। ख्वाजा अबुल हसन को 5 हजार का, नवालिश खा को 4 हजार जात 3 हजार सवार का, बाकिर खां को 3 हजार जात और 500 सवार का और इसी प्रकार कई अमीरों के मनसब बढ़ाए गए। इसी मास की 12 तारीख को सरबुलन्द राय दक्खिन से आया। अब्दुल अजीज खां और अन्य लोग बी दौलत का साथ छोडकर मेरे पास आ गए। ये लोग बीदौलत से दो हजार मोहरें ले चुके थे परन्तु मैंने कोई जांच नहीं की।

19 तारीख को सूर्य उच्चतम आरोहण कर चुका था। इस दिन बहुत से शाही सेवकों का मनसब बढाया गया।

राजा जयसिंह का मनसब 3 हजार जात और 1400 सवार कर दिया गया। महावतखां के पुत्र अमानुल्ला को 4 हजार का मनसब दिया गया।

ता. 1 इलाहीमास उर्दीबहिश्त को मैंने फतेहपुर की झील पर मुकाम किया इतिवार खा, मुज्जफर खां और मुकर्रम खां आगरे से आया। इतिवार खा को 6 हजार जात और 5 हजार सवार का मनसब दिया गया क्योंकि इसने आगरे का अच्छा प्रबन्ध किया था। ता. 4 को मंसूर खां फिरंगी अपने भाई नौबत खां दक्खिनी के साथ बीदौलत को छोडकर मेरी सेवा में आया। मिर्जा ईसातार खां मुलतान से आया। 10 ता. को मैंने हिन्डोन में मुकाम किया। मंसूर खां फिरगी को 4 हजार जात और 3 हजार सवार का और उसके भाई को 2 हजार जात और 1000 सवार का मनसब दिया। ता. 11 शाह परवेज आया मैंने उसको प्रेम पूर्वक सीने से लगाया। इस समय खबर आई कि बीदौलत ने आमेर के हवाली शहर को लूटा है।

ता. 12 को मैंने सारवली गांव पर मुकाम किया। मैंने शाह परवेज का मनसब बढाकर 40 हजार जात और 30 हजार सवार कर दिया। यह खबर आई कि बी दौलत ने राजा बासू के पुत्र जगतसिह को पजाब के पहाड़ी देश में उत्पात करने के लिए भेजा है। इसलिए मैंने प्रधान बख्शी सादिक खां को उस सूबा का सूबादार बनाकर उनको दण्ड देने के लिए भेजा और सादिक खा का मनसब भी बढा दिया।

मिर्जा शाहरूख के पुत्र मिर्जा बादी–उज–जमा के भाईयो ने उस (बादी–उज–जमा) को मार डाला। मैंने उसके भाइयो को कारावास में डाल दिया। तारीख 25 को शाहजादा परवेज को सेना सहित बी दौलत के लिए रवाना किया। शाहजादा के साथ बहुत से अमीर रवाना किए गए। जिनका सक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

खान आलम, महाराजा गजसिह, फाजिल खा, रसीद खा, राजा गिरधर, राजा रामदास कच्छावा, आदि इन सबके पास 40 हजार सवार और बडा तोपखाना था और खर्च के लिए 20 लाख रुपये दिये गये थे फाजिल खा को बख्शी और वाकियानवीस नियुक्त किया था। शाहजादा को 41 हजार रुपए को पोशाक दी गई थी। इसके अतिरिक्त एक हाथी 10 हथनिया, एक खासा घोडा भी दिया गया था। इन सब का मूल्य 70 हजार रुपये था। नूरजहा बेगम ने भी उसको भेटे दी। महावत खा आदि अमीरो को उनके पदानुसार भेटे दी गई। तारीख एक मास खुरदाद को खुसरो के पुत्र शाहजादा दावर बख्श को गुजरात मे नियुक्त किया गया और खान आजम को उसका अतालिक बना दिया गया।

आसफ खा को बगाल और उडीसा का सूबादार नियुक्त किया गया। शनिवार तारीख 9 (9 मई 1623) को आनासागर अजमेर पर मुकाम हुआ। शाहजादा दादर कराश को 8 हजार जात और 3 हजार सवार का मनसब दिया गया और 2 लाख रुपये खर्च के लिए दिए। खानआजम को भी 1 लाख रुपया दिया। राजा गजसिह का मनसब 5 हजार जात और 4 हजार सवार किया गया।

जहांगीर की माता का देहान्त

इस दिन आगरे से खबर आई कि हजरत मरियम–उज–जमानी (जहागीर की माता) का देहान्त हो गया। राणा कर्ण का पुत्र जगतसिह दरबार मे आया और उसने 4 हाथी भेट किये।

गुजरात विजय

तारीख 12 इलाहीमास तीर को खबर आई कि गुजरात पर विजय हो गई है यह सूबा मैने बी दौलत को राणा पर विजय प्राप्त करने के पुरुस्कार स्वरूप दिया था। ब्राह्मण सुन्दर इसका प्रशासन चलाता था। जब सुन्दर मारा गया और बीदौलत माडू चला गया तो गुजरात का सूबा लानत–उल्ला को जागीर मे दे दिया फिर लान्तउल्ला ने अहमदाबाद पर कब्जा कर लिया। फिर लान्तउल्ला ने देखा कि मेरा भाग्य अवश्य ही ऊचा बढेगा। इसलिए वह भाग गया और मेरे

सेवकों ने नगर के दरवाजें और मीनारों की मरम्मत करना शुरू कर दिया बीदौलत के दीवान और बख्शी को पकड़ कर लिया। लान्तउल्ला को भी बांध कर लाया गया। बी दौलत के अनेक सेवकों और आश्रितों को कैद कर लिया और बी दौलत का जड़ाऊ तख्त 2 हजार नकद और दूसरी सम्पत्ति उनके हाथ लगी। फिर नगर में राजा कल्याण (ईडर वाला) आदि जमींदार आ गये। फिर लान्तउल्ला महमूदाबाद पहुंचा और उसने सरफरोज खां को कैद कर लिया। 21 शाहबान का लान्तउल्ला ने लड़ाई की तैयारी की। परन्तु उस समय उसने लड़ाई नहीं लड़ी। दूसरे दिन प्रातःकाल लड़ाई हुई। लान्तउल्ला ने शाही अग्रसेना पर आक्रमण किया। तो उनको हानि उठाकर वापिस हटना पडा। परन्तु ईश्वर ने शाही सेना की रक्षा की। अब बड़े–बड़े शाही सेवक सहायता के लिए आ पहुंचे तो लान्तउल्ला हिम्मत हार गया और भाग कर बड़ौदा चला गया और फिर वहां भड़ौच पहुंचा। 3 दिन नगर से बाहर ठहर कर वह सूरत पहुंचा। वहां दो मास तक अपनी छिन्न भिन्न सेना को एकत्र करता रहा। सूरत बी दौलत की जागीर में था इसलिए उसने वहां से 4 लाख महमूदी लिये और बी दौलत के पास बुरहानपुर पहुंच गया।

गुजरात में सफी खां आदि ने अच्छी और राजभक्ति पूर्ण सेवा की इसलिए सबका मनसब बढ़ाया गया। इन सेवकों में नाहिर खां भी था उसका मनसब 3000 जात और 2000 सवार कर दिया गया उसे शेर खां की उपाधि दी गई। यह पूर्णमल लूलू के भाई का पोता है। पूर्णमल रायसेन और चन्देरी का फौजदार था। जब शेर खां अफगान ने रायसेन को घेरा तो पूर्णमल को सुरक्षा का वचन देकर धोखे से मार डाला और उसकी स्त्रियों ने अपनी कीर्ति और शील की रक्षा के लिए हिन्दू प्रथा के अनुसार जौहर किया। पूर्णमल के पुत्र और रिस्तेदार इधर उधर चले गये। नाहिर खां का पिता असीर और बुरहानपुर के फौजदार मुहम्मद खां के पास गया और मुसलमान हो गया। जब मुहम्मद खां मर गया तो उसका पुत्र बालक ही था उसका उत्तराधिकारी बना। परन्तु मुहम्मद खां के भाई राजा अली खा ने बच्चे को कैद कर के शासन अपने हाथ में ले लिया। कुछ समय बाद अली खां को खबर मिली कि मुहम्मद खां के सेवक उस पर हमला करने वाले हैं और वे हसन को मुक्त करेंगें। जब मेरे पूज्य पिता ने असीर को जीत लिया तो नाहिर खां उसकी सेवा करने लगा। मेरे पिता ने उसको मालवे के मुहम्मदपुर नगर के परगने में जागीर दे दी। जब उसको कृतज्ञता का पुरुस्कार मिल गया है।

सैयद दलीर खां बारह के सैयदों में से है। मैंने उसका मनसब 2000 जात और 1200 सवार कर दिया। 2 आब में एक दूसरे के पास बारह गांव हैं। यह सैयद लोग वहां के रहने वाले है। इसलिए ये बारह के सैयद कहलाने लगे।

प्रत्येक युद्ध में इन लोगों ने वीरता दिखाई है और वीर गति प्राप्त की है। इस दिन मैंने सुना कि शाह नवाज खां का पुत्र मीनू चिहर बीदौलत को छोड़कर शाह परवेज के पास आ गया है।

इसी मास की 29 तारीख को राजा करण के पुत्र जगतसिंह को मैंने एक मोतियों की माला भेंट की।

अमीरदाद मास की 6 तारीख को मेरे पुत्र शाह परवेज का सेवक इब्राहीम हुसैन विजयी सेना से इस राज्य के सरदारों की विजय के समाचार लाया। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। इस विजय का विवरण निम्न प्रकार है। जब शाहजादे की शाही सेना ने चांदा घाट[1] पार करके माला में प्रवेश किया तो मीर दौलत ने 20,000 सवार, 300 हाथी और 1 बड़े तोपखाने के साथ मांडू से लड़ने के लिए प्रयाण किया शाही लश्कर को लूटने के लिये उसने ,दक्षिण के बारगियों को जादूराय उदयराम, आलश खां को रवाना किया। महावत खां ने शाहजादे को तो मध्य में रखा और सारी सेना के साथ वह आगे बढा। बारगी लोग पास नहीं आये। एक दिन मंसूर खां फिरंगी सेना के पिछले भाग में था। जब डेरे लगाये जा रहे थे तो महावत खां शिविर के बाहर सेना सहित तैयार खड़ा हुआ देख रहा था। मंसूर खां शराब पीता हुआ आया। उसने कुछ दूरी पर एक सेना देखी। और जहां जादूराय और उदयराम 2000 या 3000 सवारों सहित लड़ने को तैयार थे वहां पहुंच गया। शत्रु ने सब ओर से उस पर आक्रमण किया। और लडते लड़ते उसकी मृत्यु हो गई।

बी-दौलत का विद्रोह

इन दिनों महावत खां उन लोगों को अपनी ओर मिला रहा था जो बी–दौलत से जा मिले थे। बी–दौलत ने मांडू दुर्ग से निकल कर पहले बारगीयों को और फिर बन्दूकचीयों के साथ रुस्तम खां, ताकी और बरकन्दाज खां को भेजा। इनके पीछे दाब खां, भीम, बैराम बेग आदि भेजे। दराब ओर भीम के पीछे बी–दौलत भी युद्ध की ओर प्रयाण करने लगा। सेना को आगे भेजकर वह 1 कोस पीछे खानखाना के पास ठहर गया। बरकन्दाज खां ने गुप्त रूप से महावत खां के साथ समझौता कर लिया था। जब लड़ाई शुरू हुई तो वह महावत खां के पास आ गया वह अपने काम में होशियार था। मैनें उसको बरकन्दाज खां की उपाधि दी थी जब बी–दौलत को दक्षिण भेजा गया तो इसको तोपखाने का अध्यक्ष बनाकर उसके साथ भेजा गया था। उसी दिन रुस्तम खां ने भी महावत खां से समझौता कर लिया और शाहजादे के पास आ गया। यह खबर सुनकर

---

1 चांदा घाट अजमेर और मालवा के बीच में है।

बी दौलत का ह्रदय बैठ गया। अब उसको अपने आदमियों पर विश्वास नहीं रहा। उसने नर्वदा पार की उस समय उसके और भी लोग परवेज से आ मिले। जिस दिन वह नर्वदा पार कर रहा था उसके 1 सेवक का पत्र उसके हाथ में आया, जसमें लिखा था कि –जाहिद खां शाही कृपा की आशा कर सकता हैं बी–दौलत ने इस पत्र को देखकर जाहिद खां ओर उसके पुत्रों को कैद कर लिया। जाहिद खां मेरे पिता के विश्वास अमीर शुजाअत खां का पुत्र है। मैंने इसको 1500 का मनसबदार बनाकर दक्षिण विजय के लिये बी दौलत के साथ भेजा था। जब मैंने इसको कन्धार पर चढाई करने के लिये फरमान भेजकर बुलाया तो नहीं आया और प्रकट रूप से बी–दौलत का सेवक बन गया। इस दिन जब वह पकडा गया तो बी दौलत ने उसकी 30 हजार की सम्पत्ति जब्त कर ली एवं उसको बुराई का बदला मिल गया।

बी–दौलत ने नर्वदा पार करके सब नावें उस ओर रख लीं और थाहों पर अपने विश्वसनीय आदमी बिठा दिये वहां अपने बख्शी बेरम बेग को नियुक्त कर दिया और तोपखाने के साथ बी–दौलत असीरगढ़ और बुरहानपुर की ओर चला गया। इस बीच में उसके सेवक तकी ने खानखाना के धावन को पकड लिया जो महावतखां के पास जा रहा था और उसको बी–दौलत के सामने प्रस्तुत किया।,उसके पास पत्र था जिसमें लिखा था कि "मुझे सैकड़ो आदमी देख रहे हैं अन्यथा मैं यहां से उड़कर भाग आऊं।"

बी–दौलत ने खानखाना और उसके पुत्रों को बुलाकर पत्र दिखाया। बी–दौलत ने उसको और उसके पुत्रों को दराब की निगरानी में रख दिया। इब्राहीम हुसैन विजय के समाचार लेकर आया था मैंने उसको खुश खबर की उपाधि, 1 खिलअत और हाथी दिया और शाहजादा परवेज और महावत खां को खुशी का फरमान भेजा और महावत खां का मनसब सात हजार कर दिया। खानजाद खां (महावत खां का पुत्र) पंच हजारी मनसबदार बनाया गया।

इस मास की 15 तारीख को रुस्तम खां, मुहम्मद मुराद और अन्य कई बी–दौलत के सेवक दरबार में आये। ये लोग उसको छोड़कर शाह परवेज की सेवा में आ गये थे। रुस्तम खां को 5 हजार जात और 4 हजार सवार का मनसब दिया रुस्तम खां बदख्शी है। यह पहले दरबार का सेवक था और छोटा सा मनसबदार था। कुछ कारण से इसकी जागीर छीन ली गई थी तो यह बी–दौलत के पास चला गया था। उसकी ओर से इसने कुछ समय तक गुजरात में काम किया था। इस दिन नीरुद्दीन कुली अहमदाबाद से 41 विद्रोहियों को बेड़ियां डालकर लाया। सरज खां और काबिल बेग इनके नेता थे। उन्हें मस्त हाथियों के पैरों से कुचल दिया गया। इसी मास की 20 तारीख को मेरे पुत्र शहरयार के इतिमादुद्दौला की पोती से एक पुत्री पैदा हुई। मास को 22 तारीख

को मेरी सौर तुला की गई और मैंने अपनी आयु के 53वें वर्ष में पदार्पण किया। तारीख 1 इलाही मास मिहर को मीर जुमला 3 हजार जात और 300 सवार का मनसबदार बनाया गया। सरफराजखां निर्दोष सिद्ध हुआ। इसलिए इसको कैद से छोड़ दिया गया और शहरयार की प्रार्थना पर मै उसके मकान पर दावत में गया इसी समय शाह परवेज ने खबर भेजी कि बी–दौलत ताप्ति नदी को पार करके इधर उधर धूम रहा है।

असीरगढ़ बड़ा ऊंचा और दृढ दुर्ग है। बी–दौलत दक्खिन गया उससे पहले यह ख्वाजा फतह–उल्ला के पुत्र नसर उल्ला के हाथ में था फिर बी दौलत की प्रार्थना पर यह मीर जमालुद्दीन हुसैन के पुत्र मीर हुसमुदीन के सुपुर्द किया गया। इसके साथ नूरजहाँ बेगम के मामा की पुत्री का विवाह हुआ था। जब बी दौलत को दिल्ली के पास हरा दिया गया और वह मालवा और मांडू की ओर भागा तो नूरजहा बेगम ने मीर हुसामुद्दीन को लिखा कि बी–दौलत और उसके आदमियों को दुर्ग के निकट न आने देना और तुम कृतघ्नता न करना। हुसामुद्दीन ने दुर्ग को खूब दृढ बना दिया। फिर बी–दौलत ने शरीफा नामक अपने विश्वसनीय सेवक को हुसामुद्दीन के पास भेजा। शरीफा ने यह तय किया कि जब हुसामुद्दीन शाहजहां के फरमान को लेने के लिए दुर्ग से नीचे आवे तो उसको वापिस नहीं जाने दिया जावे। हुसामुद्दीन ने पिछले अहसान भूलकर दुर्ग शरीफा से सुपुर्द कर दिया। फिर अपनी पुत्री और पत्नी के साथ बी दौलत के पास चला गया। बी–दौलत ने उसको 4 हजार जात का मनसब दिया। शरीफा ने असीरगढ़ में प्रवेश किया। खानखाना और दाराब उसके साथ थे। उसने दुर्ग गोपाल दास नामक राजपूत के सुपुर्द कर दिया। ये राजपूत पहले सरबुलन्दराय का सेवक था। शरीफा खानखाना और दाराब के साथ अपनी स्त्रियों और बच्चों को लेकर बुरहानपुर चला गया। इसी समय लान्तउल्ला उससे आ मिला बहुत परेशान होकर बी–दौलत ने राज भोज हाड़ा के पुत्र सर बुलन्दराय को अपना मध्यस्थ बनाया और संधि को प्रस्ताव किया। महावतखां ने कहा कि खानखाना के आये बिना सधि असंभव है। महावतखां चाहता था कि खानखाना को बी–दौलत से जुदा कर दिया जावे। बी दौलत ने खानखाना को कारागार से मुक्त किया और उसकी कुरान कर शपथ दिलवायी। उसको प्रसन्न करने के लिए और शपथ को दृढ करने के लिए उसको अपने जनाने में ले गया, और अपनी बेगम और बच्चों को उसके सामने लाया और कहा "मेरी स्थिति नाजुक है। तुम मान के रक्षक बनो। ऐसा काम करो कि मुझे घृणा और परेशानी नहीं सहनी पडे।" शान्ति स्थापित करने के लिए खानखाना बी दौलत को छोडकर शाही सेवा में चला गया। फिर यह तय हुआ कि वह नदी के दूसरी पार रहे और संधि के लिए पत्र व्यवहार करे। जब खानखाना नदी के दूसरे पार पर गया तो शाही जवानो

ने विद्रोहियों पर आक्रमण कर दिया और खानखाना की स्थिति विषम हो गई। तब वह परवेज की सेवा में उपस्थित हुआ। यह खबर सुनकर बी–दौलत घबरा गया ओर ताप्ति पार करके दक्षिण में चला गया। इस मौके पर बहुत से लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया।

जब मैंने सुना कि बी–दौलत बुरहानपुर से चला गया है और वहां शाही सेना पहुच गई तो मैंने शाहजादा परवेज से कहलाया कि वह प्रयास करता रहे और बी–दौलत को या तो जीवित पकड़ ले या उसको शाही मुल्क से बाहर निकाल दें। ऐसा ख्याल किया गया था कि बी दौलत की स्थिति और अधिक बिगड़ी तो वह कुतुबुल मुल्क के राज्य में होकर उड़ीसा और बंगाल में चला जावेगा। इसलिए मैंने रुस्तम को इलाहाबाद का फौजदार बनाया और उसे आदेश दिया कि यदि ऐसा हो तो इस मामले की चौकसी रखी जाए।

इस समय मेरे (फरजन्द) खां जहां ने मुल्तान से आकर एक हजार मोहरे, एक लाल तथा एक लाख रुपए की मोती तथा जवाहरात मुझे भेंट किए। ता. 9 इलाही मास आबान को शाहजादा और महावत खां की रिपोर्ट लेकर ख्वासखां आया उसमें लिखा था कि जब परवेज बुरहानपुर पहुंचा तो आदेशानुसार उसने अविलम्ब ताप्ती नदी पार करके बी–दौलत का पीछा किया। वर्षा और कीचड के कारण बी–दौलत के पशु थक गए थे और सामान छोडकर बी दौलत और उसके बच्चे और आश्रित लोग प्राण बचाकर भाग गए। शाही सेना उसका पीछा करती हुई बुरहानपुर से 40 कोस दूर परगना अनकोट तक पहुंच गई। बी दौलत माहूर दुर्ग तक पहुंच गया तो उसने देखा की जादोराय और उदयराम उसका साथ अब नहीं देंगे तो वह अपने हाथी और सामान उदयराम के पास छोड़कर कुतुबुलमुल्क के देश की और प्रयाण करने करने लगा जब वह शाही देश से निकल गया तो महावतखां आदि उस परगने से वापस लौट आए। ता. 1 आबान को महावत खां ने बुरहानपुर में प्रवेश किया।

कासिमखा को 4 हजार जात और दो हजार का मनसब दिया। अब मुझको बी–दौलत की ओर से कोई भय नहीं था और हिन्दुस्तान की गर्मी मुझे अनुकूल नहीं था। इसलिए ता. एक सफर (14 नवम्बर 1623) को मै अजमेर से कश्मीर के लिए रवाना हुआ। इससे पहले ही आसफखां को बगाल का सूबादार बनाकर मैंने विदा कर दिया था। मुझे इसकी संगति बहुत अच्छी लगती थी इसलिए उससे जुदा होते समय मुझे दुख हुआ। राणा कर्ण का पुत्र जगतसिह स्वदेश लौट गया। राजा सारगदेव शाह परवेज और बदारुस सुल्तान की रिपोर्ट लेकर आया कि बी–दौलत से अब कोई डर नहीं हैं और दक्खिन के शासक भी इच्छा से या अनिच्छा से अधीनता स्वीकार करते है। अतः हजरत को आराम से शिकार और जहा चाहे वहां सफर करना चाहिए।

इस समय दक्खिन के बख्शी अकीदत खां की रिपोर्ट आई जिसमें राजा गिरघर के मारे जाने का वृतान्त था। बात यों हुई कि सईद कबीर बारहा ने जो शाह परवेज का सेवक था, एक तलवार सकलगर को तेज करने के लिए दी जो राजा गिरजाघर के पास दूकान लगाता था। दूसरे दिन इसकी मजदूरी के विषय में तकरार हो गया तो सईद ने सकलीगर को दो तीन चोंटें मार दीं फिर कुछ और युवा सईद आ गए और सैयदों और राजपूतों में तीर और तलवारों से लड़ाई शुरू हो गई। सईद कबीर बीस चालीस आदमियों को लेकर आ गया उस समय राजा गिरधर और कुछ राजपूत कपड़े उतार कर भोजन कर रहे थे। सईदों ने आग लगाकर मकान में प्रवेश किया और राजा गिरधर तथा उसके 40 सेवकों को मार दिया और कुछ घायल कर दिया। सईद कबीर ने आकर लोगों को समझाया। फिर दंगा फैल गया तो गया महावत खां बची बचाव करने के लिए आया उसने दोनों को समझाने का प्रयास किया और राजा गिरधर के कुटुम्ब के साथ सहानुभूति प्रकट की। राजपूत लोग नहीं माने। वे चाहते थे कि सईद कबीर को मृत्यु दण्ड दिया जाए इसलिए कुछ दिन बाद उसको मृत्यु दण्ड दे दिया गया।

तारीख 10 मास दाई के दिन रहीमाबाद के परगने में मैंने एक शेर मारा। मैंने अब तक ऐसा शेर नहीं देखा था। इसका आकार शान और अंग विन्यास अनोखा था।

तारीख 16 को खबर आई कि आगरे के फौजदार मुमताज खां की मृत्यु हो गई वह मेरे पूज्य पिता की सेवा करता था जब मेरा जन्म हुआ तो उसे मेरे घर का नाजिर नियुक्त किया गया। उसने 50 वर्ष तक मेरी सेवा की। उसके गुणों का वर्णन कोई लेखक लिख नहीं सकता।

तारीख 22 को मथुरा नगर में मेरी चान्द्र तुला हुई और मेरी आयु का सत्तावनवां वर्ष आनन्दपूर्वक शुरू। मथुरा में मैंने एक शेरनी का शिकार किया। यहां मुझे मालूम हुआ कि जमनापार के लोग चोरी डकैती करते हैं और भूमिकर नहीं देते। मैंने उसके विरूद्ध सेना भेजी और उनके गांवों और किलों को भूमिसात कर दिया। तारीख 2 को हकीम नूरुद्दीन तेहरानी के पुत्र अब्दुल्ला को मैंने अपने सामने प्राण दण्ड दिया। यह ईरान से भाग आया था और इतिमादुद्दौला की सहायता से दरबार का सेवक बन गया था फिर इसको 500 का मनसब और उपजाऊ जागीर दे दी गई थी परन्तु यह इसको नहीं पचा सका, क्योंकि वह बडा कृतघ्न था। फिर मैंने सुना कि वह मुझे भी गालियां देता है। जब इसकी पुष्टि हो गई तो मैंने उसको मरवा दिया।

राजा बासू का पुत्र जगतसिंह बी—दौलत के बहकाने से पंजाब की उत्तरी पहाडियों में चला गया था। यह उसका—वंश क्रमानुगत निवास है। यहां उसने

उत्पात खड़ा किया। उसको दण्ड देने के लिए मैंने सादिक खां को नियुक्त किया। इसका उल्लेख किया जा चुका है। अब उसके छोटे भाई माधोसिंह को राजा की उपाधि देकर सादिक खां के साथ विद्रोहियों पर आक्रमण करने के लिए भेजा।

अगले दिन नगर के पास से रवाना होकर मैं सलीमगढ़ उतरा। मार्ग में राजा किशनदास ने आग्रह और विनयपूर्वक उसके घर जाने के लिए प्रार्थना की तो मै गया और उसकी कुछ भेंटें स्वीकार कीं। मैं 20 तारीख को सलीमगढ़ से रवाना हो गया और सईद बहवा बुखारी को दिल्ली का फौजदार नियुक्त किया।

इस समय तिब्बत के शासक अलीराय का पुत्र अलीमोहम्मद अपने पिता के आदेश से दरबार में आया। अलीराय इस पुत्र से अन्य पुत्रों की अपेक्षा अधिक प्रेम करता था और उसको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। इसलिए उसके भाई उससे ईर्ष्या करते थे ओर उनमें झगडा हो गया था। अलीराय के ज्येष्ठ पुत्र अब्दाल ने ईर्ष्यावश काशगर के खान से सहायता मांगी और चाहा कि अलीराय की मृत्यु हो जाये तो वह (अब्दाल) काशगर के शासक की सहायता से तिब्बत का शासक बन सके। अलीराय को सन्देह हो गया कि उसके पुत्र अली मोहम्मद पर आक्रमण करके झगडा पैदा कर देंगे इसलिए उसको दरबार में भेजा और उसको शाही सेना में लगाना चाहा।

तारीख 1 इलाहीमास इसफन्दर मुज को मैंने परगना अम्बाले मे मुकाम किया। इमामाविर्दी का पुत्र लश्करी बी–दौलत को छोडकर शाह परवेज की सेवा में आ गया था वह आज दरबार मे आया। मेरे पुत्र परवेज और महावत खा का पत्र आया जिसमें लिखा था कि आदिल खां शाही सेवा करना चाहता है। उसने इस विषय में महावत खां को पत्र लिखा था वह भी मेरे पास भेज दिया गया था। लश्करी खां को तो सम्मान सूचक पोशाक और महावत खा के लिए खिलअत देकर वापिस भेज दिया गया और आदिल खां को मैंने कृपासूचक फरमान और खिलअत भेजी और आदेश दिया कि परवेज और महावत खां चाहे तो लश्करी को आदिल खां के पास भेज दें।

तारीख 5 को मैंने सरहिन्द में मुकाम किया। ब्यास नदी के तट पर सादिक खां आदि मिलने आये। उन्होंने कहा कि उत्तरी पर्वतीय प्रदेश में शांति स्थापित हो गई है। बी–दौलत के बहकाने से वहां जगतसिंह ने उत्पात और राजद्रोह कर दिया था। सादिक खां ने उधर के जमींदारों पर नियंत्रण करके जगतसिंह के दमन के लिए बड़ा प्रयास किया। जगतसिंह मऊ दुर्ग से मौका देखकर शाही सेवकों से लड़ा करता था। अन्त में उसके पास खाद्य सामग्री नहीं रही तो वह जमींदारों पर आश्रित रहते लगा। उसको छोटे भाई माधोसिंह राजा गया थ। इससे भी यह चिन्तित हुआ और उसने नूरजहां बेगम से

संरक्षण की प्रार्थना की। बेगम को प्रसन्न करने के लिए जगतसिंह को क्षमा कर दिया गया।

इस दिन दक्खिन के अधिकारियों ने खबर भेजी कि लान्त उल्ला के साथ बी दौलत बड़ी बुरी हालत में कुतुमुलमुल्क के देश को छोडकर ओड़ीसा और बंगाल की ओर चला गया है। इस कूच में उसकी बडी क्षति हुई है और उसके बहुत से आदमी मारे गये है। उसका दीवान मिर्जा मोहम्मद (अफजल खां का पुत्र) अपनी माता और परिवार के साथ मार्ग में से ही भाग गया था। बी दौलत ने उसका पीछा करने के लिए अपने सरदार भेजे और आदेश दिया कि या तो उसको जीवित पकड कर लाया जाये या उसका सिर काट कर पेश किया जावे। मिर्जा मोहम्मद ने अपनी माता और परिवार को जंगलों में छिपाकर कुछ आदमियो के साथ मुकाबला करने की तैयारी की। एक नहर के पास अच्छी लड़ाई हुई। मिर्जा मोइम्मद के घातक घाव लगे और उसकी मृत्यु हो गई। फिर उसका सिर काट कर बी–दौलत के सामने पेश किया गया।

दिल्ली से पास हारकर जब बी दौलत मांडू पहुचा तो उसने अफजल खा को आदिल खां से सहायता प्राप्त करने के लिए भेजा। आदिल खां के लिए 1 घोडा और हाथी और अम्बर के लिये 1 जडाऊ तलवार भेजी। अफजल खा पहले अम्बर के पास गया। परन्तु अम्बर ने कहा कि "मै तो आदिल खा का सेवक हूं, पहले उससे बात करो। यदि वह सहमत होगा तो मैं उसकी आज्ञा मानूंगा।" अफजल खां आदिल खा के पास गया। परन्तु आदिल खा ने उसका कोई स्वागत नहीं किया ता भी उससे भेंटे तो ले ली। वही अफजल खां ने अपने पुत्र के वध का और अपनी विपत्ति समाचार सुना। बी दौलत ने लम्बी यात्रा शुरू की और वह मछलीपट्टम पहुंच गया जो कुतुबुलमुल्क का है। वहा पहुचने से पहले उसने अपने आदमी भेज कर कुतुबुलमुल्क से सहायता मागी थी। कुतुबुलमुल्क ने उसके लिए कुछ रुपया और सामान भेजा और अपने सीमा अधिकारी को आदेश दिया कि उसको अपने देश से सुरक्षित निकाल दे तथा अन्न के व्यापारियो को प्रोत्साहन दे कि वे बी–दौलत को अन्न और अन्य आवश्यक वस्तुए बेचें।

मेरे राज्यारोहण के बाद उन्नीसवें वर्ष का उत्सव

बुधवार तारीख 28 जुमादल अव्वल हिजरी (10 मार्च 1624) को जब एक पहर और दो घड़ी दिन व्यतीत हो चुका था तो सूर्य ने मीन राशि में प्रवेश किया। शाही सेवकों के मनसबों में वृद्धि की गयी और उनकी पदोन्नतियां की। मैंने आदेश दिया कि भविष्य में जब मैं महल से बाहर आऊं तो अन्धों और नाक कान कटे हुए लोगों, कोढ़ियों तथा अपंग लोगों को और रोगियों को मेरे सामने नहीं आने दिया जावे। तारीख 19 को सूर्य के उच्चतम आरोहण की दावत हुई। इनाम विर्दी का भाई इलाहविर्दी बी–दौलत के पास से भाग कर दरबार में आया तो उस पर कृपा की गई।

मुझे बार बार खबर मिल रही थी कि बी–दौलत ओड़ीसा की सीमा पर पहुंच रहा है। इसलिए मैंने शाहजादे को महावत खां को और अन्य अमीरों को, जो मेरे पुत्र के साथ थे। एक फरमान भेजा कि दक्खिन के सूबों के प्रशासन की चिन्ता न करके वे इलाहाबाद और बिहार पहुंचे। यदि बंगाल का सूबेदार पहले से ही बी–दौलत के प्रयासों को भंग न कर सके तो शाही सेना जो मेरे पुत्र के साथ है उस (बी–दौलत) को जंगलों में धकेल दे। अहतीयात के लिए तारीख 2 उर्दी बिहिश्त को मैंने अपने (फरजंद) खांजहां को आगरा भेजकर आदेश दिया कि वह वहीं रहकर संकेत की प्रतीक्षा करे और जब सेवा के लिये आदेश दिया जावे तो वह अवसरानुकूल कार्य करे। मैंने उसको और उसके पुत्र को सम्मानसूचक भेंटे भेजी। आदेशानुसार मेरे पुत्र शाह परवेज ने राजा गजसिंह (जोधपुर) की बहन से विवाह कर लिया है। मुझे आशा है कि यह साम्राज्य के लिए मांगलिक होगा। जब बी–दौलत ने बुरहानपुर की मदी पार करके विनाश का मार्ग ग्रहण किया तो मीर हुसामुद्दीप बुरहानपुर से अपने बच्चों को साथ लेकर आदिल खां का संरक्षण प्राप्त करने के लिए चल दिया। संयोग से जान सिपार खां को इसका पता लग गया तो उसने उन सबको पकड कर महावत खां के सामने प्रस्तुत किया और उनसे 100,000 रुपए ले लिए। जादूराय और

उदयराम भी बी–दौलत के उन हाथियों को लेकर जो उसने बुरहानपुर छोड़े थे, शाहजादा परवेज के पास आये।

काजी अब्दुल अजीज को बी–दौलत ने मेरी सेवा में निवेदन करने के लिए भेजा था परन्तु मैंने उससे बात नहीं की और उसे महावत खां के सुपुर्द कर दिया। बी–दौलत की पराजय के पश्चात् महावत खां ने काजी अब्दुल अजीज को अपना ही सेवक बना लिया था। यह आदिल खां का पुराना मित्र था। महावत खां ने इसको पुनः आदिल खां और दक्खिन के सरकारों के पास भेजा तो सबने राजभक्ति और सेवा की इच्छा प्रकट की। अम्बर ने भी महावत खां की सेवा में उपस्थित होना चाहा। वह अपने पुत्र को शाही सेना में और स्वयं को शाहजादा परवेज की सेना में रखना चाहता था। इसी समग काजी अब्दुल अजीज ने लिखा कि आदिल खां हृदय से स्वामिभक्ति और सेवा करना चाहता है और अपने प्रधान प्रतिनिधि मुल्ला बाबा को 5000 सवारो सहित सेवार्थ भेजता चाहता है। मैंने जरूरी फरमान भेजा कि परवेज इलाहाबाद और बिहार की ओर जाकर बीदौलत को परास्त करे। इस समय खबर आई कि परवेज बुरहानपुर से सेना सहित रवाना होकर लाल बाग गया है और महावत खां बुरहानपुर में मुल्ला मोहम्मद की प्रतीक्षा कर रहा है। उसने आने पर बुरहानपुर की व्यवस्था करके वह और मोहम्मद परवेज की सेवा मे पहुंचेगें।

इस दिन खबर आई कि लश्कर खां फरमान लेकर आदिल खां के पास गया तो आदिल खां 4 कोस दूर फरमान लेने गया और तस्लीम करके सम्मानपूर्वक उसने फरमान लिया।

इस समय मुझे खबर मिली कि कि महावतखां ने जाहिद खां के पुत्र आरिफ को प्राण दण्ड दिया है और जाहिद और उसके पुत्रों को कारावास मे रख दिया है। ऐसा मालूम हुआ था कि आरिफ ने बी–दौलत को पत्र लिखकर अपनी ओर से और अपने पिता की ओर से वफादारी प्रकट की थी। यह पत्र महावत खां के हाथ पड़ गया। इसलिए आरिफ को प्राण दण्ड दिया गया।

इस समय इब्राहीम खां फतह जंग ने खबर भेजी कि बी–दौलत ने ओडीसा में प्रवेश कर लिया है। उड़ीसा की सीमा और दक्खिन के बीच में एक आड है। एक ओर ऊंचे पहाड हैं दूसरी ओर दलदल और एक नदी है। गोलकुण्डा के शासक ने मार्ग बन्द करने के लिए एक दीवार खडी करके एक दुर्ग बना लिया है और उसमें बन्दूकची और तुपची रखे दिये। कुतुबुल मुल्क की इजाजत के बिना उस मार्ग से आदमी नहीं आ जा सकते। उसकी आज्ञा से ही ही बी–दौलत ने ओड़ीसा में प्रवेश किया है। इस समय ऐसा हुआ कि इब्राहीम खां के भतीजे अहमद बेग ने खुर्दी के जमीदारों पर आक्रमण कर दिया था।

ओड़ीसा में धुसने के बाद इब्राहीम खां ने बी–दौलत का मार्ग रोका तो उसे कहलाया गया कि यदि उसका शाही दरबार में जाने का विचार हो तो शाहजहां उसको नहीं रोकेगा और उसके परिवार को कोई क्षति नहीं होगा। यदि वह ओड़ीसा में ही ठहरना चाहे तो वह कहीं भी अपने लिए जागीर मांग सकता है जो उसको दे दी जायेगी।

जहांगीर का नूरजहां से विवाह

इस अवधि में जो बडी बड़ी घटनायें हुई उनमें एक यह थी कि बादशाह जहांगीर ने नूरजहां बेगम से विवाह करना चाहा। इस विषय पर कई जिल्दें लिखी जा सकती हैं परन्तु भाग्य के विचित्र विधान का इस प्रकार वर्णन करने में हम विस्तार नहीं करेंगे ख्वाजा मोहम्मद शरीफ का पुत्र मिर्जा गयासबेग तेहरान का निवासी था। प्रारम्भ में ख्वाजा मोहम्मद के सूबेदार मोहम्मद खां तकलू का वजीर था। मोहम्मद खां की मृत्यु के बाद उसने प्रसिद्ध प्रसिद्ध बादशाह तहमास्प शफवी की सेवा में प्रवेश किया और उसको मज्द की वजारत दी गई। ख्वाजा के दो पुत्र थे, आका ताहिर और मिर्जा गयासबेग। अपने द्वितीय पुत्र के साथ ख्वाजा ने आकामुल्ला के पिता मिर्जा अलाउद्दीन की लडकी से विवाह करना चाहा। अपने पिता की मृत्यु के बाद मिर्जा गयासबेग अपने दो पुत्रों और एक पुत्री के साथ हिन्दुस्तान के लिए रवाना हुआ। रास्ते में जब वह कंधार मे होकर गुजर रहा तो ईश्वर के आर्शीवाद से उसकी दूसरी पुत्री का जन्म हुआ। फतहपुर नगर में उसको बादशाह अंकबर के सामने हाजिर होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। थोड़े ही समय में बादशाह की निष्ठापूर्वक सेवा करने के कारण और अपनी बुद्धिमता के कारण मिर्जा गयासबेग दीवान या बादशाह के राजपरिवार का अधीक्षंक नियुक्त हो गया। वह लिखने में और काम करने मे बडा ही चतुर माना जाता था। उसने प्राचीन कवियो का अच्छा अध्ययन किया था और शब्दो के अर्थ वह खूब समझता था। उसका अवकाश का समय कविता और शैली के अध्ययन में लगता था। उसकी उदारता और परोपकारता निर्धनों के प्रति ऐसी थी कि कोई भी उसके दरवाजे से असन्तुष्ट होकर नहीं जाया करता था। परन्तु रिश्वत लेने में वह बडा निर्भय और साहसी था। जब बादशाह अकबर लाहौर में ठहरा हुआ था तो अलीकुली बेग इस तजलू जिसकी परवरिश शाह इस्माइल द्वितीय के यहां हुई थी, ईराक से आया और शाही सेवको में दाखिल कर लिया गया और भाग्यवश उसका विवाह मिर्जा गयासबेग की पुत्री के साथ हुआ जिसका जन्म कन्धार में हुआ था। फिर जहांगीर के राज्य में उसे उपयुक्त मनसब और शेर अफगान की उपाधि प्राप्त हो गई। उसे बंगाल में जागीर मिली और वह

वहां के लिए रवाना हो गया। उसके द्वारा कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पश्चात बंगाल के हाकिमों ने शाही आदेश के अनुसार गयासबेग की पुत्री को दरबार में भेज दिया। इस समय गयासबेग को इतिमादु–उद–दौला की ऊची उपाधि प्राप्त हो चुकी थी। कुतुबुद्दीन की मृत्यु से बादशाह को बडा शोक हुआ और उसने गयासबेग की पुत्री को अपनी माता के सुपुर्द कर दिया। वहां वह कुछ अर्से तक रही लेकिन उसकी ओर कोई ध्यान न गया। परन्तु भाग्य का विधान था कि वह उस जमाने की मलिका बने। इसलिये बादशाह के शासन के छठे वर्ष कें नौरोज के दिन उस पर बादशाह की दृष्टि पड़ी और वह इतना मुग्ध हो गया कि उसने उसे अपने अन्तःपुर की चुनी हुई महिलाओं में सम्मिलित कर लिया।

दिन प्रतिदिन उसका पद और प्रभाव बढता गया। पहले तो उसे नूरमहल की और फिर नूरजहां बेगम की उपाधि प्राप्त हुई। उसके सगे सम्बन्धी लोगों का सम्मान और वैभव खूब बढ़ा। उसकी मोहर के बिना किसी स्त्री को कोई जमीन नहीं दी जाती थी इन उपाधियों के अतिरिक्त जो दूसरे बादशाह भी दिया करते हैं, जहांगीर ने नूरजहां को राजसत्ता और शासन के अधिकार भी प्रदान कर दिए थे। कभी–कभी वह अपने महल के झरोखे में बैठकर अमीरों का सलाम लेती थी और उनको आदेश दिया करती थी। उसके नाम के सिक्कों पर लिखा रहता था कि बादशाह जहांगीर के आदेश से सोने की चमक नूरजहां मलिका बेगम के नाम से सौ गुनी हो गई हैं। उन तमाम फरमानों पर जिन पर शाही दस्तखत होते थे नूरजहां मलिका बेगम का नाम जुडा रहता था। अन्त में उसकी सत्त इतनी बढ़ गई कि बादशाह केवल नाम का रह गया। वह बारम्बार कहा करता था कि "मुझे सेर भर शराब और आधा सेर मांस के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए।"[1] इस बेगम की सुन्दरता और बुद्धिमता का वर्णन करना असम्भव है। जब कोई मामला उसके सामने प्रस्तुत किया जाता था और उसमें कोई झंझट होती थी तो वह शीघ्र ही उसको हल कर देती थी। जो कोई उसकी शरण ग्रहण करता था उसको अत्याचार और उत्पीड़न से बचाया जाता था। जब कभी उसे मालूम होता है कि कोई पितृहीन लडकी अकिंचन और असहाय है तो वह उसका विवाह करवा कर दहेज दिया करती थी। वह बहुत सम्भव है कि उसके शासन काल में कम से कम पांच सौ पितृहीन लडकियों का विवाह किया गया था और उन्हें दहेज दिया गया था।

बादशाह की मृत्यु

बादशाह भी वापस लाहौर लौटने के लिए रवाना हुआ। जब वह बैरम कला

1 इकबालनामा–ए–जहाँगीरी।

पहुंचा तो उससे शिकार का शौक जिनका इन पृष्ठों में प्रायः उल्लेख किया गया है जागृत हो गया। गांव के लोग एक हिरन को खदेड़कर उस स्थान की ओर से लाए जहां बादशाह बैठा हुअ था। उसने अपनी बन्दूक उठाई और गोली चलाई। गोली खाकर वह जानवर छलांग मारकर हिरनियों में चला गया और फिर मर गया। जिस आदमी ने उसका पीछा किया वह भी एक खड़ी चट्टान से गिरकर मर गया इस गरीब आदमी की मृत्यु से बादशाह पर बड़ा असर पड़ा। उसे ऐसा जान पड़ा मानों मृत्यु का फरिश्ता उसे दिखाई दे रहा हो। उस समय से उसको आराम और चैन नहीं रहा। उसको दशा बिल्कुल बदल गई। फिर राजोर की ओर दो मंजिल मुसाफिरी की गई। दिन के अस्त होते-होते वह वहां से रवाना हुआ। रास्ते में उसने शराब का एक प्याला मांगा परन्तु जब वह उसके होठों से लगाया गया तो उसको पी नहीं सका। जब रात होने लगी तो उसकी दशा और बिगड़ गई और दूसरे दिन 28 शफर 1037 हिजरी को अपने शासन के बाइसवें वर्ष में प्रातःकाल उसकी मृत्यु हो गई।

खान-ए-आजम (इरादतखां) से मिलकर राज्य का प्रमुख अमीर आसफखां खुसरू के पुत्र दाबर बख्श को कैदखाने से बाहर लाया और उसे बादशाह बनाने की आशा दिलाई। परन्तु दाबर बख्श ने उन लोगों पर विश्वास नहीं किया और प्रस्तावों पर उस समय उसको भरोसा हुआ जब उन्होंने बडी से बडी शपथ खाई। तब उसे घोड़े पर सवार करवाया गया, उस पर शाही छत्र लगवाया गया और सब लोग शाही निवास स्थान की ओर चले। नूरजहा बेगम ने अपने भाई को मिलने के लिए कई लोगों को उसके पास भेजा परन्तु उसने कई बहाने बनाए और नहीं गया। अब आसफ खां ने बनारसी नामक एक तेज हरकारे को जहांगीर की मृत्यु की खबर देने के लिए शाहजहां के पास भेजा। जल्दी इतनी थी कि पत्र लिखने का भी समय नही था। इसलिए विश्वास दिलाने के लिए उसने हाथ की अंगूठी भेजी। दूसरे दिन शाही अनुचर भिम्बार आए। वहां पर जनाजा तैयार किया गया और हिफाजत के साथ लाश को लाहौर भेज दिया गया और वहां इसको उस बाग में दफनाया गया जो नूरजहां ने बनाया था।

जब रियासत के अमीरों और हाकिमों को यह मालूम हुआ कि आसफ खां दाबर बख्श को बादशाह घोषित करने की युक्ति इसलिए रच रहा है कि शाहजहां का राज्यारोहण सुरक्षित हो जाए तो उन्होंने आसफ खां की सहायता की और जो उसने कहा वहीं किया। वे जानते थे कि दाबर बख्श तो केवल बलिदान का बकरा है। भिम्बार के निकट दाबरबख्श के नाम का खुतबा पढ़ा गया और सब लोग लाहौर के लिए रवाना हुए। आसफ ख़ां को नूरजहां से डर था इसलिए वह उसकी निगरानी करता रहता था और किसी को उससे मिलने नहीं देता था। बेगम शहरयार को गद्दी पर बिठाना चाहती थी। जब शहरयार ने बादशाह

के मरने की खबर सुनी तो वह लाहौर में था। उसकी पत्नी बड़ी प्रपंची थी। उसके कहने से उसने शाही उपाधि धारण कर ली और शाही कोष छीन लिया और लाहौर में जो कुछ भी रियासत की चीजें थी सब हथिया ली। सेना को अपने पक्ष करने के लिए उसने जो जिसने मांगा दिया और एक सप्ताह में पुराने और नए अमीरों में सत्तर लाख रुपए बांट दिए। उसे आशा थी कि उसकी स्थिति सुरक्षित हो जाएगी। स्वर्गीय शहजादे दानियाल का पुत्र मिर्जा बेसिथर बादशाह की मृत्यु पर भागकर लाहौर पहुंचा और शहरयार से मिल गया। उसने सेना का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया और उसको नदी के पास ले आया।

दूसरे किनारे पर आसफखां चला। एंक हाथी पर दावर बख्श बैठा हुआ था और दूसरे पर वह स्वयं। इस प्रकार उन्होंने युद्ध के लिए कूच किया और दोनों सेनाएं लाहौर से तीन मील की दूरी पर एक दूसरे के सामने आई। पहले आक्रमण में ही शहरयार के वेतनभोगी सैनिक रियासत के पुराने और स्वामिभक्त सेवकों का सामना नहीं कर सके और इधर उधर भाग गए। दो या तीन हजार सवारों के सहित शहरयार लाहौर के पड़ोस में खडा हुआ घटनाओं की गति को देख रहा था। तब एक तुर्की दास ने उसको भगदड़ की खबर दी। वह अपनी स्थिति और खतरे को नहीं समझ सका वापिस दुर्ग में घुस गया। इस प्रकार स्वयं उसने ही अपना पैर जाल में डाल दिया। दूसरे दिन अमीर आए और किले के सामने बैठ गए। उसके कुछ सेवकों ने आसफ खां से भेंट की और कुछ शर्ते रक्खी। आजम खां ने रात्रि में दुर्ग में प्रवेश किया और अगले दिन प्रातःकाल दूसरे अमीरों को भी दुर्ग में घुसा लिया। शहरयार ने स्वर्गीय बादशाह के अन्तःपुर में शरण ली परन्तु एक नाजिर उसको बाहर निकाल लाया और दाबरबख्श के सामने हाथ पैर बांध कर उपस्थित किया। नियमानुसार सलाम करने के बाद उसे कैद में डाल दिया गया और दो तीन दिन बाद उसकी आंखें फोड दी गईं। शाहजादा दानियाल के पुत्र ताहमुरास और हुशंग भी पकड कर कैद में डाल दिए गए। आसफ खां ने शाहजहां को इस विजय की खबर दी।

संदेशवाहक बनारसी कश्मीर के पर्वतों में स्थित जंगजहटी से रवाना होकर बीस दिन में 19 रबी–उल–अव्वल 1037 हिजरी को निजाम उल मुल्क की सीमा पर जुनीर पहुंचा। हरकारा सीधा महावत खां के निवास पर गया जिससे शाहजहां अभी हाल ही में मिला था। महावतखां ने शहजादे के निजी निवास में कहला भेजा तो उसने बाहर आकर आसफखां की अगूंठी प्राप्त की। शोक मनाकर और आवश्यक क्रियाएं करके उसने 23 रबी–उल–अव्वल को यात्रा शुरू की और गुजरात के रास्ते से चला।

निजाम–उल–मुल्क से सन्धि हो जाने के बाद और बालाघाट का प्रदेश समर्पित होने पर बहुत से जागीरदार और अमीर खानजहां को बुरहानपुर जाकर

मिले, अहमदनगर में सिपहदारखां ने निजाम–उल–मुल्क के हाकिमों के कहने से खानजहां का हुक्म नहीं माना और यह प्रण कर लिया कि शाही आदेश के बिना वह दुर्ग समर्पित नहीं करेगा चाहे उसका सिर चला जाए। दरया रोहिला और दूसरे लोग बुरहानपुर में खानजहां से आकर मिले। तब उसने मांडू की ओर कूच किया और मालवा के कई हिस्सों पर अपना अधिकार कर लिया और इसके बाद बुरहानपुर लौट गया।

शाहजहां ने यामिन–उद्दौला आसफखां को फरमान भेजा कि यह अच्छा होगा कि खुसरो के पुत्र दाबरबख्श को और निकम्मे भाई शहरयार को और शहजादे दानियाल के पुत्रों को इस संसार से रवाना कर दिया जाए। तब जुमाद–उल–अव्वल 1037 हिजरी को जहांगीर की शासनकाल के पच्चीसवें वर्ष की 10 बहमन को सब लोगों को सम्मति से शाहजहां को लाहौर में बादशाह घोषित किया गया और उसके नाम का खुतबा पढा गया। दाबरबख्श को शाहजहां के सहायकों ने केवल इसलिए बादशाह बना दिया था कि गड़बड़ न मचे। अब उसको भी कैद में डाल दिया गया। 26 जुमान–उल–अव्वल को दाबर उसके भाई गरशास्फ, शहरयार और शाहजादे दानियाल के पुत्र तहमुरास और होशंग सबका वध करवा दिया गया।

राणा की सीमा पर पहुंचने पर राणा करण कोकिन्दा में शाहजहां के पास उपस्थित हुआ। उसने और उसके पिता राणा अमरसिंह ने बड़ी राजभक्ति प्रदर्शित की थी। उसने अपना खिराज दिया और उसे बड़ी अच्छी अच्छी भेंटें और सम्मान प्राप्त हुए। नए बादशाह ने अब अपना अड़तीसवां सौर जन्म दिन मनाया। 19 जुमाद–उल–अव्वल को वह अजमेर पहुंचा और अपने महापूर्वज के दस्तूर के अनुसार उसने सन्तों की कब्रों की पैदल यात्रा की। सेनापति महावत ख़ां को अजमेर जागीर में मिला। 26 जुमाद–उल–अव्वल को शाहजहां आगरे पहुंचा और बाहर बाग में उसके डेरे लगे। अगले दिन उसने नगर में प्रवेश किया ओर सब लोगों ने उसे बादशाह मान लिया।

सलीम का विद्रोह

सलीम ने अपने तुजुक में यह नहीं लिखा है कि उसने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया था। इसलिए इसका संक्षिप्त सा विवरण नीचे दिया जाता है।

अकबर को ज्ञात था कि सलीम बादशाह बनने के लिए बड़ा आतुर है। सन् 1591 में जब अकबर को उदरशूल का रोग हुआ तो उसने सन्देह प्रकट किया था कि शाहजादा सलीम ने विष दिलवाया। उस समय शाहजादे की आयु 21 वर्ष की हो चुकी थी और अकबर को राज्य करते हुए 40 वर्ष व्यतीत हो गये थे और उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि उसकी मृत्यु निकट नहीं जान पड़ती थी।

सन् 1600 में शाहजादे ने अपने नायब शाहबाज खां कम्बू की मृत्यु होते ही उसकी लगभग एक करोड रुपये की सम्पत्ति छीन ली और वह विद्रोह की तैयारी करने लगा। इसी वर्ष बंगाल में विद्रोह हो गया तो राजा मानसिंह ने सलीम को सलाह दी कि विद्रोहियों का दमन करने के लिए वह बंगाल जावे और उधर के के प्रान्तो पर अपना अधिकार कर ले शायद मानसिंह का उद्देश्य यह होगा कि सलीम राजधानी से दूर रहे और शाहजादा खुसरो का मार्ग राज्यारोहण के लिए सुगम हो जसए। सलीम पूर्व की और रवाना हो गया परन्तु उसने इलाहाबाद से आगे प्रयाण नहीं किया। जब सलीम आगरा होकर इलाहाबाद की ओर जा रहा था तो अकबर दक्षिण में था। सलीम की दादी ने उसका विद्रोह तो हटाना चाहा परन्तु वह उससे मिला ही नही। इलाहाबाद पहुंचकर उसने बिहार के कोष के 30 लाख रुपये हस्तगत कर लिये और काल्पी से हाजपुर तक के इलाके अपने कब्जे मे कर लिए और वहां अपने समर्थकों को जागीरें दे दीं।

जब अकबर वापिस आया तो उसने सुना कि सलीम 30 हजार सवारो सहित इलाहाबाद से इटावा तक आ पहुचा है। अकबर ने उसको लिखा कि वह वापिस इलाहाबाद चला जावे। बगाल और उडीसा का राज्य करे। तब सलीम वापिस इलाहाबाद लौटकर स्वतत्र शासक की भांति राज्य चिन्ह धारण करके कार्य करने लगा।

फिर 1602 के आरम्भ में उसने अपना राजदूत अकबर के पास भेजा, जिसने निवेदन किया कि शाहजादा 70 हजार सैनिकों सहित मिलने आना चाहता है। उसने जो जागीरे आदि दी हैं उनकी पुष्टि कर दी जाए और उसके समर्थकों को विद्रोही नहीं माना जाए। अकबर ने यह बात नहीं मानी परन्तु सलीम के दमन के लिए भी तत्काल कोई कार्य नहीं किया। इसलिए सन 1602 में पूरे वर्ष तक सलीम इलाहाबाद मे स्वतंत्र शासन चलाता रहा। यहां तक उसने सोने और चांदी के सिक्के भी ढलवाये।

तब अकबर ने सलाह करने के लिए अबुल फजल को जो उस समय दक्षिण में था। बुलाया तो शाहजादा सलीम कने उसको मार्ग में ही मरवा दिया।

तब सुल्ताना सलीमा बेगम ने जो अकबर की प्रिय पत्नी थी 1603 के आरम्भ में इलाहाबाद में जाकर सलीम को समझाना चाहा। वह उसको आगरा ले आई और अकबर की माता मरियम मकानी ने ही सलीम से अकबर को मिलाया। सलीम ने अपने बाप को बड़ी बडी भेंटें दी, और अकबर ने अपनी पगडी सलीम के सिर पर रख दी।

परन्तु यह समझौता हार्दिक नहीं था। अकबर ने चाहा कि सलीम उदयपुर के महाराणा प्रताप के विरुद्ध प्रयाण करे परन्तु वह नहीं गया। उसको राजपूताने

मे युद्ध करना पसन्द भी नहीं था। उसने अकबर से बहुत बडी सेना मागी और उससे दुबारा मिलना चाहा परन्तु अकबर ने इजाजत नहीं दी तो सलीम इलाहाबाद चला गया।

अपनी माता के देहान्त के बाद अकबर ने सलीम से फिर समझौता करना चाहा। तब सलीम इलाहाबाद से आगरे की ओर रवाना हुआ। उसने यह प्रकट किया कि अपनी दादी के देहान्त पर शोक मनाने आ रहा है। वह आकर अकबर के पैरो मे गिर गया। अकबर अन्दर के कमरे मे ले गया और उसके कई थप्पड मारे और राजा सीलवाहन नामक वैद्य के सुपुर्द कर दिया। फिर अकबर ने अपनी पत्नियो के समझाने पर उसकी ओर कुछ नर्मी की। वह अकबर के दरबार मे तो आता था परन्तु अपने साथ चार आदमियो से अधिक नहीं ला सकता था। अजीज कोका जिसकी पुत्री का शाहजादा खुसरो से विवाह हुआ था राजा मानसिह दोनो सलीम को उत्तराधिकार से वचित करके खुसरो को राज सिहासन पर बिठाना चाहते थे। 16 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यु हो गई। अकबर की मृत्यु से पहले लोगो मे ऐसी चर्चा थी कि सलीम उसको विष देगा। अकबर की मृत्यु के बाद भी यह चर्चा बहुत फैली थी परन्तु इसका कोई अकाट्य प्रमाण नहीं मिलता।